# महाभारतदर्पण

## द्वितीय भाग

विराट, उद्योग, भीष्म, और द्रोणपर्व सहित

**स्वस्तिश्री महाराजाधिराज श्रीउदितनारायण काशिराजकी आज्ञानुकूल**

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरोंने संस्कृतका सारांश यथावस्थितले अतिपरिश्रमसे भाषा, वर्ण, मात्रा वृत्तमें अतिरुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेश ने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाश पुस्तकालयमें श्री पण्डित लक्ष्मीनारायण से शुद्धकराय संवत् १८८६ में मुद्रित कराया था

सम्पूर्ण विद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक ऐतिहासाकांक्षियों के पठन पाठनार्थ

वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरीबार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई.) के छापेखाने में छपा
अगस्त सन् १८९१ ई०

49. 3. 30

## महाभारत वार्त्तिक की भिन्न २ पर्व ॥

### आदिपर्व ॥

इस पर्वमें महाभारतकी प्रशंसा व कथा श्रवणफल व अक्षौहिणी संख्या व सृष्टिविस्तार और पौरववंशके राजाओं की कथा सविस्तर वर्णित है ॥

### सभापर्व ॥

मयदानवकरके पाण्डवोंकेहित अद्भुतसभा की रचना व नारदकृत पाण्डवप्रति सभावर्णन श्रीकृष्णके उपदेश से युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करनेके लिये जरासन्धवध व पाण्डवोंप्रति चारों दिशाओंकी विजय व युधिष्ठिर और शकुनी से जुआंहोना और द्रौपदी सहित सब धन हारना और दुश्शासन करके द्रौपदीवस्त्राकर्षणादि कथायें वर्णित हैं ॥

### वनपर्व ॥

पाण्डवों का वनवास सूर्यार्चन से ताम्रपात्र युधिष्ठिर को प्राप्तहोना अर्जुन को स्वर्गजाकर इन्द्रसे मिलाप करना भीमसेनकरके किर्मीर राक्षस बध राजा नलकीकथा, लोपामुद्रासे अगस्त्यजी का विवाह राजा भगीरथ को गंगाजीके दर्शनार्थ तपकरना व गंगाजीसे व शिवजीसे बर प्राप्तहोना किरातरूप महादेव व अर्जुनकायुद्ध व रामायणकी कथा वर्णित है ॥

### विराटपर्व ॥

इस पर्वमें युधिष्ठिरादि पाण्डवों का दुर्योधनसे जुयेंमेंहारके राजाबिराटके यहां गुप्तवास और वहांहीं द्रौपदीमें आसक्त कीचकका भाइयोंसहित भीमसेन के हाथसे मरण पुनि दुर्योधनादि कौरवों को राजाविराटकी गौवें हरना वहां गुप्तवेष अर्जुनसेयुद्ध पश्चात् विराटको अपनी पुत्री उत्तरा को अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु को बिवाहिदेना ॥

### उद्योगपर्व ॥

राजा नहुषकी कथा, संजय, विदुर, धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णजीका अनेक

## सूचीपत्र ॥

### बिराटपर्व ॥


| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ०त० |
|---|---|---|---|
| १-७ | राजा बिराटपुरमें द्रौपदीसहित पांडव प्रवेश वर्णन ॥ | १ | १४ |
| ८ | मल्लयुद्धमें भीमसेन करके जीमूत बध वर्णन ॥ | १५ | १६ |
| ९ | कीचक द्रौपदी की बार्त्ता और भीमसेन करके कीचक बध वर्णन ॥ | १६ | ३० |
| १० | द्रौपदी मोचन और भीमसेन करके कीचक शत भ्रातृ बध वर्णन ॥ | ३० | ३४ |
| ११ | पांडवों के ढूंढ़नेको दुर्योधन दूतप्रेषण और उनसे सभ्रातृ कीचक बध श्रवण वर्णन ॥ | ३४ | ३४ |
| १२ | दुर्योधन सभासद सम्मति और बिराटपुरमें ससैन्य सुशर्मा आगमन वर्णन ॥ | ३४ | ३८ |
| १३ | सुशर्मा करके बिराट गोहरण और पांडव सेना सहित गो मोचनार्थ बिराट गमन वर्णन ॥ | ३८ | ३९ |
| १४ | बिराट और सुशर्माकी सेनाका महायुद्ध और भीमसेन करके सुशर्मा बन्धन और युधिष्ठिर करके मोक्ष वर्णन ॥ | ३९ | ४३ |
| १५ | पराजित सुशर्मा निजपुरगमन और बिराट करकेपांडवस्तुति व बिजय कथनार्थ स्वपुरको दूतप्रेषण वर्णन ॥ | ४३ | ४४ |
| १६ | दुर्योधन भीष्मादि सहित बिराट गोहरण और युद्धार्थ बिराट करके स्वपुत्र प्रेषण वर्णन ॥ | ४४ | ४५ |
| १७ | बृहन्नलाको रथी बनाकर कौरवों के साथ युद्धकरनेको उत्तर गमन वर्णन ॥ | ४५ | ४७ |
| १८ | बृहन्नला और उत्तरका युद्धार्थ कौरवोंकेनिकट गमन वर्णन ॥ | ४८ | ५० |
| १९ | बृहन्नलाको देखकर कौरवोंको अर्जुन ज्ञान और उत्तरसहित शमीवृक्षके निकट पूर्वस्थापित धनुर्बाण ग्रहण वर्णन ॥ | ५० | ५३ |
| २० | अर्जुन क्लीववेषत्याग गांडीव आदिशस्त्र ग्रहण और निज बिजय और नाम वर्णन ॥ | ५३ | ५६ |

| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ०त० |
|---|---|---|---|
| २१ | शंखनादसे संपूर्ण कौरव भय प्राप्ति और उत्तर अधीरता और कौरव सेनापति बिचार वर्णन ॥ | ५६ | ५८ |
| २२ | कर्णकरके द्रोणाचार्य्य निन्दा और कृपाचार्य्य करके अर्जुन पूर्व्व बिजय प्रशंसा बर्णन ॥ | ५८ | ६० |
| २३ | भीष्मादि बीरों से अश्वत्थामा करके अर्जुन युद्ध प्रशंसा और दुर्योधन निन्दा वर्णन ॥ | ६० | ६१ |
| २४ | गोधन सहित दुर्योधन स्वपुर प्रस्थान समय अरजुन करके गोमोचन और कुरु बीरोंसे महायुद्ध और कर्ण पराजय वर्णन ॥ | ६२ | ६७ |
| २५ | कर्ण सहित सर्व सेना पराजय और अर्जुन बिजय वर्णन ॥ | ६७ | ७१ |
| २६ | द्रोणार्जुन संग्राम और द्रोणपराजय और अश्वत्थामा अर्जुन संग्राम वर्णन ॥ | ७१ | ७४ |
| २७ | अर्जुन अश्वत्थामा संग्राम में अश्वत्थामा पराजय वर्णन ॥ | ७४ | ७५ |
| २८ | कर्ण अर्जुन संग्राम और कर्ण पराजय और बिकर्ण दुःशासन आदि से अर्जुनयुद्ध और भीष्मपितामह और अर्जुनयुद्धमें भीष्म पराजय वर्णन ॥ | ७५ | ८१ |
| २९ | विकर्ण गज मारणान्तर विकर्ण पलायन और दुर्योधन पराजय वर्णन ॥ | ८१ | ८२ |
| ३० | सर्व कुरु बीरों से अर्जुन युद्धकर बिजय प्राप्ति अरु कुरु मोहनानन्तर उत्तर करके कुरु वीर वस्त्राहरण और सह अरजुन निजपुर आगमन वर्णन ॥ | ८२ | ८३ |
| ३१ | अरजुन रथ शस्त्रादि त्याग और पूर्बवत् उत्तर सारथी होना और बिराट पुरागमन और आत्मबिजय गोपनार्थ उत्तर सम्बोधन वर्णन ॥ | ८३ | ८७ |
| ३२ | बिराटपुरमें पांडवोंका प्रकटहोना और सपुत्र बिराट करके पांडव बीरता बर्णन ॥ | ८७ | ९१ |
| ३३ | उत्तराके बिवाहार्थ अर्जुन बिराट सम्बाद और अभिमन्यु से बिवाहका अंगीकार वर्णन ॥ | ९१ | ९३ |


इति ॥

## उद्योगपर्वसूचीपत्र ।


| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ०त० |
|---|---|---|---|
| १ | श्रीकृष्णका बिराट पुरमें आना और अभिमन्यु बिवाह और श्रीकृष्ण द्वारकागमन और संग्रामसहायार्थ सर्वभूप आह्वानवर्णन ॥ | १ | ६ |





| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ०त० |
|---|---|---|---|
| २ | दुर्योधन शिक्षार्थ द्रुपद पुरोहित गमन और अर्जुन दुर्योधनका द्वारका गमन और श्रीकृष्णका अर्जुनसारथ्य और दुर्योधनको सैन्यदान वर्णन ॥ | ६ | ९ |
| ३ | शल्य करके दुर्योधन बरदान और पांडव मिलन और युधिष्ठिर वरदान और इन्द्र करके त्रिशिरा बध वर्णन ॥ | १० | १३ |
| ४ | त्वष्टा के यज्ञसे वृत्रासुर जन्म और इन्द्र वृत्रासुर युद्ध में वृत्रासुर बध और इन्द्र ब्रह्महत्या प्राप्ति वर्णन ॥ | १३ | १५ |
| ५ | सब देवन करके राजा नहुषको इंद्रपद प्रदान और नहुष भयसे शची गुरु गृह गमन और ब्रह्महत्या बिभाग और इन्द्र आगमन और बिजय वर्णन ॥ | १५ | २२ |
| ६ | सर्व सुरगणसहित इन्द्रका स्वपुरजाना और बृहस्पति करके अभिषेक प्राप्ति वर्णन ॥ | २२ | २३ |
| ७ | युयुधान चेदिराज धृष्टकेतु जयत्सेनादि राजाओंका धर्मसुतके पासआना और द्रुपद पुरोहित और भीष्मादि सम्बाद बर्णन ॥ | २३ | ४० |
| ८ | हस्तिना पुरमें संजय आगमन और राजाधृतराष्ट्रसे पांडव संदेश कथन वर्णन ॥ | ४० | ४१ |
| ९ | धृतराष्ट्र और विदुरसम्बाद अरु पांडव राज्यदानार्थ बिदुर करके नीति वर्णन ॥ | ४१ | ५० |
| १० | राजाधृतराष्ट्रको धर्म और राजनीति करके परमज्ञानी बिदुर जीकी शिक्षा वर्णन ॥ | ५० | ५७ |
| ११ | सनत्सुजात ऋषि करके राजा धृतराष्ट्रसे धर्मशास्त्र राजनीति वर्णन ॥ | ५७ | ६१ |
| १२ | सनत्सुजात करके वेद पठन प्रशंसा और ब्रह्मतत्त्व बिचार वर्णन ॥ | ६१ | ६३ |
| १३ | गुरु प्रशंसा और धर्मआदि द्वादशगुण और ब्रह्मबिचारवर्णन ॥ | ६३ | ६५ |
| १४ | कामादि द्वादशदोष और सत्यादि द्वादशगुण और ब्रह्मप्राप्ति निरूपण वर्णन ॥ | ६५ | ६६ |
| १५ | ब्रह्मज्ञान निरूपण और योग प्रशंसा और वेदान्तमत निरूपण वर्णन ॥ | ६६ | ७० |
| १६ | संजय करके अर्जुन संदेश और कर्ण भीष्म संवाद और संजय करके पांडव बीर गणना और दुर्योधन धृतराष्ट्र संवाद और केशव संदेश वर्णन ॥ | ७० | ७७ |

| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ०त० |
|---|---|---|---|
| १७ | दुर्योधनको धृतराष्ट्र शिक्षा और भीष्म प्रतिज्ञा वरणन ॥ | ७७ | ८१ |
| १८ | राजायुधिष्ठिर की सम्मतिसे दुर्योधन संबोधनार्थ श्रीकृष्ण गमन और श्रीकृष्णसे पांडव निजाशय प्रकाशन और द्रौपदीशोक वरणन ॥ | ८१ | ८५ |
| १९ | ससैन्य श्रीकृष्ण हस्तिनापुरगमन और श्रीकृष्ण बन्धनार्थ दुर्योधन सम्मति और दुर्योधन सभामें श्रीकृष्णगमन और दुर्योधनगृह भोजनत्याग और बिदुर गृह गमन वरणन ॥ | ८५ | ९२ |
| २० | श्रीकृष्ण बिदुर संभाषण और पुनः कुरु सभामें श्रीकृष्णगमन और श्रीकृष्ण करके कौरव हितोपदेश वरणन ॥ | ९२ | ९९ |
| २१ | अर्जक अमृतदान और गरुड़ गर्व भंग और कणवऋषिकरके दुर्योधन शिक्षा और ययाति स्वर्ग पतनकथा और दुर्योधन अभिमान निन्दा वरणन ॥ | ९९ | १०८ |
| २२ | श्रीकृष्णकरके पांडववीर्य्य प्रशंसा पूर्वक भीष्मशिक्षा और दुर्योधनसभात्याग वरणन ॥ | १०८ | ११४ |
| २३ | श्रीकृष्ण बन्धनार्थ दुर्योधन सम्मति और श्रीकृष्ण क्रोध और बिराटरूपदर्शन और युद्धार्थ कुन्ती श्रीकृष्ण सम्मति औरश्रीकृष्ण बिराटपुर गमन वरणन ॥ | ११४ | ११९ |
| २४ | श्रीकृष्ण करके कर्ण सम्बोधन और कुन्तीकरके कर्णोत्पत्ति कथन और पांडव सहायार्थ सूर्य्यबचन अरु अर्जुनबधार्थ कर्ण प्रतिज्ञा वरणन ॥ | ११९ | १२४ |
| २५ | श्रीकृष्ण विराटपुर आगमन और कौरवचरित्र और कुन्तीसंदेशकथन और निजसेनाबिभाग और युद्धार्थ दुर्योधनसंदेशप्रेषण और कौरव बधार्थ पांडव प्रतिज्ञा वरणन ॥ | १२४ | १३२ |
| २६ | अम्बाआदि कन्याहरण कथा अरु भीष्म परशुराम युद्ध और अम्बा बनगमन वरणन ॥ | १३३ | १४२ |
| २७ | राजाद्रुपदको पुत्रार्थ बरदान और शिखंडीबिवाह और युद्धार्थ राजादशार्ण सेनाआगमन और शिखण्डी बनगमन औ शिखण्डीको यक्षकरके पुंस्त्वदान और युद्धार्थ कौरव पांडव उत्सुकता वर्णन ॥ | १४२ | १४८ |


इति ॥




| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ-त० |
|---|---|---|---|
| १ | संजयबरदान और व्यासकरके अशुभशकुनकथन और व्यास धृतराष्ट्रसंबाद वरणन ॥ | १ | ६ |
| २ | जंगमस्थावर पर्व्वत खंड नदी औ सुर असुर निवासस्थान अरु जंबूवृक्ष कथा वरणन ॥ | ६ | ११ |
| ३ | भारतबर्ष और द्वीप समुद्र प्रमाण और रबिशशिराहु कथा वरणन ॥ | ११ | १६ |
| ४ | संजय धृतराष्ट्रसंबाद और भीष्म रक्षणार्थ कौरवबिचार और भीष्मकरके क्षात्रधर्म और पांडवसेना ब्यूहरचना और अर्जुनकरके दुर्गास्तुति वरणन ॥ | १६ | २२ |
| ५-२२ | श्रीकृष्णार्जुन सम्बादमें भगवद्गीता वरणन ॥ | २२ | ६० |
| २३ | प्रथमदिवस युद्ध में श्वेत और शल्यमहायुद्ध औरभीष्मकरके श्वेतवध वरणन ॥ | ६० | ७३ |
| २४ | द्वितीयदिवस युद्ध में भीष्मार्जुन महासंग्राम और दुर्योधन शोच और श्रुतायु भीमयुद्ध और भानुमान वधवरणन ॥ | ७३ | ८५ |
| २५ | तृतीयदिवस युद्धमें दुर्योधन सेनापराजय और भीष्म प्रतिज्ञा और पांडवसेना बिजय वरणन ॥ | ८५ | ९४ |
| २६ | चतुर्थदिवस युद्धमें शल्य अरु धृष्टद्युम्न युद्ध और भीम दुर्योधन और घटोत्कच भगदत्त महासंग्राम वरणन ॥ | ९४ | १०३ |
| २७ | पंचमदिवस युद्धमें सात्यकि द्रोणयुद्ध और भीष्मार्जुनयुद्धवरणन ॥ | १०३ | ११४ |
| २८ | षष्ठदिवस युद्धमें भीम कौरवयुद्धऔर धृष्टद्युम्न बधार्थ दुर्योधन सम्मति और भीष्मार्जुन संग्राम और दुःकर्णबधवरणन ॥ | ११४ | १२३ |
| २९ | सप्तमदिवसयुद्ध में दुर्योधन और शल्यपराजय और युधिष्ठिर भीष्म संग्राम वरणन ॥ | १२३ | १३५ |
| ३० | भीम और घटोत्कचदुर्योधन और भीष्म कृपभगदत्तअर्जुन महायुद्ध वरणन ॥ | १३५ | १५२ |
| ३१ | भीष्म शिखंडी युद्ध और अलम्बुषपराजय और युधिष्ठिरदुःख अरु भीष्मनिकट गमन और भीष्मकरके पांडवजयार्थ निजबधोपाय कथन वरणन ॥ | १५२ | १६८ |
| ३२ | दुश्शासन अर्जुनयुद्धअरु कौरवों करके भीष्मपितामह रक्षण वरणन ॥ | १६८ | १८१ |
| ३३ | शरबिद्धभीष्मपतन और भीष्मनिकट कुरुपांडवआगमनवरणन | १८१ | १८२ |


इति ॥

| अ० | विषय | पृष्ठसे | पृ-त० |
|---|---|---|---|
| १ | द्रोणाचार्य्य को सेनाधिपति बनाना और द्रोणार्जुन प्रथम दिवस युद्ध वरणन ॥ | १ | १५ |
| २ | द्वितीय दिवस संग्राममें भीमसेन भगदत्तयुद्ध और श्रीकृष्ण करके बैष्णवास्त्र ग्रहण और कर्णार्जुन युद्ध वरणन ॥ | १५ | ३५ |
| ३ | द्रोणाचार्य्य करके चक्रब्यूह रचना और अभिमन्यु महाघोर युद्ध और अभिमन्यु बधवरणन ॥ | ३५ | ५० |
| ४ | मृत्यु उत्पत्ति और राजा युधिष्ठिरसम्बोधन और संजय आदिक सोरह नृपकथा अरु जयद्रथ बधार्थ अर्जुनप्रतिज्ञावरणन ॥ | ५० | ६६ |
| ५ | द्रोणाचार्य्य करके दुर्योधन अभेद्य कवचदान बरणन ॥ | ६६ | ७६ |
| ६ | अर्जुन करके अश्वजलपानार्थ सरउत्पत्ति अरु भीमपुत्र करके अलम्बुष बध वरणन ॥ | ७६ | ६४ |
| ७ | दुर्योधन पराजय अरु राजा सुदर्शनबध और सात्यकिब्यूह प्रवेश वरणन ॥ | ६४ | ११४ |
| ८ | दुर्योधन द्रोणसम्बाद और करण पराजय और भीम मूर्च्छा वरणन ॥ | ११४ | १२० |
| ९ | भूरिश्रवा करके सात्यकि कचग्रहण और अर्जुन करके भूरिश्रवादक्षिणभुजच्छेदन और सात्यकिकरके भूरिश्रवाबध वरणन ॥ | १२० | १४१ |
| १० | दुर्योधन युधिष्ठिर संग्राम और अश्वत्थामाबिजय वरणन ॥ | १४१ | १५० |
| ११ | युधिष्ठिरकरके द्रोण पराजय और अश्वत्थामा करके करण बधार्थ खड्गग्रहण और धृष्टद्युम्न अश्वत्थामा युद्धवरणन ॥ | १५० | १६[illegible] |
| १२ | घटोत्कचअश्वत्थामायुद्ध औरभीमदुर्योधनमहासंग्रामवरणन ॥ | १६० | १७[illegible] |
| १३ | कौरवसैन्यमें भीमार्जुन प्रवेश और कर्ण धृष्टद्युम्न युद्ध पुनः घटोत्कच बध वरणन ॥ | १७० | १८[illegible] |
| १४ | द्रोणाचार्य्य करके अर्जुन प्रशंसा और धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्य युद्ध वरणन ॥ | १८२ | १८[illegible] |
| १५ | धृष्टद्युम्न करके द्रोणाचार्य्यबध सुनके कौरव महाशोच पुनः अश्वत्थामा क्रोध और सात्यकि धृष्टद्युम्न युद्ध और शिवस्तुति बरणन ॥ | १८८ | २[illegible] |


संपूर्णम् ॥

# महाभारतदर्पण ॥

## बिराटपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ चिन्तामणिगणनाथके चरणकमल अभिराम । जिन में श्रीसुखदा बसति सकल सिद्धिकी धाम ॥ सोरठा ॥ चौरे उर बनमाल लकुट मुकुट पट पीतधर । लखै यशोमति लाल यह हियहर घन बनकबर ॥ जगत मूल जगदम्ब जग जनपालनि जगतमय । करै बिंध्य अवलम्ब कृष्ण सहोदरि नन्दजा ॥ मम गुरु श्रीबलभद्र पंथ पयोनिधि शास्त्रके । देत अनेकन भद्र जासु चरण बारिज बरण ॥ श्लोकः ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं । देवींसरस्वतींब्यासन्ततोजयमुदीरयेत् ॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ मेरे प्रपितामह सकल बसिबिराटपुर माह । रहेगुप्तकेहि भांति सो महाबीर नरनाह ॥ पतिब्रत धारिनि भागबर बूह्म बादिनी जौन । रहीगुप्त केहिभांतिसो द्रुपदसुता छबिभौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ज्यों बिराट पुरमें रहे प्रपितामह तवभूप । बर्ष ते रहें कहत त्यों सुनहु गूढ़ धरिरूप ॥ आश्रमसों चलिधर्म नृप भ्रातनसों इमिबैन । कहोतेरहों बर्षयह गुप्त बसैंमतिऐन ॥ कहूं एक बसिये बरषहे अर्जुन बरबीर । गुप्त होयकै धारि कछु गूढ़वेषगम्भीर ॥ अरजुनउवाच ॥ धर्मराजबरदान जो तुमको दयो अनूप । ताते फिरिये जगतमों कोउन लखिहै भूप ॥ कहतराष्ट्र

हम बासतहँ सुखसों करिये जाय। गुप्तहोय रमणीय अतिजहँ जनगणसुखदाय॥ चेदिमत्स्य पांचाल शुभदेश दशारणजौन। मल्ल शाल्वके नगर बर कुन्तिभोज पुरतौन॥ और राष्ट्रबहु बासके योग्यरुचै जहँ भूप। तहां बितावहु बर्ष यह धरिकै गूढ़ स्वरूप॥ बसिबेकहो बिराटपुर धर्मराज भगवान। धर्मवान सो भूपहै नगर रम्य सुखदान॥ मत्स्यबंश शुभशीलहै नृपबिराट बलवान। वृद्ध बदान्य सुवृत्त है प्रियबादी सुखदान॥ बसि बिराटपुरमें कछू करिभूपतिको कार्य। गुप्तबितावैं बर्षयह गूढ़वेष धरि आर्य॥ युधिष्ठिरउवाच॥ जौन कार्यकोकरौगे हमहिं कहौ सब तौन। मत्स्याधिपके नगरमें हे अर्जुन करिगौन॥ अरजुनउवाच॥ हेभूपति हमकरैंगे कौनभांतिसों कर्म। कौन कर्मकरिरहैंगे भली भांति नृपधर्म॥ मृदुबदान्य ह्रीमानहै धार्मिक बिज्ञनरेश। आपु आपदा कष्टमें करिहौ कहा बिशेश॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुनहुं करैंगे जौनहम नृपबिराट पहँजाय। ताकेह्वैहैं सभासद बिद्याबुद्धि देखाय॥ कंकनाम द्विजहोहिंगे अक्षनिपुण प्रियद्यूत। करिबश करिहैं भूपको सहित अमात्य अकूत॥ हमैं जानिबे बूझिहै जो बिराट मतिमान। हम कहिहैं नृपधर्मके हम हैं सखा सुजान॥ कहावृकोदर करहुगे तुम बिराटकोकार्य। सो बिचारिकै कहहुतुम महाबीर मतिआर्य॥ भीमउवाच॥ करताकहिहैं पाकके हम बिराट सों भूप। हम ब्यंजन जानतबिरचि यथा स्वाद अतिरूप॥ दारु ल्याइहैं पाकहित हम बहुबिधि अतिमान। हम सुयुधिष्ठिर भूपकेहैं औदनिक सुजान॥ कर्म अमानुष करैंगे हम बिराटको सर्ब। अरिप्रमत्त हम हनैंगे गहिहैं नाग अखर्ब॥ युधि०उवाच॥ जासों ब्राह्मणहोयकै पावक मांगो आय। खाण्डव बनके दहनको लखि संकृष्ण सुखदाय॥ तौनधनंजय अन्यको कैसेकरिहैकर्म। जीतो जेहिराक्षस उरग एक सुरथते पर्म॥ बासुकिपन्नगराजकी हरी स्वसा अभिराम। तौन धनंजय अन्यको करी कौनबिधि काम॥ नकुलउवाच॥





सूर्य तापकरमें अधिक बिप्र मनुजमें श्रेष्ठ। आशीबिष बिषधरणमें अग्नि तेजमें जेष्ठ॥ उदधि दहन मधि श्रेष्ठहै बरषाकर परजन्य। नागनमें धृतराष्ट्र है ऐरावत गजगन्य॥ पुत्र प्रियन में अधिकहै भार्या सुहृद सुनाहु। तथा धनुर्द्धरमें अधिक जिष्णु महाबर बाहु॥ इन्द्र सदृश श्रीकृष्ण को सखा धनंजय जौन। कैसे धनुगांडीवधर परकृत करिहै तौन॥ पांचबर्ष रहि इन्द्रके सदन माहँबरबीर। दिव्य अस्त्रसिगरेलहे अरिबनदहनगँभीर॥ रुद्रनमें द्वादशसदृश रबिसु तेरहौंजौन। बसुमें ग्रहमें दशमसम शूरबीरबलभौन॥ महाबाहुज्याघातते जासुकठिनबलपूर। जान सब्यशाची बिदितजिष्णु महाबल शूर॥ भटमृगगणको सिंहसो सुहृदप्रिया अतिआर्य। सोअर्जुनकेहिभांतिसो परकोकरिहै कार्य॥ अरजुनउवाच॥ खण्डहोय हम रहैंगे करत प्रतिज्ञा भूप। ज्याघर्षणको गुप्तकर सुनहु उपायअनूप॥ बलयबाहु भरि पहिरिकै मूंदिलेहिंगे तौन। कुण्डलधरिहैं काढ़िहम ज्वलित अर्क समजौन॥ कम्बु बलयते गुप्तह्वै धरिहं प्रकृति तृतीय। शिरोरुहणकी रचितकरि बेणीअति रमणीय॥ कहिहैंनाम बिहन्नलाधरेखण्डको भाव। नृपको अन्तःपुर सकल हमकरिहैं सह चाव॥ गीतनृत्यबादित्रके बिबिध बिचित्रबिधान। करिहैंशिक्षा नृपतिकी कन्याको सुखदान॥ बहु बदान्यता भावके कहिकै बचनललाम। रंजनकरिहैं प्रजनको धारिवेष छलधाम॥ कृष्णाकी हम सखीहैं रही युधिष्ठिर धाम। पूछे नृपति बिराटसों हम कहिहैं अभिराम॥ कपटवेष यहिभांति धरि हमबसिहैं नृपधर्म। मत्स्यराजके धाममें सुख समेत अतिपर्म॥ बैशम्पायनउवाच॥ अर्जुनकेइमि सुनिबचन धर्मनृपति सबिधान। पूछनलागेनकुलसों जानि सुमति सुखदान॥ युधि०उवाच॥ कहहु कहा करिहौ नकुलतहां जायकैकर्म। शूरसुखीसुकुमारतुम दर्शनीयअतिपर्म॥ नकुलउवाच॥ अश्वनके हमहोहिंगे रक्षक तहँचलिभूप। शालिहो-

त्रको ज्ञानहै हमको सुनहु अनूप ॥ ग्रन्थिक अपनो नामकहि अश्वचिकित्सा मान। करिहैं हयरक्षणतहां कर्म पर्मसुखदान ॥ भूप युधिष्ठिर नकुलके सुनिकै वचन प्रमान। लगे कहन सहदेव सों जानि महा मतिमान ॥ युधि०उवाच ॥ तुम करिहौ सहदेव तहँ जाय कौनसोंकार्य । नृपबिराटको करिसुखी बिहरहु जैसे आर्य ॥ सहदेवउवाच ॥ गोरक्षक हम होहिंगे जानत तौन विधान। तंत्रिपाल हम कहैंगे अपनो नाम सुजान ॥ हम जानत गोगुण अगुण रोगचिकित्सा सर्ब। हमतव गोगणमेंरहे भूपति काल अखर्ब ॥ हम चीन्हतहैं वृषभसो मूत्रजासकरिघ्रान। बंध्या नारी गर्भधरि जनमें पुत्रसुजान ॥ ऐसेहम रहिहैं तहां सुनहु भूपबरधर्म । हमैंनकोऊ जानिहै गुप्ततथा बिधिमर्म ॥ युधि०उवाच ॥ प्रिया हमारीभार्या प्राणहुँ ते गुरुआर्य । तौन द्रौपदी औरको कैसे करिहै कार्य ॥ कछू न करिजानतप्रिया बनिता जनको काम। पतिब्रता भूपतिसुता सुकुमारी अभिराम ॥ माल्यगन्ध भूषणबसन इनको जोपरिधान। जानतिहै सोसुन्दरी कर्म न जानति आन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सैरंध्री हमहोहिंगी तासों कहिहैं भूप। भूषणबसन सुमाल्यकी रचना करति अनूप ॥ भूप युधिष्ठिर केभवन द्रुपद सुताकेपास । रहतरही परिचारिका हम ताकी मतिरास ॥ ऐसे हमकै गुप्तकहि नृपबिराटसोंबैन। महिषी सूदेष्णानिकट हमरहिहैं मतिऐन ॥ सो यशस्विनीकरैगी मेरो रक्षणभूप। तुमको कछू न होयगो फेरिदुःखकोरूप॥युधि०उवाच॥ कहति बचन कल्याणके तुम कुलजाता पर्म्म । जानति पाप न साधमति थिरब्रतधारे धर्म्म ॥ दुहृद हमारो पायसुधि यथा सुखी नहिंहोय । कल्याणी तुम तथाकरु रूपआपनो गोय ॥ युधि०उवाच ॥ जौन जौन तुमकहोहै करहु कर्म तुमतौन । समाधान करिबुद्धिको हौ तुमसब मतिभौन ॥ अग्निहोत्र रक्षणकरौ पूरोहित मतिमान। जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सुखदान ॥





इन्द्रसेन सूतनसहित रथलैके मतिरास । जाय द्वारका पुरीमें करौ बर्षभरिबास ॥ द्रुपदसुताकी सखीसब सुहृद भृत्यगण जौन। जाय द्रुपदके नगरमें बासकरौ सबतौन ॥ कहैंसबै तहँहम नहीं जानत पांडवभूप। गयेबसे कहँजायकै कौनधारिकै रूप॥ बैशम्पायनउवाच॥ मंत्रसुकरिअन्योन्ययोंभिन्नाभिन्नकहिकर्म। कह्यो धर्मसोंधौम्यतबशिक्षाकीन्होंपर्म ॥ धौम्यउवाच ॥ रक्षितकीजोद्रौपदिहि तुम फाल्गुनसहभूप। बिदित तुम्हैं वृत्तान्तहैयथालोक अनुरूप ॥ बहुतभांतिके नीतिकेधौम्यकहेबरबैन। सावधानसो रहहुगे धर्मनृपतिमतिऐन ॥ बहुतभांतिके धौम्यके सुनिशिक्षा के बैन। धर्मनृपतिलागेकहन नीतिनिपुणमतिऐन ॥ युधि उवाच ॥ शीक्षितहम मुनिवरभये तुमसों वक्ताकौन। कुन्ती बिदुर समान हितहौममतुम मतिभौन ॥ अबकरिबे जोकार्यसोकरहुधौम्यतप धाम। दुःखहरण अरिपैचढ़न जयकारण अभिराम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ऐसेसुनि नृपधर्मके धौम्य महामुनि बैन । बिधिवतबिधिप्रस्थानकी कियो सुमंगल ऐन ॥ अग्निसमृद्ध सुकरि कियो होममंत्र पढ़िपर्म। जाते अचिर मिलै मही ऋद्धिबिजय यश धर्म ॥ प्रदक्षिणा करि अग्निको बिप्रनको नृपधर्म। चले सभ्रातन द्रौपदी को आगेकरिकर्म ॥ गयेतहांते धर्मनृप तब मुनि धौम्य बिशाल । बिप्रन सह कीन्हों गमन गयेदेश पांचाल ॥ इन्द्रसेन आदिकगये जहँ यदुपतिको धाम । शतसुऔदनिक भृत्य सब रथलीन्हें अभिराम ॥ युधि०उवाच ॥ धर्मराज हमको दयो जेहि बिधि को बरदान। सुनहु जिष्णु तुम सों कहत करिये तथा बिधान ॥ शास्त्र बचन धारण किये ते पांडवबरबीर। सहित द्रौपदी गये चलि कालिन्दी के तीर ॥ कूलगहे दक्षिण चले यमुनाको तेबीर। देखन लागे देश गिरि दुर्ग बिपिन गंभीर ॥ बास करत घनगहनमें लखिगिरि दुर्गउदार। मारिमृगन को धनुर्द्धर निशिमें करतअहार ॥ करि उत्तर सुद-

शारणहि दक्षिणदिशि पांचाल । सूरसेनके देशमें चले सुगुप्त
नृपाल ॥ लुब्धक बोलत आपुको मत्स्यदेश केपाश । धरेशस्त्र
पांडवगये बनेबधिक बलराश ॥ जनपदलखि कृष्णैकहो धर्म
नृपति सोंबैन । ग्राममार्ग लखिपरत है निकट मत्स्यपुर हैन ॥
आजुराति बासिये इहां हमको श्रमबलवान । यहसुनि अर्जुन
सों कहो धर्मराज सुखदान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बीरधनंजय द्रौपदी
को तुमलेहुउठाय । राजपुरीढिगबसैंगे बनके बाहरजाय ॥ वैश-
म्पायनउवाच ॥ अर्जुन कृष्णाको लियो मृदुल अंकमें धारि । चलि
बिराटपुरके निकट क्षितिपरदियो उतारि ॥ पुरप्रवेश धरिशस्त्र
कहँकीजे जिष्णुउदार । लखिसशस्त्र पुरजनहमैं करिहैं व्यग्रबि-
चार ॥ अद्भुत अतिगाण्डीव धनु जेहिजानतसबदेश । सहित
शस्त्रजोकरैंगे हमपुरमाहँ प्रवेश ॥ क्षिप्रहमैंसबजानिहैंपांडवमनु-
जनरेश । करिबेपरिहैफिरिबरषबारहबिपिनप्रवेश ॥ अरजुनउवाच ॥
नदीकूलपरशमीयह बनसमीपअतिमान । दुरारोहघनशाख अ-
तिनीरेनगरमशान ॥ इहांदेखिनहिंपरतहै कहूंमनुजकोरूप । धर
तशस्त्रयापैचढ़तजौनदेखिहैभूप ॥ यापैधरिकैशस्त्रसबकीजैनगर
प्रवेश । ऐसेकरिकै मंत्रतेलहिभूपालनिदेश ॥ जिष्णुधरोगांडीव
चढ़िअक्षयजौननिषंग । जासोंजीतोअसुरजेबज्रसारसम अंग ॥
भीम नकुलसहदेवनृप सकलशस्त्रसमुदाय । अपनेअपनेशमी
पर चढ़िकैराखेजाय ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ शमीमाहँ अवकाशहोतहां
धनुषधरिबीरातृणसोंआच्छादिताकियोशस्त्रसकलगम्भीर ॥ घन
बर्षेभीजैनहीं शस्त्रादियोयोंछाय । बांधोतरुसोंएकशवअरुमशान
सोंल्याय ॥ जातेचढ़ैनमनुजकोउशमीवृक्षपरआयासबशरीरबी-
भत्सलखिपूतिगन्धकोपाय ॥ जयजयन्तअरुजयतबलजयत्सेन
जयजौन । गुह्यनाम येधरतभे पांडवनृपबलभौन ॥ यथाप्रतिज्ञा
नगरकोचलोचलोजबभूप । बर्षतेरहेंबासकोधरिकैगुप्तस्वरूप ॥
इतिबिराटपर्वणिबिराटपुरनिकटपांडवप्राप्तिबर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥





जयकारी ॥ चलत बिराट पुरीको भूप । धर्मनृपति धरिध्यान
अनूप ॥ सुस्तवकरनलगेमतिरास । दुर्गात्रिभुवनेश्वरीतास ॥
श्रीयशुदानन्दानि अभिराम । नारायणकी प्रियाललाम ॥ नन्द
गोप कुलजाताजौन । बिंध्यबासिनीत्रिभुवनभौन ॥ सुररक्षणि
करकंस बिनाश । शिला परत जो गई अकाश ॥ भारावतरण
को इतआय । धरोद्धार कीन्हों सुखदाय ॥ सुस्तव करन लगे
तबभूप । दर्शन कांक्षाधरे अनूप ॥ अथस्तोत्रम् ॥ नमोस्तुवरदेकृ
ष्णेकुमारीब्रह्मचारिणि । बालार्कसदृशाकारेपूर्णचन्द्रनिभानने ॥
चतुर्भुजेचतुर्वक्त्रे पीनश्रोणीपयोधरे । मयूरपिच्छवलयेकेयूरांग
दधारिणे ॥ भाषिदेवीयथापद्मानारायणपरिग्रहे । स्वरूपंब्रह्मव
र्चबिषदन्तवखेचरी ॥ कृष्णछबिसमाकृष्णासङ्कर्षणसमानना ।
बिभ्रतीबिपुलौबाहूशक्रध्वजसमुच्छ्रयो ॥ पात्रीचपङ्कजीघण्टी
स्त्रीविशुद्धाचयाभुवि । पाशन्धनुर्महाचक्रंबिबिधान्यायुधानिच ॥
कुण्डलाभ्यांसुपूर्णाभ्यांकर्णाभ्यांचविभूषितां । चन्द्रविस्पर्द्धिनाद
वमुखेनत्वंविराजसे ॥ मुकुटेनविचित्रेणकेशबन्धनशोभिना । भुजं
गाभोगवासेनश्रोणिसूत्रेणराजता ॥ विभ्राजसेवाबद्धेनभोगेनेवेह
मन्दरः । ध्वजेनाशिखिपिच्छानामूछ्रितेनविराजसे ॥ कौमारंव्रतमा
स्थायत्रिदिवम्पाहितंत्वया । तेनत्वंस्तूयसेदेवित्रिदशैःपूज्यसेपि
च ॥ त्रैलोक्यरक्षणार्थायमहिषासुरनाशिनि । प्रसन्नामेपुरश्रेष्ठेद
यांकुरुशिवाभव ॥ जयात्वंविजयाचैवसंग्रामेचजयप्रदा । ममापि
विजयन्देहिवरदात्वंचसांप्रतं ॥ विंध्येचैवनगश्रेष्ठेतपस्थामहि
शाश्वतं । कालिकालिमहाकालि सीन्धुमांसपशुप्रिये ॥ कृता
नुयात्राभूतैस्त्वंवरदाकामचारिणि । भारावतरणेयेत्वांसंस्मरिष्य
न्तिमानवाः ॥ प्रणमन्तिथयेत्वांहिप्रभातेचनराभुवि । नतेषांदु
र्लभंकिञ्चित् पुत्रतोधनतोपिवा ॥ दुर्गातारयसेदुर्गेयत्वंदुर्गा
स्मृताजनैः । कान्तारेष्ववसन्नानांमग्नानांचमहार्णवे ॥ दस्यु
भिर्वानिरुद्धानांत्वंगतिः परमानृणां । जलप्रतरणेचैवकान्तारे

ष्वटवीषु च ॥ येस्मरन्तिमहादेवींनचसीदन्तितेनराः । त्वंकीर्ति
श्रीधृतिः सिद्धिर्ह्रीर्विद्यासन्ततिर्मतिः ॥ संध्यारात्रिः प्रभानिद्रे
ज्योत्स्नाकांतिःक्षमादया । नृणांचबन्धनंमोहपुत्रनाशन्धनक्षयं
व्याधिमृत्युभयंचैव पूजितानाशइष्यति । सोहंराज्यात्परिभ्र
शरणंत्वांप्रपन्नवान् ॥ प्रणतश्चस्वयंमूर्ध्ना तवदेविसुरेश्वरि
त्राहिमांपद्मपत्राक्षि सत्येसत्याभवस्वनः ॥ शरणंभवमेदु
शरण्येभक्तवत्सले । एवंस्तुताहिसादेवी दर्शयामासपाण्
व ॥ उपगम्यतुराजान मिदंवचनमब्रवीत् ॥ देव्युवाच ॥ शृ
राजन्महाबाहो मदीयंवचनप्रभो । भविष्यत्यचिरादेव संग्रा
विजयस्तव ॥ ममप्रसादान्निर्जित्यहत्वाकौरववाहिनीं । राज्
निष्कंटकंहत्वामोक्षसेमेदिनिंपुनः ॥ भ्रातृभिःसहितोराजन्
तिप्राग्स्यासिपुष्कलं । मत्प्रसादाच्चतेसौख्यमारोग्यंचभविष्य
तिं ॥ येचसङ्कीर्तयिष्यंतिलोकेविगतकल्मषः । तेषांतुष्टामि
स्यामिराज्यमायुर्वपुःसुतः॥ प्रवासेनगरेवापिसंग्रामेशत्रुसङ्कटे
अटव्यांदुर्गकान्तारेसागरेगहनेगिरौ ॥ येस्मरिष्यंतिमांराज
थाहंभवतास्मृता।नतेषांदुर्लभंकिञ्चिदस्मिन्लोकेभविष्यति
इदंस्तोत्रवरंभक्त्याशृणुयाद्वापठेथवी । तस्यसर्वाणिकार्य्याणि
सिद्धिंयास्यन्तिपाण्डवः ॥ मत्प्रसादाच्चवःसर्वान्विराटनगरे
तान् । नप्राक्षस्यन्तिकुरवोनरावातन्निवासिनः ॥ इत्युक्तावर
देवीयुधिष्ठिरमरिन्दमं । रक्षांकृत्वाचपांडूनांतत्रैवांतरधीयते
इतिदुर्गास्तवःसमाप्तः ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ गये प्रथम विराटभू
तिपास राजाधर्म। बैदूर्य्यरूप सुकनक मंडित अक्षलीन्हेंपर्म
कहाभूप विराट आवत देखि अद्भुतरूप । महानुभाव बिचा
मनमें भरो तेज अनूप ॥ अभ्रमण्डित यथा दिनमणि अग्नि
भस्मपिधान। लखो ऐसे धर्मनृपकोमत्स्यपति मतिमान ॥ ल
मंत्रिन पासपूछन नृपबिराट सुजान।कौनहैं येप्रथमआवतजा
नहिं उपमान ॥ नहींरथ नाहिंदास कुंजर सुभटसँग बलवान





धीर्भिप्रेकित भूपहैको शक्रसम अतिमान ॥ चले आवत पास
रे महा निभ्रमरूप। यथासरसिज पासतारण मदोत्कट अति
रूप ॥ जायभूप बिराटपै नृपधर्म बोलेबैन । सरबस्व रहित सु
हमहिं जानहु विप्रहै मतिऐन ॥ रहोंचाहत पासतव नृपयथा
कामउदार । कुरुनाथके सुनि बचनभूप बिराटकिय स्वीकार ॥
प्रीतिकरि नृपधर्मपास बिराट बोलेबैन। कहांसों तुमइहां आये
कहहु सो मतिऐन ॥ गोत्रकहिये नामअपनो सुगुण शीक्षित
भौन ॥ युधि०उवाच ॥ धर्मनृपके सखाहैं हम बिप्र हे मतिभौन ।
व्याघ्रपाद्य सुगोत्र जानत अक्षबिद्या मर्म । कङ्कनामक बिप्र
बिद्या द्यूतमें अतिपर्म ॥ संजयउवाच ॥ ब्याघ्रलौं यमगिरै ताते
व्याघ्रपाद सुनाम। तासुकुलमें भयेते बैयाघ्रपद्य सधाम ॥ नाम
अपनो नृपबतायो धर्मधुरन्धर दक्ष । बिप्रसे सुबिशेष करिकै
करै सूरणस्वक्ष ॥ कियेपूर्ण बिशेष करिकै द्विजनको भूपाल ।
बिप्रयाते कह्यो आपुहि बीरबिज्ञ बिशाल ॥ कङ्कयमको नाम
याते कहो निज अभिधान । धर्मभूप सुधर्म धर्मी महा मेधा-
धान ॥ बिराटउवाच ॥ देतहैं हमतुम्हैं बरजोहोय इच्छितबिप्र ।
द्यूतप्रिय हमबश्य तवतुम करहु शीक्षित क्षिप्र ॥ युधि०उवाच ॥
हीनके सँगहोय कबहूं प्राप्त बाद न भूप। देहुबर मम जितनधन
को सकैराखि अनूप ॥ बिराटउवाच ॥ करैअप्रिय जौनतबसो बध्य
हमसों क्षिप्र। जानपद जनजानिहैं सममोहिं तुमकोबिप्र ॥ होहु
तुम सखा मेरे ममसमान समृद्ध । कहहुगे तुमजाहिताको
करहिंगे हमऋद्ध ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पायभूप बिराटको यहिभां-
ति बर नृपधर्म। बसेताके पासतासों भयेपूजित पर्म ॥

इतिश्रीविराटपर्वणियुधिष्ठिरप्रवेशबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

वैशम्पायनउवाच॥रोला ॥ भीमसेनसुपाय अवसरगयेसिंहसमान ।
रहेभूप बिराटजहँ सहसचिव सुमतिप्रधान ॥ लयेमन्थनदण्ड
करमें सहित दर्बीमाम। औदनिकको रूपधरि समसूर तेजस

धाम ॥ बसनपहिरे श्यामगिरिसम अंगअति बलरास । देरि
आवतभूपलागेकहन सचिवनपास ॥ सिंहसमअतिरूप आव
तकौनयह बरबीर । पूर्बकबहूंलखो नहिं हम भरोतेज गँभीर ।
करत यामेंतर्क हमकछु ठीकठहरत हैन । गन्धर्ब पतिकैहै पु
न्दर महाबलको ऐन ॥ कौनयह मम दर्शनार्थ सुचलो आव
बीर । जाय इनसों बूझिआवहु यथातत्त्व गँभीर ॥ सुनतबच
बिराटके उठि गये दूत सुजान । लगेबूझन भीमसों वृत्तान
सुमतिप्रमान ॥ जायभीम बिराटके ढिगदीनबोलेबैन । बिरि
व्यंजन सकल जानत सूदहम मतिऐन ॥ बिराटउबाच ॥ सूदजा
न परतमोको सुनोतुमबरबीर । रूपश्रीसों भूपसे तुम बिक्रम
लयधीर ॥ भीमउबाच ॥ नामबल्लव धर्म नृपके सूदहैं हमभूप
बिरचि जानत पाकषटरस भरेस्वाद अनूप ॥ नहींबलमें तुल
ममकोउ युद्धकर्म सुजान । सिंहगज गहिलेत हमतव होहिं
सुखदान ॥ बिराटउबाच ॥ पाककोअधिकारतुमकोदेतबल्लवसर्ब
नहींतुमसों सदृशहै कोउ भूमिमाहँ अखर्ब ॥ महानसकोपाय
अधिकार बल्लव नाम । भये गुप्त बिराट के कै सुहृद अ
अभिराम ॥

इतिश्रीबिराटपर्वणिभीमसेनप्रवेशबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

रोला ॥ चिकुरकुञ्चित करि सुग्रन्थित रचित बेणीपर्म । ध
दक्षिण पार्श्वपर अति असितलांबे नर्म ॥ एकपहिरे बसन
ष्णामलिन सूक्ष्म अनूप । धारि सैरंध्री समान सुआर्त अपन
रूप ॥ देखिदौरे मनुज नारी लगीं बूझन आय । कौनहोकर्त
व्य तुमको कहाहै शुभदाय ॥ सैरंध्रिहैं हमकहो कृष्णपास ति
नके बैन । कियो चाहत कार्य्य सौंपै हमैं जो सहचैन ॥ गि
सुनि अभिराम ताको रूप अद्भुत चाहि । कहत कोउनसुमा
दासीअन्नबांछित ताहि ॥ बिराटपत्नी कैकेयीहीजौनसुमतिल
लाम । द्रुपदजाको लखो तेहिस्थितरही ऊपर धाम ॥ भरी रू





अनाथ लखिकै बसनधारे एक । बोलिबूझो कौनतुमकाकरहुगी
सबिबेक ॥ द्रौपद्युबाच ॥ सैरंध्रिहैं हमयहांआईजानिभूपसधर्म्म ।
कार्य्यताको करै सौंपै हमैं योग्य जो पर्म्म ॥ सुदेष्णाउबाच ॥ तथा
रूप न रांवरो तुमयथा बोलति बैन । दासदासी लखे हम बहु-
भांतिके गुणऐन ॥ निम्नगुल्फ सुसंहतोरू त्रीणिजासुगँभीर ।
पञ्चरक्त षडंग उन्नत हंससर समधीर ॥ नाभिशब्द सुमनीषा
गंभीर अति अभिराम । अधरकरपद जीभरक्तचषान्त सुखमा
धाम ॥ नासिकाचषश्रवणनखअरुबरपयोधरग्रीव । परमउन्नत
अंगतेरे ये सुपरमासीव ॥ पीनतोसुनितंब उरसित कचसचि-
क्कनश्याम । सघनबरुणी बीम्बओष्ठी सुकटिहै नवक्षाम ॥ गुप्त
नाड़ी कम्बुग्रीवा बदन इन्दुसमान । पुण्डरीक समान लोचन
गन्धतनसुखदान ॥ श्रीसदृशतवरूप राजितकहौहौतुमकौन ।
भरी ऐसेरूपसों सतिदिव्य दासीहौन ॥ किन्नरीगन्धर्बि यक्षी
अप्सरा सुरबाम । शचीकैतुमरोहिणी कै पन्नगी अभिराम ॥
बारुणीकै दनुजजाकै ग्रामदेवी पर्म । कहहुइनमें कौन हौ तुम
रूपराशि सुधर्म ॥ द्रौपद्युबाच ॥ मानुषी सैरंध्रि हमहैं द्रुपदजाके
पास । रहतहींशृङ्गारताको रचतहीं सुखरास ॥ अंगरागबिधान
जानति माल्यरचना जौन । केशपास बिचित्र बिरचति बसन
भूषणतौन ॥ सत्यभामा द्रौपदीके रहतहीं हमपास । पायआ-
दर बसनभोजन भरी आनँदरास ॥ मालिनी यहनाम मेरोधरो
तिन अभिराम । तौन तुम्हरे बसोचाहत हम सुदेष्णाधाम ॥
सुदेष्णाउबाच ॥ राखि हैं हम शीशऊपर तुम्हैं अपने पास । भूप
मोहित होयगो पै लखितुम्हैं छबिरास ॥ येईमोहित राजबनिता
तुम्हैं लखिकै सर्ब । पुरुषको नहिं मोहिहै लखि रूपराशि अ-
खर्ब ॥ वृक्षनिष्कुटके हमारे देखिकै तवरूप । नमितशाखा भये
हैंते लखहु चरित अनूप ॥ लखि अमानुष रूप भूपबिराटतो
अभिराम । मोहितजि वशहोहिंगे तव सर्बथा बरबाम ॥ यहां

आवहु तरल आयत लोचना बरबाम। तुमहिं लखि आसक्त को नहिं होयगो यहिधाम ॥ गर्भधारत कर्कटी ज्यों आत्मकारण नास। तथा हमको होयगो यहिधाममें तवबास ॥ द्रौपद्युवाच ॥ लभ्यहम न बिराटको नहिंअन्यके सहप्रान। गन्धर्बमेरे पांचहैं पतिसदा कारकत्रान ॥ औरकोऊ चहैमोको पुरुषकामी चण्ड। आइकै ते देत ताको प्राणहारक दण्ड ॥ उच्छिष्टभोजन करैंगी नहिं धोइहैं हमपाव। अन्नबसन बिशुद्ध सों पति लहतमेरे चाव ॥ सहति हैं हमदुःख ऐसो कछूपाय निमित्त। रहतते पति पञ्चमेरे क्लेशपूरित चित्त ॥ गुप्तमेरी करत रक्षा सुपति मेरेतौन ॥ सुदेष्णाउवाच ॥ राखिहौं इमिरह्यो जैसे चहति तू छबिभौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ लहि सुदेष्णासों सुऐसे द्रौपदी बिश्वास। गुप्तहोय बिराटपुरमें बसीताके पास ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिद्रौपदीप्रवेशबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

रोला ॥ गोपके धरिवेषको सहदेव अति अभिराम। गयेभूप बिराटहैं तहँ महामतिके धाम ॥ जाय ठाढ़ेभये जेहां रहोगोधन ठाट। देखि अद्भुतरूप पठयो चारभूप बिराट ॥ देखि आवत सिंहसो चलि मत्स्यपति भूपाल। लगेबूझन कौनहौ काकियो चहत बिशाल ॥ नहीं देखो पूर्ब तुमको कहहु सत्य अवाद। लगे कहन बिराटसों सहदेव तब घन नाद ॥ सहदेवउवाच ॥ अरिष्ट नेमि सुबैश्य हैं हम धर्म नृपके पास। रहत हे तहँ गोष्ठ रक्षण करत हे मतिरास ॥ बसो चाहत रावरे के पासहम सुनुभूप। नहीं जानतगये पांडवकौन देशअनूप ॥ बिनाकीन्हे कर्म लहतन जीवजन आहार। तुम्हैं छोड़िन औरहमको रुचत भूप उदार ॥ बिराटउवाच ॥ बिप्रकैतुम क्षत्र सम्भव भूप क्षितिके सर्ब। कहहु सत्य न योग्यहै तवबैश्यता अतिखर्ब ॥ कौनजानत कर्मकरि तुमसहित शीक्षामर्म। कहा लेहौ कर्म्मकरि धन कहहु सोतुमपर्म ॥ सहदेवउवाच ॥ पांचपांडुसुपुत्र तामें ज्येष्ठधर्म सुरूप





आठशत सुसहस्र गोधनरहो ताकेभूप ॥ तन्तिपाल सुनामताके रहे हम गोपाल। भूत भव्य भविष्य गोधनरहे लखतबिशाल ॥ संख्या सुगण अरुदोष जानत गउनको हमसर्ब। क्षिप्र गोधन कियो हम कुरुराजकोसुअखर्ब ॥ दोहा ॥ जानतवृषभनको नृपति पूजित लक्षणजौन। बंध्या मुत्रघ्राणकरि जाकोलहै पुत्रकोतौन॥ बिराटउवाच ॥ शतसहस्रसुवरण तुम्हैंदेहैंहमगोपाल। हमजानत तुम करहुगे मम गोगण सुबिशाल ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ राखो तहँ सह देवको देबर भूषण भूप। दये सौंपि गोपाल सब रहेजे पूर्ब अनूप ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिसहदेवप्रवेशबर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ लखो कछुक बिलम्बमें नृपवरे बनिता रूप। बसन भूषण कुण्डलादिक बलय पाणिअनूप ॥ छुटेबार प्रलम्ब भुजपर मत्तनाग समान। करत गतिते भूमि कम्पित दिव्यरूप महान ॥ देखि आवत चलो भूपबिराट मानि अनूप। लगे बूझन सचिव सों यह कौन अद्भुत रूप ॥ नहीं देखो पूर्ब कबहूंपुरुषयहबलधाम।युवावारणयूथनायकयथाउन्मदश्याम ॥ छुटी बेणी लसै कुण्डल धरे भाल सुवेश। अंगजाके धनुषशार बर चर्म कैसेदेश ॥ चलो आवत बेगितासों जाय बूझो मर्म। जोहि चष मुदलहत सुतसम मोहि दायक शर्म ॥ सुनहु ऐसे रूपकोनहिं होतक्लीव पुमान। बूझिल्याये सभासद नृप पास बीरमहान ॥ अरजुनउवाच ॥ गानमें अरुनाद्यमें हमबाद्यमें सरबज्ञ। सदशनारद महामुनिके भूपजानहु तज्ञ ॥ कथनकीन्हें रूप मेरो शोकबर्द्धन भूप। दियो चाहत उत्तराको तौर्यत्रिक अतिरूप ॥ देहुआज्ञा करत मोहि वृहन्नलामातिमान। रूपयह मोहिं प्राप्त भो जिहि हेतुते दुखदान ॥ सोनकहिबे योग्य मेरे हैं न माता तात। पुत्रजानो कैसुपुत्री मोहिं भूपतिख्यात ॥ बिराटउवाच ॥ देत हम बरदान तुमको वृहन्नला गुणधाम। करहु शिक्षातौर्यत्रिक

की सुताममं अभिराम ॥ नहीं तुमसम कर्मयह सुनु वृहन्नला
मतिमान । आसमुद्र सुभूमि शासन योग्य तुमहिं महान ॥ वैश
म्पायनउवाच ॥ दियो भूप बिराट आज्ञा वृहन्नलाकोचाहि । नृत्य
गीत सिखाइबेमें करि परीक्षित ताहि ॥ युवतिजूह पठायताकी
क्लीवता अजमाय । गुणिनपुंस कुमारिकाके दियोधाम पठाय ॥
कियो शीक्षित जिष्णु ताको तौर्यत्रिक अभिराम । सखीसह
परिचारिका नृप सुताके बसिधाम ॥ बसे ऐसोवेषधरितहँ जा
अर्जुन बीर । नहींजानो तहांकाहू तासुरूप गँभीर ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिअर्जुनप्रवेशबर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

वैशंपायनउवाच ॥ रोला ॥ वेषकैतवधरेआये नकुलतहँ नरनाह
जायलागे अश्वदेखन अश्वशाला माह ॥ अश्व देखत दे
भूप बिराटपठयोचार । अश्वदेखत कौनहैयहदिव्यपुरुषउदार
कोऊहै अश्वज्ञ ल्यावहु बेगिमेरेपास । लेगयेसे नकुल बोलेबि
जयमतिके रास ॥ देहिंगे धनधामहूजे सूतमम मतिभौन । कह
हेहौकौन कहिये कर्मजानतजौन ॥ नकुलउबाच ॥ हैंयुधिष्ठिर भूप
हम अश्वशीक्षकभूप । अश्वकेगुण दोषशीक्षा निपुण हमअनु
रूप ॥ हयचिकित्साकरतहैं बहुभांतिकीहमसर्ब । होतकातरनहिं
मोतेभयो शीक्षितअर्ब ॥ कहतग्रन्थिकनाममेरोहैयुधिष्ठिरभूप
बिराटउबाच ॥ अश्वबाहकरहैंगेमम बश्यतोअनुरूप ॥ होइबांछि
तुम्हैं धनसोकहहु हेगुणधाम । तुरँगशीक्षायोग्य नहिंतुमभूप
अभिराम ॥ हमैंदर्शन नृपयुधिष्ठिर सदशतो अतिपर्म । साहि
भ्रातन्ह बसतकैसे बिपिनमें नृपधर्म ॥ नकुलउबाच ॥ जानिपरत
रहतकिमितेबसतकिहिबनमाहिं । होयतिनबिनबिकलआयोभू
हमतबपाहिं ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रहेऐसेनकुलतहँगन्धर्बरूपसमान
हृदयचोरीकियोताहि बिराटभूपसुजान ॥ बसे ऐसे सकलपांड
मत्स्यपतिके पास । गुप्तकै प्रण पालिबे को धर्मधुर बलरास

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिनकुलप्रवेशबर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७





जनमेजयउवाच ॥ रोला ॥ छन्नह्वै यहि भांति सो बसि सकल
पांडवबीर । मत्स्यपुरमें किया आगे कौनकर्मगँभीर ॥ वैशम्पाय-
नउवाच ॥ मत्स्यपति केपासबसि यहि भांति कारय जौन । कियो
पांडव कहतहैं सो सुनहु भूपति तौन ॥ सभासद ह्वैनृप युधि-
ष्ठिर मत्स्यपतिको अक्ष । भलीभांति खेलाय अति प्रियभयेभू-
पतिदक्ष ॥ जीति भूप बिराट सों बसुदेत भ्रातन तौन । भीम
भक्ष्यसु बचत अधिकी मास आदिक जौन ॥ धर्मनृपके पास
बेचत लेत सोधन भूप । गुप्तह्वै यहिभांतिकरत मिलापमिसि
अनुरूप ॥ बसन जीरण लहत अर्जुन कन्यकन सो जौन । जा-
यकै सब पांडवनके हाथ बेचत तौन ॥ गोपकेधरि वेषको सह-
देव दधिपय पर्म । आयकै देजात हैं चलि पास भूपति धर्म ॥
नकुलको धनदेत जौनबिराट होयप्रसन्न । आयकैसो देतपांड-
व राजको सम्पन्न ॥ चरति कृष्णापास तिनके गुप्तह्वै अभि-
राम । यहिभांति सो सब बसे नगर बिराट के मतिधाम ॥ रहत
हैं धृतराष्ट्र सुत के भरे शङ्कासर्ब । रहत देखत द्रौपदीको भये
गुप्त अखर्ब ॥ भयोचौथे मास तहां ब्रह्मनाम समाज । मल्ल
आये चहूंदिशि के द्विरद कैसेराज ॥ तण्डुलप्रदिक शरदऋतुमें
अन्ननूतन होत । कहूं ब्रह्माको सुउत्सव करत भूमें घोत ॥ भ-
योचौथे मास तहां तौन उत्सव भूप । मल्लआये तत्रचहुं के
भयानक सुकुरूप ॥ तिन्हैं भूप बिराट पूजो सहित बिहित बि-
धान । बीर्यसों उनमत्त अति बलसुमतिसिंहसमान ॥ लहो ब-
हुतनसों बिजयते मल्लभूपति पास । आइकै सब जुरे अति
बल महा मतिके रास ॥ मल्लहो एक महाबल तेहि कियो तहँ
मद्दनाद । नहींतासों सके करि कोउ मल्लयुद्ध बिवाद ॥ भये
बिमनस मल्ल सिगरे गयेमनमें हारि । तेहि लराथो भीम सो
नृप महाबल निरधारि ॥ भीमनहिं उत्साह कीन्हों युद्ध को बल-
वान । प्रगटताको मानिकै भयशिथिल सिंहसमान ॥ बांधिक-

क्षा भीम कीन्हींमल्लको आह्वान । जीमूतजाकोनामचहुँदिशि
ख्यात अतिबलवान ॥ दोऊअतिबलभरेदोऊ उतसाह सों ग-
भीर । मल्लविद्या निपुणदोऊयुद्धमें बरबीर ॥ दांवनानाभांतिके
दोउकरतजीति बिचारि । जानुजंघा भुजनसोंदोउलरेबर बल
धारि ॥ भरेअति उत्साह सो मदमत्तगजसेबीर । कृतप्रति कृत
करत दोऊ भुजनसों गम्भीर ॥ मुष्टिसोंअरु तलनसोंहनि बज्र
घातसमान । तुमुल दारुण युद्ध तिनसों भयो युद्धमहान ॥ वृत्र
बासव सेलरेदोउबीर अतिबलभौन । परसपरदोउकरतभर्त्सन
गराजिकै अतितौन ॥ भुजनसोंतहँभीमलीन्हों पकरिताहि उठा-
य । डारिदीन्हों भूमिपैशतबारउर्द्धफिराय ॥ मरदिमारेभीमता-
को भरोभीम अमर्ष । मरोलखि जीमूत मल्ल बिराट पूरेहर्ष ।
दियो भूप बिराट बहुधन भीमको सुखदान । और मल्लन को
दियो बसु भूप धनदसमान ॥ भीमतुल्यन पुरुषकोऊ औरपा-
वत उद्ध । सिंह ब्याघ्रनसों करावत लखै महिषीयुद्ध ॥ महा-
बलते भीम अर्जुन तौर्यत्रिकसोंपर्म । सहित महिषी कियोभूप
बिराट कोसहशर्म ॥ तुरग शिक्षानकुल भूपहि बिबिध भांति
देखाय । तुष्ट करि कै मत्स्यपतिको लियोधन समुदाय ॥ देखि
वृषभ बिनीत सिगरो पुष्ट गोधन भूप । मत्स्यपति सहदेव को
धन दियो बहुत अनूप ॥ द्रौपदी यहिभांति तिनको देखिक्लेश
महान । होति है न प्रसन्न श्वासा लेति रहति सुजान ॥ यहि
भांति गुप्त बिराटपुरमें बसे पांडवपर्म । करत भूप बिराटकेसब
यथा नियमित कर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिजीमूतबधबर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ बसत ऐसेमत्स्यपुरमें गुप्तपांडवसर्ब ।
बीतिगे दश मास बाकीबर्ष रहिगो खर्ब ॥ द्रौपदी करिकै सुदो-
ष्णाको शुश्रूषणकर्म । रहतिताकोकरत सेवनकरे दुःखितमर्म ॥
बसै अंतःपुरीमें बरबाम जौन सुजान । द्रौपदीको करैंते सब





भांति सों सनमान ॥ भूपको सैनेश कीचक महाबलको धाम ।
द्रौपदी को देखिकै सोभयो मोहित काम ॥ चित्तमें धरि द्रौपदी
को गोसुदोष्णापास । कहनऐसे लगोतासोंबचन लीन्हेंहास ॥
र्बै कबहूं लखी नहिं यह रूप कैसी धाम । करति है उनमादि
रेचित्तको बशकाम ॥ कहुसुदोष्णा कौनहै इत कियो कहँते
गौन । करति बशमाथि चित्तमेरो तासु औषध तौन ॥ यहसु-
दोष्णा रावरी परिचारिका अभिराम । योग्य भूषित करण कै
ह अद्द मेरोधाम ॥ लेसुदोष्णाकी सुआज्ञा नीचकीचकतौन ।
नायसिंहिनि पासजम्बुक तथातहँ कियगौन ॥ लगोकृष्णासों
कहन यहिभांति सस्मित बैन । इहांआई कहांते तुम कौनहौ
छबिऐन ॥ चन्द्रबदनी कहहु हमसों सत्यसो अभिराम । भरी
रमा कांतिसो सुकुमार ताकोधाम ॥ कमलनयने अंगतो सब
शीकरके यन्त्र । चारुहासिनि सुधासे तवबचन मोहनमंत्र ॥
नहीं तुमसी लखी भूपर भरी सुखमाबाम । देवियक्षी किन्नरी
कै श्रीशची अभिराम ॥ कांतिसों अतिभरा तुम्हरो लखतब-
दन अनूप । करैगोनाहिं स्वबशकाको महामन्मथ भूप ॥ हार
योग्य सुसद्यउन्नत कनककुम्भ समान । करत उरसिज रावरे
अतिब्यथित कठिन महान ॥ लसति त्रिबली भंगसी दबिधरे
उरसिज भार । उदरछाम गँभीरनाभी लांकतनु सुकुमार ॥ स-
रित पुलिन समान जंघा सघनपीन अलोम । मदनरोग अमो-
घ कारणअंगतो छबितोम ॥ बढ़ीहै मदनाग्निमेरे अंगमेंअति
रूप । शांति संगमहै तिहारो सुन्दरीसुअनूप ॥ आत्मदान सु-
दृष्टिकारक जलद संगम जौन । रावरो मदनाग्नि सामककरो
शीतलतौन ॥ करहुमेरेसंग सुन्दरि सौख्यको अभिराम । जान
यान बिधान भूषण बसनसों छबिधाम ॥ प्रथम बनितन तजैंगे
हम संगमेरे जौन । दाससे हमबसैंगे तवपास हे छबिभौन ॥
द्रौपद्युवाच ॥ नहींतुमहिं समानहैं हमसुनहु कीचकपर्म । सैरंध्रि

कैहम करतिहैं नित भृत्यकारक कर्म ॥ नहीं तुमको योग्यहम
परदारहैं सुनुबीर । प्रिया प्राणिनकों सुदारा धरहुधर्म गँभीर
करहुमति परदारमें तुम कबहुंबुद्धि अनीति । कामबश नरल
हतहैं ध्रुवप्राण अन्तिकभीति ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ द्रौपदीके बच
सुनि याहिभांति कीचकपर्म । जानिमातन दोषको नहिंलोकनि
न्दितकर्म ॥ द्रौपदीसों कह्योऐसे कहहुतुम नहिंबैन । बाणबि
त्वदर्थमोको कियोस्मर छबिऐन ॥ भयोबश प्रियबचन बाद
छोड़ि ऐसोमोहि । नियत पश्चात्ताप सुन्दरि होयगोफिरितोहि
सुनहुहम यहिराज्यके प्रभुत्राण कारकबीर । नहींमोसम भूमि
कोउ भरोसुबल गँभीर ॥ रूपयौवन भाग्यभूषितभोगकर अभि
राम । करहु ममसँग भोगतजिदासित्वहे छबिधाम ॥ राज्यय
ममदत्त याकी होहु स्वामिनि पर्म । भोग नानाभांति के करुमो
हिं भजुसह शर्म ॥ द्रौपदी यहिभांति के सुनि सूत सुतके बैन
करत निन्दित ताहि बोली बचन शान्त मति ऐन ॥ द्रौपद्युवाच
सूतसुत नहिं मोहि करिकै तजहु जीवन सर्ब । करत रक्षणपञ्च
पतिमम महाबल गन्धर्ब ॥ नहीं कीचक लभ्यहैं हम तुम्हैंछो
ड़हुमोह । हनैंगेगन्धर्ब तुमको महाबलकरिद्रोह ॥ गगनमें प
तालमें तुम गयहु सागरपार । नहीं तिनसों बचहुगे सो मह
बल खेचार ॥ कालरात्री सदृशाकीचक करत बांछितमोहि । ग
हो चाहत चन्द्रमाको यथाबालक जोहि ॥ चहत अप्रियकि
तिनको मूढ़ तुमसों जौन । गगनगत पातालमें नाहें बचतति
सों तौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बचनऐसेद्रौपदीके सुनिसो कीच
बीर । चलि सुदोष्णापै गयोअति मोहमगन गँभीर ॥ कहो
रंध्री भजैजेहि भांति मोको तौन । कहहुमो सोउपाय भागि
चतुर तुम मतिभौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनिसुदोष्णा बचन त
के भरे बहुत बिलाप । दियो महिषी मंत्रताके कृपासहित
माप ॥ कोऊ उत्सवमें सुरासह अन्नकोसमुदाय । देतममक





तात राखहु सदनमाहँ बनाय ॥ सुरालीबे पठैदेहैं ताहि तुम्हरे
पास । मधुर कहिकैबचनकीजो ताहि बश मतिरास ॥ बैशम्पाय-
नउवाच ॥ इवसाके सुनि बचन कीचक जाय अपनेधाम । सुरा
सह बनवाय ब्यंजन धरेअति अभिराम ॥ कार्यको करिमंत्ररा-
खोदोजौनकीचकपास । राखिमनमें द्रौपदीसों कही तौनप्रकास ॥
सुदोष्णोवाच ॥ जाहु सैरंध्री उठहु तुम बेगि कीचक भौन । पान
इच्छा मोहिं ल्यावहु सुराउत्तम जौन ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ जाहिंगी
हमनहीं महिषी सुनहु कीचक भौन । तुम्हैंहै सब बिदित जोसो
निलज कामीतौन ॥ करैंगी तव धामके जेकाम हैं अभिराम ।
तुम सुजानति जौन कीचक करैहै मम काम ॥ रावरे के भौनमें
तेहि कहो हमसोंजौन । कामबश सो होयगो लखिमोहिं दुर्मति
भौन ॥ हैं सुदोष्णारावरेके बहुत दासीदास । तिन्हैंपठवहु जाहि
लीबे सुरा कीचक पास ॥ सुदोष्णोवाच ॥ नहीं कीचक कहैगो कछु
निलजताके बैन । मम पठाई जानितुमको सो महामति ऐन ॥
दियोयह कहिकैसुदोष्णाकनक भाजन आनि । चलीशङ्काभरी
कृष्णाकुमति ताकीजानि ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ पतिन्हतजिममऔरनर
मेंजाय मानसजौन । सत्यसातिहिमम न बशकरै होयकामीतौन ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ भानुको तबकियो राधन द्रौपदी मनलाय । जानि
दिनमणि दुखित कृष्णाहिं कृपाकर सुखदाय ॥ दियेराक्षस दोय
रक्षण हेतगुप्त अखर्ब । रहत कृष्णासाथ राक्षस समयमेंतेसर्ब ॥
त्रसित आवति मृगीसी लखिभरो कीचकचाव । उठोपुलकित
होय ज्योंलहि पारगामी नाव ॥ कीचकउवाच ॥ भयो सुन्दर आग-
मन तौ मोहिं दायकशर्म । स्वामिनी ह्वै रहहु ममकरि भवन भू-
षित पर्म ॥ बसन भूषण दिव्यमणिमय धारिकै अभिराम ।
बसहुमेरी सेजपर यह रचित जौन ललाम ॥ पिवहु मदिरा मा-
धवी ममसंग रूप निकेत ॥ द्रौपद्युवाच ॥ मोहिं पठयो राजमहिषी
सुरा आननहेत ॥ पानकीन्हों चहति आतुरह्वै पिपासामान ।

कीचकउवाच ॥ रहहुसुन्दरि और जैहैं सुरालै सुखदान ॥ द्रौपद्युवाच । सभामें तब लखत भूपति मोहिं कीचक आय । तुम्हैं योग्य न
होय पतिब्रत सत्यमेरो कृष्णदेव यशस्य । तौन कीचक महाकियो मोको लातघात गिराय ॥ द्रौपदीके बचनसुनि यहिभांति
पापी करैमोकोबस्य ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोलिकै यहिभांति कीचकके बहुभूप ॥ बिराटउवाच ॥ बिदितहै तिय दुहुनको नाहिं हमैं बिग्रह
गह्यो दुपटातास । रहीक्षणक बिसूरि कृष्णा ऊर्द्धलैके श्वास रूप ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जानि बिग्रह हेतुतहँ जेरहे सभ्यसुजान ।
दियो ताहि ढकेलि कृष्णै कटो तरुसो तौन । गिरो कीचकभूमिसूतकोकरि निंद्यपूजो द्रुपदजाहि सनमान ॥ सभ्याऊचुः ॥ कमल
ऊपर महाबलको भौन ॥ कम्पपूरित द्रौपदी तेहिभूमि ऊपमैना उत्तमांगी प्रियाहै यह जास । लाभताको और का यह देव-
डारि । धर्म नृप जहँ हेगई तहँ भाजि शरण बिचारि ॥ भजताया पास ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ देखि पूजत सभाजन लखिद्रौपदी
कृष्णाहिं जातकीचक केश पकरोजाय । लखत भूपति धर्मकेकिके खेद । क्रोधसों नृपधर्मके भोभाल भूषित स्वेद ॥ द्रौपदीसों
चरण घात गिराय ॥ दोय राक्षस रक्षणारथ दियेहे जेमान कहो तब इमिबचन भूपति धर्म । जाहु सैरन्ध्री सुदोष्णा सदन
वेगसों तिन आइमारो कीचकहि बलवान ॥ कटो तरुसो गिरैहै जहँ पर्म ॥ तोहिं रोदन करत पावत क्लेशते पतिबीर । क्रोध
कीचक दुष्टक्षितिपर तौन । घूमिकैहत चेत पापी महाबलको नहिं समय याते रहतधारे धीर ॥ नहीं धावत महाबल पति
भौन ॥ लखो खैंचत द्रौपदीको चिकुर सूतकदुष्ट । धर्म नृपसजौनतौ गन्धर्ब । नहीं जानति कालको तुम करति रुदन अ-
भीमको अतिक्रोध बाढ़ो पुष्ट ॥ कियो कीचकको चहोबध दीखर्ब ॥ करैंगे गन्धर्ब तेरो जौन प्रिय है तौन । दूरिकरि हैं दुःख
ताको कर्म । क्रोधज्वालाते कढ़ीतन धूमधारा पर्म ॥ दाबिचरतौ सैरन्ध्रिते बलभौन ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ महा दायावान जिनकेअर्थ
अँगुष्ठसों नृपधर्म अँगुठातास । कियो वारण समयको लखि माधर्म्माचर्ण । करतिहैं मैं होय ताके हाथअप्रिय मर्ण ॥ गईकहि
मतिके रास ॥ बैठि कृष्णालगी रोवन सभाके रहिद्वार । दायहिभांति कृष्णा जहँ सुदोष्णा भौन । केशछूटे अरुणलोचन
चाहति चपनसों लखिभरी क्रोध उदार ॥ द्रौपद्युवाच ॥ नहीं सैसजलाबिह्वल गौन ॥ सुदोष्णोवाच ॥ करो सैरन्ध्री तिहारो कौन
वत शत्रु जाके भीति भारे सर्ब । तासुमहिषी चरणसों यह हअप्रिय कर्म । करतिहौ तुम रुदनजाते व्यथित कीन्हें मर्म ॥
कीचक खर्ब ॥ सुनत जाके धनुष की धुनि तजत हे अरि गर्ब ॥ द्रौपद्युवाच ॥ सुरालीबे आपु पठई मोहिं कीचक धाम । भूपसौंहैं
तास महिषी चरण सों यह हनै कीचक खर्ब ॥ डरत जिनसभामें मोहिं हनो तेहि गहि बाम ॥ सुदोष्णोवाच ॥ मारिहैं हम
मनुज राक्षस दनुज अरु गन्धर्ब । तास महिषी चरणकीचकहि जेहिकियो तौ अपमान ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ बधैंगे अपराध
यह हनै कीचक खर्ब ॥ शरणअर्थी जननको हे शरण दायजिनको कियोसूत महान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ द्रौपदीहत सूतसोंबध
जौन । लोकमें अप्रगट अतिरथ करत हैं ते गौन ॥ सूतसुतचाहिताको भूप । बसतही तहँगई कृष्णाधरे दुःखितरूप ॥स्नान
सतीभार्या बध्यमान निहारि । क्लीवसे ते छोड़ि अमरष रहेकरि प्रक्षाल्यकै पट सलिलसों अतिआर्य्य । लगीचिंतनजाउँकहँ
निरधारि ॥ गयो तिनको तेज अमरष कहँ प्रबलता तौन । तकिमिहोय मेरोकार्य्य ॥ चिंतियों मनदियो कृष्णै भीमसाहँ गँभीर ।
धर्षित प्रिया भार्य्या लखत नाहिं बलभौन ॥ कहा मेरो शक्यकार्य्यमेरोकरैंगे प्रियभीम अतिबलबीर ॥ चिंतिऐसे छोड़िशय्या
बिराट दूषित धर्म । कछू कीचकसोंकहैं नहिं देखि तासुकुकर्मनिशा बीते याम । चाहिनाथसोगई कृष्णाभीमके छबिधाम ॥

सैरंध्र्युवाच ॥ तौन पापी जियत निद्रा लहतकैसे बीर ॥ वैशम्पायन
वाच ॥ यहि भांति कहिकै भीमके गइभवनमाहँ गँभीर ॥ लखे
सोवत भीमकोम्टगराजसो अभिराम। लसतताके तेजसों अति
भरो सिगरोधाम ॥ दोहा ॥ गईद्रौपदीपाकगृह जहांभीम बरकाय
यथासिंहिनी सिंहढिग जंबुककोडरपाय ॥ आलिंगनकरि भीमको
कृष्णौदयो जगाय । यथामत्त गजराजको करिणी शंकितकाय
कहे मधुरस्वरसों भरे श्रवण सुधासे बैन । उठहु उठहु सोवत
कहा भीमसेन बलऐन ॥ उठिबैठेगजराजसे भीमसेन बलबीर
कहन द्रौपदीसों लगे बचन सनेह गँभीर ॥ कौनहेत आईइह
कहहुसुन्दरी तौन । देखिपरतिहौ कृशकछू भरी दुःखछबिभौन
कहहु सकल सुख दुःखतुम हित अनहित कृतमर्म । यथायोग्य
हम जानिकै तैसो कीजैकर्म ॥ है मोमें बिश्वासतव कृष्णा पर
उदार । मोचन हमतुम्हरो कियो आपतमेंबहुबार ॥ शीघ्रकह
कारज कहा कहा बांछित तौन । जाहुसख्यनको नाहिंजगै जा
लों कोउ छबिभौन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ भूप युधिष्ठिर जासुपति कं
अशोचतातास । जानत तुम सब मोहिंका बूझतहौ मतिरास
दासी मेरोनाम कहि तास भृत्यगण जौन । सभासदन में कह
हैं जारत मोकोतौन ॥ पार्थिवदुहिता ममसदृश कौन जियै
धीर । करि अनुभव यहिभांतिको दुखपरिभव गंभीर ॥ दि
दुःख बनबासमें मोहिं जयद्रथ जौन । ऐसोपरिभव सहैगो औ
मोहिं बिन कौन ॥ नृप बिराटकी सभामें कीचक दुष्ट सुभाय
लखत युधिष्ठिर भूपके खैंचो मोको आय ॥ कीचकनाम बिरा
को सेनानी है जौन । सैरंध्रीमोहिं लखिकहत भार्य्याहूबेतौन
बचन तासु बधयोग्य सुनि हृदय बिदारत मर्म । श्याला तौ
बिराटको महानीच करकर्म ॥ भ्राता ज्येष्ठ जो द्यूतरत भर्त्स
कीजै तास । प्रगटो जाके कर्मते यहअनंत दुखरास ॥ नष्टक
ऐश्वर्य सो तुम्हैं बिदितहै तौन । द्यूतकर्म जाकेप्रबल भीमसे





बल भौन ॥ जाको अति ऐश्वर्यसो इन्द्र कुबेर समान । कहत
ानधारा लखो वहतुम जासमहान ॥ नृपबिराटके अनुगतेभये
र्म नृपआय । द्यूतखेलावत सभामें बिप्र कंककहवाय ॥ इन्द्र-
प्रस्थमें जासुलहि समय सभामें भूप । देतरहे करआयतेहिधरो
भृत्यको रूप ॥ हैप्रिय पृथिवीपाल सब बसतरहे बशजास । ब-
सत सोबिबश बिराटढिग सार्ब भौम बलरास ॥ तापित करिपृ-
थिवीसकल रश्मिवान समरूप । सो बिराटको सभासद भयो
युधिष्ठिर भूप ॥ जिहि सेवत हेभूपगण बिप्रबृन्दतप भौन । भो
बिराटको प्रियंबद नृपति युधिष्ठिर तौन ॥ यहि बिधि नानादुःख
सों पीड़ित बिकल अधीर । शोकार्णव में मग्नमोहिं देखतकहा
बीर ॥ करत असूया मनैमन सुनि दुःखित ये बैन । सूदकर्म
असमय लहे भयेहीन बलऐन ॥ बल्लभ कहत स्वजाति जन
शोक होतसुनि मोहिं । कारक भूप बिराटके जानतहैं सबतोहिं ॥
सिद्धपाक सुनि भोजनाहिं नृपबिराट जबजात । बल्लभ तुमको
कहततब मोमें दुखन समात ॥ महिष सिंह गजसों तुम्हैं जब
लखावतभूप । लखै सुदोष्णातब चढ़ैममहियमें दुखयूप ॥ तुम्हैं
लखति यहिभांति दुख निधिमहँमग्न गँभीर । करति नहीं उ-
साह तब जीवनमें हमबीर ॥ देव सुदानव मनुजको जेता जो
बलभौन । नृपबिराटकीकन्यकहि नृत्यसिखावत तौन ॥ तृप्तकरो
जेहि पावकहि खांडव बनकरि दाह । सोअंतःपुरमेंबसतबलसों
भरो अथाह ॥ ज्याघर्षणते कठिन अति करिकरते अतिचण्ड।
शंखबलय भूषित करे सोअर्जुन भुजदण्ड ॥ जाके धनु टंकार
को सहत न है अरिसाम । गीतनादताको सुनै अंतःपुरमेंबाम ॥
भानुसमान किरीटसोंभूषितमूर्द्धाजास । ताअर्जुनकेशीशपरबेणी
करति बिलास ॥ रोला ॥ जोसमस्त दिब्यास्त्र बेत्तायुद्धजेताबंक।
जिष्णुबिद्या भवन धारण किये सोताटंक ॥ दोहा ॥ जाकेरथ के
घोषते सहागिरिकानन सर्ब । स्थावर जंगमभरी भूकांपत रहीं

अखर्ब ॥ जाके जनमतही भयो कुन्ती शोक बिसोच । भीमसे पदकन्या जौन । पाय ऐसीदशा जीवति और हमसीकौन ॥
तुवअनुज सो हमैं बढ़ावत शोच ॥ जासम उर्वीपैनहीं और भीमजानत जौन मोको रहोसुख अतिमान । भईदासी तौनहम
नुर्धर धीर । कन्यन मधिसो करत है गान धनंजय बीर ॥ तर्कमिलहैं शांति सुजान ॥ दैवकृत हमक्यों नमानति जहँ धनं-
देखिसहदेव को गोगणमध्य गँभीर । पांडुवेष सूरजभरो बलय बीर । छन्नपावक सो महाबल रहत धारे धीर ॥ जौनमेरो
बर्दसों बीर ॥ पुनः पुनः सहदेवको समुझि समुझिबिरतान्तलखतहै मुख इन्द्रसे तुमसर्ब । तौनहम अबलखति हैं मुख और
भीमसेन नहिं निशामें निद्रालहति नितान्त ॥ नहिंजानातिसको अतिखर्ब ॥ जास सागर मेखलाक्षिति रहीबश्य महान । सो
देवकोदुष्कृतकीन्हों जौन । जातेयहिविधिको लहतदुःखमहामांसुदोष्णा भीतिबश अब बसति हैं मतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
भौन ॥ भीमसेनअतिदुख लहति लखितवभ्राताबीर । वृषसोकिसुनतऐसे द्रौपदीके बचन भीम अधीर । लायहियसों लगेरोदन
बिराटनृप गोगणमाह गँभीर ॥ मधुरबाकलज्जाभरो ममप्रियकरन अतिबलबीर ॥ पाणिकृष्णाके पकरि इमि भीमबोले बैन ।
र्मिक जौन । भूपभक्तसुकुमारअति शूरसत्यमतिभौन ॥ यहकाभरे दारुण क्रोधसों अति महाबलके ऐन ॥ भीमउवाच ॥ धिगहमारो
कुन्तीपुत्रप्रिय अंकमाहँ लेजाहि । सौंपिमोहिं घरको गई चलबाहुबलहै जिष्णुको धनुजौन । लखत बलय बिहीनतव करकंज
बिपिनकोचाहि ॥ गोगणमें सोकरतहै बत्सचर्मपरसैन । ऐसेलसुखमाभौन ॥ सभामाहँ बिराटको हमकरै कदनमहान । तहां
सहदेवको जीवनहमैंरु चैन ॥ रूपशस्त्र अरुसुमतिसों जौननकुकारण धर्मनृपहै तासुरक्षक प्रान ॥ मथन कीचकको करैकैजौन
सम्पन्न । सोबिराटके हयनके रक्षकता आसन्न ॥ छोरत बांधदुष्टमहान । भरोमद ऐश्वर्य्य आपुहि गणतजो बलवान ॥ लखो
हयनकी करत चिकित्सा जौन । चढ़िकैफेरि बिराटको तुरग हम जबकियो कीचक तुम्हैं पादाघात । कियोतबहीं चहोहमसब
खावत तौन ॥ सुखिनी हैं हमकौनाबिधि जासुव्यथित अतिममत्स्यबंश निपात ॥ कियोनेत्र कटाक्षसों तबहमैं बारणधर्म । रहे
तुमजानत यहिदुःखके बारण राजाधर्म ॥ तुम्हैं जियत हम सस्थिर हमजानिताको मानसिक का मर्म ॥ कियोहम नाहिं राज्य
तिहैं येदुख बिबिध बिधान । शोषण करति शरीरको कादुकूटत कुरुन को बधजौन । दहत मेरे गात्रको समशल्य अर्पित
और महान ॥ सैरंध्रीको वेषधरिहौं बिराटके भौन । कार्यसुदोषणातौन ॥ क्रोधछोड़हु धर्मको नहिं तजहु हे मतिऐन । कहहु कछु
कोकरति धूतकर्म फलतौन ॥ देखुव्यवस्था मम सकल राजपुनहिं धर्म नृपप्रति तुमजुगुप्सित बैन ॥ पतिव्रत रतभई नारी
बरबीर । दुःखकाल के अन्तको देखति धारेधीर ॥ अर्थ सिजनकजादिकजौन । सहोक्लेश न धर्मछोड़ो तथातुम छबिभौन ॥
अरु जयाजय करिअनित्य अनुमान । जानति ह्वैहै पतिनत्रयोदश जोबर्षतामें रहो आधोमास । क्षमाकुरु फिरि राजपत्नी
पुनःउदय सुखदान ॥ प्राप्तहोतहै समयलहि जनकोजय आहोहुगी छबिरास ॥ द्रौपद्युवाच ॥ आर्त्तह्वै हमकियो मोचन भीम
न्द । समयहि लहिकै होतहैप्राप्त अजयकोदन्द ॥ प्राप्तसुयोधलोचन बार । नहीं निन्दति भूपको दुखसिंधु जानिअपार ॥ रूप
कोभयो समय सुजयको पर्म । अजयहु ह्वैहै धीर्यमें धारति यसोमम जानिआविभव आपनोनृप बाम । लहतिहै उदबेग मनमें
गुणि मर्म ॥ कथितहमारे बचनको भीम प्रयोजन जौन । पुक्तलखिसुदोष्णा माम ॥ जानिताको भाव मनको दुष्टकीचक तौन ।
तुम हमकहैंगी पूछेते सबतौन ॥ रोला ॥ पांडुपुत्रनकी सुमाहिरोकिमोसों कहतबारिबे महापातक भौन ॥ कोपको करिनियम

तासा कहतिहैं हमबैन। पंचपतिमम यक्षरक्षक महाबलके ऐन
कहहुमोसों नहींअनुचित करहुरक्षण प्रान। तुम्हैं कीचक मा
हैं ते साहसी बलवान ॥ कहत कीचक डरत हम नहिं तिन्हैं
कारवर्ब। पंचकाहम हनैंसहसन युद्धमें गन्धर्ब ॥ कहति हम
सुकुलशीला धरेपतिब्रत धर्म। नहींतुम्हरो मरणचाहति सुन
कीचकमर्म ॥ दुष्टसो सुनिबचन मेरोकरतहै अतिहास। प्रण
करि पठवैं सुदोष्णा मोहिंताके पास ॥ भ्रात्र प्रियसो प्रथमता
कियेमंत्र निदेश। सुराआनन हेतुपठयो मोहिंतास निबेश ॥
तसुतमोहिं देखिलागो कहन अनुचित बैन। नहींमानो क्रोधक
तब चलोपातक ऐन ॥ जानिकै संकल्प कीचकको महादुखदा
लईशरण बिराटकी हम बेगसों तबधाय ॥ लखत मोहिं बिराट
तहँआय कीचक रुष्ट। मोहिंमारो लातसों गहिडारि क्षिति
दुष्ट ॥ रहेलखत बिराटकेतहँ सभासद जनसर्ब। कियोनिन्दि
कंकफिरिफिरि जानिताको खर्ब ॥ भूप बारणकियो नहिंकहि त
हिनिष्ठुरबैन। युद्धमाहँ सहायकरता जानितेहि बलऐन ॥ त्य
धर्म नृशंस सोप्रियहै सुदोष्णा तास। पापआत्मा पापकर्मा बँ
मन्मथपास ॥ करैरक्षा भार्य्याकी प्रजारक्षित होत। प्रजारक्षि
करैरक्षित होतआत्मा गोत ॥ जन्मजामें लेतआत्मा सुनहुजा
तौन। शत्रुमारण धर्मक्षत्रिनको कहैंमतिभौन ॥ धर्मनृपके लख
कीचककियो पादाघात। बर्त्तमान सुभीमतुमको हमैंयह उत्पा
जटासुरसों कियो रक्षितहमैं तुम बरबीर। जयद्रथको मथनक
न्हों साहितसैन गँभीर ॥ दोहा ॥ हनिये पापीकीचकहि देतमो
दुखजौन। फेरिनयाते जाउँ मैं तौनअधमके भौन ॥ कारणजा
अनर्थको बहुतनको ममबीर। सूर्य्य उदयलौंजियैगो तौ
मरण गँभीर ॥ भीमश्रेय हमको मरण जो तवआगे होय।
कहिलागी भीमाहिय आतुर कृष्णारोय ॥ भीमलाय हियसों
बहुत शान्तिकरबैन। हेतु और तत्त्वार्थके नीति रीतिके ऐन





भरो अश्रुकृष्णा बदन पोंछिपाणिसों भीम। कीचकबधमनमेंध-
रो चाबिओठ बलसीम ॥ भीमउबाच ॥ यथाकहहु तुमद्रौपदी तथा
करैं अनुरूप। आजुहनैंगे कीचकहि सहित बंधुगणभूप ॥ कहहु
द्रौपदी आजुतुम लहिप्रदोषता पास। दुःख शोक गोपनकिये
नियमबचन प्रियतास ॥ नर्त्तनशाला जौनयह भूपरची अभिरा-
म। दिनमें कन्यानृत्यकरि निशिलहि जाहिंस्वधाम ॥ तहँशय्या
है दारुमय सुदृढ़दिव्य अभिराम। मिलिबेको संकेततहँ कहौ
ताहिहैबाम ॥ सोरठा ॥ सोथलहै एकान्त तहांताहि हममारिहैं।
करि हैं तवदुखशान्त शोचचित्तते दूरिकरु ॥ दोहा ॥ यथा न
जानैंतुम्हैंवह सम्मत कारणजौन। होययथा सन्नद्धसोयथाकर-
हु मतिभौन ॥ बेशम्पायनउवाच ॥ यहिबिधिकृष्णाभीमकरि सम्मत
दुखितमहान। रात्रिशेष लखिकरि बिदा धरोक्रोध अतिमान ॥
भोरभये कीचकअधम राजभौनमें जाय। कहन द्रौपदीसोंलगो
ऐसे अवसरपाय ॥ हतो चरणसों नृप लखत डारि भूमिपर
तोहिं। तबसैरंध्री त्राणकरकाहुन बारोमोहिं ॥ कहिबेकोमत्स्या-
धिपतिहै राजाको नाम। हमहैंराजा वाहिनी के पति अतिबल
धाम ॥ सुखसों हमको भजहु तबहमकैहैं प्रियदास। शतदासी
रहिहैं सदा सेवनको तबपास ॥ दास सहस्रन अश्वरथ जटित
मणिनसों जौन। ममसंगमसों सुन्दरीतोहिं भजैंगेतौन ॥ द्रौप-
द्युवाच ॥ यह सम्मत मोसों करहु हे कीचकबलधाम। सखाबंधु
जानै नतुव ममसंगमअभिराम ॥ हमप्रवादसोंभयधरति गंधर्बन
सों बीर। ऐसे जानहु होहिं हम तब तुववश गम्भीर ॥ कीचकउ-
बाच ॥ ऐसेही हम करैंगे यथा कहतितुमबैन। हमएकाकी आइ-
हैं जहँ तुवसूनो ऐन ॥ संगमार्थ रंभोरु तवलहिबे मन्मथशर्म।
जानाहिंगेगन्धर्ब नहिं ममतवसंगमपर्म ॥ द्रौपद्युवाच ॥ रचोनर्त्त
नागार जो मत्स्यराज अभिराम। नाचिदिवसमें कन्यका जाहिं
आपने धाम ॥ चलहु निशामें तहां तुम जानेनाहिंगन्धर्ब। रहत

भौनसो निशामें तमसों पूर्ण अखर्व ॥ कृष्णा कीचक कहत
गयो दिवस द्वैयाम । भयो दिनार्द्धसो मासमम कीचकको
काम ॥ कीचक अपने गृहगयो भरो हर्ष अतिमान । नहिं सै
रंध्रीरूपकी जानत मृत्यु अयान ॥ गन्धमाल्य आभरणसो भूषि
कीन्होंकाय । चिन्तन कृष्णाको करत काम मोह मदपाय ॥ नान
बिधि शृङ्गारते सुखमा बाढ़ीताश । बाती ज्योंबढ़िकै बरतिदीप
पावतनाश ॥ तासों प्रत्यय संगकोकरि कीचक बशकाम । जान
जानो दिन समुझि संगम तास ललाम ॥ गई द्रौपदी भीमज
रहे पाकगृहमांह । कीचकसों निश्चयभयो तौनकहो गहिबांह
शून्य नर्त्तनागारमें अधम जायगोतौन । जायताहि यमधाम
बेगिकरावहु गौन ॥ आंशु हमारे पोंछिये दुःखितको बरबीर
भद्र आपनो कीजिये कुलकोमानगँभीर ॥ भीमउवाच ॥ प्रिय य
जो हमसों कहो आगमतौ अभिराम । चाहत और सहायन
बध कीचकको छाम ॥ सत्य पुरस्कृतकरि कहत बधकीचक
जौन । कियो इन्द्रज्यों वृत्रबध हम हिडम्ब बल भौन ॥ गुप्तप्रका
न बचैगो कीचक हमसों अद्य । करिहैं मत्स्य सहाय तौ तिन
हनिहैं सद्य ॥ द्रौपद्युवाच ॥ यथा त्यजत नाहिं सत्य तुम भीमसे
ममहेतु । तथा गुप्त हनु कीचकहि हे कुरुकुल के केतु ॥ भीमउवाच
यथा कहति तुम करहिंगे हम तैसो सुखदान । आजु कीचक
बन्धुसह हनि करिहौं गतप्रान ॥ अदृश्य तामिस्रा माहँकै
हरतजोनाग । भग्नकरैंगे तासशिर हम तैसे बड़भाग ॥ बैशम
यनउवाच ॥ भीम प्रथमहीं जायतहँ छपिकै बैठेभूप । लायघा
मृगको लखतयथा सिंह अतिरूप ॥ नर्त्तनशालाकोगयो कीच
करि शृङ्गार । सैरंध्रीसों सुरतिकी आशाधरे उदार ॥ तहां पू
गत भीमकेगयो दुर्मती पास । हँसिबोलो लखि शयनपर भ
काम रस आस ॥ नानाबिधिके देहिंगे हम तुमको धनधाम
सैरंध्री भजिहैं तुम्हैं दासीशत अभिराम ॥ मोहिं प्रशंसा





संसदा जो युवती मतिमान । दर्शनीय नहिं जगतमें हमसे और
बसुमान ॥ भीमउवाच ॥ दर्शनीय तुमजगतमें हैं तुमऐसोकौन । दर्श
अपूर्व सु आपुको कौनलहै छबिभौन ॥ चहै बिदग्ध स्पर्शतव
क्रीड़ा पटु बरबीर । युवतिनके तुम प्रीतिकर तुम छबिभरे गँ-
भीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ यहिभांति यहकहिभीमतासों महा-
बल रणधीर । जाय सहसा ताहि पकरो भरे क्रोध गँभीर ॥ सै-
रंध्रिमारे तोहिं फिरिहै भई निभ्रमं दुष्ट । बोलि ऐसे केश ताके
आय पकरे पुष्ट ॥ केश गहिकै लगे खैंचन भीम अतिबलवान ।
भुजनसों तबगहो कीचकभीमको अतिमान ॥ मल्लयुद्ध सुकरन
लागे सिंहसे दोउक्रुद्ध । यथा करिणीहेत दोय सुद्विरद अतिबल
उद्ध ॥ दुहुनके दोर्दण्ड राजत पञ्चफणसे सर्प । नख दशनसों
अन्योन्य करतप्रहार सबिष सदर्प ॥ बेगसों अतिहनो कीचक
भीमको बलवान । नहीं पदभरि चलोसत्य प्रतिज्ञ मेरुसमान ॥
भुजनसों अन्योन्य गहि दोउलरनलागे क्रुद्ध । बली बर्द्धसमान
दोऊलसे अतिबल उद्ध ॥ तुमुल दारुण भयो तिनसों युद्धउद्ध
महान । नख दंष्ट्रयोधी लरतजैसे सिंहद्वै बलवान ॥ भीमकीचक
कोगहो तब भुजनसों अतिघोर । भुजनसों गहि लियो कीचक
खैंचि अपनी ओर ॥ दुहुन के भुज घातसों अति भयोशब्दप्र-
काश । लगे पावक प्रबल जैसे सघन फूटत बांश ॥ कियो क-
विलम्पित भीम तब तेहि पकरिकै बलवान । खैंचिकै तेहि भीमम-
र्दत भयो निबल समान ॥ होय कम्पित फेरि गहिकै भीमको
अतिकाय । पांडुसुतको जांघके भरदियो सूत गिराय ॥ दोहा ॥
छोड़ि क्षिप्र क्षिति भीमतब गहो क्रोध करि उद्ध । करनलगे
दोऊ प्रबल महा भयानक युद्ध ॥ चाहत जय दोऊ प्रबल
सूत पुत्र अरु भीम । शून्य सदनमें निशामधि लरन महाब-
ल सीम ॥ कीचकके हियपै करो भीम महातल घात । भरो
तिरोषसों सूतसुत लहो न भूमि प्रपात ॥ भीम मुहूरत भरिसहो

ताको बेग महान । मर्दित करिकैभूमिपर दियो डारिबलवानरि हाथ न पाय ॥ करिबेको ताको संस्कार । ले चलिबेकोकियो
हनो जानिकै भीम तब ताहि महाबलबीर । चढ़िकै ताके हृदयचार ॥ तहँ देखी कृष्णहि तिनसर्ब । खड़ीस्तम्ब गहिरूपअ-
पर मर्दनलगे गँभीर ॥ फेरि क्रोधबश केशगहि कीचकको अर्ब ॥ निकट जायते बोलेबैन । हनहु याहि यह अधरम ऐन ।
तिमान । भीमसेन खैंचनलगे शालामैं बलवान ॥ पिसिताकीचक कामी लहिहैं शर्म । मरेहु तासकीजै प्रियकर्म ॥ कीचक
क्षीसिंहज्यों मारि द्विरदअतिकाय । लगेकढ़ोरन भूमिपरउन्नो गयो जेहि अर्थ । दाहहुतेहि सँगयाहि समर्थ ॥ तेबिराट
त क्रुद्धसुभाय ॥ भीमसेन ताकी पकरि ग्रीवा तोरीबीर । शानों बोलेजाय । कीचक मरो हेतु यहपाय ॥ आज्ञादेहु हमैं तुम
करनको द्रौपदी को अति क्रोध गँभीर ॥ भग्नतास सर्बांग कााथ । दाहैंयहि कीचकके साथ ॥ जानि पराक्रम तिनको भूप ।
कटि गहि डारी तोरि । डारो ताहि घुमायकै दोऊ लोचन फोआज्ञादियो तिन्हैं अनुरूप ॥ तिन कृष्णहिपकरी बरजोर । बि-
रि ॥ हाथ पांवशिर मरदिकै कीन्होंपिण्ड समान । डारि सलिलल भरीत्रास सों घोर ॥ बांधि रथीपर कृष्णहि नाय । तेश्म-
ज्यों जानिकै शखत मनुज पिसान ॥ भीम देखायो द्रौपदिशान को चले उठाय ॥ रोदन करति पुकारतिनाथ । कृष्णाम-
कीचक कोसोरूप । निकट बोलाय प्रकाश करि बारि अग्नितन शोकनिधिपाथ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ जयजयन्त जैबिजय महान ।
भूप ॥ पाञ्चालीसों कह्यो इमि निकट बोलिबलभौन । सोकीयद्वल जयसेन बलवान ॥ सुनो बचनते मेरो सर्ब । ज्याधर्षित
चक मारोगयो तुम्हैं चहतहौ जौन ॥ कृष्णाको प्रियकर्म्म युजजास अखर्ब ॥ जाके धनुज्याको टंकार । बज्रध्वनितसमान
करि दुष्कर गम्भीर । मारि कीचकहि क्रोधकी लही शान्तिबदार ॥ तेमेरी यहसुनै पुकार । हरेजात मोहिंसूत कुमार ॥ बे-
बीर ॥ कीचक को बधकरि गये भीम पाकगृहमाह । कहौ द्रौम्पायनउवाच ॥ सुनत भरे करुणासों बैन । कृष्णाके अति आरति
दीजाय इमि सभामाहँ नरनाह ॥ जौन परस्त्री को चहतकाऐन ॥ शयन बिहाय भीम बरबीर । आतुर उठो महारणधीर ॥
निरत मतिखर्ब । तौन नर्त्तनगृहमें मरो सुनहु सभाजन सर्बीमसेनउवाच ॥ हम सैरंध्री बचन तुम्हार । सुनो भरो दुखदुसह
सुनत नर्त्तनागारके रक्षक हे तहँजौन । बारिमशाल अनेकतदार ॥ सूत सुतन ते भयनहिं तोहिं । ह्वै है सुन्दरि जीवत
गये सहस्रन तौन ॥ देखो मरोपरो कीचक को तिनसब तोहिं ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ धारि क्रोध अतिशय बलवान । ति-
जाय । बिना प्राणको भूमिपर रुधिर भरो सब काय ॥ पाणिपाहिं हननको करि अनुमान ॥ समगन्धर्ब वेषधरि बीर । नां-
अव्यक्तशिर लखिकै पिण्डसमान । कर्म अमानुष जानिकै बिपुर प्रकार रणधीर ॥ जायसो पुर बाहर बलवान । लियो
स्मयभरे महान ॥ कहँमुख ग्रीवाचरण शिर कहँगये पाणिअखारिवृक्ष अतिमान ॥ सो श्मशान दिशिचलो उदार । गये
खर्ब । यह बिचारि मनमेंधरे नियतहने गन्धर्ब ॥ तहांते सूतकुमार ॥ जहां रहो अति बिपिन गँभीर । क्षिप्रगयो
इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिकीचकवधवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ६ हिले तहँबीर ॥ चितासमीप रहेतहँ जाय ॥ हनिबेचाहि तिन्हैं
बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ कीचकबन्धु सकल तेहि काल । सअतिकाय ॥ दशव्यायाम वृक्षको मूल । धरे स्कन्धपर बीर अ-
नि आये लखिकर्म कराल ॥ घेरि कीचकहि चारों ओर । रोदमूल ॥ चलोसूत पुत्रनकी ओर । दण्डधरे अन्तक जिमिघोर ॥
करनलगे अतिघोर ॥ देखिकूर्मसम कीचककाय । जानि पराको लागे जंघ प्रहार । गिरेभूमिपर वृक्षउदार ॥ सिंह समान

क्रोध गन्धर्ब । आवत जानिभजे तेसर्ब ॥ तेसबभरे भीति
माम। लगेधरन कीचक कहिनाम॥ लागे कहन परस्परतौं
यहगन्धर्ब क्रुद्द बलभौन॥ वृक्षायुध आवत सम काल । छो
देहु सैरंध्रिहि हाल ॥ छोड़ि द्रौपदिहि भाजे सर्ब । नगर आ
भयभरे अखर्ब ॥ बज्रीहनो दनुज समुदाय। हने भीम त्यों
नको धाय ॥ पांच अधिकशत कीचक भ्रात । तिनका की
भीम निपात॥ आश्वासन कृष्णाको पर्म। कीन्हों तिनसों
चि सशर्म॥ अश्रुमुखी कृष्णाकेपास। ऐसे भीमकहोबलरास
दियोक्लेश तुमकोजिन बाम। तिनको हमपठये यमधाम॥ जा
नगरको तुम छबिभौन। अन्यमार्ग हम करिहैं गौन ॥ गई
गरको कृष्णा बाम। गयेभीम जहँभोजन धाम॥ महादाश्च
देखियह कर्म। बोलत कोऊ न भारेभर्म ॥ बैशम्पायनउबाच ॥
नको हनत लखतहे जौन । डरिकै करि अति आतुर गौन
तिन सूतनको जाय बिनास। किय गन्धर्ब कहो नृपपास ॥
ज्वाहत ज्यों पर्बतसान । तथासूत सबमरे महान ॥ कै बिमु
सैरंध्रीतौन। आई भूप तिहारेभौन ॥ दोहा ॥ अतिही संशय
भरो भयो नगरसब भूप। महाबलीगन्धर्बते सैरंध्री अतिरूप
पुरुषनको है इष्टतम मैथुन बिषय उदार। सैरंध्रीके देखते
पुर नृपन तुम्हार॥ तातेसो कीजै नृपति नीति निपुणता प
बसैप्रजा ते कुशलगहि पुरजनमाहँ सशर्म॥ सूतन्हकी कि
क्रिया कहो नृपति मतिऐन। सुनिसो इनके दाहकी भिन्नभि
बिधिहैन। रचिकै काष्ठ सुगन्ध की चिताएकही भूरि। जारे स
सूतजनको महाशोकसों पूरि ॥ जानि सुदोष्णा चित्तकी वृ
कहो योंभूप। सैरंध्रीको रुचैजहँ तहांजाय अनुरूप ॥ कहो
दोष्णै भूपके सुनिकै ऐसे बैन। सैरंध्रीतुम जाहुइत बास यो
लवहैन ॥ अबिभवको मनमें धरत गन्धर्बनसों भूप । आपु
तुमसों कहत हम कहति नृपति अनुरूप ॥ बैशम्पायनउबाच ॥





पुत्रके त्रास ते ह्वैकै कृष्णामुक्त। चली बाहिरे निकसिकै तजि
ह भूपति भुक्त॥ त्रासित यथा मृगेन्द्रसों मुक्तमृगी सुखदान।
सन सहित शुचिसलिलसों करिकै शुद्दस्नान ॥ ताहिदेखि
ाजे पुरुष भयभरि चारों ओर । गन्धर्बन की भीतिसों त्रस्त
ये अतिघोर॥ रहेमहान सद्वारपै बैठे भीमउदार । पाञ्चाली
खो यथा भरोनाग मदभार ॥ बोली बिस्मित करत तेहि सं-
ा ज्ञापक बैन। नमस्कार गन्धर्बको जेहि मोची बलऐन ॥ भीम
बाच॥ पुरुषरहे बिहरत इहां नृपबशवर्त्ती जौन। अनृण होयकै
ायकैसुखसों बिहरोतौन ॥ बैशम्पायनउबाच॥ रक्षाकरनोकृष्णाको
रुगुप्तबर्षको बास। हुतेपाण्डवनपै ऋणह्वै भूपति बलरास ॥
दनु द्रौपदी जिष्णुको लखो नतरनागार। जौन नचावन नृप
ुता बलसोभरो उदार । निकसि उत्तरा जिष्णुसह नृत्य भव-
ते भूप। कृष्णाको आवतलखो भरीकलेश अरूप॥ बृहन्नलोवाच॥
रंध्रीतुम भाग्यते भई मुक्तछबि भौन । मरोकौनबिधि अधम
ा कहहु सकल तुमतौन ॥ सैरंध्र्युवाच ॥ कहा बृहन्नल रावरो
रंध्री सों कार्य। तुम कन्यापुरमें बसत बीरमोदसों आर्य ॥ सै-
ध्री जो सहतदुख तुमनाहिं जानत तौन। याते बूझतहँसतसो
ानिमोहिं दुखभौन ॥ बृहन्नलोवाच ॥ बृहन्नला अतिसहत दुख
ीवदेहकोधारि। सुन्दरिसो तुमसों कहतजानिलेहुनिरधारि ॥
सेतुम्हारे साथ ते तुम तिनके सँग बास। तुम्हें दुखित लखि
हतहैं ते दुख अति बलरास ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ तबकन्यनके
सँगगई कृष्णा भूपतिधाम। कहोसुदोष्णै द्रौपदीसों नृपआज्ञा
ाम ॥ सैरंध्री तुमको रुचै जाहु तहां सुखरूप । गन्धर्बनसों
डरतहैं जानिपराभवभूप ॥ तुम तरुणी अतिरूपमय तरुणरूप
बशसर्ब । हनतकोप करिकै प्रबल तो पतिजे गन्धर्ब ॥ सैरंध्यु-
बाच ॥ करै क्षमा मोपै सुनहु तेरह दिनलों भूप । सुदोष्णा
सुख लहैंगे ते गन्धर्ब अनूप ॥ तब मोको ले जाहिंगे करितो

प्रिय गंधर्ब । बन्धुनसह भूपति लही ध्रुवश्री शर्म अखर्ब

इतिबिराटपर्बणिभाषायांकीचकबधोपाख्यानबर्णनोनामदशमोऽध्यायः

जयकरा ॥ सहभ्राता कीचक की मर्ण । महा भीतकर की
स्मर्ण ॥ जनजन प्रति चर्चा अतिमान । रहति बढ़ी भयभ
महान ॥ कीचक अरिसेना जेतार । दारा लम्पटमरो उदार
चार सुयोधन पठये जौन । यह सुनि खबरि गयेसुनि तौन
देखिदेश पुरपत्तन ग्राम । हास्तिननगर गयेनृपधाम ॥ भी
द्रोणकर्ण कुरुबीर । सहित सुयोधन जहँ रणधीर ॥ कहनल
ऐसेते चार । भूप सुयोधन पास उदार ॥ चाराऊचुः ॥ चारौंअ
नगरपुरजौन । बनपहारसरितासर तौन ॥ हमढूंढ़े करिआनि
प्रचार । पाण्डवमिले न कहूं उदार ॥ गये कहां धरिकौनर
रूप । पांडव लक्षितभये न भूप ॥ जानिपरत तिनलहोबिना
तो कल्याणभयो मतिराश ॥ सूततास पांडवबिन सर्ब । गये
रकापुरी अखर्ब ॥ नष्ट अवश्य भयेते भूप । भावी तवकल्य
अनूप ॥ सुनहु एक प्रियवार्त्ता और । भूप सुयोधन कुरुक
मौर ॥ हने त्रिगर्त्त बीर अतिमान । कीचक सूतपुत्र बलवान
जो बिराट भूपति को तौन । होसेनानी अतिबल भौन ॥ ग
र्बन मारो निशिमाह । भ्रातनसहित सुनो नरनाह ॥ क्षिति
परे लखे हमसर्ब । काहू नहिं देखे गन्धर्ब ॥ यह सुनिकै
कुरुकुल भूप । हूजै कृतकृत आनँद रूप ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिचारप्रत्यागमनबर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११

बैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ चारन्हके सुनि भूपति बैन । चु
चिन्ति रहो मति ऐन ॥ सभासदनसों ऐसेभूप । बोलोभरा
खसों रूप ॥ कारज गतिको अन्त उदार । ताको तुमसब क
हु बिचार ॥ पांडवगये कहां ते सर्ब । बाकीरहो काल अबखर्ब
बर्ष त्रयोदश चहतसिरान । तिनकोशोधन लगोप्रमान । बी
सकल त्रयोदशबर्ष । अतिबल पांडव भरेअमर्ष ॥ बसत म





बिषसे समसर्प । ते प्रगटैंगे भरेअदर्प ॥ सकलकालवेत्ता बल-
वान । ज्यों बनको फिरि जाहिं महान ॥ ताते तैसोकरहु नरेश ।
होय अकंटक राज्य सुदेश ॥ कहो कर्ण तबऐसे बैन । पठवहु
चारधूर्त्त मति ऐन ॥ ढूंढ़ैंबन पुरदेश पहार । नानारूप धारिते
चार ॥ तब दुःशासन बोलेबैन । दुर्योधन सों दुर्मति ऐन ॥ जा-
को भूप तुम्हैं बिश्वास । पठवहु तौन चार मतिरास ॥ कहो क-
र्णसों सम्मत बैन । चहुँदिशि चारफिरैं मति ऐन ॥ लहैंनतिन
की गतिस्थितिचार । तौजानहुगे सागरपार ॥ कैखाये गहिका-
हु नाग । कैमरिगये क्षुधित दुर्भाग ॥ समाधान मनकोकरि भू-
प । करहु राज्यको कार्यअनूप ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ तबबोले इमि
द्रोणाचार्य । नहिंबिनशत ऐसे मतिआर्य ॥ पांडवशूर अस्त्रविद
सर्ब । नीति निपुणधर्मज्ञ अखर्ब ॥ सकल जितेन्द्रीबीर कृतज्ञ ।
पांडव सिगरे सर्बज्ञ ॥ ते सब भरेपरस्पर राग । सेवतधर्मनृ-
पहि बड़भाग ॥ तातेनीति निपुण जैसर्ब । किमिनभजै श्री ति-
न्हैंअखर्ब ॥ बलतेउदै कालकी जौन । पांडवसब देखतहैंतौन ॥
नाशकियो चाहत तेबीर । जानिपरतयह हमैंगँभीर ॥ अबजो
करिबे तुम्हैं बिचार । क्षिप्रकरहु सो भूप उदार ॥ मिलतन जो
पांडवगुण धाम । बीरधीर धुरधर्म ललाम ॥ जैसे जानिपरैंते
बीर । तौन करहुधरि धीरजधीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोले सत्य
धर्मधुर धाम । भीष्म पितामह नीति ललाम ॥ कहे द्रोण जे
बचन प्रमान । भरतबंशबर्द्धक सुखदान ॥ भूप युधिष्ठिरके नि-
पास । रहतसत्यकीन्हें ध्रुवबास ॥ पांडवदेखत समयप्रमान ।
सत्यप्रतिज्ञ बीर बलवान ॥ क्षत्रधर्मरत शतब्रतमान । कृष्ण
अनुग प्रियपरम सुजान ॥ तेक्षैहैं नाहिं दुःखित भूप । शतब्रत
धर्म धुरंधर रूप ॥ भये गुप्तते बचन प्रमान । पांडवबीर महा
बलवान ॥ नहीं नाश पायो तिनबीर । कहति सुमति मम ऐसे
बीर ॥ कहत यथामति हमयहबैन । तुम्हैं ढूंढ़िबो नीतिसुहैन ॥

चिंत्य पांडवनहमको जौन । कहिबे योग्य कहतहैं तौन ॥ क
हत सुहृद ताके अनुरूप । नहीं द्रोहते भाषतभूप ॥ बर्ष तेर
भूपति धर्म । बसिहैं जहँ सह भ्रातन पर्म ॥ तौने भूपको अ
कल्यान । कैहै नहीं भूपमतिमान ॥ सत्य प्रियंबददाताशूर । ज
बसिहैं पांडवबल पूर ॥ हृष्ट पुष्ट तहँके जन सर्ब । भरे होहिं
मोद अखर्ब ॥ मानीमत्सर पापीतत्र । नाहिं जनबसत धर्मन
यत्र ॥ भूरि दक्षिणा तेपरजन्य । वर्षीनित्यदेशसोधन्य ॥ निर
तंक भूशस्यमहान । स्वादु अन्न फलसुरससमान ॥ निर्भेदे
सो कैहै पर्म । बहुगो जहँ बसिहैं नृपधर्म ॥ कैहै सबगुण भ
सो देश । बासकरत जहँ धर्मनरेश ॥ चहत बिचारि कृत की
बे जौन । क्षिप्रकीजिये भूपति तौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बो
कृपाचार्य्यतबबैन । युक्तकाल लखिकै मतिऐन ॥ भीष्मकहे
बचन प्रमान । सुनहु कहत हम जौन सुजान ॥ तिनको ती
निकट कहुंबास । चिन्तित करहुभूप मतिरास ॥ नीति बिध
करहु तुमतौन । तुम्हैं होयहित भूपतिजौन ॥ निदरीरिपु न
अबल सुजान । येपांडव अतिरथ बलवान ॥ गुप्तवेष पांडव
बिचारि । तिनकों उदय कालनिरधारि ॥ मित्रस्वराष्ट्र माहिं
जौन । स्वबल जानि लीजैनृपतौन ॥ उदय पांडवनको जो भू
प्राप्तभयो अब निकट अनूप ॥ समयनिवृत्तभयतेबीर । अभि
ओजकैहैं रणधीर ॥ तातधनबल नीतिबिचार । प्रथमकी
भूप उदार ॥ पांडव उदैकालमें उद्ध । तिनसँग करहुयथा
युद्ध ॥ स्वबल स्वपक्षिनको बलजौन । न्यूनाधिक्य बिचा
तौन ॥ बिग्रह सन्धिकीजियो जानि । स्वबल शत्रुबलकोअ
मानि ॥ कोशस्वबल बर्द्धित नृप जौन । लहत सिद्धिको भू
तौन ॥ पांडवबलबाहन तेहीन । करिहैंयुद्ध क्रोधबशपीन ॥ ग
कै करिहौ जो करतब्य । तौसुख लहिहौ भूपतिभब्य ॥ बैशम
उवाच ॥ तबत्रिगर्त्त रथयूथपपास । बूझोसमय बचनमतिरास





सुशर्मोवाच ॥ कीचकमत्स्यसूतबरबीर । तेहिबाँधोममदेशगँभीर ॥
देखि कर्णदिशिऐसेबैन । कहोत्रिगर्त्तराज मतिऐन ॥ क्रूरअमर्षी
सो बिख्यात । गन्धर्बनकिय तासुनिपात ॥ कीचकमरे दर्पहत
भूप । भयो बिराट अबल अनुरूप ॥ तहँ यात्राकरिबो मतपर्म ।
रुचै भूप सो करहु सशर्म ॥ कर्ण कौरवनको यह कार्य्य । करिबे
योग्य अवश्यकआर्य्य ॥ चलिये तौन राज्यको भूप । तासोंलीजे
रत्न अनूप ॥ ग्रामदेश मत्स्यनको जौन । यथाभाग लीजे हरि
तौन ॥ नृप बिराटको गोधनजौन । प्रथम हरणकीजे सबतौन॥
नगर घेरि सह कौरवभीर । भटत्रिगर्त्त जे अतिरणधीर ॥ यथा
भागताको धनसर्ब । हरण कीजियेदेश अखर्ब ॥ मारि चमूताकी
बलवान । बश बिराटको करैं सुजान ॥ बशकरि तौन मत्स्यपति
भूप । तब हमबसैं तहां सुखरूप ॥ तुवबलवृद्धि महाबलधाम ।
कैहैं येमोबचनललाम ॥ सुनिभूपतिसोंबोलोबैन । कहत सुशर्म्मा
जो मतिऐन ॥ तातेक्षिप्र चलहु कुरुभूप । लैचतुरंग चमू अनु-
रूप ॥ पृथकपृथक लै अपनीसैन । सुभटाधीश चलैंमतिऐन ॥
कृपभीषम अरुद्रोणाचार्य्य । यथाकहैं त्योंकरियेआर्य्य ॥ करिकै
मंत्र चमूको ठाट । चलिये जीतन भूपबिराट ॥ कहा पाण्डवन
ते है कार्य्य । ते बल पौरुषहीन अनार्य्य ॥ पांडव नष्टभये सुख
रूप । चलहु बिराटपुरीको भूप ॥ तासों धन गोधन अतिमान ।
देशसहित लीजै सुखदान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ कर्ण बचन करिकै
स्वीकार । आज्ञादीन्हों भूपउदार ॥ दुःशासनसों साजहु सैन ।
करि बृद्धनसों मत मतिऐन ॥ हम जेहि दिशिकोकियो बिचार ।
कुरुनसहिततहँ चलैं उदार ॥ कियोसुशर्मै जोउद्देश । तेहिदिशि
जाहि सहित बलवेश ॥ करै सुशर्मा प्रथमपयान । सहित त्रि-
गर्त्त सुभट बलवान ॥ हम दिवसान्तर लहि सहसैन । मत्स्य-
पुरी को गहिहैं ऐन ॥ जायसुशर्मा तहांउताल । प्रथम हरा गो-
वृन्द बिशाल ॥ हम सहसैन दूसरी ओर । चलिगोधन हरिहैं

बरजोर ॥ भूप सुशर्मा सेनासंग । गोहरिबेको भरोउमंग ॥
सप्तमी तिथि अभिराम । गयो मत्स्यपुरको बलधाम ॥ कुरुकुल
सहित सुयोधन भूप । गयो अष्टमीपाय अनूप ॥

इतिबिराटपर्बणिगोग्रहणोपाख्यानेबिराटपुरगमनवर्णनोद्वादशोऽध्यायः ।

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ पांडवनको बसततेहां कपटधारे वेष
करत कार्य्य बिराटको गतभयो वर्षअशेष ॥ मरेकीचककेकिये
यह मत्स्यपति बिश्वास । अरिनकोलहि समैकरिहैं अवशि
बिनास ॥ तेरहें बरषांतमें तहँ नृप सुशर्मा आय । हरण कीन्हीं
मत्स्यपतिकी अमित उत्तमगाय ॥ देखिगोधन हरणआये गोप
जबसों सर्ब । रहेभूप बिराट जेहां सहित सुभट अखर्ब ॥ कूदि
रथतेकहो तिनजाय भूपतिपास । हरोभूप त्रिगर्त्त गोधनरावरो
बलरास ॥ जीतिहमको युद्धमें सहबन्धुसहितसहाय । जातगो
धनलये भूप त्रिगर्त्त अतिबलआय ॥ चलहु बेगिनरेन्द्र गोध
करहु रक्षितबीर । सुनतभूप सुसज्जसेनाकियो अतिरणधीर
सैनसजि चतुरंगिनी मत्स्याधिपति अतिमान । धरोबर्मबिचित्र
मत्स्यन सारमें बलवान ॥ सहित पुत्रन भूप पहिरो कनक
भूषित बर्म । शतानीक बिराटको प्रियजौन भ्राता पर्म ॥
तेहि दृढ़ चर्म बंधे जाहि शस्त्रन स्वक्ष । बलीताको बन्ध
रज बीर जो मदिरक्ष ॥ धरो तेहि शतबिन्दु कवच अभे
जौन अनूप । धरो कवच अभेद्यमणिमय भानुदत्त सुभूप
शङ्खपुत्र बिराटको तेहि धरो कवचमहान । बर्मधारी रथीसिंग
भये अति बलवान ॥ युद्धको ते भयेसज्जित सकल अतिब
बीर । अश्व मनगति जोरि रथमें धरेबर्म गँभीर ॥ बजनला
पटहशोभित भयेध्वज छबि ऐन । शतानीक स्वअनुजसों
कहे भूपति बैन ॥ कंकबल्लव तन्तिपाल सुजौन ग्रन्थिकबीर
युद्धकर्त्ता हैं सकल ये महाबल रणधीर ॥ देहु इनको सुरथ
त्तमध्वज पताकावान । बर्मदेहु अभेद्यतिनको शस्त्रसंघमहान ॥





कृष्णपके सुनि बचनऐसे शतानीक सुजान । दिये कुन्ती सुतनको
वर्म शस्त्र महान ॥ पहिरिबर्ण सुधनुषधरि सनिषंग रथचढ़ि
र । पुरःसर ह्वैचले पाण्डव युद्धको रणधीर ॥ चलेसंगबिराट
सहबन्धु भूपति धर्म । मत्तनाग समान चाहत कियोकर्म स-
र्म ॥ चले भूप बिराट के सँग सज्ज पाण्डवबीर । मनहुजात
पक्ष पर्बत धरे रत्नगँभीर ॥ हृष्टपुष्ट सुयुद्धमें पटुभूपके प्रिय
बीगौन । रथी आठहजार ऐसे सहस गजमद भौन ॥ साठिसहस
अश्व सादी मत्स्य पतिके साथ । लसीभूप बिराटकीसो सै-
अतिकुरुनाथ ॥ चले गाइनके बिलोकत चरण चिह्नितऐन ।
बैसीसो चतुरंगसेना बीरधीर सचैन ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिदक्षिणगोग्रहबर्णनोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ नगरते काढ़ि सहित पांडवमत्स्यपति
लधाम । भिरीमत्स्य त्रिगर्त्तसेना दिवसबीतत याम ॥ मत्स्य
भट त्रिगर्त्त दोऊ युद्धदुर्मद धीर । लगे लरन प्रचारिकै अ-
न्य अति बलबीर ॥ गजाश्वबाहन बीर बिरचो तुमुलभो
ग्राम । लगेबेधन भानुमंडल शूर भट अभिराम ॥ अन्योन्य
धावत अश्वरथ गज बाहभट बलवान । धूरि धुक्कितभयोनभ
अवम निशामुक्त भान ॥ गिरनपक्षीलगे क्षितिपर रजाच्छत ह्वै
प । चलतबाण समान घनलखि परतनाहिं रविरूप ॥ बाण
ख सुकनकके खद्योतसे चहुँओर । देखिलागे परन तेहि तम
गमें अतिघोर ॥ रथी सादीपत्तिजन्ता पाय सुभटसमान ।
क्तितोमर परशु पट्टिश सों लरें बलवान ॥ लगेमारनक्रोधक-
गेकरि परस्पर भटभीर । युद्ध ते नहिं सकत कोउ बिमुखकरि
रणधीर ॥ परेमस्तक कटे क्षितिपर कनक कुण्डलमान । कटे
रसों भटनके बहु परे अंगमहान ॥ सालतरुसे परे क्षत्री मरे
अतिपर भूप । भईमणिमय भूषणनसों भूमि भूषितरूप ॥ ह्वै
ई रजशान्तसो बहु बहे शोणितधार । भये मुर्छित बाणपीड़ित

बीरधीर उदार ॥ शतानीक सुहने योधा एकशत बलवान।
रिशत मदिराक्ष मारे रथीबीर महान ॥ दोऊ पैठेमहासेना
हँते बरबीर। केशगहिगहि लगे पटकन मथनसैन गँभीर॥
नि तिनहिं त्रिगर्त्त लीन्हें देखि ध्वजअतिमान। हनेरथिन
राट रणसे पञ्चशतबलवान ॥ तुरगमारे आठशत अरुम
रथ हनिबान। लगेमर्दन भटनको रथहांकि बिबिध बिधा
त्रिगर्त्तराज बिराट दोऊ हांकि कै रथउद्द। अन्योन्य मर्दन
सेना गरजिगरजि सक्रुद्ध ॥ तबसुशर्मा मत्स्यपति दोउ
बीर महान। लगे बर्षन बाणदोऊ बारिधार समान ॥
बितशर गदा शक्तिनसों लरे दोउबीर। हनि सुशर्महिं बा
शसो मत्स्यपति रणधीर ॥ हने चारों तुरग अतिबर शर
बलवान। तब सुशर्मा अस्त्रबिदकरि क्रोधको अतिमान॥
पंचाशत शरनसों मत्स्यपतिको भूप। महारजसों मग्नाति
लखत कोउन रूप ॥ भई सन्ध्या तिमिररजसों अन्ध त
महान। रहे शशिके उदयलों रणसों निवृत्तसुजान ॥ उयो
हरशीतकर लखि युद्धकर भटजौन। पाय बिमलप्रकाशके
रिलरनलागे तौन ॥ तबसुशर्मा सहितभ्राता लियेरथसमुद
क्रोध करिकै मत्स्यपति सों लरनलागो आय ॥ सहित भ्र
कूदिरथते मत्स्यपति बरबीर। चलेरथते क्रुद्ध आगे गदा
रणधीर ॥ तथा तिनके सुभटदौरे परस्पर ह्वैक्रुद्ध। शस्त्रन
भांति के गहिकरन लागे युद्ध॥ मत्स्यपति के मथित करि
को सुशर्माबीर। बिरथकरिकै नृपबिराटहिलियो गहिरणधी
मत्स्यपति को पकरिरथपर राखि अपने पास। चलोभाजी
त्स्य सेना देखि पूरितत्रास ॥ देखितिनको त्रासित भाजन
करि नृपधर्म। कहन लागे भीमसों यहि भांति करिबे कर्म॥
सुशर्मा लयो पकरि बिराटको बलवान। करहु मोचन शत्रु
सों होयनहिं सुखदान ॥ रहे ताके पास सबबिधि होयपूजि





। भूप मोचन तास निष्कृति भीम तुमको धर्म ॥ भीमोवाच ॥
रहिंगेहमत्राण भूपबिराटको नृपधर्म। पायआज्ञा रावरीअ-
हनत करि अतिकर्म ॥ लखहु भ्रातन सहितरहि एकांत में
मभूप। शुष्कयहतरु महासो ममगदाकेअनुरूप ॥ याहिलेत
खारियाते हनत अरिगणसर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ देखि मत्त
तंग सोतरु लखत तौनअखर्ब ॥ बीरभ्राता भीमसों नृपधर्म
लेबैन। महत तरु यहनहिं उखारहु सुनहु हेबलऐन ॥ तुंग
रुसोंहनहुगेअरिसैनतुमरणधीर। भीमतुमकोजानिहैंसबदेखि
प्रतिबलबीर ॥ अन्यगहिकै शस्त्रमारहु शत्रुसैनउदार। शक्ति
नुषनिषंगलीजे परशुकैसितधार ॥ लेहुमानुषशस्त्रजाते लखै
महिंनअन्य। करहु मोचित मत्स्यपतिको कर्मकरिकैधन्य ॥
कुल अरु सहदेवको करिचक्र रक्षकधीर। समरमें तिनसहि-
मोचहु मत्स्यपतिको बीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ धनुष लीन्हों
ीमनिष्ठुर भूपके सुनिबैन। लगेबर्षन निशित शायक क्रोध-
रि बलऐन ॥ भीमकरिकै क्रोधदौरे जहँसुशर्मा बीर। तिष्ठ
तिष्ठ बिराटको लखि कहेबचन गँभीर ॥ भयो चिन्तित लखि
ुशर्मा कालक्रुद्ध समान। कहतआवत तिष्ठतिष्ठ सुपृष्ठ दिशि
लवान ॥ करत आवत महतकर्मसो कौनहै यहबीर। फिरो
से बोलि धनुधरिकै सुशर्माधीर ॥ निमेषांतर मात्रमें रथवृ-
द शतसहजौन। भीमसेन बिराटके ढिगमारि डारेतौन॥ना-
रथ हयपत्तिमारे गदागहिकै भीम। लखिसुशर्मा युद्ध दुर्मद
क्रोधकरि बलसीम ॥ लगोचिन्तन सहितभ्राता देखि सेना
ीघ्र। कानलों धनुखैंचिलागो बाणबर्षणबेष ॥ बेगसोंरथहांकि
आयेमत्स्य अतिबल बीर। दिव्यलागे अस्त्र डारन भरे क्रोध
गँभीर ॥ पांडवनको भिरेदेखत फेरिरथ बलवान। पुत्रभूपबि-
राटको तेहिकियो युद्ध महान ॥ सहसमारे रथीभट करिक्रोध
भूपतिधर्म। भीमसप्त सहस्रमारे सुभट मथिकेमर्म ॥ नकुल

मारे सातशत भटबीरजे बलवान । शूरमारे तीनिशत सहदे
देवसमान ॥ मारिसैन त्रिगर्त्तकीसब महा पांडवबीर । अत्
आये जहँसुशर्मा भरेक्रोध गँभीर ॥ हांकिकैरथ क्रोधकरि
तिआय भूपतिधर्म । हनोनिशित त्रिगर्त्त पतिको बाण बेध
मर्म ॥ तबसुशर्मा तानिकै धनुक्रोधकरिअतिमान । धर्मनृप
कियोबेधित मारिकै नवबान ॥ चारिशरसों हनेचारौ धर्मनृ
अर्ब । देखिआये भीमतेहां करेक्रोध अखर्ब ॥ मारिताकेअ
मारे पृष्ठ रक्षकजौन । सारथी हानिकै सुशर्मा कोगिरायोतौन
लगोतब मदिराक्ष मारन बिरथ ताहिनिहारि । तब सुशर्मा
सुरथते नृपबिराट बिचारि ॥ कूदिदौरे गदाकरमें लये ता
बीर । भाजिसुशर्मा चलोआवत देखिसोरणधीर ॥ भजोज
बिलोकिकै त्रैगर्त्तपतिकोभीम । नाहिंसुशर्मा भाजिबोहै युक्त
हिंअसीम ॥ लियोगोधन चहोयाहीबलभरोसेआय । छोडि
अनुचरन भाजत जीवको डरपाय ॥ भीमको सुनिबचनध
त्रिगर्त्त लाजगँभीर । तिष्ठतिष्ठपुकारिकै सोफिरोअतिबलबीर
कूदिस्यन्दनसों सुधाये भीमकाल स्वरूप । भजोदेखि त्रिग
गहिकै जीविताशाभूप ॥ भजोजात बिलोकिपकरो दौरिता
भीम । केशगहि क्षितिपै पछारो महाबलको सीम ॥ मींजि
तिपर लगेमारन करन मुष्टिकघात । लगोकरन बिलाप
लखिप्राणके उतपात ॥ भयोमूर्च्छित सोसुशर्मा घात पीडि
भूप । भजीताकी चमूसिगरी भरीभीति कुरूप ॥ नृप सुशर्म
जीतिकै तबफिरे पांडवसर्ब । सहित गोधन जयश्री धनलि
तासुअखर्ब ॥ हरोदुःखबिराटकोकरि सत्यसेवाधर्म । भीमपे
कहनलागेबचन सबसोंपर्म ॥ नहींजीवनयोग्यहैयहमहापाप
चार । नहींहमरोशक्यहै कछुघृणीभूपउदार ॥ बांधिग्रीवाप
रिल्याये बिबशतेहां बीर । नृपसुशर्महिं डारिरथपर भरोपा
गँभीर ॥ रहेरणके मध्यठाढ़ जहांधर्मनरेश । दियेभीमदेख





तौन त्रिगर्त्त पतिकोवेश ॥ देखिबोले भीमसों नृपधर्मऐसेबैन । देहुअधमहि छोड़ियाको योग्य बन्धन हैन ॥ भीमउवाच ॥ मूढ़ जीवन चहसि तौ यहहेतु सुनु ममपास । सभामें सत जनन सोंहे भयेबालहुदास ॥ चहहुजीवनगहहुहारो युद्धको ब्यवधान । नतरुहमसों छूटिहै न त्रिगर्त्त तुम्हरोप्रान ॥ भीमसों यहि भांतिबोले नीतिबिदनृपधर्म । छोड़ियाको देहुभो यहदास अधमअपर्म ॥ मत्स्यपतिकी दासताको लहित्रिगर्त्तनरेश । फेरि ऐसो कीजियो मतिजाहु अपनेदेश ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिसुशर्मापराजयबर्णनोनामचतुर्दशोऽध्याय: १४ ॥

बेशम्पायनउबाच ॥ जयकरी ॥ भूपसुशर्मालाहिकैलाज । भयोअधोमुख मध्यसमाज ॥ नृपबिराटकेपायनिदेश । बंदिचरणगोअपनेदेश ॥ बिदासुशर्माकोकरिभूप । भुजबलसोंलहिबिजयअनूप ॥ समरभूमिमेंकीन्होंबास । तेहिनिशिमाहँनृपतिबलरास ॥ जानिपांडवन कोबलधाम । नृपबिराटपूजोअभिराम ॥ बहुधनसोंकरि अतिसनमान । जानिमहारथ बीरमहान ॥ बिराटउबाच ॥ रत्नहमारेहैं धन जौन । सकल जानिये अपने तौन ॥ जेहैं मेरे सेवकसर्ब । तेसेवैंगे तुम्हैं अखर्ब ॥ अलङ्कार सहकन्या पर्म । हम तुमको देहैं सह धर्म ॥ तव भुजबलते अरिबलजौन । बिन प्रयास जीतो हम तौन ॥ तव भुजबलते ह्वैकै मुक्त । भये मत्स्यपति आनँद युक्त ॥ तुम मत्स्यन के ईश्वरबीर । भये अद्यबलभरेगँभीर ॥ बेशम्पायन उबाच ॥ सुनिबिराटकेऐसेबैन । पृथक्पृथक्पांडवमतिऐन ॥ कहन लगेप्रांजलिबरबीर । नृपबिराटसोंबचनगँभीर ॥ हम आनँदसों अतिशययुक्त । देखत तुम्हैं शत्रुसों मुक्त ॥ तबबिराट लहि मोद महान । कहो कंकसों करि सनमान ॥ करत तुम्हैं अभिषेक अनूप । मत्स्य बंशके ह्वैजैभूप ॥ होय अभीष्ट जो तुम्हैं ललाम । सोहम सबदेहैं अभिराम ॥ ब्याघ्रपाद तुम बिप्र अखर्ब । तुम्हैं प्रणाम करत हमसर्ब ॥ तवप्रसादते फिरिहमबीर । लखत स्व-

बंश राज्य गम्भीर ॥ तवप्रसादको पाय गँभीर । अरिके बशा
गये न बीर ॥ फिरि बिराटसों भूपतिधर्म । कहो कहतिसो तु
अतिपर्म ॥ पठवहुदूत नगरको जाय । तवजयकहैं सुहृद सु
दाय ॥ सुनत कंकके भूपतिबैन । पठयोक्षिप्र दूतमतिऐन ॥ ऐ
कहो दूतसों भूप । कहियो ममजयजाय अनूप ॥ पहिरिबिचि
कुमारी बास । ठाढ़ीहोहिं आयपुर पास ॥ गावत नाचत बा
बजाय । बारबधूपुर बाहर आय ॥ शिरधरि भूपति शास
चार । भोरहोतगे नगरउदार ॥ चारबिराट नगरमें जाय । क
टेरि नृपजय सुखदाय ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिसुशर्मापराजयबर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ भाजिसुशर्मा भूपगोगोधनलहोबिरा
आये दुर्योधनालिये पुरढिगसेनाठाट ॥ भीष्मद्रोण संकर्ण कृ
अश्वत्थामाबीर । शकुनि बिबिशाति चित्रसेन अरु दुःशास
रणधीर ॥ दुर्मुख सहित बिकर्णशल और महारथजौन । चा
बिराटके पुर निकट घेरो गोधन तौन ॥ गायनदिये भजाय ति
गोधन लीन्होंआय । साठिहजार बिराटको रहोजो गोसमुदा
रथ समूहसों घेरितिन लीन्होंचारों ओर । हनहु हनहु गोपा
गण बढ़ोशोर अतिघोर ॥ रथपर चढ़ि भाजेसकल गोपाध्य
उदार । पुरमें पैठे आयते आरत करत पुकार ॥ रथतजिगो
ध्यक्षतेभूप भौनमें जाय । भूमिंजय नामक नृपति सुतको दि
सुनाय ॥ गोधन सिगरे देशको हरो सुयोधनभूप । साठिहज
बिराटकी रहींजे गाय अनूप ॥ ताकेजीतनको उठहु गोधन ल
छड़ाय । राजपुत्र हितकीजिये अपनो आतुरजाय ॥ तुमपा
कहो राष्ट्रके बिनामत्स्यपति भूप । करत सभामें रावरी इला
भूप अनूप ॥ पुत्रहमारो ममसदृश महाशस्त्रबिदबीर । सत्यक
ताकेबचन शून्यपालरणधीर ॥ गोधन ल्यावहु फेरिसब से
जीतहु सर्ब । दहहु कुरुनके गर्वकोडारि शरानि अखर्ब ॥ अ





जतसे लायहय रथमेंअति अभिराम । हरिभूषित ध्वजस्वर्ण-
य भूषित करहु ललाम ॥ रुक्म पुंख शरछूटिकै तव करते वर
ीर । रबिमण्डल छादितकरै अरिपथ हरणगँभीर ॥ जीतिसमर
कुरुनको ज्यों असुरनमघवान । गोधनलै फिरिआइये अप-
पुर बलवान ॥ नृपबिराटके राज्यके तुमहीं गतिबरबीर । यथा
पांडुकेसुतनकेगति अर्जुनरणधीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ तियनमध्यगो
ालकेसुनिकैऐसेबैन । अन्तःपुरमेंकहतभोइमिसुबचनचलऐन ॥
ितिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः ॥

उत्तरउवाच ॥ रोला ॥ जाहिहम दृढ़ धनुषधरिकै फेरिबे गोसर्ब ।
ोयगन्ताजोकोउ अतिनिपुण बाहकअर्ब ॥ ताहि देखहु क्षिप्र
रे योग्ययन्ता जौन । मासभो रणमाहँ मेरोमरो यन्तातौन ॥
लहौंजोमैं सारथी रथजौन कोबिदधीर । बेगिहौं चढ़िजाउँ रथ
र धारिध्वजगम्भीर ॥ जीतिअरि चतुरंगिणी बर बर्धिशस्त्र
हान । फेरि गोधन ल्याइहौं कुरुबंश ते बलवान ॥ भीष्म
ोणसपुत्र कृप अरु कर्णजो बरबीर । सहितभ्रातन जीतिलेउँ
सुयोधनहि गंभीर ॥ हारिरीते जाहिं कौरव जौन आये सर्ब ।
ीति तिनको अद्यगोधन फेरि लेउँ अखर्ब ॥ कहाहम नहिंकरैं
ोइस्थित होयगोधन माह । लखै मेरो पराक्रम आय सकल
कुरुकुल नाह ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुने अर्जुन कहे उत्तर भूपसुत
े बैन । कहोऐसे द्रौपदीसों समयलहि मति ऐन ॥ देहुसुन्दरि
याहि उत्तर कहतहैं हम जौन । पांडवनको करतहो सारथ्य यह
बलभौन ॥ महारणमेंजिष्णुकोयहसारथीहोधीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
कहत बनितन माहँउत्तर होजहांगंभीर ॥ जायसुखिनमाहँता-
के पास कृष्णाबैन । कहनऐसे लगीलज्जा भरीअति मतिऐन ॥
यहद्वारण सदृशहै यह युवाप्रिय रुचिजौन । शस्त्रवेत्ता परम है
सुबृहन्नला मतिभौन ॥ सारथीयहजिष्णुकोहै युद्धमें बलवान ।
धनुर्द्धर यह युद्धमेंहै बलीपार्थ समान ॥ पांडवनके पास देखो

पूर्वहै सुतभूप। कियोखाण्डवदाहमें इन सार्थिकर्म अनूप ॥ रै लखि जिष्णुसों इमि कहे बचन गँभीर। दहोखण्डव जि-
न्हैं अर्जुन सारथी लहि कै महा बलसाथ। जारि खण्डवजीतु तुमको सारथीलहिबीर ॥ तुम्हैं सह सबजीति अर्जुन लई
लीन्हों युद्धमें सुरनाथ ॥ उत्तरउवाच ॥ नाहिं नपुंसक कर्म जो तुमि अखर्ब। कहो सैरंध्री सोजानति पाण्डवनको सर्ब ॥ तथा
कहति हौ मति ऐन। नहिं वृहन्नल पासहमयह सकतकहि रै अश्व शीक्षित कुरुवृहन्नलबीर। चहतजीतो कुरुन गोधन
बैन ॥ द्रौपद्युवाच ॥ जोकुमारी कुंवरहै तव स्वसाअति अभिरामनयो चहत गँभीर ॥ वृहन्नल यहिभांति के मुनि राजसुत के
बचनताको मानि है सो वृहन्नल बलधाम ॥ जो वृहन्नल होन। बिहँसिकै इमि कहनलागे भरे मनमेंचैन ॥ तौर्यत्रिकहम
गो सारथीतव रणधीर। जीति कुरुन समेत गोधन आइहौरनजानत बिबिधबिधिगंभीर। युद्धमेंसारथ्यकीसामर्थ्यहैनहिं
रबीर ॥ द्रौपदीके बचन सुनि तेहि उत्तरा सोबैन। कहो ल्यारि ॥ उत्तरउवाच ॥ वृहन्नलतुम गाननर्त्तन करहुगे फिरि आय।
वृहन्नलहि इतस्वसा सुखमा ऐन ॥ सुनत भ्राता बचनसोचहु मेरे सारथी अबयुद्धमें सुखदाय ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कहेपा-
लिगई नर्त्तनधाम। धरेवेषवृहन्नलाको जिष्णु जहँअभिरामइव बचन बहुबिधि कुँवरसों तहँ नर्म। उत्तराके सामुहे सब
वैशम्पायनउवाच ॥ गईदौरति बीजुरीसी चन्द्रबदनीतौन। रहे बैठ कीन्हें मर्म ॥ कवच ऊपर देहके धरि धरो फेरिउतारि। ल-
वृहन्नलजहँ चारु नर्त्तन भौन ॥ भरीरूप अनूप भूषण धरे अहँसन कुमारिका ते जिष्णु ओर निहारि ॥ दियो उत्तरकवच
ति अभिराम। पद्मपत्र समान लोचन कामकैसी धाम ॥ देखिपने हाथसों पहिराय। पहिरि उत्तम कवच रबिसों लसोसो
अर्जुन लगेबूझन आगमनको मर्म। कौन आई हेतु आतुतिकाय ॥ सिंह चिह्नित ध्वजा रथपर धारिकै अतिमान।
उत्तरा कहुपर्म ॥ नहींबदन प्रसन्नतव कहु हेतु सुन्दरि तौनतुष रथपर धरे उत्तम निशित अगिनित बान ॥ धारिरथपर
सुनि वृहन्नल के बचन सह प्रणयसो छबिभौन ॥ कहनलागत्तरहि कै सारथी बरबीर। चलत बोली उत्तराइमि बचनम-
सखिनके मधि उत्तरा इमिबैन। जातकुरुनृप लये गोधन सारगँभीर ॥ हे वृहन्नल ल्याइयो बहुरंग बसन ललाम। पुत्त-
न्नल बलऐन ॥ तिन्हैं जीतन गयोचाहत धनुर्द्धर ममभ्राततन के हेतु मृदु अतिसूक्ष्म बहुअभिराम ॥ जीतिभीषम द्रोण
नहींताके सारथीहै हे वृहन्नलतात ॥ करहुतुरसारथ्य तुमको आदिक कुरुनको बरबीर। वृहन्नल इमि दियो उत्तर बिहँसि
बिद वृहन्नलमर्म। कहो सैरंध्री तुम्हैं अति सारथिनमें पर्म है गंभीर ॥ वृहन्नलोवाच ॥ कुंवर उत्तरजीतिहैं जोते महारथसर्ब।
सारथी तुम पार्थके हे पूर्वरणमें धीर। तुम्हैं पायसहाय अर्जुनरेंगे हम बसन बहुरँगके अमोल अखर्ब ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बो-
कियो दिगजयबीर ॥ करहुअब सारथ्यमेरेबन्धुको तुम तौनलेकै यहि भांति अर्जुनतुरग हांके भूप। सामुहें कुरु चमूके रथ
करहिं जबलों दूरिनाहिं तेलये गोधन गौन ॥ करहुतुम सारथ्कयो आतुर रूप ॥ देखिरथपर उत्तरहि तब सहवृहन्नलबीर।
तबलों जोरि आतुर अर्ब। जीतिकै सबलहु अपनो फेरि गात्र बनितन करि प्रदक्षिण कहे बचन गँभीर ॥ करतखांडव
धन सर्ब ॥ उत्तराके बचन ऐसे सुनत अर्जुन बीर। गयेउत्ताहमंगल जिष्णु के भो जौन। जीति रणमें कुरुनको तुमलह
कुँवरके ढिग भरेमोद गँभीर ॥ उत्तरा अनु गई अर्जुनबीरके मङ्गल तौन ॥
अभिराम। यथागज पीछे सु शिशुगज बधूजाति सुक्षाम ॥ इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिउत्तरानिर्याणवर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः

बैशम्पायनउवाच ॥ गेला ॥ राजधानीते निकासि इमिकह्यो उ
बैन । सूत रथलै चलहु तितजित कुरुनकीहै सैन ॥ युद्धमें
कुरुनको सब जीतिकै समुदाय । क्षिप्रआवैं नगरको सब
अपनीगाय ॥ कियेप्रेरित तुरग अर्जुनताड़िकै अतिमान ।
ष्णुप्रेरित अर्बक्षितितजि चले उड़तमहान ॥ जायकै कछु
देखो जिष्णु उत्तरसैन । महासिन्धु समान जाको पारदेखि
रैन ॥ श्मशानके ढिगजाय अर्जुन शमीदेखीतौन । लखीसे
कौरवनकी भीरु भयकीभौन ॥ गगन सों तरुलगे जाकेस
गहनसमान । धूरि धूधुरिभरी दशादिशि देखिपरत न भा
तौनदेखत चमूगजरथअश्वपूरितभीम । जाहिरक्षतभीष्मद्रो
सुकर्णकृप बलसीम ॥ भरोभयसों देखि उत्तरचमूसोंबलतो
उत्तरउवाच ॥ कुरुनसों लरिहैं न देखहुउठेमेरेरोम ॥ बीरछन्द
नेक जामें कुरुनकी यहसैन । युद्धइच्छा कौरवनसोंसूत हम
हैन ॥ देखिकै चतुरंगिणीकुरुसेनयहअतिमान । सूतमेरोहो
अति व्यथित मानसप्रान ॥ द्रोणभीषमकर्णकृप जहँद्रोण
बरबीर । शकुनि दुःशासन बिबिंशति अरुबिकर्णगँभीर ॥
सुयोधनमहारथ बाह्लीकसह द्युतिमन्त । महारथ अति धनु
बरबीरपृथिवीकन्त ॥ सैनसह कुरुबीर सिगरेमहाबलकेतो
मोहिंमूर्च्छाहोति देखतउठेभरिभयरोम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ अ
मान्यप्रगल्भधारे कपटवेष सुजौन । लगो ऐसे सव्यशाची
रोवनतौन ॥ गये तात त्रिगर्त्तपै सँगलये सुभट अनेक ।
सैनिक नहीं कोऊ छोड़िकै मोहिंएक ॥ एक बालक हम अ
क्षित सैन अरिकी उद्ध । बहु कृतास्त्रन सों न सकिहैं करि
न्नलयुद्ध ॥ चलहु ताते धामको अबबेगि फिरहु सुजान । रा
लीजै कृपाकरिकै सुनहु मेरोप्रान ॥ बृहन्नलउवाच ॥ भयो भ
दीन तौ अरिहर्ष बर्द्धनरूप । रणाजिर नाहिं अरिन कीन्हों
कछु अतिरूप ॥ कहोतुम मोसों चलो लै मोहिं अरिजहँसे





म ले आये तुम्हैं तहँ जहँ बाहिनी ध्वजऐन ॥ गोधनाभिष
हत ये कुरु गृद्धसे बरबीर । तहां हमलै चलत तुमको करहु
द्ध गँभीर ॥ कहो इस्त्रिन माहँ पौरुष स्वजनमें अतिउद्ध ।
ारते काढ़ि आयकै इत करत क्योंनहिं युद्ध ॥ जीतिकै बिन
ये गोधन जाहुगे जो धाम । सुनहु उत्तर तुमहिं हँसिहैं नगर
सबबाम ॥ करनको सैरंध्रि हमसोंकह्यो सारथि कर्म । सकल
रि नाहिं जीतिकै बिनलिये गोधन पर्म ॥ स्तोत्र सैरंध्री कि-
तुम कहे बचनअरुद्ध । रहत थिर अब करहि क्योंनहिंकौ-
नसोंयुद्ध ॥ उत्तरउवाच ॥ मत्स्यकुलको हरो कौरव ससुख बित्त
खर्ब । सुनु वृहन्नल हँसौ प्रमदा पुरुषहमको सर्ब ॥ युद्धसे
हिं काम मेरो बेढ़ि गोधन जाय । नगर सूना कँपतहैं हमपि-
को डरपाय ॥ बैशंपायनउवाच ॥ कूदि रथते भजोपुरको बोलि
सबैन । दर्पमान बिहाय शरधनु भरोभी अतिचैन ॥ बृहन्नलउ-
॥ नहीं शूरनकह्यो क्षत्रीको पलायन धर्म । मरण क्षत्रीको
मरमें श्रेयकारक पर्म ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ बोलिऐसे कूदि रथते
ष्णु अतिबलवान । ता ओर आवत लगी बेणी पीठिपै ल-
ान ॥ कँपत बेणी देखि अर्जुन नहीं जानतजौन । हँसनला-
रूप अद्भुत चाहि सैनिक तौन ॥ शीघ्र धावत देखिलागेक-
न यों कुरुबीर । भस्ममें ज्यों अग्निको यह गुप्तवेष गँभीर ॥
सत प्रमदाको कछू कछु पुरुषकैसो रूप । सारूप्य अर्जुनको
रत यह क्लीवरूप अनूप ॥ शीश ग्रीवा तैसियैहै बाहु परिघ
मान । तैसोई बिक्रांतहै यह धनंजय नहिं आन ॥ अमरमेंअ-
रिश अर्जुन मनुजमें त्योंबीर । एक हमपै आवतो बिनजिष्णु
ा रणधीर ॥ एकपुत्र बिराटको हो नगरमें चढ़ि जान । बिना
रुष बाल्यतेसो चलो निकासि अयान ॥ सारथी करिगुप्तधा-
रूप अर्जुन जौन । कढ़ो बाहर नगरके नृपपुत्र उत्तर तौन ॥
खिहमको भीतिसों सो भजोजात अयान । ताहि धरिबे हेत

धावत जिष्णु सो बलवान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ देखिऐसे लगे
रवसकल करनविचार । सकलकोउनदेइउत्तर भरेबुद्धिउदा
गयोशतपदधायउत्तरदौरिअर्जुनबीर । जायताको पकरिलि
केशपाश गँभीर ॥ कहोबहुसमुझाय अर्जुन बहुत बिधिकै
भयो दीन बिराटको सुत भरो भीति अचैन ॥ उत्तरउवाच ॥
बृहन्नल कहत हैं हम मानिलीजै तौन । फेरि रथकाचलहु
वत भद्र देखत तौन ॥ देहिंगे हम हेमके शत निष्क अति
भिराम । आठमणि बैदूर्य्यदेहैं कनक जटित ललाम ॥ का
मय रथदेहिंगे दशमत्त बारण तोहिं । हे बृहन्नल मानिकै
विनय छोड़हु मोहिं ॥ भांति के यहि बचन बोलत करत
विलाप । ताहि गहि रथपास ल्याये जिष्णु पूर प्रताप ॥ व
ऐसे जिष्णु लागे बिहँसि उत्तरपास । देखिकै भयभरो का
बिगत चेतनतास ॥ होत नहिं संग्रामको उत्साह तोसों ओ
करहु तुम सारथ्य अरिसों करत हैं हम युद्ध ॥ हांकि कै
चलहु यहि रथ बाहिनीको बीर । महारथ जेहि करत र
धरे धनुष गँभीर ॥ राजपुत्र न डरहु क्षत्रीबंश संभवपर्म । स
मध्य कुखेद करब न क्षत्रकुलको धर्म ॥ कौरवनको जीति
हम सुगोधन सर्व । रथानीक बिदारिकै यह जो अदृश्य अख
सारथी तुमहोहु लरिहैं कुरुनसों हमबीर । कुँवर उत्तरको सु
बोधकरि रणधीर ॥ महाभयसों बिकल उत्तरकुंवरको समुझ
बांह गहिकैलियो रथपर जिष्णु ताहि चढ़ाय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्वणिउत्तरभंगवर्णनोनामअष्टादशोऽध्याय

वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ वेषधारे क्लीवको रथचढ़ो लखिअ
काय । शमीसोंहैं जात उत्तरको सुसाथ चढ़ाय ॥ भीष्म द्रो
आदि जेतिकरहेकुरुवरबीर । जिष्णुसंभवभीतिसों मनभरो
गँभीर ॥ देखिकै उतपात बिस्मयभरे कौरव भूप । कहनद्रो
चार्य्य लागे बचन समय स्वरूप ॥ कहत कर्कश अनिलभो





समवर्ण समान । गगन तमसों भरोधाये जलदरुक्ष महान ॥
शिवारोदन करनलागी उदित रविकी ओर । ध्वजा कम्पनलागी
जत अश्व हाथी घोर ॥ होतहैं चहुँओरते अतिशकुन कठिन
कराल । सज्जके सबरहो आयो महाभयको काल ॥ करहु रक्षा
आपनी करि बाहिनी को व्यूह । लखहु युद्ध समीप रक्षहु सकल
गोधन जूह ॥ महाधनु यहपार्थ आयो क्लीवको धरिवेष । श्रेष्ठ
सब शस्त्र भृतमें शत्रुसम न अशेष ॥ श्लोक ॥ नदीजलक्लेश
नारिकेतुः नगाह्वयोनामनगारिसूनुः । एषोऽङ्गनावेषधरः किरी
जित्वावयंनेष्यतिचाद्यगावः ॥ रोला ॥ महाबलविख्यातहै यह
रअर्जुन तौन । होतहै न निवर्त्त रणमें सुरासुरसोंजौन ॥ लहो
नमें क्लेशशीक्षितकियो जे मघवान । भरोमहत अमर्षसों यह
जिष्णु जिष्णु महान ॥ नहीं प्रतियोद्धारताको यहां कौरवबीर ।
ंभुको जेहिकियो तोषित युद्धमाहँ गँभीर ॥ कर्णउवाच ॥ कहत
अर्जुन को सुगुण तुम नित्य धरि अनुराग । ममसुयोधनके न
अर्जुन सोरहहैं भाग ॥ दुर्योधनउवाच ॥ पार्थजोयह होय तौ मम
नयोपूरणकार्थ । करनपांडवजाहिंतौ बनबर्षद्वादशआर्य ॥ अन्य
कोऊ होयगो जो क्लीवको धरिवेष । शरन सों हनिताहि करिहैं
ाणसों निःशेष ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ करण के धृतराष्ट्र सुतकेसुनत
सेबैन । भीष्मद्रोण सराहिबोले जिष्णुअति बलऐन ॥ शमी
ढिगजाय अर्जुनकहो ऐसोबैन । बेगिउत्तर चढ़हुयापै धारि
चितचैन ॥ जायल्यावहु धनुष तालसह निषंग महान । सुनहु
रे बाहुबल के धनुष ये नसमान ॥ वेगिताते चढ़हु उत्तरशमी
अतिमाम । धरेयापैपांडवनधनु आपनेअभिराम॥बर्महैअति
र्म जौन निषंगदिव्य उदार । धनुषहै गांडीवगुरु तरुभरो अ-
तिशयभार ॥ सहतअतिब्यायामकोदृढ़तालतुङ्गसमान । सकल
शस्त्रसमेत अरिदल दहन सदृश महान॥ कनक वनक समान
न्दिर रहित ब्रणसों जौन । शमीपर चढ़िधनुष ल्यावहु तूण

उत्तरतौन ॥ पांडवनकेधनुषहैंसबसुनहुएकसमान । चीन्हिली
चिह्न तुमसों कहतजौन सुजान ॥ उत्तरउवाच ॥ सुनोहमयहि
सोहै बँधोमृतक शरीर । राजसुत हमहुवैं कैसेताहिकै बरबी
करातिहै क्यों अशुचिहैसब बाहलौं तूमोहि । ब्यवहारकेर
योग्यमोको करातिहै क्यों जोहि ॥ बृहन्नलोवाच ॥ ब्यवहारकेन
योग्यकैहौ सुनोतुम बैराटि । होहिंगेनाहिं अशुचि संशय देहु
उचाटि ॥ धनुषमें भय करहु मतितहँनहीं मृतकशरीर । पु
तुममत्स्यपतिके सुकुल जातकबीर ॥ नहीं तुमसों करन क
कर्मनिंदित जौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पार्थके सुनिबचन उत्तरव
रथते तौन ॥ शमीपै चढ़िगयो हेजहँधरे धनुष महान । डारिवे
धनुष बन्धन भंगकरि मतिमान ॥ चारिधनुमृधिलखो तहँ
डीव अद्भुतरूप । डारिधनुते लखोसो गांडीव अनुपम भू
दिब्यतातेप्रभानिकसी उदितसूरसमान । परोरूपबिलोकित
सर्पसदृश महान ॥ क्षणक भरिभय धनुषपरसोतौन अतिम
ऐन । कहोउत्तरटेरिकै फिरिजिष्णुसोंइमिबैन ॥ उत्तरउवाच ॥ स
केकुलबिंदुजामेंकनककोटिसुठान । लिखेवारणपृष्ठिपैशुचिप
मुष्टिमहान ॥ कहहुबृहन्नलकौनकोयहधनुषअतिअभिराम ।क
कहैं इन्द्रगोपक पृष्ठिपैछबिधाम ॥ कौनकोहैबृहन्नल यहध
परणाकास । सूर्यजापैकनककेहैंलिखेतीनप्रकास ॥ कहुबृहन
कौनको यह धनुष है अतिमान । सलभजापै कनकके हैं लि
भूषितमान ॥ कनकमयमणिजटितहै धनुकौनकोअभिराम ।
के नाराच हैंये कनकपुंखललाम ॥ भरेचारु निषंगमें अति
सिलबेधकदक्ष । लोहमय सबलगेजिनमें गृध्रके हैंपक्ष ॥ सा
जामेंपञ्च लिखित बराहकर्ण समान । सातशत शरसहनि
सो कौनको सुमहान ॥ यहिभांति उत्तर कहे सबके बरण श
स्वरूप । शमीऊपर बैठिकै लखिजिष्णुसों हे भूप ॥ बृहन्नलोवा
जौन हमसों पूर्वपूछा धनुष इषुधि महान । गांडीवसोई लो





चाप विदित सुजान ॥ आयुधनमें श्रेष्ठसबसों धनुष है यह
न । पार्थकोसो धनुष है गांडीव उत्तम तौन ॥ देवमानुषपार्थ
ति धारिकै जेहिबीर । परम सुन्दरबर्ण अर्णव भरोभार गुँ-
र ॥ धरो बर्षसहस्र जाको पितामह अतिमान । फेरिताको
क्यो धारण प्रजापति बलवान ॥ सुनो तिरपनबर्षधारी बरुण
रु फिरिताहि । बज्रकेबर अंगसों जो बनोताको चाहि ॥ धरो
सठिबर्ष अर्जुन श्वेतबाहन जौन । बरुणते सो लह्योपारथ ध-
नुष उत्तमतौन ॥ भीमकेधनु है सुपार्श्व सुहेमयह अभिराम ।
लिखेवारण पृष्ठिपैहैं जास सुखमाभाम ॥ धर्मनृपको अनुजबीर
प्रधर्मअति अभिराम । जीतिजासों लियो प्राची दिशाको ब-
धाम ॥ इन्द्रगोपकके लिखे हैं चित्रजापै पर्म । तौन उत्तम
धनुष उत्तर धरतहे नृपधर्म ॥ सूर्यजापै कनककेहैं नकुलकोधनु
तौन । सलभजापै कनकके सहदेव को धनुजौन ॥ लोमबाही
जौनहै क्षुरसदृश तीक्षणबान । तौनउत्तर पार्थके बिषभरे सर्प
समान ॥ तेजसों अतिज्वलित रणमें करत आतुर गौन । गह-
नसे अरिवृन्दके हैं दहनसे शरतौन ॥ जानहै पृथुदण्ड तीक्षण
अर्द्धचन्द्र समान । भीमसेन सुमहाबलके तौन उत्तर बान ॥
हेमपुंख हरिद्रकैसे बर्णकेशर जौन । सुनहुउत्तर नकुलके हैं नि-
सित शायक तौन ॥ निसित हैं अतिधरे उत्तर जौन भास्कर
रूप । तौनहैं सहदेवकेशर भरे तूण अनूप ॥ निसित पीरे हेम
पुंख सुतीक्षिधारे पर्व । धर्मनृपके पृथुलहैं शरभरे तूणअखर्व ॥
जौन है यह महत शायक उग्र परम कठोर । जिष्णुकोसो स-
हत है संग्राम में बरजोर ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेआयुधबर्णनोनामऊनविंशोऽध्यायः १९॥

उत्तरउवाच ॥ रोला ॥ कनकमयहैं शस्त्रसिगरे पाण्डवनकेसर्ब ।
कहाँहैंते पांडुनन्दन महाबीर अखर्ब ॥ द्यूतमें सबराज्यअपनो
हारिकै बरबीर । सुनोहम कहँद्रौपदी है भरीरूप गँभीर ॥ अर्जुन

उवाच ॥ जिष्णु हैं हमसभास्तार जो कंकसो नृपधर्म। जौन
क्षभ भीमसेन सुपाक कारक पर्म॥ अश्वरक्षक नकुल है स
देव गोधनपास । सैरंध्रि कृष्णा हेतुजाके लहो कीचकनास
उत्तरउवाच ॥ नाम अर्जुनके सुनेहम जौनदश अभिराम। क
तौन प्रतीति तुममें होयसुनि बलधाम ॥ अरजुनउवाच ॥ कहत
दशनाम अपने सुनहु उत्तरतौन। जगतमें हैं विदित प्रथम
सुने हैं तुमजौन ॥ अर्जुन किरीटी जिष्णु फाल्गुन श्वेतबा
बीर। कृष्ण धनंजय सव्यशाची विजय बिभत्सुगँभीर ॥ ग
उवाच ॥ भयेकैसे नामयेतव कौनकारणपाय । अर्थ हेतु सा
हमसों कहहु तौन बुझाय ॥ तौन सुनिकै होय तुममें हमैं
ति बिश्वास ॥ अरजुनउवाच ॥ जीतिजनपद बित्तलै बहुकियो
पने पास ॥ रहेतेहि धनमध्यतातेभो धनंजयनाम। जीति
गण लियोताते बिजय नाम ललाम ॥ श्वेतरथके अश्वय
श्वेतबाहननाम । जन्मउत्तर फाल्गुनीमें नाम फाल्गुनआम
है किरीटी नाममोहिं किरीटदिय मघवान । युद्धमें न बिभ
करत बिभत्सु कहत सुजान ॥ दुहुंपाणिले धनुगहत ताते
व्यशाची नाम। शुक्लहम कृतकरत याते कहत अर्जुन आम
कृष्णधारो नाममेरो प्रीतिकरिकै तात । देहवर्ण बिलोकि
असित अरु अवदात ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कियोबन्दन जिष्णु
तब निकट उत्तर आय। कहो आगम रावरोभो हमैंअति सु
दाय ॥ कहोहम अज्ञानतातेक्षमाकीजैतौन। कियोकर्मबिचित्र
तुम पूर्व हेबलभौन ॥ चढ़हु सुरथ बिचित्रपर मोहिंसारथी
बीर। चलैंकौन अनीकपर हम कहहुसो रणधीर ॥ अरजुनउवा
पुरुषव्याघ्र प्रसन्नहैं हमतुम्हैं भीति न खर्ब । मारिकै हम
करिहैं शत्रुसेनासर्ब ॥ स्वस्थ ह्वै तुम लखहुमोको करतआरि
युद्ध। समरमें हम करतहैंयहि महाभैरवउद्ध ॥ बांधिकै सवश
राखहु यथास्थितगम्भीर ॥ अस्त्रमेरेबेगि ल्यावहुपासमेरेबी





म्पायनउवाच ॥ जिष्णुके सुनि बचन उत्तर उतरि तरुते धाय।
स्त्र सिगरेधनंजयके दिये रथपरआय ॥ अरजुनउवाच ॥ जीतिहैं
म कुरुनको पशुलेहिंगे तुवसर्ब ॥ नागहयरथमयीसेना सहित
जन अखर्ब ॥ फलित मेरोबचनहै गांडीवधर हमबीर। शत्रु
न अजेय हम तव भीतिहर गम्भीर ॥ उत्तरउवाच ॥ डरत हम
हिं तिन्हैं तुमको युद्धजेता ज्ञान। इन्द्र केशवसदृशरणमें आ-
को अनुमान ॥ मोह मोको होत मनमें चिन्ति चरित अनूप।
न कर्मबिपाकसों तुम धरो क्लीवस्वरूप ॥ शूलपाणि समान
म गन्धर्बपति मघवान । फिरत धारे क्लीवको तुम रूप अति
लवान ॥ अरजुनउवाच ॥ धरो सांवत्सरिक ब्रत यह ब्रह्मचर्य्य म-
न। ज्येष्ठभ्राता की सुआज्ञापाय सुनहु सुजान ॥ नहीं हैं हम
आव करत स्वधर्मबश परकर्म । भयो तौन समाप्त ब्रत हम हैं
पात्मज पर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ तुम्हैं पाय सहाय करिहैं सुरनसों
युद्ध। भये निर्भय कराहिंसो हम कहहु जोतुम उद्ध ॥ गहैंगे
थ अश्व तुव हम शत्रु रथकर नास। सारथ्यमें हम परमशी-
श्वेत गुरूके रहिपास ॥ यथा दारुक यथा मातलि सारथी अ-
राम । तथा जानहु मोहिं सारथि कर्ममें बलधाम ॥ चरण
माके परत देखि न भूमि परशत खर्ब । लगो दक्षिण ओरसो
सुग्रीवके सम अर्ब ॥ बामओर जो लगोहै हयमेघपुष्पसमान।
नकको सन्नाह पहिरे जौन है बलवान ॥ सैव्य समहै तौन
जानहु भरो बेग अखर्ब। जौन दक्षिणओर पीठे वहत है यह
सर्ब ॥ सो बलाहकसदृश है अतिबेगमें बलवान। तुम्हैं बहि-
योग्ययहरथयुद्धमें अतिमान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ बलय बाहुनते
उतारे तब धनंजयबीर । कनकवर्ण सु सुपर्म मणिमय लियो
हिरि गँभीर ॥ कृष्णकुंचित केशबांधे बसनसों अतिमान।
दिव्य अस्त्रनकोकियो शुचिहोय पारथध्यान ॥ अस्त्रसांजलि
आयऐसे कहनलागे बैन। कहहुसोहमकरैं किङ्कर कार्य्यतौ बल

ऐन ॥ पार्थ तिनको पाणिसों गहिकहे बचन अनूप । रहहु
मनोगत तुम सर्ब स्मरण स्वरूप ॥ जिष्णुशस्त्रनको ग्रहणक
कै प्रसन्न उदार । गांडीवपै ज्याराखि उत्तमकियो धनुटङ्कार
धनुषके टङ्कारते भो भूमिकम्प अखर्ब । भयो उल्कापात म
प्रकाश आशासर्ब ॥ हलनलागी ध्वजाजानो कुरुन अशनि
पात । भयो जो गांडीव धनुते महत शब्दाघात ॥ उत्तरउबाच
एक पांडवश्रेष्ठ तुमये महारथबहुबीर । इन्हें कैसे जीतिहौ
युद्धमें रणधीर ॥ कौरवनको देखिकै ससहाय तुमकोएक । है
है सन्देह मेरे चित्तमेंसबिवेक ॥ अरजुनउबाच ॥ घोषयात्रामें
गन्धर्बगणसों युद्ध । रहो कौन सहाय मेरे धरहु भय न बिरु
कियो खांडवदहन तब ममरहो कौन सहाय । निवात क
पुलोम मारे एक हम असहाय ॥ स्वयम्बरमें द्रौपदीके रहे
पतिसर्ब । तिन्हें सबस सहायजीते एक हम बिनअर्ब ॥ देव
नवशक्रसह दिगपाल रणमेंआय । युद्ध करिकै बिनाजीतो
मोसोंजाय ॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणउत्तरार्जुनसंवादबर्णनोनामाविंशोध्यायः
बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ उत्तरहि करि सारथी करि शमी
क्षिण ओर । चढ़े रथपर चले अर्जुन शस्त्रलीन्हे घोर ॥ ध
रथते काढ़ि दीन्हों सिंह चिह्नित जौन । शमीके धरि मूल
पर गयो उत्तर तौन ॥ बिश्वकर्मा रचित अद्भुत ध्वजा
महान । महाबल जिहिमें बिराजत बीरबर हनुमान ॥ ध
मानस कियोताको पार्थ मनमेंपर्म । तिमिहिं अग्नि प्रसन्न
को कियो ध्यान सशर्म ॥ तत्र चिन्तन करत ताको कपि
अभिराम । सुरथ उतरो गगनते तबसह उपांग ललाम ॥ स
उतरे देखिताकोकरि प्रदक्षिणबीर । जायतापै चढ़े अर्जुन
बाहनधीर । बांधि अंगुलि त्राण पारथधनुषलीन्हे तौन ।
रथपरचलो उत्तरदिशाकोबलभौन ॥ धमितकीन्हों शङ्खको





मनअतिबलवान । बेगिदौरो हांकिकै रथशत्रुशमन समान ॥
ानुके भरगिरे क्षितिपर देखिकैतेअर्ब । चढ़ोरथपर देखिउत्तर
रो भीतिअखर्ब ॥ देखि अर्जुन बागगहि किय यथावत संह-
ाय । समाश्वाशित उत्तरहि करि हृदयमांह लगाय ॥ अरजुनउ-
च ॥ राजपुत्र न डरहु तुमहौ क्षत्रसम्भवबीर । लहत कैसेशत्रु
णके मध्यखेदगँभीर ॥ शङ्खभेरीशब्द सुनिकै नागगर्जमहान ।
हतहौ तुम भीति प्राकृत पुरुषसे सुसमान ॥ उत्तरउबाच ॥ शङ्ख
ी अरु गजनकी यहिभांति धनुधुनिओर । आजुलोंनाहिं सुनों
कबहूं सुनोंकुरुकुलमौर ॥ ध्वजा ऐसीलखी नाहिं रथघोष ऐसो
प्रान । सुनोंनाहिं यातेभयो अतिमोहमोहिं सुजान ॥ दिशाछा-
दित ध्वजनसों सबभई जलदसमान । जानिपरहि न धनुषध्वनि
बधिरभे ममकान ॥ अजुरनउबाच ॥ करहुरथ एकान्तमेंदृढ़धरहु
स्मि सुजान । शङ्खकरत सशब्दहमफिरि अशनिपातसमान॥
शम्पायनउबाच ॥ धमित कीन्हों शंखको फिरि प्रबल अर्जुनबीर ।
ांडीवकी धुनिते भयो क्षितिकम्पभूरि गँभीर । द्रोणउबाच ॥ यथा
रथघोषयाको धनुष धुनि अतिमान । जिष्णु ते नहिं अन्य
कोऊबीरहैबलवान ॥ शस्त्रकरत प्रकाश नहिं हय हर्षि करत न
ौन । अग्निहोत्रन ज्वलित कीन्हों साज्यसमिध सुहौन ॥ मृगा
ोरतसूर्यकी दिशि घोर रोर सुनाय । ध्वजन ऊपर कागबैठत
अशुभ शूचक आय ॥ फिरत रोदन करत सेना मध्यजम्बु-
कघोर । भानु करत प्रकाश को नाहिं सतम चारों ओर ॥ भ-
ये सबके रोम ठाढ़े बढ़ो मानस त्राश । नियत जानो परत
ह्वै क्षत्रिगण को नाश ॥ परत देखि निमित्त कारण नाशकेरो
ौन । बाहिनी में घोर उल्का भूरिभयदा तौन ॥ हर्ष बाहन
करत हैं नहिं करतरोदन अर्ब । गृद्ध देखहु किये आवृत
भूप सेना सर्ब ॥ पार्थ के शर बिद्धसेना देखि तापिहौ भूप ।
युद्धरक्षा रहित सेना भजैगी अतिरूप ॥ भये सकल बिबर्ण

योधा किये कातरनैन । गायठाढ़ी किये ठाढे सैनमें तहँ चै
इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेअशांतिकोनामएकविंशोऽध्यायः २१
वैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ भीष्म कृप अरु द्रोणसों ऐसे सु
धन बैन । कहे वृद्ध बिचारिकै मनमांह अति मति ऐन ॥
हम पहिले कहो अब कहतहैं फिरि तौन । करो बारहबर्ष
में प्रगट पाण्डव गौन ॥ गुप्त ह्वै कै रहैं तेरहबर्ष द्वादशमा
भये अर्जुन प्रगट बाकी बर्ष गुप्त निवास ॥ बसौ बारहबर्ष
में फेरि पांडवजाय । कहौभुक्तअभुक्त याको भीष्मसत्यसुभा
गुप्तबर्ष ब्यतीत भोनाहिं अबहिं मेरेजान । मोहिंको अज्ञा
की पार्थको अज्ञान ॥ द्विधाभावज अर्थसों नाहिं होतसंशय
श । करो चाहत कछू कारज कछू होत प्रकाश ॥ लियोगो
घेरि हमगुणि मत्स्यपतिको बाध । मिलोआय बिभत्सु जो
कौनको अपराध ॥ त्रिगर्त्तकारण मत्स्यसो इतकरनआयेयु
कियोहमसब मत्स्यकोबहुभांतिकार्य बिरुद्ध॥ कहोहोत्रीगर्त्त
सोंप्रथमहमसमुझाय।हरहुगोधनमत्स्यपतिकोसप्तमीकोजा
अष्टमीको आइहैं हमउदै होतेभान । हरणकरिहैं मत्स्यगो
उदक ओरमहानं ॥ गयेगोधन लैत्रिगर्त्तकि भजो लरिकैभ
बंचिहमको मत्स्यपतिसों मिलोकै हितरूप ॥ तिन्हैंगोधन
हित तजिकै निशामें फिरिआय । लरोचाहत मत्स्यपति
जोरि सेनसहाय ॥ किधौंआवत एकआपुहि युद्धको बलव
किधौंकोऊ सुभटताको एकबीर महान ॥ मत्स्यपतिहै ए
यह जिष्णुहैबरबीर । युद्धतासों करैंहमसब सुनहुसम्मतधी
रहेरथपर होय जड़से रथिकजे बलवान । भीष्मकृप सह
द्रौणिक अरुबिकर्ण सुजान ॥ विनायुद्ध न श्रेययाते रहहु
सचेत । उद्ध युद्ध बिना न हमसों इन्द्रगोधनलेत ॥ कौन
स्तिननगरको भजिजाय गोरणधीर । अश्वसादी जाय
नहिंपदातीबीर॥ सुनिसुयोधन बचनबोले कर्णअतिबलभो





णकोकरि पृष्ठपीछे नीतिकरु नृपतौन ॥ पांडवनको जानिकै
तकरत त्रासितसैन । भरेअर्जुन प्रीतिसों सबद्रोण बोलत
न ॥ देखिआवत जिष्णुकेभाषत प्रशंसितबैन । नीतिभूपति
चहुसो जाते न भाजैसैन ॥ द्रोणको प्रियसदा पांडव प्रीति के
अनुरूप । कहतसुनिकै अश्वही सुनितासु बरणअनूप ॥ द्रोण
कारुणिक हिंसा कोनजानतरूप । महाभयमें मंत्रइमिसो बू-
भये नाहिंभूप ॥ सभाउपबन साधुजनमें सोधमाहँ ललाम ।
कथावार्त्ताबीजपण्डित होतहैंअभिराम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कर्ण
सेबचन कुत्सितकहे फिरिफिरिभूरि । कछूनहिं आचार्यबोले
हिभविष्यबिसूरि ॥ कर्णउवाच ॥ करहुगोधन सकल रक्षितब्यूह
धहुउद्ध । रहहुसबसन्नद्धठाढ़े करतहैं हमयुद्ध ॥ मत्स्यपति
भिमत्स्यकेयह चलोआवत जौन । ताहिबारण करतबला बा-
रको जिमिगौन ॥ चापतेमम मुक्तशायक सर्पसे शितधार ।
लक्ष्यतेजे नहींचूकत भरेबेग उदार ॥ रुक्मपुंख सुतीक्ष्ण शम-
कमुक्त भोतेजौन । पार्थको तेछायलेहैं शलभतरु समतौन ॥
रनकोसन्धानज्योंसुनितलन्हको आघात । सुनहुगेतुमसदृश
रीबज्रकैसोपात ॥ वर्षतेरहरहोअर्जुनबसतबनकेनाह । युद्धसों
रिस्नेहसोऊलैरगोनरनाह ॥ पात्रअर्जुनपायगुणसों भरोबिप्र
समान । करैंगेबसुभूरिसोहम ताहिशायकदान ॥ अग्निकेसम
जिष्णुआयुध धरेइन्धनजौन । सहितबनको भस्मकारकमहाब-
लकोभौन ॥ अश्वबेगप्रबातगर्जनिसुरथघोष उदार ।मेघसमहम
गमन करिहैं बर्षिकै शरधार ॥ कर्णके सुनि बचन ऐसेभरेगर्व
महान । कृपाचारयदिये उत्तर महाबुद्धि निधान ॥ कृपउवाच ॥ क्रूर
र तव रहति मतिनिति युद्धमें राधेय । नहींजानत प्राप्तिकारण
सुफल अनुमेय ॥ शास्त्रमतते शकुनको फल जानिकै हमसर्व ।
कहतहैं हम युद्धहैयह नाश हेतुअखर्व ॥ देशकाल बिहीन युद्धन
बिजय देत अखण्ड । प्रबल बीरप्रचंडहूको नष्टहोत घमण्ड ॥

देशकाल बिचारि नीको युद्धकीजै बीर । काललहि अनुक
रणफल प्राप्तहोत गँभीर ॥ बचनसों रथकारके ब्यवसाय क
न बुद्ध । भूपयाहि बिचारि करिये पार्थसोंफिरियुद्ध ॥ एकआ
कुरुनपै कियएकखांडवदाह । कृष्णकीजेहिंहरीभगिनी एक
उतसाह ॥ एकरूपकिरातहरकोयुद्धमेंसंतुष्ट । कियोबांधोजय
थजेहिंहरीकृष्णाहिंदुष्ट ॥ पंचबर्षसुरेशसों जेहिअस्त्र सीखेस
एकसोअबकुरुनजीततलेतसुयशअखर्ब ॥एकजीतोचित्रसेन
महाबलगन्धर्ब । कालखंजनिवातकवच अजेयजीतेसर्ब ॥
रथसोसूतसुततुमकियोकहियेतौन । पार्थसोंनहिंयोग्यकरिबे
सुरपतिजौन ॥ पार्थसोंनहिंएकलरिबे कहतबुद्धिसमान । की
अहि मुख अंगुलीदे कहाभेषजप्रान ॥ बणयकुंजर मत्तपै च
बिना अंकुशपाश। नगरको तुम चलो चाहतभूलि कारण
श ॥ ज्वलित पावकमाहँ पैठो चहतहौ सहचीर । तरो चा
सिंधु गलसों शिलाबांधिगँभीर ॥ कृतास्त्रके अकृतास्त्र दु
बलीके अति जौन । लरो चाहत पार्थसों हा महा दुर्मतितौन
बर्ष तेरह लह्यो दुख जिहि महाबीर अधर्ष । सिंहसोंको भिरै
नहिं भरो भूरि आमर्ष ॥ दोहा ॥ बज्रपाणिसम पार्थकोहै ब्य
साय गँभीर । हम षटरथ मिलिलरैंगे सुनहु कर्ण रणधीर ॥
सु सैन्यक सजग ह्वै बांधिब्यूह बलवान । करौ युद्ध सब जि
सों बासव दनुज समान ॥

इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेकृपवाक्यबर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २

अश्वत्थामोबाच ॥ दोहा ॥ नहिंगोधन जीतेगये नाहिं सीमा
पार । नहिंहस्तिनपुर गयेका कहत निलज्जउदार ॥ जीतिम
संग्रामकोपायबिपुलधनतौन । अपनोपुरुषारथ कहतनहींम
जनजौन ॥ दाहत अग्नि अबाक रबिभौन प्रकाशक नाक ।
धराजो जगतको नित्यसो रहति अबाक ॥ ब्राह्मणजेते कुश
हैं भोजनादि केमाहिं । कहतआपु उत्तर सुनोपासहमारे पा





कियो स्वयंभू बिहित जो चारिबर्णको धर्म । अपने अपने बर्ण
को बहत धर्मजनपर्म ॥ कहौ कुशल कैसेभये तुमरणमें गंभीर ।
खत अपनी जातिको नाहिं बोलतक्षै बीर ॥ यथान्याय क्षिति
जीतिकै सज्जनबीर उदार । निर्गुणहू गुरुको करत महाभाग
त्कार ॥ होतप्रशंसित भूपकोजीति द्यूतमें राज । क्रूरकर्म धृत-
राष्ट्र सुततो सहक्षै हतलाज ॥ ऐसेधनलहि करैगो अपनो कौन
बखान । पापपुंजकरिकै कपटक्षैकै ब्याध समान ॥ द्वन्दयुद्ध करि
जिष्णुको केहिजीतो बलवान । धर्मभीम माद्रीतनयके को बीर
समान ॥ इन्द्रप्रस्थमें युद्धकरि काकोजीतेकर्ण । कृष्णाकोजीतो
यथा तथा करहुसो स्मर्ण ॥ एकबस्त्रा रजभरी सो ल्याय सभा
के भौन । कौरव कुलको मूल तुम काढ़ो दुर्मति भौन ॥ स्मर-
ण करहु तहँ बिदुरजे कहे महामति बैन । करतद्यूत प्रारंभको
कुरुकुल नाशनऐन ॥ क्लेश न कृष्णाकोसकतसहि तेपांडवधीर ।
कौरव कुलके नाशकोप्रगटो अर्जुनबीर ॥ तुमफिरिपण्डितहोय
के कहनचहतहौबैन । बरअंतरनिःशेषसो कियोचहतबलऐन ॥
देवासुर गन्धर्बसों जिष्णु अभयकरयुद्ध । तुमसों सब बिधिसों
अधिक बीरधनुर्द्धरउद्ध ॥ अस्त्रनसों जोअस्त्रको करतनाश रण
धीर । अर्जुनसोंको जगतमेंकरतायुद्धगँभीर ॥ पुत्रशिष्यकोसम
कहत जेमतिमान सुनीति । यातेकुन्ती सुतन पर द्रोण करत है
प्रीति ॥ यथा द्यूतकरिसभामें कृष्णाहिं गहिकैहाथ । ल्याये अब
तैसे करहु युद्धजिष्णुकेसाथ ॥ यह तव मातुलि शकुनिहै दुष्ट
द्यूतकर जौन । अर्जुनके ह्वैसामुहेकरै युद्धअबतौन ॥ फेंकतअक्ष
न धनंजयज्वलितअग्निसम बान । महाधनुष गांडीवते निशित
करतसन्धान ॥ मातुलिके सँगसभामेंकियो यथातुमद्यूत । ताते
रक्षित होय अबकरहुयुद्ध सुतसूत ॥ करौ युद्ध जोधानहम करत
जिष्णुसोंयुद्ध । तब हम लरिहैं मत्स्यसों जब ह्वै फिरिहै क्रुद्ध ॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिअश्वत्थामावाक्यबर्णनोनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा कृप कहत साधु नीति श्री
बैन । क्षात्र धर्मसों चहत हैं रणहिं कर्ण बलऐन ॥ कहत वातौ
आचार्यको ऐसे बचन बिरुद्ध । देश कालको देखिकै सम्मते ।
हमको युद्ध ॥ जाके रबिसे पंचहैं बैरीबीर महान । उदय दे
तिनकीन क्यों पावै मोहसुजान ॥ लहत स्वार्थमें मोह सब
विद्धर्म स्वरूप । तातें हम तुमसों कहत बचन रुचैजो भूड़
कर्ण कहे आचार्यको द्वेषतेन थे बैन । कहे तेज उत्पन्नकोध
करहुबुधि ऐन ॥ रहो न काल बिरोधको आये अर्जुनबीर ।
आचार्य्यादिक सकल क्षमाकरहु रणधीर ॥ तुममेंअस्त्राभ्य
ज्यों रबिमें प्रभाअमान । बसति चन्द्रमामें यथा लक्ष्मी सु
सुजान ॥ तुममेंहै ब्राह्मण्यता सह ब्रह्मास्त्रमहान । वेदचारि
में बसत क्षात्रधर्म अतिमान ॥ क्षात्रधर्म ब्राह्मण्यसँग सुन
काहू साथ । ससुत द्रोणमें बसत हैं पूरणकिये प्रकाश ॥ जो
दृग्नि बिनजगत में अधिक द्रोणसों कौन । सर्बवेद ब्रह्मास्त्र
मनु बिधि बिरचो भौन ॥ कीजै क्षमा अचार्य्य सुत समय
को हैन । युद्धकरहु मिलिकै सकल अर्जुनसोंबलऐन ॥ अश्व
मोवाच ॥ न्याय न हम सों बचन यह है कहिबे कुरुबीर । लहै
गुणसिद्ध्यको भाषो गुरु गम्भीर ॥ शत्रुहुकोगुणवाच्य है
दोष मतिमान । पुत्र शिष्यको दोषगुण कहत सयत्न सुजा
दुर्योधनउवाच ॥ करुअचार्य अब क्षमातुम समय शान्तिकोप्रा
भेद न तुममें है कछू तुम ममगुरुआति आप्त ॥ तब दुर्योध
र्ण कृप भीष्म सहित कहिबैन । कियो द्रोणिके क्रोधको श
महामति ऐन ॥ द्रोणउवाच ॥ प्रथमबचन जो पितामह कहो
मतिधाम । हम प्रसन्न ताते करहु अबजो नीति ललाम ॥
खै सुयोधनको नहीं जैसे पारथबीर । सहसा नीतिसो की
तजिकै मोह गँभीर ॥ भोनिवृत्त बनबासते भरो क्रोधबल
बिनालिये गोधन नहीं क्षमा धरैगोतौन ॥ कहोसुयोधन प्र





श्रीभीषम तुम सोंजौन । समुझि कहहु बीतेकि नहिं वर्ष त्रयोद-
वातौन ॥ भीष्मउवाच ॥ कछू द्योंस अधिकी गयेबर्ष त्रयोदशबी-
सम्मते । ज्योतिष पंचप्रकारके कहत अब्द तेहिरीति ॥ सावनश-
देशधर नाक्षत्रिक बार्हस्पत्य सुसौर । होतबर्षहैं पांच बिधि बदत
सबबेज्ञ शिर मौर ॥ विजयादशमीमें गये हरिपाय दुखरूप । पां-
भूइव श्रीषममें भये प्रगटजानि यह भूप ॥ पंचमास बाकीगुणत
कैकै परम सचैन । वर्षहोत बिधिपांचके जानत तौन तिन्हैंन ॥
तेरहबत्सर अरु नवबासर पांडव बिज्ञबिताय । सुभट शिरोम-
णि प्रगट भयो है महाक्रोधसों छाय ॥ सावन बत्सर जौन जो
सुदिन गणनासों होत । अमा पूर्णिमा पायकै शशधर करत उ-
दोत ॥ नक्षत्रनसोंहोतहै नाक्षत्रिकजो बर्ष । सौरहोत संक्रान्ति
सुमतिउक्त जो बर्ष ॥ एकराशिको भोगिजब करत दुतिय
गौन । बार्हस्पत्य सुहोतसो मास त्रि दशको तौन ॥ चांद्रमान
त्सरत्रिदश पांडव बिज्ञ बिताय । युद्धहेत अतिक्रुद्ध ह्वै प्रगट
भयोहै आय ॥ अर्जुन जानतहै सकल भेदबर्षके जौन । रथ
चढ़ि आयो ह्वै प्रगट याते सो बलभौन ॥ सर्बमहात्मा धर्मबिद
पांडवकोबिद पर्म । धर्मबिमुखते होहिंकिमि जासपरस्परधर्म ॥
बिक्रम चाहत कियो पांडवसुनु कुरुभूप । धर्मपाशसों बद्ध
नहिं तजो क्षात्रब्रतरूप ॥ लरो समरमें कीजिये शस्त्र धरणको
धर्म । भयोप्राप्त अब आयसो करहु यथोचित कर्म ॥ कौरवहम
संग्राममें सिद्धि न लखतगँभीर । महाक्रोधकरि प्राप्तभो प्रबल
धनंजयबीर ॥ होतजयाजय एकको भये युद्ध अतिमान ।
करहु युद्धकैदीजिये तिन्हैंराज्य सुखदान ॥ एकःक्षिप्र कीजैनृपति
आयो अर्जुनबीर ॥ दुर्योधनउवाच ॥ नहींपितामह देहिंगे बांटिराज
गम्भीर ॥ करहुपितामहयुद्धकोजोउपचारिककर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ हो-
तसर्बथा श्रेयसो सुनहु कहतहमपर्म ॥ चतुर्भागबलसहित तुम
जाहु स्वपुरको भूप । चतुर्थांश सेनाचलो गोधनलिये अनूप ॥

अर्द्धसैनसोंकरहिंगे हम पांडवसोंयुद्ध । द्रोणकर्ण कृपसुत सा
बीरमहाबलउद्ध ॥ सुनहु तात हम जिष्णुसों करिहैं युद्धमहा
आवै यदपि सहायको मत्स्यसहित मघवान ॥ बैशम्पायनउवा
रुचो सुयोधनको बचन कहो पितामहजौन । यथाभागकरि
को कियगोधन सहगौन ॥ भीष्म बिदाकरि भूपको गोधनसा
सहाय । सेनामुख्यन सहरहे आपु सुब्यूह बनाय ॥ भीष्मउवा
रहो मध्यमें द्रोणतुम अश्वत्थामा बाम । दक्षिण दिशि र
करो कृपाचार्य्य बलधाम ॥ अग्रभागमें कर्णतुम रहहु सज्
बीर । पृष्ठभागपर रहतहम पालत सैनगँभीर ॥ बैशम्पायनउवा
रोला ॥ देखिऐसे सज्जसेनाकौरवनकीबीर । बेगिआयो जिष्णु
कोभरतघोषगँभीर॥लखीकर्णादिकनताकीध्वजा अतिरथघो
सुनीध्वनिगांडीवधनुकीभरीदारुणरोष॥कहनलागेद्रोणऐसेदे
सबकीओर । भयोप्राप्तसोमहारथलखुजिष्णुको अतिघोर ॥
उवाच ॥ ध्वजा लक्षित होतिहै यहबानरीअतिमान । गर्जतक
वर होतरथको चक्रजन्यमहान ॥ चढ़ोरथपर चलोआवतध
परखैंचत घोर । गांडीव धनुज्या घात धुनि सों भरत चारों
र ॥ बाण ये द्वै चरणऊपर परेमेरे आय । छुवत मेरे कर्णको
गये द्वै अनुभाय ॥ बहुतदिनमें लखो हमयह बंधुप्रिय मति
न । ज्वलित जाकी लसित लक्ष्मी पांडुपुत्रसुजान ॥ अरजुनउ
च ॥ मत्स्यपतिसुत हांकिकैरथ जाहुसेनापास । जहांते लखि
कुरुकुल अधम दुर्मति रास ॥ जायनीरे छोंड़ि सबको ल
अर्जुनबीर । नहीं देखो तहँ सुयोधन भरोक्रोध गँभीर ॥ ल
दक्षिणओरगोधनलयेसेनासाथ । कर्णभीषमद्रोणको तजिज
हैकुरुनाथ ॥ रथानीकविहायकै यहचलहुउत्तरतत्र । लयेगो
जातभाजो है सुयोधन यत्र ॥ तहां करिहैं युद्ध लाभ न यहां
संग्राम । जीति ताको फिरैं अपने लेय गोधन माम ॥ बैशम्पा
उवाच ॥ यहिभांतिसुनिकैकिये उत्तरअर्ब आतुररूप । हांकिकै





लोजेहां रहो कौरवभूप ॥ छोंड़ि भीष्मादिकनको तहँ रहे जे
णधीर । जानि आशय कृपा चारय लगे कहन गँभीर ॥ बिना
जानहीं हमसों लरैगो बलवान । छोड़ि पीछे जाततांके भंरो
ोध महान ॥ जिष्णुसो को एक लरिहै पायरणमें क्रुद्ध । कृष्ण
ेन मघवान यासों सकैकोकरियुद्ध ॥ किलोबारणकरै द्रोणस-
त्रताको जाय । नावसो नृपलखो बूड़न जिष्णु बारिधिपाय ॥
ांक दै कहि नाम अपनो जाय अर्जुनबीर । शरनसों भरि दि-
ा शलभ समानसैन गँभीर ॥ भूमि नभ नहिं लखत सैनिक
घन बर्षत बान । शंखधुनि तब कियो अर्जुन अशनि पात
मान ॥ तानिकैधनु शरन्हसों तब ध्वजाकाटी सर्ब । शंखधनु
थघोषसोंभो भूमिकम्प अखर्ब ॥ बोलि हंभा शब्द ग्रीवा पु-
श्उद्धउठाय । शंखधुनिसुनि नगरकी दिशिभजीं सिगरीगाय॥
ाय सकल छुड़ाय दीन्हीं मथित करिकै सैन । चलो सोंहैं नृप
योधनके महाबल ऐन ॥ सैनब्यूहबिलोकि अर्जुन गाढ़ अति
लऐन । कहोउत्तर कुंवरसों यहिभांतिसों बरबैन ॥ बेगसों ये
ांकि उत्तरश्वेतमेरेअर्ब । चलहुसेनामध्यजहँ कुरुबीरवृन्द अ-
र्ब ॥ कर्ण मोसों लरन चाहत नागसों ज्यों नाग । देहु मोहिं
राय तासों मत्स्यपुत्र सुभाग ॥ बातजबरथ हांकि उत्तरभेदि
यूहमहान । लगो सेनामध्य बिहरण जिष्णु अति बलवान ॥
त्रुसह संग्राम जित जय चित्रसेन सुबीर । लरनलागे चाहि
िवन कर्णको रणधीर ॥ तिन्हैं तब धनुषाग्नि सों तकिबाण
ाल समान । गहन सों रथवृन्द तिनकोकियो भस्म महान ॥
मुलयुद्ध प्रवृत्तभो तब कै बिकर्ण सक्रुद्ध । लरनलागो जिष्णु
ा शरबर्षिकै अति उद्ध ॥ क्रोध करि ध्वजकाटि डारोतास अ-
नबीर । ध्वजाकटत बिकर्ण भाजो भरोभीति गँभीर ॥ बीर
त्रिंजय भिरो बीभत्ससों अतिमान । जगतजेता जिष्णुऊपर
गोबर्षन बान ॥ पंचशरसों हनो ताको धनंजय बलवान । गि-

रो शत्रुंजय स्वरथते वृक्षसों गतप्रान ॥ भूप भटयोधार श्री
णित हनेअर्जुनबीर । कम्पसेनालगीज्यों बशबायु बनगम्भी
हनें अर्जुन सुभट तिनते भरी भू अभिराम । जिष्णु के भय
भाजे बीरजे बलधाम ॥ धरेवर्म उदार अर्जुन मत्तबारणा
करन सेना नाशलागो क्रोधसों भरिभूप ॥ फिरत सेनामाहँ
र्जुन अग्निसों चहुंओर । दहत बनसों बर्षिके समज्वालश
रघोर ॥ शोणाश्व रथके प्रथम चारो शरनसों संहारि ।
शिर संग्राम जितकोदियो भूपरडारि ॥ हतो भ्राताहि देखि
कर्ण क्रुद्ध महान । आय अर्जुनको हनेतेहि निशितबारहब
हनेचारो हयनको शरसहित उत्तर सूत । देखि आवत क
अति बेगधारे धूत ॥ चलो आतुरहांकिकै रथ बीरअर्जुनउ
दोउ अतिरथ धनुर्द्धर अरि वृन्द दमन सक्रुद्ध ॥ लगे
लखन तिनको युद्धआय अमान । मूंदि लीन्हों कर्णकोरथ
अर्जुनबान ॥ बाणबिद्धसनाग रथभट करनलागेशोर । छन्न
ष्मादिकनकोकियबर्षिकै शरघोर ॥ कर्ण काटे शरनसोंसबाजि
प्रेरित बान । रहो ठाढ़ो तहां सहितफुलिंग अग्निसमान ॥
तहँ तबशब्द भेरीशंख ज्यातल ताल । कर्णकोकौरवप्रशंसा
करन बिशाल ॥ लांगूल अंकित ध्वजाजाकी महाभयकर
गांडीव ज्याधुनिशब्द सों अतिभरत चारोंओर ॥ देखि
कर्णऊपर बर्षिकै बरबान । साश्वरथसहसूत अर्दितकियो
महान ॥ पितामह कृपद्रोणपर बहुजिष्णु बर्षेबान । कर्णस
जिष्णुपर किय बाणबृष्टि महान ॥ तथालीन्हों छायशरसों
को कुरुबीर । चन्द्रार्कसे घनमध्य ते शरबृष्टिमाहँगँभीर ॥
सों तब कर्णबेधे जिष्णुके रथअर्ब । तीनितीनि सुशरन
सूतकेतु अखर्ब ॥ देखिकै शरबिद्ध यहरथ सूतको बरबीर
तासिंहसमानजागो भरो क्रोधगँभीर ॥ शरास्त्रबर्षोकर्णऊप
अमानुषकर्म । निशितभल्लन डारिबेधो सूतसुतकामर्म ॥





शललाट ग्रीवा हृदयतासु महान । मुक्तकरि गांडीव सों शर
रशनिसे अतिमान ॥ जिष्णुके शरबिद्धकैकैभयो व्याकुलबर्ण ।
ड़िकै रणभूमिभागो सूतको सुतकर्ण ॥

तिमहाभारतदर्पणेबिराटपर्बणिकर्णपराजयबर्णनोनामचतुरविंशोऽध्यायः

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ कर्णभाजेतबसुयोधनकेपुरोगमजौन ।
न अपनी आपनीलैतहांआये तौन ॥ बहुतभांतिनलगेबर्षन
प करिते बान । सिंधुबेला सदृशयाभे तिन्हैं जिष्णुमहान ॥
व्य अस्त्रनसों लिये तबतिन्हैं अर्जुनछाय । किरणिसों जिमि
शनको सब उदितदिनकरआय ॥ शरनसों दशादिशाअर्जुन
दिलीन्हींसर्ब । देखिपरत न कहूंकोउ सुभट गजरथ अर्ब ॥
नहिं बिनबिद्ध तिनके अंगअंगुलमान । जिष्णुप्रेरित धनुष
छुटि निशित लागेबान ॥ हस्तलाघव जिष्णुको लखिकै प्र-
तबीर । कालाग्निके समजरत बिभत्सु भस्मभटनगँभीर ॥
तसहि नहिंशत्रुताको ज्वलित अग्निसमान । सघनअर्जुन
नसों सोलसीसैन महान ॥ भानुरश्मि समेत गिरिपर यथा
द अखर्ब । सैनकिंशुक बिपिनसी भइकौरवनकी सर्ब ॥ परे
न समेत अगणित मरेमारेअर्ब । परे क्षितिपर मरेगज मनु
अभ्रअखर्ब ॥ प्रलयमें ज्यों जगत दाहत महापावकभूप ।
रनको त्योंनाशकीन्हों जिष्णुकालस्वरूप ॥ भजी सेनाचहूं-
शिको कौरवनकी सर्ब । महाभयसों भरी देखत नाशकाल
र्ब ॥ तेजसों अत्यस्त्र गणके धनुष ध्वनिमें चण्ड । महा-
र शब्दसों भरि भूरिगो ब्रह्मण्ड ॥ देवारि हन्ता जिष्णु
सों भरी कौरव सैन । देतशक्ति जोरही लखतहि हरीसो
ऐन ॥ शोणि ताशन शरनसों भरिलयो गगन महान ।
ते जनु भानुकर जिमि दिशनको अभिमान ॥ अहि-
हिक्षण जिष्णुको रथसके रोंकिन भूप । बायुबेगी अर्बजा-
गे अतिबल रूप ॥ शत्रुतनमें जिष्णुके शर लगत ज्यों

कटिजात। तथा अरिदल भेदिकै रथजातकटिसम बात ॥ क
क्षोभित शत्रुसेना बेगसों बरबीर। सहस फणसों सर्पजैसे म
तसिन्धुगँभीर ॥ तजतशर अत्यन्त चहुँदिशि हांकिरथ अ
मान। धनुषधुनि रथघोष अद्भुत सुनत अरिहर प्रान ॥ भ
दक्षिणबाम सबदिशि जिष्णु बर्षतबान। धनु निरन्तर स
कुण्डल देखिपरत महान ॥ परतहै न कुरूपमें जिमि चतु
चषजाय। तथा लगत अलक्षमें नहिं जिष्णुकेशर धाय ॥
लत ज्यों गजवृन्द बनमें होतपथ नरनाह। मार्गतैसे लहत
को जिष्णुपर दलमाह ॥ हनत रणमें कहत ऐसेशत्रु सुभट
दार। काल अर्जुन रूप है यह नाशको करतार ॥ सेनभ
कुरुनकी करिशोर बिकल महान। शरनसों बिनु शीश की
जिष्णुखेत समान ॥ करी शोणित धारसों सब भूमि लो
रंग। भानुकेकर भये लोहित पाय शोणित संग ॥ भयो स
सदृश नभ सहसूर शोणित रूप। भयो जिष्णु निबर्त नहिं
अस्तको रबि भूप ॥ रहे ठाढ़े समर में जे महारथ रणध
दिव्यास्त्र तिन पर लगो बर्षन महा अर्जुनबीर ॥ हने स
द्रोणको शर दुःसहै दशबान। आठशर बरद्रोणसुतको हने
महान ॥ शर दुशासनको हने अरु तीनि कृपहि समान। भ
कोषटाशिली मुखसो भूपको शतबान ॥ कर्ण बेधित शरन
कियकर्णके बरबीर। महाधनुधर कर्णको लखिबिद्ध बिरथ
र ॥ भजीसेना कुरुनकी चहुँओरकी गहिऐन। बिष्णुको त
युद्ध उद्दित कहो उत्तर बैन ॥ चलैंकौन अनीकपै हमहां
अतिगौन। कहहुसोहम कीजिये अब जिष्णु अतिबलभौ
अरजुनउबाच ॥ व्याघ्रचर्म सो रचित रथहै लगे लोहित अ
हकमण्डल चिह्नजाकी ध्वजानील अखर्ब ॥ द्रोणसा आ
हमको मान्यहै अतिमान। धनुर्वेद बिधानवेत्ता जास स
आन ॥ शीघ्रताके निकटह्वैके हे धनुर्द्धरबीर। हांकिरथ





प्रदक्षिण ताहि उत्तरधीर ॥ द्रोण मोपै डारिहैं जो प्रथमआयु-
धउद्ध। सज्जह्वैकै चलहु हम सों होयगो फिरियुद्ध ॥ निकट
ताके धनुष चिह्नित ध्वजाजाकी माम। द्रोणको सुत महारथहै
सोई अश्वत्थाम ॥ सर्बथा हैं मान्य हमको महा धनुधरबीर।
वड़ोयह रथव्यूहमें जो धरेबर्म गँभीर ॥ तीसरी सेनाग्र आगे
सो सुयोधनभूप। नागचिह्नित ध्वजाजाकीकनकमय अतिरूप ॥
तासु सम्मुख चलहुमेरो हांकिकैरथबीर। द्रोणकोयह शिष्यआ-
तुर शस्त्रशीक्षितधीर ॥ याहिमोहिं देखाइबे शीघ्रास्त्र बिपुल अ-
मान। नागकक्षा चिह्नध्वजकेकरणबिदित सुजान ॥ नीलजाकी
ध्वजाधारे छत्रपाण्डुर जौन। धरेसुबरण बर्मरथ परभानुसे बल
भौन ॥ हैं सुयोधन सहअनुग येपितामह अतिबीर। पश्चात
इनपै चलौंगे येबिघनकरन गँभीर ॥ चलहु तातेबेगि इनपै हां-
किकै रथआर्य्य। खरे आगे द्रोणकेरण चहतकृप आचार्य्य ॥
बैशम्पायनउबाच ॥ कौरवनकी लखत सेनाचली ऐसेभूप। ग्रीष्मा-
तमें ज्यों उग्रमारुत लगेजलद अनूप ॥ तुरगनानाभांति गति
सो चढ़ेसादीबीर। द्विरद प्रेरित करेयोद्धा धरेकवँच गँभीर ॥
इन्द्रचाढ़ि गजराजपै सँगलये सुरगणसर्ब। यक्षकिन्नर प्रजापति
बसुरुद्र सहगन्धर्ब ॥ भयो शोभित गगनगणग्रह यथामण्डल-
बान। लखोचाहत अस्त्रकोबलमनुजमें अतिमान ॥ भयोचाहत
युद्ध भैरव जिष्णु कृप सों जौन। चढ़ि बिमानन देवआये तहां
देखन तौन ॥ पितर राक्षस महाऋषि नृप स्वर्ग बासी जौन।
नहुष और ययाति आदिक तहां आये तौन ॥ अग्नि ईश स-
धर्म्म पासी सोमबिधि सधनेश। लखनआये युद्ध कौरव जि-
ष्णु को नभदेश ॥ दिव्य माल सुगन्धसों भरि भई सैनासर्ब।
थापाय बसन्त सुरभित होत बिपिन अखर्ब ॥ देव भूप न-
क्षत्रमणिसों पायकै सहवास। रही नभगत धूरि धुन्धुरि भई
तौन प्रकास ॥ धरेमाला पङ्कजनकी चढ़े बिमल बिमान। साहित

सुरगण भये शोभित गगनमें मघवान ॥ बँधो सेनाव्यूह
लखि कहो अर्जुनबीर। सहित आदरमत्स्यपतिके पुत्रसों
धीर ॥ लसति काञ्चनमयी देवी मध्यध्वजके जास । च
दक्षिण देयताको कृपाचारय पास ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जिष
सुनिबचन उत्तर रजतसे रथअर्ब । चलोहांकि महागतिसो
पवनअखर्ब ॥ जाय कौरव सैननीरे हांकि रथ अतिमान ।
प्रदक्षिण तहांद्रोणाचार्यको बलवान॥ कृपाचारयको प्रदक्षि
देयरथ गंभीर। कियोआगे तासुठाढ़ो सहित अर्जुनबीर॥
अर्जुन देवदत्त उठाय शंख महान। धमित कीन्हों नामअ
पूरिकै बलवान ॥ सुनतशब्द महान ताको बज्रपात समा
लगे कौरव करन बिस्मय भरेभूरि बखान ॥ जिष्णुकेसुनि
की धुनि महाघोर गँभीर । शंख अपनो धमित कीन्हों
गौतमबीर ॥ शंखधुनि सों कृपाचारय पूरि चारो ओर। ध
लैकैकियो ज्याकोशब्द अतिशयघोर ॥ युद्धकांक्षी दुहुनके
लसे सूर्य्यसमान । शरद्ऋतुके धराधावलबातबशजलदा
कृपाचारय मर्मबेधी तानिधनु दशबान । बिद्धकीन्हों बिष्णु
करिक्षिप्रता अतिमान ॥ पार्थशर समुदायसों कृपकोदियो
पाटि। कृपाचारयशरनसों तेसकल डारेकाटि ॥ कोपकरिकैश
सोंकृपको महारथजौन । छायलीन्हों शरनसों बीभत्सुअति
भौन॥ शरन सों कृपहोय अर्दित क्रोधकरि अतिमान । गा
दशसहस डारेजिष्णु ऊपरबान ॥ चारिशर सों हनेकृपके जि
चारोअर्ब । गिरत तुरगन गिरेरथते कृपाचार्य्य अखर्ब ॥ क्रो
करि उठिहने कृप दशबानकरि सन्धान । निशितशरसों क
कृपकोदियो धनुष महान ॥ शरनसो फिरि कवच ताको का
अर्जुनबीर । कियो तिलतिल मानशरन न छुयोतास शरी
मुक्तकंचुक सर्पसो तबलसो कृप आचार्य्य । और हय धनुस
कीन्हें झटितगौतमआर्य्य ॥ यहिभांति काटेबहुतधनुजबाजि





धरबीर । लियोकृप तबशक्तिकरमें भरेक्रोध गँभीर ॥ शक्ति
की पार्थपै सो अशनिसी मतिमान । कियो दशधा जिष्णुसो
तिशरन सो बलवान ॥ फेरिकीन्हों सज्जधनु कृपजिष्णुकाटो
न । पार्थडारे निशित शरदश तीनि तेजसभौन ॥ युवाकाटो
कते हनिचारि चारोंअर्ब । एकशरतेंसारथीको हरोशीशअख-
॥ तीनितेरथबेणुकाटे अक्षकै ते बीर । एक शरते दईकृपकी
जाकाटि गँभीर ॥ कृपाचारयके हृदयमें एकमारोबान । धनुष
रथि हनित लखिकरि कोप कृपअतिमान ॥ कूदिरथते गदा
की जिष्णु पै अतिभार । मारि अर्जुन शरन सों दहगदा फेरि
र ॥ लगेयोधा लखन कृपको बाणजालमझार । सव्यमंडल
यो तब रथहांकि मत्स्यकुमार ॥ बिरथ लखिकै कृपाचार्य्यहि
भटजे बलवान । कियोरक्षितआयकै लिन बेगसोंअतिमान ॥
तिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेकृपाअर्जुनयुद्धबर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः
वैशम्पायनउवाच ॥ गिला ॥ द्रोणकृपकोलखिपराजयक्रोधकरिगंभीर ।
शरधनुधरि हांकि रथको चलो जहँ कुरुबीर ॥ रुक्मरथ पर
दो आवत द्रोणगुरु बलऐन । देखि उत्तर कुंवरसों इमि जि-
बोले बैन ॥ अरजुनउवाच ॥ लसति काञ्चनमयी देवी ध्वजा
पर जास । द्रोणसो रथहांकि उत्तर चलहु ताके पास ॥ अश्व
नित वृहतजाकी बाहिनी बलधाम । स्निग्ध विद्रुम सदृश
थके जासुअर्ब ललाम ॥ दीर्घबाहु प्रताप परसुद्रोण ये रण-
र । सदृश उषनस्न वृहस्पतिके बुद्धि में गंभीर ॥ अस्त्रशस्त्र
मस्तवेत्ता धनुर्वेद विधान । बसत जामें क्षमादिक गुणसत्य
ल समान ॥ द्रोणसो हमकियो चाहत युद्ध उत्तरबीर। हांकि
रथ करहुताके सामुहे रणधीर ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनत अ-
वचन उत्तर भरेबेग अखर्ब । द्रोणके रथकियो सौंहें हांकि
आतुर अर्ब ॥ बेगिआवत जिष्णु को लखिद्रोण अतिरथबीर।
टित आये सामुहें रथहांकिकै रणधीर ॥ शंखकीन्हों धमित

तिनशत भेरिशब्द समान। भई क्षोभित सकल सेना सुनतगनअमान ॥ बाणअर्जुन द्रोणके नभमें लसेयहि भांति। श-
धुसमान ॥ अरुणहंस समान तिनके देखिमिश्रित अर्ब। दऋतुके हंसमानो जातबांधे पांति ॥ द्रोणअर्जुन वृत्रबासव
बिस्मय भरे रणमें सुभट सैनिक सर्ब ॥ महाबीर अजेय लरे बलवान। मत्तगजज्यों क्रोध ह्वैकरि दशनघात महान ॥
शिष्यगुरु बलधाम। जोरिकै रथकरिअलिंगनभरेमोद ललारनसों दोउ लरनलागे परस्पर रणधीर। युद्धको व्यवहार
पार्थद्रोणहि मिलत लखिकै कौरवनकी सैन। भई शंकित हसो लगेकरन गँभीर ॥ पटत हैं दिव्यास्त्र दोऊ परस्पर मति
ये मिलेदोउ बलऐन ॥ बिहँसिकै भरि मोद अर्जुन बन्दि गान। जिष्णुवारत द्रोणकेशर शरनसों बलवान ॥ उग्रअस्त्रन
पाय। कहनलागे द्रोणके रथपास स्वरथ लगाय ॥ करहुप्रो पराक्रम दोउदेखावत बीर। गगनको भरिलेत पुनि दोउ
प्रहार तुम यह उचित बिहित बिधान। यथा बिधि हम पुनसोंगँभीर ॥ अस्त्रक्रीड़ाकरनलागे बीरदोउबलवान। दिव्य
गे फिरि धनुष योजित बान ॥ एक बिंशति बाणको तबद्रोणास्त्रनलगेबर्षन शिष्यगुरु अतिमान ॥ भरे अमरषलरनलागे
थ सन्धान। बीचहीमें जिष्णु काटे शरनसों ते बान ॥ द्रोणाण अर्जुनबीर। देवदानव सदृशभो संग्राम तुमुल गँभीर ॥
सहस्त्रसों रथ जिष्णु को लिय छाय। हस्तलाघवसो दियोणके दिब्यास्त्र रोके अस्त्रसों प्रतिकार। इन्द्रअरु बायब्य अरु
कोप तासु बढ़ाय ॥ बढ़ोद्रोण बिभत्सुसों याहिभांति युद्धमहाग्नेय सों सु उदार ॥ तहां अर्जुन अरिनके गणकवचकाटत
लगे बाणसमान बर्षनबीरदोउबलवान॥ बर्षिकै शरवृष्टिकात। शब्द होत अघात गिरिपर बज्रकैसो पात ॥ द्रोणसेना
शरनसों शरबीर। देखिकै नृपवृन्द बिस्मयसों भरे गंभीर॥रीशोणित लसी ऐसे सर्ब। भरो सुमन समूह किंशुक बिपिन
हनलागे द्रोणसों बिनजिष्णु लरिहै कौन। रौद्रक्षत्री धर्मधरनहु अखर्ब ॥ बाहुशिशि कवन्ध ध्वज धनु कवचते मतिमान।
महाबलको भौन ॥ छायलीन्हें दुहुन रथदोउ बर्षि बाणगँभाटि अर्जुन भूकरी मणि खानिसी अतिमान ॥ काटिसेना दई
द्रोण मूंदो जिष्णु को रथकोपकरि रणधीर ॥ धनुषलै गाअर्जुन द्रोणकी अति उद्ध। धुनतधनु दोउचाहि जयरवभरे आ-
अर्जुन भरोकोप महान। द्रोणको शरजालकाटो तिमिरसोर क्रुद्ध ॥ अन्योन्य छावत दुहुनको दोउशरनसों अतिमान।
भान ॥ फेरि नाना भांति सों रथ जिष्णु अति बल बीर। रे दोउ बलिइन्द्र ऐसे धनुर्द्धर बलवान ॥ भईबाणी गगनते
दीन्हें दिशन को बहु छोड़ि अस्त्र गँभीर ॥ छाय लीन्हों गमिद्रोण को अतिउद्ध। करत दुष्कर कर्म अर्जुनसों करत अ-
को शर सघन सों अति मान। देखि द्रोण न परत ज्यों येयुद्ध ॥ जेतार दानव देवको दृढ़मुष्टि अतिरथबीर। दूरपाती
हार मुद्रितभान ॥ द्रोण तब धनुधारिकै करि क्रोध अतिप्रमाथी पार्थ धनुधर धीर॥ गांडीव धनुते मुक्तकरिअतिमान
धीर। अग्निचक्र समान बर्षन लगेअस्त्रगँभीर ॥ लगेकाअर्जुन बान। छाय लीन्हों द्रोणको रथ सघन शलभ समान ॥
जिष्णु बिरचित अस्त्रजाल बिशाल। बांसको बनजरत खिते लागे सराहन जिष्णु को बरबीर। बायु पैठिन सकत है
भयोशब्द कराल ॥ स्वर्णपुंख सुशरनसों सबलई दशादिरजाल माहँ गँभीर ॥ जिष्णु के शरजालमें लखिमुंदोद्रोण उ-
छाय। द्रोणके शरमिलित सिगरे परतएकलखाय ॥ द्रोणहार। चहूंदिशिते लगेसैनिक करैहाहाकार॥ देखिकैशीघ्रास्त्रअ-
र्जुन बीरऐसे बर्षिबाण महान। महत उल्कनसोंभरो करिदिनिकेमहानअखर्ब ।गगनगतलागेसराहनदेवगणगन्धर्ब॥रथन

को समुदाय लीन्हें द्रोणसुत तबधाय । तातको शरसंकु
लखि कियो आय सहाय ॥ हृदयमाहँ सराहि अर्जुनकोपरा
बीर । बेगसों रथ हांकि आयो भरो क्रोध गँभीर ॥ कोप
अतिआय अर्जुनपै सो अश्वत्थाम । मेघसों शरवृष्टि ल
करन अतिबलधाम ॥ द्रोणको तजिफेरिकै रथमहाअर्जुनबै
चलेअश्वत्थाम सोहैं भरेकोप गँभीर ॥ पायअन्तर बेगसो
हांकि द्रोणाचार्य । छिन्नध्वजबर बर्मभाजे युद्धसोंअतिआ

इतिश्रीबिराटपर्वणिद्रोणपराजयबर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ देखि आवत बेगसों सुतद्रोणको
धीर । बाण बर्षत मेघसों अति भरो कोपगँभीर ॥ हांकिकै
भिरे अर्जुन सघन बर्षत बान । वृत्रबासव सदृश दोऊबीर
तिबलवान ॥ सूर देखि न परो बायु न सञ्चरो तेहिकाल । दु
बांधो दशौदिशिमें भांतियों शरजाल ॥ द्रोणिलहि कछु स
सूक्षम दृष्टिसों निरधारि । जिष्णुधनुकी ज्या निपाती शुर
प्रहिडारि ॥ किय प्रशंसन सुरनसों लखिकै अमानुष क
द्रोण भीषम कर्ण कृप साबास बोले पर्म ॥ जिष्णुके हियम
मारो द्रौणि फिरि शतबान । बिहँसि अर्जुन सज्यकरि धनु
क्रोध महान ॥ अर्द्धचन्द्राकार भृकुटी करे अर्जुनबीर । द्रोण
सों भिरो ज्यों गजदोय मत्तगँभीर ॥ करनलागे बीरदोऊ लो
हर्षण युद्ध । देखितिनको सकल कौरवभरे बिस्मयउद्ध ॥ म
बिषसों भरे पन्नग सदृश बर्षतबान । द्रौणि अर्जुन करनल
युद्धउद्ध महान ॥ तूण अर्जुनके अमोघन बाण जास सिरा
अचल याते रहतरणमें करत शर अतिपात ॥ शीघ्रबर्षतब
अश्वत्थामकेहैं जौन । तूण सिगरेभये खालीगयेचुकिसबतौन
तानिकै धनुचलो तब राधेय करिबे युद्ध । भयो हाहाकार से
माहँ तब अतिउद्ध ॥ चक्षु दीन्हों तहां अर्जुनजहां धनुटङ्का
तहां देखो कर्णको तब बढ़ो क्रोध उदार ॥ मारिबेको कर्णके व





मना बरबीर । निठतकरिकै लखनलागो चखनकोरणधीर ॥
खिअभिमुखपार्थकोसुतद्रोणकोबिनबान । त्वरितसहसनपुरुष
ाये लैगये बलवान ॥ छोड़िकै तब द्रोणसुतको धनंजय बर
र । बेगसों रथहांकि धायो कर्ण पै रणधीर ॥ क्रोधसोंकरि
रुण लोचन महाबलको ऐन । द्वन्दयुद्ध बिचारि बोले सूत
तसों बैन ॥

तिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेअश्वत्थामपराजयबर्णनोसप्तबिंशोऽध्यायः ॥

रोला ॥ कर्ण हमसों सभामें तुम बचन बोले जौन । युद्ध अ-
पर तब न हो अब समय आयो तौन ॥ सभामें जो द्रौपदी
। कियो तुम अपमान । तास फल हम देतहैं अब तोहिं सूत
हान ॥ धर्म पाशनिबद्ध हमको कियो कोपित जौन । तास
ल लखु सूतसुत रणछोड़ि करहु न गौन ॥ सहोद्वादशबर्षहम
नमाहँक्लेश महान । प्राप्त ताको होयगो फल अद्य तुमहिं अ-
न ॥ सूतसुतकरु युद्ध हमसों द्वन्द आय अखर्ब । जाहिदेखो
हित सैनिक सुहृद कौरवसर्ब ॥ कर्णउवाच ॥ कहत अर्जुनजान
जे कर्मसो प्रारम्भ । ब्यर्थबोले बचनकेका बहुतधारे दम्भ ॥
हो पूर्व अमर्ष जो तुमतौन शक्ति बिहीन । सो देखावहु अब
क्रम जौनतुममेंपीन ॥ इन्द्रमोसोंलरैजोसँगलयेअर्जुनतोहिं ।
रैगोकछुब्यथाकोनहिं युद्धकरतेमोहिं ॥ अरजुनउवाच ॥ भाजिअ-
हींगयेमोसोंयुद्धकरिलेप्रान । अनुजतवहमहनोतबतुमरहेनहिं
लवान ॥ अनुजबध करवाय भाजे युद्धको तजिऐन । तोहिं
नको और ऐसेआय बोलैबैन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ भांतियोंकहि
र्णसों बीभत्सु बीरमहान । वर्मभेदी कर्ण ऊपर निशित बर्षे
न ॥ कर्णतेशरकिये वारण शरनसों शितधार । शरनकेरोजाल
न्हों चहूँओर उदार ॥ अश्वबेधित किये भुजबर जिष्णु के
रबीर । कर्णके करिक्रोध काटे जिष्णुतन गँभीर ॥ रहे अल्प
णीर तिनसों कर्णलीन्हें बान । जिष्णुके करिमाहँ मारेक्रोधकरि

सन्धान ॥ कर्णकोधनु जिष्णुकाटो क्रोधकरिगम्भीर । कर्णपै
शक्तिकाटोशरनसोंकुरुबीर ॥ कर्णकेलखिचलेसैनिकयुद्धको
काम । शरनसों हनि जिष्णु दीन्हों तिन्हें अन्तकधाम ॥ श
सों फिरि मारिदीन्हे डारि रथके अर्ब । अशनि सो शर
मारो हृदय मध्य अखर्ब ॥ बेधिसो शर वर्मबेधो हृदय
कठोर । भईमूर्च्छाकर्णको हियबढ़ोवेदनघोर ॥ छोड़ि रणभू
उत्तर दिशाको गहिऐन । फेरिउत्तरसों कहो बीभत्सु ऐसेबै
बैशम्पायनउवाच ॥ चलहु उत्तरतहांलै रथ हिरण्मय ध्वजय
शरद्वअतिरथ भीष्ममेरे पितामहहैं तत्र ॥ युद्धमोसों कियो
हत महाबलके ऐन । सैनलखि चतुरंगिणी बहुकहो उत्तरबै
नहींहम करिसकत नियमित तुरँग रथकेबीर । प्राणगो
खेद बिह्वल भयो मन गंभीर ॥ दिव्यास्त्रके सुप्रभावते परि
करि अतिघोर । करतद्रावित दिशनको तुम कुरुनसह शरजा
रुधिर मज्जागन्धते हमहोत मूर्च्छितबीर । नहीं अबलों तैं
ऐसोयुद्धउद्धगँभीर ॥ गदापातजशंखध्वनिभटसिंहनादमहा
गाण्डीवधनुज्या जन्यशब्दसोबज्रपातसमान ॥ सुनतमेरे
स्मृति सह नष्टह्वैगेबीर । मूढ़ मेरो भयो चेतस सकत धा
धीर ॥ आलात चक्र समान मण्डल रावरो अतिमान । धु
धनु गाण्डीवको दशओर बर्षतबान ॥ दृष्टिमेरी भई प्रचा
हृदय कम्पितबीर । देखि तुमहिं पिनाकधर सम करत यु
भीर ॥ लखत अर्जुन रावरेभुज होत भीम महान । देखि
न लेत छोड़त करत शरसन्धान ॥ अरजुनउवाच ॥ करहुआत
सुनियमित तजहु खेद गँभीर । कियो अद्भुत कर्म तुमरण
मैं रणधीर ॥ मत्स्यकुल अरि दमन संभव राजसुतआभिर
तुम्हें योग्य न खेद उत्तर धरहुधैर्य ललाम ॥ युद्धकांक्षी
केमम करहुनियमित अर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ जिष्णुयों सुनि
सुतसों बोलि बचन अखर्ब ॥ झटिति उत्तर भीष्मसोंहैं





पहुंचाय । चहत काटो पितामह के धनुषकी ज्याजाय ॥ दि-
अस्त्र बिचित्र छोड़त लखहु मेरेबीर । सदृशशम्पाचापचं-
ल चाहिहौ रणधीर ॥ कनक पृष्ठि जोधनुष मम गांडीवअरि
कुलकाल । लखत चारों ओरते कुरु भूप ताहि बिशाल ॥ स-
लल शोणित पादसे गजरथावर्त्त महान । चहतहौं परलोक
हिनि कियो संरित अमान ॥ पाणिपाद कवन्धशाखा सदृश
काटि उदार । करत कौरव सैनबंशी शरनसों शितधार ॥ जीति
ताकौरवनकी एकहम रणधीर । सैकरनपथ कियोचाहतशर-
सों गँभीर ॥ बिद्धमोसों चक्रसी यह भ्रमत सैनअखर्ब । च-
त तुमहिं देखाइबे हम अस्त्रको बलसर्ब ॥ छोड़ि कै भ्रमकरहु
क्षित तुरगरथके बीर । इन्द्रआज्ञा सों हने हम दनुज वृन्द
भीर ॥ कालखंज पुलोम मारे हमअसंख्यउदार । हिरण्यपुर-
सी सुमारे दनुज साठिहजार ॥ वृक्षसे ध्वज तृणपदातीरथी
समान । अस्त्राग्निसों कुरुसैनबंशी करतभस्ममहान ॥ रुद्र
वक बरुण मारुत धनदसह मघवान । बज्रआदिक अस्त्रहम
दिये सहित बिधान ॥ कौरवनकी सैन बन नरसिंह रक्षित
न । तजहु उत्तर भीतिको हम चहत काटोतौन ॥ बैशम्पायनउ-
॥ जिष्णु के सुनि बचन येरथ हांकि उत्तरबीर । जाय पैठो
ष्म रक्षित सैन माहँ गँभीर ॥ देखिआवत कुरुन जीतन म-
अर्जुनबीर । चलेआगे दुचित ह्वै कै भीष्म अतिरणधीर ॥
ष्मको ध्वजकाटि डारो शरनसों बलवान । कर्म अर्जुन को
लोकत भरे क्रोध महान ॥ बिकर्ण दुःसह अरु बिबिंशति सह
सनबीर । चले सुत धृतराष्ट्रके ये चारि अति रणधीर ॥
यो वारण जिष्णुको तब ह्वै दुशासन क्रुद्ध । हनोउत्तर कुंवर
अति निशित भल्लअरुद्ध ॥ फेरि अर्जुनके हृदयमें निशि-
मारोबान । जिष्णु काटो धनुषताको क्रोध करि अति मान ॥
फिरि दुशासनको हनोहिय पांचशरसों बीर । भजोरणको तजि

दुशासन बाण बिद्ध अधीर ॥ तबविकर्ण सक्रोध धनु धरि
करशितबान । कियो बेधित जिष्णु को धृतराष्ट्र सुतबलवा
भालताको बेधि अर्जुन दियो रथतेडारि । देखिदुःसह अरु
बिंशति क्रोधको अति धारि ॥ तीक्ष्ण बर्षन बाण लागे दे
बन्धु बिहाल । जिष्णु तिनके अर्बरथके हनेशरनबिशाल॥
दिरथते बिद्धशर तजियुद्ध भाजे तौन। पुत्रनृप धृतराष्ट्र दु
अरु बिबिंशति जौन ॥ हनतसैनिक वृन्द धावत जिष्णु च
ओर । शरनसों अति प्रलयकाल मचाय दीन्हींघोर ॥ कौर
के महारथजे रहे धनुधर बीर । एकसँग ह्वै लरनलागे जि
सों रणधीर ॥ शरनकोरचिजाल अर्जुनचहूं दिशि अतिमा
परे ज्यों पनिहार घनगिरि होत मग्नमहान ॥ तथा तिनको
दि दीन्हें सहित सेना सर्ब । गजनको अरु हयनको सुनिप
शब्द अखर्ब ॥ बजेभेरी पटहघनसम भटनको ललकार।
चोसेना माहँचारों ओर शोर अपार ॥ नरनके गजहयनके
करत खंडअमान । बांधि कै शरजाल अर्जुनलगे बर्षनबान
जिष्णु बर्षत बाणकुंडल सदृशकरि को दंड । लसो ज्योंदिन
ध्य गतरबि शरदको अतिचंड ॥ गिरत रथते रथी सादीह
ते अतिमान । नचत फिरत कबंध लीन्हें करनमें धनुबान
बर्म चर्म सधनुष काटत शरनते कुरुबीर । भई भट तन ब
मण्डित समर भूमि गँभीर ॥ एक नृत्यत फिरत अर्जुन ली
शित बर्षतबान । होतधुनिगांडीवधनुतेबज्रपातसमान ॥ सु
त सोरण छोंड़िभागे शेषसैनिक सर्ब । धरेकुंडल शीश त
परेदेखिअखर्ब ॥ शरनतेकटि गिरतमस्तक होतिशब्द महा
गरजिकैघन करत मानहुं उपलवृष्टि अमान ॥ बर्षबीने त
धरि जिष्णरौद्र स्वरूप। धार्त्तराष्ट्रनको देखायोभरोबिक्रमभू
तासगहन समानसेना क्रोधअग्निलगाय । लपटसे शरसंग
सबदियो मनहुँ जराय ॥ महारथन भगायकै सबत्रासित की





सैन। बीरअर्जुनभये ठाढ़े महाबलके ऐन ॥ शोणितोदक भरी
अतिगंभीर सरित बहाय । करत निर्मित कालजैसे युगक्षयको
राय॥ यादसेशरपांचआयुधवृन्दसकलमहान। मुंडबुद्बुदसदृश
कच्छपसदृश रुण्ड महान ॥ बाल सुभगसे वालसम शिरपाग
नागसमान । गृद्ध जम्बुक भूतभैरव सिद्ध करत स्नान ॥ करी
निर्मितभांतिकी यहिसरित अर्जुनबीर । करतिभू संग्राम भूषित
मरी रुधिरगँभीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ नृप सुयोधन कर्णद्रोण सपुत्र
कृप बलवान । सहदुशासन अरुबिबिंशति भरेक्रोधमहान ॥ युद्ध
को सन्नद्ध ह्वैकै धारि धनुष कठोर । घेरिलीन्हों जिष्णुको रथ
आयचारों ओर ॥ जिष्णु ऊपरलगे बर्षनतेमहास्त्रगँभीर । शरन
नों रथमूंदि दीन्हों जिष्णुको रणधीर॥ बिहँसिकै बीभत्सु लीन्हों
हत सो कोदंड । अस्त्रबर्षनलगे अर्जुन भानु करसेचंड ॥ मूंदि
लीन्हों कुरुनको शरडारि जालमहान। मेघते ज्यों गिरत बिद्युत
तथाधनुतेबान ॥ इन्द्रधनुसों धनुषभो गांडीव तेजसराश । यथा
बर्षत मेघबिद्युताकिये परमप्रकाश ॥ रथीजंताभये व्याकुलतजे
नीरज देत । लहोयोधन शांतिको अतिभये बिह्वलचेत ॥ सं-
ग्रामसोंह्वै बिमुखभाजे युद्धकर्त्ता सर्ब । जो सुयोधन संगआये
महारथगहिगर्ब ॥ भीष्मशांतनु पुत्र सबके पितामह रणधीर ।
बध्यमान बिलोकि सेनाचलो धनुधरिबीर ॥ जिष्णुपै सन्धान
लीन्हों मर्मबेधीबान । शङ्खधुनि करिकिये हर्षित अन्धसुतन
महान ॥ देप्रदक्षिण आयरोको जिष्णुकोरथबीर । चलोआवत
पितामहको देखि अर्जुनधीर ॥ जाय आगेलेय ठाढ़े भये अचल
समान । जिष्णुके ध्वजमाहँ मारे पितामह बसुबान ॥ भल्लते
रितधार अर्जुन पितामह कोछत्र । काटिकै क्षितिमाहँ डारोभयो
अद्भुततत्र ॥ शरनसों फिरिध्वजा काटी हने रथके अर्ब । पृष्ठि
पालक सारथी फिरिहने शरन्हअखर्ब ॥ क्रोधकरि तबपितामह
करि जिष्णुको अनुमान । डारि दीन्हों धनंजयपर दिव्यअस्त्र

महान॥ तथाडारो भीष्मपर दिब्यास्त्र अर्जुनबीर। दुहुनसों
लोमहर्षणभयो युद्धगँभीर॥ भीष्मअर्जुनसोंभयो तबयुद्धतु
महान। लखत कौरव तिन्हें बलि अरुइन्द्रसे बलवान॥
सोलगि भल्लहोत फुलिंगके उद्योत। सघन पावसनिशामें
उड़तसे खद्योत॥ सब्य दक्षिण फिरत दोउसम अग्निके
लात। तजतशर गांडीव राजत धनुष अति अवदात॥ श
सों बीभत्सु लीन्हों भीष्मको इमिछाय। तोयधारासों यथा
धराधरको आय॥ सिन्धुबेला सदृश भीषम बरषिकै बहुब
कियोबारण जिष्णुको शरजाल काटि महान॥ फेरिअर्जुन
बर्षन निशित बाणसमूह। भीष्म ऊपर महातरुपै शलभ
जूह॥ पितामहशित शरनसों शरतौन काटेसर्ब। देखिकै
कुरुन कीन्हों साधुवाद अखर्ब॥ करत दुष्करकर्म भीषम जि
सों करियुद्ध। महाबलहै तरुण सो अतिक्षिप्रकारी उद्ध॥ प
को अतिबेगथांभै औरकोरणधीर। बिनाभीषम कृपाचारयद्र
कै यदुबीर॥ दिब्यअस्त्र समस्त इनपै त्यागसहसंहार। क
याते समरभूमें अभयबीर बिहार॥ बैशम्पायनउवाच॥ अस्त्रयुद्ध
वर्त्त कीन्हों भीष्म जिष्णुमहान। मनुजयोग्य न जानिदोऊ
बर्षनबान॥ हस्तलाघव जिष्णुकरिकै भीष्मको धनुजौन। दि
काटि क्षुरप्रशरसोंमहाबलकेभौन॥ दूसरोधनुभीष्मलीन्हेंस
करिअतिमान। क्रोधकरिकैजिष्णुऊपरलगेबर्षनबान॥ अर्जु
शर निशितलागे करनवृष्टिगँभीर। अस्त्रबिददोउनिशित ब
लगेशर बरबीर॥ दुहुँनमें न बिशेषजानो परोबीरसमान। दु
दशदिशि करी पूरित बर्षिअति घनबान॥ भीष्मरथकेरहे रक्ष
शूरजे बलभौन। सामुहें रथ आपने हनिजिष्णु डारेतौन॥
पंक्तिसमानशर गांडीवमुक्तअमान। परत रथपर भीष्मके क
धौतपुङ्खमहान॥ भीष्मके दिब्यास्त्र अगणितनाशकरताजौं
परत रथपर जिष्णुके सबदेव देखततौन॥ चित्रसेन बिलो





अर्जुनको सुशरसन्धान। कहनसुरपतिसोंलगेयहिभांति सहित
खान॥ नहींऐसो मनुज क्षितिपर अस्त्रवेत्ता आन। करत है
न्धान जैसो जिष्णु अस्त्रपुरान॥ लेत जोरत धनुष खैंचत
जत बाण अशेश। जिष्णु को नाहिं हस्तलाघव परतजानि
रेश॥ मध्यदिन गत सूरसे हैं दोऊ बीर महान। परतदेखि
अजेय दोऊ सुरनको बलवान॥ बोलि इमि सुरराजबर्षे दुहुँन
ऊपर फूल। कियेपूजित हर्षसों भरिबीर दोऊतूल॥ बामपार्श्व
बिभत्सुके तब भीष्म मारेबान। बिहँसि कै तबजिष्णु कीन्हों
निशित शरसन्धान॥ काटिकै धनु भीष्मको दशबाणसों हिय
ध्य। मारिदीन्हों डारिरथपर जानिबीर अबध्य॥ पकरि कूबर
रथको रहिगये ब्यथित गँभीर। हांकिरथ लैगयोसूत बिलो-
के मुर्छितबीर॥

इतिश्रीबिराटपर्बणिभीष्मपराजयबर्णनोनामअष्टबिंशोऽध्यायः २८॥

बैशम्पायनउवाच॥ रोला॥ छोड़िकै संग्राम भागे भीष्म जब तब
प। नृप सुयोधन सहितसेना लरेआय अनूप॥ जिष्णुकेमधि
लमारो तानिकै धनुबान। एकशृङ्ग सुमेरु सों तबलसो बीर
अमान॥ क्रोधकरितब अग्निसे शरछोड़ि अर्जुनबीर। कियो
धित नृप सुयोधनको महा रणधीर॥ लरनलागे सदृशकै दोउ
रे क्रोधमहान। महामत्त गजेंद्र पै चढ़ि तब बिकर्ण अमान॥
रदरक्षक चारिरथ सँगलिये धायोबीर। देखि आवत ताहि
अर्जुन क्रोधकरि गंभीर॥ कानलों शरतानि मारो कुम्भ में
लवान। बूड़िगो गजभालमें शर निशित पुङ्ख प्रमान॥ कां-
कैसो गिरो क्षितिपर लहतशायकघात। महागिरिको शृङ्ग
से बज्रको लहिपात॥ दयो छोड़ि बिकर्ण मृतगजभाजि शत
दजाय। लहि बिबिंशति बन्धुको रथ चढ़ो तापरधाय॥ यथा
बिधिको हनोगजके भालमें बलवान। नृप सुयोधनके हन्योहिय
थाबिधिको बान॥ भूप द्विरद बिकर्णको लखि भजी सेना

सर्ब । तालदे तब कह्यो ऐसेबीर जिष्णु सगर्ब ॥ अरजुनउबा
छोड़ि कीरति सुयशभाजे युद्धते तजिधर्म । नहीं इतजयपट
बजवायदीजै पर्म ॥ नाम दुर्योधन तिहारो वृथा राखोता
नामको नाहिं धर्म तुममें बिमुखरणतेजात ॥ नहींआगे नहीं
तुम्हैं रक्षत जौन । भजेमेरीभांतिसों प्रियप्राणले सबतौ
इतिश्रीबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेदुर्योधनपराजयबर्णनोऊनत्रिंशोऽध्या

वैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ जिष्णुको आह्वान अंकुश लगे
रवबीर । मत्तगजलौं फिरेरणको भरे क्रोधगँभीर ॥ भूपकेति
चले उत्तर कर्णगहि धनु घोर । नृपसुयोधन सैनरक्षत भी
पश्चिम ओर ॥ द्रोणकृप धृतराष्ट्रके जे पुत्रहे रणधीर ।
आगे भूपके तेभरे क्रोधगँभीर ॥ सिन्धुकैसो उलदआवत
सैन महान । जिष्णुको तिनकियो बारित बर्षि अस्त्र अमा
जिष्णुअस्त्र निवारि अस्त्रनसों महा रणधीर । फेरिमोहन
छोड़ो भरोमोह गँभीर ॥ अस्त्रतेकढ़ि निशितशर करिदिशा
पित सर्ब । गांडीवके श्वनशब्द कीन्हों ब्यथित सैन अख
ध्वनित कीन्हों शङ्खको गहिपाणिसों अतिमान । कियो पू
दशोदिशिमें शब्दघोर महान ॥ शङ्खधुनिसुनि भयेमोहित
कौरव सर्ब । होय मोहित परे रथपर डारि धनुष अखर्ब ॥
मोहित सैन समुझो उत्तराको बैन । कहो उत्तर पासऐसे जि
अतिबलऐन ॥ जायइनके बसन ल्यावहु होयकुंवर अभी
द्रोण कृप के श्वेतअम्बर कर्णके पटपीत ॥ द्रौणिके अरुभू
अति नील रँगकेबास । जानि संज्ञा सहित जाहु न पित
के पास ॥ देहु दक्षिण ताहि जानत अस्त्रको प्रतिकार । जि
के सुनि बचन रथते परो कूदि उदार ॥ बसनलै अति रथ
फिरि चढ़ो रथपरआय । उत्तराके हेत रंगनसों भरे सुखदा
हांकि अश्वनको चलो रथलेय उत्तर धीर । नांघि ध्वजनी
रवनकी साहित अर्जुन बीर ॥ जिष्णुको लखिजात भी





शित मारोबान । तासअर्जुनहने रथके अश्वअतिबलवान ॥
रि दशशर कियो बेधित भीष्मको कुरुबीर । भीष्मको तजि
यो सेना बाहिरे रणधीर ॥ भयो ठाढ़ो जाय सेना बाहिरे ब-
वान । मेघवृन्द बिदारि ज्यों मध्याह्न कैसो भान ॥ लहे संज्ञा
खि सुयोधन जिष्णुको बलऐन । एक ठाढ़ो जीतिकै इमि क-
लागो बैन ॥ कौनबिधियह छुटोतुमसों युद्धकरि अभिमान ।
रि यासों लरहु जाते नहीं पावै जान ॥ बिहँसिकै तब कह्यो
षम गई तोकर बुद्धि । छोंड़िकै धनुबाण जब तुम परेहे बेसु-
॥ नहीं मारो जिष्णुहै न नृशंश करताकर्म । प्राप्तिको त्रैलोक
नहिंतजै अर्जुन धर्म ॥ चलहु हास्तिन नगरकी गहिडगर
सुखदाय । लेय गोधन फिरोअर्जुन मत्स्यपुरकोजाय ॥ पिता
के बचनसुनत सुनीति हितकेभौन । रहो सुतधृतराष्ट्रको नि-
श्वासलैकैमौन ॥ भीष्मकोहितबैनसुनितजिजिष्णुअग्निसमान ।
रो मनमें सैनिकन सब चाहि करन पयान ॥ कुरुनको लखि
त अर्जुन चिन्ति श्रेष्ठाचार । गुरुनके पदकिये बन्दित पढै
रन उदार ॥ देवदत्तबजाय कै फिरि शङ्ख अतिगम्भीर । हृदय
वित अरिनको सबकियोअर्जुनबीर ॥ मुकुटकाटो नृपसुयोधन
निशिततजिबान । रत्नमण्डितप्रभापूरित रहीभानुसमान ॥
रुनको लखिजात अर्जुन बिहँसि बोले बैन । जीतिधनलैच-
हु उत्तर नगरकी गहिऐन ॥ युद्ध अर्जुन कुरुन को लखिअ-
र साहित सुरेश । करत संशित पार्थपौरुष गये अपनेदेश ॥
तिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेसमस्तकौरवपराजयबर्णनोत्रिंशोऽध्यायः ॥

वैशम्पायनउबाच ॥ जयकरी ॥ जीति कुरुनको पांडव बीर । ल्या-
गोधन सकल गँभीर ॥ सैनिक भीति भरे जे घोर । गये गि-
रमें भाजिचहुँ ओर ॥ पथमें मिलैं जिष्णुको जौन । प्रांजलि
बिनय करैं तहँ तौन ॥ अरजुनउबाच ॥ डरहुन जाहुआपने धाम ।
मैं न पराजित मारत क्षाम ॥ वैशम्पायनउबाच ॥ ते सुनि अभय

बचन अभिराम । देआशिष गे अपने धाम ॥ तब उत्तर
अर्जुन बीर। कहे बचन हियलाय गँभीर॥ पांडव बसत बिर
समीप। तुमको बिदित सधर्म महीप ॥ तुमन प्रशंसितकी
चाहि। तिनको तात निकट अवगाहि ॥ हम जीती जो से
सर्ब। ल्याये गोधन फेरि अखर्ब॥ सोकाहियो तुम अपनोकर्म
प्रगट कीजियो नहिं ममममर्म ॥ उत्तरउबाच ॥ जो तुम कीन्हों क
अपार। मोमें तौन न शक्तिउदार॥ तबलोंतुव कहिहैं नहिंक
जबलों तात न बूझहिं मर्म ॥ गये श्मशान शमीकेपास ॥ बै
म्पायनउबाच ॥ शरब्रणभेरे जिष्णुबलरास ॥ तब तजिकै सोध्व
गँभीर । गयोगगनको कपि बरबीर ॥ सिंह चिह्नहो ध्वजप
जौन। योजित कीन्हों फिरितहँ तौन ॥ राखिशमीपर आयु
सर्ब । आये उत्तर कुंवर अखर्ब ॥ वेष बृहन्नलको धरिधी
होय सारथी अर्जुन बीर ॥ रथपर उत्तरको बैठाय। चले न
को जयश्री पाय॥ सूतवृहन्नल बनो अनूप। चलिकै गये
गरलों भूप॥ बैशम्पायनउबाच॥ मग्न होयकै कौरव भूप। हारि
नगर गये कृशरूप॥ राजपुत्र यह गोधन सर्ब। आवत लौ
गोप अखर्ब ॥ ऐसे जिष्णु बोलिकै बैन । फिरि उत्तरसों क
सचैन ॥ लहिपराह्ण पुरमाहँ प्रवेश। करिहैउत्तर सुनहुनिदेश
अश्वनको जलसे नहवाय । शस्त्र बिगत करि पानी प्याय
प्रथम गोपपुरमेंवृत्तांत । जायकहो बिधिबिहितनितांत॥अ
के सुनि बचन बिशाल। लीन्हें दूत बुलाय उताल ॥ उत्तरक
नगरमें जाय। बिजय देहु सबिधान सुनाय॥ ऐसे जीति कौ
वन सर्ब। लीन्हों गोधन सकल अखर्ब॥ सह सारथी वृहन्
वेश। उत्तर कीन्हों नगरप्रवेश॥ गोधन जीति मत्स्यपतिभू
गये नगरको आनँदरूप ॥ चारि पांडवनसह बलधाम ।
भित सभामाहँ अभिराम॥ सेवत मंत्री सुभट सुजान । क
बिजय बन्दी गुणवान ॥ द्विजवर पार प्रजा सबभूप । कि





बिदा कहिबचन अनूप ॥ जायभूप रानीके धाम । बूझा उत्तर
कहँ अभिराम ॥ बनितन कहो भूपसों बैन । आय सुयोधननृप
सहसैन ॥ गोधन हरो सुनो अतिमान। तिन्हैं जीतिबेगो बल-
वान॥ एक वृहन्नल सारथिसाथ। तिन्हैं जीतिबेगो सुनुनाथ ॥
आये जे षट अति रथबीर। भीष्म द्रोण कृप अति रणधीर ॥
कर्ण सुयोधन अश्वत्थाम। सेनासंग महाबलधाम ॥ बैशम्पायनउ-
बाच ॥ दोहा ॥ सुनिबिराट चिंतितभये जानि शत्रु बलवान। सं-
ग वृहन्नल सारथी पुत्रएक प्रियप्रान॥ मंत्रिनसों लागो कहन
आय सभामें भूप। संग बृहन्नल युद्धको गो उत्तर शिशुरूप॥
ताते योधा जाउ मम अब्रण जे बलधाम। करोसहाय ससैनते
उत्तरकी अभिराम ॥ पठैसेन चतुरंगिनी रहेबिराट बिचारि।
पुत्रनजीवत जियत करि महारथिनसोंहारि॥ जाकोजंता षंढहै
महारथिन सों युद्ध। ताके जीवनकी कहाआशा करहु बिरुद्ध॥
बैशम्पायनउबाच ॥ दुःखितदेखि बिराटको कहोकंक करिप्रीति। जो
सारथी वृहन्नला तौ ल्यावतगो जीति ॥ सहित सहायक कु-
रुनको देव यक्ष गन्धर्ब । जासु सारथी बृहन्नल सो रण जीतै
सर्ब ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ उत्तर पठये दूतजे तेतुर पुरमें आय।
बिजय साबिधि लागे कहन मंत्रिनसों सुखदाय ॥ बोले मंत्री
भूपसों उत्तरबिजय ललाम । कहोभाजि कौरव गये हारियुद्ध
बलधाम॥ गोधन लीन्हों जीतिरण कुशल सूतसहबीर। उत्तर
आवत रथचढ़ो पुरपथमें रणधीर॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ तव सुतजीतो
कुरुनको अद्भुत कहा नरेश । जासु वृहन्नल सारथी जीतैतौन
सुरेश ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ पुलकित भये बिराट नृप सुनिसुतको
जययुद्ध । दूतनको बकसीसादिय पटभूषण मणिशुद्ध ॥ मंत्रिन
सों भूपति कहो ऐसे बचन समान। बाद्य चतुर्बिधके बजैंपुरमें
कहो महान ॥ सहित कुमारिन उत्तरा धरि भूषण सुखदाय ।
आवत उत्तर जौनपथ तहँ आगे चलिजाय॥ बैशम्पायनउबाच ॥

सुनि भूपति को बचनभो पुरमें मंगलचार । पटहचहूं दिशि
गरमें लागे बजनउदार ॥ कन्याचारु पठायके गणिकागण
ति रूप । ह्वै प्रसन्न लागो कहन ऐसे मत्स्यप भूप ॥ सैर
तुम जायके ल्यावहु अक्षअनूप । द्यूतकंकसों करैंगे हम प्र
अति रूप ॥ कंकउवाच ॥ द्यूत न कीजे मुदित सँग हैयह नी
अनूप । ताते करहु न द्यूतको चलन आजुतुमभूप ॥ बिराटउवा
सुखीगाय हिरण्यबसु और हमारेजौन । तुमते खेलत द्यूत
हमें रक्ष्य नहिं तौन ॥ कंकउवाच ॥ सकल दोषमय द्यूतमें क
तुम्हैं कुरुभूप । ताते हम बर्जित तुम्हैं द्यूत दोषको रूप ॥
नो युधिष्ठिर द्यूतकरि लहिजो बिपति महान । अरुइराजह
सकल भ्राता अमर समान ॥ द्यूत अवश्यक जो तुम्हैं करि
आपतधाम । नृपकीजे प्रारम्भतौ पूर्णकरहुमनकाम ॥ बैशम्पा
नउवाच ॥ मत्स्यप द्यूतप्ररम्भ करि बोले बचन सगर्ब । पुत्रहम
रेयुद्ध में जीते कौरवसर्ब ॥ सुनि बिराट के बचन इमि बोले
पति धर्म । यंताजासु वृहन्नला सोपावैजयपर्म ॥ सुनत युधि
ष्ठिर के बचन कहो बिराटसक्रोध । कहत पुत्र मम के सदृशषं
हिअरे अबोध ॥ बाच्य अबाच्य न बचनको बिप्राधम तो
ज्ञान । क्यों नहिं जीतै कौरवन मेरो सुतबलवान ॥ सखाजा
निकै करत हौं क्षमातोर अपराध । फिरि नहिं ऐसो बोलियो
जीवन चाहि अबाध ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भीष्मद्रोण कृपकर्ण
द्रोणपुत्र बलवान । भूप सुयोधन महारथ भ्रातन सहितअमा
न ॥ देवन सहित सुरेश लरि तिनसों सकैन क्रुद्ध । बिना वृह
न्नला करैको तासेना सों युद्ध ॥ जासुबाहुबल के सदृशभूत भ
बिष्य न आन । महायुद्ध लखिकै बढ़त जाकोहर्ष महान ॥ सु
रासुरनको युद्धमें जो जीतै अनिकाय । कौन लेयगो बिजयक
ताको पाय सहाय ॥ बिराटउवाच ॥ बहुतमने कीन्हों तुम्हैं रह
सुपाय न कंक । चलत न कोऊ धर्मपथ बिना नियंता शंक





शम्पायनउवाच ॥ भूपक्रोध करि कंकको मारो अक्षचलाय । मत्स्य-
करिकै कंकके लगो नाक ढिग जाय ॥ बलवत लागेनाकते
चली रुधिर की धार । लियो कंक सोपाणिमें क्षिति नहिं छुई
उदार ॥ पास खड़ीही द्रौपदी लखो धर्म नृप ताहि । रुधिरलि-
यो तेहि पात्रमें अभिप्राय अवगाहि ॥ सजल कनकके पात्रमें
शोणित कृष्णाधारि । कोपभरी मुखभूपके अनमिषरही निहा-
रि ॥ गन्धमाल्य धारण किये पौर पूज्यअभिराम । आयो तब-
हीं पौरिपर उत्तर कुंवर ललाम ॥ द्वारपालकन भूप सों कहो
गसों जाय । सहित वृहन्नल पौरिपै खड़े कुंवर सुखदाय ॥
छत्तासों भूपति कहो बेगि लयावहु जाय । सहित वृहन्नल पुत्र
मम उत्तरको सुखदाय ॥ छत्तासों कुरुपति कहो बचन मन्दक-
रपास । ल्यावहु उत्तरकोनहीं साथ वृहन्नल तास ॥ ब्रत यह
स्वृहन्नला निश्चय अतिबल भौन । बचत न मेरे अंगमें
शोणित काढ़त जौन ॥ देखिहमैं शोणित सहित करिकै क्रोध
महान । मंत्रिन सहित बिराटको सो हनिहै बलवान ॥
इतिबिराटपर्बणिउत्तरगोग्रहणेसमाप्तिबर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ तब आयो उत्तर तहां जहँ बिराटभू-
पाल । बन्दि तातपद कंक जहँ तहँ चलिगयो उताल ॥ व्यग्र
रुधिर संयुक्त लखि बैठे क्षितिपर भूप । पासखड़ी कृष्णाभजत
जोन्हों शोभित रूप ॥ आतुरपूछो पितासों उत्तर शोणितमर्म ।
ताड़ित कीन्हों कंकको केहि कीन्हों यह कर्म ॥ बिराटउवाच ॥ हम
ताड़ो यहि कुटिल को जानि कुमति गम्भीर । करै प्रशंसन ष-
ण्ढको तुम्हैं छांड़ि नरधीर ॥ उत्तरउवाच ॥ कियो अकारज भूप
तुम बेगिकरहु अनुकूल । ब्रह्म बिषानलमें नतरु तुमजरिहौसह
मूल ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सुनतपुत्रके बचननृपपकरि कंकके पाँय ।
भस्म छन्न पावक सदृश क्षमाकरायो जाय ॥ क्षमाकरावत म-
त्स्य सों कहो धर्मनृप बैन । हम चिरक्षान्त बिराटनृप क्रोध ह-

मारे हैन ॥ परत हमारो रुधिर जो क्षितिपर सुनहु नरेश।
वत नाश बिराट यह तुम्हें सहित सब देश ॥ बिगतभये
णितगयो बीर बृहन्नल तत्र । बंध्य मत्स्यको तहँ गये ध
पति हे यत्र ॥ करत प्रशंसन पुत्रको समुद बिराटगँभीर ।
नृपतिके पाससो सुनत बृहन्नलबीर ॥ पुत्रवान तुमसों
मत्स्यबंश अवतंश । तुमसो पुत्र न औरके भूतभविष्य
श ॥ जीतत सहसनको नहीं जीतोजात सक्रुद्ध । कियोपुत्र
कर्णसों कौन भांति तुम युद्ध ॥ नहिं मनुष्यके लोकमें जेहि
मान रणधीर। कियोयुद्ध तेहि भीष्मसों कौनभांति तुमबी
ससुतद्रोण आचार्यसों कैसेभो संग्राम। कृपाचार्य्य सह ज
के थे जेता बलधाम ॥ दुर्योधन भ्रातन सहित महाबीर
वान। कौनभांति जीतो तिन्हें सेना सहित अमान ॥ सुन
राजय परनकी तोते पुत्र उदार । भरेसुधा बर्षतमनो घन
नँदके धार ॥ गोधन ल्याये जीतितुम कौरवसैन महान
त्स्यबंश भूषणभयो कोसुत तोहिंसमान ॥ उत्तरउवाच ॥ हमग
जीतोनहीं हेबरबीर उदार। कियोकार्य यहसकलकोउ रथ
देवकुमार ॥ भयते भाजत तेहि कियो मोहिं निवारण
बज्रसार समअंगको अतिबल युवास्वरूप ॥ कियो पर
कौरवन जीतो गोधन सर्ब। हमनाहिं कीन्हों तातयह ता
अखर्ब ॥ भीष्म द्रोण कृप कर्णनृप अतिबल अश्वत्थाम
र्योधन भ्रातनसहित अरुबिकर्ण बलधाम ॥ मारिशरन ति
कहो तेहिंइमि बचन भजाय । हास्तिनपुर तजिबचहुगे
देशमें जाय ॥ भाजि न बचिहौ करहुतुम ताते हमसों
जीते पृथिवी भोगिहौ मरे स्वर्ग अनिरुद्ध ॥ सुनत सु
फिरोसो भरोक्रोध गम्भीर । सचिवसैन षटरथनसह म
रणधीर ॥ हमैं रोमहर्षण भयो तिन्हैं देखि अतिमान।
शरनसों तेहिकियो तिनको ब्यथित महान ॥ तिनको





भजायकै कियो हास तेहिबीर । बसन हरण तिनकोकियो रँग
सों भरो गँभीर ॥ एकबीर षटरथनको दीन्हेंजीति भजाय। म-
हामत्त मृगराज ज्यों बनमृगघन समुदाय ॥ बिराटउबाच ॥ महा-
बाहु बरबीरसोंहै कहँ देवकुमार। कुरुन जीतिजेहिं युद्धमेंगोधन
लियो उदार ॥ देखन पूजन चहत हम ताकोअति अभिराम ।
जेहि रक्षित कीन्हें तुम्हैं देवपुत्र बलधाम ॥ उत्तरउबाच ॥ अन्त-
र्द्धान भयोतहां तातदेव सुतजौन। दोयतीनि दिनमें इतै प्रगट
होयगो तौन ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ ऐसेसुनत बिराटनृप कपटवेष
धरि पास। बसत पाण्डवनको नहीं जाने तिहिंमतिरास ॥ आ-
ज्ञापाय बिराटकी बीर बृहन्नल तौन । बसन उत्तराको दियो
जीतिले आये जौन ॥ उत्तरसह नृपधर्मसों मंत्रपाण्डवनसर्ब ।
कियो कार्य्य कर्त्तब्यहै आगेजौन अखर्ब ॥ कियो तौन नृपधर्म
को करिबोह्यो जो कार्य । ह्वै प्रसन्न पाण्डव सकल सहबिराट
सुत आर्य ॥ तदनन्तर तिसरे दिवस पञ्च पांडुसुतबीर । स्ना-
नकियो करिनित्यकृत धरे सुधासमचीर ॥ भूषित ह्वै नृपधर्मको
करिआगे अभिराम । पायसमयशुभ गये जहँ मत्स्य सभाको
धाम ॥ सिंहासनपर धर्मनृप बैठेभानु समान। यथास्थानभ्राता
सकल तेजसभरे महान ॥ तदनन्तर आयोतहां मत्स्यबंशको
भूप । राजकाज करिबेसकल मंत्रिनसह अनुरूप ॥ तहँ देखे
बैठेसकल पांडव अग्निसमान। रहेबिराट मुहूर्त्त भरि खड़े धा-
रिकै ध्यान ॥ कहो कङ्कसों मत्स्यपति लखि सुरराज समान ।
अक्षहेतु किय सभासद तुमको जानि सुजान ॥ राजासन आ-
सीनतुम भयेबिभूषण धारि। कियोकङ्क यहकर्मतुम का परिहास
बिचारि ॥ मत्स्यबचन सुनिजिष्णुतब बोले मधुर मनोग्य ॥
अर्जुनउबाच ॥ अर्द्धासनपर इन्द्रके ये बैठनके योग्य ॥ ब्रह्मण्य
बदान्यवेद बिद सत्यदृढ़ ब्रतपर्म। भरे पराक्रमसोंमहा मूर्त्तिमा-
न येधर्म ॥ अधिक बुद्धिते लोकमें तप ब्रत धीरजधाम । सकै

बरणिको जगतमें इनके गुण अभिराम ॥ दीरघ दरशी तेज
पांडव अतिरथबीर । तुल्य महर्षिनके यशी ये राजर्षि गँभी
धनसञ्चयमें इन्द्रसे हैं बैश्रवण समान । मनुसे रक्षक लो
तेजसभरे महान ॥ कुरुबंशिनके मुकुटये धर्म युधिष्ठिर भू
यश प्रताप शशिसूरसो जाको लसत अनूप ॥ गजारोह
सहसहे चलतजात अनुबीर । सहस तीस रथ अनुगहे
घटित गँभीर ॥ सूतरहेबसु सहस धरिमणि कुंडल गुणमा
सहित मागधन पढ़तयश ऋषि सुरराज समान ॥ किङ्क
कौरव रहे इनको भजत बिशाल । इन्द्र प्रस्थमें अमरज्यों
वतहैं धनपाल ॥ करद करे क्षितिपाल इन सिगरे बैश्यसम
सहसअठासी लहतहे स्नातकभोजनदान ॥ पंगुवृद्धअति
न्धकृशरोगी दुखित महान । प्रतिपालत हेप्रजनको येप्रभु
समान ॥ इनकेतपत प्रतापतेरहे सुयोधनबीर । सहितकर्ण
बल सहित भरे कुमंत्र गँभीर ॥ इनके गुणगण गननको
शक्यन भूप । नाहिं प्रशंस ये सत्यहैं केवल धर्मस्वरूप ॥ ये
डव पृथ्वीशहैं भूप युधिष्ठिर धर्म । क्यों बिराट नाहिं योग
राज्यासनके पर्म ॥ बिराटउवाच ॥ धर्म युधिष्ठिर भूप जो ये
न्तेय महान । भीमार्जुनकहँ नकुलहैं कहँसहदेव सुजान ॥
हिषीकहँ द्रौपदी भरी पतिब्रतरूप । हारिद्यूतमें राज्यकहँ अ
बसेअनूप ॥ अरजुनउवाच ॥ बल्लवकरत जोपाकसोभीमपराक्रम
म । इनहींमारो कीचकहि सह भ्रातन बलसीम ॥ उत्तरगिरि
इन हने महाबली गंधर्ब । जिन्हैं लरावत तुमरहे गजगण
थअखर्ब ॥ अश्वबंधजो रावरो तौननकुलये बीर । गो रक्ष
हदेव ये हैं अतिबल रणधीर ॥ कमल लोचनासुंदरी चा
सिनी भूप । कुरुपतिकी महिषीप्रिया यह सैरंध्रीरूप ॥ अ
हमहैं भीमते अवरज पारथनाम । नकुल और सहदेवहैं ह
लघुबलधाम ॥ गुप्तबसे हम मोदसों भूप तिहारे पास । र





पद्रव करतिज्यों प्रजागर्भमेंबास ॥ बैशंपायनउवाच ॥ अर्जुनदये ब-
यजब नृपसोंपांडवसर्ब । तब अर्जुनको पराक्रम उत्तर कहो
अखर्ब ॥ जांबूनद सो गौरतनुजो यह सिंहसमान । दीर्घनासि-
नेत्रको यह कुरुराज महान ॥ मत्तगजेन्द्र समानजो चामी-
रसो शुद्ध । भीमसेन बरबाहुयह अतिबल जेता युद्ध ॥ श्याम
हा धारेधनुष युवा मतंगसमान । कमलनयन नृपके निकट सो
अर्जुन बलवान ॥ धर्मनृपतिके निकटये रूपवान नरजौन । न-
कुल औरसहदेव येमाद्री सुतबलभौन ॥ इन्द्रीबरभा निकटजो
श्रीसम मूरतिमान । सोहैं महिषी द्रौपदी कुरुपतिकी सुखदान ॥
ह कहि उत्तरफिरि कहोजिष्णु पराक्रमसर्ब । जोदेखो रणभूमिमें
करतेयुद्ध अखर्ब ॥ बैशंपायनउवाच ॥ सुनिबिराट उत्तरबचन भरेम-
हिय चैन । निस्कृतार्थ अपराधके ऐसेबोलेबैन ॥ पांडुसुतनके
करनको है प्रसन्न यहकर्म । तुम्हैं रुचै तौ जिष्णु कोदेहुउत्तरा
धर्म ॥ उत्तरउवाच ॥ आर्य्यपूज्य अतिमान्यये पांडव कुरुकुलपर्म ।
न्हैंदीजिये उत्तरा ब्याहि बिहितबिधि धर्म ॥ बिराटउवाच ॥ भये
हे हमशत्रुवश करित्रिगर्त्त सोंयुद्ध । गोधन सहमोचन कियोहमैं
भीमरणउद्ध ॥ इनके भुजबलसों लहोहम जययुद्ध महान । करैंप्रस
न युधिष्ठिरहि करिअतिप्रिय सनमान ॥ हम अज्ञानता बश कछू
अनुचित कीन्हों जौन । क्षमाकरन केयोग्य नृपधर्मधर्ममतितौन ॥
इतिमहाभारतेबिराटपर्बणिपांडवप्रगटताबर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२
दोहा ॥ चलिबिराटनृप धर्मढिग आनँदभरे अखर्ब । राज्य
कोषपुरआपनो कियोसमर्पणसर्ब ॥ आगेकरिकै जिष्णुकोसकल
पांडवनपास । मिलेमत्स्यपति बोलिकै भाग्यभान्य मतिरास ॥
तनहोत बिराटलखि पांडुसुतनकोरूप । लगेयुधिष्ठिरसोंकहन
ऐसे मत्स्यपभूप ॥ आयेकुशल बिपीनिते तुमबलभाग्य नरेश ।
हिभाग्य सोगुप्ततुम अरिसोंधरि बहुवेश ॥ देतराज्य यहपार्थ
को और कछूजोबित्त । ग्रहणकरो पांडवसकल करिमम सफल

निमित्त ॥ ग्रहण उत्तराकोकरो जिष्णुबीर बलवान । पुरुष
रिबेयोग्यहै ताके और समान ॥ यहसुनिलागे जिष्णुको दे
राजाधर्म । भ्राताको देखतचितै अर्जुनबीरसशर्म ॥ अर्जुनउवा
मत्स्य तिहारीसुता हम स्नुषाकरेंगेभूप । पुत्रहमारो तवसु
दोऊअनुरूप ॥ बिराटउवाच ॥ ममदत्ता दुहिता न ममग्रहण
तुमबीर ॥ अर्जुनउवाच ॥ मोहिं पितासम लखतही सोकरि
गँभीर ॥ ग्रहणकरतनाहिं तवसुता यातेभूपसुजान । नृत्यग
लखतही मोहिंआचार्य्य समान ॥ स्नुषाकरत यातेरहीबर्ष
ममपास । शङ्कलोक अपवादकी शुद्धिहेतु मतिरास ॥ भागि
श्रीकृष्णको प्रियसुरसुत समबीर । हैसुतसम अभिमन्यु सो
धनुर्द्धरधीर ॥ जामाता तवसुताके योग्यबिहित भर्त्तार ॥ बि
उवाच ॥ करहु जिष्णुजो योग्यहो तुमधर्मज्ञ उदार ॥ कारज
समृद्धसम तुमसम्बन्धी जास । ऐसोकहो बिराटनृप सुधन
केपास ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ ऐसेकहत बिराटके कुन्तीसुत नृपध
करिबेको सम्बन्धको शासन दीन्होंपर्म ॥ मित्रनको श्रीकृष्ण
लिखोपत्र सुखदाय । निर्मंत्रणार्थ कुरुमत्स्यपति दीन्हेंदूत
ठाय ॥ बीतेबर्ष त्रयोदशो सहभ्रातन कुरुभूप । मत्स्यपुर
निकटपुर तामेंबसे अनूप ॥ जिष्णुसहित अभिमन्युसह ब
देव बलराम । सहितदशार्ण महीपसब लयेबुलाय लला
काशिराज अरुसैब्यनृप प्रीतिमानजे भूप । आयेलै अक्षौहि
एकएक अनुरूप ॥ लयेएक अक्षोहिणी सैनद्रुपद मतिम
पंचद्रौपदीके तनय शीखण्डी बलवान ॥ धृष्टद्युम्न दुर्द्धर्षजे
शस्त्र बिदबीर । एकएक अक्षोहिणी लीन्हेंसैन गँभीर ॥ अ
तिनको देखिबे मत्स्यनृपति बलवान । पुत्रनसह पूजन
तिनकोसहित बिधान ॥ बासुदेव आयेतहां बनमालीबलरा
कृतबर्मा युयुधानअरु सहसात्यकि बलधाम ॥ अनाधृष्टिअ
अरुशाम्ब निशठ बरबीर । मातासह अभिमन्युको लैआये





बीर ॥ सूतइन्द्र सेनादिसब मणिमय रथन चढ़ाय । ल्यायेतहँ
बिधुवर्षकोसाबिधियोग सुखदाय॥ दशहजार गजमत्त दशअयुत
अनूपम अर्ब । अर्बुद अनुपम संगरथ पदग सुवीर निखर्ब ॥
इन्द्रंधक अरु भोजनृप लीन्हे संगसहाय । बासुदेवके साथते
आये अतिसुखदाय ॥ सोरठा ॥ मणि भूषण बर बाम रत्नबसन रंग
भरे । दिये कृष्ण अभिराम पृथक पृथक सब पांडवन॥
होबेलगो बिवाह पार्थतनय अभिमन्युको । बजेभरे उत्साह
बाद्यअनेकन भांतिके ॥ दईमत्स्य जेवनार अन्नमांस पकवान
बहु । उत्तमसुरा उदार पानदिये सुखदान अति ॥ गायन
नर्त्तकजौन नाचन गावन लगेते । नृपबिराट के भौन मा-
गध मधुर पढ़ेंसुयश ॥ महिषी अति अभिराम जौनबिराट
महीपकी । सूदोष्णा छबिधाम बामवृन्द भूषितलिये ॥ जयकरी ॥
आईसो कृष्णाके पास । लये उत्तरा को छबिरास ॥ देवसुता
समधारे रूप । नृपविराट की सुता अनूप ॥ जिष्णुकियो सोअं-
गीकार । स्नुषापुत्र के अर्थ उदार ॥ तहँ सुरेश समभूपति
धर्म । स्नुषाकियो स्वीकार सुपर्म ॥ जिष्णु कृष्ण सहभरिउत्सा-
ह । बिधिवतकिय अभिमन्यु बिवाह ॥ सातसहस्र बातसम
अर्ब । द्वैशतगज मदमत्त अखर्ब ॥ दाइजदियो बिराट नरेश ।
धनमणि भूषण बसन बिशेश ॥ करिसमृद्ध पावक में होम ।
पूजेबिप्र सकल तपतोम ॥ दोहा ॥ करिबिवाह अभिमन्युको नृपति
युधिष्ठिर मोद । दयेबित्त द्विजबरणजो दीन्हेकृष्ण बिनोद ॥ गो
सहसन भूषण बसन रतन अमौलिक बेश । बहुरथ शय्यादें
दये भोजन सबिधि बिशेश ॥ अतिशै मोदित जननसह अति
उत्सवके भेद । नगर मत्स्यपति भूपको शोभितभयो अखेद ॥

इतिमहाभारतेबिराटपर्बणिअभिमन्युबिवाहबर्णनस्त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

बिराटपर्ब समाप्तः ॥

# महाभारतदर्पण।

## उद्योगपर्वदर्पणः ॥

सोरठा ॥ भरो भाल सिन्दूर एकदन्त गजबदनबर। लम्बोदर छबिपूर चिन्तामणि गणनाथ को ॥ जगत जननि सुखदानिभुवनेश्वरि भवभय हरनि। जाके चारौंपानि देत चारिफल भजतही ॥ चरण सरोजसमान मद्गुरु श्रीबलभद्र के। मोमन मधुप सुजान करत पान जहँ ज्ञान मधु ॥ लकुट मुकुट बनमाल धरे पीतपट श्यामघन। राधासँग नँदलाल रमतकलिन्दी कूलपै ॥ श्लोक ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमं। देवींसरस्वतींव्यासन्ततो जयमुदीरयेत्॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ करिबिवाहअभिमन्यु को मुदितभये कुरुभूप। नृपबिराटकी सभाको चले भोर सुखरूप ॥ मणिमय सभा सुगंधसों पूरित भूरि समृद्ध। भूपवृन्द बैठे जहां धर्मधुरन्धर वृद्ध ॥ बैठे नृपति बिराट अरु द्रुपद प्रथम हि जाय। और नृपति बहुसंगलै रामकृष्ण सुखदाय ॥ सहसात्यकि पाञ्चालके ढिग बैठे बलराम। कृष्ण युधिष्ठिर मत्स्यपति पास लसत अभिराम ॥ भीमार्जुन माद्रीतनय द्रुपदपुत्र सबजौन। प्रद्युम्न शाम्ब अभिमन्यु सहमत्स्यपुत्र सँग तौन ॥ शूर सर्बसम पिताके रूप बीर्य्य बलभौन। बैठे कृष्णाके तनय चित्रासनपर

तौन ॥ महाबीर अतिरथ नृपति बैठे तेजस धाम । लसीस
ज्यों ग्रहन सों शोभित गगन विराम ॥ कहन कथालागे क
तेसब समय समान । रहे चिन्ति चुपह्वै चितै कृष्ण ओर सु
दान ॥ माधवते संघटित नृप जेपाण्डव कार्यार्थ । सुनोचह
श्रीकृष्णके मुखते बचन यथार्थ ॥ कृष्णउवाच ॥ हैंसब तुमको
दित जो करि सौबल छल द्यूत । इन्हैं पठाये बिपिनको जी
राज्यधन धूत ॥ बलते जीतन योग्यजे मही महारथ बीर । ब
त्रयोदश कियो तिन करि बनबास गँभीर ॥ गुप्तबास अ
दुःखमय बर्षतरहें तौन । वेष कपट धरि निकट तव जे अति
बलभौन॥ चहत युधिष्ठिर स्वकुल ते प्राप्त राज्य भो जौन । तु
सब चिन्तहु धर्मसुत दुर्योधन हिततौन॥ धर्म सुयशकर कुरु
को होय जो सहित समाज । नहिं अधर्मते सुरनको चहत यु
ष्ठिरराज ॥ धर्म रहित भूपत्व नहिं चहत धर्म मतिभौन । ह
सुयोधन राज्य ज्यों तुमसब जानत तौन॥ कष्ट असह्यादियोइ
करि मिथ्या उपचार । रणमें जीतेपार्थको नहिं धृतराष्ट्रकुमार
तऊ कुशल तिनकी चहत पांडव अति बलभौन । जीति भू
धन नृपनसों लईसो चाहत तौन ॥ हनो सु बिबिध उपायते इ
चहोतेहि दुष्ट । हरो राज्य ज्यहि भांतिसों तुम सब जानत पुष्ट
लोभ सुयोधनको चितै इनको स्वधरम ज्ञान । सम्बन्धित्व बि
चारि तुम सम्मत करहु सुजान ॥ ये पांडवहैं धर्मरत पालोसम
समान । कियो अन्यथा अन्यते सबल सबन्धु अमान ॥ इन
बाधा कौरवन कीन्ही सछल अखर्ब । ताते कौरव बध्यहैं पा
सुतन सों सर्ब ॥ तिन्हैं जीतिबेयोग्य ये बल बिनपांडवबीर । स
हीको हितसों करहु चिन्तन बुद्धिगँभीर ॥ तुम सब मिलिकी
यतन जाते होय न नाश । दुर्योधन को मतनहींजानि परत म
तिराश॥ परको मत जानेबिना सम्मत कियोन जात। याते प
वहुदूत जो सुकुल सुमति अवदात ॥ दूतपठावहु सोमहि





दुर्योधनके पास। देहिंअर्द्धनृप धर्म्मकोराज्य पुरातनतास ॥ सुनत
जनार्दनकेबचन धर्म्मउक्तसहसाम। द्रुपदादिक भूपन कियोग्रहण
जानि अभिराम ॥ बलदेवउवाच ॥ सुनो जनार्दन को बचन तुमसब
भूपति पर्म । दुर्योधन नृपधर्मके हितसों भरो सधर्म ॥ अर्द्धराज्य
तजिकै करत यत्न तासुनृपधर्म । अर्द्धराज्यधृतराष्ट्र सुत सुखपावैं
दे पर्म ॥ अर्द्धराज्यको पायकै पांडवपुत्र सधर्म । शान्त होयकै
रहैंगे तौन हमैं प्रियपर्म ॥ दुर्योधन मत जानिबे कहत युधिष्ठिर
बैन । दूत पठावहु सामहित प्रिय हमको मतिऐन ॥ भीष्म द्रोण
कृप द्रोणसुत कर्ण पौरजन जौन। दुर्योधन सह बन्धु सब जे मति
बलके भौन ॥ सभामाहँ कुरु भूपको लखि सुखस्थ मति ऐन ।
प्रणयसहित नृपधर्म के कहै साम सहबैन॥ अर्थ सहित बलवान
ति कोपित करहि तिन्हैन। साम सहित करि बारतालेहिं राज्य सह
बैन ॥ द्यूतशक्त नृपधर्मको राज्यद्यूतमें जीति। लीन्हों दुर्योधन
नृपति यामें कहा अनीति ॥ सुहृदन बरजो इन्हैं बहुद्यूत अबिद
अनुमानि । सौबलको अति अक्षपटु बिबिध भांतिसों जानि ॥
सौबलको आह्वानकरि कियोद्यूत नृपधर्म। कर्ण सुयोधन आदि
सब छोड़िद्यूत बिद मर्म ॥ हठकरि हारे धर्मनृप राज्य सुबित्त
अगाध । यामें सौबल को कछूहै न सुनहु अपराध ॥ ताते नृप
धृतराष्ट्रसों सहित प्रणययुत साम। दूतस्वार्थ इनको कहै करिकै
प्रथम प्रणाम ॥ करो धर्मके राज्यहित तबलगहीं उद्योग। युद्धा-
कांक्षी होहिं नहिं जबलगि कौरवलोग ॥ सामसहित मीठे कहै
बचन सुयोधन पास। करैअर्थ साधन प्रथम दूतधर्मनृप तास ॥
अर्थ जो जीतै सामसों होत अर्थकर तौन । नहीं अर्थकर
अर्थ सो होत युद्धभव जौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ यह सुनिकै बल-
द्र के बचन सात्युकी बीर । तासु गिरा दूषणलगो पूरित क्रोध
भीर ॥ सात्यकिरुवाच ॥ जाकी जैसी आतमा तैसे भाषतबैन ।
प पुण्य मय बचनते जानिपरत हिय ऐन ॥ कादर शूर

क्लीव औउपजत येही बंश । जैसे रहत तड़ागमें बकमं
अरु हंस ॥ नहिंदूषत हम बचन तव हे हलधर मति ऐ
दूषण तिनको देतजे सुनत तिहारेबैन ॥ सभामध्य निर्भयक
धर्मनृपतिको दोस । ताकोकहत सधर्मजिहि जीत्यो स
सहोस ॥ रहीधर्मताहै कहांजौ कुन्तीगृहजाय । दुर्योधनजी
इन्हैं तबहो धर्म उपाय ॥ शरणागत अबहोहिं क्यों पूर्णकि
वनबास । पदपैतामहको चहत काटिबिपिन पनपास ॥ ध
युक्तये राज्यको कैसेचहै न बीर । पारभये बनबासके पनते
एडवधीर ॥ भीष्मद्रोण अरु बिदुरको कहे बहुत समुभा
बांटिराज्य दीबेन जोचाहैंजे कुरुराय ॥ तौ हम तीक्षण शर
देहैंतिन्हैं मनाय । धर्मराजके पायँपर तिन्हैंडारिहैं ल्याय ॥ज
शरन नृपधर्मको लेहै ते अभिराम । तौ हम तिनको दी
अन्तकपुरमेंधाम ॥ तेनवेदयुयुधानको सहिहैंशस्त्राघात । स
न सके ज्योंमहीधर महतबज्रको पात ॥ कोसाहिसकिहै पार्थ
अतिही दारुणउद्ध । कौनहोयगोसामुहे भयेभीमकोक्रुद्ध ॥ द्रु
बिराट महीपये दोऊकालसमान ॥ पार्षत धृष्टद्युम्नसो कोला
बलवान ॥ पांचपुत्र येद्रौपदीके अतिरथरणधीर । अपनेअ
तातके हैंसमान बरबीर ॥ लरिहैको अभिमन्युसों दारुणजा
युद्ध । गदप्रद्युम्न अरुशाम्बसो हैकोदुर्मद उद्ध ॥ मारिपुत्र धृ
राष्ट्रके शकुनिकर्ण सहगर्ब । अभिषेकित नृपधर्म को हमपि
करिहैं सर्ब ॥ आततायिके हनेमें लागत कछुन अधर्म । हनि
शत्रु समाजको है क्षत्रीकोपर्म ॥ अग्निलगावैगेह में भोजन
बिषदेय । हरैक्षत्र दारा सछल छीनिद्रब्य जो लेय ॥ जाके क
शस्त्रनहिं हनैशस्त्रकरताहि । आततायि येषटइन्हैं हनियेशीघ्र
चाहि ॥ बांटिदियो धृतराष्ट्रजो धर्मनृपतिको राज । तौसुयु
ष्ठिर भूपसो लहि हैं कुशल समाज ॥ अबदीन्हे बिनुराज्यके
लहिहैं यमधाम । ये सत्यकि के बचन सुनि बोले द्रुपद लला





पदउबाच ॥ महाबाहुतुम कहोजोसो भविष्यहैकाज । नहिंदुर्योधन
हिंगेबांटिसामतेराज ॥ सुतप्रियनृपधृतराष्ट्रसों सुतमतमानत
तौन । भीष्मद्रोणहै तासबश मूर्खसूतसुतजौन ॥ रुचोहमैं बल-
भद्रको इतनो बचनसुजान । प्रथम पठाउब दूतको है यहनीति
प्रमान ॥ मृदुताते तेसाध्यनाहिं पापबुद्धिखलसर्ब । खरसोंमृदुता
गायसों तीक्ष्ण करेकृतखर्ब ॥ पठैशत्रुपहँदीजिये प्रथम चतुर
अतिचार । बलसंग्रहकोकीजियेहमइतबिधिबिस्तार ॥ धृष्टकेतु
अरुशल्य अरु जयत्सेननृपजौन । भूपसकलकैकेयजेशीघ्रबोला-
वहुतौन ॥ दुर्य्योधन करिहैं नियत सहायार्थ आह्वान । ताते
प्रथम पठाइये तिनपैदूत सुजान ॥ भजतप्रथम आह्वानको जे
हैं सन्त समर्थ । त्वराकरहु ताते प्रथम तिन्हैं बोलावनअर्थ ॥
महतकार्य करतव्यहै याते हेनृपधीर । प्रथम बोलावहु शल्यको
सहित सहायगँभीर ॥ जायदूत भगदत्तपै बसैजोसागर पास ।
अमितौजस हार्दिक्यनृप अन्तक जो बलरास ॥ दीर्घप्रज्ञ अरु
रोचमानको पठवहु दूतउताल । सेनाबिन्दु वृहन्तनृप सेनाजित
समकाल ॥ जयकरी ॥ बिंध्यनृपति अरु बस्तुक भूप । नृपतिचि-
त्रधर्मा अति रूप ॥ बाह्लिक मुंजकेश नृपजौन । चैद्यनृपति है
जो बलभौन ॥ नृपति सुपर्श्व सुबाहु सुजान । पौर्बभूपजो सक
बलवान ॥ दुरद नृपति जे और सुरारि । कर्ण बेष्ठ भूपति बल
भारि ॥ नील बीरधर्मा नृपजौन । दन्तवक्रजो नृप बलभौन ॥
रुक्मी नृपजे हैं बलवान । वायुबेग आषाढ़ सुजान ॥ देवकभूरि
सुतेजा जौन । एकलब्य पुत्रनसह तौन ॥ कारुष क्षेमधूर्त्ति जो
भूप । सह कांबोज तृषिक अनुरूप ॥ पश्चिम सिंधुतीरनृपजौ-
न । जयत्सेन भूपति बलभौन ॥ काश्यपंचनद जो भूपाल । क्राथ
पुत्र दुर्धर्ष बिशाल ॥ और पार्बती हैं जेभूप । जनक देशबासी
अनुरूप ॥ सुशर्मा मणिमान्य नरेश । सक सुपांसु राष्ट्राधिपव-
श ॥ धृष्टकेतु जो है बलवान । तुण्डदण्ड धारक अति मान ॥

वृहत्सेन भूपति रणधीर । स्रेणी मन निषाद सुबीर ॥ वृह
सुमहोजा भूप । समुद्र सेनभूपति अतिरूप ॥ उद्भव क्षेमक
ति बलवान । बाढ़धान सुश्रुतायु सुजान ॥ दृढ़ायु श्रुतायु
ल्वसुत जौन । कलिङ्ग कुमार महाबलभौन ॥ इनको पठवहु
तउताल । आवहिंबेगि सकलभूपाल ॥ ममपूरोहित बिद्यावा
दूतकर्म्म करिहै सुखदान ॥ नृपधृतराष्ट्र पास ये जाय । की
सामबचन समुझाय ॥ भीष्म द्रोण दुर्योधन पास । यथाबा
करिहै मतिरास ॥ बासुदेवउबाच ॥ ये पाञ्चाल नृपति केबैन ।
ये सिद्धिकर है मति ऐन ॥ पूर्ब कार्य करिबे यहभूप । करैं अ
था बालस्वरूप ॥ कुरु पाण्डव सों नातसमान । हमैं दुहुन
हित कल्यान ॥ हम करिबे अभिमन्यु बिवाह । आयभयेसो
उत्साह ॥ हमचाहत अबघरको जान । तुम दोऊहौ वृद्धसु
न ॥ तुम्हैं बहुत मानत कुरु भूप । तुम अरु द्रोण सखा अ
रूप ॥ पठवहु दूत युधिष्ठिर अर्थ । जोसाधै मतिमानसमर्थ
सबही को सम्मत है तौन । दूत पठावहुगे तुम जौन ॥ प्रथ
सामकरिये युतन्याय । बंशक्षयबारण सुखदाय ॥ जौनसुयोध
दर्पाधीन । मानै साम न मति ते हीन ॥ औरदूत पठवहु म
मान । तब हमार कीन्हेंउ आह्वान ॥ तब दुर्योधन लहिहै
ध । जब अर्जुन अरि है अति क्रोध ॥ बैशम्पायनउबाच॥ सहबिर
करिकै सनमान । यथा योग्य सबको सुखदान ॥ लहि श्रीकृ
बिराट निदेश । गये द्वारका सुकुल अशेश ॥

इतिउद्योगपर्बणिअभिमन्युबिबाहश्रीकृष्णस्यद्वारकागमनप्रथमोऽध्यायः

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ द्वारकाको गये जब श्रीकृष्ण यदुकु
राट । लगे करन बिराट बिधिवत युद्धको सबठाट ॥ यथायोग
पठाय दीन्हें दूत भूपन पास । मंत्रकरि नृप धर्म अरु पांचा
अतिमति रास ॥ धर्म नृपति बिराट द्रौपद महिपको संदेश
सुनत प्रमुदित चले सिगरे छोड़िकै निजदेश ॥ सुनि सुयोध





पांडवन के जुरति सैन सहाय । बोलिबे सब भूमिके पति दिये
दूत पठाय ॥ हेतु पाण्डव कुरुनके सबचले भूप अखर्ब । महत
लहि दलभारको भूभई ब्याकुल सर्ब ॥ हलन लागी भूमिभूधर
मथित सागरनीर । भये गजरथ संघटनसों भग्नबन गम्भीर ॥
द्रुपदनृप युववृद्ध प्राज्ञ जो हो पुरोहित बिप्र । धर्मनृपसों बूझि
पठवो कुरुन पै अतिक्षिप्र ॥ कहन तासों लगे ऐसे द्रुपद भूप
सुजान । नम्र ह्वैकै लियेताकी प्रशंसाहि महान ॥ द्रुपदउबाच ॥ हैं
जड़नसों श्रेष्ठ जीवी जीवमें मतिमान । श्रेष्ठहैं मतिमानमें नर
नरनमें द्विजजान ॥ जयकरी ॥ श्रेष्ठ द्विजनमें बिद्यामान । ताते
जेहि सिद्धांतज्ञान ॥ ताते अधिक जोकरैसुकर्म । तातेब्रह्मज्ञा-
न बिदपर्म ॥ कृत बुद्धिनमहँ तुम्हैं समान । मो मतिमें नाहिंऔर
सुजान ॥ कुलबय बुद्धि श्रेष्ठतव सर्ब । जीवशुक्रते बुद्धिन खर्ब ॥
बिदित कुरुनको तुम्हैं चरित्र । धर्म नृपति कृत जौन पबित्र ॥
बिदितभूप धृतराष्ट्रहितौन । कियोद्यूतछल सौबलजौन ॥ कहो
बिदुरन कृत्यअनीति । मानो नहिं करिसुत परप्रीति ॥ शकुनि
द्यूतछलकोठहराय । धर्मनृपतिकोफेरिबुलाय ॥ कपटद्यूतकीन्हों
तेहिपूत । इनको अक्ष अपटुलाहिधूत ॥ छलकरि जीतो इन्हैं
सधर्म । देतराज्यनतुकैसेपर्म ॥ नृपधृतराष्ट्रपासतुमजाय । कहि-
योधर्मबचनसमुझाय ॥ योधनसहिततासमनजौन । करिबोहोय
बूझिबो तौन ॥ जोतुमकहिहौ है मतिऐन । बिदुरसाधिहैंतुम्हरो
बैन ॥ भीष्म द्रोण कृपादिकबीर । तिनमें साधहु भेद गँभीर ॥
भटअमात्यको बिमुख कराय । फिरि मिलापको सुलभउपाय ॥
कीजो बिलँब बुद्धि बिस्तार । तुम तबलों है बिप्र उदार ॥ जब
लों पांडवसहित उपाय । जोरैंधन सेनासमुदाय ॥ मुख्यप्रयो-
जन यामेंबिप्र । सेनाधन संग्रहकोक्षिप्र ॥ तुम्हैं मिलतधृतराष्ट्र
सधर्म । कहै बचन जो तुमसों पर्म ॥ तौतुमहूं सह धर्माचार ।
तासों कहियो बचन उदार ॥ क्लेशपांडवनको सब जौन । तेहि

दयाइ लहि कहियो तौन ॥ पूर्बबंशको पालितधर्म । सो सुन
दीजो सब पर्म ॥ होइहि सभय सुनत मन तास । होतहमैं
नियत बिश्वास ॥ तुम्हैं न भयतुम ब्राह्मणवृद्ध । वेद शास्त्र
तेज समृद्ध ॥ पुष्य योग जय युक्त मुहूर्त्त । सिध्यकर्मकर आ
दपूर्त्त ॥ जाहु हस्तिनापुरकोबिप्र । करहुयुधिष्ठिरकारजक्षिप्र
बैशम्पायनउवाच ॥ पाय द्रुपद आज्ञा सुख रूप । चलो पुरो
त जहँ कुरुभूप ॥ नीति शास्त्रवेत्तासो बिप्र । चलो हस्तिन
पुरको क्षिप्र ॥ पठै पुरोहितनृप पांचाल । दूतबुलाये सुमति
शाल ॥ पठयेचहुंदिशि भूपनपास । जिष्णु द्वारकाकोबलरास
जहां वृष्णि अन्धक यदुभूप । सहित कृष्णप्रद आनँदरूप
गुप्त पठाय सुयोधन चार । पण्डवनको सुनि चरित उदार
गये द्वारका को यदुबीर । सुनत सहित सेना रणधीर ॥ रथ
जोरि अनिलसम अर्ब । चलो द्वारका सबलअखर्ब ॥ ता
दिन अर्जुन बरबीर । जायद्वारका पहुंचे धीर ॥ दोऊबीर द्वार
का जाय । सूतत सुनो कृष्णसुखदाय ॥ दोऊगये तहां बलऐन
यदुपतिरहे करत जहँसैन ॥ शीश ओर धृतराष्ट्र कुमार । बै
पददिशि जिष्णुउदार ॥ तजिनिद्रा जागे भगवान । सांजलि
देखि जिष्णुबलवान ॥ बूझिकुशल चितये यदुबीर । दुर्योधन
को गर्वगँभीर ॥ स्वागतबूझि आगमनहेतु । पूछो फेरि वृष्णि
कुलकेतु ॥ कहो सुयोधन करहुसहाय । यहि बिग्रहमें मो यदु
राय ॥ हमअर्जुनसों सख्यसमान । समसम्बन्धतुम्हैंसुखदान ॥
हम आये प्रथमहिं तवपास । भजत सन्त प्रथमागम जास ॥
श्रीकृष्णउवाच ॥ तुमआये पहिले ममपास । हे दुर्योधन अतिमति
रास ॥ लखोप्रथमपार्थहिहमभूप । दुहुंदिशिहमैं सहायअनूप ॥
प्रथमहिलघुको बांछितकार्य । बिहितनीति भाषत सबआर्य ॥
तातेप्रथम पार्थ सन्तोष । करत सुनहुं भूपति तजिरोष ॥ तुल्य
शस्त्रधारकहैं सर्ब । गोपवृन्दजे मेरेअर्ब ॥ नारायण नामक अ-





भिराम । रण दुर्मद जे अतिबलधाम ॥ एकओरतेसैनिकघोर ।
बिना शस्त्र हमहैं यकओर ॥ करिहैं युद्ध न हम रणधीर । चहहु
लेहु तेहि अर्जुनबीर ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ अर्जुन कहो तुम्हैं हम
लेत । यदुपति धर्मानन्द निकेत ॥ गहहु न शस्त्रहोहुममनाथ ।
बिजय पराजय है तव हाथ ॥ लई सुयोधन सेनातौन । दुर्मद
गोपवृन्दहो जौन ॥ गहिहैं शस्त्र न करिहैंयुद्ध । जानि कृष्णको
प्रमुदितउद्ध ॥ दुर्योधन सहसेना तौन । गयेजहां हलधरबल-
भौन ॥ सकलकहो आगमन बिधान । सुनि बोले बलभद्र सु-
जान ॥ बलदेवउवाच ॥ तुमको बिदितकहो हम जौन । नृपबिराट
सों हे मतिभौन ॥ हृषीकेशसों बचनप्रमान । सम्बन्धी दोउ हमैं
समान ॥ केशव ग्रहणकियो नहिं तौन । हमकह हरिबिनु करत
न गौन ॥ हम कुरु पांडवकीन सहाय । करिहैं सुनहुँ कहतसत-
भाय ॥ जनमें भरतबंशमें शुद्ध । क्षात्रधर्म करि करिये युद्ध ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ हलधरको भरिअंक उदार । चले सुयोधनकरत
बिचार ॥ हम पाईयह सेना उद्ध । कृष्ण अशस्त्र न करिहैंयुद्ध ॥
ऐसी जितिहैं हम संग्राम । आये कृतबर्माके धाम ॥ एक दई
अक्षौहिणिसैन । कृतबर्मासहबिधि बलऐन ॥ सोसबसैन सु-
योधनभूप । लयेगये घरको सुखरूप ॥ गये सुयोधनहरि सुख
रास । बोले मुदित जिष्णुके पास ॥ करिहैं युद्ध न हमकोजानि ।
अर्जुन कियोकहा अनुमानि ॥ अरजुनउवाच ॥ अरिसमूह करिबे
को नाश । तुम समर्थ यदुपति बलराश ॥ सबको हनिहैं हम
तवसाथ । कृपारावरी लहि यदुनाथ ॥ तुमहौ कीरतिमान स्व-
रूप । हमयश चाहत लहो अनूप ॥ याते लयोतुम्हैं यदुबीर ।
कीजो मम सारथ्य गँभीर ॥ बासुदेवउवाच ॥ बांछिततवकहै है यह
सार्थ । सारथ्य करैंगे हम तव पार्थ ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ मुदित
होय अर्जुनसों पर्म । गये कृष्ण त्वर जहँ नृपधर्म ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिदूतगमनबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

वैशम्पायनउवाच॥दोहा॥ शल्यसुनो नृपधर्मको दूतनसोंसंदेश
चलो महारथ पुत्रसह साजि चमूअति बेश ॥ सैनएक अक्ष
हिणी लये महाबलबीर । कवचबिचित्र धरेसुभट रथध्वजध
ष गँभीर ॥ धराधराधरको करत कम्पित झम्पित शूर । च
जहां पांडव नृपति शल्य महाबलपूर ॥ आवत सुनिकै शल्य
सेनासहित गँभीर । दुर्योधन पथमेंरचे बासस्थानसमीर ॥
रहिठौर रचीसभामणिमय रम्य उदार । पूजन द्रब्य धरे त
भोजनबिधि बिस्तार ॥ बापीकूपतड़ागतहँ रचे बिचित्रबना
तहँ तहँ पूजेशल्यको कुरुकुल सचिवन आय ॥ शल्य अमान
पायकै पूजन प्रमुदित पर्म । सचिवनसो बोलो तुम्हैं पठयो
नृपधर्म ॥ सचिवनकहो सुयोधनहिं यहत्वदर्थ बिश्राम । की
को बिरची सभा ठौर ठौर अभिराम ॥ मिले सुयोधन आइ
मातुल जानि प्रसन्न । मुदितशल्य देखतभये जानि कृत्य
स्पन्न ॥ शल्य अङ्कभरिकै कहो मांगहु बांछित जौन ॥ दुर्यो
उवाच ॥ जामें मम कल्याण है दीजै बांछित तौन ॥ मेरे सेन
पाल तुम होहु महाबल भौन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ कहो सुय
धन बचन सुनि शल्य तथास्तु सुतौन ॥ शल्यउवाच ॥ जाहुह
स्तिननगरको दुर्योधन रणधीर । जातदेखिबे हेतुहम जहां
धिष्ठिरबीर ॥ देखि युधिष्ठिरको यहां क्षिप्र आइहैं भूप । बच
आपनो पालिहैं दयो जो तुम्हैं अनूप ॥ दुर्योधनउवाच ॥ देखि
धिष्ठिरको इहां आवहु बेगि सुजान । स्मरण करत हम रहैं
दयो जो तुम बरदान ॥ शल्यउवाच ॥ युधिष्ठिरको देखिहम क्षि
तिहारे पास । भागिनेय सुनुआइहैं कीजो नियत बिश्वास
बिदा सुयोधनको कियो लियं अंक बलऐन । गयेसुयोधनअ
पने नगरभरे चित चैन ॥ गये शल्य सेनासहित रहेजहां नृ
धर्म । कहिबे को वृत्तांतजो कियो सुयोधन कर्म ॥ पुरबिराट
निकट जहँ सेना बासस्थान । तहँ डेरा करिकै गये जहँ पांड





बलवान ॥ पाडव मिलिनृपशल्यसों अर्घ्यपाद्य अभिराम । करि-
कै बूझो कुशल फिरि धर्मनृपति बलधाम ॥ भीमार्जुन श्रीकृष्ण
सों माद्री तनयन पास । बूझि कुशल लागे कहन शल्य भूप
मतिरास ॥ कृष्णा सह बनबास करि सहो दुःख अतिमान ।
तुम्हैं दुःख कारण भयो दुर्योधन अज्ञान ॥ फिरि तुम सुखको
पाइहौ हनि शत्रुनको बीर । राज्य करहुगे आपनो आनँदभरो
गँभीर ॥ तुम जानतहौ धर्मनृप जौन जगत सिद्धांत । यातेतुम
में लाभके लेश न लखत नितांत ॥ राजर्षिनको देखिपथभली
भांति नृपधर्म । दान तपस्या धर्ममें रहत निरन्तर पर्म ॥ क्षमा
अहिंसा सुमति सो तुममें बसति नरेश । मृदु बदान्य ब्रह्मण्य
तुम धर्म परायण बेश ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ शल्य युधिष्ठिर सों
कह्यो दुर्योधन सनमान । फेरि आपनो कहि दियो दियो जौन
बरदान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुकृतकियो तुम दियोनृपवर सुयोधन-
हि जौन । एकन मातुल कीजियो सुनहु कहत हम तौन ॥ क-
र्णार्जुन के युद्धमें देहु बचन यह मोहिं । तुम सारथ्य न कीजियो
पाल्य धनंजय तोहिं ॥ शल्यउवाच ॥ सुनु हे पांडव कहत तुमकहत
सो हम तवपास । होय सारथी तासहम तेज करैंगेनास ॥ क-
हिहैं बचन प्रतीप हम भर्त्सन भरे बिरुद्ध । सूतपुत्र सँग जि-
ष्णु के चली करन जबयुद्ध ॥ तेज दर्पहत होयगो कर्ण महा
रणधीर । सुखसों ताको मारिहैं तब अर्जुन बरबीर ॥ कृष्णा
सह तुम द्यूतमें लहो दुःख नृपधर्म । परुषबचन राधेय के सहे
जे भेदी मर्म ॥ दयो जटासुर दुःख जो कीचक अधमअयान ।
सहो द्रौपदी संग तुम भैमी नलहि समान ॥ दुःख तुम्हैं यह
होयगो सुखकारण अति मान । खेद न यामें करहुतुम धीरबी-
र बलवान ॥ दुःख महात्मा लहत है महत युधिष्ठिर भूप । श-
ची सहित अमरेश ज्यों लहो दुःख अति रूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
कैसे इन्द्र सभार्य दुखपायो अति बलवान । सो मातुल हमसों

कहो बिस्तर सहित सुजान ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र द्रोहते प्रजा
ति, त्वष्टासुत बलवान । तपबलते कीन्हों प्रगट ज्वलित अ
सम भान ॥ बिश्वरूप से तीनि शिर अनल अर्क शशिरू
करनलगो तप इन्द्रपद लीबे चाहि अनूप ॥ तास देखि
बल महा भेर खेद मघवान । तप भंगारथ अपसरा पठई
सनमान ॥ जाइ अप्सरन कियोबहु कौतुक कला महान ।
श्वरूप मन नाहिं चलो पूरणसिन्धु समान ॥ जाय इन्द्रसों
प्सरन कहो बचन सबिबेक । बिश्वरूप मन चलत नाहिं कौ
कियो अनेक ॥ सुनत अप्सरन के बचन शत्रुप्रबल निरधा
बिश्वरूप के नाशको रहोउपाय बिचारि ॥ कियेउपेक्षा शत्रु
घु सोऊबड़ो ह्वैजात । बढ़ननपावै प्रथमही करी शत्रुकोघात
यह बिचारि अति क्रोध करि लीन्होंबज्रउदार । त्रिशिराके
रपर कियो इन्द्र अमोघ प्रहार ॥ लगतबज्र क्षितिपर गिरो
रित्रय शिखरसमान । बैश्वानरसम तेजमय भयकर घोरम
न ॥ तक्षाआयो तेहि समय लीन्हों परशु महान । त्रिशिरा
शिरकाटिबे आज्ञाकिय मघवान ॥ तक्षाउवाच ॥ महास्कन्धया
कठिन कटै परशुसों जौन । तौमोको सतपुरुष सब हँसिहैं
मतिभौन ॥ इंद्रउवाच ॥ डरहुन तक्षा चित्तमें लहि ममकृपा
हान । काटहु ह्वै है परशु तव मेरे बज्र समान ॥ तक्षाउवाच ॥
हौतुम बूझत तुम्हैं कियोघोर यहकर्म । हमसुन वे चाहतक
हु यह कृत कारक कर्म ॥ इंद्रउवाच ॥ देवराज हम इन्द्र हैं तु
जानतहो मोहिं । जौन कहत हम करहु तुम नाहिं बिचा
तोहिं ॥ तक्षाउवाच ॥ महाक्रूरयहि कर्मते तुमलजात नाहिं शक्र
मारोऋषि सुत ह्वै अभय ब्रह्महत्या सो बक्र ॥ इंद्रउवाच ॥ त
सुनहु कीजो बहुरिधर्माधर्म बिचारि । बज्रहनोयाशत्रुको का
हुशीश उदार ॥ सुयश होयगो यज्ञमें तक्षलहौगोभाग । ह
हु शत्रु शिर बेगि तुम करि मोपै अनुराग ॥ शल्यउवाच ॥ सुत





द्रको बचन लै तक्षा कठिन कुठार । त्रिशिराके शिर काटिकै
न्हें भिन्न उदार ॥ त्रिशिराके शिरकटेते ज्वलनअर्कसमपीन ।
पिंजल सुतित्तिर चटक निकसे पक्षीतीन ॥ ताहिमारि बिज्वर
यें इन्द्र गये निजधाम । तक्षा अपने भौनगो करि सुरपति
को काम ॥ प्राजापति त्वाष्टै सुनो हनेपुत्र मघवान । ऐसे बोले
चनको करिकै क्रोध महान ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणित्रिशिराबधबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

त्वष्टाउवाच ॥ दोहा ॥ नित्यतपस्वी शान्तअति दान्त जितेन्द्री
ौन । इन्द्रहनो अपराध बिनु पुत्र हमारो तौन ॥ ताते शक्र
नाशको वृत्रकरत उत्पन्न । त्वष्टातपस प्रतापको लोकलखो
म्पन्न ॥ त्वष्टा करि आचमनको देइअग्निमें होम । प्रगट
कियो अरिइन्द्रको वृत्तमहाबल तोम ॥ इन्द्रशत्रु बाढ़ो कहो
मतपकोबलपाय । वृत्रबढ़ो समअग्निके लगोगगनसोंजाय ॥
ष्टासो वृत्रासुर बूझो करैं कहा हमकर्म । त्वष्टैकहो नाशमघ-
को करहुपुत्रकृतपर्म ॥ यह सुनिकै सुरलोकगो वृत्रमहाबल
ीर । शक्रवृत्रसो युद्धतब होनलगो गंभीर ॥ वृत्र पकरिकै इ-
द्रको लियो बदन में डारि । बिस्मित इन्द्रकरी प्रगट जृम्भा
ब निरधारि ॥ वृत्रजँभानो बायमुख अतिगिरि गुहा समान ।
ये जृम्भिकासाथ काढ़ि मुखते तब मघवान ॥ लखिसुर सब
र्षितभये होनलगोतबयुद्ध । लरेवृत्र बासव दोऊ चिरलौं दारु-
क्रुद्ध ॥ वृत्रप्रबलभो युद्धमेंत्वष्टातपबलपाय । इन्द्रगयेतजि
दतब रणते सहित सहाय ॥ ऋषि सुरगणसह शक्रतब क-
कै मंत्रबिचार । ध्यानधारि तबबिष्णुको लीन्हों शरणउदार ॥
न्द्रकहो सुर ऋषिनसों चलहु बिष्णुकेधाम । आज्ञा करैं जो
गतपति सो हमको अभिराम ॥ इंद्रउवाच ॥ भरोभूरि ब्रह्मांडमें
त्रमहाबलवान । यहअजेय तपबललहैं त्वष्टाकोअतिमान ॥
ब असमर्थ भयेसुहम सोसमर्थ बलवान । चलो बूझियहि

विष्णुलग वाकोबध सुखदान ॥ शल्यउवाच ॥ इन्द्र बचन सु
महाऋषिरहेजे सुर गण गण्य । गयेबिष्णुके धामको आ
जानि शरण्य ॥ कहो बिष्णुसों वृत्रकृत मे बिकल मघवा
अमृत हरी बलिबांधि तुम दयोजो मोको स्थान ॥ तुम स
प्रभु जगन्मय जगन्मूल जगदीश। देवदेव पालकप्रजा बि
बिश्वपति ईश ॥ होहुसुगति सब सुरनके शक्र सहायकतु
भोवृत्रासुर जगतमें बाढ़ि परिपूरणदुष्ट ॥ बिष्णुरुवाच ॥ शक्र
करतब्यहै तवहित हे मतिराश। वृत्रासुरको होइगो जाते नि
मित नाश ॥ ऋषि गन्धर्ब सुअमरतुम वृत्रासुर पहँजाय । स
करहु फिरि करहिंगे हमबध तासउपाय ॥ तब बज्रायुध म
हम करिप्रवेश मघवान। नाश करैंगे वृत्रको सन्धि करहु म
मान ॥ शल्यउवाच ॥ ऋषिसुरगण करिइन्द्रको आगे तापहँजा
ज्वलित अग्निसम सूरसों वृत्रासुरकोपाय ॥ ऋषिन जायि
वृत्रके कहनलगे प्रियबैन । ब्याप्तभये तव तेजते त्रिभुवन
बल ऐन ॥ जीतिसके नहिं इन्द्रको बीतिगयो बहुकाल ।
नर नागादिक प्रजापीड़ितभई बिशाल ॥ यातेतुम अब इ
संधि करहु बरबीर। शक्रलोकसों लेहुसुख ह्वै निवृत्त रणधी
वृत्रऋषिनके बाक्यसुनि शिरसों कियो प्रणाम । फेरिविहँ
लागो कहन वृत्रमहाबलधाम ॥ वृत्रउवाच ॥ गन्धर्बन सह
षिनतुम हमसों कहेजेबैन। उत्तर ताको देतहम सुनहुमहा
ऐन ॥ तेजस्वी द्वैसो नहीं सख्यहोत मतिमान ॥ ऋषिरुवाच ॥
बार मिलि सख्यको मानत सन्तसुजान ॥ उल्लंघत सत
नाहिं जासों करतमिलाप । मिलत सन्त तजिकै दपट जे
पुरुष अपाप ॥ ताते कीजै शक्रसों सख्य वृत्रबरबीर । स
योग्य तुमहौदोऊ मतिसों भरे गँभीर ॥ शल्यउवाच ॥ सुनत
षिनके बचनयों बोलो वृत्र बदान्य । हे अवश्य हमको
संत तपस्वी मान्य ॥ जौन कहत हम देवपति देहिंहमैंबरदा





तब हमतुम जो कहतसो करिहैं सुनहु सुजान ॥ आर्द्र शुष्क नहिंशिलाकाष्ठते अस्त्रशस्त्र दिनरात। इनतेहोहिं अबध्य हम सुरनाहिंसकै निपात ॥ ऐसे होयतौ करैंहम सख्यसाथ मघवान। ऋषिन तथास्तु कहो सुनत हर्षो वृत्रमहान ॥ वृत्रासुरको देय कै ऐसोबरसुरनाथ । समय वृत्रबधको लखत रहन लगे नित साथ ॥ लखोवृत्रको सिंधुतट संध्यासमय कराल। शक्र समुझि बरदानको आयोकाल बिशाल ॥ देखोफेण समुद्रको गिरि सो लागोतीर । नहींशुष्क नाहिं आर्द्र यह अस्त्र न शस्त्र गँभीर ॥ बज्रडारिकै फेणमें कियोबिष्णुको ध्यान । डारोफेणसों वृत्रपर सहहरिअंश महान ॥ बिष्णुअंशते फेणसो भयोवृत्रको नाश । मिटोजगत उत्पात सब पूरेलोक प्रकाश ॥ जयकरी ॥ बहोसुखद तब बायु अनूप। लहोप्रजन अति आनँदरूप ॥ देवयक्ष ऋषिगण गंधर्ब। सुस्तुति करन इन्द्रकी सर्ब ॥ लागे करनप्रणाम ललाम। हानि अरि शक्र गये हरिधाम ॥ सुरन सहित पूजित भगवान । करि अतिमोद लहो मघवान ॥ त्रिशिरा ब्राह्मण मारो जौन। हत्यालगी इन्द्रकोतौन ॥ ताते इन्द्र महाभयपाय । बसे सलिलमें जाय छपाय ॥ नष्टस्वर्गते भोमघवान। भईभूमि तबध्वस्त समान ॥ सूखेकानन तृण तरुक्षीन। भये सरित सर जलते हीन ॥ क्षोभित भये जीवजन सर्ब । अनावृष्टि उत्पात अखर्ब ॥ भयेत्रस्तऋषिदेवमहान। जानिअराजकजरतसमान ॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिवृत्रबधबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

शल्यउवाच ॥ रोला ॥ देवगण गंधर्बऋषि सबभरे भीति महान। करैंराजा स्वर्गकोअब काहिलहि बलवान ॥ देव ऋषिन बिचार करके कियो यह सिद्धान्त । करैंराजा स्वर्गको यह नहुष नृप अतिकान्त ॥ तेजमय बलवान सुयशी नित्य धार्मिकधीर। गये सुरऋषि नहुष नृपपहँ करि बिचारि गँभीर ॥ कहनलागे स्वर्गके तुम होहु राजाभूप ॥ नहुषउवाच ॥ तुम्हैं पालन योग्यमो-

में है न शक्ति अनूप ॥ देवाऊचुः ॥ देततपबल तुम्हहम सह
षिन बसुगंधर्व। स्वर्गको अभिषेक तुमको करत भूपअखर्ब
देव दानव यक्ष ऋषिनर पितृबसु गंधर्व। होत सन्मुख ले
हरितेज सबकोसर्ब ॥ धर्मसो सबलोकको तुम करहु प्रा
भूप। सुरनको लहि राजदुर्लभ करहु भोग अनूप ॥ नंदना
क बिपिनमें सबगिरिनके उत्तमंग। नहुष लागो करनक्रीड़ा
प्सरनकेसंग ॥ गंधर्बनारद किन्नरनको सुनत गीत अनूप।
षटऋत मूर्त्तिमान सुजाहि सेवतभूप ॥ नहुषदेखो एक दि
शचीको छबिरास। कहनलागो सभासदजे रहेसुरगणपास
इन्द्र महिषी शची मोहिं न भजति क्यों छबिधाम । इंद्रहम
लोकके पति महाबल अभिराम ॥ अद्यआवै इंद्रपत्नी क्षि
मेरे भौन। सुनतभय बश सुरनको किय शचीगुरु गृह गौन
शच्युबाच ॥ देहुमोको शरणगुरु करि नहुष भयतेमुक्त । कहत
तुममोहिं प्रभुसबसुभग लक्षणयुक्त ॥ गिरा कीजै सत्यसो प्र
कहतहे तुमजौन ॥ वृहस्पतिरुबाच ॥ कहतहे हमशची तुमसोंस
है ध्रुवतौन ॥ इन्द्रकोध्रुव इहांलखिहौ क्षिप्रहे छबिऐन। नहु
मतिभीति मानहु सत्य मेरबैन ॥ वृहस्पतिके शरण को सु
शची कीन्हों गौन । देवऋषि लखिक्रोधसों परिपूर्ण दुर्म
भौन ॥ कहनलागे नहुषसों नहिंतुम्हैं क्रोधसमान । क्रोधते
कँपतसुर गन्धर्ब उरग महान ॥ परस्त्रीहै शचीताते करहुनि
निवृत्त। पापकीनहिंवृत्तिमें कोउ होत साधुप्रवृत्त ॥ कियो ग्र
न नहुष तिनको बचन करिकै क्रोध। गो अहल्या पासइन्द्र
कियो तुम तवरोध ॥ मोहिं बरिबो शचीकोहै परमहित सुख
न । शचीमोको बरैकैहै सुरनको कल्यान ॥ देवाऊचुः ॥ शची
हम ल्याइहैं तुमतजहुक्रोध सुरेश ॥ शल्यउबाच ॥ यहिभांतिक
सुर गये गुरुगृह पायनहुष निदेश ॥ देवाऊचुः ॥ शरणआईश
तवहै बिदित हमकोबिप्र । देहुताको नहुषको गुरुकृपा करि





क्षिप्र ॥ सुनतयह भरिबारिलोचन शची बोली बैन । हौंनचाह-
ति नहुषको पति कियोगुरु गुणऐन ॥ शरणआई भरीभयसों
जानि तुमहिं शरण्य ॥ वृहस्पतिरुबाच ॥ तजतनाहिं शरणागतहि
यह प्रण हमारोगण्य ॥ धर्म शीलाइन्द्रपत्नी तजौंगो नहिंतो-
हिं। नहिंअकारज करत बिप्रसो धर्मरक्षणमोहिं ॥ शचीकोनहिं
देहिंगे हमजाहु सुरनिजभौन। शरणगतको तजतबसतसोनर्क
में करि गौन ॥ जानिकै यह देहिंगे नाहिं शची सुरपति बाम ।
होयगोहित जौन इनको हमैंसो अभिराम ॥ शल्यउबाच ॥ लगेते
सुर कहन ऐसे नहुषकी भरिभीति । करु वृहस्पति मंत्रजासों
होय कार्य सुनीति ॥ वृहस्पतिरुबाच ॥ नहुषसों यह जायदेवीकछू
मांगै काल । होयगो हित परम पीछे हमहिं सुनहु बिशाल ॥
शल्यउबाच ॥ सुनि वृहस्पति बचन बोले देव ऐसे सर्ब। हित ति-
हारो होत याते सुरन सहित अखर्ब ॥ वृहस्पति तुम शचीसों
कहि वचन करहु प्रसन्न। अन्यादि लागे कहन सुरसब बिनय
सो सम्पन्न ॥ देवाऊचुः ॥ जगतकी आधारहौतुम इन्द्रपत्नीपर्म।
तुम्हैं चाहत नष्टकैहै क्षिप्र नहुषअधर्म ॥ इन्द्रपदको पाय भो
मदअन्ध दुर्मतिरास। कार्य्य सिद्धिबिचारि याते चलहु ताके
पास ॥ शची लज्जित सुरनके सुनि बचनगुणकर तौन। नहुष
के ढिगगई लखिभो खुशी दुर्मतिभौन ॥ शल्यउबाच ॥ शची सों
इमि कहनलागो नहुष कुमति अगार । इन्द्रहौं तिहुँलोकको
पति तेजपुंजउदार ॥ शचीयाते बरहुमोको उचितहै छबिऐन ।
लहहुगी त्रैलोक्यको ऐश्वर्य बसि ममसैन ॥ नहुषके सुनि ब-
चन कंपित भई योंछबिधाम । मानसिककरि पितामहको शची
शुभद प्रणाम ॥ काल चाहति कछू तुमसों सुनहु इन्द्रप्रमान ।
सोधहौ करिलेहु कछुदिन भये का मघवान ॥ सोधजो मघवान
के प्रभु नहीं मिलिहैं मोहिं । अवशि बरिहैं आयतो हम शक्र
सुखसों तोहिं ॥ सुनत पुलकित नहुषसो मृदुशची भाषोजौन ।

नहुषउवाच ॥ सत्य करियो दीर्घ लोचनि कहति है तू तौन
नहुषसों ह्वै बिदा आई शची गुरुके धाम । साग्नि सुर
शचीकेसुनि तौन बचन ललाम ॥ शक्रको सब करन चिन्
लगे ते मतिरास । जगतपति श्री बिष्णु प्रभुके गये ते च
पास ॥ ब्रह्महत्या भीतिसों भजिगये सुरपुर ईश । आपु
गति हमैं प्रभु जगदादि त्रिभुवनईश ॥ सुरनके सुनि ब
बोले बिष्णु अव्ययरूप। इन्द्रको करि पूत करिहैं फेरित्रिभु
भूप॥ फेरिकरि हयमेध लहिहैं इन्द्र पदको शक्र । नहुषल
नाशको यह कर्म करिकै बक्र ॥ बासकरिकलुषोस सुरगण
मल बाणी तौन। श्रवण करिकै चले तहँते सत्यशुभदाजौन
उपाध्याय समेत सुर ऋषि गये चलि त्यहि देश । रह्यो
हौ गुप्त ह्वैकै भीति बिकल सुरेश ॥ अश्वमेध सुयज्ञतेहां
सहित बिधान। ब्रह्महत्याते छुटै जेहि पुण्यते मघवान॥
तरु गिरि युवति भूमें ब्रह्महत्या भाग । राखि दीन्हों सुरन
ऋषि पूर्ण करिकै जाग॥ पापते छुटि भये बिज्वर इन्द्र आत
वान। स्थानते भो नहुष कम्पित देखिकै मघवान ॥ भये
अदृश्य सुरपति काल कांक्षावान। शची देखि अदृश्य पति
भरो शोक महान॥ कियो होम जो दानदीन्हों गुरुनको संतो
पतिब्रत शुचिसत्य मोमें होय जो निर्दोष ॥ तौ हमारो नि
देवी करौबांछित सिद्ध। शक्र है जिहिदेश तौन देखाइदेहु
मृद्ध॥ प्रार्थना इमि निशासों करि कियो शकुन बिचार ।
श्रुति तहँ शकुन देवी भई प्रगट सुढ़ार ॥ शल्यउवाच॥ उपश्रु
देवी स्वरूप सुधारिदिव्य महानि । शचीके ढिग आय ठा
भई अति शुचि जानि॥ उपश्रुतिको देखिकै इमि शची बो
बैन। कौनहौतुम दिव्यरूपिणि कहहु हे छबिऐन ॥ उपश्रुतिरुवाच
उपश्रुति हम देवि आई शची तुम्हरे पास । देखिहौ तुम
सुरपति को महा सुखरास ॥ शचीको लै संग उपश्रुति च





उत्तरओर। उल्लङ्घि देवारण्य बहुगिरि सिन्धुकेपरछोर ॥ लखो
शत योजनायत महाद्वीप मझार। कमल कानन सघनजामें
मत्तमधुप उदार ॥उपश्रुतिसहशची लखि तहँ पद्मएक बिशा-
ल। पैठि देखो इन्द्रको तहँ भेदि ताको नाल ॥ धरे तनु तन
इन्द्रको लखि पूर्बकर्म बखानि । शची बर्णन करन लागी पाय
पति सुखदानि॥ सुनत सुस्तुति इन्द्रबोले शचीसों इमिबैन ।
जानि कैसे इहांआई कौनबिधि छबिऐन॥ इन्द्रसों वृत्तांत सि-
गरो नहुषको हो जौन। शची सकरुण कहो सिगरो आदिहीते
तौन ॥ कालको हम नियम कीन्हों तास दुर्मति जोहि । जौन
रक्षण करहुगे प्रभु बश्य करिहै मोहि॥ यहि हेतुआई शक्रतुम
पहँ कहत तुमसों तौन। बेगिमारहु क्रूरकर्म्मा नहुष पातकभौ-
न ॥ आपु आत्मा प्रगटकीजै दैत्यहा मघवान । तेजको फिरि
धरहु कीजै अमरराज्य महान ॥ शल्यउवाच॥ शचीसों यहिभांति
सुनिकै इन्द्र बोले बैन। नहीं बिक्रम समय अबहीं नहुष अति
बलऐन॥ ऋषिन ताको कियो बर्द्धित हव्यको करिदान । नीति
तुमसों कहत हमसो करहु तुम सबिधान॥ गुप्त ताको राखिहौ
नहिं प्रगट कीजो तौन ॥ नहुषसो यहिभांति कहिहौ रहसमें
करिगौन ॥ जगतपति ऋषियान पै चढ़ि आइये ममपास । ब-
चन यह सुनि मानिहै तब महा दुर्मति रास॥ शची सुनि मघ-
वान सों यहिभांतिके बर बैन । अस्तु कहिकै बेगि आई नहुष
तहँ बलऐन ॥ शचीको लखि नहुषबोलो कहहु सुन्दरिजौन ।
सत्यभाषत शचीतो प्रिय करैंगे हम तौन॥ इंद्राण्युवाच ॥ नियम
कीन्हों कालको सो निकट पहुंचो आय। कहौसो प्रभु कीजिये
मम होहुपति सुखदाय ॥ अश्व गजरथ रहो बाहन इन्द्रके ब-
शवान। तुम्हैं देखो चहति आवन चढ़ि अपूरब यान ॥ है न
वाहन सुरासुरके यह सुनो सुरराय । बहैं शिविका रावरी सब
ऋषिनके समुदाय ॥ तुम्हैं देखोचहति ऐसो यानपै हम बीर ।

होत सन्मुख हरत सबको तेज तुम गंभीर ॥ शल्यउवाच ॥ श
को सुनि बचन बोले नहुष कुमति महान ॥ नहुषउवाच ॥
अपूरब जानि हमको रुचो सुनि सुखदान ॥ करेंगे हम कह
हो तुम जौन सुंदरि बैन । सप्तऋषि ब्रह्मर्षि मोको बहैंगे
ऐन ॥ लखहु मम माहात्म्यको यह बिभव तुम सुखदान
शल्यउवाच ॥ नहुष यहिबिधि शचीसोंकहि बिदाकरि सनमान
चढ़ो आपु बिमान पै करि युक्त ऋषि तपधाम । दुष्ट आ
भरोमद ऐश्वर्य के बशकाम ॥ नहुषसों ह्वै बिदाआई श
सुर गुरुभौन । कहो रहिगो समय तनुकिय नहुषसों हमजौन
बेगि ढूंढ़हु शक्रको करिकृपा मोपर नाथ । कियो सो स्वीक
सुरगुरु कृपाकर नरनाथ ॥ करौ भयनहिं नहुषसों तुमश
आयेकाल । कियो बाहनऋषिनको यह नष्टहोतउताल ॥
ष नाशक इष्टिको हम करतहैं छबिधाम । इन्द्रको हमक्षिप्रल
वत लखहुगी अभिराम ॥ अग्निको प्रज्वलितकरि गुरुसमि
हव्यअनूप । होमकरि कै कहो ढूंढ़हु हैं कहां सुरभूप ॥ कु
कढ़ि स्त्री स्वरूपी अग्नि श्रीभगवान । प्रगट देखत वृहस
के भये अन्तर्द्धान ॥ दशौदिशि बनअद्रि नभ भू नागलो
भीर । ढूंढ़ि आये कहो गुरुसों अग्नि एक न नीर ॥ अग्निरुवा
नहिं वृहस्पति इन्द्रको हम कहूंदेखो रूप । सकै पैठि न सलि
में हम ढूंढ़िबे सुरभूप ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सुरनके मुखअग्निहौ
सर्व व्यापक गूढ़ । एकहौ तुम त्रिबिध तुमको कहत जे
रूढ़ ॥ तुम्हैं छोड़त जगतको सबहोत हुतभुक नाश । तुम
जिकै ब्रह्मगतिको लहतद्विज मतिराश ॥ आत्मयोनि बि
अपको तजो शंका जौन । करैंगे हम तुम्हैं बर्द्धित करहु
गौन ॥ अग्नि संस्तुत वृहस्पति सों कहे ऐसे बैन । देहिंगे
तुम्हैं शक्र देखाय हे तपऐन ॥ शल्यउवाच ॥ अग्नि पैठे अ
आदिकजहांलोंजलरास । जायपैठेतौनसरमेंइन्द्र जहँहतत्रा





कमलनालन मध्य पैठे हव्यभुक भगवान । लखो तहँ बिसमध्य
तिष्ठित सूक्ष्म तनु मघवान ॥ वृहस्पतिसों कहो हुतभुक तूर्ण
तहँते आय । ब्रह्मर्षि सुर गन्धर्ब्ब सह गुरुतहां देखो जाय ॥
पूर्बकृत कहि इन्द्रको सब दनुजनाशक जौन । शक्रसों इमिक-
हन लागे सुऋषि सुरगण तौन ॥ उठहु रक्षणकरहु त्रिभुवन
जगतपति मघवान । प्रजापावतिमहतपीड़ा धरहुरूप महान ॥
सुरन के मुख सुनत सुस्तव शक्रपायो वृद्धि । धरेपूरुबरूपअपनो
सबलसिद्धि समृद्धि ॥ दोहा ॥ इन्द्र वृहस्पतिसों कहो कहा शेष
तवकाम । हम त्रिशिरावृत्रहि हनो रणदुर्मद बलधाम ॥ बृहस्प-
तिरुवाच ॥ मनुज नहुषसुर ऋषिनको कियो ग्रहण तपतेज । तव
पद लहि हमको करत बाधाभरोमजेज ॥ इन्द्रउवाच ॥ रोला ॥ न-
हुष मानुष लहो कैसे देवतनको राज ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ तुम्हैं बि-
न भयभरे सुरऋषि सकल पितृसमाज ॥ नहुषसों चलिकहो
रक्षहु स्वर्गलोकअनूप ॥ नहुषउवाच ॥ तुम्हैं रक्षण योग्य शक्तिन
हमैंहैहमभूप ॥ देहुजो तपशक्ति हमको सकल सुरऋषिवृन्द ।
सुनतदे तपतेज ताको कियो सुरऋषि इन्द्र ॥ लोकयको लहि
राज्य कीन्हों ऋषिन बाहक जान । तेजहर चष तासताहि न
लखोतुम मघवान ॥ रहतसुरगण गूढ़तासों तेजहर अनुमानि ॥
शल्यउवाच ॥ तहां तबदिगपाल आये प्रगट सुरपतिजानि ॥ देखि
सब दिगपाल सुरपति भरे आनँद चेत । कुशल कहिफिरिति-
न्हैं पठयो भेद करिबे हेत ॥ शक्रसों दिगपाल बोलेघोर नहुष
महान । तेजहर है दृष्टि ताकी घोरसदृश अमान ॥ डरतहैंहम
जात तापै सुनहु हे मघवान । सकत करि न सहाय याते रावरी
सुखदान ॥ इन्द्र सों तब कहन लागे अग्नि ऐसे बैन । देहुहम
को भाग करिहैं हम सहाय सचैन ॥ इन्द्र बोले अग्निसों मम
तुल्य तुमकोभाग । देहिंगे सुर मनुज तुमकोकरहिंगे जोयाग ॥
शल्यउवाच ॥ इन्द्र कहि यहिभांति मनमें कियो फेरि बिचार । ब-

रुण यम धनपालको दिय यथा स्थित अधिकार ॥ इन्द्र का
बिचार हे जहँ लोक पालन पास । नहुष दुर्मति घोरको के
भांति कीजै नास ॥ तहां आवत लखो कुम्भज महामुनि त
धाम । होय अर्चित इन्द्रसों मुनि कहे बचन ललाम ॥ भा
ते तुमहनो त्रिशिरा वृत्रको मघवान । भाग्यते सुरलोकते
नष्ट नहुषमहान ॥ पाय पूजित महामुनि सों लगे बूझनश
स्वर्गते भोनष्ट कैसे नहुष दुर्मति बक्र ॥ अगस्त्युबाच ॥ नहुष जै
स्वर्गते भोभ्रष्ट दुर्मति भौन । इन्द्र तुमसों कहतहैं हम सबि
सुनियेतौन ॥ बहतहे ब्रह्मर्षि अरु देवर्षि नहुषहि जौन । ध
तिन कछुताहि बूझो भरे अतिश्रम गौन ॥ नहुषकछु दै ति
उत्तर भरो दुर्मति दर्प । परसिमूर्द्धा चरणसों मम कहन ला
सर्प ॥ छुवत मूर्द्धा चरणसों मम तेजहत भो दुष्ट । शापता
दियो हमयह क्रोधको करिपुष्ट ॥ चरण सों मम छुयोमूर्द्धा
षिनको करिजान । सर्प ह्वै कै रहोक्षितिपर अयुत वर्ष प्रमान
अयुत बर्ष ब्यतीत करिकै स्वर्गमें फिरि बास । करहुगे तुम
हहुगे जब धर्म नृपको पास ॥ नहुष ऐसे स्वर्गतेभो नष्ट दुर्म
धाम । भये तुम मघवान बर्द्धित भाग्यसों अभिराम ॥ देवग
गन्धर्ब्ब किन्नर यक्ष ऋषिनर नाग । आय सुस्तव करनल
इन्द्रको भरि भाग ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिइन्द्रबिजयनहुषभ्रंशबर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

शल्यउबाच ॥ दोहा ॥ गन्धर्बनते स्तुति सुनि अप्सरानसों
न । चढ़ि ऐरावतपर चले सुरपुरको मघवान ॥ अग्नि वृह
ति देवऋषि सकल ब्रह्मऋषि साथ । भरे मोद सुरगणसक
हर्षित सब दिगनाथ ॥ तहां वृहस्पति जायकै सुरपति को
बिबेक । आथर्बणके मंत्रसों फेरि कियो अभिषेक ॥ सुरगुरु
सुरराज यह दीन्होंबर अभिराम । तुम्हैं अथर्बण अंगिरस
कहिहैं तपधाम ॥ हे गुरु अबमिलिहहिं तुम्हैं सर्ब यज्ञमें भा





बिदा कियो दिगपाल तब इन्द्र सहित अनुराग ॥ शचीसहित
पालनलगे आनँद भरे त्रिलोक । मनुजनाग किन्नरअमरसि-
गरे भये बिशोक ॥ इन्द्राणी सह इन्द्रज्यों लहो कष्ट अतिरूप ।
त्यों कृष्णासह गुप्त अब तुमहूं पायो भूप ॥ राज्यहि ऐसे लहो-
गे तुमहूं शत्रु सँहारि । ज्यों त्रिभुवन सुरपति लियो वृत्रासुरको
मारि ॥ नष्ट होहिंगे दुष्ट तव नहुषयथा नृपधर्म । उपाख्यान
याते कहो यह हम तुमसों पर्म ॥ उपाख्यान यह धर्मनृप इन्द्र
बिजय फलचारि । देतसुनायो तुम्हैं हमयह निश्चय निरधारि ॥
कुरुनृपके अपराधते जे क्षत्री नृपउद्ध । नाश लहैंगे सकलकरि
भीमार्जुन सों युद्ध ॥ इन्द्र बिजयो पाख्यान यह पाठकरै नर
जौन । मुक्त पापते होयकै स्वर्ग लहैगोतौन ॥ मिटै बिपत्ति स-
पुत्र ह्वै लहै न शत्रुज भीति । दीर्घ आयु ह्वै कै लहै अरिसों रण
में जीति ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ उपाख्यान यहशल्यसों सुनिकै भूप-
ति धर्म । पूजनकीन्हों शल्यको बिबिध भांति सों पर्म ॥ पूजन
करिकै धर्मनृप बोले बचन स्पष्ट । होय सारथी कर्णको तेजकी-
जियो नष्ट ॥ शल्यउबाच ॥ करिहैं हम नृपधर्म सो आपु कहत हौ
जौन । और जो बांछित होय तव नियत करैंगेतौन ॥ बैशम्पाय-
नउबाच ॥ बिदा होय नृपधर्म सों सबल शल्य मतिरास । गये
सुहास्तिननगर को दुर्योधन के पास ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिइन्द्रबिजयोपाख्यानबर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ जयकरी ॥ सात्वतबंशभूपयुयुधान । चतुरंगिनि
सेना अतिमान ॥ नाना आयुध धारीबीर । सुभट धीर बलधरे
गँभीर ॥ एक लये अक्षौहिणि साथ । आयोजहां धर्म्म नृपना-
थ ॥ कियो प्रवेश सैनमें आय । जैसे नदी सिन्धुमेंजाय ॥ चे-
दिराज अक्षौहिणि एक । सैन लये बलभरो बिबेक ॥ धृष्टकेतु
भूपति बलरास । गयो युधिष्ठिर भूपतिपास ॥ जयत्सेनमगधा-
धिपभूप । जरासिन्धुको सुत अनुरूप ॥ एकलये अक्षौहिणि

साथ । आयो जहँ पांडव कुरुनाथ ॥ पांड्यनृपति लीन्हेबहुसैं
सागर तटबासी बलऐन ॥ आई द्रुपदसैन अतिमान । चतु
गिनि भटबीरमहान ॥ आयेद्रुपदपुत्र अतिशूर । भरेहर्षआ
रथबल पूर ॥ भूपबिराट मत्स्यपति जौन । लये पार्बती नृप
तौन ॥ आये धर्म्मनृपति के पास । सैन समूहलये बलरास
यतने भूप धर्मनृप संग । शोभित भये भरे रणरंग ॥ सप्ता
हिणिसेना सर्ब । धर्म नृपति के जुरीअखर्ब ॥ आये भूप सु
धन पास । ते अब कहत सुनहु मतिरास ॥ एकलये अक्षौहि
सैन । नृप भगदत्त महाबलऐन ॥ भूरिश्रवा शल्य क्षितिपा
महाबीर सँग सैन बिशाल ॥ एकएक अक्षौहिणिसैन । च
गिनि भटबर बलऐन ॥ कृत बर्माभोजादिक साथ । आयो
कौरवकुल नाथ ॥ सैनएक अक्षौहिणिसंग । सुभट समूह
रणरंग ॥ नृप सौबीर सिंधुकेजौन । जयद्रथके सँगआयेतौ
सैनएक अक्षौहिणि सर्ब । भूमि कँपावत गिरिन अखर्ब ॥
काम्बोजदक्षिणी जौन । यवन भूप के जेबल भौन ॥ सैन
अक्षौहिणि तास । आई दुर्योधन के पास ॥ माहिष्मतीपुरी
भूप। नीलनामआयुधअनुरूप ॥ सैनएकअक्षौहिणिसंग।अ
सोधारेरणरंग ॥ दक्षिणपथके भूपअनेक। आयेबीरएकतेए
पुरीअवन्तीके भूपाल । अक्षौहिणि द्वैलये बिशाल ॥ आये
सुयोधन पास । ध्वजिनी महाभयङ्कर जास ॥ भूपबिन्दु अ
बिन्दु सुनाम । तिनके यश भूमें अतिमाम ॥ कैकेय नृपसो
र्य्य सुपंच । अक्षौहिणि एक लिये ससंच ॥ आयेभूप सुयो
पास । हर्षितभये देखिभटजास ॥ और रहे लघुबर नृपजौ
दुर्योधन पहँ आये तौन ॥ एकादश अक्षौहिणि सैन । भई
योधन के बलऐन ॥ चहैं पांडवनसों तेयुद्ध। रहे किये हारि
पुररुद्ध॥ कुरुजांगलपंजाबसुदेश। मरुरोहितकारण्यसुवेश॥
लकूट अहिक्षत्रस्थान। गंगायमुनातीर अमान ॥ गिरिबनभू





नहांबिस्तार। तहँतहँसेनापरीउदार ॥ बहुधनधान्यभरीसबसैन।
भट समूहमहाबलऐन ॥ द्रुपदपुरोहितदेखततौन। कियोसुयो-
धन नृपपहँ गौन ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ राजा ॥ सपुरोहित गयेजहँ
धृतराष्ट्रहे भूपाल। बिदुर भीषम भूपसों सत्कार पायबिशाल ॥
बूझिकुशल सुप्रश्न पहिले परस्पर मतिऐन । सभासदन म-
ध्यार प्रोहित कहनलागो बैन ॥ पुरोहितउबाच ॥ राजधर्म सोबिदित
तुमको है सनातनजौन । लहो उत्तर चहत याते तुम्हें बूझत
तौन ॥ धृतराष्ट्र पांडुसुपुत्र दोऊ एकके मतिमान। पिताकोधन
पाइबेको दोऊ योग्य समान ॥ पिताकोधन लहोसुत धृतराष्ट्र
के हैं जौन। पांडुकेसुत नहींपावत कहोकारणकौन ॥ लियो जो
कृतपूर्बकरि सो बिदित तुमको सर्ब। देतहैं धृतराष्ट्रकेसुत पितृ
धन न अखर्ब ॥ प्राणहारक नृपसुयोधन किये बहुत उपाय।
पांडुके सुत मरेनाहिं आयुष्यको बलपाय ॥ पांडवन फिरि कियो
बर्द्धित राज्य बलते जौन। छल सुकरिकै लिये सुयोधन सहित
सौबल तौन ॥ नियम करिकै दियसुयोधन जौनबनकोबास ।
बर्षतेरहसो बितायो पांडवन दुखरास ॥ क्लेशपायो सभामें तिन
बिपिनमें बसिजौन। लहो दारुण कष्टबास बिराटके करिभौन ॥
तौन पीछे राखिकिल्बिष पूर्बकृत गम्भीर। सामतुमसोंकियोचा-
हत पांडुसुत बरबीर ॥ पांडवनके अरुसुयोधनके चरित्रसमान।
सुहृदशिक्षा करौनृप धृतराष्ट्रको सुखदान॥ पांडवनको करि न
बिग्रह सकैंगे तवबीर। लोककेर बिनाशचाहत पार्थस्वधन गँ-
भीर॥ हेतुबिग्रह कोसुयोधन कियोकारजजौन। नहींते बलवान
मानत हेत बिग्रहतौन ॥ सप्तअक्षौहिणि जुरीहै धर्मनृपकेसैन ।
युद्धचाहत कुरुनसो ते महाबलके ऐन॥ नकुलअरुसहदेव सा-
त्यकि भीमसेन अमान। एक दिशि सबचमू अर्जुन एक दिशि
बलवान ॥ यथाअर्जुन तथाहैं श्रीकृष्ण बुद्धिगँभीर। बुद्धि बि-
क्रमजानि तिनसों लरैगोको बीर ॥ बुद्धिसमय बिचारि तुमको

होय दीबेजौन। नहींकाल बिताइये अबबेगि दीजै तौन॥ वै
म्पायनउबाच॥ सुनि पुरोहितके बचन ते बहुतभांति सराहि। कु
ष्मलागे कहनतासों सुमतिको अवगाहि॥ भाग्यतेते कुशल
श्रीकृष्ण सहितउदार। भाग्यते सहसैनक्कै चहत धर्माचा
भाग्यबशते सन्धिचाहत भाग्य बशते युद्ध। कहतहौ तुमस
है सोबिप्रबर मतिउद्ध॥ ब्रह्मतेजस भरेबोलत बिप्रतीक्ष्णएवै
इहांबनमें भये क्लेशित सत्यतेबलऐन॥ लहैं पांडव पिताको
धर्मते सतशुद्ध। जिष्णु अतिरथ महाबलसों सकैको करियु
है कृतास्त्र सुबज्रधरसों और धनुधर कौन। करै अर्जुन स
रणमें द्वन्दयुद्धहि जौन॥ भीष्मके सुनि बचन ऐसे लखि सु
धन ओर। कर्णबोले बचनदुर्मति क्रोधकरिकै घोर॥ बिदि
सब जगतजनको कहत तुम द्विज जौन। कहेका पुनरुक्ति नि
फिरिप्रगट बार्त्तातौन॥ शकुनिजीतोद्यूतमें दुर्योधनार्थक स
कृपा करिकै काढ़िदीन्हें जानि बनकोखर्ब॥ सोनिबन्ध बित
मांगत राज्य पैतृकजौन। द्रुपदमत्स्यसहायलहि बशमूर्खत
तौन॥ चतुर्थांश न देहिंगे भयते सुयोधन भूप। कौरवाधिप
बिधिसब देय भूमि अनूप॥ चहत पैतृक भागपांडव बर्षते
जाय। बासकरिबन दीनक्कै फेरि मांगोआय॥ छोड़िदेहिं
धर्मकी मतिमूर्खताबशजौन। युद्ध करिकै समुझिहैं यह कह
हमतौन॥ भीष्मउबाच॥ पार्थके रणकर्मकोगो भूलिका असम
एकरथसों हारिआये षटरथी तुमकर्ण॥ बहुतजियबे चहत
तबकर्म देखौसर्ब। मानिहौ नहिंबिप्रको जोवचन पथ्यअख
युद्धमें बधहोयतौ तुम मरहुगे मुखधूरि॥ बैशम्पायनउबाच॥ भी
के सुनिबचन करि धृतराष्ट्र आदर भूरि॥ भीष्मके ये बचन
को परमहित सुखदान। जगतहितहित पांडवनको नीति म
अतिमान॥ बहुत भर्त्सन कर्णको करि कहैं ऐसे बैन। मंत्रक
संजय पठावहु पार्थपै मतिऐन॥ सभामें बोलवाय संजय





योतब भूप। बहुत आदर सहितबोले बचनउचित अनूप॥
धृतराष्ट्रउबाच॥ जाहुसंजय सभाजेता पांडवनके पास। शान्तिजैसे
लहै पांडव कहेहुसो मतिरास॥ क्षुत् पिपासा क्लेश बर्द्धित क्रोध
तिनको जौन। धैर्य्यते अरु बुद्धिते सब शमितकीजो तौन॥
युद्धकर्णहिमिलि सुयोधन पापकरि सम्पन्न। प्रियमहात्मा पां-
डवनको क्रोधकिय उत्पन्न॥ आरंभ बीर्य्य प्रसंग में हतबीर्य्य
ममसुत जौन। मूर्खताते धर्मको धनलियोहि जानततौन॥ भाग
ताको हरोचाहत कृष्णजासु सहाय। जिष्णु माद्रीतनय सात्व-
कि भीमअतिबलकाय॥ भागताको साधु देनो युद्ध पूर्वसुजा-
।जिष्णुकेशर सहैक्षितिपर कौनहै बलधाम॥ जिष्णुके सब
साथदोऊ लोकपति बलभौन। रहैतिनके सामुहे रणभूमिमें
नृपकौन॥ मेघलांशरवृन्द बरषत शलभसंग समान। जिष्णु
चारों दिशनके नृपजीतिहै बलवान॥ सुरनसह सुरराजजीतो
कियो खांडवदाह। कियो पावकतृप्ततासों लरैको नरनाह॥
गदाधरको भीमके सम युद्धमें बलवान। महा रथ सम जिष्णु
कहैं समर सिंहसमान॥ अस्त्रशीक्षित बैरकृत अति तेज पुंज
उदार। दहैंगे ममसुतनको सुतपांडुके बलभार॥ जयकरी॥ सदा
अमर्षीअतिबलवान। जिन्हें न जीतिसकै मघवान॥ शीघ्रहस्त
अतिशूर अखेद। पढ़े जिष्णुसों सब धनुवेद॥ माद्रीसुतअरि
बिहग शचान। जीतनयोग्य समर अतिमान॥ तिनकेमध्य
महारणधीर। धृष्टद्युम्न अतिरथ बरबीर॥ सोमक श्रेष्ठद्रुपद
नृपजौन। आत्मा तिन्हें समर्पैतौन॥ रणकोबिद प्रद्युम्नसमान।
तेनसंगसो सात्वकि बलवान॥ जीतैं धर्मनृपतिकोकौन। जासु
सहाय कृष्ण बलभौन॥ नृप बिराट मत्स्याधिप बीर। जासु
सहाय महा रणधीर॥ पुत्रन सहित सबल धनमान। भक्त धर्म
नृपको सुखदान॥ नृपकैकेय बंधुशरसंग। तासु सहाय चहत
रणरंग॥ भूपसहायक तिनके जौन। भरेभक्तिसों सुनियततौन॥

गिरि दुर्गाश्रयकैनृपसर्व । आयेधारियुद्धकोगर्व ॥ म्लेच्छज
नानायुधधारि । आयेतास सहायकिचारि ॥ पांड्यभूप रण
संमान । सुभटवृन्दलीन्हेंबलवान ॥ धर्मनृपतिकी चाहिसहा
सुनियतमिलो सबलसोआय ॥ चेदिनृपतिकारुषकोसंग।अ
लियेभरेरणरंग ॥ तपतसूरसो चेदिनरेश । संगलिये भट
अशेश ॥ महाबलीभूपतिशिशुपाल । ताहिहनेजोक्रुद्धितका
जिष्णुसारथी सुनियततौन । भयोकृष्णकेशवबलभौन ॥
रथस्थभयेदोउबीर । सुनिकांपतममहृदयगँभीर ॥ रणनच
ममति तिनसंग । ममसुतकुमति चहतकृतभंग ॥ हमअ
को शक्रसमान । जानत कृष्णाबिष्णु नाहिं आन ॥ छलकरि
सुयोधन ताहि । शान्त सुभाव पाण्डवहि चाहि ॥ क्रोधकौं
पाण्डवसर्ब । कुरुकुल जारैंतौ सुअखर्ब ॥ मेटिक्रोधको का
सर्ब । संजय सम्मतमोहिं अखर्ब ॥ संजय बेगमान रथजौं
तापहँ चढ़िकै कीजै गौन ॥ द्रुपद सैनमहँ किहेहुनिदेश।
सुजोहम करत निनेश ॥ बूझेहुकुशल धर्मनृप पास । मम
शिते फिरि फिरि मतिरास ॥ महा भाग बलबीरजधाम।
देवको लहि अभिराम ॥ कुशल प्रश्नबूझेहु मतिरास। अ
कारक पाण्डव जास ॥ मम दिशिते लहियो मतिधाम।प
सुतनते चाहत साम ॥ पाण्डव कृष्ण सहितयुयुधान।पु
पदी के बलवान ॥ संजय पायतिन्हैं एकठौर । कुशलप्रश्न
जोमतिभौर ॥ बचनसोइ कहियोमतिउद्ध । हरैक्रोधजो क
युद्ध ॥ वैशम्पायनउबाच ॥ सुनिधृतराष्ट्रभूपकेबैन । संजयचलो
मतिऐन॥ कृष्णसहितपाण्डवनृपधर्म । तिन्हैंचाहिवैचाहत
भ्रातन्हसहितयुधिष्ठिरभूप । जहँहैंगयोतहांसुखरूप॥ धर्मनृ
सों सहित प्रणाम। बोलो सूतपुत्र मतिधाम ॥ भूप अभि
को सुतवृद्ध। बोलो तब कुशलाति समृद्ध ॥ कुशलभीम अ
बलधाम। माद्रीतनय कुशल अभिराम ॥ राजसुता पतिब्र





ऐन। भूप कुशल कृष्णा सहचैन ॥ कृष्णाके सुतपञ्च सुजान ।
तेहैं कुशल भूपबलवान ॥ युधिष्ठिरउबाच ॥ संजयभो आगम तव
पर्म। देखि तुम्हैंभो पुलकित मर्म ॥ संजय कुशल सहित परि-
वार। हैंहम बन्धुन सहितउदार ॥ भारतबंश कुशलबहुकाल ।
बीतेतुम सो सुनो बिशाल ॥ तुमसो कुशल बृद्धसुनि भूप। भ-
यो हमैं दर्शन अनुरूप ॥ स्थविर पितामह भीष्म सुजान। कु-
शल यथास्थित हैं मतिमान ॥ है बाह्लीक कुशलसोपर्म। सोम-
दत्त सहपुत्र सधर्म ॥ भूरिश्रवा ससुत गुरुद्रौन । कुशल कृपा-
चारय मतिभौन ॥ है कुरुकुल सब कुशल उदार। तिन्हैं कहत
धनुधर संसार ॥ कुशल युयुत्सुकर्ण कृतदन्त । कुशल सुयोधन
है मतिमन्द ॥ वृद्धराज पत्नीहै जौन । ऋषिन सहित कुशली
है तौन ॥ बधूपुत्र भगिनी सुतसर्ब। हैं द्रौहित्र कुशल सोसर्ब ॥
बिप्र जीविका पूरब जौन। देत यथा स्थित भूपति तौन ॥ जे
ममदत्त द्विजनको ग्राम । लेत नतौ ताको नृपदाम ॥ ब्रह्मवृत्ति
परलोक प्रकाश । करति भूमिपर यश मतिराश ॥ ब्रह्मवृत्तिमें
कीन्हें लोभ । होतनाश दुहुँदिशिते क्षोभ ॥ आमात्यन्हको पा-
लत भूप। पुत्रनसह संजय अनुरूप॥ सबकौरव मिलिकै भरि
रोष। कहत नहीं तौ पाण्डव दोष ॥ ससुतद्रोण गौतम कृप
बीर। कहत नतौ मम दोष गँभीर ॥ धुनि गाण्डीव धनुषकी
जौन। करत न तौ सुधिकै तब तौन ॥ अर्जुनसम धनुधररण-
धीर। हमन धरापर देखतबीर ॥ गदापाणि नहिं भीमसमान ।
समधरणी परदेखो आन ॥ माद्रीसुत सहदेव सुजान । जेहि
कलिंग जीतोबलवान ॥ नकुल प्रतीची दिशिकेभूप । संजय
जिहिजीतेअतिरूप ॥ तेइनकीसुधि करतनधूत । महाबलीमाद्री
के पूत ॥ द्वैतबिपिनमें यात्राघोष । कियोसुयोधन जोकरिरोष ॥
पायोतहांपराभवजौन । संजयकहोकरत सुधितौन॥ संजयउबाच ॥
तौनकहौ तुम भूपतिधर्म । हमसोतौनसत्य सबपर्म॥हैंधृतराष्ट्र

साधुमति भूप। कुमति सुयोधन पापस्वरूप॥ करतशोच धृ
राष्ट्र नरेश । तुमप्रति भूपति धर्म हमेश ॥ हे नरदेव तिह
युद्ध । समरसिंह अर्जुनको क्रुद्ध ॥ भीमसेनको गदा प्रहा
स्मरण करत धृतराष्ट्र उदार ॥ माद्रीसुत रणमें चहुँओर।
र्षत बाणमहाबलघोर ॥ स्मरण करत तिनको कुरुभूप । सु
धर्म भूपति अनुरूप ॥ भोग्य भविष्य अदृश्य सुतौन । ता
न कोउ जानत मतिभौन ॥ तुम सबभांतिन धर्मासन्न। तिन
क्लेशमहत उपपन्न ॥ जेधृतराष्ट्र कहेहैं बैन । तुमसों कहिबे
मतिऐन ॥ संजय पांडव और सुभूप। आयेहैं तुमपहँ अति
प ॥ तिनसह बैठहु भूपति धर्म। सभामाहँ थिरमति करिपर्म
नृपधृतराष्ट्र कहो है जौन। हमसो कहिबे कहिहैं तौन ॥ युधि
उवाच ॥ संजय पाण्डवसह यदुबीर। नृपति बिराट महारणधी
सभामाहँ बैठे सब आय। संजय कहहु तौन सतभाय ॥ जेधृ
राष्ट्र कहे हैं बैन । तुमसो नीति निपुण मतिऐन ॥ संजयउवा
सहित कृष्ण पाण्डव रणधीर । द्रुपद बिराट सपुत्र गँभी
चेकितान युयुधान समेत । कृष्णासह सबसुनो सचेत ॥ सु
कहे धृतराष्ट्र जेबैन । तेहम कहत कुशलके ऐन ॥ चहत स
कुरु कुलपति वृद्ध। पठयो यातेमोहिं समृद्ध ॥ नृपधृतराष्ट्र
जेबैन। तुम्हैं रुचौसह सामसचैन ॥ भरेसर्बगुण पाण्डवबी
दायाधर्म समुद्र गँभीर ॥ हिंसामति नहिं तुममें पर्म । सेन
भयकर नृपधर्म ॥ दोहा ॥ तुममें किल्विष होततौ होत प्रगट
छपात । परेशुभ्रपटमें यथाअंजनबिन्दु लखात ॥ सर्बक्षयज
उदय पापनिरामयजौन। कौन करत है कर्मसो अजयतुल्य
तौन ॥ ज्ञाति प्रजापालन करत बन्धुबर्ग सहमित्र । धन्य
सो जगतमें दुहुँदिशि करत पबित्र ॥ निन्दित ह्वैके जियत
सोहै मृतकसमान। गन्धर्बनते राखितुम लियो सुयोधन प्रा
कोतुमको केशव सहित जीतिसकै नृपधर्म। चेकितान मल





द्रुपद सात्वकि रक्षकपर्म ॥ सुरन सहित सुरराज नहिं तुमसों
जीतैंयुद्ध। भीमार्जुन माद्रीतनय भयेसमरमें क्रुद्ध ॥ भीष्म द्रोण
कृप शल्यनृप द्रोणतनय बलभौन। कर्णजासु रक्षकप्रबल ताको
जेताकौन ॥ महाचमू धृतराष्ट्रकी कौन मारिहै भूप। चहुँदिशिके
आये नृपति महाबली रणरूप ॥ हमैं जयाजयमें नियत अश्रे-
यस अतिआधि । नीचकरत हैं कर्मको धर्म अर्थको बाधि ॥
बासुदेव पाञ्चालको करिहम बिनय प्रणाम । बूझत संजय
कुरुनको कैसे कुशल ललाम । आंबिकेय ऐसेकह्यो कृष्णपार्थ
मतिमान। कह्यो न मानैसो नहीं कहौं देहि तौ प्रान ॥ भीष्म
भूप धृतराष्ट्रको सम्मत शान्तिन और । तातेकीजै शान्तिको
धर्मनृपति शिरमौर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ युद्धाकांक्षी कौनसो संजय
यह तुमबैन। कहत हमैं जो सुनहु सो तुमहौ मतिकेऐन ॥ बिना
युद्धलहि अर्थको युद्ध चहैगो कौन । बिना कियेही सिद्धितौ
करिये कर्म न तौन ॥ बिदित करत हम कर्म नहिं जैसे लघु
जनजौन। पार्थ करत हैं कर्मको जगतपथ्य मतिभौन ॥ जिहि
सुखमें है उदयधर्मको चहतपार्थ सब ताहि। यहसुनि कह्योयुद्ध
क्यों चाहत तुम ऐसे अवगाहि ॥ तौसुनु दुखके नाशको सुख
पावनके हेत । कर्मकरत हैं सर्बही गहि निजधर्म सचेत ॥ बि-
षयध्यान बहुपाप करतजे बिषयको ध्यान । सुख पावत सब
भांतिसो जेनरबर मतिमान ॥ विषय बासना घटति नहिं लहि
बहु बिषय बिकार। यथापाइइन्धन बहुत पावक बढ़तउदार ॥
काम अर्थलहि बहुलहुन तृप्तभये कुरुभूप । हमैं राज्य बाहर
कियो चहिसबस्व अनूप ॥ महाबिपिनके बीचमें लहिनिदाघ
मध्यान। चहत कुशल दावाग्निसो निद्राबश्य अयान ॥ संजय
नृप धृतराष्ट्र लहि कैऐश्वर्य महान। सुतमंत्री दुर्मतिलहे भाषत
दीन समान॥ निदरि बिदुरके परम हित कहेजे नीति निदेश।
सुतप्रिय किय धृतराष्ट्रनृप अधरम माहँ प्रवेश ॥ मूढ़ अनीति

अधर्ममय कामी कुमति कुकर्म। तासुतको प्रियकरि कियो नृ
धृतराष्ट्र अधर्म ॥ बिदुर बचन मानोनजब भोकुरुकष्टअपार
जबलों मानो बढ़तगो तबलों राज्य उदार ॥ लोभी दुर्योध
नृपति मंत्री दुर्मति भौन । सूत सुवनअरु शकुनि अरु ख
दुःशासन तौन.॥ देखिपरत हमको नहीं कुरु संजय कल्यान
पराधीन धृतराष्ट्रनृप बिदुर अमान्य सुजान॥ जबहम बन
गये तब जान्यो तिन निजसर्ब । सो गुणिकै किहिभांति ह
धारैंशांति अखर्ब ॥ जानत रणमें जीतिहैं अर्जुनको सुतसूत
अबहीं लगिगो ग्रहणमें बचो भागिकै धूत ॥ भीष्मद्रोण अ
कर्ण सुयोधनअरुकुरुबंशी और । जानतयह अर्जुनसम दूजो
न सुभटशिरमौर ॥ जानत कौरव नृपतिजे आये सहितसमाज
बिद्यमानअर्जुनलहो यथासुयोधनराज॥जबलोंनहिं गांडीवके
सुनत सुयोधनराव । भीमयुद्ध नहिं लखतहैं तबलों राज सु
चाव ॥ इन्द्रन मम ऐश्वर्यहर जियत वृकोदरबीर । जिष्णु न
कुल सहदेव सह महाबली रणधीर ॥ जौनबुद्धि यह धरैंगेसु
तन सहित कुरुभूप । तौ बाणानल दग्धह्वै धरिहैंनाशस्वरूप
पूर्ब हमारो क्लेश तुम जानत संजय सर्ब । कीन्हों लाक्षासदन
तिनजो कर्म अखर्ब ॥ भूलि तौनकृत सबगहैं अबहूंशांतिअ
नूप । इन्द्रप्रस्थको राज्यजो देय सुयोधन भूप ॥ संजयउवाच
धर्मन्नृपति पांडवसुतव सुनियत लखियततौन । महाकीर्त्तिनि
पाप तव जीवन पांडवजौन ॥ भाग न कौरव देहिंगे किये यु
बिन उद्ध । राज्य न तुमको श्रेयहै लीबो करिकै युद्ध ॥ जीवन
अल्पमनुष्य को महादुःखको रूप। गोत्रनाश कृतपापहै तुमको
उचित न भूप ॥ धर्म कर्म करिकै लहत रबिसो सुजन प्रताप
धर्महीन लहिकै मही दुखित होत गतिपाप ॥ ब्रह्मचर्य्य की
यज्ञ तुम दियो द्विजनकोदान । बहुत बर्ष सुखलहौगे लहिपर
लोक स्थान ॥ भोगभजो बहुकाल जेहि कियो न योगाभ्यास





बित्तहीन बशकामह्वै दुःख बसततेहि पास ॥ छोड़ि ब्रह्मचर्य्या
प्रथम जोजन करत अधर्म । तजिश्रद्धा परलोकसो तपतमूढ़
बशकर्म ॥ मन न लगायो ब्रह्ममें ह्वैकै बिमल सुजान । ताहि
ब्रह्मचर्यहत जेहैं प्रज्ञमहान ॥ होत कर्मको नाशनहिं लहतपु-
ण्यफल जन्य । करत पाप सो पापफल करता लेतन अन्य ॥
भोजन दीन्हों द्विजनको तुम सदक्षिणादान । तथा तुम्हारोज-
गतमें सुनियत सुयश महान ॥ प्रथम गये तजिराज्यकिमि त-
जिबल आत्माधीन । नित्य स्वबश हे सचिव सबजे अतिबल
मतिपीन ॥ बासुदेव युयुधान अरु मत्स्य सपुत्र नरेश। बिदित
भूपतव पासते आये अतिबल बेश ॥ महा सहाय बलस्थलहि
कृष्णार्जुन के संग । अवलोका गुणिनहिकियो कुरुपतिको मद
भंग ॥ बलबढ़ायकै शत्रु को अपनी जोरिसहाय । अबन लरहु
बीते समय बनबासि कालबिताय ॥ सुमति लरत नहिं सर्बथा
शत्रुक्षीण लहिपीन । होतिजयाजय युद्धमें सुनियतदैवाधीन ॥
धरति अधर्मन बुद्धि तव नहिं बशक्रोध अपर्म । पार्थकरतकेहि
हेत यह स्वमति बिरोधी कर्म ॥ भीष्मादिक गुरुजननको बध
अति पातक रूप। जानिपरतहै होयगो तुमसों हेकुरुभूप ॥ सो-
मदत्तकृप भीष्मगुरु शल्य सुयोधनबीर । इन्हैं मारिकै लहौगे
कल्पसों मोदगँभीर ॥ जानिपरै सो कहहु अब यामेंभूपतिधर्म ।
कुरु संजय दोऊरहैं कुशलपायसुखपर्म ॥ सागरान्त क्षितिलहे-
हुहै जरामृत्यु अनिरुद्ध । सुख दुख प्रिय अप्रिय समुझिकरहु
न भूपति युद्ध ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ संजय कहौ सुसत्यतुम श्रेष्ठधर्म
कृतकर्म । धर्माधर्म बिचार करि निन्दाहमैंसोपर्म ॥ जहांअधर्म
धर्मसोदर्शत धर्माधर्मस्वरूप । बुधजनतहांबिचारिकै धारतधर्म
अनूप ॥ धर्माधर्मचिह्नकोधारतनरबिपत्तिमेंजौन । आद्यचिह्नहै
जौनसो नित्यधर्म ह्वैतौन ॥ जीवनार्थआपदपरे करत पुरुषजो
कर्म। सो बिपत्यकृत जानिये नित्यबर्णकोधर्म ॥ त्रिभुवनकेसब

राज्यको सहित बित्त सुखदाय । संजय लियो न चहतहमक
अधर्म अन्याय ॥ धर्मेश्वर श्रुतिनीति रत बिप्रोपासित जौन
भोजबंश शिक्षा करत कृष्ण महाबलभौन ॥ सामयुद्ध दोउ
चत हमको सुनो सुकर्म । कृष्ण महायश कहो सो जोदुहुमें हि
पर्म ॥ भोजान्धक बार्ष्णेयहै सैनिक भूपति जौन । बासुदेव
बुद्धिको भजत महामति तौन ॥ तिनपर बर्षत कामसब म
मोद रसजन्य । प्रतिपालक सबजगतको बासुदेव परजन्य
निश्चयज्ञ सबकर्मके केशवअतिमति ऐन । मम प्रियहमअ
क्रमणनाहिं करिहैं तिनकेबैन ॥ बासुदेवउबाच ॥ हमचाहतसबभ
ति सों हे संजय मतिराश । पांडुसुतनको परम प्रिय भूतिसहि
अबिनाश ॥ तैसे नृप धृतराष्ट्रको सुतन सहित प्रियजौन । ह
चाहतहैं सर्बथा कियो सूत सुततौन ॥ पाण्डु सुतनसँग सा
सो दुस्तर जानोजाय । राज्यलुब्ध धृतराष्ट्र नृप क्यों न कल
सरसाय ॥ संजय रहित अधर्मते पांडवमत सहधर्म । उत्सा
पांडवन बलिको पालैंगे निजकर्म ॥ कहत कोऊ परलोक
सिद्धि कर्मते होति । हैमत काहूको नियत बिद्यासिद्धितनोति
धर्मभोज्य भोजनबिना लहततृप्तनहिंपर्म । बिद्यामान महान
देहधरेको धर्म ॥ बिद्याजनको मिलतिहै सत्यश्रमहूमाहिं । क
मिलै नहिं चहै क्यों याते राज्यहि नाहिं ॥ सिद्धि मिलीतौफै
है कहाकर्म सोकाम । जो संजयऐसे कहौप्रज्ञातनि अभिराम
तौ सुनुजो करतब्यहै होयनहीं सो पूर्ण । संन्यासाश्रम कैसक
तौगृहको तजितूर्ण ॥ अतिथिनको भोजन मिलत गृहआश्र
ही बीच । यह गुणिअरु वैगुणिचहतपारथ राज्यनिभीच ॥
हिबिद्यासो मिलतफलतासहि सुफल अहीन । कर्मदाष्टिफलपि
तजलमिटततृषाजोपीन ॥ विहितज्ञानबिधिकर्मसहकहतसक
मतिमान । मानतसाधुजे कर्मबिन ज्ञानमहतअज्ञान ॥ लह
कर्मबशदेवता बहत कर्मरतपौन । सूर्य्यचन्द्रमा कर्मबश कर





दिवस निशिगौन ॥ दहत हुताशन कर्म बश पायसमिध हुत
पर्म । धरतिभार चरअचरको भईभूमिबशकर्म ॥ बहैंनदी सब
कर्मबश हरैभूत भवप्यास । भरतकर्म बशशब्दको दिशान स-
हितआकास ॥ ब्रह्मचर्य्य बशकर्मके श्रेष्ठधरत मघवान । तजि
सुख मानस प्रियभये सूरश्रेष्ठ सुखदान ॥ ब्रह्मचर्यधरि वृह-
स्पति तजिइन्द्रिनको शर्म । याहीते सुरगुरुभये ह्वै बश कर्म
सुपर्म ॥ धर्मराज धनपालसब यक्षाप्सरगन्धर्ब । ब्रह्मचर्यकरि
कर्मबश पायोलोक अखर्ब ॥ जानतहौ सबधर्मतुम चारिबर्ण
कोपूत । काहेते तुमकरतहौ कौरवार्थ हठसूत ॥ राजसूय हय-
मेधकरि पढ़ैवेद बिदधर्म । क्षात्रिन पूजोधनुषबल देहयगजरथ
पर्म ॥ कौरवबध बिनराज्यकी प्राप्तिउपाय न आन । भीमार्जुन
केहाथसों संजयसुनो सुजान ॥ क्षात्रधर्म पालन करत पांडव
शक्तिप्रमान । क्षत्रिहिमरण स्वधर्ममें हैप्रशस्तमतिमान ॥ जो
तुमजानत युद्धमें भूपधर्म अभिराम । अथवाधर्म अयुद्धमें तौ
यहसुनु मतिधाम ॥ देखहु चारोंबर्णको धर्म बिभाग बिधान ।
कर्मपांडवनकोचितै कहेहु सुमति अनुमान ॥ पढ़ै पढ़ावै यज्ञ
सब करैकरावैजौन । देयलेयशुचिदानको बिप्रधर्ममतिभौन ॥
पालैप्रजाबिधानसों देयपात्रकोदान । द्विजनसंगपढ़िवेदबिधि
करैयज्ञसुखदान ॥ धर्मात्मासों धर्मकृत लहिकै पुण्य महान ।
क्षात्रधर्म रतजातनृप ब्रह्मलोकमतिमान ॥ गोरक्षण करिकैकृपा
संचितबिद अभिराम । द्विजनृप सेवनकरिगृही बसैबैश्य निज
धाम ॥ वेदपढ़ै नहिं मखकरै भजैबिप्रपदपर्म । सेवा क्षत्रीकी
करै नित्यशूद्रको धर्म ॥ पालनसबको नृपकरै बर्णधर्ममेंराखि ।
भूपतिसबमें वृत्तिसम धरैव्यतिक्रमनाखि ॥ चहत युधिष्ठिर
पालिबे क्षात्रधर्म निजजौन । लियोचहत परभूतिजो बिधिबि-
रोधबशजौन ॥ तासोंसंगरहोतहै संजयसुनोअभर्म । दुष्टनाश
को प्रगटकिय अस्त्रअमोघ सुधर्म ॥ सुनोदुष्ट बधकरि लहत

पुण्यसुधर्माभूप । दुष्टभाव कुरुबंशमें संजयबढ़ो कुरूप ॥ भू
धर्म अधर्मको जानत कौरवसर्ब । निश्चयतातेहोयगो तिन
नाशअखर्ब ॥ अनयस सुतधृतराष्ट्रकरि हरिपांडवनको बित
धर्मपुरातननृपनको तामेंधरतनचित्त॥ छलकरिलीन्होंराज्य
रहोजोन्याससमान । लयोचहतबनबासके ऊर्द्धतौनबलवान
दियोचहत धृतराष्ट्रनहिं बस्योलोभकेभौन । उचित भाग
पांडवनको पहुँचतहै तौन ॥ इहांपांडवहि श्लाघ्यहैं मरणयु
करिजौन । औरराज्यते श्रेष्ठहैं राज्यबंशके तौन ॥ आये जौ
सहायको भूप मृत्युबशसर्ब । गुणहु सभाये पापमय कियोक
कोखर्ब ॥ पांडवमहिषी द्रौपदी ताहिसभाकेभौन । ल्यायनि
दर कौरवन भीष्मादिक कियजौन ॥ नहिंरोको दुःशासन
काहूबालक वृद्ध । सबहीते देखतरहे भरेअधर्म सम्हद्ध ॥ श्व
शुर सभामें लेगयो गहिदुःशासन दुष्ट । कृष्णाके रक्षक भ
एक बिदुर मतिपुष्ट ॥ रहेभूपजे सभामें ते सब दीन स्वभाय
नीतिबचनबोलेनहीं उचितजौन सुखदाय ॥ संजयकरत कु
द्धिते सभामाहँ उपदेश । धर्मशील पांडव सकल सत्य सुमि
के देश ॥ दुष्करकारज सभामहँ यह कीन्हों कृष्णै शुद्ध । ता
पांडव तरनिकै दुखसमुद्रतेउद्ध ॥ कहो सूतसुत सभामें श्री
अनुचितयेबैन । कृष्णासों जहँश्वशुरहे भीष्मादिक बलऐन
कृष्णा तुम्हैं न औरगति कैदासी अभिराम । जाहु सुयोध
सदनमें करहु यथोचितकाम ॥ भयेपराजित सुपतितव बर
और भर्त्तार । जिष्णुहृदयमेंबचनते हैंसमशल्यउदार ॥कृष्णा
जिन पहिरतकहे बचन दुशासनदुष्ट । भये पांडुसुत खंडति
नर्कबासको पुष्ट ॥ कपटद्यूत करिकै शकुनि कहोसुनो नृपधर्म
हारेभ्रातन कोकरहु पणकृष्णाको पर्म ॥ द्यूतकालमें इनाहिं
कहे अनेककुबैन । तुमसंजय जानत सकल रहेतहां मतिऐन
हम संजय जाबेचहत वृद्ध नृपतिकेपास । भयोनष्टयहकार्यज





समाधानको तास ॥ पुण्य यशस्कर चरितकहि मेटन कुरुकुल
नाश । सुनत नीतिमय बचन मम भरे अर्थ सुखराश ॥ जो गु-
णिकै धृतराष्ट्रनृप मानैंगे तौ सर्ब । मिटिहैं हेतु बिरोधको मिलि
है मोद अखर्ब ॥ न तरु भीम अरु जिष्णुको पायसमरमें क्रुद्ध ।
पराभूत रणभूमितजि कैहै पापारुद्ध ॥ जीतिद्यूतमें निन्द्यजेकहे
सुयोधन बैन । समयपाय समुझायहैं भीमसेन बलऐन ॥ लता
रूप धृतराष्ट्रनृप पांडव वृद्धसमान । लता न बाढ़ति वृक्षबिन
है संजय मतिमान ॥ बनको राखत ब्याघ्र है रक्षकब्याघ्र अ-
रण्य । बन बिनु ब्याघ्र न ब्याघ्र बिन यह भाषत बुधगण्य ॥
दुर्योधनके कर्मते पांडव चाहत युद्ध । नृप धृतराष्ट्रहि कृत्यजो
करै सो बेगि अरुद्ध ॥ युद्ध साम को हैं खड़े पांडव अतिबल-
वान । चहैं नृपतिधृतराष्ट्र सो करैं समुझि मतिमान ॥ संजय
उवाच ॥ जयकरी ॥ बिदा होत हम तुमसों भूप । बंद्यराबरे चरण
अनूप ॥ बासुदेव अर्जुन अरु भीम । माद्रीसुत सात्वकि बल
सीम ॥ सबसों बिदाहोयहम गौन । कियोचहत कुरुपतिकेभौन ॥
शिव सुखकिये रहेगो साम । कौरव शंशमाहँ अभिराम ॥ युधि-
ष्ठिरउवाच ॥ आज्ञालहि मेरी सुखदान । संजय जाहु होयकल्यान ॥
नमस्तुम्हैं सुनु बुद्धिउदार । स्मरण किहेहु प्रिय जायहमार ॥
शुद्धात्मा तुमको हमसर्ब । जानतहैं करि प्रीति अखर्ब ॥ आस
दूत तुमहौ मतिमान । हौ कल्याणरूप मतिमान ॥ बिप्र हस्ति-
ना पुरमें जौन । तपारूढ़ श्रुतिविद मतिभौन ॥ तिनसों मेरो
कुशल प्रणाम । कहियो संजय मतिकेधाम ॥ आर्य पुरोहित
ऋत्विजजौन । कहेहु प्रणाम तिन्हैं मतिभौन ॥ द्रोणाचार्यस-
सुतकेपास । कहेहु प्रणाम सबिनय प्रकास ॥ कृपाचार्यके पद
गहि पर्म । कहेहु हमार प्रणाम सशर्म ॥ कुरुसत्तम भीषमके
पाय । बन्दि प्रणाम कहेहु सुखदाय ॥ नृपधृतराष्ट्र वृद्ध कुरुना-
थ । बन्देहुचरण तास धरिमाथ ॥ तासुतनय जेठाहै जौन । पापी

मूढ़ मन्दमतिभौन ॥ कहियो कुशल हमारी ताहि । संजयनी
नियमअवगाहि ॥ बन्धुतासुहैजोमतिमन्द । दुःशासनदुर्मति
कंन्द ॥ जासुकृत्य कुलनाश उपाय । दीजोमेरी कुशलसुनाय
सोमदत्त बाह्लीकसुजान । धर्म्म शील शुचिमति बलवान
बंदन ताको कीजोजाय । संजय मेरी कुशल सुनाय ॥ सोमद
सुनु सखाहमार । महा धनुर्द्धर बीरउदार ॥ संजय तासों सहि
बिधान । कहेहु हमारी कुशल सुजान ॥ बालक वृद्ध युवा
जौन । तिनसों कहेहु यथोचित तौन ॥ आयेजे हैं भूप सहा
चहूं दिशनके शुद्धसुभाय ॥ संजय तिनसों कुशल हमारि ।
हेहु यथाबिधि साधु बिचारि ॥ राजकाजकारी नर जौन । ति
सों कहेहु कुशल मतिभौन ॥ बैश्यापुत्र जौन युयुधान । ता
बूझेहु कुशलसुजान ॥ कहेहु शकुनिसों कुशल हमारि ।
संजय बिधिवत निरधारि ॥ संजयकुशल कर्णके पास ।
सुयोधन आशा जास ॥ कहेहु यथाबिधि कुशलहमारि । हो
दुष्ट मनमाहँबिचारि ॥ वृद्धस्त्री जेजननिसमान । तिनसोंकुश
कहेहु मतिमान ॥ धृतराष्ट्रकी भार्याजौन । तिनसों कुशलको
मतिभौन ॥ स्नुषासुता जेहैं गुणमान । तिनसों कहेहु कुश
मतिमान ॥ राजसुता तहँ संजय जौन । तिनसों कहेहु कुश
मतिभौन ॥ दासी दास जे सुमति उदार । तिनसों कहियोकु
लहमार ॥ अन्धकुब्जममवृत्ताधीन । तिनसोंकहियो कुशल
वीन ॥ फेरिकहेहु तुमसंजयजाय । नृपति सुयोधनसों समुभा
रहित शत्रुगणसों हम होय । करैंराज्य भूको सुखभोय ॥ क
यह सुतवहृदयशरीर । कम्पितकरत बिचार गँभीर ॥ युक्ति
और बिनाशनतास । प्रियआपनो चिन्ति मतिरास ॥ श
पुरीको दीजै राज । करहु युद्ध कै सहित समाज ॥ साधु अस
बालअरु वृद्ध । बली अबल दारिद्री ऋद्ध ॥ बशईश्वरके
नहुसर्ब । ईश्वरकर्त्ताखर्बाखर्ब ॥ संजय वृद्ध भूप पहँजाय । क





आरोग्य हमैं सुखदाय ॥ तवप्रसादते पाण्डव भूप । लहिहैं
अपनो राज्यअनूप ॥ प्रथमराज्यमें थापोताहि । करुननिरादर
मतिअवगाहि ॥ भीष्मपितामहसों ममनाम । कहेहुबंदि फिरि
वचनललाम ॥ जैसेजीवैंपौत्रतुम्हार । बरैंपरस्परप्रीतिउदार ॥
भग्नहोत शंतनु को बंश । तुम उद्धार कहेहु प्रशंश ॥ तथा
बिदुरसों कहेहु स्वतन्त्र । कुरुकुलरहै सो दीजै मंत्र ॥ युद्धन
चाहत चाहतसाम । मंत्र युधिष्ठिर को अभिराम ॥ फेरि सु-
योधनसों यह बैन । अनुनय सहित कहेहु मतिऐन ॥ निरा-
पराध सभामें ल्याय । कृष्णाहि जोतुम किय अन्याय ॥ सहो
सकल हमसो दुखराश । अब न करहु कुरुकुलको नाश ॥ कियो
पराध पूर्बापर जौन । जानत है कुरुकुलसब तौन ॥ देमृग चर्म
हमैं बनबास । दयोजोबांधिद्यूतछलपास ॥ सोहमसब दुखसहो
तुरन्त । अब न करहु कुरुकुलको अन्त ॥ अतिक्रम करि कुन्ती
कोजौन । गहोकेश कृष्णाको तौन ॥ दुःशासन तवमतते बाध ।
कियोसो हमभूलत अपराध ॥ उचित भाग मूहमकोदेहु । लोभ
असतमतितेतजिनेहु ॥ शांतिमानह्वैकैकुरुभूप । करैपरस्परप्रीति
अनूप ॥ देहुराज्यको देशसुएक । हमजोकहैंसों सहितबिबेक ॥
अबिस्थल सुवृकस्थल जौन । मांकदीहै शुभथलतौन ॥ और
बारुणावतअभिराम । औरएकजोचहहुललाम ॥ एकएकभ्रात-
नप्रतिएक । देहुग्रामतुमसहितबिबेक ॥ ज्ञातिनसहिततुम्हैंमति-
मान । शांति होयगी सहितबिधान ॥ भ्राताभ्राताको सुखदान ।
पितापुत्रकोपालकप्रान ॥ होयसुखी सबसभाबिशाल । कुरुबंशी
अरुजे पांचाल ॥ सुमत सहोहिं सामते सर्ब । कुरु पांचाल न
मैं अखर्ब ॥ चाहत हैं हम साम अवश्य । नतरु युद्ध तजिकै
आलस्य ॥ बैशम्पायनउबाच ॥ धर्म नृपतिसों आज्ञापाय । बिदा
भये संजय सुखदाय ॥ कहिधृतराष्ट्र भूपसंदेश । संजय चले
आपने देश ॥ शीघ्रहांकिरथ हास्तिन नगर । संजय गये भूप

के बगर ॥ द्वारपालसों बोले बैन । कहुद्वारस्थ हमैं मतिऐन
गोद्वारस्थ भूपकेपास । साबिनय कहन लगो मतिरास ॥ संज
खरेद्वारपरभूप । तवपद देखन चहत अनूप ॥ धृतराष्ट्रउबाच ॥ अ
वनदेहु हमारेपास । मतिरोकहु संजय मतिरास ॥ बैशम्पायनउबा
संजय आज्ञा पाय अनूप । गयेजहां कौरव कुलभूप ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयदूतगमनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

जयकरी ॥ सिंहासन मणिमय अतिरूप । बैठो थबिर ज
कुरुभूप ॥ जायतहां संजय सुप्रणाम । कियो बोलि जयश
ललाम ॥ संजयउबाच ॥ होसंजयहौं कुरुपतिभूप । करत प्रण
तुम्हैं अनुरूप ॥ हेनरदेव पांडवन पास । गये रहे हम सुम
निवास ॥ आय चरणतव लखे ललाम । कहो पांडवन तु
प्रणाम ॥ पुत्रपौत्रन सहपरिवार । बूझो है तवकुशल उदा
धृतराष्ट्रउबाच ॥ बूझत संजय सुमतिनिकेत । पांडव नृपबरसा
समेत ॥ कहहु कुशल हैं भ्राता सर्ब । भूभूषण बलभरे अ
र्ब ॥ संजयउबाच ॥ तुमदेखो तवयथा अनूप । हैंहार्षितते तथा
रूप ॥ जीति द्यूतमें लीन्होंजौन । धनभूचाहतहैं तेतौन ॥ ध
शीलते रहित बिकार । चहत आपनो भागउदार ॥ बि
साध्य जानतते धर्म । जातेधन चाहत हैं पर्म ॥ करत पुरुष
प्रेरितकाम । ज्योंबश सूत्रदारुकी बाम ॥ यातेपांडवको मतपी
जानतहैं सोदैवाधीन ॥ पापदोषमय कर्मतुम्हार । यह देखत
घोरअपार ॥ जबलों शत्रु न करत बिचार । लीबेको धनभू
उदार ॥ तबलोंलहहु प्रशंसाभूप । जानो करत भविष्यकुरूप
अजातशत्रु कै पायो तीर्ण । यथासर्प तजि कंचुक जीर्ण ॥
सत स्वभाविक वृत्तिपसारि । पापपुरातन तुममें धारि ॥ क
आपनो चिन्तहु भूप । आर्यवृत्ति तजिधर्म अनूप ॥ निन्दाप्र
भये भूपाल । हनोपाप परलोकबिशाल ॥ बिना तिन्हैं एका
भूप । लहोजुगुप्सा अधरमरूप ॥ अर्थकाम पावनके हेत । भ





पुत्रबश मोचितचेत ॥ हीनबुद्धि दुष्कल उत्पन्न । जो नृसंश-
तामें सम्पन्न ॥ बैरी जासु धनुर्द्धरबीर । सो बिपत्तिको लहत
गँभीर ॥ सुकुल यशस्वी बरबलवान । स्ववशात्मा बहुश्रुत म-
तिमान ॥ धर्मसत्यधारेहैं जौन । लहत भाग्यवश बांछिततौन ॥
मंत्रयुक्त भूपति मतिमान । क्रूरकार्य्य करिकै दुखदान ॥ तजि
धर्मार्थ बिपतिकोलेत । सुनुये नृपति अमूढ़सचेत ॥ अकस्मात्
कौरवकुल नष्ट । होत भूमिपति सुनु अस्पष्ट ॥ अर्जुनबर सुर
कर्मा जौन । जीतन योग्य सबहि बलभौन ॥ जानत सो सब
दैवाधीन । मानत कबहुँ नहीं स्वाधीन ॥ सत्यराज्य लेहैंतेभूप ।
सुनहु असंशय बचन अनूप ॥ सुख दुख प्रिय अप्रियमें भूप ।
निन्दा स्तुति लहत अनूप ॥ किये पराध निंद्य जनहोय । साधु
सराहत नाहिं सबकोय ॥ किये पांडवनको अपराध । निन्दत
तुम्हैं जे सुमतिअगाध ॥ हौं न प्रजनको चाहत अन्त । देहु
भाग तिनको क्षितिकन्त ॥ नतरुजिष्णु पावक बलवान । दहि
है कुरुकुल वृक्षसमान ॥ दुष्टनको करि संग्रह भूप । भये हितन
को शत्रु स्वरूप ॥ याते भूमिअनन्ता जौन । रक्षणशक्यन तुम
ते तौन ॥ हमरथबेग श्रमितहैं भूप । शयनाज्ञा अब करहु अ-
नूप ॥ भोर सभामें सहकुरुबंश । सुनेहु युधिष्ठिर बचनप्रशंश ॥
धृतराष्ट्रउबाच ॥ भोरसभामेंपांडवबैन । सुनिहैंकुरुकुलसहमतिऐन ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयागमनबर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ रोला ॥ द्वारपाल बोलाय नृप धृतराष्ट्र बोले
बैन । जाय बिदुरहि बेगिल्यावहु महामतिके ऐन ॥ भूप आज्ञा
पाय छत्तापै गयो प्रतिहार । बिदुरतुमको नृप बोलायो चलहु
बेगि उदार ॥ भूपआज्ञा सुनतआये बिदुर कुरुपतिद्वार । बि-
दुर आज्ञासों गयो नृपपाससो प्रतिहार ॥ द्वारपालउबाच ॥ बिदुर
आज्ञासो तिहारी पौरिके ढिग भूप । खरे चाहत रावरेकोलखन
चहतअनूप ॥ धृतराष्ट्रउबाच ॥ देहुआवन बिदुरको प्रियमोहिं अति

मतिधाम ॥ द्वारपालउवाच ॥ जाहुक्षत्ताभूपकेपद लखहुअतिअभि
राम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जायबोलेबिदुरनृपको देखिचिन्तितरूप
बिदुरहमतवपायआयेपरमआज्ञाभूप ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिदुरसंज
आयमोसोंकहेनिन्दितबैन । बचनकहिहैंसभामें नृपधर्मसोमी
ऐन ॥ जानिपरतनधर्मनृपकेबचनकहिहैंजौन । दहतमेरेगात्रअ
नहिं देत निद्रा तौन ॥ जानि परत न श्रेय अपनो हीन निन्द
मोंहिं । कहहुसो धर्मार्थमें हौ कुशल बूझततोहिं ॥ बिदुरउवाच
हीन साधन बलीसों जन करत जौनबिरोध । चौर कामी बि
हरकी लहत निद्रा रोध ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्म श्रेयस बचनतु
सों सुनो चाहतमर्म । तात तुम कुरुबंशमें राजर्षिहौमतिमर्म
बिदुरउवाच ॥ पुण्यवानहि भजतहैं नर तजतनिन्दितजौन । नहि
श्रद्धा नास्तिकनमें सुनहुपंडिततौन ॥ जासुनाहिंप्रारम्भप्रगट
मंत्र मंत्रित तौन । कियो कारजही सुप्रगटै सुनो नृपबलभौन
होत जाकी कृत्यको नहिं बिघ्न कारणपाय । क्रुद्धकै असमृ
पण्डित मनुजसो सुखदाय ॥ जासुबुद्धि स्वभावकी धर्मार्थमं
रतहोय । कामको तजिकहत बुधजन भूप पण्डितसोय ॥ कि
यो चाहत करत अपनी शक्तिकेपरमान । करत नहिं अपमान
काहूको सुबुद्धि निधान ॥ ज्ञानवान बिचारि पूंछेकहै परमितवै
न ॥ करैं परउपकारकी सबकृत्यसत मति ऐन ॥ प्राप्तकी नहि
करतकांक्षा नष्टको नहिं शोच । बिपतिमें नहिं मोहपावतसुमत
पण्डित रोच ॥ स्वबल साधि बिचारिकै नर कर्मकारज जौन
नित्य करत निहारिपण्डित सह प्रयोजन तौन ॥ कर्मआर्यनके
करतसबभूति के कृत चाहि । करत हितकी नहिं असूया कहत
पंडित ताहि ॥ खेदनाहिं अपमान ते नहिं मानते कछुहर्ष । क्षो
भविनु सुरसरित कैसे पूरमति उत्कर्ष ॥ सर्बभूतनको बिनाशी
सुनो जानत जौन । अरु जौनजानै सर्ब कर्मनकी सुरचना तौ
न ॥ औसर्ब सामग्रीहि जानै जानु पंडितताहि । शास्त्रकी अ





लोककी सबरीतिको अवगाहि ॥ हैं अकुंठित बाकजानै लोक
को व्यवहार । समयजानैतर्क जानै शास्त्रबिद सुउदार ॥ शास्त्र
बुद्ध्यनुसार जाकी बुद्धि श्रुति अनुसार । बचनबोलत अर्थयुक्त
सुबुद्धि बुधआचार ॥ उन्नध्वअश्रुत दीन अति मन अर्थचहन
अकर्म । सुमति ताको कहतहैं सबमूढ़ कुमति अपर्म ॥ छोड़ि
स्वासामर्थ्य औरनकी भजैसामर्थ । कहे मिथ्यामित्र सों सोमूढ़
हेतु अनर्थ ॥ करैकाम अप्राप्यको तजिकामना के योग । बली
सों जोबैरबांधै मूढ़तेमतिरोग ॥ मित्रकरतअमित्रको रचिमित्र
सों अति बैर । दुष्ट कर्महि करत जड़मति मूढ़ सों मय मैर ॥
क्षिप्र करिबे कार्य माहीं करतजो चिरकाल । सुनो श्रीबलभौन
भूपति तौन मूढ़ बिशाल ॥ जातबिन आहूत बूझैबिनाबोलत
बैन । अबिश्वासित को बिश्वास जोकोउ करै दुर्मति ऐन ॥ अ-
शिष्यको जेकरहिं शिक्षाशून्यमें नितबास । संगकरत कदर्यको
ते मूढ़ दुर्मति रास ॥ पायकै ऐश्वर्य विद्या गर्वधरत न जौन ।
रहतसाम स्वभावसों मतिमान पण्डित तौन ॥ आपु भोजन
करत पहिरत बसनअति सुखदान । भृत्यको नहिं देत तातें है
नृसंश न आन ॥ हनत शरबिष एकको कीन्हें प्रयोग स्वतंत्र ।
देश प्रजन समेत मारत भूपको दुर्मंत्र ॥ एक खाय न स्वाद ब-
स्तुनमंत्रकीजै एक । चलैपथनाहिं करैनिद्रा एकसहित बिबेक ॥
क्षमामें इकदोष कहत अशक्त सकल अयान । सो न दोषहि
मानिये हैं क्षमी अति बलवान ॥ भूमिग्रासति दोयको बिलशा-
यनको ज्यों सर्प । अप्रवासी बिप्रको नृप रहित जोरण दर्प ॥
दोय कण्टक तीक्ष्ण शोषक देहके अतिमान । कामना निर्द्धनहि
अबलाहि दहतक्रोध कृशान ॥ दोयकरि बिपरीत कर्म न होत
शोभिततौन । बिना उद्यमगृहीभिक्षुक करत उद्यमजौन ॥ दो-
य ये नरब्याघ्र पावत स्वर्गपर शुभथान । क्षमावान जेप्रभुदरि-
द्री दानशील सुजान ॥ बांधि गलमें शिलाबोरी सलिलमें जन

दोय । धनिक जौन अदत्त निर्द्धन रहित तपतेहोय ॥ द्रव्यद
शहरतजत परकीय सुहृदहि जौन । दोषयाते होतआतुर ना
कारक तौन ॥ तीनि कारण नाशकेहैं मनुजके अतिमान । का
क्रोध सुलोभयाते तजतइनहिं सुजान ॥ भक्तको भजमान
जो कहत हमजे बैन । शरणगत ये तीनि तजतन बीरजे म
ऐन ॥ राजअरु बरदान सुतको जन्मसों सुखदान । तीनहूंस
शत्रुसों कुलराखिबो मतिमान ॥ अल्पमति अरु दीर्घसूत्री अ
लस कपटी जौन । मंत्रइनसों करत हैं नहिं भूपजे मतिभौन
वृद्धज्ञाति अशक्तसकुल सुसखा धनते हीन । बिना सुतकी
हिनि चारिन त्याज्यहै मतिपीन ॥ पांचपूज्य सुमनुजको हैं
ग्नि माता तात । गुरूआत्मा सदृशहैं ये सुनहु मतिअवदात
पांचपूजेहोतयशसुरपितरमानुषजेष्ठ । भिक्षुअतिथिसमानसि
रेकहतहैंमतिश्रेष्ठ ॥ तजतहैंयेदोष चाहतभूतिकोनरजौन ॥
धभयआलस्य निद्रा दीर्घसूत्रहितौन ॥ छोड़िइनको दीजिये
नहीं रक्षकभूप । मूर्ख ब्राह्मण अप्रिय बादिनि भार्य्याहतरूप
दानसत्य सुअनालस्य सक्षमा धृतिहै जौन । तजतनहिं अ
सूयता सह सुगुण षटमति ऐन ॥ अर्थ आगम निरुजता अ
मधुर भाषिणिबाम । पुत्रभक्त सुकरी बिद्याअर्थसुखदलाम
जियत षटमें जीव षटलहि चोर मत्त महान । बैद्यरोगीपायक
मी बामद्विज यजमान॥बाद जोलघुकरै तासों जियतहैभूपाल
सुखी जनमें जियत पण्डित सुनो बिज्ञ बिशाल ॥ षटबिनश्य
बिना देखे कृषीभार्य्या गाय । भूपसेवा पढ़ी बिद्या शूद्रसंग
शाय ॥ बाम मृगया पान मदिरा वचन कलुषकठोर । दण्डद
रुण परुषताये नाथ दूषणघोर ॥ बित्त हरिबो सछल अरु ब
बिप्रको रचि बैर । करत तिनको भरतभूमें सहत निन्दा मैर
बुद्धि कौशलता पराक्रम बचन रचन सुधर्म । यथाशक्ति सुदा
जनको करत रंजित पर्म ॥ काम क्रोधहि छोड़ि देत जो पात्र





नृपदान । क्षिप्र करि श्रुतवान ताको करत सुमतिप्रमान ॥ मनु-
जमें बिश्वास जौन कराय जानत भूप । दोष सम जोदण्डकरत
सोलहत श्रीअतिरूप ॥ सावधान जोरहत रिपुसोनहींनिदरंत
दीन । बलीसों नहिं करत बिग्रह कालबिदसो पीन ॥ पाय आ-
पद ब्यथित होत न लखत नित उद्योग । धूरधरसों जीति बै-
रिन करत भूकोभोग ॥ नहीं दुर्बलकी असूया करतआदरदेत ।
क्षमाकर अतिबाद सों ते सुयश सबसों लेत ॥ नहींउद्धतवेष
धरत न कहत पौरुषजौन । कहत कटुक न लहतहैं अतिप्रीति
सबसों तौन ॥ बैरशान्तहि करत दीप्तन होत दर्पारूढ़ । नहीं
दुर्गतिजानि आपुहि करत कार्य्य अमूढ़ ॥ नहींहर्ष स्वश्रेय ते
परदुःखते नाहिं हर्ष । परत पायन आर्य तिनको कहत मतिउ-
त्कर्ष ॥ समयदेश बिचारि जो ऐश्वर्य चहतसधर्म । जात जहँ
तहँ लहतसो अधिपत्यको जनपर्म ॥ दम्भ मत्सर पापकृत्य न
बैर सबसों जौन । बाद दुर्जनमत्त सों नहिं करतहैं मतिभौन ॥
दानहोम सुदैव उत्सव लोकको ब्यवहार । करतनित्य सुताहि
चाहत देवछन्दउदार ॥ देय आश्रितको जो भोजन करतनित्य
समर्थ । देतमांगे अहितहूको लहतसोधन अर्थ ॥ सामकरसब
भूत सों मृदुसत्यशुद्ध स्वभाव । ज्ञाति आकर माहँमणिसे ल-
सितसो सहचाव ॥ शापदग्ध सुपांडुके सुतभये बनमें जौन ।
तुमहिं बर्द्धित किये शीक्षित देश पालक तौन ॥ राज्य दीजैउ-
चितातिनको आपुलहि आनन्द । देवमानुष फेरि शक्यन तुम्हैं
दीबे दन्द ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दहत चिन्ता अग्निसो हमको जो
करिबेकार्य । पथ्यकहहु बिचारिकै सो बिदुर कुरुकुल आर्य ॥
पापको अब डरत पहिले पापके करि कार्य । कहहुसो जोहैं म-
नीषित धर्मनृपकोआर्य ॥ बिदुरउवाच ॥ होयशुभके अशुभअप्रि-
य होय प्रियकैजौन । कहत पूछे सत्यडरत न पराभवसोंतौन ॥
कहत तुमसों तौन हमहित कुरुनको है जौन । श्रेयकरि सह

धर्म भूपति बचन सुनिये तौन ॥ कियो मिथ्याकर्मते जो कार
सिद्धि कुरूप । नहीं फिरि तेहिपापमें मनदीजिये सुनुभूप ॥न
जानत को सजनपद दुर्गक्षय अरुवृद्धि । नहींसेना समुझि र
खत भूपसोहत ऋद्धि ॥ राज्यको लहि भूपदुर्मति चलत जौ
कुचाल । अनयसो श्रीको हनतज्यों जरारूप विशाल ॥भक्ष
ज्यों गुरुबड़िसहि मत्सलीलत पाय । लोभपाती नहीं बन्ध
लखतत्यों भ्रमछाय ॥ खातकाचे फलहि रसहि न लहत बी
नशाय । लहतरस फल पक्वभोजी बीज फिरि फलखाय ॥ले
मालाकारसोंनृप फूलफलकोजौन । काष्ठहरलौं मूलछेदनक
नाहिं मतिभौन ॥ कृपाजाकीव्यर्थहोति निरर्थजाकोक्रोध । ता
नाहिं भर्त्तारकीजै शठसो रतिरोध ॥ ऋजुबिलोकत प्रजहिइ
मनुकरत चषसोंपान । होति है तेहि भूपको सबप्रजा अति
खदान ॥ दियो चाहत देवजिनको पराभव हरिऋद्धि । ले
तिनकी पुण्यगामी प्रथमही हरि बुद्धि ॥ रावरेके सुतनकी भ
बुद्धिनृप बिपरीति । पांडवनके बैरतेनहिं तिनहिंसूझतिनीति
राज्यलक्षपासों लसत सम्पन्न भूपतिधर्म । बहतआज्ञारावरे
भूमिपालकपर्म ॥ भाग्ययाते राज्यको है योग्य तिनको भूप
रावरेके पुत्रहैंनाहिं राज्ययोग्य अनूप ॥ यहिभांति के सबनीति
मय सुनि बिदुरके बरबैन । कहोतब धृतराष्ट्र ऐसेबचन अ
मतिऐन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सुनतहोति न तृप्तितुम्हरे बचन बिदु
सुजान । कहहुयाते बैनफेरि बिचित्रहे सुखदान ॥ बिदुरउवाच
सर्वभूतन माहिं जोहै कुटिल ताकोत्याग । सर्वतीर्थ स्नानते
अधिकहैबड़भाग ॥ सामशीक्षासुतनमें तुमकरहुयातेभूप । इ
कीरति होतिजाते स्वर्गप्राप्ति अनूप ॥ रहति जबलौं की
क्षितिपरमनुजकीअभिराम । भूपतबलोंजीवपावत स्वर्गमें धु
धाम ॥ अत्रतुमकोमैं पुरातनकहतहौंइतिहास । तुमबिचारोता
करिकै बुद्धिको सुप्रकास ॥ भो बिरोचन अरु सुधन्वा बिप्र





संबाद । केशिनी कन्यार्थ सुनिये पुण्यपूरण नाद ॥ हो स्वयम्बर
केशिनी को बिप्रकन्या तौन । ही सुधन्वाकी गया तहँ दनुज
पति बलभौन ॥ दनुजपतिसों बरोचाहत रूपमय लखिताहि ।
कहन लागी केशिनी इमि क्रोधको अवगाहि ॥ केशिन्युवाच ॥
हैं सुधन्वाबिप्र मम पर्य्यंक योग्य सुजान । दैत्य तुम ममयोग्य
हौ नहिं लहु नीचताको ज्ञान ॥ बिरोचनउवाच ॥ दैत्यपति हम हैं
बिरोचन लोकपति बलवान । केशिनीका बिप्र हमसों देवता
न समान ॥ केशिन्युवाच ॥ भोरऐहै द्विज सुधन्वा महातपकोधाम ।
तव समागम भये तुमको देखिहै अभिराम ॥ बिरोचनउवाच ॥ क-
हति हौ तुम यथा सुन्दरि करहिंगे हमतौन । देखिहौ हमको
सुधन्वा सहित जब मतिभौन ॥ बिदुरउवाच ॥ निशा बीती सूर्य्य
मण्डल उयो जब अभिराम । तहँ सुधन्वाबिप्र आयो महातप
कोधाम ॥ जहँ बिरोचन दैत्यहो सह केशिनी छबिधाम । के-
शिनी उठि दियो आसन अर्घ्यपाद्य ललाम ॥ बिरोचनउवाच ॥
सुधन्वासों तदनु बोलो यों बिरोचन बैन । आव मेरे साथबैठो
पीठपै मतिऐन ॥ सुधन्वोवाच ॥ सुनु बिरोचन बैठिहैं हम नहीं
तेरे साथ । तबहि सम हम होहिं बैठे संग दिति सुतनाथ ॥
बिरोचनउवाच ॥ काष्ठको कै दर्भ आसन होत बिप्रसमान । हेम
आसन योग्य तेरे नहीं बिप्र सुजान ॥ दोहा ॥ कह्यो बिरोचन
बिप्र सुनु हैं हम सबसों श्रेष्ठ । जो तू आपुहि श्रेष्ठगुणि बोलत
गरब यथेष्ठ ॥ तौ गज हय मणि धेनु धन कंचन दाव लगाय ।
चलि कोई मतिमान ढिग भाषिलेहुनिबराय ॥ चौपाई ॥ यहसुनि
कह्योसुधन्वाआरज । हमैं न हयगणमणिसोंकारज ॥ प्राणद्रब्य
प्रणहमसों करिकै । निजपितुपासचलोप्रणधरिकै ॥ हैप्रह्लादधर-
मप्रतिपालक । तजी न धर्मजानि निजबालक ॥ जाकोश्रेष्ठ कहे
दनुजेशा । सोईश्रेष्ठ सुजानसुभेशा ॥ यह निबन्ध दोऊ करि ते-
हां । गेप्रह्लादअसुरपतिजेहां ॥ तिन्हैंदेखिप्रह्लादसुजाना । पूजि

सुधन्वहि सहित बिधाना ॥ दोउन क्रोधितलखि मतिमाना
कहत भयो करिकै अनुमाना ॥ हौं न समान शील तुम दोउ
सङ्गमहेत कहा कछु सोऊ ॥ यह सुनि बीर बिरोचन बोलो
मम अरु इनकी गरिमा तोलो ॥ दोउनमेंको श्रेष्ठ स्वभावन
सो गुणि कहौ सत्य मनभावन ॥ हैं हम दोऊ अमरष छाये
प्राणद्रव्य प्रणकरि इत आये ॥ यहिबिधिकह्यो सुधन्वाज्ञानी
तब दनुजाधिप कही सुबानी ॥ एक पुत्र यह आनँद भारण
प्राणद्रव्यपर द्विज यहिकारण ॥ नहिं कछु भाषि सकत य
सुनिकै। उचित होय सो बोलो गुनिकै॥ सुधन्वोबाच ॥ बन्धुपु
हित अनहित कोई। होहु न्यायहै कीजै सोई ॥ जगमें निक
जायकै बूझै। सुकृती कहत सत्यही सूझै॥ प्रह्लादउबाच ॥ दोहा
जोजन बूझे कहतहैं बचन अन्यथा जौन। देह त्यागकरि मू
सो लहत गूढ़गति कौन ॥ सुधन्वोबाच ॥ सुनो भूपसो लहत दु
लहिकै बहु अपमान। हित गुणिकै जो न्यायमें अनृतहि कह
सुजान ॥ गोहय मानव हेम महि हित जो मिथ्याबैन। बोल
दशशत जन्मसो रौरव लसत अचैन ॥ सुत सनेह तजि
कहौ सत्य बचन धर्मज्ञ। सो सुनिकै बोलत भयो दनुज ना
सर्बज्ञ ॥ तोमर ॥ सुनि दनुजनायक दक्ष। इमि कहतभो परतक्ष
मुनि अंगिरा तपधाम। हैं श्रेष्ठ मोसों आम ॥ अरु जननिहि
जकी जौनि। तो जननिसों बरतौनि ॥ यह बिप्र तुमसोंज्येष्ठ
सुत तजो बैर अश्रेष्ठ ॥ तो प्राण जीतो बिप्र । द्विज कहै स
करु क्षिप्र ॥ निज पुत्रसों प्रह्लाद। इमि कहे गहि अहलाद
तब द्विज सुधन्वा मोद। इमिकहे बचन बिनोद ॥ तो महा सु
धरमजोहि। तो सुतहि दीन्हों तोहि ॥ दोहा ॥ तासुत मूढ़ बि
रोचनहि जीति देत हम तोहि। चलिकेशिनिढिग मम चर
धोवै श्रेयद जोहि॥ बिदुरउवाच ॥ छन्द ॥ तबहि बिरोचन। डगी
सकोचन ॥ करि ऋणि मोचन। लिय बिधि शोचन ॥ दोहा





यहिविधि सुतपितु बंधु हित धर्म्म न तजत प्रवीन। धर्म राखि
पांडवन कहँ देहू भूमि मलीन ॥ दैवन मारत दण्डगहि नहिं
रक्षत मतिमान। मतिहि बिगारि सुधारिकै सुख दुख देत म-
हान ॥ कबित्त ॥ राग द्वेष बैर औ कलह मद्यपान युवा पति
तिय सुत पितु अन्तर औ ज्ञातिभेद। कुतसित पथ येतेआठ
बरजित सदा अब सुनो जिन्हैं नहिं साक्षी देनकहै वेद। सा-
मुद्रिकी औ अरि मित्र बैद धूरत जो शतधा कुशील जौन
दैत सबहि को खेद। चोर हो प्रथम फेरि बानिज करत ताहि
साक्षि जो बदै सो मतिराखै जीतिकी उमेद॥ अपरं ॥ रूपहि बि-
नाशै जरा धीरजै अनाशा नाशै प्राणहि हरत मृत्यु क्रोध श्री
हरत है। शीलहि कुसंग कोमलजाहि असूयाधर्म्म अभिमान
एक येते अवगुणधरत है। मंगल सुभावगहें राजसी बढ़ति
सुनो मंगलकी दृढ़ताते वृद्धिता भरत हैं। दक्षताते धनबरधत
गोपीनाथ तापै संयम गँभीर ताते धीरता धरत हैं॥ अपरं ॥ आ-
ठ गुण पुरुषहि दीपित करत सुनो प्रज्ञाकुलता ऐमोष इन्द्रिन
को करिबो। बहुश्रुतिता औ बाकपटुता कृतज्ञताऔ दान श-
क्तिसबमें पराक्रम को धरिबो। निन्दितसो सभावृद्ध जामेंनहीं
गोपीनाथ निन्दितसो वृद्ध जो न कहै धर्म धरिबो। निन्दितधर्म
बिनु सत्य कहै मतिमान सत्य निन्दजामें छल आशानाश क-
रिबो ॥ दोहा ॥ सत्यसुयश बिद्यासुधन कुलबल शीलस्वरूप।
बचनशुद्धता शूरता येदशस्वर्ग अनूप ॥ पापकर्म कृतनरनकहँ
हैंदुरलभ येसर्ब। पुण्यकर्मकृत नरनकहँ सुलभ सुसिद्धि अख-
र्ब॥ नष्ट सुमति ह्वै पापकृतसदाकरत हैं पाप। शुद्धसुमति लहि
पुण्यकृत करत पुण्यकोथाप ॥ सुमति मान धर्मार्थचारि सदाल-
हत सुखएव। सदापूर्ण सुखमिलतहै शुद्धपुण्यकोभेव ॥ कबित्त ॥
दिनमें करै सो कर्म जाते निशि सुखसोवै निशिमैंकरै सो जाते
दिनमें न अरसै। आठमासकरै जाते चारि मास सुखबसैचारि

मास करैजाते आठमासहरसै । याबिधितरुणपन सुकृतबटो
जोरि वृद्धपनभोगैस्वई अकृत न परसै । निशिदिन सबमास
तैसैगोपीनाथजाते जौलौंशोचनहींबुद्धिमाहँसरसै ॥ दोहा ॥ यु
तिवृद्धकै सुरबर समरजीति फिरिआय । होतप्रशंसन योगज
तपकृत जनम बिताय ॥ ऋषिसरिता तियचरितको अरु मह
कुलजौन । प्रभवतासु नहिं हेरिये हेरेहेरत कौन ॥ द्विजपूजा
दानरत ज्ञातिपोष रतभूप । भोगतबहुदिन मेदिनी पावतसु
श अनूप ॥ उरबीको सुबरण पुहुपलुनत नीतिगुणवान ।
और कृत विद्यअरु ज्ञातानीति बिधान ॥ करत बुद्धिबल क
जो श्रेष्ठ कर्म हैतौन । बिनाबुद्धिको बाहुबल करि जयपावतक
न ॥ कहिआये जितने सुगुण पाण्डव मेंते सर्ब । श्रेष्ठपिता म
नत तुम्हें तुम सुत गुणो अखर्ब ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन मतिम
शकुनि दुशासन करणसह । अति ऐश्वर्य्य सुछन्द इनको म
लागिमति चहौ ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिबिदुरधृतराष्ट्रसम्बादेबर्णनोनामनवमोऽध्यायः९॥

बिदुरउवाच ॥ जयकरी ॥ भूप सुनो पूरब इतिहास । अत्रि शिष
मुनि आनँद रासं ॥ हंसरूप विहरत सरमान । तहांजाइ स
साध्य सुजान ॥ करि सुप्रशंसा कहे सुभेश । सुमुनि कहो क
वार्त्तावेश ॥ सुनिप्रशंस बंशज मुनिहंस । बोलेनीति धर्मको
स ॥ जो हमसुने परम सिद्धान्त । सोअब तुमसों कहिअतुद
न्त ॥ उचित न कहिबो बचनकठोर । परुषबचन शायक स
घोर ॥ बेधत मरम मरण बिधिठानि ।प्रगटितकरत बिथाहि
हानि ॥ बरजित करत धर्मको हेत । हितनमहा अनहित क
देत ॥ रुक्षबचन बोलतनरजौन । रमान निवसति ताकेभौन
परुष बचनको कहे जोनाथ । कबहुं न रहिये ताकेसाथ ॥
ऋजु बचन कहत मतिमान । परको अनति सुखकारमहान
श्रीयश सुधरम कारज सिद्धि । सदा लहतसो बिजय समृद्धि





जोअपकारिहु को उपकार । करत तौनसुर सरिस उदार ॥ प्र-
थम मौनहैं मौन बिधान । द्वितिय मौनहैं सत्यमहान ॥ तृतिय
मौनाप्रिय बाणी जौनि । चउथमौन सुधरमयुत तौनि ॥ एकएक
ते सरस प्रभाव । जो शरधत तेहि बरधत चाव ॥ उत्तमपुरुष
कहावत तौन । चारिउ मौन सुधारतजौन ॥ बिदुरउवाच ॥ दोहा ॥
मुनि सुबचन मुनिहंसके मोदिसाध्य समुदाय । करिसु प्रशंसा
कै बिदा गेनिजलोकसचाय ॥ शकुनि दुशासन करणसहतोसु-
तभूपसगर्ब । जलपत पाण्डवके बिषे परुष बारताखर्ब ॥ कबित्त ॥
अपकारकीन्हेहूकरत उपकारमानैपरउपकारते वैउत्तममहतेहैं ।
अपकारीहीको करै अपकार मध्यमते और सबहीको उपकारते
गहतहैं । करैनहींउपकारमानैनहींउपकार अधमपुरुषतेनकीराति
लहतहैं । उपकारकीन्हेंहूकरतअपकारतेहैं अधमाधिराजदोषद्वं-
दतैंरहतहैं ॥ दोहा ॥ पहिलेतो सुतनृपाकियोपाण्डवको अपकार ।
तऊघोषयात्रांबिषे उनकीन्हेंउपकार ॥ सोउपकारबिसारिफिरि
कियोचहत अपकार । भूपतिबरजो निजसुतहि यहबिनाशको
चार ॥उत्तमपदसाधनकरततेउत्तमकुलजात । अतिबिभूति ते
लहतहैं अधगिरिअधमनशात ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ प्रीतिलहतजाते
सुमनअरुबहु श्रुतिसरबज्ञ । तेहिउत्तम कुलजातकोलक्षणकहो
अदज्ञ ॥बिदुरउवाच॥ तपव्रतदमममखसत्यरतशीलमानशुचिगात ।
शूरधीरदानीसुबुधि सोमहानकुलनात ॥ उपकारीधरमीयशीश-
रमीपालकगोत । सोमहान कुलजातनिति शुद्धसुभावतनोत ॥
बिमुखभये इनगुणनते कीन्हें कुत्सितकर्म । महाकुलीनो होतहै
जिमि अकुलीनअधर्म ॥ सोरठा ॥ अबनृप सुनोबिबेक भेदभेद
के ग्रहणको । ज्ञातभेदकोटेक भेदवेदके बचनको ॥ कबित्त ॥ भेद
बुद्धिजाके सो न गहत धरमगैल भेदबुद्धिजाके सो न पावै सुख
नेकहै । भेदबुद्धिजाके सो न गौरव लहतनेक योगक्षेम कुशल
न ताकेभाग एकहै । भेदबुद्धिजाके सो सिखापन न मानत है

भेदबुद्धि जाके सोनत्यागै निजटेकहै । भेदबुद्धिजाके सो लहै
खेद अन्तमेदमासतौ अभेदपै रहतिंबितरेकहै ॥ दोहा ॥ गोध
तें सम्पन्नता तरुणिचपलताछाव । ज्ञातिभेद ते भयसदा
सम्भावितभाव ॥ गोब्राह्मण तियज्ञाति पहँ शूरबीर नरजौन
पाकेफल जिमिवृक्षते गिरत भूपतिमितौन ॥ ज्ञातिबर्गते भि
पहँपरति आपदाभूरि । प्रबलबायुडारतयथा एकवृक्षकहँतूी
तरुसमूह मधिबातजिमि करि न सकत उतपात । तथा ज्ञा
जहँ एकमत तहँ आपद फिरिजात ॥ गोब्राह्मण तियज्ञा
शिशु अरुसुअन्नदातार । शरणागत इनसातमधि सदाअव
बिचार ॥ नहींसुधनताते अधिक गुणमनुष्यमें और । धनी
भूति जाते बढ़ै भूपगहौ सोढौर ॥ रोला ॥ सुवन जो क्षितिपा
तासों क्रोध छल तजवाय । बोलिकै पाण्डवनमंगल दुन्दुभी
जवाय ॥ भूमि सब युगभागकरि गुरु पुत्र भूपनदेहु । एक मत
भूमि भोगहिं परमआनँद लेहु ॥ मित्रतागहि बन्धुते अन्यो
पाय सहाय । होहिं बर्द्धित भूमिपै युग शक्र सरिससचाय ॥
हौ युगमधि सींव समतुम यथा मेटी दंड । नेहपथ नहिं तज
पावैं बंधुदोऊचंड ॥ कहेपूरबमनु स्वयम्भुवमूर्खसत्रहहोत ।
अशिष्यहिकरत शीक्षातौनपहिलोशोत ॥ जौनसेवतदारदि
धनहेतदूजोतौन । तौनतीजो रक्षिशत्रुहि कुशलचाहतजौन
तौन चौथो कथत निजमुख करमकार जो पूर्ष । बैरठानतप्रब
तैसो निबलपंचम मूर्ष ॥ मूर्खछठवों करत कुत्सितकर्म गुरुकु
जात । कहत सरधाहीनते सो मूर्ख सतवों ख्यात ॥ गोत ति
सों करत निन्दित कर्म अठवों तौन । पुत्रतिय गमिमान चाह
तौन मूरुखजौन ॥ बीजजो परक्षेत्र डारत मूर्ख दशमसखेद
सोएकादश मूर्खतियसों कहत जो निजभेद ॥ देनकहि नहिं
त जो सो मूर्खद्वादश गन्य । भेदजाने बिना जलपततौन तेर
अन्य ॥ सो चतुर्दशमूर्खगुणत न कर्मको फलपाय । पंचदश





याचकन सों कहत कटु रिसि छाय ॥ दान भोग न करत सो-
हौं मूर्खसोधनमान । बन्धुभागहि हरणचाहत सप्तदशमनदा-
न ॥ किरिणिनभ नभ धनुष चाहत गहनपन करिजौन । श्रेष्ठ
सबसों एक औरौ मूर्ख जगमें तौन ॥ कइकाबिधिको मूर्खहै तो
पुत्र भूपतिएक । ताहि साबिधि बुझाइकै अबकरहुलोपितटेक ॥
उचित जो जिमिचरै तासों चरब तेहि अनुसार । धर्मचारीपां-
डवनसों धरमको अधिकार ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ मानीगरवी
सुवनमम बरजो मानतनाहिं । कहो पुरुषकहँ मृत्युसमकोमारत
जगमाहिं ॥ बिदुरउवाच ॥ अति आशा अभिमान अति अति
बिवाद अतिक्रोह । अरु आतमसुख और जो अतिहि मित्रसों
द्रोह ॥ येषट अवगुण मृत्युसम लागिमारताजिमिरोग । इन्हेंजी-
तिबो सुखदहै कहत भूपबुध लोग ॥ ठकुरसोहाती वचनकेश्रो-
ता बकताभूरि । दुर्लभ अप्रिय पथ्यके श्रोता बकतादूरि ॥ हम
तुमसों पहिले कह्यो जुवा अनरथमूरि । तुमको लागो अप्रिय
अतिगहे न पथ्य बिसूरि ॥ करणदुशासन शकुनि के ठकुर सो-
हाती बैन । प्रियलागे ते पथ्य सम अबबाढ़ि करत अचैन ॥
भृत्यभक्त हित रतनपहँ जे न करत हैं कोप । आपदमें सेवत
तिन्हैं ते सिगरेगहिचोप ॥ जो भृत्यन पीड़ितकरतकरत पूर्वधन
गोप । मिथ्याबादीतीनि बिधिकै अमात्यकृतलोप ॥ अभिप्राय
गुणि करत जो कारज हितलखिनित्य । हितबकता पटुशुद्धमति
कृपापात्र सो भृत्य ॥ हुकुम न मानै दुष्टमति उत्तरदायकजौन ।
अभिमानीनिन्दक असति त्याज्य भृत्यषटतौन ॥ कवित्त ॥ अम-
रषहीन अरिधरष बिहीन राखैरणको हरष उतकरष उभरता ।
धरमी पराकरमी सु परमै अभरमी औ शुद्धसाधुकरमी त्यों बाक
तत्वधरता । लालसी हुकुमको अनालसी अरोगदक्ष गोपीना-
थ स्वक्षमति रक्षक अक्षरता । लाजके जहाज औदराज काज
करऐसे भृत्यको समाज राखे राजा राजकरता ॥ दोहा ॥ होइ

सगुणकै अगुणनर भूपति मानत ताहि । सब गुणियनते स
ससो जगत सराहत ताहि ॥ दुष्ट अकरमी अदयअरि नि
भाषनहार । उन्मादी अरु बानरहि बसन न दीजैद्वार ॥ अ
निबन्धसहायहै अर्थ सहाय निबन्ध । बिनुअन्योन्य न सि
यथा पंगुअरुअन्ध ॥ औरनकोचाहतबुरो निजभल चाहत
न । ईश्वरकरत न तासुफलभ्रष्टजातनरतौन ॥ सुमतिसत्यब्य
सायगुण जामें धीरजधर्म । परहितरतको भलसदा गहै न को
भर्म ॥ पांडवतेबिग्रहभये निरखो दोष अनेय । ब्यथितहोतजा
सुमनहरषत शत्रुअजेय ॥ भीष्म करण कृप द्रोणसुतसहतो स
शतभाय । प्रीतिकरैं पांडवनसों तो बिभूति अधिकाय ॥ ब्या
बिपिनसम परस्पर रक्षितह्वै युगभूप । जीति भूमिसागर प्रभु
लहैबिभूतिअनूप ॥ अर्थसिद्धिजो चहतसोपालतसुधरम का
बिना धर्म्म नहिं होतहै अर्थसिद्धि यह मर्म ॥ राजपुत्र ति
स्वामि अरि अरु आयुर्बलभोग । इनकोकछु बिश्वासनहिं
प्रारब्ध सँयोग ॥ दारुअगिनि धर्षपालहैं काढ़िजारत बनस
प्रबल बन्धुपीड़ित भये नाशत तथा सगर्ब ॥ यथा गृहीको
मेंहै अतिथिनको ब्यवहार । तथा नृपनको धर्म है बन्धुन
सतकार ॥ लवण तेल तिल मास मधु अरुन रंगको चीर
सिद्ध अन्न गुणगन्धसब गाय दही घृत क्षीर ॥ फलाशाक
बेचिबो द्विज क्षत्रिहि अघमूल । तेहिप्रकार परधन हरब दु
दिशि दायक शूल ॥ बुद्धिमानसों बैरकरि दूरहुबसै अँदेश ।
द्धि बाहुसों पकरिते बधत न राखत लेश ॥ तासुकरै बिश्वा
नाहिं जासों कछु उसवास । जासों नहिं उसवास तहँ उचित
अतिबिश्वास ॥ बसत काठमें आगिनि तिमि क्षमावान मति
मान । मंत्रतत्त्व राखताहिये लखन न पावत आन ॥ चारिच
करि लखत जग कहत न करिबो जौन । कार्य सिद्धि जा
प्रगट अबल भूमिपति तौन ॥ हीन प्रकृतिको मित्रहू सुनन





पावै मंत्र । करै सुमंत्र एकान्तमें तिमि गोपै जिमियंत्र ॥ कैईर्षा
सुरोषबश करै न अनुचित कर्म । सुमतिनको मतसुनिकरै जौन
अनाशक मर्म ॥ देशकाल तत्त्वज्ञ अरु हानि लाभ ज्ञातार ।
प्रिय बचनी धरमी नृपति बरधत रहतउदार ॥ पद्धरी ॥ नहिं
क्रोध क्रियाबल बिरथ जासु । सोभूपभूमिकृत भूबिलासु ॥ अट-
विकृपा जुजाकर बिरथरूप । जिमि तियहि खंड तिमि प्रजन
भूप ॥ अरिल ॥ धन गुणतप वय बृद्ध सुबरणित । अरु कुलीनजे
धर्मकरत नित ॥ इनकरसुबचन दायकशुभगति । तिनकर करत
निरादर निरमति ॥ दोहा ॥ धृति शम दम शुचिता दया साति
प्रिय सुबचननेम । आनँद बर्द्धन शमनअघ दुहुँ दिशि दायक
क्षेम ॥ बिनादोष कोपत रहत तासुकोपअरितासु । दोषौ लहि
सुबचन कहत जगत तासुहित आसु ॥ हीनबुद्धि राजा जहां
मंत्री धूर्त्त अजान । कुशलनहींतिहि राज्यमाधि आपद भरत म-
हान ॥ मौक्तिकमाला ॥ पण्डित सो जो अरथहि साधै । मूरुखसो
टेकहि अवराधै ॥ हानि न सूझै बिरधि उमाहै । भू चखदै द्यो
निरखनचाहै ॥ सोरठा ॥ चाहत अति ऐश्वर्य दुरयोधन अम-
रष भरो । बढ़ो कौन नृपबर्य प्रबल बन्धु सों बैरकरि ॥ भ्रमरबि-
लसिता ॥ याको भोजा क्षणमधिं जनमे । रोये जम्बुकगण तेहि
क्षणमें ॥ मैं भाषो जू तुमसन तबहीं । याके नाशे जन सुख स-
बहीं ॥ दोहा ॥ याके मारे बचाहिंगे सुतनिनानबे जौन । याहि
जियाये याहि सहित मरिहैंसब बलभौन ॥ सुग्वी ॥ सो नहिंमानो
तुम ममबानी । तासुदशा सो अब नियरानी ॥ है अबहीं सो
आनँददानी । जो हठ छोड़ै नृप अभिमानी ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥
सोरठा ॥ तुम सिखवत हित पर्म तुम समानमतिमानको । गहि
कठोरहठ कर्ममोसुत नहिंचाहत तजन ॥ बिदुरउवाच ॥ बिद्याधर ॥
मैंजानेहौं आगेते सो राजा जैसो । सोमैं भाष्यो मान्यो नाहीं
भोगो तैसो ॥ कालैपाये वाके ह्वैहै कालैवैसो । कालैबोलै कालै

छोड़ै कालैऐसो ॥ दोहा ॥ तऊहमैं कहिबोउचित तुमकहँ क
बोतौन । जाते दुर्योधन तजै ज्ञातिभेद हठजौन ॥ गोरीवर ॥
बन्धुन पालेबरधै सोहितराचो । जो बन्धुन नाशे नहिं व
वहकाचो ॥ ज्योंतन्दुल रहैनाहिं जो कंचुकहीनो । जो बन्
पालै नृपसोई परवीनो ॥ दोहा ॥ दुर्योधन पूरबकियो हठग
जो अपराध । सोअबतुम लोपितकरो करिसुनीति अवरा
हौ प्रवीण कुलवृद्धतुम गहौकुशल यशगैल । बरिआई ब
सुतहि तजैबैर बढ़फैल ॥ लवुदीपक ॥ नौनिहरै अयशक्षमा
धहि मेटै । बिक्रममेटै अनर्थकारज मेटै ॥ सताचार साधु
कुलक्षण खोवै । गोतसोत पालिबो सुआनँदभोवै ॥ दोहा
हिये कपट ऊपर अमल जिमितृण छादितकूप । तिनकहँ
अनकीजिये ते दुखदायकरूप ॥ कटुबचनी मूरख छली
अधर्मीजौन । सहसाकरमी पापरत हैं दुखदायक तौन ॥ नं
पण्डित धर्मरत प्रेमीशूर सुजान । मित्रकीजिये तिनाहिंजे शु
सुभावमहान ॥ गन्धान ॥ सालसदीन प्रकृतिजो कटुबाणीबोलै
बिनु उत्साही नास्तिकी जोरमानता घरओलै ॥ दयावान
रमी शुचि जो ब्रत पाल अलोलै । ताकेगेह रमा निवसित
नहिं कबहूं डोलै ॥ दोहा ॥ अग्निहोत्रफल वेदको तियको पु
सुजान । बहुश्रुति ताको धर्मफल है धन को फलदान ॥ ज
अधर्मकरि जोरिधन करतदान मख कर्म । होत नहीं परलो
के अर्थतौन यह मर्म ॥ नीर क्षीर फलमूल अरु औषध हवि
अनूप । द्विजगुरु आज्ञाकृत करम नहिंनाशत ब्रतरूप ॥ चौ
कृतघ्नी धूर्तको नहिंकबहूं बिश्वास । करतजौन बिश्वास सो प
वत नहीं सुपास ॥ प्रवंगम ॥ शोचनीय निर्गुण नर जौन हैं । शो
चनीय मैथुन बिनु भौनहैं ॥ शोचनीय परजा धन क्षीण है
शोच्यदेश नरपाल बिहीनहैं ॥ दोहा ॥ देहिनको ज्वर पथ गम
तियको ज्वर बिनुभोग । हियको ज्वरहै कटुबचन पठज्वर मू





सँयोग ॥ हैंजितनो सबजगतमें मणिधन तियसमुदाय । बिनु
संतोष न एक कहँ तृप्तिहोत सबपाय ॥ सिंहावलोकन ॥ फिरिफिरि
तुमसनकहियतु भिरिभिरि । भिरिभिरिबलसबलरिहैंथिरिथिरि ॥
थिरिथिरि लरिजब परिहैं गिरिगिरि । गिरिगिरि करिहै रोदन
फिरिफिरि ॥ दोहा ॥ जातेहोत अधर्म तेहिधनहितजत हितला-
गि । तेसुख निवसत उरगजिमि जीर्ण कंचुकहित्यागि ॥ जोधन
जोरत धर्मगहिचरचनीति पथचाहि । सोधन बरधन थिर रहत
सुमति सराहतताहि ॥ सुखअरथिहि विद्यानहीं बिद्यार्थिहि सु-
खनाहिं । बंधुबिरोधिहि कुशलनहिं कुशलबंधुहितमाहिं ॥ कान्ता ॥
आतमा येह । सरित अछेह ॥ पुण्यसुघाट । गुणजलपाट ॥ दोहा ॥
सत्यदया जहँकूलहै काम क्रोध जलग्राह । करि धीरज नौका
नृपति तरौ सहित उत्साह ॥ दशाक्षरिक ॥ लिङ्गउदरतौ धीरज
ते । करपद कहँ चख नीरजते ॥ चखश्रुति रक्षैमानसते । मन-
हिकरम शुचि दानसते ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण क्षत्रीवैश्यअरु शूद्र
नहीको धर्म । भूपातिसब तुमसोंकहे जोभूपनको कर्म ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥
चकद्वा ॥ बिदुर कहततुम सांच । दुर्योधन मतिकांच ॥ नहिंजा-
नत हित नेक । शठठानत हठटेक ॥ हमसब जौंनततौन । अस
करि बरधत कौन ॥ दोहा ॥ पैहम सांची कहतहैं अपनेजियकी
बात । दुर्योधनके निकटमम सुमन बदलि शिथिलात ॥ कहत
गहतकछु बनतनहिं रहत बनतहै मौन । रहत हियो सुखबहत
लखि सहत लहत दुखजौन ॥ सोरठा ॥ मेटैमिटैन तौनजो बेधा
निरमित किये । भाविहि टारैकौन हरि इच्छा बलवान अति ॥
इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिबिदुरधृतराष्ट्रसंबादेदशमोऽध्यायः १० ॥
॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ बिदुर सुनाये आपुजू तुममहा अनूपम
नीति । और कहोजो नहिंकहे वार्त्तापरम पुनीति ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
जयकरी ॥ यह सुनिकहे बिदुर मतिमान । सुनोभूप धृतराष्ट्र म-
हान ॥ हमहैं शूद्रयोनि तेहिचार । हमैं न वेदतत्त्व अधिकार ॥

सनत्सुजात मुनीश महान । कहिहैं तुमसों सहित बिधान
इमिकहि कीन्होंध्यान बिभात । तबतहँ आये सनत सुजात
उठिपूजे धृतराष्ट्र नरेश । कुशल प्रश्नकीन्हें सबिशेश ॥
क्षत्ताकरि बिनय प्रणाम । मुनिसों बोले बचन ललाम ॥
वार्त्ता हिय घरकोदीप । सुनोचहत धृतराष्ट्र महीप ॥ सो
कृपाकहो समुझाय । तुम अमृत्यु सङ्कलमय काय ॥ यह सुनि
धृतराष्ट्र नरेश । बोले मुनिसों बचन शुभेश ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ सो
हे मुनि सनतसुजात तुमकहँ कहत अमृत्युसब । गुनि अम
हित तात मुनिजन साधत योग बिधि ॥ दोहा ॥ इनमें
असत्य तौ कत तेहिहित उपचार । ताते कहिये प्रगट करिम
अमृत्यु बिचार ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सुनोभूप ये उभयहैं सत्य
मिथ्याएक । मृत्यु प्रमाद अमृत्युहै जहँ मति ज्ञान बिवेक ॥ का
क्रोध मदलोभ ये आसुरि वृत्ति उदोत । तिनसों मोहित प्राणि
गहिजीव मृत्युबशहोत ॥ शम दम साधन करत जे ते सुरवृ
दच्छ । तन तजिकै ब्रह्मत्व लहि बिलसत अव्यय अच्छ
मृत्युजीव कहँ करति है स्थूल देहतेभिन्न । बाघ सरिस ग
खात लखि परत न खिन्न अखिन्न ॥ जिमि अज्ञानते रज्जु
होत उरग कोभान । तिमि प्रसाद अज्ञान कहँ मानत मृ
अयान ॥ जनम मरणतो तासुहै कारण एक अज्ञान । ताही
अज्ञान कहँ मानत मृत्यु सुजान ॥ कितै अन्य अज्ञानते यम
मृत्यु गुपिलेत । पितृलोकमें यमबसत कर्म देखि फल देत
यमआज्ञावरती प्रबल कामलोभ मदक्रोध । मृत्युरूप ये जन
कहँ अनत न कीजै सोध ॥ कै ममत्व बश चरतगहि बरजि
कुत्सित गैल । आत्मयोग नहिं लहतते भ्रमत भूमि नभ शैल
स्वर्गादिकको कामगहि करब मखादिक कर्म । सोतन तजिदि
लहतनाहिं लहतमोद पदपर्म ॥ शब्दस्परशरूप रस गन्ध वि
षय व्यवहार । हैमोहत इन्द्रियनके भयप्रीति अधिकार ॥ वि





षयीकहँ दुखदेतहै कामक्रोध अतिकाय । याते बिषयनकोतजै
ध्रुव धीरज सरसाय ॥ दुखद जानि बिषयानकहँ निदरि तियाग-
तजौन । मृत्युहि तरिफिरि मृत्युबश नहीं होतहैतौन ॥ कामीजन
लहिकामना औसिनशत जिमि मीन । रजहि धोइत्यागी पुरुष
लहतशुद्धपणपीन ॥ कामनिबिड़तमनरनकहँसोईनरकनआन ।
क्षण सुखलगिधावत अपटु भरे प्रमाद महान ॥ मृत्युन ज्ञानिहि
देतदुखतृणमयबाघसमान । बिनारागजन मध्यरहिमोहितरहत
सुजान ॥ कबित्त ॥ चेतन सुचायजीव चेतन सुभायत्यागि बन्धन
बिनाही भूलिबन्धित सो गहिजात । गतिकीर मरकट कीटकी
है परगट कामक्रोध बिषय बिआध साथ बहिजात । जन्ममृत्यु
इनहींते जायमान जानि ज्ञानी सोईहौं सुबाणी रटि मृत्युतेनि-
बहिजात । मृत्युहै अज्ञान ते अमृत्युज्ञान गिरमात ज्ञानऔ
अज्ञान ये अमृत्यु मृत्युकहिजात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ मृत्युअ-
मृत्यु बिधान मधि सुमुनि कहोजो मर्म । बन्धनकर्म मखादिको
ज्ञान मोक्षपद पर्म ॥ वेदकहत मखकर्मकरि ब्रह्मलोकपर्यन्त ।
लहि लहि मोदत जीव रहि बरस हजार अनन्त ॥ ब्रह्मलोक
पर्यन्तको वासकर्म जोदेत । तौकत दुर्घट ज्ञानहित तपत मोक्ष
केहेत ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ कबित्त ॥ इन्द्रलोक आदिलोक प्रापति
समुझिश्रेय करि मखकर्म उतजाय ते बिभात हैं । सिगरे अपटु
ते रजोगुणी सकाम महा कामबन्ध बँधेफिरि आवत औ जात
हैं । इन्द्रलोक आदिलोक पतिहूबो जानैतुच्छ ज्ञानी सतोगुणी
जे अकाम अवदातहैं । ब्रह्मके दरशते सरसजानि योगसाधि
जायपरमातमाको आतमा कै जातहैं ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ ज्ञान
योगरचि होतहै जीव ब्रह्ममें लीन । जीव ब्रह्मते भिन्नकै जीव
ब्रह्महै ईन ॥ ब्रह्मआपु जौजीव कै चरत चराचर देह । कौन
काजहित कौनको लहिशासन केहिनेह ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ जीव
ब्रह्मके भेदको मन सब दोष महान । जल तरंग घट मृत्तिका

सरिस उपाधि निदान ॥ अगणित शशि लखि परतहैं जिमि
अगणित घटमाह । घटफूटे फिरि एक शशि तिमिसमुझो न
रनाह ॥ जिमितेहि शशिते सकलशशि भाषताभिन्न अभिन्न
तथाब्रह्म जगजीवकी है गति खिन्न अखिन्न ॥ धृतराष्ट्रउवाच ।
सुमुनि परोयह मोहिं गुणि सुनि तो बचन अनूप । ब्रह्मजी
ये उभयहैं कारण कारजरूप ॥ कारज मिटे उपाधिके होतका
रणै आम । भूषणलहे बिनाशके लहत कंचनै नाम ॥ यहि
प्रकारहै सत्यजो कहे अमृत्यु प्रभाव । अबहै संशय एकमुनि
करिये तासु दुराव ॥ दान मखादिक कर्मकछुकछु रागादिकपा
करत तास वृत्तान्तसो कहोप्रगट करिआप ॥ तेहिं पापहि बि
नाशत धर्मकै तेहि धर्महि पाप । जानिपरत नहिं मोहिंहै अ
धिक कौनको दाप ॥ सनतसुजातउवाच ॥ सुनोभूप दोऊ अमि
किये बनतहै भोग । हैनाशक इन दुहुंनको शुद्धसुज्ञानसुयोग ।
धृतराष्ट्रउवाच ॥ जानो बन्धन पापअरु कामक कर्म अरोक । अ
कहिये द्विजबरणको जौन सनातन लोक ॥ सनतसुजातउवाच
यमदम आदिक योगजे साधनकरत अभंग । तेतनतजि बि
लोक लहि पूज्य होत बिधिसंग ॥ ज्ञानईक्ष उत्कर्षमख कर
जौनमनलाय । देवलोकसो लहत फिरि मोदत ज्ञानहिपाय ।
बर्ण आश्रम धर्मगुणि चरत सुकर्म यथेष्ट । ईक्षत स्वर्ग न ज्ञा
ते साधारण नहिं श्रेष्ट ॥ जयकर्गा ॥ कितेमनस्वी योगीदक्ष । कर
सुब्रह्मचिन्तवन स्वक्ष ॥ शुचि सम्पन्न गृहीघर जात । सि
अन्न पावैं सो खात ॥ मृगवत रमत बिपिनमें मोदि । नहींग्रा
मधि रहत बिनोदि ॥ गुणत न कर्म अकर्म बिधान । योगी तौं
प्रशस्त महान ॥ भिक्षाहेत गृहीघर जात । निजपांडित्य प्रग
करिखात ॥ नहिं प्रशस्त संन्यासीतौन । अबसुनिये ब्राह्म
गति जौन ॥ सताचार रत रहत सदैव । तत्त्वचिन्तवन भूल
नैव ॥ ज्ञातिमध्य यहि बिधि करि बास । शुचि कर तव नि





करत प्रकास ॥ गहत न ईर्षा गरबनिदान । ब्राह्मणसों अश्रेष्ठ
महान ॥ दोहा ॥ अन्यदेहते आतमा करता जानत ताहि । कौन
पापनहिं करतसो तस्कर कहिये जाहि ॥ सताचार रत शुद्ध
कबि शुचि असंग्रही जौन । श्रम बिहीन दृढ़निश्चई आतमा
ज्ञानी तौन ॥ रहित सर्ब्ब बिषयानसों शुद्ध जासुहिय गेहु ।
आत्म दरशी तौनजेहि श्रवणादिक सों नेहु ॥ अश्वमेध आ-
दिक सुमख करता आनँद चाहि । ब्रह्मज्ञानी सुपटुजो ताहि
सदृश सो नाहि ॥ मान आरयव सत्यदम ब्राह्मी श्रीशुभदाय ।
श्रीबिद्या अरु शौचये मोहहि देत दुराय ॥

इतिश्रीउद्योगपर्बणिसनत्सुजातीयेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ कहौ मौन केहि हेत अरुहैका मौनसचेत ।
का लक्षण है मौनको मौन मौनता देत ॥ मौन आचरत कौन
बिधिकहो सुमुनि समुझाय । पांचप्रश्न गुणमौन मधिनहींमौन
रहिजाय ॥ सनतसुजातउवाच ॥ जोअप्राप्त मन बचनकरि तासुप्राप्त
हितहेत । बचन आदि इन्द्रियनको निग्रहमौनसचेत ॥ अन्तर
बाह्य प्रपञ्चकोकरिबो जौनअभान । सोलक्षणहै मौनको सुनो
भूप मतिमान ॥ भयेअभान प्रपञ्चको मिलत पदारथ तौन ।
जोअप्राप्तम न बचनकरिमौन देतइमि मौन ॥ जो अप्राप्तमन
बचनकरि ताको करिबो भान । प्रणवद्वार ह्वै मौनको गुणिये
तौनबिधान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ पापकरत इन्द्रियनबश जानत वेद
न मौन । वेदतासुपापहि हनत कैनहिं कहियेतौन ॥ सनतसुजात
उवाच ॥ सुनोभूमिपति कहतहैं पूछततासो भेद । मौनशक्ति सा-
धनबिना ताहि न रक्षतवेद ॥ अन्तकालमें वेदतेहि त्यागत है
तेहिभाव । जिमिसपक्ष पक्षीतजत खोथहि लागेदाव ॥ धृतराष्ट्र
उवाच ॥ बिना धर्मपालनाकिये जो नहिं रक्षतवेद । तौद्विज रटि
रटिवेदश्रुति नाहकपावत खेद ॥ वेदपाठकरि पुण्यकै द्विजपा-
वत बिधिलोक । यह सुबचन तौ ब्यर्थकाकहिये आनँदओक ॥

सनत्सुजातउवाच ॥ वेदपढ़तनाहिं चरतहै वेदउक्त अनुसार ॥ व्यर्थ
तासुपढ़िबो सकल बिनामान उपचार ॥ वेदनको अभ्यासकरि
व्रत मख आदिककर्म । चरतपुण्यलहि तरतसो चित्तशुद्धकरि
पर्म ॥ व्रतमखकरिजो नहिंलहत चित्तशुद्ध सहज्ञान । तउस्व
र्गमधि भोगकरि फिरिमहिलहत निदान ॥ जोजानौ अध्ये
अरु अध्यापन तपरूप । कतनाहिं रक्षत पापसों तौयह सुनि
भूप ॥ अबिद्वानबिद्वानसब तपकृत दोयबिधान । अबिद्वानदि
वलहतहै ज्ञानलहत बिद्वान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ एकतपहि द्वैबिधि
कहत गुरुतालघुताराखि । दूरिकरोसंदेहममतासु भेदमुनिभा
खि ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ हैअसमृद्ध सकामतपअबिद्वानकृततौन
तपनिष्कामसमृद्धहै पण्डितसाधतजौन ॥ सुनोभूपतपमूलसब
वेदबचनसिद्धांत । कलमषसहकलमषरहितइमिद्वैबिधिहेदांत
धृतराष्ट्रउवाच ॥ तपकलमषमयकौनसोमुनि कहिये समुझाय । जे
हिबिहीन तपसाधिद्विज लहैस्वर्ग सुखपाय ॥ सनत्सुजातउवाच
छप्पै ॥ द्वादश कलमष होतभूपसो मनदै सुनिये । काम क्रोध
अरु लोभमोह अतृप्तीगुणिये ॥ अदय असूयामान शोकईह
इर्षापुनि । परनिन्दाकी बाणिदोष द्वादशलखिये सुनि ॥ येएक
एकअनरथ करण जेहिबिधि ब्याधा मृगणकहँ । जेइन्हैंत्यागि
साधत सुतपतौन अकलमष सुतपतहँ ॥ अबद्वादशव्रतसुगुण
कहतसो सुनुनरनायक । धर्मसत्य दमसुतप अनिरषा लज्जा
चायक ॥ अनसूयाधृति क्षमादान मखवेदश्रवणरति । येद्वादश
व्रत परम सरुचि साधत जे शुचिमति ॥ तेअति प्रवीण द्विज
बरण महँ सबजगशीक्षण योगगुर । सोदेहधरे सानँद लखत
मानवगणमें परमसुर ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ चारिवेदपढ़ि गुणि
किते अरु पुराणइतिहास । नामआदि परपंचतेतासअधिकपर
कास ॥ ऐसोजोहै ब्रह्मातिहि जंगमथावररूप । कहतमहासिद्धा
न्तकरिसुनुऋषिबर मतिरूप ॥ देहपुरुषमानतकिते वेदहिपुरु





अभेद । महापुरुष छन्दोपुरुष मानतचारि अखेद ॥ क्षरअक्षर
उत्तमहिजन मानतकितेप्रधान । तेत्रिवेदहैं जगतमेंतापससहि-
तबिधान ॥ मायाकारज देहसोक्षरअक्षरसो जीव । इनदोउनते
अन्यसो उत्तमगुणमतिसीव ॥ कितनेमायाब्रह्मकहँ मानततौन
द्विवेद । एकब्रह्मकहँ गुणतसो एक वेद तजिखेद ॥ उतपादन
और समाधिपै उभय अवस्था बीच । मानतहैं अद्वैतमत अ-
न्नृच तौनअमीच ॥ येसब तिनकेबीचहम गुणैब्रह्मबिदकाहि ।
कहिये सनतसुजातमुनि संशयमेटव चाहि ॥ सनत्सुजातउवाच ॥
सत्यस्वरूपी ब्रह्मके बिनुजाने बहुवेद । एकब्रह्म गुणिपरत तब
सिगरे भेदअभेद ॥ परअनन्दके ज्ञानबिनु लघुअनन्द अभि-
लाखि । दान यज्ञ अध्येननर करत लोभ अति राखि ॥ करत
यज्ञ दानादि नर करिसुजौन संकल्प । थिरततौन संकलपमधि
जेहिबिधि अल्पअनल्प ॥ सत्यानन्द स्वरूपते भिन्नहोत नहिं
जौन । सोई ब्राह्मण ब्रह्मबिद सुनो भूप मतिभौन ॥ ब्रह्मतत्त्व
जाने बिना नहीं तत्त्वबिद वेश । ताते सतगुरु आसरै गहिबो
उचितनरेश ॥ स्वच्छ बिचक्षणतत्त्व बिद शुभलक्षणसों युक्त ।
संशयछेता शुद्धमति सो पटुसतगुरु उक्त ॥ पढ़ैपढ़ाये बनबसे
मुनिमतिजानोभूप । ज्ञातापरमानन्दको ज्ञानी सुमुनि अनूप ॥
देहादिकमें आतममति कोनाहिं राखतलेश । सोईब्राह्मण ब्रह्म-
बिद यह सिद्धान्तनरेश ॥ नितिमम अनुभव सिद्धशुचि शुभ-
दायकमतयेहु । सोहम तुमसों कहतकरि तुमपै अधिकसनेहु ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिसनत्सुजातीयेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ ब्राह्मी सुबचन शुभद जो तुम भाषत
मुनिराज । ताहि जानिनाहिं जानिबेको कछु औरसमाज ॥ सनत्-
सुजातउवाच ॥ बारबार बूझत सुनतमुदितहोतक्षितिकन्त । ब्राह्मी
बिद्यागुह्ययह हैअति महादुरन्त ॥ ब्रह्मचर्य व्रतधारिकै साधन
कियेअनूप । सुनेनहियमेंबसातिनाहिं सिद्धदेतिअनुरूप ॥ धृतरा-

ष्ट्रउवाच ॥ विद्या शुद्धसनातनी बसहि आत्मासंग । दुर्लभ तासे
प्राप्ति कत मुनि कहिये सो ढंग ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ सत्यब्रह्म
आत्मत्व ते है देहस्थ सदैव । शुद्धज्ञानके उदय बिनु प्राप्तहोत
है नैव ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिद्या शुद्धसनातनी प्रगटति साधे जा
हि । ब्रह्मचर्यब्रत तौनअब कहिये सुमुनि सराहि ॥ सनत्सुजात
वाच ॥ बसिआचार्य्य योनि में अकपटसो वागर्व । करै आपने
दूसरो जन्मपूर्व तजिसर्व ॥ यथा मूंजते करतहै सीकिहि जु
निहारि । तथा देहते आत्महि न्यारोकरै बिचारि ॥ देह जन्म
को देतहै मातापिता सकर्म । अजर अमरता देतहै बिद्यागु
सधर्म ॥ द्वैतबुद्धि भयतेकरत रक्षा गुरूमहान । हैसबते उतकृष्ट
गुरु सेवत शिष्य सुजान ॥ सबिधि सरुचि आचार्य्य कहँ सेव
शिष्य सुजान । ब्रह्मचर्य्यको तौनहै प्रथम चरण सुखदान
गुरुपत्नी गुरुपुत्र कहँ जानै गुरूसमान । ब्रह्मचर्य्य को तौन
द्वतियचरण सुखदान ॥ सेइ सुबिद्या पाइके सेवै गुरुहि प्रशं
सि । ब्रह्मचर्य्यको तौनहै तृतिय चरण शुभअंसि ॥ गुरु आ
श्रम ते अनत नहिं आश्रम करै कदापि । अहङ्कार आनै नहिं
सो चौथो पद थापि ॥ चतुःपदी विद्या मिलत सेये चारोंप
द । जानन को उत्साह यक स्वाध्याई सम्बाद ॥ बुद्धि बिभ
है एक अरु एक बुद्धि परिपाक । बिद्या के ये चारि पद जा
नत सुबुध निशाक ॥ धर्म आदि द्वादश सुगुण आसन प्राण
याम । जप आदिक शुभरूपहैं ब्रह्मचर्य्यको आम ॥ ब्रह्मचर्य्य
इमि साधिके लहि देवत्वमहान । बिलसतहैं ब्रह्मर्षि लहिउत
लोक सुखदान ॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रत साधि करि ज्ञानउदय अभि
राम । नित्य लोक मधि बसति जो शाश्वतआनँद धाम ॥ धृत
राष्ट्रउवाच ॥ निरखे नाड़ी मार्गमधि निरखि परत बहुरूप । लखि
करत सुब्रह्मको कैसो रूप अनूप ॥ सनत्सुजातउवाच ॥ ब्रह्मम
मधि लखिपरत जो शुक्लादिक बर्ण । ब्रह्मप्राप्तको चिह्न सो





हियको आभर्ण ॥ नहीं ब्रह्मको रूपसो ब्रह्मअगोचर पर्म । अ-
ति सूक्षम अस्थूल अतिअनवगाह अतिमर्म ॥ तासों प्रगटत
जगत सब होत ताहिमें लीन । ब्रह्मादिक ब्रह्माण्ड बश माया
के आधीन ॥

इतिमहाभारतदर्पणे उद्योगपर्वणिसनत्सुजातीयेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

सनत्सुजातउवाच ॥ दोहा ॥ भूपति जो गुण दोषहमतुमसों भा-
षे पूर्व । ज्ञानतहां परधान है योग गउणहै गूर्व ॥ अबसाईंगुण
दोष फिरि तुमसों कहियततात । करिकैयोग प्रधानअरु ज्ञान-
हिगउण बिभात ॥ चित्त वृत्ति अनुरोधते त्वत्पदार्थ कहँ जा-
नि । तदनु बेद श्रवणादिते ब्रह्महि निश्चित मानि ॥ पावैपर-
मानन्द तेहि कहिये ज्ञानप्रधान । कहियत योगप्रधान अब सु-
नो भूप मति मान ॥ श्रवणमनन करिकै करै निश्चयब्रह्मअनूप ।
तदनुनिदिध्यासनहिकरि प्रगटितकरै स्वरूप ॥ द्वादशदोषायथा ॥
द्वादशकल्मषकहौं भूपसोमनदै सुनिये । कामक्रोधअरुलो
भअतृप्तिमोहयेगुनिये ॥ अदयअसूयामानिशोकइहाइरषापुनि ।
परनिन्दाकी बानिदोष द्वादश लखिये सुनि ॥ एकएक अनरथ
करण जेहिबिधि ब्याधा मृगनकहँ । जे इन्हें त्यागि साधत सु-
तप तौन अकल्मष सुतप तहँ ॥ अथद्वादशगुणाः ॥ अब द्वादश
व्रत सुगुण कहत सो सुनु नरनायक । सत्यधर्म दमसुतप अ-
निरषालज्जा चायक ॥ अनसूया धृतिक्षमा दानमख वेद अ-
ण रति । ये द्वादशब्रत परम सरुचि जे साधत शुचिमति ॥
ते अतिप्रवीण द्विजबरण मधि सबजगशीक्षण योगगुर । इत
हि धरे सानँद लसत मानवगण मधि परमसुर ॥ तपस्वरूप ॥
श्रुति चख नासा जिह्वा त्वचा इन पंचेन्द्रिन कहँ । शब्दरूप
रस परम गन्ध ये पांच विषय पहँ ॥ कबहुं न लागनदेइ रहै
शम आदिक साधत । तौन सुतप कैवल्ययोग परधान अरा-
धत ॥ ऊर्द्धगतिहि दायकइहौ पैन योगसमअधिक अति । पर-

ब्रह्मलोक भोगवनकी सङ्कल्पित कछु तासुमति ॥ दोहा ॥
सुनो सङ्कल्पते तीनि यज्ञते तात । मानस बाचिक कर्म्म
गुरु मध्यमलघु ख्यात ॥ ध्यानवेद जप अरु हवन लीजो क्र
जानि । तीनी योग प्रधानये ज्ञानऊन शुभदानि ॥ पुरुष
संकल्प कहँ होत चिदात्मा प्राप्त । जैसे राजा भृत्यपहँ
करत गुणि आप्त ॥ ब्रह्मप्राप्तके हेतुको हित यह योग प्रधा
ग्रहण करावै शिष्य कहँ शुचि अचार्य मतिमान ॥ सबअ
यहि योगके अमृतज्ञाता तास । अन्यशास्त्रजे तेहि सुबुधि
नत बचन बिलास ॥ सत्यब्रह्म कहँ प्राप्त नहिं होत कर्मते
होम यज्ञते बालनहिं पावत मोक्ष अनूप ॥ रहै मौन एका
होय निचेष्ट अपार । निन्दा अस्तुति उभय सम गहै योग
चार ॥ यहिप्रकारते ब्रह्मकहँ देखत करत प्रवेश । घटाक
आकाश मधि जैसे मिलत सुभेश ॥ है अनन्तफल जासु
बिद्या परम अनूप । नाशमान फल कर्मते श्रेष्ठ सुनो हे भू
सो बिचारि शुचि ज्ञान हित यत्न करत मतिमान । तुमसों
सिद्धांत हम कहियत आनँद दान ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणिसनत्सुजातीयेचतुर्दशोऽध्यायः १४

सनत्सुजातउवाच ॥ दोहा ॥ जो निश्चेष्टा होबहम पूर्व कहहिंहैं भू
सो श्रुतिमति निश्चेष्ट कहँ जानेहु शून्य सरूप ॥ जासु हेतु
इचेष्टको होय कहत हे तात । करत प्रकाशित शून्य कहँ
सरूप बिख्यात ॥ बीजरूप सो जगतको चेष्टा बर्त्तनहार । सू
प्रकाशित जगत कहँ जासु प्रकाश अधार ॥ तेहि भगवान
नातनहि परखत योगीदक्ष । नहिं अयोगबिद लहत हैं सुनो
परतक्ष ॥ यथा पुरुष संगम सुखहि सुनि प्रौढ़नके पास । न
कुमारिकहि गुणिपरत सो आनन्द बिलास ॥ जेहि सुबीज
होतहै ब्योम परमअभिराम । जासों क्रमते होतहै जगउतप
अक्षाम ॥ कारण पांचौ भूतको सब भौतिक माधि तौन । जी





त्मा परमात्मा रूप बसत मुदभौन ॥ छप्पै ॥ बीजरूप प्रभु जौन
रचत ब्रह्मांड चराचर । सिन्धु सरित शशि सूर सुमन नरभूमि
सरासर ॥ कर्म्म चक्र अनुसार चक्रसम भौतिन चालत । बि-
षय देशगत अज्ञ तिन्हैं दण्डतनहिं लालत ॥ ते इन्द्रीयश्वन
सुबश करि देह सुरथ लावत सुभग । प्रभु तिन जीवन कहँ
करत है परमात्म मुद लाइलग ॥ दोहा ॥ मन बिग्रह करि नि-
रखि जेहि अमृत होत नर अक्ष । तेहि भगवान सनातनहिं
परखत योगी दक्ष ॥ छप्पै ॥ चित्त स्मरण श्रुति श्रवण बचन
रागादि उजागर । शब्द अकाश अनूप श्वसन रागादिक
आगर ॥ संस्कार सुकृतादि समूह द्वादश पूरित । नाम अबि-
द्यानदी ताहि मधि चरत अदूरित ॥ चरितहाँ पुत्र पशु आदि
हित सुफल चहत नहिं तृप्तगहि । ते भ्रमत रहत इंद्रियनके दे-
वनके रक्षित सदहि ॥ करिसुकर्म दिवभोग करत तेहिकर्मधर्म
मिति । करि सुकर्म समभोग लहत फिरि भूमि ऊनगति ॥ यह
बिचारि जो गुणी कर्मको नाश भये सति । जीव मोक्ष कतहोत
नहीं सोसुनो भाव सति ॥ शुभकर्म तौनकरि भोगतहँ शेष कर्म
रा पतत फिरि । बिनु ज्ञान भूपसब करमको नाशहोत नहिं
हत थिरि ॥ दोहा ॥ सर्व भूतमाधि बसत है सोईजीव प्रभुस्वक्ष ।
हि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ छप्पै ॥ जो जानो
चितरूप जीवता लहतकौनबिधि । तौ सुनिये नरनाथ अबि-
द्या वृक्ष परमरिधि ॥ गुणसुपक्ष बिनुईश बिहँग गुणपक्षचाहि
ब । निवसत तापैआइ होतगुण पक्षप्रगटतब ॥ यथा बासना
समत निति नृप जीवत्वउपाधिइमि । बरज्ञान कर्म करि होतहै
नाशबध्वश्रुति कहततिमि ॥ दोहा ॥ सर्वभूतमाधि बसतहै सोई
जिवप्रभु अक्ष । तेहि भगवानसनातनहिं परखत योगीदक्ष ॥
जिमहदाकाशते घटाकाशकोभेद । तैसेमिटै उपाधिकेजीवब्रह्म
रभेद ॥ यथारज्जु में उरगको होतभ्रमात्मकज्ञान । भ्रमछूटे

ते रज्जुभ्रुव जीवब्रह्म तेहिमान ॥ क्रमतेजासों जगतसबश्र
श्रगोचर श्रक्ष । तेहिभगवान सनातनहिं परखतयोगी दक्ष
जयकरी ॥ करै श्रपानप्राणमेंलीन । प्राणैकरैसुमनश्राधीन ॥
हिंबुद्धिबशकरिसुखदाय । बुद्धिहि रहै बृह्ममधिलाय ॥ यहिवि
साधियोगश्रतिस्वक्ष । बृह्महिलखै योगबिददक्ष ॥ दोहा ॥ नि
देहस्थसुबृह्म प्रभु तौकततांहित योग । जोयहमानौ भूपतौत
सुनोप्रयोग ॥ जाग्रतस्वप्नसुषुप्ति येश्ररुतुरीयश्रभिराम । च
श्रवस्था कथित ते चारिचरण गुणग्राम ॥ प्रकट रहतिहैं ती
ये चौथीप्रगट न होत । ताके प्रगटित करनहित करतयोग
होत ॥ सो ब्यापित तिन तीनिमधि नाशक मृत्यु समक्ष । त
श्राराधि सनातनहिं परखत योगीदक्ष ॥ जयकरी ॥ पुरुष श्रं
मात्र श्रतिरूप । हृदिश्रकाश माधिबिलसत भूप ॥ सूक्ष्मदे
कीन्हेंश्रोक । कछूतमधिश्रधऊरधलोक ॥ जाग्रत श्रादिश्र
न माह । प्रापत होतसुनो नरनाह ॥ ताहिननिरखत सूक्ष्म
क्ष । परखतहरषतयोगीदक्ष ॥ श्रपरं ॥ श्रंगुष्ठमात्रजोपुरुषमह
हृदि श्रकाशमधि बसत सुजान ॥ ताहिबियापत हृदिको त
नृपजो ऐसो जानै श्राप ॥ तौ यह सुनो तासु सिद्धान्त ।
इमि मानत योगीदान्त ॥ जीवश्रसाधन साधनवान । लहै
मधि ब्रह्मसमान ॥ जौनश्रसाधन सोहैबध्य । जीवसमाधन
न श्रवध्य ॥ लहतश्रवध्य बृह्मरसपूर । सो सुख लहतन
श्रधूर ॥ यहि बिधि दुःख प्राप्त तेहिबीर । जवा कुसुम जि
भटिक शरीर ॥ जो यहि श्रति श्रानँदकोपक्ष । तेहिपरखत
योगीदक्ष॥ दोहा ॥ इमिदुख ब्यापत जीवको लगेदेहकोलि
जलके हीलें हिलत है जिमिरबिको प्रति बिम्ब ॥ श्रपरं ॥ ल
बृह्मरसपरम सो परखत श्रात्मश्रनात्म । ताहि श्रद्भुत स
सरिस निजहि गुणतपर मात्म ॥ सब शुभकर्मन को मि
ज्ञानमाहिं फलभूप । कछूशेष नहिं रहतहैंजानत प्रज्ञश्रनू





श्रहंब्रह्मइमिकहतमति श्रापुहि जानोहीन । बृह्महोतहै बृह्मबिद
वेदवचनपरवीन ॥ यहप्रज्ञाप्रगटित करतजेहिमधिधीरप्रतक्ष ।
तेहि भगवानसनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ श्रपरं ॥ जोश्रतीत
मनबचनकरिजगजनमादिकहेत । नरबिकारनितियोगसों गम्य
पुज्यतादेत ॥ कर्मतजेकोदेवकानाशकन्यामकईन । योगाभ्यासी
जीवकहँ करत श्रापुमें लीन ॥ जेहि ध्याये नहिं होतिहै हीनमो-
क्षगति श्रक्ष । तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥
केवल मोक्षहि देतहै ज्ञानगुणो मतिभूप । जगप्रपंच दूरस्थस-
ब करत हृदिस्थ श्रनूप ॥ ग्रहण करत संन्यासको शुद्धज्ञानाहित
जौन । बंचकसह सो नहिं बसै निजमन रोपत तौन ॥ मद्यमांस
परतियाहितै उपदेशतसो धूत । श्रति भयदायक कर्ममधि ला-
वत कहि कहि पूत ॥ न मम श्रमृत्यु लखातजो मरणमृत्युकहि
जात । बन्धन मोक्ष हमैं न कछु यह बिचार श्रवदात ॥ निश्चय
जान घटादिमें भ्रम जुरज्जु उरगादि । एकब्रह्म श्राधीन सबक-
हत वेद बिद नादि ॥ सोइ बृह्महम श्रौर नहिं इमि जेहि बिषे
प्रतक्ष । तेहि भगवान सनातनहि परखत योगीदक्ष ॥ ग्रन्थ
भारके बहनाहित ब्यर्थ करतहैखेद । गुरुसुवाक्यते तत्वकोजा-
नब सिगरो वेद ॥ यथा सरितते लेत है जल निजकाजप्रमा-
न । चित्तशुद्ध मति शास्त्र तिमि पढ़ै गुणै मतिमान ॥ जयकरी ॥
पुरुषश्रँगुष्ठमात्र बिन रूप । हृदि श्रकाश मधि बसत श्रनूप ॥
श्रचरज न्यामक शुचिचैतन्य । निति श्रनन्दमय ईश श्रनन्य ॥
सोहम जगत जगत करतार । माता पिता पुत्र भरतार ॥ ब-
र्तमान हम भूत भविष्य । दर्शनीय हम जौन श्रदृश्य ॥ जग
पटमें हम तानाबान । हमहीं श्रात्मा हम श्रस्थान ॥ सबमो
बपुमाधि करत बिनोद । मोहिं ध्याय पटुपावत मोद ॥ दोहा ॥
सूक्ष्मते सूक्ष्म महँ श्रति दुरलक्ष्य श्रखर्ब । सर्ब प्रकाशक
सर्ब गत जानत ज्ञातापर्ब ॥ यहिप्रकारके गुणनयुत परमात्मा

अवदात। ताहि चिन्ति हृदिकमल मधि कृत्य कृत्यकै जात
इतिश्रीउद्योगपर्ब्बेसनतसुजातीयवेदान्तसम्पूर्णपंचदशोऽध्यायः१५
दोहा ॥ सनतसुजातहि आदि मुनि जेहि ध्यावत गहिनेम
तेहि जगपति जगनायकहि जपे लहत सबक्षेम ॥ वैशम्पायन
बाच ॥ कहि सुनीति निजआश्रम गे मुनि सनतसुजात। रजनि
भई व्यतीत तब भयो भोर अवदात ॥ प्रात कृत्यकरि तब
यो सभासदनमें भूप। भीष्म द्रोण कृप आदि तहँ आये सु
अनूप ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि सह कृतबर्मा भगदत्त। जयत
न आदिक सकल बैठे भूपति मत्त ॥ भूरि श्रवादिक बंधु अ
करणादिक सब मित्र। सोदर दुःशासन प्रभृत लैसँग भूप
चित्र ॥ दुर्योधन बैठो तहां बैठे बिदुर उदार। द्वारपाल तहँ
हत भो संजय आयोद्वार ॥ जयकरी ॥ तब भूपतिकीआज्ञापाय
कियो प्रणाम सूतसुतजाय ॥ कहत भयो फिरि बचनललाम
सब वृद्धनकहँ बिनय प्रणाम ॥ पांडव कहे जोरियुगपानि।
था उचित वय बिधिक्रम जानि ॥ बेर बेर सब कहँ सहप्रेम
धर्म शील पालक नयनेम ॥ सुनि बोले धृतराष्ट्र नरेश। संज
अब सो कहौ बिशेश ॥ सुनि तो बचनकह्यो जो पार्थ। संज
सोसब कहौयथार्थ ॥ सुनिऐसे भूपतिके बैन। कहतभये संज
मतिऐन ॥ धर्मभूपकेमतिअनुसार। कह्योपार्थरणधीरउदार
लखिकेशवहि नृपनतनहेरि। सगरबकहतभयउइमिटेरि॥
भूपकेसन्मुखआय। नहिंबचिहैदुर्योधनपाय॥ बन्धुनसहित
क्षितिपाल। असह धृष्टद्युम्नबद्धभाल ॥ इन्द्रहुजीतनयोग्
मर्थ। दुर्योधनको गौरव ब्यर्थ ॥ तातेगुणि निजकृतअपरा
देहिभूमि करिमतअवराध ॥ नातरुगदापाणिभटभीम। अ
नागबल बीरअधीम ॥ सुधिकरि उनको करतबपूर्ब। निज
समुझि गर्ब गहिगूर्ब ॥ गरजि गजनको यूथ सँहारि। मा
दलमधि धसिहि प्रचारि ॥ तबदुर्योधन तजि निजटेक। नि





थिरिहै रणमाहिमें नेक ॥ जबपरबत बेधक ममबान। बरषन
लगिहैं बज्रसमान ॥ जबगाण्डीव धनुषकोघोर। दुसह शब्द
पूरिहि सबओर ॥ मोहितकैहैं भट तजिटेक। तबकुरुपतिनहिं
थिरिहैनेक ॥ द्रुपदसुताके सुवनसुभेव। अरुअभिमन्यु नकुल
सहदेव ॥ बरषणलगिहैं बाणसटेक। तबकुरुपति नहिं थिरिहै
नेक ॥ द्रुपद बिराटसेन रणधीर। सात्यकि और घटोत्कच
बीर ॥ गरजिगरजि शायक झरिलाय। लगिहैं बधन सुभट
समुदाय ॥ तबदुर्योधन तजिरणटेक। नहिं थिरिहै रण महिमें
नेक ॥ मत्स प्रभद्रक भट पांचाल। अरुसंजय रणधीर करा-
ल ॥ जबभिरि करषि कठिनकोदण्ड। बरषण लगिहैं शायक
चण्ड ॥ तबदुर्योधन तजि निजटेक। नहिं थिरिहै रणमहिमें
नेक ॥ सुभट शिखण्डी अमरषपूरि। जेहिक्षण बरषत शायक
भूरि ॥ अगणित हय गज भटबधि डारि। भिरिहि भीष्मसों
ब्यूहबिदारि ॥ तिहिक्षणदुर्योधनतजिटेक। नहिंथिरिहैरणमहि
में नेक ॥ धृष्टद्युम्न जबशायकछाय। महारथिनसुरलोकपठाय ॥
द्रुपद लह्यो वरसों अनुमानि। भिरिहि द्रोणसों गौरव आनि ॥
तब दुर्योधन तजिरण टेक। नहिं थिरिहै रण माहिमेंनेक ॥ इमि
कहि भाष्यो बचन उदण्ड। कृष्णकृपा जय लहब अखण्ड ॥
दोहा ॥ सभामध्य बनमध्यके समुझिकर्म दुखजूमि। बन्धुनसह
दुर्योधनहि मारिलेब सबभूमि ॥ यहिप्रकार अनरथ करन अ-
रथ नगर थितबैन। अरुण नैनकरि कहतभो पारथ बिक्रमऐ-
न ॥ संजयके ऐसे बचन सुनेभीष्म मतिमान। दुर्योधन सों
कहतभे सुबचन सहित बिधान ॥ नारायण प्रभु कै द्विधा नर
नारायण नाम। कहवाये अतिउग्रतप करता बरचस धाम ॥
लहि असुरनसों महत दुख सुनि बिधि बचन अनूप। जाहि
ध्याय आनँदलहे शक्र सुनो कुरुभूप ॥ नारायण हैं कृष्णप्रभु
नर अर्जुनअभिराम। इनसोंजय लहिबोअगमअनरथ आगम

ग्राम॥ रोला ॥बीरपार्थहिरण्यपुर चढ़िजायसागरपार। बिदि
बीर निवात कवची बांधेसाठि हजार ॥ जीतिशक्रहि कि
जेहिखाण्डवहिबनकोदाह। कियोसोईपार्थतब सहबन्धु बध
चाह ॥ तहँहु जो प्रभु कृष्णमारे असुरके समुदाय। शङ्खच
सुगदाधारी तासुसंगसहाय॥ मंत्रमेरोमानि अबतुमकरोसा
द तौन। होयजाते नाशनहिं कुरुबंश बर्द्धित जौन ॥ बंशपा
तुमभये अबकुरुबंश तोआधीन। करौतौन प्रशंस बिधिजो
बंशहोइनक्षीन॥ शकुनि दुःशासन कर्णको मंत्रअनहितजा
महोसम्मतपाण्डवनसोंकह्योमेरोमानि॥भीष्मकेयेबचनसुनि
रह्योभूपतिमौन। कर्णबोलो भूपकोहम अनहित कीन्हों कौन
स्वामिकारय क्षत्रियनको परमधर्म बिख्यात। करतहित कु
नाथकोहम आपकत अनखात॥ कियोप्रथम बिरुद्ध तब उ
कियेकाब्यवसाय। आपुइमिडरपायनाहक कहतओजबढ़ाय
बधब हमसब पाण्डवनकहँ कहत हौंनहिंगोपि। करणके सु
बचन भीषमकहे मनमेंकोपि ॥ सुनोनृप धृतराष्ट्र सूतज कर
जौन प्रलाप। तौनतो सुत नाश करता मंत्रताको जाप
पाण्डवन कहँ बधै ऐसो तीनिपुरमें कौन। बधै कत नहिं कि
जबहिं बिराट पुरमेंगौन ॥ कहाहो तब करण भूपहि गह्यो ज
गन्धर्व। औरके घरखोइबेको गहतहै अबगर्ब ॥ भीष्मके
बचन सुनिकै कह्यो कृप आचार्य। सुनोभूपति करिहि सो ज
कह्यो पारथ आर्य॥ भीष्मके अरु कृपाचारयके बचनसुनि
प। मौनरहि नहिं दियोउत्तर कपटके अनुरूप ॥ फेरिसंजय
कह्यो इमि सूततौन बताव। धर्मकाके बाहुबलसों गहत रण
चाव॥ दोहा॥ वृद्धनृपतिके बचनसुनि संजयकह्यो सचेत। सु
निये जिनके बाहुबल भूपति आनँदलेत॥ भीमअर्जुन नकुल
अरु बिशदबीर सहदेव। सबजग जेला जासु है जाहिर बिक्रम
भेव ॥ धर्म धुरन्धर धर्मनृप बिशद बीररसपागि। इनसुभटन





के बाहुबल मुदित रहत भयत्यागि ॥ सदलद्रुपद क्षितिपाल
अरु नृपबिराट सहसैन। श्वेतशिखण्डी शङ्ख अरु धृष्टद्युम्न
बलऐन ॥ पांचभाय केकय नृपति अरु सात्यकि रणधीर।
इरावाण अभिमन्यु अरु द्रौपदीय बरबीर ॥ धरम धुरन्धर
धर्मनृप बिशद बीररसपागि। इन सुभटनके बाहुबल मुदित
रहत भयत्यागि॥ धृष्टकेतु शिशुपालसुत अक्षौहिणिपतितौन।
सरभनाम ताकोअनुज धनुधर बिक्रमभौन ॥ जरासन्धको सु-
ननृपभटसहदेव अमान। असुर आसुरी सैनसह भीमतनय
बलवान॥ इन्हैंआदि अगणितनृपति सदल सबन्धु समस्त।
अरु यदुकुलपति नृपतिमणि श्रीयदुनाथ प्रशस्त॥ धरम धुरं-
धर धर्मनृप बिशदबीर रसपागि। इनसुभटनके बाहुबल लरन
चहत भयत्यागि ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप ऊबि उससि
बोलतभयो। सुनु गावलि कुलदीप मोहिं न संशय औरको ॥
चौपाई ॥ भीमकठिन दुर्मदरणचारी। गदापाणि करि कुम्भ बि-
दारी॥ शूलपाणि सम बिदित अमाना। बज्रपाणि सम अति
बलवाना ॥ दण्डपाणिसम अरिदलदरता। कुम्भकरण सम
संगरकरता॥ तेहिआड़न लायक ममदलमें। नहिं कोऊ ताके
समबलमें॥ समुझि तासुप्रण ममहिय सूखत। दुर्योधनके मं-
त्रहि दूषत ॥ गदावाहि ममसैन सँहारत। मैं भीमहि देखत
भयभारत ॥ संजयसुनो भीमको लरिबो। है ऊपर गिरिवरको
परिबो॥ अवशिभीम मम पुत्रनमारिहि। दुसहशोक शिखिमो-
हियमारिहि॥ कोऐसो जोबिक्रमकरिकै। बांचिहिभीमसेनसोंल-
रिकै॥ जाकोबधबबिचारिहिसोई।ताहिबचाइसकिहिनहिंकोई ॥
नदकीउलद बायुकीरेला। भीमपराक्रमकोनहिंबेला ॥ भीमस-
मान और मजबूतन। संजयभीम बधिहि ममपूतन ॥ यहगुणि
मोहिं नींद नहिंआवति। दिनदश बढ़िसो शोच बढ़ावति ॥
थाफालगुण अति धनुधारी। परशुरामके समरणचारी ॥ जो

रणकरि शम्भुहि मुददीन्ही । पशुपति अस्त्रकृपालहिलीन्ही
सिगरे लोकपाल हितधरिकै । दीन्हेंजाहि अस्त्र मुदभरिकै
बिद्यासकल द्रोणसों लहिकै । अति अभ्यासकरि करतब
हिकै ॥ जोजयलेत भयो सुरपतिसों । कोबाचिहि तेहि धनु
अतिसों ॥ पारथ सबजग जीतनलायक । तापहँ तासुरथी
दुनायक ॥ दिब्यधनुष गांडीव सोहायो । अक्षयतुणीर बि
प्रदगायो ॥ दिब्यअवध्य तुरग मनगामी । शीक्षक केशव
भुवनस्वामी ॥ प्रबलसब्य साचीसो योधा । कौनकरिहित
अवरोधा ॥ यहगुणिमम हियपूरणदरजन । मूढ़पुत्रनहिंमा
बरजन ॥ कृष्णचन्द्रसों धनुबिधिसीखो । जोप्रद्युम्नसम
धर लीखो ॥ तेहिअभिमन्युहि गुणिमन लरजत । परेमोह
बनत न बरजत ॥ संजय सब नृप भटको मरिबो । सब
नदी रुधिरसों भरिबो ॥ अमरष बश मम सुत नहिं टरिहैं
दल प्रबल अरिसों लरिमरि हैं ॥ बंश नाश अनरथ अवरे
संजय मोहिं परतहै देखो ॥ संजय मोहिं रुचतहै सोई । ज
यह अनरथनाहिं होई ॥ दोहा ॥ यह बिरुद्ध बढ़ि युद्धके भये प
लखि मोहिं । महाप्रलय कलपांत सम सूत सुनावत तोहिं
यह सुनिकै संजय कहे आपुकहे सो शुद्ध । कुशलहेत का
उचित जाते मिटै बिरुद्ध ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै अनखाय दु
धन क्षितिपालमणि । गरबी गरब बढ़ाय कहतभयो निज
नकसों ॥ जयकरी ॥ तातगहौ मति संशय नेक । क्षात्रधर्म
गुणो बिबेक ॥ गहि बहु श्रम करि सेवाशुद्ध । अनुपम ज
गदाको युद्ध ॥ सीखे हमहलधरसों तौन । भीम न कबहूंनिर
जौन ॥ गदायुद्धकरि भीमहि मारि । हम जयलेब देहुदुखटा
परशुरामकोशिष्यअमान । धनुधरकर्णबिदितबलवान ॥पर
बेधक सकतिप्रहारि । अर्जुनको बधकरिहिप्रचारि ॥ इनके
प्रबलअसकौन ।लरिहिआयममसन्मुखजौन ॥यकइसदित





तिसोंयुद्ध । करिसमरहो जौनभटउद्ध ॥ जिहिजीते अगणित
क्षितिपाल । सोभीषम ममपक्षबिशाल ॥ कृपधनुधर अरुद्रोणा-
चार्य । दिब्य प्रभाव अयो निज आर्य ॥ तेहि जीतन कहँ कौ-
समर्थ । तात बिषाद करतहौ ब्यर्थ ॥ अश्वत्थामहि जीतन
मा । को जगमें करि अस्त्र प्रयोग ॥ शल्य जयद्रथ शकुनि
रेश । अरु बाह्लीक आदि भट वेश ॥ दुःशासन आदिक मम
भाय । तिनसों अधिक कौन दृढ़वाय ॥ असुर अलंबुष अरु
भगदत्त । जीतै तिन्हैं कौन भट मत्त ॥ इन्हैं आदि अगणित
क्षितिराज । पाण्डव गणसों अधिक दराज ॥ भटनसहित मम
जयके चाह । गहेमहारणको उतसाह ॥ एकादश अक्षौहिणि
सैन । है मम संग जगतके जैन ॥ सातक्षौहिणीसेना अंग । है
पाण्डवभूपतिके संग ॥ काहे उन्हैं अधिकगुणि तात । कहतस-
मामधि शोचित बात ॥ हम बहुदिनसों भोगत भूमि । द्विजसम
दिन ये बितये घूमि ॥ वे निर्द्धन हम धनी अमान । सबबिधि
सों सँग बिजय समान ॥ पोचशोच त्यागहु क्षितिनाथ । शतधा
गुणो बिजय ममहाथ ॥ दुर्योधन केऐसे बैन । सुनि धृतराष्ट्रभूप
लहिचैन ॥ कहतभये कहुसंजय तौन । उतै कितौदल आये कौन॥
सो सुनिकै संजय मतिमान । कहत भयो सुनु भूप सुजान ॥
सात्यकि चेकितानरणधीर । अरु केकयपति अति रणधीर ॥
द्रुपद बिराट सुतनसह भूप । जरासन्धको सुवनअनूप ॥ अरु
नृपधृष्टकेतु बलऐन । एक एक अक्षौहिणिसैन ॥ लैलै उतैआ-
ये सउमंग । चाहत कियो घोर रणरंग ॥ कपिबर श्रीहनुमानहिं
ल्याय । पारथाकियो ध्वजरथ सचाय ॥ दोहा ॥ सिगरे क्षत्री युद्ध
को गहे उमंग अधर्ष । शीघ्र युद्ध करिकै चहत लीबो बिजय
सहर्ष ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहत भयोकरिशोच । नाहक
लरिचाहतमरो दुर्योधनमतिपोच ॥भीष्मद्रोण बाह्लीक कृपअरु
जे कौरव सर्व । युद्धकियो चाहत नहीं अनरथ जानि अखर्व ॥

चौपाई ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै । वृद्ध नृपतिसों बोलो
कै ॥ भीष्म द्रोण बाह्लीकहि आदिक । हैं जितने मम आरि
बादिक ॥ सुनो तातनाहिं तासु भरोसे । हम इमि संगर की
होंसे ॥ हम अरु कर्ण दुशासन लरिकै । बध, अरिबिजय
प्रणधरिकै ॥ नाहिं मम जीवत पृथ्वी लहिकै । करिहैं भोग
सुत रहिकै ॥ कै हम उन्हैं बधब रणमाहीं । कैवे हमकहँ सं
नाहीं ॥ वे महि लहिहैं हम कहँ बधिकै । हम बधि उनकहँ
बरधिकै ॥ अब मत और कहै मति कोई । होइहि सो जो हो
होई ॥ यह सुनि नृप अति दुखसों नहिकै । बोले क्रोधानल
दहिकै ॥ मत्त गजनके कुम्भ बिदारत । गणे गणेमम सुभट
हारत ॥ शोणित भरी गदा फरकावत । असुर सरिस भीम
लखि आवत ॥ अर्जुन सात्यकिके शरझरमें । परिलहि अ
णित शायकधरमें ॥ तबमम बचनतातसुधिकरिहौ । नहिंअ
हीं निजमनमें धरिहौ ॥ इमि कहिकै धृतराष्ट्र महीपति । क
सूतसों बाणी दीपति ॥ संजय तौन भाषु अब मोसों । अर्जु
कृष्ण कहै जो तोसों ॥ सो सुनिकै संजय बरज्ञानी । कहतभ
केशवकी बानी ॥ सामदण्ड अरथनमैं राखे । केशव यहिवि
मोसों भाखे ॥ दोहा ॥ संजय वृद्धमहीपसों कहियोमम सन्दे
है सम्मत कीन्हे बिना अनरथको अन्देश ॥ यज्ञ करैं परिव
को लखैं कुशल आनन्द । गहि सुनीत गोपित करैं पूर्ब कर्म
मन्द ॥ जगजेता सुर असुरको अर्जुन बीर अमान । रथच
कै गांडीवधनु को करिहै सन्धान ॥ तब भिरिकै तासों करै ति
रक्षण बिधि जोहि । नहिं धनुधर भट प्रबल अस देखिपरत
मोहि ॥ सोरठा ॥ धरै बाहुपर भूमि क्षणमें दाहै जगत सब । ति
हि पारथसों भूमि लहै जीति मानुष कहा ॥ एक पार्थ रणधी
करि बिराट पुरमें समर । सब कौरवनसुबीर जीत्योसो जान
जगत ॥ ताते कह्यो बुझाय भीष्म द्रोण कृपके सुनत । गु





कुललक्षणन्यायदेहिंसुभूमियुधिष्ठिरहि ॥ केशवकेयेबैनसुनिस-
र्वपारथहँस्यो । भीमसेनबलऐनलखत भयोनिजभुजनतन ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयसम्बादोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुनिसँदेश यदुनाथको गुणिलै ऊबि
उसास । दुर्योधनसों कहतभो वृद्धभूपमतिरास ॥ जयकरी ॥सुनो
तात बलअबल बिचारि । करिबोउचित बैर प्रणधारि ॥पांडव
सबबिधि प्रबलअमान । पारथभीम महेन्द्र समान ॥ गुणि
उनको बिक्रम व्यवसाय । नींदन बसति पासममआय ॥शोच
न तजत एकक्षण संग । गुणिगुणि शिथिल होत सब अंग ॥
भीष्मद्रोण कृप आदिकजौन । तिनकहँ तुमवै समक्षितिरौन ॥
रणमें तो अनयबिसूरि । नहिंगहिहैं निरदय प्रणभूरि ॥ कर-
षतधनु गांडीव उदण्ड । कार्त्तिबीर्य सम पारथचण्ड ॥ औशि
करब सम्मत मतमोर । समुझितात त्यागोहठथोर ॥ यहसुनि
दुर्योधन बलऐन । कहत भयोकरि रातेनैन ॥ तजो शोच धरि
धीर नरेश । चिन्ता नाशति काज बिशेश ॥ करैंसुरेशौ तासु
सहाय । तौ न बचै ममसम्मुखआय ॥ सुरगणसों ममअधिक
प्रभाव । मंत्रतेज करतबकेभाव ॥ ममप्रभावपरजनकहँभीति ।
कबहूँ आवत ऐकौईति ॥ मेघअग्नि अहि आतप बात । करि
न सकत कबहूं उतपात ॥ हम सुनीति मधि रहत प्रपन्न । है
हमसों सब प्रजाप्रसन्न ॥ पांडव हमकहँ जीतन योग । जो
होतेकरि अस्त्र प्रयोग ॥ तौरहि तेरह बर्ष मलीन । नहिं बनमें
सहते दुखपीन ॥ पांडव सात्यकि कृष्णप्रशस्त । मत्स और
पांचाल समस्त ॥ ते ममदल सागर मधिआय । जै हैं स-
रित समान नशाय ॥ भीष्मद्रोण कृप शल्य समान । हैं हम
एक न मिथ्या भान ॥ तात तजौ संशयको लेश । हम सब
मारब शत्रु अशेश ॥ दुर्योधनके बचन अमन्द । सुनि भो
कहत कर्ण निरदन्द ॥ भृगुपति के पगपंकज ध्याय । दिव्य

मंत्र मंत्रित शरछाय ॥ हम पांडवन बधब सहसैन । युद्धक
कछुसंशय हैन ॥ भीषम द्रोण आदिक सबवृद्ध । खरे लखैंम
युद्धप्रवृद्ध ॥ जयलीबे को भार उदार । हैमम ऊपरभूमरतार
बैशम्पायनउवाच ॥ सुनि सूतजके बचन अहीन । भीषम बोलेजा
मलीन ॥ कत ह्वै काल बिबश हत चेत । बोलतकुरुकुल नाश
न हेत ॥ तीनिलोकमें ऐसोकौन । रणचाढ़ि जीतैपार्थहिजौन
जासु सहायक श्री यदुनाथ । ह्वै सु सारथी बिलसत साथ॥
तौ पास सर्प मुखबान । द्विधाकरी तेहि पार्थ अमान ॥ तो
समान अनेकनबीर । क्षणमें बधे पार्थ रणधीर ॥ दोहा ॥ भीष
के येबचन सुनि कर्ण कह्यो करिगौर । बिक्रम लखिबेको क
सभासदनमें डौर ॥ तुमह्वैहौ जब शांततब मम बिक्रमउद्दण्ड
लखिहैं सब नृप भटनसह बरषत शायक चण्ड ॥ इमि कहि
उठि सभाते कर्णगयो निजगेह । तब दुर्योधन नृपति सोंभीष
कह्यो सनेह ॥ भीषमउबाच ॥ चौपाई ॥ सत्यप्रतिज्ञाकर्ण लखान
प्रथम युद्धधुर निजपर आन्यो ॥ फिरि ममबध उपरांतल
को । प्रण कीन्हो अरिसैन दरणको ॥ हमप्रण करतलेहु सु
सोऊ । सोमति जानै अनुचितकोऊ ॥ दशहजार योधानोस
रथ । हम नितमारब कहत यथारथ ॥ औरौ एक कहतसो
निये । जयको लहिबो दुस्तर गुनिये ॥ यह सुनिकै दुर्यो
भाखे । कत मम जयमें संशय राखे ॥ हम उनसों काहेमें
हैं । हम अरिदल मानवके यमहैं ॥ हम अरु कर्ण दुशासन
रिकै । शत्रुन मारि लेब जय अरिकै ॥ बरु फिरि मखदान
क करिकै । होब अदोष शास्त्रमत चरिकै ॥ यहसुनि बिदुर
सुनुराजा । नाहिं यहमत आनँदको साजा ॥ सुबुधि करत
दमको साधन । रागद्वेषको तजि अवराधन ॥ कामक्रोधलो
दिक जीतै । दान्त कहत सब ताहि सुनीतै ॥ उत्तमलोकद
लहि मोदै । सुरन संग बहुकाल बिनोदै ॥ ताते तात दु





हठतजिकै । सम्मतकरो शुद्धमतकरिकै ॥ सम्मत किये न आ-
पद आवै । सम्मत करता आनँद पावै ॥ अबहम कहत पूर्ब
इतिहासा । सुनौ तौन करि यशकी आसा ॥ दोहा ॥ जालपसा-
र्यो डारिकन ब्याधा बनमें जाय । दोय बिहँग लखिमोह बश
परे जाल मधि आय ॥ तबकरि सम्मत जाल सह ते उड़िचले
सडौर । लखि ब्याधा धावत चलो गहि गहिबे को गौर ॥ तिहि
लखि कोऊ द्विजकहो ब्याधा मूढ़ लखात । नभचारीके गहन
हित दौरो महिपर जात ॥ चौपाई ॥ यहसुनि ब्याधकहो बिधि
अच्छी । तात जालमधि हैं द्वै पच्छी ॥ जब आपुस महँ बिग्रह
करिहैं । तब ये आइ भूमिपर परिहैं ॥ तब ममबश ह्वैहैं यहगु-
निकै । हमसँग चले जात गुणि सुनिकै ॥ इमिकहि ब्याधचलो
प्रणधरिकै । इतनेमें ते गिरे झगरिकै ॥ तब ब्याधा तिनकोगहि
लीन्हों । जो बिधि मनमान्यो सो कीन्हों ॥ ताते कहत सुबुधि
सबकोई । बन्धु बिरोध न नीको होई ॥ बन्धु बिरोध कहतसब
कोऊ । अरिबश परतानिबल ह्वै दोऊ ॥ ताते सुनो सुबुधि पटु
सोई । बन्धुनाहित करि राखैजोई ॥ सिंहसमान बन्धु बनराखै ।
तौ तिमि बिलसै जिमि अभिलाखै ॥ यहसुनि वृद्धभूप हित
गाहिकै । पांडुसुतनकी गरिमा कहिकै ॥ सुत हठगहि दुखगहो
अतोलो । आदर करि संजयसों बोलो ॥ केशव कहनकहोजब
तैसो । तदनु कह्यो पारथ भट कैसो ॥ सो सुनि कह्यो सूतसुत
ज्ञानी । भूपति सुनु अर्जुनकी बानी ॥ पारथधनु गाण्डीवहि
फेरत । कहतभयो केशव तन हेरत ॥ भीषम आदि वृद्ध कुरु
कुलके । और भूपजे सुमति अतुल के ॥ कहियो नृपसों तिनके
आगे । कुशल न राज्य लोभसों पागे ॥ दोहा ॥ गुणिमम धनु
धरता बिशद केशव को परभाव । धर्मनृपहि सनमानिकै सादर
करै बनाव ॥ नातरु धनु गांडीवगतबाण श्रवणपै राखि । सब
दल करि देहौं हवन युद्धयज्ञ अभिलाखि ॥ संजयके ऐसे बचन

सुनि न सको अनखाय। सभासदनते उठि गयो दुर्योधन क्षि
तिराय॥ तेहिक्षण गान्धारी कही दुर्योधनहि बुझाय। धर्मभु
तेहि देहु महि सब अनरथ मिटिजाय॥ तिहि अवसर आ
तहां व्यासदेव मुनिराय। तब फिरि संजयसों कहे भूपति शो
बढ़ाय॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पाण्डुपुत्र ममपुत्रको तुम देखे सहसैन
इनमें अधिक प्रभावको कहौ कौनमतिऐन॥ संजयउवाच॥ भू
ति सुनि बहुबार फिरि बूझत बारंबार। सुनौ तौन फिरि कह
हम कासुप्रभाव उदार॥ रोला॥ एक दिशिसबलोक माधवएक
दिशिगुणिलेहु। तऊइतनो भेदसोतुम समुझिउत्तर देहु॥ स
नहिंकरिभस्म कृष्णहिसकल जगजनकोपि। सकैंकरिसबजग
भस्मितकृष्ण अनरथचोपि॥ तौनकृष्णसहाय उनकेश्रेष्ठवैजा
जैन। बैरकीन्हेंतौसुतनकहँकुशलकबहूंहैन॥ बचनयहसुनिबो
पुत्रहि कहो वृद्धनरेश। सुवनसम्मत करौउनसों चाहि कुश
सुभेश॥ कृष्णउग्र प्रभाव प्रभु हैं जगतकृत अवदात। जा
ताके शरण सादर बचनहित गुणितात॥ दुर्योधनउवाच॥ कृष्ण
प्रभु भगवान हैं पैफाल्गुनके साथ। जाब नहिं हमशरण उन
के कहौमति क्षितिनाथ॥ भूपतब गान्धार जासों कहतभो अ
नखाय। मूढ़मानी निज सुतहितुम देहु सबिधि बुझाय॥ गांधा
र्युवाच॥ पुत्रहठतजि गुरुजननको बचमानिजहितजानि। लो
भति ऐश्वर्यकोतजि धर्मगति अनुमानि॥ करो रक्षण बंश
अरुदेहु अनरथ टारि। लहैं हमसुत शोकनहिं जेहिकरो तौ
बिचारि॥ कहे तब धृतराष्ट्र सुतसों व्यास करि अनुमान। का
जननी जनकको अब महत भयसों त्रान॥ गहौपन्था तौ
जाते मृत्यु निवसै दूरि। अन्धसुत तुमहोहुमति अतिअ
अमरषपूरि॥ व्यासके सुनिबचन नृपसुत रहतभो ह्वै मौन
भयो संजयसों कहत तब वृद्ध उरबीरौन॥ दोहा॥ अबउदा
प्रभु कृष्णको नामभेद परभाव। कहौतौन संजय कहे पूरि





अनुपम चाव॥ सुनि प्रभाव प्रभुकृष्णको वृद्धभूप मतिधाम।
शरणागत करि निज मनहिं कीन्हे शुभद प्रणाम॥
इतिश्रीउद्योगपर्वणिसंजयसम्बादसम्पूर्णोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥
दोहा॥ जब संजय हास्तिन नगर आये कहन सँदेश। तब
उत केशवसों कहे चिन्तित धर्मनरेश॥ जयकरी॥ मित्र मित्र
वत्सल तुम तात। आनँद दायक प्रभुअवदात॥ जेहिकुसमय
में रक्षत मित्र। प्राप्तभयो सोदिन अपवित्र॥ तुमसम आन
न मोहित और। मो उपकार करै यहि ठौर॥ यह सुनि बोले
रुक्मिणिरौन। जो तुम कहौ करैं हमतौन॥ सुनि बोलो पांडव
नृपमौर। सुनो वृद्ध भूपतिको डौर॥ दुर्योधनके मतिअनुसार।
करन चहतजो अनरथ चार॥ नहिं कुलधर्म न शास्त्र बिचार।
नहिं वृद्धनको बचन अचार॥ गुणत न करत लोभवशकर्म।
लोभी करत न कौन अधर्म॥ लोभी त्यागि लोककी लाज।
करत मोहबश अधरम काज॥ राज्य लोभबश सुमति गवांय।
वै कीन्हे बहुबिधि अनिआय॥ हम सो सबसहि तेरहबर्ष। रहे
बिपिन महँ त्यागि अमर्ष॥ तब जो कीन्हे रहे न बन्ध। अब
नहिं करत तौन मतिअन्ध॥ हम सब भांति लहो दुख पीन।
अब नहिं रहो जात ह्वै दीन॥ महापापको फल दुखदान। नहिं
दरिद्रते रौरव आन॥ अवशि परो अब करिबो युद्ध। दुष्टभो-
गते मरिबो शुद्ध॥ पै दुहुँदिशिते हितबध देखि। मोहिं होत
निरवेद बिशेखि॥ ताते इतो कहत सबिधान। राजापिता महा
मतिमान॥ ये सब भांति आदरन योग। यदपि करैं अनुचि-
त उपयोग॥ नृप पितृव्य वृद्ध मतिमान। पुत्र नेहबश भयो
अयान॥ अबकर्त्तव्य कौनउपचार। कहौतौन सरबज्ञउदार॥
यहसुनि कहे कृष्ण अवदात। कुशलहेत दुहुँदिशिके तात॥
हमहूं वृद्धभूपपहँजाय। नीति धर्म सब कहब बुझाय॥ मृत्यु
पाशते मोचन होय। सबसों कहब तौनबिधि जोय॥ सुनि नृप

धर्म कहे बिधि जोहिं । जाब आपु कहँ रुचत न मोहिं ॥ दु
धनहै महामलीन । नहिंमानी तौबचनअहीन ॥ तबफिरि
अधिक उत्पात । महा कुआगम मोहिं लखात ॥ यहसुनि
कृष्ण अनुमानि । उचित बुझाय कहब हितमानि ॥ जो
मनि है गहि हठरोष । तौहम जगमें होब अदोष ॥ सब
कहँ निन्दी सबकाल । तुम लहिहौ यश बिजय बिशाल ॥
सभामें अनुचित जौन । ताते उन्हें न निन्दत कौन ॥ तुम
न्तोष किये जो भूप । ताते पसरो सुयश अनूप ॥ निन्दि
जीवत मरो समान । मरेहु जियत सम यशी सुजान ॥ दोहा
कृष्णचन्द्रके बचनसुनि कहे युधिष्ठिरभूप । करौ जु मम कल्
णहित भावै मंत्र अनूप ॥ भीमसेन यह सुनि कहे कृष्ण
तिमि जाय । जेहिप्रकार कुरुबंशको नाशहेतु मिटि जाय ॥
न चेति सम्मत करी दुर्योधन मतिमन्द । गरबी दोषी पाप
कुलघालक निरद्वन्द ॥ जो हठगहि तौबचनको नहिं की
स्वीकार । तौ बधिहौं करि गदाको दारुण दुसहप्रहार ॥ चौपाई
इमिकहि निजबिक्रमकी गुरता । कह्यो भीमकरि गौरवपुरता
सो सुनि कृष्णमुदितकैसिधिसों । कीन्हींतासुप्रशंसा बिधिसों
कहे युद्धको भार अमाना । है तौ भुजन भीम बलवाना ॥
र्जुन नहिं रण करिबो चाहत । जऊअकिञ्चन दानव गाहत
यहसुनि कह्यो पार्थ अनुमानी । सत्यकह्यो तुम केशव ज्ञानी
ताको हेत कहत सो सुनिये । नहिं मरिबेमें कादर गुनिये
नहिं अरिबिक्रम कोभयआनै । नहिं निजसम औरहि अनु
नै ॥ अनरथ लखत युद्धके कीन्हें । नृपबंशन परबिपदाचीन्हे
अन्तबिषाद ग्लानिको करिबो । अरुबिषमाद सिन्धुमाधि
रिबो ॥ मोहिंपरत लखिप्रभु हम ताते । नहिंचाहत रण निज
अराते ॥ प्रथम फलोदय गुणिलखि लीजै । तबकारजको रम्
न कीजै ॥ जाकोअन्त जाहि नहिंसूझै । उचित ताहिसो बुद्





बूझै ॥ सुबुधि अरम्भैकारजसोई । जाकरअन्त सोहावनहोई ॥
प्रगट अनर्थ परतलखि जामें । कैसे तौन काजहमकामें ॥ है
अनित्य जगजानत सोऊ । निधनीधनी मरत सबकोऊ ॥ नाहिं
हित बन्धुन बधिबोचाहैं । कुलरक्षण को हेतु उमाहैं ॥ दोहा ॥ देव
चहतजो होत है पुरुष पराक्रम ब्यर्थ । मूढ़भावना करि मरत
हाथ न आवतस्वर्थ ॥ दुरमति दुर्योधन कियो जितने कुत्सित
कर्म । ते सब तीक्षण भल्लसम हैं बेधनमम मर्म ॥ ताहूपर अ-
नरथ समुझि चाहत सम ब्यवहार । रुचिहि आपुकहँ करबसो
तुम ममसुहित उदार ॥ चौपाई ॥ यहसुनि कह्यो कृष्णहितकारी ।
सांचकह्यो पारथरणचारी ॥ चाहत दैवहोतहैसोई । तदपिकहत
पंडितसबकोई ॥ सुयतनकरबपुरुषकहँचाहत । पटुकरिसुयतन
काम उमाहत ॥ निजकर अरथ न देत बिधाता । हैरम्भितका-
रजको त्राता ॥ सुयतन किये अरथनाहिं पावै । जबतबभारदै-
वपरलावै ॥ क्षत्रिहि उचित न गुणिबो एतो । क्षात्रधर्मकी पद्-
वीहेतो ॥ बर्णआश्रम धर्म सोहायो । करिबो उचित बड़ेनको
गायो ॥ तुमदुर्योधन कोमत जानत । नहिंवहराज्य देनअनुमा-
नत ॥ चाहतलेन धर्म क्षिति नायक । नहिं यह अनरथ बरिबे
लायक ॥ शकुनि दुशासन कर्णकुमंत्री । हैं अनरथ बिधिसाध-
कतंत्री ॥ इनहीं मंत्रजुवाकोकीन्हों । छलकरिकै सरबसहरिली-
न्हों ॥ जैसो मंत्री तैसो राजा । है सबबिधि अनरथकोसाजा ॥
नहिं येजियत सामबिधिधरि हैं । लरितौ बाणानलसों जरिहैं ॥
जानत इतो तदपि उनपाहीं । जाय बुझाइब अनुचित नाहीं ॥
अनरथमूल युद्धनाहिं होई । पारथमोहिं रुचत बिधि सोई ॥ पै
उनकी कुत्सित मतिजोहीं । सामहोब गुणिपरत न मोहीं ॥ नकु-
लउवाच ॥ दोहा ॥ धर्मभीमअरुफाल्गुनकहे सुनेसोबैन । देशकाल
अनुमानकरि उचितकरोमतिऐन ॥ तैसोमतकरतब्यगुणि जैसो
कारजलेश । काजकाजपरमंत्रहैतोषअतोषबिशेश ॥ श्रीमतनृप

धरमज्ञको गुणि सम्मत अनुमान। आपु कहब कुरुसभा मे
शांत बचनसुखदान॥ चौपाई॥ जो तो मत नाहिं निजहित गुनि
तौ गाण्डीव धनुष धुनि सुनिहैं ॥ जब अस आय रहेहमवन
तब जय लेबगुणत हे मनमें ॥ अब तोकृपा बसत ममगोह
भूप समूह सैन सहसोहन ॥ अबको असजो संमुख थिरि
सकै युद्धकरि बलसों भिरिकै ॥ यह सुनिकै सहदेव अमान
बोलोबीर बिदित बलवाना॥ मम मतसुनोवृष्णि कुलनाय
अबनहिं सम्मत करिबे लायक ॥ सम्मत करिबो चाहे ओ
तौ तुम करियो बातैं सोई ॥ जाते होय युद्ध मनभायो।
शोच जो हियमें छायो॥ उनकोनाश लखब नहिं जबलों।
दाहत क्रोधानल तबलों॥ द्रुपद सुतहि जोदेखो तैसे। यदु
मिटहि क्रोध अब कैसे ॥ यह सुनिकै सात्वकि रणचारी। बो
बचन बीररस भारी ॥ सत्य कहत सहदेव सुबीरा। बन
समुझि होत अतिपीरा॥ द्रुपदसुता के कचगहिबेको। गर
कटुबाणी कहिबेको ॥ बिनु दुर्योधनके बधदेखे। नाहिं पाण्ड
शांति ममलेखे ॥ बचन कह्यो माद्रीसुत जोई। सब सुभट
सम्मत सोई ॥ यह सुनिकै सबसुभट उछाहे। बहुप्रकार सा
किहि सराहे ॥ दोहा ॥ तहँ सराहिकै सात्यकिहि द्रुपदसुता
खधारि । कहत भई इमि कृष्णसों भरे बिलोचन बारि ॥
कीन्हीमम दुर्दशा सभामध्यगहि ल्याय। सोसब जानत कृ
तुम का अब कहौं बुझाय ॥ जो अबाच्य पाण्डवन कहँ
सुने तुम तौन। यथा निकासे जिमि निकासि लहे बिपिन दु
जौन ॥ सोसब जानत कृष्ण तुम अब मम बिनती मानि।
लि दुर्योधनपर कृपाकरो धर्म अनुमानि ॥ हठि अबध्यको ब
किये दोषहोत जिहि रीति । तथा बध्यकहँ बिनुबधे दोष हो
यह नीति ॥ चौपाई ॥ पांचगांव ये मांगत जोऊ। दुर्योधन न
देइहि सोऊ॥ ऐसे शठसों सम्मत करिबो। है कादरतापन अ





सरिबो॥ क्षत्रीबधत क्षत्रियहि रणमें । आपन तोषअक्षत्रीमन
में॥ उभयबंशमम भूमि बिलासी। ताकोकह्यो केशगहिदासी॥
मम भरतार दाससम कैकै। लखत रहे निज बिक्रम ग्वैकै ॥
ऐंचत चीर बिपुलता सुनिकै। नृपधृतराष्ट्र हिये में गुनिकै॥
बरमांगन भाष्यो संकोचन। तब हम कियो दासपन मोचन॥
करि निबन्ध तबगे बन माहीं। अजहुं तौन मत छूटत नाहीं॥
चषजल मोचति यहि बिधि कहिकै। बामपाणिसों शुचि कच
गहिकै॥ जाय कृष्णके निकटसयानी। कहतभई अति आरत
बानी॥ मरदित दुःशासनके करसों। ममकच कृष्ण लखोबध
बरसों॥ इन्हैं पेखि तब सम्मत कीबो । भूपहिकह्यो धर्म्म पथ
लीबो॥ भीम आरजुन सम्मत चाहैं। जोनाहिं करिबो युद्धउमा-
हैं॥ तौ ममपिता सहितसुतसेना। अरुमम पांचपुत्रजगजेना॥
अरु अभिमन्युबीरबर भिरिकै। लरिहैं क्षात्रधर्म्मपथ थिरिकै॥
लरि सुयोधनहिं बधिजयलेहैं। ममहिय दुख लोपित करिदैहैं॥
दोहा॥ दुःशासनको भुजकटो लखो बिना महिबीच। नहिंकल
पावत ममहियो कलपावत दुखनीच ॥ कहे भीमकहँ दुर्बचन
ममहिय बेधत तौन। गह्यो चहत अब धर्मपथ जौनभीमबल
भौन॥ इमि कहिकै गदगद गरेरुदति भई सोबाम। तबतासों
इमि कहत भे केशव आनँद धाम ॥ तजो शोचकछु दिवसमें
लखिहौ चाहति जौन। हे अमोघयह बचनमम बारिसकैलिहि
कौन॥ सिगरे सुत धृतराष्ट्रके महिपर परे अप्राण। लखिहौपरे
शृगालबश कौनसकैकरित्राण॥ सोरठा॥ मुदमंगलकेऐनकृष्णच-
न्द्रके बचनसुनि। द्रुपदसुता लहि चैन मौनरहीप्रभुध्यानधरि ॥

इतिश्रीउद्योगपर्वणिभगवद्दूतगमननामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

बैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥ द्रुपदसुता अरुकृष्णके सुनिकै बचन
सनेम। कृष्णचन्द्रसों कहतभे अर्जुन चाहत क्षेम ॥ कुरुपांडव
दुहुँनके तुम सम्बन्धी तात। अरु सब नृपके सहिततुम आ-

नँद दायक ख्यात ॥ शांति बचनबिधिवत कहेहु जगतकृ
के हेत । प्रीतिनीति जातेगहै दुर्योधन करिचेत ॥ जयकरी ॥
करि सुनि केशव अनुमान । कहेकहब हम उचित बिधान ॥
ते होइहि सम्मत अक्ष । सोई कहब करब परतक्ष ॥ जो
कहो न करिहैं कान । तौजानो भावी बलवान ॥ इमिकहिकृ
करत परभात । करिकै प्रातकृत्य अवदात ॥ पूजि भूसुरन
स्वस्त्यैन । सात्वकिसों इमिकहे सुबैन ॥ शंखचक्र अरुगदा
दण्ड । असितूणीर कठिनकोदण्ड ॥ सुयतन धरोसुरथपरल
य । शत्रुहि साधुनजानब न्याय ॥ निज अरिमित्र शत्रुजोहो
तहां निरायुध जात न कोय ॥ यह सुनिकै सात्वकि मतिमा
सायुधकिये सुरथ सुखदान ॥ मणिकंचनसों रचित अनूप
रु शिखरसम अनुपम रूप ॥ परम सोहावन खगपति के
मानहुँ नभसागरको सेतु ॥ शैब्यबलाहक अतिअभिराम
घपुष्प सुग्रीव सुनाम ॥ बाहकजासु तुरँग ये चारि । तेहि
चढ़े कृष्ण मुदधारि ॥ सात्वकि सहित सुआनँद पूरि । चले
सारत परमाभूरि ॥ धर्म भूपसब नृपन समेत । चले पठावन
नँद लेत ॥ प्रभुहि प्रशंसिधर्म्म क्षितिपाल । यहि बिधि क
भये तेहिकाल ॥ सकल धर्म्म ज्ञातातुम ताल । परमसुहित
हौ बिख्यात ॥ तुमसों कहौं सिखापन कौन । कहेहु कुशल
भावै जौन ॥ सब वृद्धन सों सुवचन साम । कहि कहियो
बिनय प्रणाम ॥ पुत्रदरश बिनुदुखी अपार । मम मातहि
हु करि प्यार ॥ मम दिशिते करिबन्दन चाहि । प्रभुकरियो
श्वासिततााहि ॥ यहि प्रकार कहि धर्म्म नरेश । फिरे कृष्ण
पाइ निदेश ॥ नृप तेहिक्षण अर्जुन रणधीर । कहे कृष्ण सों
चन गँभीर ॥ प्रभु उनसों कहियो समुझाय । मोह लोभ
गर्व बिहाय ॥ कुशल बिचारि देहिं अब तौन । आधो राज
भारी जौन ॥ नहिं देहैं तबकी बिधि भन्त । करिहौं सब क्षत्रि





को अन्त ॥ यह सुनि मोदि भीमबलवान । गरबी गरजो मेघ
समान ॥ करि केशवहि प्रदक्षिण सर्ब । फिरि आवतभे पूरित
गर्ब ॥ दशहजार पैदर रणधीर । दशहजारहय सादीबीर ॥ शं-
तसारथी अनगिने चार । संगगये मुदभरे उदार ॥ सुनतलख-
त शुचिसगुण समेव । चले कृष्ण देवनके देव ॥ नारद मरुत
शुक्र सुखदाय । भृगुबशिष्ठ क्रथकुशिक सचाय ॥ बामदेव बा-
ल्मीक सुक्षेम । प्रभुहि प्रदक्षिण किये सप्रेम ॥ परशुरामबिप्रन
सह आय । मिले कृष्ण सों आनँद छाय ॥ दोहा ॥ पूजितिन्हैं
करि वारता रथचढ़ि बरचस धाम । चले कृष्ण निरखतसुखद
बन गिरि सरिता ग्राम ॥ दिनबिताइ सन्ध्या निरखिजायवृक-
स्थलग्राम । कृष्णचन्द्र सेनासहित करत भये बिश्राम ॥ स-
न्ध्याबन्दन आदितहँ करि करतब्य समस्त । सबिधि आहार
बिहार करि बितई निशा प्रशस्त ॥ चौपाई ॥ उत धृतराष्ट्र भू-
पमन भावत । सुने चारमुख केशव आवत ॥ भीषमद्रोणआदि
सब जनसों । यहिबिधि कहतभयेगुणिमनसों ॥ सुनिअतिकृष्ण
नीति मगचारी । आवतपाण्डव हित निधिधारी ॥ केशवहमहिं
मान्य सब बिधिसों । पूजनयोग सदा सब रिधिसों ॥ आनँद
दानि कृष्णको पूजन । दुखदायक नहिं पूजब कूजन ॥ ताते
बिधिवत पूजन करिकै । सादर आनहु आनँद धरिकै ॥ यह
सुनि दुर्योधन क्षितिनायक । पिता वचन गुणि करिबे लायक ॥
देश देशमें हुकुम पठाये । थरथर बसनबास बनवाये ॥ यथा
उचित सब सौंज धराये । इस्त्री दासी दास सोहाये ॥ अतर
गुलाब सुमन मनमाने । शय्या बसन सुसौरभ साने ॥ सुखद
स्वाद सबबिधिके भोजन । योजितकीन्हे योजनयोजन ॥ यहि
बिधि सब थरनिरमित सुनिकै । नृप धृतराष्ट्र कहतभो गुनिकै ॥
केशव तीनिलोकके स्वामी । प्रभु न्यामक नागान्तकगामी ॥
इत आवत पूजन हित ताके । पुरमें निरमित करो पताके ॥ पुर

बीथिनकी रचना कीजै । प्रतिद्वारन तोरण रचि दीजै ॥ तरु
यूथ कुम्भ भरि भरिकै । रहैं बिचित्रबसन धरि धरिकै ॥ दोहा
बिनु दुर्योधन पुत्र सब अरु पउत्र मम सर्ब । आगे बढ़िकै कृ
ष्णकहँ ल्यावहिं जानि सुपर्ब ॥ चारिचारि तुरँगन सहित र
हेम अरु अक्ष । देहु सुरथषोड़श द्विरद बसुसह अनुचरदक्ष
आबिक दीजै परबतो सहस अठारह ताहि । सहसबाह दी
समुद चीन देश भवचाहि ॥ रत्नन भूषित दीजिये शतदा
शतदास । दुःशासनके गेहमें देहु कृष्णकहँ बास ॥ हय ग
अरु सब पुरुषप्रति अठगुण भोजन देहु । मणि भूषण दै प
कमल सेवहु सहितसनेहु ॥ रोला ॥ बचनयह सुनि बिदुर बो
भूप तुम मतिमान । उचित जो करतब्यसो बिधि कहत सा
त बिधान ॥ जानि तौ वृत्तांत अबहम कहतहैं यहटेरि । कृ
नहिंतौ सुबश ह्वैहैं दान सेवाहेरि ॥ प्राण सम प्रिय पार्थ उनव
हैं तथा पांडवसर्ब । त्यागिनिजहित मिलतऔरहि छली पा
खर्ब ॥ जानि महिमा कृष्णकी अरु उचित बिधि अनुमाति
कहैं केशव जौन सोई करौनिजहित जानि ॥ नगर भूषितकि
आगे गये दीन्हैं रत्न । त्यागिहैं नहिं पाण्डवनको संग कृ
सयत्न ॥ दुर्योधनउवाच ॥ भूप भाषत बिदुर जो सो सांच मिथ
एक । जौन उनको कहो करिबो कहत तजिकै टेक ॥ पूज्यजग
कृष्ण सतिपै बसत अरिके संग । पूजि गजरथ रत्नदीबो न्य
यको नहिं अंग ॥ भीष्मउवाच ॥ करौ अति सत्कारकै मति का
कछु सत्कार । नेकु अनुचित मानिहैं नहिं कृष्ण सुबुधि उदार
पांडवनसों तौ सुतनसां चाहि सम्मत रीति । कृष्ण आव
कहन जगकी कुशल कारक नीति ॥ कृष्णप्रभु धर्मात्माको क
हो करिबेयोग । बंशरक्षण हेतुनृपयह परम सुहित प्रयोग
दुर्योधनउवाच ॥ पितामह जो कहतसो नहिं भूपतिन को धर्म
कहत हमलहि समयऐसो नृपनको जो कर्म ॥ पकरि कृष्ण





बांधि कारागेहमें करिदेहु । सुनत पांडव भागिजैहैं बिजय स-
हजहि लेहु ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ पुत्र ऐसो कहो मति नहिं उचित
ऐसो तात । कृष्ण सम्बन्धी तदपि ह्वै दूत आवत ख्यात ॥ भी-
ष्मउवाच ॥ भूप तौ सुत महा दुरमति कहत कुत्सित बैन । कहो
बांधै कृष्णकहँ अस कौन है जगजैन ॥ दुसह याके बचननहिं
सहिसकत हैं ममकान । भाषिइमि उठिगये भीषम जीवसम
मतिमान ॥ उतै रजनि बिताइ प्रभुकरि प्रातकृत्य सनेम । नौ-
मि बिप्रनसुनत आशिष सुरथचढ़िगुणिक्षेम ॥ चलेसेवित वृक-
स्थलपति नृपतिसों सहसैन । इतैकौरव चलेआगे जानिप्रभुता
ऐन ॥ बिनादुर्योधन नृपनके सुतनके समुदाय । द्रोणकृप बाल्हीक
भीषम आदि आनँदछाय ॥ जायपथमें कृष्णसों मिलि किये
नगरप्रवेश । परमशोभित भयो तेहिक्षण नगरबीथी देश ॥
नारिनर सब उमँगि ठाढ़े भये परमापूरि । देखिलोचनसफल
करिकरि लहत आनँदभूरि ॥ युवति कितनी लखतिठाढ़ीं जा-
लरन्ध्रन लागि । लगि गवाक्षन रहीं कितिक मृगाक्षिणी मुद
पागि ॥ लखतपुरछबि देत आनँद राज गृहमधि जाय । जाय
तिसरे चौक उतरे सुरथते सुखदाय ॥ वृद्धनृप बढ़िजायआगे
कियो पूजन पर्म । यथा वय प्रभु मिले सबसों भाषि सुबचन
मर्म ॥ पूजि कृष्णहिं सबिधि भूपति सभा गृहमधि ल्याय । हेम
मणिमय रचित आसन तासुपर बैठाय ॥ किये मधुपरकादिको
सतकार चाहत जौन । कुशल परशन भये बूझत कहे रुक्मि-
णिरौन ॥ कछू क्षण रहि तहां नृपसों बिदा ह्वै यदुराय । बिदुर
के गृहजाय निवसत भये सुख सरसाय ॥ भरे आनँद बिदुर
बिधिवत पूजि प्रभुके पाय । भये बूझत पांडवनको कुशल प्री-
ति बढ़ाय ॥ कृष्ण चेष्टा पांडवनकी सबिधि तासों भाषि । रहे
कछुदिन पृथाकेढिगगयेअति अभिलाषि ॥ देखिकृष्णहिं मिली
कुन्ती करतरोदनभूरि । कृष्णउवासितकिये कहिकैबचनऋजुता

पूरि॥ भरेचषहिय गरोकुन्तीभई बूभतआसु। रहेसेवत तुमहि
तुमहौ करत पालन जासु॥ गयेकाढ़ि राज्यतेतरुदत मोकहँत्या
गि। जायनिरजन बिपिन मधिकिमि रहेअतिदुखपागि॥ भौ
शंख मृदंग धुनिसुनि बन्दिजनकेबैन। रहेजागत सुनेजम्बु
नादते बलऐन॥ दोहा ॥ बहुप्रकार दुखसहिरहे द्वादशबर्ष अ
चैन। बर्षएक अज्ञातबसि भयेप्रगट जगजैन॥ जे जेता सु
असुरके प्रगट पराक्रम जासु। बरुण शक्रयम रुद्रसम करत
संगरआसु॥ केशव तेसब सुवन मम हैं कैसे यहिकाल।अ
का करिबो चहतहैं जेठोसुत क्षितिपाल॥ चौपाई ॥ अयुतना
बल भीम अमाना। अबका कियो चहत बलवाना॥ तिमि
धनुधर जिमि बिदित पिनाकी। सुरपति लहत न समताजा
की॥ सोअर्जुनचाहतकाकीबो। गुणतनगुणत भूमिकोलीबो
माद्रीसुत दुर्मद भटनायक। सकल जगतके जीतन लायक
हैंकैसे किमि दिवस बितावत। बिनुदेखे दुखमोहिं सतावत
पुत्रनते मोहिं अधिक पियारी।कहो कुशलहै द्रुपद दुलारी
नहिंधन हरिबेको दुखमोहीं। नहिंबनगमन सुतनको जोहीं
जितनो दुख कटुबचन कहनको। द्रुपदसुताके केशगहनको
युवतिधर्मयुत बैठीजोहीं। धारे एक बसन अति सोहीं॥ क
गहि तासु सभामधि ल्यायो। सोदुख तात न दुरत दुरायो
पराधीन परि हम दिन खोवति। निजपूरब अघफल गु
रोवति॥ तुमसेजासु हितू प्रभुत्राता। तिहिऐसे दुखदेतबिधा
ता॥ जेहिप्रकार यहिदुखसों मोचन। होयकरौसो राजिवलो
चन॥ केशवजाय मौनमति रहियो। भीमार्जुनसों इमि स
कहियो॥ क्षत्री जेहिहित प्रगटत जगमें। प्राप्तभयो अब स
दिन अगमें॥ अतिविक्रम करि महिधर लीन्हों। बुधनतज
तेहि बिनुश्रम कीन्हों॥ दोहा ॥ कुन्तीके येबचनसुनि कहेकृ
भगवान। कोतुमसी सीमन्तिनी भाग्यवान मतिमान॥ अ





उत्तम कुलजाततुम उत्तम कुलमेंप्राप्त। उत्तम पुत्रनकी जननि जेमत अतिप्रियआप्त॥ अतिसम्पति अरुअतिबिपतिलहत महत जनजौन। घटतबढ़त निशिनाथहैं नहिंतारागणतौन॥ अतिसुख अतिदुख सहतहैं जेतुम सरिस महान। नहिं लघु-जन गहिसकतहैं सुख दुखभोगबिधान॥ धनलहिकरतप्रमाद लघु दुख लहि हाहाकार। साधुरहत जिमि बहतवृष गुरुखा-रीकोभार॥ चौपाई ॥ दुर्योधनकी छलमतिरजनी। तामधिसोय पाण्डुसुत परनी॥ बहुदिन कुत्सित सपनसमाना। भोगकिये दुखदुसह अमाना॥ अबतौ पाइसुदिन दिनजागे। मिलि सु-हितन सो आनँदपागे॥ रणमहिसभा सदनमधि धसिकै। अतिबिक्रम पटुलाकरि लसिकै॥ बिजयगुणी गुणगरिमालहि कै। लेहैंराज्य सुखहि मुदगहिकै॥ तजौशोच अबधीरज ध-रिकै। लखिहौ सुतनमोदसोंभरिकै॥ द्रुपदसुताअरु सुवनति-हारे। कहेप्रणाम सुबिनय बिहारे॥ सुनिकुन्ती बोलीलहि आ-नँद। हौतुमकृष्णअभयवरदानद॥ धर्मपाहि सबसुखकेदायक। ममपुत्रनके परम सहायक॥ हौतुम केशव करिहौ रोचित। करौशीघ्र जोगुणो यथोचित॥ सुनिकै बिदाकृष्ण छबिछाये। दुर्योधन नृपके घरआये॥ हयगजरथ सुभटनसों राजित। छरीदार गणसों छाबिछाजित॥ दोयकक्ष चलिपरम सुखारी। गेप्रसादचढ़ि गिरिवर धारी॥ भरोओज जहँबाहर अन्दर। तहँदुर्योधन यथा पुरन्दर॥ सिंहासन परबैठो राजा। बैठे अ-गणित भूपसमाजा॥ शकुनि दुशासन करण यशीले। भूपति के ढिगलसे लसीले॥ दोहा ॥ दुर्योधन कृष्णहिं निरखि उठि चलि नृपनसमेत। पूजिल्याय पर्य्यंकपर बैठायोमुदलेत॥ बिप्र सविधि मधुपर्कसो अर्पण कियेसप्रेम। भोजनार्थ फिरि कहत भे हियेचाहिनिजक्षेम॥ सोनहिंमान्यो कृष्णप्रभु तबदुर्योधन भूप। हियेकपट ऋजुता प्रगट बोलो बचन अनूप॥ चौपाई ॥

जिमि तुमपांडव के अनुबन्धी । तेहिप्रकार हौमम सम्बन्धी
हौदोउनके हिताहित करता । सबबिधि ज्ञातासतपथचरता
नहिंमम अन्न गहतकेहिकारण । सोकहि करिये शोच निव
रण ॥ कृष्णकहे तुम भेदनपाये । हमगहि दूतभाव इतआये
दूतजात जाको हितचालन । सुधरम तासुअर्थ प्रतिपालन
दूतहि उचित अरथ सिधिकरिबो । नहिंभरिउदर मोदहि
भरिबो ॥ यहसुनिबोलो कुरुकुलनायक । ऐसोतुम्हैं न कहि
लायक ॥ तुमचाहो आवोतेहि भावन । हौदोउनके हित म
भावन ॥ अर्थ सिद्धकीन्हें बिनुकीन्हें । भोजनकरव उचितवि
चीहें ॥ हमहिं तुमहिं हैबैरनकबहूं । भयोनहीं कछुबिग्रहअबहूं
यथाउचित हमतुमकहँपूजे । सम्बन्धीगुणि सुबचनकूजे ॥ तु
कहँउचितनइबिधि जुदाई । एकहि मानब प्रीति बड़ाई ॥ य
सुनि सब नृप तिनतन देखी । बोलेकेशव बिधि अवरेखी ॥ बै
लोभ ईर्षाबशह्वैकै । नहिं हम तजत धर्म हित ज्वैकै ॥ पाण्ड
सबादिनते ममसंगी । तिनसों हमसोंप्रीति अभंगी ॥ तासुअहि
तमम अहित यथारथ । तासुहितू ममहित जिमिपारथ ॥ दोहा
है सबपाण्डव धर्मरत अधर मरत तोचाल । गोतबंश पाल
करै सो धर्मी सबकाल ॥ अधर्मताको अन्नहमग्रहणकरत नहिं
तात । जायबिदुरघर खाबअब शुचिसुअन्न अवदात ॥ इ
कहिकै उठि कृष्ण प्रभुगये बिदुर केगेह । द्रोण भीष्म बाह्ली
कृत गये तहां गहिनेह ॥ कृष्ण तिन्हैं कीन्हेंबिदातब छत्तासु
पाय । भोजन करवाये प्रभुहि प्रेमभक्ति अधिकाय ॥ सोरठा
बिप्रन अरचि सनेम भोजन कीन्हें कृष्णप्रभु । भक्तिभावअ
प्रेमके गाहक करुणा यतन ॥

इति उद्योगपर्बणिभगवतोदूतरूपहस्तिनापुरागमनोनामोनबिंशोऽध्यायः

दोहा ॥ कृष्णचन्द्र कहँ स्वस्थलखि निशिलहि बिदुर प्रवी
न । बिनय पूर्बक कहतभो बचन यथार्थ अहीन ॥ जयकरी





तो आगमन बिश्व भरतार । मोहिंपरत गुणि अनुचित चार ॥
मानी मान हरण अतिमूढ़ । है दुर्योधन गर्बारूढ़ ॥ कपटी क-
ठिन हियो अकृतज्ञ । आत्मसुखी कामात्मा अज्ञ ॥ वृद्धनको
मत लम्बनहार । धर्मशास्त्र परडारत छार ॥ यहिबिधि पूरित
अगनित दोष । नहिंमानो तासुबचन अदोष ॥ भीष्मद्रोण कृप
द्रोणकुमार । कर्णपराक्रम सिन्धुअपार ॥ ताकोगहे गरब अ-
भिमान । चाहतकियो युद्धनहिं आन ॥ जानत भीष्म कर्णसों
नेक । नहिंलरिसकिहैं पांडव एक ॥ सकल पांडवन जीतन
अर्थ । एककर्ण कहँ गुणत समर्थ ॥ यहिबिधि पूरित कुमति
अबुद्ध । कियो चहतनहिं सम्मत शुद्ध ॥ तेहि शठढिग तोब-
चन प्रमान । होइहियथाबधिर ढिगगान ॥ तुमतासों मतिक-
हो सुतंत्र । द्विज चांडालहि देत न मंत्र ॥ तासुसभा मधि
जाबतुम्हार । मोहिंनरुचत जानिब्यवहार ॥ महाबाहुतुमयद्यपि
अमान । तदपि प्रेमबश कहत बिधान ॥ सहसाकर्मी कुटिल
कठोर । हैदुर्योधन छली अथोर ॥ समुझि न मोमन गहत
उछाह । प्रभुमति तासुभटन मधिजाह ॥ दोहा ॥ यह सुनिकै
केशव कह्यो सांचकहत तुमतौन । शुचि सुधर्म रतममहितू
तुमसम दूजोकौन ॥ दुष्टदुरात्मादुर्मती दुराचारमेंदक्ष । दारुण
दुर्योधन छली हमजानत परतक्ष ॥ पैजब कुरु पांडवनको ह्वैहै
युद्ध अमान । तब सब क्षत्री बंशको ह्वैहै नाशमहान ॥ ताको
जो बारणकरै तौ न लहैअतिधर्म । यह गुणिहमबारण चहत
द्रोणयुद्ध हठकर्म ॥ सोरठा ॥ सबबिधि कहब बुझाय हितगुणि
है तौ अतिभलो । नातरु नीति सुनाय होबअदोषी जगतमें ॥
यहिबिधि कहत सुबैन निशि निशीथ बेलानिरखि । केशवकी-
न्हों शैन क्षीरसिंधु समशेयमधि ॥ चौपाई ॥ निशि बिताय बा-
रिज दुँदुभि धुनि । बंदीजनसों स्तुतिपदसुनि ॥ जागिशैनतजि
आनँदपागे । प्रात सुकृत्य करन प्रभुलागे ॥ तेहिक्षण भीष्म

द्रोण मनभाये ।दुर्योधन आदिकतहँआये ॥ करिसबकोसत
सुभावन । बैठाये माधव मनभावन ॥ प्रात कृत्यकरि आनँ
लीन्हे । बिधिवत दान द्विजन कहँदीन्हे ॥ सुबसनधारि सु
परचढ़िकै । चलेसकल दिशिसुखमा मढ़िकै ॥ सहित कौरव
कौरवनायक । यदुबंशिन सहसात्वकि चायक ॥ रथचढ़ि
सकल दिशिरहिकै । कृष्णाहि निरखतआनँदगहिकै ॥ गजा
पैदर भटहय सादी । अगणित चले कृष्ण गुणगादी ॥ अ
णित छीरदार छबिधारत । चले यथोचित बचन उचारत
दुन्दुभि शंख सुखदधुनि बाजे । अगणितचारु पताके राजे
भूपनिरखि तेहि क्षणकी शोभा । भयो सुरेशहुके मनक्षोभा
धुरिधारा सबदिशिमें छाई । हयहींसनि रथकी धुनिधाई ॥
नारीतजि काज उमहिकै । लखतभये अतिआनँद लहिकै
सौधन बालबदनइमिराजे । मनुनभअगणित विधुछबिछाजे
अगणितरंग बसनलखिजाने । मनुतनुतन घनभुकेलोभाने
दोहा ॥ जायसभागृहद्वारपर रथतजि लखिभटकोद । करगहि
सात्वकिबीरको चलतभयेसहमोद ॥ सहभीषम द्रोणादिद्वि
प्रभुसँगचले सहर्ष । कृतबर्मादिकवृष्णिसब पीछेचलेअधर्ष
प्रभुआगम लखि वृद्धनृप उठिसबनृपन समेत । चलि आ
लैकै सबहि बैठाये करिहेत ॥ रोला ॥ हेममणिमय चारुआस
कृष्ण तापैराजि । नारदादिक मुनिन नभपर लखे सुख
साजि ॥ भीष्मसों इमिकहे आवत सुमुनिनारदआदि । बिर
आसन अगरिआनौ बिनय सुबचन नादि ॥ भीष्म आज्ञा
भृत्यन बिरचि आसन वेष । द्वारलों चलिपूजि ल्याये जा
मंगल वेष ॥ नौमिबिधिवत मुनिन करिकै आसनस्थअमन्द
सहित नृपगण भये बैठत कृष्ण यदुकुल चन्द ॥ बैठि सि
मौन रहि तहँ रहे कृष्णाहि देखि । कृष्ण तब इमि वृद्धनृप
कहतभेअवरेखि ॥ होइजेहिकुरुपांडवनको सुखदसम्मतअ





करो सोहम इतोयाचन इतै आयेदक्ष ॥ नाशबीरनको भयेबि-
नु करोसम्मत तात । नहीं हमकछु और मांगत कहत इतनी
बात ॥ परम उत्तम अति प्रशंसित बिदितजो कुरुबंश । भाग्य-
धाम प्रसिद्धताके भूप तुम अवतंश ॥ तुम्हैं सम शुचिपिताजि-
नके तौन सबतौ पुत्र । धर्मपीछे डारि बिचरत राखि अधरम
सुत्र ॥ लोभबश हतचेत ह्वै मर्यादत्यागि अशिष्ट । परमसुहृद
सुबन्धु सों अरिभावकीन्हें इष्ट ॥ बिना बूझे होनचाहत महा
अनरथ व्यर्थ । तासुकरिबो शमनतुमकहँ उचित आपुसमर्थ ॥
इतै तो आधीन सम्मत उतै मम आधीन । सुतनदेहु बुझाय
तुम हम पांडवनकहँ देन ॥ भयेसम्मत दुहूंदिशिको होत हित
सहसैन । नतरु निरमित होत जगको नाशबिधि सतिबैन ॥
भटनसह अतिप्रबलतो सुततथा पाण्डव सर्ब । जीति दुर्लभ
उभयदिशिहै नाशगति अतिखर्ब ॥ मानि कै ममबचननृपकर-
वाइसम्मतवेष । बन्धुसुताहित पौत्रगणको लखो सुखशुभभेष ॥
भ्रात सुत अरुसुतनसों जितवाइ अरिन सरीति । लेहुमहिध-
न करोपालन नृपनकी यह नीति ॥ दोहा ॥ निज धनहित युग
बन्धुलरि मरे लाभ तहँ कौन । जीतेहु हारेहुं हानि जेहि समित
करो बिधितौन ॥ रणकांक्षी तो सुवनसब तिमि पाण्डवभटमौर ।
अमरषबशदोऊगहे बंशनाशको डौर ॥ नृपयह गुणिवारनकरो
अनरथकठिन कराल । कुशलजाहिं निजनिज थलनसदलसक-
लक्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ शिशुपन ते पितुहीन पालेजिनकहँ पुत्र
सम । सुनु क्षितिपाल प्रवीन तिनको नितपालब उचित ॥ चौ-
पाई ॥ शिशुपनमें निज सुतसम पालब । पुष्टबिलोकि दुवनग-
ति चालब ॥ है बायस शठ जनकी करणी । ऐसो करत न सु-
बुधि सुपरणी ॥ धर्म भूप सम्मत अभिलाषे । करिप्रणाम इमि
भाषणभाषे ॥ हमतो शासनलहि मनकरिकै । बहुदुख सहेबिपि-
नमें बसिकै ॥ द्वादशबरष रहे बनचारी । रहे बरषदिन गुप्तदुखा-

री ॥ तब निबन्ध तुम जो करि दीन्हों । सोकरि अब महिचाह
त लीन्हों ॥ तुम मम पितागुरू प्रतिपालक । हमतो सेवकशि
ष्य सुबालक ॥ करिये सुबचन सुधरमपालन । तुमकहँ उचि
करबमम लालन ॥ नृप प्रमादि जो सुधरम त्यागत । तौ सब
जन ताही मग लागत ॥ बढ़े सरितजिमि तटतरु गिरिकै । क
हत धारपरि रहत न थिरिकै ॥ तुम सरवज्ञ सुबुधिकुलनायक
बूझि करो जो करिबे लायक ॥ यहि बिधिकह्यो युधिष्ठिर हमसों
सोहम बिधिवत भाष्यो तुमसों ॥ नृप ममबचन सुहित गुणि
लेहू । उचितअंश सो उनकहँ देहू ॥ इन्द्रप्रस्थ तुम दीन्होंउ
को । तहँवैबार्द्धित कियेअपुनको ॥तौसुत छलकरिसोसबहरिकै
द्रुपद सुतहि ल्याये कचधरिकै ॥ और कहे कटु कुबचन जेते
सुधरम समुझि सहे वै तेते ॥ दोहा ॥ तो आज्ञा लहि बनगये
सहो दीनसमपीर । धर्म जानि नहिं निबल हैं पाण्डव बिदित
सुबीर ॥ रहिबनमें द्वादश बरष बरष गुप्त रहि आय । लोहिंभू
मि यह कौलही करो तौन गुणिन्याय ॥ मृत्युपाशते भटनकी
रक्षणकरो नरेश । सुतहित सम्बन्धी बिना रहिका करिहौदेश ॥
सोरठा ॥ हम सम्बन्ध बिचारि दुहुँदिशिको चाहतभलो । तातें
कहत पुकारि बैरत्यागि सम्मतकरो ॥ केशवके ये बैन धर्मनीति
हित बिधिभरे। सुनिपाये अति चैन सकलभूप सब सभासद॥
चौपाई ॥ तेहि थरजामदग्नि मुनिबोले । कृष्णकहे तुमबचनअ
तोले ॥ यह तो बचनसुहित गुणिगहिकै । तौरहि कुशलसम्प
दा लहिकै ॥ सुनोएक इतिहास अनूपा । होदंभोद्भव नामकभू
पा ॥ सार्ब भौमसो नृप अभिमानी । बोले द्विज क्षत्रिन सों
बानी ॥ मम समान दूजो रणचारी । हैकोऊ भटआयुधधारी॥
यहि बिधि नितिबूझै पणधरिकै । भोगै भूमि नीतिपथ चरिकै॥
द्वमि, बूझत तेहि सगरबजाने । तब सब ब्राह्मण अमरषआने॥
नृपसों कहो उभयभट भारी । हौतिन सरिस न तुम रणचारी॥





सोसुनि भूपकह्यो तेकोहैं । काहै नाम कहा बसिसोहैं ॥ सोसुनि
कहे विप्र मनभाये । नरनारायण तापस गाये ॥ सुने गन्धमादन
गिरिपाहीं । हैं तपकर तृतीय तसनाहीं ॥ यह सुनिकै भूपति
जगजेना । चलोसाजि चतुरंगीसेना ॥ क्रमसों कछु दिनचलि
कै भूपर । गयोगन्धमादन गिरिऊपर ॥ देखिभूपकहँ तापसदो-
ऊ । जानिमहानपुरुषहैकोऊ ॥ आसनबारिमूलफलदीन्हे । शुचि
सत्कारउचित गुणिकीन्हे ॥ फिरिकीन्होंनृपसोंसम्भाषन । चाहो
तौनकरोअनुशासन ॥ दोहा ॥ यहसुनिदम्भोद्भवकह्यो हमजीत्यो
सहलोक । अब तुमकहँ जीतन चहत लरो जानि बलओक ॥
मुनितें बोले रणकरो लहि क्षत्री बलवान । हम तपरत नहिं
रण चहत मम ढिग धनुष न बान ॥ चौपाई ॥ सुनि बोलो भूपति
धनुधारी । को मम सम क्षत्री रणचारी ॥ जोनलरै मम सन्मुख
थिरिकै । तुम भयत्यागि करौ रण भिरिकै ॥ फिरि तेहि बरजो
नरनारायण । नहिंमान्यो रणरस पारायण ॥ तबनर भूपहि ग-
र्वित चीन्हें । सींक एक मूठीभरि लीन्हें ॥ कहे भूपसों आयुध
लीजै । सुभटन सहित पराक्रम कीजै ॥ इतो इषीक डारि तौ
ऊपर । रणश्रद्धा बिनु करिहौं भूपर ॥ यहसुनि दम्भोद्भव क्षिति
नायक । तिनपर बरषनलागो शायक ॥ तब इषीक शर मंत्रित
करिकरि । नर प्रभुतजे बीरगति धरिधरि ॥ नृपके श्रवण नयन
मुखनाशा । शस्त्रनभरे छायसब आशा ॥ तबदम्भोद्भव मोहित
ह्वैकै । चरणगह्यो अद्भुतगति ज्वैकै ॥ तबनरईश क्रोधपरि हरि-
कै । कहतभये अनुकम्पा करिकै ॥ होहु सुधरमी शुचिमति ल-
हिकै । इमिमति कीन्हेहुलघुगति गहिकै ॥ निबल सबलके तुल
न होई । जो अपराध करै नहिं सोई ॥ हठि सगरबकै तासों
लरिबो । है अति अधरम अनुचित करिबो ॥ दान्त शान्त
दुसौम्य सुभावन । पालतप्रजा निपुण नृपचावन ॥ बूझि ब-
नावत करै अखेदा । साम दाम अरुदण्ड बिभेदा ॥ दोहा ॥

सुबचन भाषै हितुनसों मानै सुबचन अक्ष। जीतिधर्म आ
लहै सोक्षितिपालक दक्ष ॥ यह सुनि नरनारायणहिं ब
बिदाकैभूप। निजपुर आयोसैनसह आनँदगहे अनूप॥ सो
नरके ऐसेकर्म्म नारायणकी कृपाते। सो अर्जुन यह मर्म्म
भ्रिउचित सम्मतकरब॥ चौपाई ॥ परशुरामकी सुनि यहबा
बोलत भये कण्वमुनि ज्ञानी ॥ दुर्योधननृप सुधरम धा
राम कहतसो सुखद बिचारो॥ अर्जुनकी गरिमा सब जान
सम्मत करब उचित अनुमानत॥ उतपति प्रलय नाशके
रता। जासु सारथी हरि जगभरता ॥ कपिहैं नरनारायणसं
सिगरे लोकप जिनके अंगी॥ तासोंलरो न शठमति अतिसै
सम्मत करोधर्म नरपतिसों ॥ कुरु पांडवसम बसुधा लहि
भोगकरो सम्मतकरि रहिकै ॥ बलगुणि बली रहतहैं ऐ
नहिं बलरहत बलिन मधिपैठे॥ देव पराक्रम पांडव सिगरे
धरणीपर प्रबल अदिगरे ॥ है इतिहास पुरातन भावत। सु
तौन हमतुम्हैं सुनावत॥ मातलिकी दुहिता अभिरामा। र
एक गुणकेशीनामा ॥ मातलिसुर गन्धर्बन पेखे। तासु स
बरनहिं अवरेखें ॥ तब अनुमानि नागपुर डगरे। तहां
नारद गुणअगरे॥ बूझे कहां जातहौ धाये। निज कार
शक्र पठाये॥ सो सुनि मातलि आनँद छाये। नारदसों व
त सुनाये॥ सुनि नारदमुनि आनँद राखे। प्रेम सहित मात
सों भाखे ॥ दोहा ॥ चलो बरुणके पासतुम लखो तासु प
वार। निज दुहिताके सरिसवर देखिकरो ब्यवहार ॥ तब
तलि मुनिसँग चलि गयेवरुणके पास। पूजितह्वै नारदस
पाये सकल सुपास॥ सोरठा ॥ बरुणहि अर्थसुनाय अनुशा
लहिमुनि सहित। देखनलगे सचाय हेतहँ पुरुष प्रधानजे
तोमर ॥ तहँ देवमुनि तपधाम। कहिकहि सोबिक्रम नाम॥
लिलेशके सुतपर्म। अरुपौत्रजे अतिधर्म ॥ चलिचलि ल





त ताहि। तहँ अग्निअनुपम चाहि॥ इमि कहे लघुमतिमान।
शिखि बिष्णुचक्र समान ॥ नितिरहत रक्षत देश। इतभीति
को नाहिं लेश ॥ फिरि अगारि आनँद भेखि। गांडीव धन्वहिं
लखि॥ इमि कह्योदेखहुतात। गांडीवधनु अवदात ॥ यहकृत्य
समें पूर्ब। भो बिशद निरमित गूर्ब ॥ यह बज्रसार अभेद।
असुर नाशन भेद॥ यह पाइकाज उदोत। अति अधिक
बलप्रदहोत ॥ इमिभाषि चलि अन्यत्र। दरशाइ दीन्हें क्षत्र ॥
सलिलेशको अभिराम। बरधाम ताकोधाम ॥ जो अग्नि भ-
रत बांरि। दरशायसो मुदधारि ॥ इमिकह्यो यहसो देश। तहँ
अमरसह अमरेश ॥ करिअमृतपान अमन्द। राख्यो सुधारि
आनन्द॥ शशि घटत बढ़तइतैहि। तिहिको न रहतचितैहि॥
तदनु अति हरषाय। दिग द्विरद सब दरशाय ॥ सब कहे
गरिमा गौर। बिधितनय मुनि शिरमौर ॥ जेहिगुणौसुगुण नि-
केत। तेहिबरौ तनयाहेत॥ नहिंहोत अति मनमान। तौचलो
अनत सुजान ॥ दोहा ॥ तब मातलि मुनिसोंकहो अनतचलो
मुनिराज। तब हिरण्यपुर जातभे मुनिमातलि गुणिकाज॥
इतिश्रीउद्योगपर्वणिभगवद्दूतेमातलिबरान्वेषणोनामविंशोऽध्यायः २० ॥
दोहा ॥ श्रीनारद हरिगुण कथत चलि हिरण्यपुर जाय।
तहँ निवात कवची भटन दरशाये गुणगाय ॥ ये निवात कव-
चीप्रबल इन्हैं न जीतन शक्र। तुम सुसारथी युद्धमधि देखे
बिक्रम बक्र॥ जयकरी ॥ इनमें जोश्रीमन्तअमान। रुचैतुम्हैं तेहि
बरौ सुजान ॥ यहसुनि बोलो मातलि दक्ष। ये सुरपतिके शत्रु
प्रतक्ष॥ इनसबसों करिबो सम्बन्ध। उचित न हमकहँ जानि
निबन्ध॥ सो सुनिकै नारद मतिओक। गे मातलिसह खग-
पतिलोक॥ तहँजेखगपतिके षटबार। दरशाये तिनकेपरिवा-
र॥ तिन्हैं देखिमातलि मतिमान। नहिंरोचितकीन्हें मनमान॥
तब तेहिसह नारद अवदात। गये पतालमाहिं अतिभात॥

कहत भयेसो ताहि दिखात । यह सप्तम महितल विख्यात
इहांबसतिगो जननि सुछन्द । अमृतसम्भवा सुरभिअमन्द
एक समयमें बिधि भगवान । कीन्हों अमृत अधिक अ
पान ॥ गिरतो भयो अमृतको सार । मुखते अतिबर अ
सुढार ॥ ताते सुखमामय शुभरूप । भई गिरति उत्पन्न
नूप ॥ जाकी पयधारासों स्वक्ष । भयो महान क्षीरनिधि अ
पीवत तासु फेन मुनि जौन । महा तपस्वीते जगभौन ॥ ते
गरे मुनिफेनप नाम । तेहि ह्रदकूल बसत तपधाम ॥ ताकी
रिधेनु दिशिचारि । पालतसुनो नाम निरधारि ॥ बसतिसु
पूरुब आश । याम्यहांसिकाकरत प्रकाश ॥ तिमिहिं सुभद्रा
श्चिम देश । उत्तर कामदुधा शुभभेश ॥ दोहा ॥ यहिप्रका
वार्त्ता कहत मुनीश उदार । समुदजात भोगावती बोलसुव
चार ॥ मातलि यह भोगावती बासुकि पालत जाहि । ब
सिंहिकाके सुवननाग असंख्यन चाहि ॥ दश पचाशशतप
शत तृशत सहसमुख ब्याल । बासुकि तक्षक आदिहैं सब
हान छबिजाल ॥ चौपाई ॥ तहां सभा नागनकी देखी । सबवि
लखि मातलि अवरेखी ॥ ऐरावतकुल जात सोहावन । सुमु
नाम अहि अति मन भावन ॥ पुत्रचिकुरको चारुमहाना । म
त्रआरजक को बलवाना ॥ वामनको दुहिता सुतआरज । मु
सों कहे तासु गुणिकारज ॥ सो सुनिकै नारदसुखपाये । स
चार आरजहि सुनाये ॥ सुनि मुनिवचन नाग अनुमानी
सादर कहत भयो मृदुबानी ॥ सखाशक्रको सुबुधि सुधन्वी
मिलत भाग्यते अस सनबन्धी ॥ पैमम हिये एक दुखधाव
सुनो तौन हमतुम्हैं सुनावत ॥ ममसुत चिकुरगरुड़ तेहि
कै । खायोतदनुगयो इमिकाहिकै ॥ कछु दिनमें सुमुखहि गाहि
हौं । सो सुनिकै अतिदोचित मैंहौं ॥ अरजककी यहबाणीसु
कै । मातलिकहत भये इमि गुनिकै ॥ शक्र पासमम संगसु





त । सुमुख चलैं भयत्यागि सुचावन ॥ तहां जायहम कहिसुर-
पतिसों । अभय कराइब निजहित अतिसों ॥ मातलि नारद
सुमुखहिलैकै । शक्रपासगे निरभय कैकै ॥ सबवृत्तान्त सुनाइ
सुरेशाहि । कहे देहु अमृत अहि वेषहि ॥ हे तेहिठौर बिष्णु तेहि
मनमें । तासों कहे शक्रगुणि मनमें ॥ दोहा ॥ देहु अमी तुम
बिष्णुतब कहे कहत कतबंक । तुम सुरपति सबलोकपति देहु
अमी तजिशंक ॥ तब सुमुखहि बरदानदै अमरकिये सुरराज ।
तहि सुदारनिजपुर गये सुमुख सनाग समाज ॥ रोला ॥ गरुड़ यह
सुधि पाय रिसकरि शक्रके ढिगजाय । कहे कत तुम किये सुमु-
खहि अमरप्रीति बढ़ाय ॥ बिहित भोजन सर्पमम तुम किये
निरभय ताहि । गुणेनहिं मम बिशद बिक्रम बार अगणित
चाहि ॥ सुरराज्य ह्वैबे योग्य हमहैं बली जानतसर्ब । पिता
मम तौ एककाहे गुणत हमको खर्ब ॥ प्रबल प्रबलअनेक अ-
सुरन बधेहमकरि युद्ध । बिष्णुके हमभये बाहन तासु कारण
शुद्ध ॥ और दूजो रहो नहिंजो सहैताकोभार । एक हमतेहि
योग्य ताते कियो अंगीकार ॥ प्रबल सबआदित्य में हैं बिष्णु
अति बलवान । एक देश सुपक्षके तेहिबहत हममघवान ॥
महागरबित बचन यह सुनि कहतभे भगवान । गरुड़ आपु-
हि बहत हमनित तुम्हैं सहित बिधान ॥ नहीं तुम मम भार
सहिबे योग्यप्रबल अखर्ब । जानिकै बलवान आपुहि गहत
नाहक गर्ब ॥ सहो दक्षिण बाहु ममको भार तुम यहिकाल ।
सांचतौ हमकहैं जोतुम गहत गर्व बिशाल ॥ भाषिताके कांध
पर प्रभुधरी दक्षिणबाहु । भार नहिं सहिसको बलकरि गिरत
भो खगनाहु ॥ कांपिबिकल बिकलह्वै गतचेत क्षणमें चेत ।
गर्व तजिकै गहे प्रभुके चरण जीवनहेत ॥ बिनय सुनि तब
कृपाकरिकै कहे प्रभुहितजानि । फेरिकरियो गर्वमति परभाव
ममअनुमानि ॥ कण्वमुनिइतिहासयह कहिकहतभेसमुझाय ।

गरुड़कोनहिं गर्वराख्यो बिष्णुअमरषछाय ॥ गर्वगहि धृत
सुतमतिकरोरपादुखदाय । करोसम्मत पाण्डवनसों कृष्णज
सहाय ॥ कण्वमुनिके बचन सुनिकै कर्णकी दिशिहेरि । क
भो धृतराष्ट्र सुतनृप बचन सुगरब मेरि ॥ जौन ईश्वर किये
रमित गहत हमगति तौन । सुमुनि करत प्रलापनाहक ल
संशयकौन ॥ जनमेजयउबाच ॥ दोहा ॥ ऐसेकुहठी नृपतिकहँ
समुझायो कौन । सुनि बैशम्पायन कह्यो भूपति सुनियेतौ
तिहिक्षण नारदमुनिकह्यो सुनु दुर्योधनभूप । सुहित बचन
तव्य निति नहीं उलंघनरूप ॥ रोला ॥ शिष्य बिश्वामित्रमु
को रहो गालवनाम । कृपाकरि तेहि सुमुनिभाषो जाहु अ
धाम ॥ कहे गालव कहो सो गुरु दक्षिणा मुनिराय । देहु
कहँ बसैंहम घरसुमिरि पङ्कजपाय ॥ कहे कौशिक बहुत
मम कियो सेवाजौन । तौनलहि परसन्न हम अति दक्षिणा
तौन ॥ फेरिहठगहि कहे गालव दक्षिणाके काज । नहीं मा
कोपि तब इमि कहतभो ऋषिराज ॥ देनचाहत हमहिंजो
दक्षिणामनमान । आठशत श्रुति श्यामबाजी देहुतौ नहिंअ
न ॥ बचन यहसुनि चलोगालव महोदुखसों पूरि । भयेमिथ
बचन जगमें होत अपयशभूरि ॥ कहतमिथ्या बचनताको
राखतकौन । करत प्रतिउपकार नहिं जो वृथाजीवत तौन
करत इविधि बिषाद मनमें सुब्रत निरशनठानि । चलोगाल
बिप्र शोचित मरण निश्चय मानि ॥ जानिकामद बिष्णुकेदि
चलो द्विजअनुमानि । सखा ताको गरुड़ आये तहां प्रभुप्र
जानि ॥ बूझिसुनि वृत्तान्त निज पर द्विजहि गरुड़ चढ़ाय
प्रथम पूरुब उदय गिरिलौं गये आनँद छाय ॥ तहां उत्तमठौ
क्रमसों गालवहि दरशाय । गये दक्षिण ओर क्रमसों कह
थल समुदाय ॥ पितृ बिश्वेदेव यम यमराजको अस्थान । बि
शद वैतरणीनदी दरशायकै मतिमान ॥ सूर्य जहँलौं जात ज





प कियो रावण रक्ष । और थल दरशाय पश्चिम गयो दक्ष
पक्ष ॥ बरुण लोक लखाय सबफिरि जहांद्वितिको गर्ब । किये
ाडन शक्रजाते भये मारुत सर्ब ॥ आदि अस्ताचल सुथल
रशाय पश्चिमओर । चलो उत्तर ओर आनँद भरो खगस-
ोर ॥ जहां नारायण सुप्रभुनर तपततप अभिराम । बदरि-
ाश्रम तौन तहँ दरशाय आनँदधाम ॥ दोहा ॥ उमा शंभुजहँ
पततप सो दरशाय सप्रेम । मेरुहि दरशाये बहुरि सुरसरि
ायक क्षेम ॥ ऋषभ शैलके शृंगपर उतरे सद्विज द्विजेश । ज-
ा शाण्डिली ब्राह्मणी तपतरही तपवेश ॥ बन्दिताहि करिबा-
ा अन्नदयो सो खाय । सानँदकरि बिश्रामतहँ जागे निशा
िताय ॥ भोरगरुड़कहँ पक्षबिनु मांस पिण्डसम देखि । गालव
ह्यो गरुड़सों अति अचरज अवरेखि ॥ चौपाई ॥ प्रगटोकारण
ौन इहांते । पक्ष बिहीन भये तुम ताते ॥ सो सुनि गरुड़कहे
तेहि क्षनमें । हम निशिमें मन सो यह मनमें ॥ जहां बसतहर
हरिसुखदाई । तहां बसति यहमानवआई ॥ हमयहगुण्योतासु
परमावन । पक्ष बिहीन भये सुनुभावन ॥ करैंकृपा जब सुमुखि
भवानी । तब सुपक्ष हम होब सुज्ञानी ॥ इमिकहिकहो बिनय
अधिकाई । मम अपराध क्षमाकरुमाई ॥ यह सुनि कृपाकरी
सोदेवी । तब सपक्षभो खगहरिसेवी ॥ तब ब्राह्मणिहिं नौमिते
आरज । चलत भये चिन्तित निजकारज ॥ बिश्वामित्र मिलत
भे मगमें । कहे बिप्रसों दानी अगमें ॥ जेहि हितहम तुम सों
यह मांगो । आइ तौन अब कारज लागो ॥ शीघ्रदेहु सो द्विज
यह सुनिकै । अति चिन्तित भो मनमें गुनिकै ॥ खगपतिबिप्र-
हि चिन्तितदेखी । सादर कहतभये अवरेखी ॥ अनतनामिलिहैं
ऐसे घोरे । चलो ययाति भूपके धोरे ॥ इमि कहिकै खगपति
मनभायो । सद्विजययाति भूप पहँ आयो ॥ तिन्हैं भूप अति
बिधिवत पूजे । आगम हेत कहो इमिकूजे ॥ गरुड़ कहेये मम

हित आरज । कौशिक मुनिके शिष्य अचारज ॥ दोहा ॥
कौशिक सों हठिकहे गुरु दक्षिणाकेकाज । श्यामकरण हयआ
ठशत तब मांगे मुनिराज ॥ सो हयमांगत बिप्र यह नृप आ
तो पास । तुम कामदाक्षितिपाल मणि पूरणकीजैआस॥ चौपा
यह ययाति अवनीपति सुनिकै । खगपति सों इमि बोले गु
कै ॥ खगपति मोहिं कृतारथ कीन्हें । दरशन दे अति आनं
दीन्हें ॥ तपनिधि ऐसो अरथी आरज । मिलत भाग्यबलकि
सुकारज ॥ आजु देशममभो अतिपावन । आयो ऐसोअति
सुभावन ॥ पैहमकियो यज्ञसुगतियमें । अरथी करिबो बिमु
अनियमें ॥ नहिं करि सकत अरथ द्विजवरको । सकैं कहाकी
खाली घरको ॥ मंगन बिमुख होतहै जाको । सब करतव
निहफल ताको ॥ तासों और न पापी जगमें । तातेकहत पा
धरि पगमें ॥ हमजो कहैं तौन बिधिकरिकै । करो अरथ साध
ब्रत धरिकै ॥ सुता हमारि माधवीनामा । सब लक्षणयुत अ
अभिरामा ॥ सोहमदेत लेहुतुमताही । देहुजायबरभूपतिचाह
निक्रय तुरँगआठशत लीजो । कन्यारत्न ताहितुम दीजो ॥ म
दुहिताके उत्तम लक्षण । लखि हय देहै भूप बिचक्षण ॥ सु
द्विजभूपहि अकपट चीन्हे । ह्वैप्रसन्न सो दुहिता लीन्हे ॥ त
तिनसों ह्वै बिदा खगेशा । सानँद जातभये निजदेशा ॥ दोहा
गालव नृपसों ह्वै बिदा लैकन्या कुलदीप । गयो अयोध्या
गरमें जहँहरयश्व महीप ॥ दै आशिष हरयश्वकहँ कह्यो बि
तपधाम । यह मम दुहिता माधवी नामा अति अभिराम ॥
राम सुत उत्पत्तिकर लक्षण देखि सनेहु । निजपत्नी हित
नृप हम मांगैं सो देहु ॥ श्यामकरण हय आठशत हम चाह
हैं भूप । देहु हमें सो लेहु यह कन्या अनुपमरूप ॥ चौपाई ॥
सुनि भूप कन्यकहि देखी । सब उत्तम लक्षण अवरेखी
कहे बिप्र तुम अधिक न मांगे । हमैं आठशत हय लघु लागे





हैं ममगेह दोयशत घोरे । श्यामकरण नाहिं बसुशत मोरे ॥ करि अनुमान कहो तुम जैसो । सुतहित लागि करैं हमतैसो ॥ यह सुनि सो कन्या अनुमानी । गालवसों इमि कही सुबानी ॥ पूर्ब एक ब्राह्मण ब्रतधारी । मोहिं सुआशिष दियोबिचारी ॥ पति संयोग प्रसव दिन पैहै । तबहूं तो कन्यत्व न जैहै ॥ ताते हमैं नृपति कहँ देहू । हैं द्वै शत बाजी सो लेहू ॥ एक पुत्र उत्पति करिलैहैं । तब फिरि हमैं तुम्हें नृप देहैं ॥ फिरि मोहिं और भू-पतिहिदेकै । मोदेहु श्यामकरण हय लेकै ॥ गालव यह सतमत हिय राखे । इमि हरयश्व भूपसों भाखे ॥ एकपुत्र उत्पति करि लीजो । फिरि ममसुता हमैं नृप दीजो ॥ इमिकहि सुता भूप-तिहि दीन्हें । आपु निवास अनत कहुँ कीन्हें ॥ कछु दिनमें नृप सुत उपजाये । बसुमन सों सुनि गालव आये ॥ बिधिवत करि बातैं नरपतिसों । सुतालई सतिबकता अतिसों ॥ कहि भूपति हयराखो मितसों । हम लैजाब फिरब जबइतसों ॥ दोहा ॥ इमिकहि नृपके दोयशत बाजी नृपपहँ राखि । कन्यालै काशी-शपहँ गयो तुरग अभिलाखि ॥ दिवोदास काशीशसों गालव लहि सतकार । सबिधि सुनायो निजअरथ सो सुनिभूप उदार ॥ कहे पूर्ब हमसब सुने द्वैशत हय ममगेह । एक पुत्र उतपति कियो हम चाहत गहिनेह ॥ जयकरी ॥ सुनि गालव करि बातैं श्राम । कन्या देयगयो तपधाम ॥ तासों रमो कछूदिन भूप । प्रगटभयो तब पुत्र अनूप ॥ जाको भयो प्रतर्दन नाम । तब आये गालव गुणिकाम ॥ निज निबन्ध नरपतिसों भाखि । तु-रग दोयशत नृपपहँ राखि ॥ लैकन्या सुख सुखमा रास । गये उशीनर नृपके पास ॥ ओऊ द्वैशत बाजी देन । एकपुत्र उतप-ति करिलेन ॥ कहे तौन सुनि द्विज मतिमान । कन्या दे गो बन अस्थान ॥ तासों रमो भूप मनमान । तब प्रगटो शिविपुत्र अ-मान ॥ सो सुनिकै गालव तहँजाय । करिसुबारताप्रीतिबढ़ाय ॥

तुरग भूपपहँराखि सडौर । चले सुतालै तकि नृपऔर ॥ मगमें
आय मिले खगराज । कहजातकहँद्विज कोहिकाज ॥ सो सुनिकै
गालवमुनि दान्त । कहतभये सिगरोबिरतान्त ॥ सोसुनिकहेग
रुड़ अनुमानि । अबमम बचन करोहितजानि ॥ लैषटशतबाजी
श्रुतिश्याम । अरुयहकन्यासुखमाधाम ॥ कौशिकमुनिपहँचलिमु
द लेहु । षटशतहय यहतनया देहु ॥ कहोसकलबिरतांतसचार ।
मुनितनया करिहैं स्वीकार ॥ दोहा ॥ सो सुनि गालव मानिहित
षटशत तुरगमँगाय । सहित सुकन्या जातभे जहँकौशिकमुनि
राय ॥ बन्दि चरण मुनिराजके कहे सकल बिरतांत । सो सब
सुनि निज शिष्यसों भाषे कौशिकदांत ॥ प्रथमैं हमैं सुकन्यका
कत नाहिं दीन्हें आय । उत्रिण तुमकहँ करत हम चारिपुत्र उप
जाय ॥ इमिकहि मुनिगुणि राखिरमि नृप दुहिताके संग । एक
पुत्र उतपति किये अष्टकनाम सुअंग ॥ पुत्रभयो चैतन्य तब
निजपुर भेजे ताहि । नृपतनया दे गालवहि मुनि बनगे तप
चाँहि ॥ चौपाई ॥ गालव इमि गुरुदक्षिण दैकै । गे ययाति पहँ
तनया लैकै ॥ सब बिरतांत भूपसों कहिकै । तनयादे आये मुद
लहिकै ॥ नृप गुणि पुत्रनशासन दीन्हे । ते सुस्वयम्बर रम्भत
कीन्हें ॥ गहिजयमाल सुतासों फिरिकै । नाहिं बर रोचित कीन्हों
थिरिकै ॥ रथते उतरि त्यागि जनदेशा । तपाहितकीन्हे बिपिन
प्रवेशा ॥ तृणफल खाय बिशदव्रत गहिकै । बिचरतभई मृगि
न सँग रहिकै ॥ नृप ययाति तपकरि तन तजिकै । स्वर्ग गये
सुरगणसम सजिकै ॥ कछुदिन तहां भोगकरि राजा । गिरत
भयो तजि स्वर्गसमाजा ॥ सुर गन्धर्व ऋषिनके देखत । नृप
तौ निजकरणी अवरेखत ॥ नृप तेहि समय प्रतर्दन चायक ।
बसुमन शिवि अष्टक नरनायक ॥ बाजपेय मख अतिशय
पावन । नैमिषारमें सरस सुभावन ॥ करतरहे तहँ तिनकेआ
गे । गिरे ययाति करमगतिलागे ॥ महिगतभूप ययातिहि ज्वैकै





ते नृप बोले बिसमित ह्वैकै ॥ तुमगन्धर्वयक्ष सुरकोहौ । चाहत
कहा कहो कहि जोहौ ॥ ययातिरुवाच ॥ हम ययाति नृप तपफल
भोगी । देवलोकसों भये बियोगी ॥ काहू पुण्यनको फलपाये ।
जो यहि ठौर तुम्हैं मधिआये ॥ दोहा ॥ यहसुनि ते चारो नृप-
ति निज मातामह जानि । कहे ययाति महीपसों छोह मोहहिय
आनि ॥ दान यज्ञ तप धर्म व्रत जो हम सबको सर्व । तासुपु-
ण्य करि ग्रहण तुम सुरपुर जाहुअखर्व ॥ हमक्षत्री नहिं बिप्र
हैं यह नहिं मम ब्यवहार । औरनको तपधर्म फल किमिकरिये
स्वीकार ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण तेहि थल आय बरव्रत चारिणि
माधवी । कहो पिताहिसमुझाय ये तौ तनयाके सुवन ॥ चौपाई ॥
तनया सुतप्रद पिण्ड सुनेते । ग्रहण करत सब अंगज जेते ॥
तातें भ्रमतजि आनि उछाहू । तपमख फललै सुरपुर जाहू ॥
सो सुनि उचित जानि नृप माने । सुरपुर गमनहेतु उमदाने ॥
इतने महँ गालव तहँ आये । नृपहि अशीश दिये मन भाये ॥
फिरि यहि कहे सुनो अवनीसा । ममतप व्रतको अठवोंहीसा ॥
लहि फिरि जाहु शक्रपुर राजा । बिलसो जैसे सुमनसमाजा ॥
इतनेमें अभिषेकित मूरध । नृप महित्यागि गयोकछु ऊरध ॥
तबबसुमन आदिक नरनायक । क्रमसोंकहतभये गुणिलायक ॥
मम तपयज्ञ दानफल लहिकै । सुरपुर जायबसो मुद गहिकै ॥
तिनके उग्र पुण्य परभावन । लहे ययाति स्वर्ग मनभावन ॥
सेवित सुर अप्सर ऋषि गणसों । सानँद बिलसत भयेसुमन
सों ॥ तहां पितामह आये ताही । पूजि ययातिकहे हितचाही ॥
नाथ बहुत दिन हम महिभोगे । तप मख दानबहुत उपजोगे ॥
सो ब्यतीतभो थोरे दिनमें । ताको भेदकहो यहिक्षनमें ॥ सुनि
कमलासन कहे नृपति सों । तुम इतपूरे आनँद अतिसों ॥ शक्र
सरिस उत्तम पद पाये । सुरगणसों सेवित छबि छाये ॥ दोहा ॥
उत्तम सुर ऐश्वर्य्य लहि तुम कीन्हे अभिमान । तातें सुरपुरते

गिरे क्षीणमूल तरुमान ॥ कीन्हे अति अभिमानभो लोपित
गय ललाम । इबिधि बुझाय ययाति कहँ बेधागे निजधाम
बैशम्पायनउवाच ॥ नारद यह इतिहास कहि दुर्योधनहि बुझाय
कहे भूप अभिमान अति किये बिभूति नशाय ॥ पुण्यनश
अभिमानते हित अनहित ह्वैजात । ताते नृप अभिमानत
करो मंत्र अवदात ॥ सोरठा ॥ नृपति ययाति महान भ्रष्ट
अभिमानकरि । अभिमानहिदुखदान जानिकृष्णकोमतगहो
इतिउद्योगपर्बणिभगवतोदूतकर्मणिगालवचरित्रवर्णनोएकबिंशोऽध्याय

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारदमुनिके बचन सुनि कह्यो
क्षितिनाह । सांचकहो मुनिराज तुम यहमत मम मनमांह
इमि कहिकै धृतराष्ट्रनृप बहै केशवहिनौमि । तुमबुझाय दुर्यो
धनहि करोमूढ़मति सौमि ॥ हमगान्धारी बिदुर कृप संज
भीषम आदि । समुझाये मानतनहीं यहमतिमन्द प्रमादि
जयकरी ॥ वृद्धभूपके बचन अहीन । सुनिबोले यदुनाथप्रवीन
दुर्योधन तुम भूपमहान । उत्तमकुलनायक मतिमान ॥ हौल
भांति समर्थ प्रसिद्ध । करो तौन जो सिखवतवृद्ध ॥ हठ त
करौ सुकारज तौन । करत सधर्म नीतिरत जौन ॥ तात गह
मति अधरम चार । जो कुत्सित जनको ब्यवहार ॥ किये अ
मर्ष अयशको सोत । बाढ़त नाश लहत हितगोत ॥ कार
तौन करौ मतिइष्ट । जाते प्रगटै महा अनिष्ट ॥ माता पि
कहत भत वेश । तौन ब्यर्थ मतिकरोनरेश ॥ निदरबमातुपित
के बैन । अति दुखदायक नाशक चैन ॥ सताचार रत सुमति
अमेय । तिनको मंत्र सकल बिधिश्रेय ॥ भीषम आदिक जि
प्रबुद्ध । तेसब चाहत सम्मत शुद्ध ॥ सबको मत सुखदायक
जानि । सम्मत करो धर्म अनुमानि ॥ हठशठता गहि कीन्हे
युद्ध । सबको मृत्युकालहै उद्ध ॥ पाक करत जरिमरै बराक
कौन मोद कीन्हे वह पाक ॥ सताचार मंत्री सुखदेत । असत





पूरबदुख हरिलेत ॥ शक्रसमान सुबंधु सप्रीति । तिनकहँ शत्रु
करबनहीं नीति ॥ दोहा ॥ तुम बहुदिन पांडवन सों कीन्हेंअन-
रथ भूरि । वै अनरथ चाहैं नहीं सुधरम नीति बिसूरि ॥ बनमें
अतिदुख भोगकरि अब वै गहे अमर्ष । ताते चाहौ कुशल तौ
सम्मतकरो सहर्ष ॥ शकुनि दुशासन कर्णको मंत्र गुणोदुखदा-
नि । अंश देहु पांडवन कहँ वृद्धनको मतमानि ॥ पंकजबाटिका ॥
बैर बढ़ाइब भूपति नीकन । सम्मत आनँद सिन्धु अली-
कन ॥ लोभहियें गहिधर्म नशाइब । जानहु आपदको पद
आइब ॥ जाकर अंश सबै जग जानत । ताहि निरंशकियो
कृतमानत ॥ ज्यों तृणके बन पावक लागत । ज्यों परबित्त
हरे अघपागत ॥ दोहा ॥ बन्धु बर्गकहँ मित्रकरि शत्रुहि जी-
तब नीति । बन्धु अहितभो तब लगत बन कुठारकी रीति ॥
सब पांडव हैं प्रबलअति उनसों बैरन नीक । को सन्मुखथिर
लरिसकी धरी धनुषकी लीक ॥ कवित्त ॥ लाल करिलोयन बि-
शाल गोपीनाथ जब भीमसेन कालसों कराल ह्वैकै लसैगो ।
रथते उतरिबड़े गथकीगदालै रणपथ पै सबेगडाटि तोदलमें
धसैगो । दीरघउदण्ड दोरदण्डन चपलकरि मण्डन मही को
घनध्वनिकरि निकसैगो । थरथर धरा धराधर तबह्वै है घर
कौनको नशैगो अब कौनकोधौं बसैगो ॥ दोहा ॥ खाण्डव बन
जारो लखत ब्रह्माण्डपके जौन । ताण्डव निरतन हारसों ल-
र्यो सुपांडव तौन ॥ कपिध्वज सुरथ महान पर चढ़िकरि धनु
सन्धान । लरीआइतब कौनभट करी घोर घमसान ॥ कवित्त ॥
पारथधनुष गांडीव करषतजब ऐहै बरषतशर आयस बिशाल
के । होयगो दुसह दुरदिन तेहिक्षण निशिदिन गुणिसकि हैं न
जेऊ बड़ेभालके । गोपीनाथ कहैसाथ कौनको रहैगोतब जरैंगे
जवामे भट भूपनके नालके । मछनके छवासे सपक्षक्षितिपाल
परिबाणनके जालमें परैंगेगालकालके ॥ दोहा ॥ बिक्रम उनको

प्रगट है जानतसब क्षितिपाल । को अर्जुनसम जगतमें ध
धर सुभट बिशाल ॥ भीष्मद्रोण कृप कर्णको गरबगहो म
भूप । सब जगजेता बिदित है पारथ शक्रस्वरूप ॥ कवित्त ॥
धिकै गन्धर्वपति तुम्हैं लै चलो हो तब करणादिभट तहँ
कै नहींरहे । जब तुमचढ़िकै बिराटपुरगये तबभीष्मद्रोण आ
धनुगहे कै नहींगहे । हमतौ नहीं हे तहां दूरसों सुनेसो कहे
णित के धार भटबहे कै नहींबहे । बाणनसों छिन्नकरिगात
बहीको हेत गोधनके पारथ जय लहे कै नहींलहे ॥ दोहा ॥ त
अमोघन शरनसों करिअवरोधनरूप । गोधनलेगो आर्जु
तिमिलेहै महिभूप ॥ क्षात्रबंशको नाश गुणि मोहिं होतनिरखे
कहोमानि सम्मतकरो दूरिहोय सबखेद ॥ सोरठा ॥ कृष्णचन्द्र
बैनसुनि भीषमनृपसों कहो । कुशलचाहि मतिऐन कृष्णकहे
जोसो करो ॥ चौपाई ॥ धरमअरथआनँदप्रद बानी । कहतबुभा
कृष्णगुरुज्ञानी ॥ सुतहित सखाबन्धु सनबन्धी । युवावृद्धजीत
अनुबन्धी ॥ सबको जीवन सम्मत कीन्हें । नातरु मरणसुु
सबचीन्हें ॥ तातेबारबार समुझावत । अनरथ कारण दूरि
रावत ॥ सोहित जानि धरो हियमाहीं । बन्धु बिरोध मोदप्र
नाहीं ॥ द्रोणकहे तब अवसर पाई । तातजौं अमरष दु
दाई ॥ अर्थ धर्मसुख सम्पतिदायक । नीतिकहत भीषम य
नायक ॥ भूपअवशि सो करिबेलायक । अर्जुन केहैं कृष्ण
हायक ॥ अर्जुनएक जगतको जेता । तासँग केशव रथगा
नेता ॥ होइहि अवशि नाश सबजनको । तात देहुतजि ह
यहि प्रनको ॥ अबनहिं कहब कह्योहितयेतो । गयोधरमग
अवहूं चेतो ॥ यहसुनि कह्यो बिदुर नयचारी । तातजौं ह
दुखद बिचारी ॥ हमनहिं शोच तिहारो आनत । इन दम्प
को दुख अनमानत ॥ बिनुसुत बंधु सखाहित ह्वैकै । पक्षहि
पक्षी गतिग्वैकै ॥ अन्ध वृद्ध सुतशोकनदहिहैं । ह्वैअनाथ





आशागहिहैं ॥ कौनदशा लहिहैयहिप्रनमें । इतनोदख बर्द्धित
मम मनमें ॥ दोहा ॥ इनसबके येबचन सुनि वृद्धभूप गहिमोह।
दुर्योधनसों कहतभो पुत्रत्यागि हठकोह ॥ क्षात्रबंशको कुशल
कृत बचनमानि क्षितिनाथ । जाहु युधिष्ठिर भूपपहँ कृष्णचन्द्र
के साथ ॥ सोरठा ॥ दुहुँदिशिको कल्यान चाहिकृष्ण सुधरम
कहत । पुत्रकरोमतिआन जाहुधर्म क्षितिपालपहँ ॥ ऐसेबचन
अनूपसुनि नहिंकछु उत्तरदियो । जबदुर्योधन भूप तब फिरि
इमि भीषमकहो ॥ छप्पै ॥ जौलगि धर्म नरेश नरन हित सैन
सजावत । रथचढ़िसदल सबन्धु नहीं दुंदुभीबजावत ॥ भीम-
सेनगहि गदा न जौलगि ओजबढ़ावत । पारथकृष्णहि नौमि
न जौलगि धनुष चढ़ावत ॥ सहदेव नकुल सात्वकि सुभटजौ
लगि धनुष न गहत बनि । नृपमाणिकहो तौलगि चलौ जहां
धर्म क्षितिपालमनि ॥ अपरं ॥ जौलगि द्रुपद बिराट महीप न
दलसजि बलकत । धृष्टद्युम्न अभिमन्यु न जौलगि रणहित
ललकत ॥ धृष्टकेतुसहदेवयुधामणि आदिकनरपति । जौलगि
सदल सबन्धु चलैं नहिंठानत रणगति ॥ सजि द्रौपदेय हिड-
म्बसुत जौलगि चढ़त न रोषसनि । नृप माणिकहौ तौ लगि
चलोजहांधर्म क्षितिपालमनि ॥ अपरं ॥ धर्मधुरन्धर यशीसुहृद
गुरु बन्धु बिशारद । चलिसबन्धु ढिगतासु बचनकहिसविनय
शारद ॥ पदपङ्कजअरुपर्शकरोतजिअमरषदारुण । सम्मतकरो
सप्रेम क्षेमहित हिय करि कारुण ॥ कबिनाथ कहत क्षितिनाथ
सुनुजग अनित्यभोनित्य कब । इतनदी नावसंगम उतरि कि-
तवै तुम हम और सब ॥ दोहा ॥ धर्म महीपति युद्धको गहन न
पावै चाव । बीस बिसे चलिभूमि पद सादर करी बनाव ॥ भी-
षम केये बचनसुनि दुर्योधन क्षितिपाल । कृष्णचन्द्रसों कहत
भो सगरब बचन बिशाल ॥ दुर्योधनउवाच ॥ मनोरमा ॥ तुमकेशव
पाण्डवको कहिकै यस । हमको तुम नाहक निन्दत हौकस ॥

हम कौन अनीति कियो उनसों अब । निजहाथ जुवामधिहा
दये सब ॥ अब मांगत तौ, वह जातदयो किमि । उनको य
धर्म कहा करिबो इमि ॥ धन हारतसो नहिं लेत महाजन । स
छोड़त वै तजिनीति महापन ॥ दोहा ॥ आपुभीष्म द्रोणादि स
बहुत बुझावत मोहि । उन्हैं बुझावत डरतसब यहप्रतक्षबि
जोहि ॥ तुमसब निन्दत हमहिं नित करि उनको अवराध । ह
बिचार करि लखत तौ नेकु नमम अपराध ॥ चौपाई ॥ नाहकपा
एडव दुरमति धरिकै । मम शत्रुन सों सम्मत करिकै ॥ हमपै
लरो चहत बिनु कारज । हम न डरबनटवर सुनु आरज ॥
ह्वै बक्रशक्र चढ़ि आवै । तौ हमसों लरि नहिं जयपावै
सदल पाण्डवन हम लघु जानत । नहिं रणमें निज स
अनुमानत ॥ भीष्म द्रोणकृप अश्वत्थामा । कर्णशल्यश
अति बलधामा ॥ शकुनि जयद्रथ धनुधर नायक । तिं
कौनभट जीतन लायक ॥ कै हमउन्हैं बधब रणमाहीं । कैवेह
कहँ संशयनाहीं ॥ क्षत्रिनको यह धर्म कहावत । बधेगये बी
कीरति पावत ॥ जीते राज्य मरे सुर ग्रामा । उभय प्रकारमों
की सामा ॥ और प्रकार नमो मनआवत । नाहक सबबकब
द बढ़ावत ॥ भये अज्ञान मोहबश ह्वैकै । कैधौं ममबालाप
ज्वैकै ॥ उनकहँ इन्द्रप्रस्थ नृपदीन्हें । सोनाहिं राज नीति बि
कीन्हें ॥ हमसोंभूमि भाग्यबल जीते । पाण्डवसों फिरि ले
चीते ॥ सूई अग्रभूमि नहिंपैहैं । नाहक लरिमरि यमपुरजैहैं
कहो बुझाइ कुमति मतिधारें । जायबिपिन बसिजनमसुधारैं
हारिदयोधन मांगत कोऊ । पावत कौन सुनावहु सोऊ ॥ ध
छोड़ि मति अधरमसाधैं । काललोकपथ मतिअवराधैं ॥ दोहा
दुर्योधन क्षितिपालके ऐसे बचनअनीक । सुनि यदुनायकक
तभे आयो कालनजीक ॥ अमरषबश मानत नहीं वृद्धगुल
की बात । सूरसेनतौ करहुगे धूरिधूसरित गात ॥ सोरठा ॥ ह





कपासे डारिधन जीते नहिं धर्मगति । तबहूं धर्म बिचारिवैबि-
तये तेरहबरष ॥ चौपाई ॥ जान निबन्ध कियो तुमराजा । जानत
सो सब सैनसमाजा ॥ तौन बितायमही अबचाहे । देन न चा-
हत हौ तुम काहे ॥ जे अघ बीज बोय तुम आगे । तेफलफूल-
न पूरनलागे ॥ सीख न मानत हौ तुम जाते । देशअमानुष हौ
इहिताते ॥ दोहा ॥ महिषी पाण्डव नृपतिकी कियेदुर्दशातासु ।
गुणे सिखापन कौनको ऐसी दुर्मति जासु ॥ इतनेमें नृपसोंक-
ह्यो दुःशासन अनुमानि । भूपदशा यहिसभाकी तुम्हें परत
नहिं जानि ॥ भीष्मद्रोण कृप और सब पिताबुद्धि क्षितिनाथ ।
हमैं तुम्हें अरु कर्ण कहँ बांधि देत हरिहाथ ॥ निशिपालिका ॥ बैन
यह भूपसुनि शोचिगुणि कोपिकै । बन्धुसब सैनिकन संगउठि
ओपिकै ॥ जायनिज गेहभट वृन्दसह बैठिकै । तेज अति तेज
करि सिंहसम ऐंठि कै ॥ दोहा ॥ दरपभरो बलकन लगो गरबी
गरबित बैन । उतै कहे द्रोणादि सों केशव करुणाऐन ॥ चरणाकु-
लक ॥ सबके बचन सर सहित साने । दुर्योधन नहिं हित करि
जाने ॥ सब कहँनिदरि जातभो उठिकै । यहि अभिमान पसा-
यो सुठिकै ॥ हठगहि करि मंत्री दुरमगके । नाशन चहतसकल
जनजगके ॥ ताते तुम सब सम्मत करिकै । जगत बचावहु बि-
धि अनुसरिकै ॥ यहि बिधि कंसराज मद मातो । धर्म छोड़ि
अधरम रँगरातो ॥ ताको अधरम कर्म निरेखी । सब यदुबंशी
मत अवरेखी ॥ कीन्हे तासु त्याग गुणि मनसों । तबहमतासु
कियो बधप्रनसों ॥ तबतेभो यदुबंशसुखारी । जानतहौतुमसब
यचारी ॥ बलिबढ़ि भयो गरबबिधि ठानत । तेहि बांध्योहम
सब जगजानत ॥ बिनशै जगत एकके रोषन । तौ तेहिगहि
बांधब कछु दोषन ॥ कुलके हेतु एकतजिदीजै । नगर हेतुकुल
तजिमुद लीजै ॥ तजिये नगर देशके कारण । आतमहेतदेश
वारण ॥ कर्ण दुशासन शकुनि कुमंत्री । दुर्योधन कुलनाशक

तंत्री ॥ इन्हैं पकरि यह नीति बिचारी । सबिधि करो काराग
चारी ॥ यह कीन्हें सबजग जन बांचत । अनरथ मिटत सु
दमुद रांचत ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्र के बचनसुनि वृद्धनृपति
गौर । कहे नृपति गान्धारजहि लेआवो यहिठौर ॥ बिदु
य गान्धारजहि भूपतिके ढिगल्याय । ब्रतधारिनको आग
भूपहि दयो सुनाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभाषायांउद्योगपर्वणिभगवद्दूतेद्वाविंशोऽध्यायः

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ घरिकशोचि धृतराष्ट्रनृप फिरि लै
बिउसास । गान्धारी सों कहत मे सुबचन चाहि अनास
जयकरी ॥ परोमोहबश तोसुत मूढ़ । भयो पापरत गरबारू
मानतकहो न बचन उदार । सबसमुझायथके बहुबार ॥ ग
सभाते उठिकरिरोष । गहि अभिमान न जानतदोष ॥ कि
चहत अनरथ अतिमान । क्षत्रबंशकोनाशमहान ॥ तुमबोल
वाइ कहौ समुझाय । उचितकरब सम्मत सुखदाय ॥ यहसु
गान्धारी अनुमानि । कहतभई हियसंशयआनि ॥ दुर्योधन
तिमन्दअमान । सुहित सिखापन करत नकान ॥ होइहि
विधि निरमित जौन । कैसेहु मेटे मिटतन तौन ॥ इमिकहि
ही बिदुरसों बैन । तुम सबबिधि ज्ञाता मतिऐन ॥ जाहु सु
धन भूपतियत्र । ममशासन कहिल्यावहु अत्र ॥ यहसुनिबिदु
भूपपहँ जाय । लैआयेै विधिवतसमझाय ॥ क्रोधितपन्नगस
बलऐन । श्वासलेतकरि रातेनैन ॥ सभासदनमधि बैठोआय
बन्धुसखन सहओज बढ़ाय ॥ तबगान्धार सुतागहि प्रीति
सुतसों बोली बचनसुनीति ॥ दुर्योधनप्रिय पुत्रमहीप । हि
ममबचन मानुकुल दीप ॥ भीष्मद्रोण कृप बिदुर प्रवीन ।
हतकरो सो बचन अहीन ॥ दोहा ॥ बचनकहत तो जनक
नहीं उलंघन योग । बन्धुनसो सम्मत करब उचित कहत
लोग ॥ छन्द ॥ ईछे मिलतन राज्य रहतनाहिं बनत न पालत





पूर्वकर्म प्रारब्धतौन भावीगति चालत ॥ कामक्रोध मदलोभ
अहित करता दुखदायक । शमदम सुधरम नीति सुखद हित
करिबिलायक ॥ सुत काम क्रोध मदलोभतजि शमदम सुधरम
नीतिगहि । प्रभुकृष्ण कहत सो महतहित सम्मतकरु प्रिय
बचनकहि ॥ अपरं ॥ तीनिलोक पति भयेलोभ नहिंमिटतकहत
सब । लोभ मिटत गुणि धर्म हिये सन्तोष गहत जब ॥ बंधु
अंश को हरबकरब अधरम सबभाषत । प्रबलबंधुकोअंशच-
पत कहुहिय अभिलाषत ॥ सुतअसत पथिनको मंत्रसुनिहठ
ठानहु मतिकुपथ गहि । प्रभुकृष्णकहत सो महतहित करुस-
मतप्रिय बचनकहि ॥ अपरं ॥ तुरग अशीक्षित बली सूतनाहिं
जानत रथगति । कर्णधार भरअपटु नदीबर्द्धित बेगितअति ॥
गरबी भूप अमानहोत लघुमति मंत्रीतब । सुथर सुखद क-
ल्याण मिलतनाहिंभाषत बुधसब ॥ नृपमंत्रकरणकोसुहितगुणि
बुद्धकरो मतिअनयनहि । प्रभुकृष्ण कहत सो महत हित
करुसम्मत प्रियबचनकहि ॥ दोहा ॥ गान्धारीके बचनये अन-
रथ मेटनहार । सुनिचुपरहि फिरि उठिगयो गुरबभूभरतार ॥
शकुनि दुशासन कर्णसह बैठिकरतभो मंत्र । जानिपरत मम
गहनको केशव तानेतंत्र ॥ सोरठा ॥ ममगहिबेकोडौर जौलगिये
सिगरेकरैं । तौलगि हमकरि गौर बांधिलीजिये कृष्ण कहँ ॥
मुनिकै बन्धन तासु पांडव सब ह्वै हैं बिकल । तबजय पाइब
आसु जौलरिहैं तौ सदलबधि ॥ चौपाई ॥ यहकुमंत्र उनजोअ-
नुमाने । सोबुधिबलसों सात्वकि जाने ॥ कृतबर्मासों कहिकहि
दीन्हें । रहाभटन कहँ सुयतनकीन्हें ॥ इमिकहि आपुसभागृह
आयो । करिसुइशारा प्रभुहिजनायो ॥ इमिधृतराष्ट्र नृपतिसों
भाष्यो । तोसुत मूढ़ अनय अभिलाष्यो ॥ गहनचहतमाधव
कहँ तैसे । ज्वलित कृशानुहि बालकजैसे ॥ यहसुनिकहे बिदुर
ब्रतधारी । तोसुतमूरुख अधरमचारी ॥ कृष्णप्रभाव न हिये

विचारत । रबिपरशन कहहाथ पसारत ॥ इतनेमें केशव अ
मानी । वृद्धनृपतिसोंकहेसुबानी ॥ जौहम अनरथ आनैं म
में । तौतोसुतन बिनाशैं छनमें ॥ पैनहिं अधरम करिबोइक्ष
अरथ धरम सुखदायकशीक्षत ॥ दुर्योधनसो हिये न आनत
शठमति हठगहि अनरथ ठानत ॥ पकरिताहि कारागृहडा
क्षात्रबंश क्षयअनरथ टारो ॥ नहिंसिखवन मानी यह राजा
मरीयुद्धकरि सहितसमाजा ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्र महीपति
कहेबिदुरसों बाणी दीपति ॥ जाय अधरमी सुतहि बुझाये
मंत्रीबन्धु सखासहल्यायो ॥ यहसुनिगयेबिदुरमनभाये । दु
धनहिं बोलिलैआये ॥ धृतराष्ट्रउबाच ॥ दोहा ॥ कर्ण दुशासन
कुनिको सुनि कुमंत्र हितजानि । पापकर्म चाहतकियो अध
सुधरममानि ॥ देखिबलाबल करतनहिं साध्यअसाध्यबिचा
कुलपासन चाहतकियो जगजनको संहार ॥ सोरठा ॥ जो प्र
प्रभुताएेनजेतासबसुरअसुरके । केशवसबजगजैन गहनच
तेहिमन्दमति ॥ बिदुरउबाच ॥ पावकशम्भु कुमार बाणासुर अ
बरुणकहँ । जीत्योजौन उदार गहन चहततेहि मोहबश ॥ गो
बर्द्धनहिं उठायजेहिराख्यो निजपाणिपर । असुरनके समुदा
हन्योताहि चाहत गहन ॥ चामर ॥ कृष्ण भूपसों कहेंगहे म
अयानता । मोहिं एक जानिमानि नीतिकी सयानता ॥ बाँ
लेन डारिदेन बन्दिगह में गुने । भूलिमो प्रभाव तौन जौ
श्रौनसों सुने ॥ दोहा ॥ हमन एक ममसंग इतहैं प्रद्युम्न बलि
राम । सब पाण्डव यदुबंश सब सब आदित्य अछाम ॥ इ
कहि माधव मुदित ह्वै रूप बिराट अनूप । दरशाये दु
धनहि और रहे जे भूप ॥ सबपांडवआदित्यसब सबयादव
मुदाय । सब देखे सबबिधि सजे यदुनायकके काय ॥ चौपाई
लखि स्वरूप सो नृप सबडरिकै । मूंदिरहेचष बिस्मयधरिकै
संजय बिदुर द्रोण अरु भीषम । देखत रहे रूपवह बीषम





भूपति दिव्य चषनसों देखे । तब प्रत्यक्ष लखिबो अवरेखे ॥
कहेनाथ लहिचष अतिपावन । देखो चहतरूप मनभावन ॥
यह सुनि प्रभु अनुकम्पा कीन्हें । धृतराष्ट्रहि अनुपम चषदी-
न्हें ॥ सो लखि सुरगण बिसमित ह्वैकै । प्रभुहिप्रणाम किये
बिधिज्वैकै ॥ फिरिपूर्बवत भये यदुनायक । भयो पूर्बवत भूपति
नायक ॥ तब प्रभुसात्वकिको कर गहिकै । उठिकै चले मोद
मों नहिकै ॥ उठिसबभूप चलेपहुँचावन । सुरथचढ़े माधवछ-
बिछावन ॥ सुरथचढ़े सात्वकि कृतबरमा । और सुभटसब पू-
रित परमा ॥ तब धृतराष्ट्र भूप इमि भाखे । प्रभुहम पापबुद्धि
नहिं राखे ॥ तुम परतक्ष सुनी ममबानी । नाहिं मान्यो दुर्योधन
मानी ॥ यहसुनिकहे कृष्ण जगस्वामी । तोसुतभावी बिधि अ-
नुगामी ॥ बिनुमति फिरे गहे हठऐसे । भूपहोइ वहहोनीकैसे ॥
इमिकहि तुरित बिदा ह्वै सानँद । कुन्तीके ढिगगे प्रभुनानद ॥
बन्दि पृथाकेचरण सोहाये । बिधिवत सबवृत्तान्तसुनाये ॥ जे-
हि बिधि समुझाये सबकोई । नाहिं मान्यो दुर्योधन सोई ॥ इमि
कहिगहे शोच मतिगाहौं । कहौ सँदेश कहनजो चाहौं ॥ यह
सुनि कही पृथाअनुमानी । कहहु युधिष्ठिर सों प्रभुज्ञानी ॥
क्षात्र धर्म्मको त्यागन करिकै । लहे दुसह दुखअटवी चरिकै ॥
दोहा ॥ क्षात्रधर्म्म त्यागन करबनाहिं भूपनकोकर्म्म । नृपकेसाधे
सधत है बर्ण आश्रमधर्म्म ॥ पूर्बभूप मुचुकुन्द सों कहे वैश्रवण
दक्ष । राजाचारो युगनको कारण नीति प्रतक्ष ॥ दण्डनीति
बर्द्धित किये भूपति चरत सधर्म्म । तौ सतयुग बरतित रहत
जगत करतसतकर्म्म ॥ तेहिबिधि त्रेता द्वापरो कलियुगप्रगट
लखात । भूपति जेहि बिधि चरतहै धर्म्म कर्म्म गहितात ॥
चौपाई ॥ नृपक्षत्री निजगुण परिहरिकै । जीवन उचित बिप्रब्रत
धरिकै ॥ यज्ञ दानकै रणमाधिमारिकै । क्षत्री लहत स्वर्गब्रत च-
रिकै ॥ यहगुण बिप्र वृत्तिकरि त्यागन । लेहि स्वअंश भूमि

अनुरागन ॥ सामदण्ड दानादिक करिकै । लेहिभूप निजगु
अनुसरिकै ॥ बिनशत पुण्यपापफल आवत । तबबढ़ि दु
दरिद्र सतावत ॥ यहि दुखते लरिमरिबो नीको । सहिदरिद्र
जीवन फीको ॥ यह इतिहास पुरातन सुनिये । उचित होइ
करिबो गुनिये ॥ बिदुलागत बिभूति अभिलाषी । जोनिजसु
भूपति सों भाषी ॥ संजय नाम तासुसुत राजा । सिन्धुनाथ
लरो ससाजा ॥ कटे संगके सुभट प्रमाथी । अगणितमरे तुर
अरु हाथी ॥ तहँ भूपति बलबिक्रम ज्वैकै । परो मोहबश व्या
कुल ह्वैकै ॥ तब बिदुला भाषी निजसुतसों । कत तजियुद्ध
भययुतसों ॥ अरिन्दन कहँ आनँद दीन्हें । सुयश पिता
लोपितकीन्हें ॥ क्षत्रिहि लरिमरिपरे भलाई । इमिमोहितकै
कदराई ॥ कततजि धीरज संडसमाना । परममोहवश भयो
याना ॥ भयतजिउठि धीरज धरि मनमें । अरिहि नाशकै त
तजु रणमें ॥ दोहा ॥ बिनामरेमहिभोगको गहततोषतजिरो
यह न उचित नृप पुत्रकहँ यहप्रसिद्ध अतिदोष ॥ दानखड्ग
द्या सुगुण करि नहिं होत प्रसिद्ध । जनमि बिनाहक करत
जननी जनकहि वृद्ध ॥ अपटु अरीभ्रू अमोज अरुभीरुअ
अधीर । नृपपतनीऐसोसुवन वृथाजनैसहिपीर ॥ सेवकगण
उचित है क्षमातोष हे तात । शत्रुन सों करिबो क्षमातोष दो
अधिकात ॥ ताते तजि सन्तोष सुत अमरष गहिकरु युद्ध ।
जीवतकै मरबहै क्षत्रिहि दूनोंशुद्ध ॥ जयकरी ॥ तो बालापन
ममपास । आइकह्यो ब्राह्मण मतिरास ॥ यह कछु दिनमें
गति पाय । फिरि अति वृद्धि लही सुखदाय ॥ सोगुणि बू
शंकतजि तात । लेहु युद्धकरि बिजय बिभात ॥ यहि प्रकार
अगणित बैन । सुनि बोलो भूपति लहिचैन ॥ नहिं अब म
संग योधा उद्ध । किमि हम करें शत्रुसों युद्ध ॥ सुनि बिदु
बोली अनखाय । शूर न हेरत संगसहाय ॥ तेजवान भूपति





ग । लरत सुभट जुरिआनि उमंग ॥ ताते शोच त्यागिलहि
चेत । करि उद्योग लरोजय हेत ॥ शोचबढ़ाये काजनशात ।
धीरजकरत काजअवदात ॥ जौनअवशि करिबेकोयोग । तहां
न शोचब उचितप्रयोग ॥ तुमकहँ करबयुद्ध मतठीक । जीतेमरे
उभय दिशि नीक ॥ यह क्षत्रिनको धर्म अनूप । क्षमातोषमति
आनौ भूप ॥ क्षमातोष गहि तजियह भूमि । कौनदशा लहि-
हो दिशि घूमि ॥ यह सुनि संजय नृप रिसि छाय । लरेशत्रुसों
रिसहाय ॥ पाय बिजय लहि राज्य महान । किये पूर्ववतभो-
विधान ॥ हे यदुपति ममपुत्रन पास । बिधिवत कहियो यह
इतिहास ॥ दोहा ॥ यहइतिहास सुनाइ कै कहेहु कृष्ण मतिमा-
न । भूमि लेहिं जेहि बिधि मिलै इहैधर्म नहिं आन ॥ इतनेमें
तहि थरभई नभबाणी अति शुद्ध । पृथा शोच तजु तो सुवन
हिलैहैं करि युद्ध ॥ चंचला ॥ जासुसंग बासुदेव प्रीतिसों सदा
बिभात । बिश्वनाथ बिश्वपाल बिश्वरूप बिश्वगात ॥ यातुधान
क कोटिकोसु जो करै बिनासु । शक्रतीनिलोक ईश होत पाय
कृपाजासु ॥ दोहा ॥ भीम पार्थसम जगतमें को योधा रणधीर ।
कृष्णचन्द्रकी कृपाते लेहैं बिजय गँभीर ॥ नभबाणी सुनिमुदित
ह्वै पृथा कही समुझाय । भीमपार्थसों कहेहु इमि ममसँदेश
पदुराय ॥ सोरठा ॥ द्रुपदसुताके केशगहि ल्याये जो सभामधि ।
सो दुख मिटै अशेश करै तौन नृप नीतिगुनि ॥ सुनि कुन्ती के
बैन आश्वासित करिकै सबिधि । केशव राजिव नैन बिदाभये
मंगल अयन ॥

इतिउद्योगपर्वणिदूतकर्म्मणिकुन्तीकृष्णसंबादोनामत्रयोविंशोध्यायः २३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ हरिकुन्ती सों ह्वै बिदा रथचढ़ि ओजबढ़ा-
य । तेहि निजरथ पर करण कहँ सादर लये चढ़ाय ॥ दारुकि
सों हँकवाइ रथ चलि पुरबाहर आय । थिरि सुमंत्र करिकरण
सों बिदा किये सुखपाय ॥ जयकरी ॥ करणहि करिकै बिदासप्रे-

म । कृष्ण चले समुझत निजनेम ॥ उतै द्रोण भीषम अनत
य । दुर्योधन सों कहै बुझाय ॥ तात करो सम्मत अवदात
नातरु होन चहत उतपात ॥ क्षात्रबंशपर प्रलयमहान । होइ
जानौ इतो निदान ॥ तौ बिक्रम रबि होइहि अस्त । पाण्ड
लहिहैं भूमि समस्त ॥ मो मनमें नहिं संशय और । इतो शो
सो कहत सठौर ॥ प्राणसरिस पाण्डव प्रिय मोहि । तिन
लरन परी बिधि जोहि ॥ ताते शतधा सिखवत नीति । सम्म
करो प्रगट करि प्रीति ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप । नहिं दी
उत्तर अनुरूप ॥ तब धृतराष्ट्र नृपति मति ऐन । संजयसोंइ
कहे सुबैन ॥ कहु संजय करणहिं लैजाय । कहे कहा माधवम
लाय ॥ सुनिबोले संजयमतिभौन । महाराजमणिसुनियेतौन
कहे करणसों कृष्णसुजान । करण बिदित तू अति मतिमान
बिधिवत सुने वेद वेदान्त । धर्म शास्त्रहौ सुने सुदान्त ॥ पा
नृपति के पुत्र सहोढ़ । हो तुम जाहिर क्षत्री प्रौढ़ ॥ भोबिवा
ते पीछे जौन । अरु पूर्बहु जोभो बलभौन ॥ होतसहोढ़ सुत
नो तात । है यह शास्त्र माहिं बिख्यात ॥ मात बिवाह जासुसँ
होय । पूर्बजहूको पितुहैसोय ॥ पाण्डुनृपति तो पितुआधार
तुमहौ पाण्डव भूभरतार ॥ दोहा ॥ हौतुम धर्म महीपके सोद
अग्रजभाय । मानि बचन ममसंग तुम चलो मोद सरसाय
सबपाण्डवते अनुजसम मिलिहैं तुम्हैं सप्रीति । बिप्रन स
अभिषेक करिकरिहैं नृपति सनीति ॥ चौपाई ॥ धौम्यहि आ
बिप्रसबचायक । सबयदुबंशी यदुकुलनायक ॥ हमअरुपांड
सहित बिबेका । बिधिवत करब राज्य अभिषेका ॥ तोशास
लहिजानि सुकाजू । करब युधिष्ठिर कहँयुवराजू ॥ सबपाञ्चा
ल सकलयदुबंशी । सबपांडव सुत सुभटप्रशंशी ॥ सब पांड
करिहैं तोसेवन । महाराज कैलसो सुभेवन ॥ उडुगण सह नि
शिपति छबि छाजत । तिमिबंधुनसह होहुबिराजत ॥ कुन्तिहि





देहु मोद अतिभारी । होहुबिदित भूपति नयचारी ॥ यहसुनि
कर्ण कह्यो अनुमानी । सांचकहत तुम केशव ज्ञानी ॥ है मम
जननी कुन्तीमाई । पांडव हैं ममसोदर भाई ॥ रबिप्रथममोहिं
यहमोहिं सुनाये । फिरि जिमिराधा केघरआये ॥ कुन्ती करि
दीन्हों ममत्यागन । सूतकियो पालन अनुरागन ॥ राधा मुत्र
पुरीष उठाई । पालो सुतकरि प्रीति बढ़ाई ॥ जातककर्म सूत
ममकीन्हों । बिप्रन भूरिदक्षिणादीन्हों ॥ सूतजमोहिं जगतसब
भाषत । तासुनत्याग बनत अभिलाषत ॥ तिनकोपिण्डभाग
कोछेदन । उचित न मोहिं लागि यहि भेदन ॥ उनकेनेह दाम
सों बन्धित । ममपरिवार होत नहिं सन्धित ॥ दोहा ॥ ताहूसों
अतिकठिनहै दूजोकारणतात । दुर्योधनके मित्रहम सबनृप ग-
णमें ख्यात ॥ करिअभिषेक सुअंगपति भूप मोहिं करिभूप ।
दुःशासनसों अधिकप्रिय मानत निजअनुरूप ॥ औरसुनोइक
बात यह होइहिसब जगमाहिं । अर्जुनसों डरि कर्णगो भूप यु-
धिष्ठिर पाहिं ॥ रोला ॥ मोहिं भीषम द्रोण कृपसों अधिकयोधा
जानि । पाण्डवनसों बैर कीन्हें मंत्र ममहित मानि ॥ लहो
अति ऐश्वर्यको सुख जासुसंग अथोर । भीष्मकोमत निदरि
जोहित मंत्र मानत मोर ॥ युद्धकरि जय लहनको अति मोर
जाहि भरोस । तजब ऐसी समय ताहि बिश्वासघात कुदोस ॥
होत सब अपराध सों बिश्वासघात गरिष्ट । परमधर्मी बिदित
हम किमि करैं सो गति इष्ट ॥ प्रथम धर्म महीप राजाभयोजो-
रिसमाज । तौन पद हम ग्रहणकै किमि करैं तेहि युवराज ॥ जासु
जविहित आपुयहि बिधि करत भेदउपाय । तासु जयमें कौन
संशय आपुजासु सहाय ॥ भीम अर्जुननकुल सात्वकि द्रुपद
अरुसहदेव । धृष्टद्युम्नबिराटअरु अभिमन्यु शंखसुभेव ॥ धृष्ट-
केतु महीप उतमौजा घटोत्कचबीर । चेकितानहिं आदि जाके
संग भूपतिभीर ॥ तासुजयमें कौन संशय सुनहु यदुकुलचन्द ।

आपु ज्ञाता सकल बिधि जो युद्धयज्ञअमन्द ॥ पार्थ होताधनु
श्रुवाधृत्त बिषपद बिक्रमतासु । अस्त्रशस्त्र सुमंत्र स्वाहा शब्द
उच्चरनिआसु ॥ भीमअरु अभिमन्यु आदिकबीर ऋत्विजप
युद्धयज्ञ अनूप ताको करनहार सुकर्म ॥ कटे धनुध्वज अंगर
के पाणि पग शिर गात । सामिधरण महि कुण्ड शायकअगिनि
यत्र बिभात ॥ बिजय अद्भुत पुण्यलेहै बिदितधर्मनरेश । क
के ये बचनसुनिकै कहे कृष्ण सुभेश ॥ राज्य तुमकहँ देतहमनी
लेत तुमप्रण धारि । अवश्य पारथ बिजयलेहै शत्रुसेनामारि
कृष्णके सुनि बचनबोलो करणधीरधुरीन । कृष्णभाषतआपुजे
सो सांच सुबचनपीन ॥ लखत हम दुःस्वप्न अगणित अप
कुन अधिकार । महाभीषम युद्ध ह्वैकै भटनको संहार ॥ होतसू
चित पाण्डवनको बिजय परम अनूप । हारिइतकी प्रगटजानि
जात भीषम रूप ॥ दोहा ॥ पितावृद्ध गुरु पितामह अरु तोब
चन अमन्द । नहिं मान्यो यहहारिको लक्षणदायकदन्द ॥ अ
स्तिनिश्चय पर बैठिकै सुवरण भाजन राखि । पायस घृतभोज
न करत धर्म बिजय अभिलाखि ॥ भीमगदा गति शैलपरचढ़ि
गरजत जयहेत । शुभ्रसौधपरचढ़ि लसत भूपति धर्मनिकेत
श्वेत द्विरद आरूढ़ ह्वै तुमसहअर्जुनबीर । टङ्कारत गाण्डीव
धनुहरत भटनको धीर ॥ नकुल बीरसहदेव अरु सात्वकि दि
व्य स्वरूप । बरबाहनबर भटनसह बिरचत समुद अनूप ।
भीष्म द्रोण बाह्लीक हम ऊटन चढ़े अचाय । दक्षिण दिशि
कहँ जातहैं महामलिनता छाय ॥ सोरठा ॥ केशवयहि बिधि जो
हि सब निशिमें अगणित सपन । प्रगटपरत लखि मोहि हानि
सुयोधन नृपतिकी ॥ चौपाई ॥ पै यह जानि परतहै आरज । बि
धि निरमें कछु अनरथ कारज ॥ जाते हित उपदेश न भावत
यदपिवृद्ध बहुभांतिबुझावत ॥ हमैंभूपकेमनकीकरिकै । उत्रि
होब उचित रणचरिकै ॥ लखबमरब अति धरम सोहायो । 





क्षत्रिनके सब युगगायो ॥ भीष्मद्रोणको अरु मम मरिबो । जा-
नो महा प्रलय दिन परिबो ॥ करता कीन्हें निरमित जोई । मि-
टीन मेटे होइहि सोई ॥ इमि कहिकै ह्वै बिदा सचावन । रथचढ़ि
चलोकरण छबिछावन ॥ हमइतचले उतैप्रभुज्ञानी । बिदुरगये
जहँ कुन्तीरानी ॥ कुन्तीबचन बिदुरकेसुनिकै । शोचिकरणको
बिक्रमगुनिकै ॥ गईकरणकेढिगबरज्ञानी । करणबान्दिपगकह्यो
सुबानी ॥ आगमहेतु कहो ब्रतधारिणि । तबइमि कही पुत्रहित
चारिणि ॥ तुम मम सुत नहिं राधासुतहौ । सुत तुम यहवृत्तांत
अश्रुतहौ ॥ कुन्ति भोज भूपतिके घरमें । सुतसुनु ममकन्यापन
वरमें ॥ रबिसों भयो समागम मोसों । तबतुम भये कहत साँति
तोसों ॥ कुण्डल कवच धरे अभिरामा । प्रगटभये तुमबर बल
धामा ॥ धर्मभूप तुम सोदर भाई । प्रीति करोहठ बैर बिहाई ॥
दोहा ॥ तुमहौ जेठे नृपति ह्वै धर्महि करि युवराज । बन्धुनसों
सेवितलहौ अति आनँद सहसाज ॥ तुमअरुअर्जुन एकह्वैग-
हिहौभायसुप्रेम । तबकुरुपतिसम्मतिकरी तजिअधर्मकोनेम ॥
क्षत्रबंशको नाश बिधि लगोजाय मिटि तौन । पाण्डव होहुप्र-
सिद्ध तुम तजिसूतजपद जौन ॥ सुन्दरी ॥ सूरजके वरमण्डलते
तहँ । ई धुनि आनि परी सुनि हे जहँ ॥ हे सुत जो तुवमातुसि-
खावति । सोदुखदायक नीतिनशावति ॥ जानिभलो हमहूंयह
भाषत । सम्मतआनँददैदुखनाशत ॥ हैयहसीखमहासुखदायक ।
अवशि करो नहिं टारन लायक ॥ दोहा ॥ जनकजननिके बचन
सुनि कह्यो करण मतिधीर । सुनु जननी सुख राज्यहित धर्मन
तजतसुबीर ॥ मंत्री भाई भट सखा करि पाल्यो नृपमोहि । ता-
हित जब ऐसी समय परत महाअघजोहि ॥ मम बिक्रमबोहित
महा नृपताके आधार । पाण्डवसेनाउदधिके जानचहतहैंपार ॥
ताहितजेकीरति नशतहोत महाअपराध । तजिरणको प्रणमंत्र
यहहमनकरब अवराध ॥ पैतोहियगत शंकगुणिकहतइतोसति

बैन । चारिसुवनतोनाहिंबधब्रतजिअर्जुनबलऐन ॥ पारथभटके
बधनको हमप्रणकीन्हेपूर्ब । सोहमकहिकैतोहिंहमबधबयुद्धकी
गूर्ब ॥ तेरेपांचौ पुत्रते रहिहैंजानुयथार्थ । पार्थनहींतौ कर्णअरु
कर्णनहीं तौपार्थ ॥ महिखरी ॥ सुनिकरणकेयेबचन कुन्तीसमुझि
कछुक्षण चुपरही । रणसमय लहिमाति भूलिजायहु बचन यह
फिरि इमिकही ॥ गुणिप्रबल भावी मिटतनाहिं प्रियबचनकहि
निजघरगई । कुरुबंशकोगुणि नाशमनमें शोचि अतिचिन्तित
भई ॥ दोहा ॥ नीरद रुचि नीरज नयन राम कृष्ण कहँध्याय ।
धर्मभूपको धर्मगुणि रहीधीर सरसाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिभगवद्दूतेचतुर्बिंशोऽध्यायः २४ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ हास्तिनपुरते कृष्णप्रभु आययुधिष्ठि
पास । यथायोग मिलि बैठि तहँ कीन्ही सभाप्रकास ॥ तहँकी
बिधिवत बार्त्ता कहि उतके बिरतांत । जातभये निजसदन प्रति
श्रीप्रभुयदुपतिदांत ॥ कछु क्षणमें बरखास्तकरि सभा युधिष्ठि
भूप । बन्धुनसह तहँजातभे जहँप्रभुकृष्णअनूप ॥ तहांयुधिष्ठि
भूप सौं कहे कृष्णप्रभु तौन । आपु सुयोधन नृपति सों कहीबा
र्त्ता जौन ॥ भीष्म द्रोण संजय बिदुर कृप गांधारी भूप । समु
झाये तिमि तौन सब कहे श्यामघनरूप ॥ फिरि प्रभु बिधिवत
कहे जो कुन्ती कही सँदेश । भई बार्त्ता करणसों सोनाहिं कर
बिशेश ॥ पृथक पृथक सब बार्त्ता कहि यदुनायक दक्ष । कौ
चले हम वहांते तब यह लखे प्रतक्ष ॥ दुर्योधन उठि सभा
अति राते करि नैन । कुरुक्षेत्रदल चलनको शासन दर्पसचैन
जयकरी ॥ बहुप्रकार समुझाय सनेम । जब सबथके चाहि त
क्षेम ॥ हम इमिकहे भूप हितलेहु । पांचग्राम इत उनकहँदेहु
आविस्थल सुवृकस्थल तौन । मार्कंदी है शुभथल जौन ॥ औ
र बारणावत अभिराम । और एक जो चहो ललाम ॥ एकए
भ्रातन प्रति एक । देहु ग्राम तुम सहित बिबेक ॥ बाकीऔ




भूमिको भोग । करो मेटिकै युद्धकुरोग ॥ सोऊ नाहिं मान्योमति-
मन्द । कहतभयो गाहि गरबअमन्द ॥ सुईअग्रभरिभूमिन देब ।
घोरयुद्ध करि बधि जयलेब ॥ यहसुनि गुणिभावी बलवान । हम
इतआये सुनो सुजान ॥ अब सबबन्धु समुझि यह तंत्र । करो
बिचारि उचित जोमंत्र ॥ यहसुनि धर्ममहीप बिचारि । बोले
बन्धुन ओर निहारि ॥ सुनोउतैको सबवृत्तांत । अब करतव्य
करो सोदान्त ॥ यहसुनिबोले बन्धु समस्त । ममदलके सब
सुभट प्रशस्त ॥ रणकरि लेब बिजय अवदात । संगर करब
मंत्र अवदात ॥ भीष्म द्रोण कृप करणसमान । ममदलमेंबहु
भट बलवान ॥ सेनापति करि सुभट उदण्ड । करौयुद्ध गहि
असिको दण्ड ॥ दोहा ॥ तब माधवसों कहतभो धर्ममहीपबि-
चारि । आपुकहोकेहि सैनपतिकरैंयुद्ध प्रणधारि ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥
कृष्णकहैतो सैनके हैंसबभटजगजैन । रुचैताहि सेनाधिपति
करो शोच कछुहैन ॥ बिदित अयोनिज दिव्यभट धृष्टद्युम्न
क्षितिपाल । ताहिकरो सेनाधिपति मोहिं रुचत क्षितिपाल ॥
चौपाई ॥ कृष्णचन्द्रकेबचनसुहाये । सुनिसबपांडव अतिसुखपाये ॥
सबनृप सुभट मोद हियसाने । युद्धहेतु अतिशय उमदाने ॥
धर्मनृपति तब सेन सजनको । दियेनिदेश निशान बजनको ॥
द्रुपद बिराट आदि सबराजा । दलसाजे बजवाय सुबाजा ॥
सातअक्षौहिणि सेना सजिकै । धर्ममहीप शक्रसम रचिकै ॥
हयगज धेनु हेममणिपावन । बिप्रनपूजि दानदै चावन ॥ गु-
णतईश महिमा मनभावन । सुनतशुभद स्वस्त्ययन सुभावन ॥
कुरुक्षेत्र गे ओजबढ़ावत । धूरधार सब दिशिमें छावत ॥ बि-
षज औषधी बूटी लीन्हें । सहसन संगचले हित चीन्हें ॥ ज्यो-
तिष मंत्र तत्त्वकेज्ञाता । सहसनसंग लये महित्राता ॥ शकट
असंख्यन आयुधलादे । लये चले भटभृत्य प्रमादे ॥ चले
असंख्यन शिलपी चातुर । सौज समाजन सहित अनातुर ॥

यहिबिधिकुरुक्षेत्र मधिजाई । कियेनिवास सुथल ठहराई ॥ ज
नमेजय भूपति यह सुनिकै । ब्यास शिष्यसों बूझै गुनिकै ॥
जबप्रभु हास्तिनपुरसों आये । तब कुरुपति किमिसैनसजाये ॥
सोसुनि बैशम्पायन आरज । कहतभये कुरुपतिकेकारज ॥ दोहा
आये हास्तिन नगरते कृष्ण धर्म नृपपास । तब दुर्योधन भू
करि शिथिल जीतिकीआस ॥ करण दुशासनशकुनिसों कहत
भयो समुझाय । पाण्डवको कारजबिना किये गयो यदुराय ॥
रोला ॥ कृष्ण सोई मंत्रकरिहैं होइजाते युद्ध । युद्धकरि जयलेन
को हम गहें गौरव शुद्ध ॥ साजिसंगी सैन सादर दुन्दुभी
बजवाय । कुरुक्षेत्र सुक्षेत्रमधि चलि लरोओज बढ़ाय ॥ शस्त्र
शिलपी भिषज मंत्री गणिकके समुदाय । चलैं सेनासंग ब्राह्म
ण कुशल आनँद छाय ॥ नृपतिको सुनि सरस शासन नृपति
योधाभूरि । साजि निज निज सैन गरबित चले आनँद पूरि ॥
उदधिसम बढ़ि नांघि बेला मध्यमहिं कुरुसैन । भई निवसत
जाइकै कुरुक्षेत्र मध्य सचैन ॥ नृपनकी करि सभा दोउ भू
रैनि बिताय । भोर बिलसत भये बिधिवत सैनसौंज सचाय ।
एकदश अक्षौहिणी कुरुनाथ नृपके संग । धर्मनृपके साथसात
अक्षौहिणी सउमंग ॥ भूप दुर्योधनकियोतहँ पृथक् सेनाधीश
द्रोण करणहिं जयद्रथ अरु शल्यजो अवनीश ॥ द्रोण सुतहि
सुदक्षिणहि अरु भूरिश्रवहि बिचारि । शकुनि अरु बाह्लीक कृ
तवरमहि सुबीर निहारि ॥ पृथक् सेनाधीश करिकै सौंपि रा
को भार । बिनय पूर्वक भीष्मसों इमि कह्यो भूभरतार ॥ युद्ध
हित सब बरणमें हैं श्रेष्ठक्षत्री बीर । आपुक्षत्री मुकुटमणि हैं
जगतजित रणधीर ॥ तेज मतमें सूरजैसो बिहँगमें खगराज
धनद यक्षनमें यथा जिमि मेरुगिरि शिरताज ॥ तथातुम क्षत्रि
यन में हौ बिदित धीरधुरीन । सैनपति ह्वै युद्ध करिकै लेहु ज
यशपीन ॥ स्वामिकार्त्तिक सैनपति ह्वै बिजय शक्रहि देत । तथ





मम सैनेश ह्वै तुमलेहु जय यशहेत ॥ भूपके सुनि बचन भीषम
कहे बचन सनीति । यथातुममम तथापाण्डव उभयमाधि सम
प्रीति ॥ सबिधि तुमहिं बुझाय हारे नहीं मानेनेक । सैनपति ह्वै
गहब अबतौ बिजयहित रणटेक ॥ दोहा ॥ नाहिं मम सम पर-
सैनमें है कोऊ भट और । पारथमोसों अधिक है बिदित सुभट
शिरमौर ॥ एकप्रतिज्ञा करत हम सुनो तौन क्षितिपाल । दश
हजार भटरोज हम बधब बिरचि शरजाल ॥ सोरठा ॥ साफ क-
हत हेभूप बधि न सकब हम पाण्डवन । करिकै युद्ध अनूप
करण बधैकै और भट ॥ चौपाई ॥ ऐसे बचन भीष्मके सुनिकै ।
करणबीर इमिबोलो गुनिकै ॥ जीयत भीषम धनुधर जौलों ।
भूपति हम न करब रणतौलों ॥ भीषमके बधपर धनु गहिकै ।
लरब फाल्गुनसों थिरु कहिकै ॥ तदनन्तर दुर्योधन राजा ।
द्विजन सहितसह नृपति समाजा ॥ सेनानायकको अभिषेका ।
भीष्महिं कीन्हें सहित बिवेका ॥ सेनापति ह्वै भीषमराजे । अ-
गणित शंख दुन्दुभी बाजे ॥ तबजनमेजय भूपति भाषे । तब
नृपधर्म कहा अभिलाषे ॥ यह सुनि बोले बैशम्पायन । सुनि
अभिषेक धर्म नृपचायन ॥ कृष्णचन्द्रसों कही सुबानी । भीष्म-
हिं भूप कियो सेनानी ॥ अब निज दलकी रचनाकीजै । पृथक
सैन नेताकरि दीजै ॥ यहसुनि कृष्णकहे सति भाषत । करौ बि-
भाग यथा अभिलाषत ॥ धर्म भूप तब द्रुपद बिराटहि । धृष्ट-
द्युम्न सात्यकिभटठाटहि ॥ धृष्टकेतु क्षितिपाल सुभेवहि । जरा-
सन्धके सुत सहदेवहि ॥ सुभट शिखण्डी अरिदलजेता । कीन्हें
साथ पृथक् दलनेता ॥ धृष्टद्युम्न जोभट दृढ़घायक । कीन्हेंता-
हिसकल दलनायक ॥ सब नृपतिनको सम्मतलीन्हे । सबको
अधिप पारथहि कीन्हे ॥ दोहा ॥ कीन्हें अर्जुन सुभटको शीक्ष
करतनेतार । यदुनाथहि जो विदित प्रभु असुरसैन जेतार ॥
इतने में आये तहां सूत सहित बलराम । गयेप्रद्युम्न अक्रूर

अरु ऊधो आदि अक्षाम ॥ संयुता ॥ यदुनाथ रामहिं देखिकै
उठि मोदसों हियभेखिकै ॥ अतिनेह ऊपर खोलिकै ।सुखदान
बाणिहिं बोलिकै ॥ दोहा ॥ लपटि प्रेमसों मिले फिरि मिलधर्म
क्षितिपाल । सब पाण्डव सब नृपमिले मिलेद्रुपद पाञ्चाल ।
यथाउचित सबसोंमिले सबकोऊ करिप्रेम । नृपतियुधिष्ठिरपाणि
गहि बैठाये गुणिक्षेम ॥ चौपाई ॥ तब हलधर माधवसों भाष्यो
काल जगतको क्षय अभिलाष्यो ॥ ह्वै है घोरयुद्ध अतिभारी
मरि हैं सब क्षत्री धनुधारी ॥ तुम चाहत पाण्डवन जितावन
पाण्डवके हैं जय मनभावन ॥ अबहीं नाहिं चेतत मति बिगरे
लरि मरि हैं धृतराष्ट्रज सिगरे ॥ मम सम्बन्धी एऊ वोऊ । मो
कहँ समप्रिय भूपति दोऊ ॥ गदायुद्धके शिष्य हमारे । भीम
सुयोधन परम पियारे ॥ ताते इन रहि अनरथ ऐसो । हम न
लखब यह कर्म अनैसो ॥ तीर्थ यात्रा कहँ यहि कारन । आतु
जातहम और बिचारन ॥ इमि कहिकै ह्वैबिदा बिचक्षण । तीर्थ
करनगे राम सुलक्षण ॥ जब अभिराम राम प्रभु आरज । गये
बिदाह्वै तीरथकारज ॥ तबतहँ प्रबलसैन सहआयो । रुक्म
भूपको सुतभट गायो ॥ ताकहँ देखि युधिष्ठिरराजा । पूजियथा
बिधि सहित समाजा ॥ सादर यथा उचित बैठाये । कुशल प्र
श्नबूझे मनभाये ॥ कुशलप्रश्न कहि नृपबलवाना । कहत
भयो पूरित अभिमाना ॥ तुमपर भीर खबर हम पाये । करन
सहाय सैनसह आये ॥ नृपति मोहिं लहि सबल सहाई । युद्ध
करो सब शोच बिहाई ॥ दोहा ॥ यह सुनि अमरष सहित
ह्यो पारथ धीर धुरीन । हमैं शंकहै कौनकी शंकगहतहैं दीन
हम जार्‌यो खाण्डीवबन जीति सुरेशहि यत्र । गन्धर्नब जीत्यो
न हम चहो सहाई तत्र ॥ हम निवात कवचिन बध्यो साहि
सहस भटयत्र । लरिजीते सब कुरुननहिं चहे सहाई तत्र ।
सब जगजीतन योग्य हम चाहत नहीं सहाय । चहौ रहौयहि





औरकै उतै जाहु अनखाय ॥ यह सुनिकै सुत रुक्मको उठि
चलिसैन समेत । दुर्योधन क्षितिपाल पहँ गोबल गर्व निकेत ॥
चौपाई ॥ पूजिताहि दुर्योधनराजा । कियो निवासित सहितसमा-
जा । सुनि बोले जनमजय चायक । तबका कीन्हें कुरुकुल ना-
यक ॥ यहसुनि भाष मुनिवर आरज । तब कुरुपति जो कीन्हें
कारज ॥ शकुनि जयद्रथ करण दुशासन । सहितमंत्र करिनृप
कुलनाशन ॥ नामउलूक शकुनिकोभाई । तासों बोलो गर्वबढ़ा-
ई ॥ धर्म भूप सों कहो सँदेशो । युद्धकरै अब त्यागि अँदेशो ॥
कहेहु युधिष्ठिर सों समुझाई । अबमति डर आनै कदराई ॥ हारि
महीधन चाहत सोई । ऐसो अधरम करत न कोई ॥ ऊपर
अति सुधरम दरशावत । हिय अधरमको पुंजबसावत ॥ तथा
बिलार भगतबानि आछे । खायो मूसनको गणपाछे ॥ सो व्रत
तुम प्रथमहिसों लीन्हें । धर्मबचन कहिअधरम कीन्हें ॥ ताते
बढ़िमम संमुख लरिकै । पातकनाशौ रणमधि मरिकै ॥ ममबिक्रम
गुणिकै भयपागे । पांचग्राम केशव मुख मांगे ॥ बिनायुद्धसूची
मुख धरनी । देबन हम हम जाहिर परनी ॥ इमि जेठे पांडव
सों कहिकै । कहेहु भीमसों धीरजगहिकै ॥ बहुलखाब क्षत्रीगुण
नाहीं । नहिंअति गरबगहै मनमाहीं ॥ दोहा ॥ खायमोटाने मत्स्य
पति के घर पाक बनाय । करीप्रतिज्ञा तौन करि सकै करै तौ
आय ॥ कहेहु कृष्णसों करि सकै पांडवको हित जौन । समय
पाय निज शक्यभरि करै आय अब तौन ॥ इन्द्रजाल सिखि
बिबिध बिधि रूप लखावत जौन । तासों नहिं कारजसधत
हम न गुणत कछु तौन ॥ कहेहु नकुलसहदेवसे जो कछु बिक्रम
होय । समुझितरुणिको कचग्रहण आइकरैं अबसोय ॥ सात्व-
कि द्रुपद बिराट अरु धृष्टद्युम्न उतजौन । श्वेतशिखंडीसोंकहे-
हु तुम्हें गुणतभट कौन ॥ परहित लगि तन त्यागिबो भलो
मंत्र ठहराय । तुम आये तौ युद्धकरि शीघ्र मरो अब आय ॥

तोटक॥ इमि पारथ सों कहियो मनदै। शरलाघवमेंपणमें मनदै
नहिं शंकहमैं लखिकूरपता । तुम युद्धकरो गहिपूरपता ॥ अ
संडपनो अपनो तजिकै । अनुमानि गलानि गहो लजिकै
महि चाहत तौ चढ़िकै लरिकै । सहबन्धुन लेहु महीमरिकै
तोमर ॥ ममसैन सिन्धुअथाह। भटभीष्म जासुप्रवाह ॥ भटद्रो
बेगअमन्द । कृप मौर दायक दन्द ॥ नृपशल्य सूतजकूल
भगदत्त घोष अतूल ॥ कांबोज नृप बड़वागि । अरिबारिदाह
क लागि ॥ मम बंधुझष समुदाय । जेतजत नहिं अरिकाय
सब शकुनि आदिक भूप। अति ग्राह भीषमरूप॥ भटजयद्र
बरजोर । है दुसह मारुतघोर ॥ सकम्लेच्छ आदिक सर्ब।
लहरि पूरितगर्ब ॥ दोहा ॥वृहस्थलौ बड़वागिमुख सोमदत्तस
पुत्र । तिमिर तिमिङ्गल सरिसहैं गहे शत्रु बधसुत्र ॥ यहिम
सेना सिंधुमधि परिमति त्यागो प्रान । राज्य न मांगे मिलत
बिना भाग्य परमान ॥ संजयउवाच ॥ मानि निदेश उलूकगोज
नृप धर्म निकेत। भूपति आदर करि कहे कहो आगमन हेत
चौपाई ॥तबउलूक भट त्यागिअँदेशा। दुर्योधन कोकहो सँदेश
पृथक् पृथक् सब भाष्यो सबसों। बीरधीर चातुरता फबसों
सो सुनि भीम आर्जुन आदिक। उतके सिगरे सुभट प्रमादि
क॥ क्रोधानल सों भरि भरि इक्षन। भटउलूककहँ किये नि
क्षन॥ तब माधव उलूकसों भाषे। होइहिसो बिधि जो अभि
लाषे ॥ जाहु सुयोधनके ढिगसादर । करिहैं युद्धन इतको
कादर॥इतनेमें उठिभीम अमाना। गहिउलूकको करबलवाना
कहे कहो उनसों समुझाई। नहिं जानत ममबल प्रभुताई॥
उनके सेनामधि धासिकै। गदाप्रहारि रुद्रसम लसिकै॥ स
बन्धुन बधियमपुर देहौं। प्रणपूरण करि जययशलेहौं॥ मैंयो
जगमें बिदित बली हौं। बधिदुशासनहिं शोणितपीहौं॥ बी
बधि घने भटन बलओकन। शीघ्रपठैहौं ऊरधलोकन॥ दुर्यो





धन मूरुखसम बोलत। नहिं मम बलअरु निजबल तोलत॥
कृष्णउभय दिशिको हितगुनिकै। कहो न मान्योसो शठसुनिकै॥
लरिकै गिरि गुरु गदाके घातन। सुधि करिहै केशवके बातन॥
हम प्रण कियो सभामधिजेतो। रणकरि सांचकरब अबतेतो॥
दोहा ॥तब उलूकसों कहतभो बिदितबीर सहदेव। पापपुरुषको
बचनइमि कहत भूलिममभेव ॥ जो दुर्योधन होतनहिं धृत-
राष्ट्रकको पूत। तौ कुरुकुल में होतनहिं नाशकभेद अकूत ॥
मैं ताके परिवारको करिहौं नाशससैन। यहकहि कहे उलूक
सों पारथ बिक्रमऐन ॥ चौपाई ॥ मोह बातबशह्वै दुर्योधन।
बोलतकुत्सित बचन अबोधन॥ धनुगांडीव करषि बरभाको।
कालिहदेबहमउत्तर याको॥ यहसुनि कह्यो धर्म क्षितिपालक।
दुर्योधन शठभो कुलघालक ॥ क्रोध लोभबश अनरथ ठान-
त। वृद्धगुरुनको बचन न मानत ॥ कहेहु बुझाइ तजैकुटि-
लाई। परबलरारि करब लघुताई ॥ भीषम द्रोण आदि जे
आरज। मान्यहमैं करता हितकारज॥ तिनके बल रणकरिबो
चाहत। कुरुकुल सौध बिनाकै ढाहत॥ आपु दुसह बिक्रम
न रीतो। चहत सहाइनके बलजीतो ॥ बिनु भुजबल ज-
सपावतकोऊ । जानतभीष्म अचारय होऊ॥ जोकछु निज
भुजमें बलराखत। जासुभरोसे यहिबिधि भाखत॥ तौममभा-
य जिते धनुधारी। तिन्हैंबिना बढ़िलरैप्रचारी॥ तिनकोबचन
उलंघन करिकै। तिन्हैंबधावन चाहतलरिकै॥ हैयह कुत्सित
जनकी करणी। इमिहठगहत न सुबुधि सुवरणी ॥ यह सुनि
कहे कृष्णअनखाई। ममसँदेश इमिकहेहुबुझाई॥ तुमजानत
केशव नहिंलरिहैं। सारथि प्रणकरि काममकरिहैं॥ हमक्रोधा-
नल जालपसारब। तृणबन समतौ सेनाजारब॥ दोहा॥ जौन
करणको प्रणकियो पारथ भीमअमान। निजभुजबलसों तौन
सब करिहैं करिघमसान॥ अर्जुनफिरि इमिकहतभे गुणत सुयो-

धनयेह । नहिंमारैंगे भीष्महि पांडवमानिसुनेह ॥ सोहमपहि
भीष्मकहँमारिभूमि परडारि।तबकरणादिकभटनकहँ बधबजी
प्रणधारि ॥ भीष्मद्रोण करणादि अरु सबबन्धुनकोनाश।ल
सुयोधन मूढ़तब तजीजीतिकीआश ॥ जो रणकोउत्साह तौभी
सैन सजिआय।सजीसैन ममदेखिहै शीघ्रकहायहजाय॥ भीम
बाच ॥ कबित ॥ भीमसेन कहे धीममति दुर्योधनसों कहियोअधी
बाणी डौर मेरेप्रनको । भीष्म द्रोण करण औ शल्य भगद
आदि मत्तभट होहिंगे अहार गीधगनको ॥ कुमती कुधन्ध
मदान्ध सब तेरे बन्धु तिनको बधब मोहिं काम एक क्षनको
भूमिपै पछारि मारि फारि छाती शरदासी शोणित पिऔं
मैं दुशासनके तनको ॥ सोरठा ॥ मारिभूमिपर डारि पदधरि
तौ शीशपर । सो नृपधर्म निहारि सुखलहि मोहिं प्रशंसिहैं
कह्यो नकुल मतिमान जाय सुयोधनसों कहो । पारथ भी
अमान कहत तौन करिहैं अवशि ॥ छप्पै ॥ तब क्षितिनाथबि
राट शिखण्डी द्रुपद महीपति । धृष्टकेतु सहदेव सुभट साल
कि गहि भटगति ॥ धृष्टद्युम्न सैनेश प्रगट करि क्रोध दुस
अति । भरेबीररस बचन कहे याहीबिधि रणरति ॥ तबनृप
युधिष्ठिर इमि कहे हम कुलरक्षण हेतगुनि । प्रभु कृष्णहिंभे
सामहित मूढ़ न मान्यो तौनसुनि ॥ दोहा ॥ पांचग्राम मां
सबिधि सो नदयो मतिखर्ब । युद्धचहतहौ युद्धकरि हरब ता
बलगर्ब ॥ मछिखरी ॥ तुमजाय सादर कहोतासों जौन इतउत
सुने । वै जौन सम्मत चहत तौहममारि महिलीबो गुने ॥
सुनिउलूक महीपमणिसों बिदाह्वै नृपपहँगयो । इतसुनेउ
जौन बिधिवत तौन नृपसों कहिदयो ॥ दोहा ॥ दुर्योधन क्षिति
पाल मणि सुनि सँदेश उतकर्ष । सभामध्य राजत भयो पूरि
महा अमर्ष ॥

इतिमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्बणिउलूकदूतगमनोनामपंचबिंशोऽध्यायः





बैशम्पायनउबाच ॥ दोहा ॥ यह उलूकके दूतपन की बार्त्ता सुनि
भूप। संजयसों धृतराष्ट्र नृप बोले बचन अनूप॥ सुनि भीमा-
दिक भटनकी दुसह प्रतिज्ञापीन । कहाकह्यो भीषम सुभट के-
हुसो बचन नवीन ॥ संजयउबाच ॥ जयकरी ॥ भीषम सेनापति बल
ऐन। तहँ भूपति सों कहे सुबैन ॥ कार्त्तिकेय के पद जलजात।
ध्याय कहत सुबचन अवदात ॥ सेना कर्म ब्यूहबिधि जौन।
सुरगुरु सम हम जानत तौन ॥ बिबिध भांतिके ब्यूह बनाय।
बिधिवत युद्धकरब शरछाय ॥ यथाशक्ति रक्षब तौ सैन। युद्ध
करौं कछु संशय हैन ॥ यह सुनिकै दुर्योधन भूप । कहत भयो
र बचन अनूप ॥ आपु सैनपति भये बिभात । मोहिं कौन
संशय अब तात ॥ अब हम सुनोचहतहैं तौन । रथी अतिर-
थी इतउत जौन ॥ यहसुनि भीषमकहे बिचारि । भूपति तौन
सुनो निरधारि ॥ कृतबरमा अरु शल्य नरेश । भूरिश्रवाजयद्र-
थ बेश ॥ सोमदत्त बाह्लीक उदार। कृपाचार्य्य अतिरथी
अपार ॥ द्रोण द्रोण सुत बिदित सुबीर । महारथी हैं अति
रणधीर ॥ असुर अलम्बुष अति बलवान। महारथीहै बिदित
अमान ॥ निजमुख निज बिक्रम को गौर । हम न सकतकहि
सुननृपमौर ॥ अबसुनुजे पूरित गुणसर्ब । हैं तौ दलमें रथीअ-
खर्ब॥ तुमसबसोदर रथीमहान । परदल जेतासहितबिधान ॥
दोहा ॥ नील सुदक्षिण बिन्दनृप अरु अनुबिन्द नरेश । पांचौ
बन्धु त्रिगर्त्त ये रथी भयानक भेश ॥ लक्ष्मण कुंवर उदार
अरु दुःशासनको पुत्र । दण्डधार नृप है रथी गहे जीतिको
सुत्र ॥ शकुनि वृहद्बलभूप अरु सत्यश्रवा नरनाह । अचल
वृषकजलसन्ध ये सुरथी तौ दलमाह ॥ इन्हैं आदि बहुसुभट
हैं रथी सुनो क्षितिपाल । वृषसेनौ भगदत्त ये हैं अतिरथी बि-
शाल ॥ मित्र तिहारो जासुतुम राखत महा भरोस । सोसूतज
है अधरथी लहे शाप अतिदोस ॥ रोला ॥ भीष्म के सुनिबचन

सूतज कह्यो रिस बिस्तारि । भीष्म नाहक मोहिं बेधत वच
अस्त्रन मारि ॥ सर्बथा हम चहतहैं कुरुनाथको हित पर्म । आ
पु ताते मोहिंनिन्दत जानि कुत्सित कर्म ॥ आपुको मत मा
हम नहिं करबनिज प्रणभंग । त्यागिकै दुर्योधनहि नहिंगह
उनको संग ॥ यथा तुम कुरुनाथ के घरखात सब परकार ।
हत हित पांडवनको यह महा अनुचित चार ॥ जराग्रस्तप्र
स्त भट नहिं होत जैसो आप । युद्धमें नहिं वृद्धजनको कर
कोऊ थाप ॥ बिक्रमी अरु तरुणक्षत्री बिप्र तपकृत श्रेष्ठ । वै
श्यजो धनमान सो बरशूद्र बयक्रम ज्येष्ठ ॥ भूप सेनाधीशतु
कहँकियो तौन कुमंत्र । चहत तुम जय पाण्डवनको प्रगट है
तंत्र ॥ युद्धकरि जय लहतभटयश लहतहैं सैनेश । युद्धकरिजि
लेब हम तुम सुयश लेहौ बेश ॥ सुनो तात जियत तुम्हे
करब नहिं हम युद्ध । मरोगे तुम तदनु लरि हम लेबजय श
शुद्ध ॥ भीष्म यह सुनि कहे तू निज योग्यबोलत बैन । चहत
कुरुबंश को क्षयमूढ़ तू अघऐन ॥ तोहिं असपरघमंड तौ
युद्धकरु मनमान । खरो रहि हम लखबतेरो युद्धबिक्रमठान
भीष्म के ये बचनसुनि धृतराष्ट्रको सुत भूप । कह्यो आपु
क्रोधकीजै आपु सुभट अनूप ॥ आपु सूतज एक मत है का
बिक्रम तौन । लहैं जाते बिजय हम मिटि जाय संशय जौन
कहो अब परसैन के जे रथी अतिरथबीर । भीष्म तब इमि
भूपति सुनो सो धरि धीर ॥ प्रथम सुनिये रथीजे परसैनमेंबल
वान । धर्म्म भूपति परमसुरथी शत्रु जीति अमान ॥ आठगु
थी सदृशहै भटभीमसेन उदण्ड । ताहि समनहिं उभय दल
ओर भट अति चण्ड ॥ दोहा ॥ माद्रीके सुत प्रबलभट हैं सु
थी बलऐन । अर्जुन सम तिहुंलोकमें भयो न योद्धा हैन ॥ ज
सुसहायक कृष्णप्रभु धनु गाण्डीव गँभीर । कवचअभेद्य अ
ध्यहै अनुपम अक्षय तुणीर ॥ सर्ब शत्रु शीक्षक प्रबल पा





धीर धुरीन । सबदल बधिबे योग्यहै एक धनुषधर पीन ॥ अ-
र्जुनसम अभिमन्यु भट अरि ऐनाको काल । जासु सदृश नाहिं
जगतमें दूजो बीर बिशाल ॥ सुवन द्रौपदीके सकलहैं अति-
रथी अमान । अज अरु भोज महीप हैं महारथी बलवान ॥
सहस एकादश धनुर्द्धरनसों जौन करतहैं युद्ध । शस्त्र शास्त्र में
जो प्रवीन अति तौन महारथ बुद्ध ॥ धृष्टद्युम्न सात्वकि द्रुपद
श्वेत घटोत्कचबीर । पांड्यभूप ये सकलहैं महारथी रणधीर ॥
भूप बिराटहि आदिहैं जितने नृप वहि ओर । ते सिगरेसुरथी
प्रबल करता संगर घोर ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल सुत बार्धक्षेमि
नरनाह । चेकितान अरु सत्यधृत महारथी बरबाह ॥ चौपाई ॥
युधामन्यु उतमौजा राजा । सब केकयनृप सरस समाजा ॥ ज-
रासन्ध कोसुत सहदेवा । सूर्य्यदत्त अरु शंख सुमेवा ॥ चित्र-
सेन चित्रायुध नरपति । सेनाबिन्द सत्यजित रणमति ॥ ब्या-
घ्रदत्त उत्तर धनुधारी । हैं सारथि अनुपम रणचारी ॥ पुरजित
कुन्तिभोजनरनायक । हैंअतिरथीबिदित दृढ़घायक ॥ महारथी
अतिरथी सुबीरा । अरुजे सुरथी अरि रणधीरा ॥ तिन्हैंबधब
हमकरि अवरोधा । मोकहँ जीतन योग्य न योधा ॥ हे उतजौन
शिखण्डी सुरथी । तेहि न बधब हम हैजय अरथी ॥ दुर्योधन
भूपति यह सुनिकै । गंगासुत सों बूझो गुनिकै ॥ तात न तेहि
बधिहौ केहि कारण । सो कहि कीजै शोच निवारण ॥ भीषम
कहे भूपसों सुनिये । जाते हम न तासुबध गुनिये ॥ सत्यवति-
हि लखि मम पितु आरज । कह्यो सुआत्मस्वयम्बर कारज ॥
तहँ उन कह्यो होइतब ऐसो । हमजो कहैं करो तुम तैसो ॥ मम
दुहिताके सुतसुत बंशज । भूपतिहोइ न जेठोअंशज ॥ सोसुनि
कै हम पितु हितचीन्हों । हम न बिवाहकरबप्रण कीन्हों ॥ तब
बिवाहकरि नृपमुदपाये । प्रगटभये द्वैसुतछबिछाये ॥ दोहा ॥ चि-
त्राङ्गदजेठोसुवन भयो महाबलवान । फिरि बिचित्रबीरज भयो

कला कुशलमतिमान ॥ शान्त भये शान्तनु नृपतितब हम प्रा
अनुरूप। भूपकिये चित्रांगदहि करि अभिषेकअनूप ॥ सोरठा ॥
गन्धर्बनसों युद्धकरि चित्रांगद हतभयो । तबहमगुणि मतशुद्ध
नृप बिचित्रबीर्य्यहिकियो ॥ तासुबिवाहबिचार हममनमेंमनसत
रहे। तहांआइममचार करिप्रणाम भाषतभयो ॥ रोला ॥ काशिरा
ज महीपके हैं चारुदुहिता तीन। नाम अम्बा अम्बिका अम्बा
लिका परबीन ॥ नृप स्वयम्बर चाहितिनको बोलिनृपसमुदा
य। कियो चाहत शुचिस्वयम्बर सुनो सो सुखदाय ॥ बचनसो
सुनि एकरथ हम काशिपुर में जाय । जीति भूपन कन्यकनकहँ
सुरथपर बैठाय ॥ गहे आनँद आयनिजपुर सुनोभूपतिदान्त।
सौंपि सत्यवतीहि दीन्हें भाषि सब बिरतान्त॥ देखि चित्रांगद
नृपतिको ब्याहकाल प्रतक्ष । इबिधि मोसोंकही अम्बा सुनो
भीषम दक्ष ॥ पूर्ब मनमें बरोहै हम शाल्व नृपहि सप्रेम । धर्म
बिद तुम तुम्हैं उचित न भंगकीबो नेम ॥ बचनसो सुनि मंत्र
गुणि हम वृद्धब्राह्मण चाहि। वृद्ध दासीदास सँगदै बिदाकीन्हें
ताहि ॥ जाय शाल्व महीपके ढिग कहो अम्बा बैन । तुम्हैंपर
आसक्त ममभन बरो मोहिं सचैन ॥ कह्यो यह सुनि शाल्व
भूपति भीष्मलैगो तोहिं । और के ढिगगई तियनाहिं उचित
राखब मोहिं ॥ जाहु अब तुम भीष्मके ढिगमोहिं नाहिं स्वीका-
र । तदनु अम्बाकही इमि मतिकहो भूभरतार ॥ ब्रती भीषम
अनुजाहित लैगयो मोकहँ जीति । तहां तासों कही हमइमिगु-
णो भीषम नीति ॥ प्रीतिममहै शाल्वनृपपहँ देहुताढिगजान।
बचन यह सुनि बिदा कीन्हों भीष्मअति मतिमान ॥ सुनोभू-
पति भयोनाहिं सुकुमारपन ममभंग । तरुणिहमतो भक्त अब-
ला करोमम परसंग ॥ इबिधि बहुतबुझायनृपसों कहो आरत
बैन। नहीं मान्यो भूपतबसों तरुणि ह्वै गतचैन ॥ रुदति नृप
सों कही नृपमति करोमम परित्याग । एकगति तुम परम मम





हौकरो पूरणभाग ॥ नहींमान्यो भूप भाष्योगच्छ गच्छ सबार ।
रुदत तब नृपसुता तहँ सों फिरी करत बिचार ॥ मोहिं धिक्क
धिक भीष्महि यहि नृपति अति धिक्कार। पूर्बकर्म्महिं धिकबि-
धिहि धिक रच्यो यह उपचार ॥ भीष्ममम अपकारअतिशय
कियो नाहक ढूंढ़ि । बैर ताको लेउँकैसे कौनबिधि अबऊढ़ि ॥
गुणतऐसे जाइ आश्रम मुनिनके अनुमानि । नौमि बिधिवत
भई निवसत कठिन करतब ठानि ॥ दुखित अति अवलोकि
तापस भये बूझत ताहि। कहो तुम अति दुचित काहे हियेको-
नतिकाहि ॥ बचनयहसुनि रुदतिअम्बाकहो निज बिरतान्त।
समुझिसो बिरतान्त गुणिगुणिकहे मुनिवर दान्त ॥ जाहुतुम
निज पिताके गृह साधिहि सिगरो काज। पिताके आधीनकन्या
कहत सुबुधि समाज ॥ कही कन्या सकत नाहिं हम पिताकेघर
जाय। उग्रतप हमकरब जेहि परलोक अब न नशाय॥ बचन
यहसुनि सुमुनि ताकीकरि प्रशंसा बेश । करो तप यहपरम उ-
त्तम दये ताहि निदेश ॥ कछू दिनमें तासु मातामह नृपतिऋ-
षिजाय । ताहि अंकलगाइ यहि बिधि कहत भे समुझाय ॥
जाय तुम भृगुरामके ढिगकहो निजगति क्षाम । दूरिकरिहैं ब्य-
था सिगरी कृपाकरि श्रीराम ॥ राम मम प्रिय सखातपत महे-
न्द्रगिरि पै तत्र । चलो अब मम संग तुम मुनिनिकर बिलसत
तत्र ॥ होत्र बाहन राजऋषिके बचनसुनि हितजानि । कही
तासँग चलन अम्बा हिये आनँद आनि ॥ सुनोनृप तेहि स-
मय तेहिथर भयो आइ प्रतक्ष । रामको जो सखा अकृतब्रण
नामक दक्ष ॥ ताहि लखि सबसुमुनि उठि बैठाय बिधिवत
पूजि। राम प्रभुकहँ होत्रबाहन कहतसुबचन कूजि ॥ अकृत-
ब्रण तब कहो यहि थल राम ऐहैं प्रात । लखन तुमकहँ जानि
निजसखा अति अवदात ॥ दोहा ॥ कथा बारता करत तहँ
रजनी भई ब्यतीत। भोरहोत आये यहां परशुराम जगजीत॥

लखि मुनिगण उठिकै सबिधि पूजि महासुख पाय । कुशल
इनकरि रामसह बैठि लसे छबिछाय ॥ धनुष परशुतूणीर
बैठे श्रीभृगुराम । तब अम्बा पूजन कियो दैमधुपर्क ललाम
होत्र बाहु तबरामसों कहतभये मृदु बैन । यह ममदुहिता
सुता प्रभुहै महा अचैन ॥ प्रभुसुनिकै याकीब्यथा कृपाकरो
छोह । रामकहे तब निजब्यथा कहुकन्या तजि मोह ॥ जयकी
तब अम्बाकरि रुदन अवाय । दई सकल वृत्तान्त सुनाय
सोसुनि तासुरूप वयदेखि। रामकहेहियकरुणा भेखि ॥ कहुअ
तो मति चाहै जाहि । तोकहँ सौंपिदेहिं हम ताहि ॥ कै भीष
कै शाल्व बिचारि । मम अनुशासन सकतन टारि ॥ मम श
सन नहिं मानै जौन । मम शरघात मरैशठ तौन ॥ यहसुनि
अम्बा लहि चैन । कही ताततुम बल बुधिऐन ॥ युगमें जा
गुणो अपराध । तेहि जीतो करि क्रोध अगाध ॥ हम जा
यहि दुखको मूल । है भीषम दायक अतिशूल ॥ मम मत
तुम जीतौताहि । रुदति कहीपदपंकज चाहि ॥ यह सुनि
दया सों पूरि । मम जीतन को प्रणकरि भूरि ॥ कन्या सहि
बिप्र समुदाय । लैसँग चलेगर्व अतिकाय ॥ तीनि दिवस
मुनि सुखदाय । कुरुक्षेत्रमें निवसेआय ॥ हमसुनितत्र आग
तासु । द्विजनसमेत जायतहँ आसु ॥ मुनिनसमेत यथावि
पूजि । सम्मुखबैठे सुबचन कूजि ॥ तबभृगुराम मोहितनहे
कहेबचन अतिअमरष मेरि ॥ भीष्म कौनमति हिये बसा
बिनु दीन्हें नृपतनया ल्याय ॥ कियेबिसर्जित अनुचित तौ
याको ग्रहण करै अबकौन ॥ ताते अब ममशासन मानि
बिधि गहो तुम याकोपानि ॥ यह सुनिकै हमकहे सठौर
बिरतान्त सुनो मुनिमौर ॥ यहनृप तनया कहीसुनीति । है
शाल्वनृपति पहँप्रीति ॥ तबहम बिदाकरी बिधिजानि । स
कहत अनुचित अनुमानि ॥ गहिभय लोभ करत प्रणत्या





सुनो लगत तेहि कुत्सित दाग ॥ ताते हम न करबस्वीकार ।
अवमति कहो मुनीश उदार ॥ यहसुनिकै करिरातेनैन । बोले
परशुराम बलऐन ॥ दोहा ॥ जो न मानिहै बचनमम तौ सह
सखासमान । आजु मारिहौं तोहिं मैं बरषि असंख्यन बान ॥
पाणिजोरि तब हमकहे तुम ममगुरू उदार । क्रोध करो मति
शिष्यपहँ यह अति अनुचितचार ॥ यह सुनिकै भृगुपतिकहे
जो गुरुजानत मोहि । तौहमभाषत तौनकरु कुलरक्षण बिधि
जोहि ॥ चौपाई ॥ यहसुनि हम भृगुपति सों भाषे । नाहक तुम
अनरथ अभिलाषे ॥ मुनि न तजब हमप्रण भयगहिकै। आपु
हलुक होहु इमिकहिकै ॥ नारिन को अवगुण हम जानत ।
नहीं ग्रहण करिबो अनुमानत ॥ गाथा इक मारुतको गायो ।
सोहम सुने कहत मनभायो ॥ काज अकाज बिचारन हीना ।
अरु उनमत्त कुपथअवलीना ॥ ऐसेगुरुहूको पटुत्यागत । ताके
तजेदोष नहिंलागत ॥ क्षत्री पाणिजोरि ऋजुभाषत । बिप्र
तऊजो रणअभिलाषत ॥ आयुधगहि बधहेतु प्रचारत । ता-
हिवधे नहिंपातक चारत ॥ तुमद्विजकै क्षत्रीब्रतधारे । हम न
लव सुधरमसों न्यारे ॥ तुमसों करव युद्धप्रणधरिकै । कुरुक्षेत्र
बधि शरझरि करिकै ॥ कार्त्तबीर्य्य कहँबधि तुमपाछे । शोच
पिताको कीन्हें आछे ॥ तेहिथर चलो तुम्हें हमबधिकै । शोच
करब लहि बिजय बरधिकै ॥ जोतुम गहत गरब अतिनोखो ।
तबथर कहत बचन अतिचोखो ॥ हमबहुबार क्षत्रियनमारे ।
करिदिगबिजय प्रतापपसारे ॥ यहसुनि तजो गरबअघभारी ।
नाहिं तबरहो भीष्मधनुधारी ॥ नहिंमम समहो धनुधरकोऊ ।
मातरु तुम्हें बधत तबसोऊ ॥ दोहा ॥ मैंभीषम मोसोंपरो काम
तजो अबगर्ब । तुम्हें मारि क्षत्रियनको लेहौं बैरअखर्ब ॥ भीष्म-
उवाच ॥ सुनो भूप येबचन मम सुनि भृगुपति रणधीर । कहा
भयो बोलत इमिबिधि काल बिबशकै बीर ॥ जोरणशरधा तोहिं

तौ तो बधलखि यहिकाल । गंगहि रोवति लखहिंगे ऋषिपु
नि सुर सुरपाल ॥ तोमर ॥ मम संगरण उतसाह । गहि गह
जो जयचाह ॥ तौजाय हास्तिनग्राम । लैसंग भट बलधाम
फिरि करोसंगरआय । तब बसो सुरपुर जाय ॥ यहबचनसुनि
हम भूप । छुइ चरणतासु अनूप ॥ यह सत्यवतिहि सुनाय
आशीष तासोंपाय ॥ चढ़िसुरथ सैन सजाय । स्वस्त्ययन सु
नत सचाय ॥ अरुदेत बिधिवतदान । अरु सुनत अस्तुति
ध्यान ॥ अरुशंख दुन्दुभिभूरि । कीसुनत धुनि मुदपूरि ॥ ति
चले ओज बढ़ाय । तेहिसमय सुनु क्षितिराय ॥ मम जननि
शुचि तनधारि । मुनिपास जायबिचारि ॥ इमिकही मुनिहि
बुझाय । ऋषितजो मुनि सुखदाय ॥ ममपुत्र भीषम ताहि
मतिबधो हठिजय चाहि ॥ तब हरषि बोलेराम । निज सुतहि
बरजु अछाम ॥ ममकहो मानै तौन । तौबचै बिक्रम भौन
नृप बचन यहसुनि तासु । भिरि आइ ममढ़िगआसु ॥ इमि
कही गंगामाय । सुततजो हठदुखदाय ॥ दोहा ॥ राम धनुषध
रुद्रसम क्षत्रीकुलको काल । बिप्रगुरू शासन करत तौनको
हेलाल ॥ तब हमसब वृत्तांतकहि नौमिबिदा करताहि । भृगु
पति के सम्मुख भये बीसबिसे जयचाहि ॥ सोरठा ॥ तब भृगु
पति भटचण्ड धनुधर मण्डन बिदित भट । टंकारत कोदण्ड
मोहिं प्रचारो गरजितकि ॥ चौपाई ॥ तब हम कहो सुनो धनु
धारी । हमसुरथी तुमहौपदचारी ॥ तुमहूंचढ़ोसुरथपरआरज
तब हमकरब युद्ध जयकारज ॥ यहसुनि कहे रामभटनायक
ममरथभूमि बेद हयचायक ॥ इमिकहि राम धनुषरव करिकै
शायक बरषतभे प्रणधरिकै ॥ नृप तेहि क्षणहम रामहिं देखे
रथपर चढ़े कवचसों भेखे ॥ अकृतब्रण बर सारथि जीको
दिब्य प्रभाव मोदप्रदनीको ॥ बारबार भृगुराम पुकारत । टे
जो अनत वृथातन डारत ॥ तब हमधनुष बाण धरिरथपै





रथते उतरि शीघ्रचलि पथपै ॥ निकट जाइकै युग करजोरी ।
कहत भये करिबिनय अथोरी ॥ धर्मशील ममगुरु गोसाईं ।
होप्रभु तुम रक्षक सबठाईं ॥ तप प्रभाव मति प्रगटितकीजो ।
अनुकम्पा करिजय यशदीजो ॥ यहसुनि परशुराम मुदगाहिकै ।
कहेलरो सुधरमपररहिकै ॥ शापन देवभूरि भयत्यागो । युद्धकरो
मममनअनुरागो ॥ यहसुनि ताहिनौमि हमफिरिकै । शंखबजाये
रथपरथिरिकै ॥ तबफिरि रामबाण झरिकीन्हें । तिमिहम शर
छादित करिदीन्हें ॥ उभयओर बाणनके जालन । पूरितभयो म-
हाबिकरालन ॥ उभयसुभट बाणनके घातन । रुधिरभरे सुखमा
कहिजातन ॥ हम करि अतिबिक्रम तेहिदिनमें । ताहिलख मो-
हितकछुक्षनमें ॥ घोरयुद्धभो तेहि दिनराजा । लखि बिसमितभे
सुमुनि समाजा ॥ संध्या निरखियुद्धप्रण तजिकै । संध्याकर्मकिये
बिधि सजिकै ॥ दोहा ॥ प्रातकृत्य करि भोरफिरि कियेघोर रण
रंग । दोऊ अरि मदभंगको गहे सुटंग उमंग ॥ दिब्यअस्त्र प्र-
गटित किये परशुराम बलऐन । तेहिहम बारप्रगटकरि दिब्य
अस्त्रजगजैन ॥ जब हम छांड़े दिब्यशर तब भृगुपति भटच-
ण्ड । बारणकीन्हें प्रगटकरि दिब्य सुअस्त्र उदण्ड ॥ कइकबार
मोहितकिये मोहिरामभट दक्ष । हमरामहिं मोहित किये कइक
बार परतक्ष ॥ मछिखरी ॥ यहि भांति तेइस दिवस तेहिथल युद्ध
अति करकस भयो । भृगुराम तब ब्रह्मास्त्र दारुण तजेअति
बरचसमयो ॥ तब तजेहम ब्रह्मास्त्र दोऊ अस्त्र बाढ़ि मगमें
भिरे । अति दुसह आतप तेज तिनके पूरिमहि दिवमाधि थिरे ॥
सब देशप्रतपित भयो सिगरे लोक हाहाधुनि किये । जमदग्नि
ब्यास ऋचीक नारद आइतहँ करुणा लिये ॥ समुझाय बहु
बिधि हमहिं रामहि युद्धको बारण करे । तब रामअम्बासोंकहे
मम पितर यहिरण मधि परे ॥ नहिं भीष्म हमसों बध्य अरु
नहिं जेय अतिशय प्रबल है । तोहेतहम निजशक्ति बिक्रम । कि-

योसों वहि दवल है ॥ नाहिं सुयश मम तो अरथ अबहम
हत जसतुम तसकरो । चलिजाय भीषमके निकट कहिविन
वार्त्ता बशकरो ॥ यहबचन सुनिकै कहीअम्बा आपुममहि
आतिलरे । प्रभु जाहुतुम हम करबतप बसि जहां मुनि
ब्रतधरे ॥ करि उग्र तप निजपाणि भीष्महि बधब हम यह प्र
सही । इमिभाषि अम्बागई फिरितपकरन अति अमरषनही
दोहा ॥ मुनिन सहितभृगुराम तब गे महेन्द्र गिरि यत्र । हमर
चढ़ि अस्तुतिसुनत मोहितआयेअत्र ॥ रामकृष्णभगवानप्र
विश्वयोनि भगवान । तासुकृपाते जयलहे पालि सधर्ममहान

इतिश्रीउद्योगपर्वणिअम्बोपाख्यानेनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ परशुरामसों ह्वै बिदा अम्बा बनमेंजाय
यमुनातट बसिउग्रतप करतभई मनलाय ॥ जयकरी ॥ बरषद्वि
करि बारि अहार । अरु षटमास बायु ब्रतचार ॥ एक बर
तरु कोदल एक । भोजन कीन्हों सहित बिबेक ॥ विधिसों चा
न्द्रायन कृच्छ्रादि । ब्रतकरि शङ्कर को गुणनादि ॥ प्रति मुनि
आश्रम तीर्थन जाय । दुस्तर तप कीन्हों मनलाय ॥ द्वादश
बरष पालि ब्रतधर्म । ब्रत कीन्हों करि दुस्तर कर्म ॥ यहि विधि
तपते देखिकै ताहि । गंगा प्रगटकही का चाहि ॥ यहि विधि
ब्रत चारित कहुतौन । तब बोली अम्बा मतिभौन ॥ भीषमके
बध करिबे हेत । हमतप करति नियम चितचेत ॥ सो सुनि
मम जननी अति क्रोधि । कहतभई तपफल अवरोधि ॥ सिद्धि
न जानि परत यहकाम । तू हो नदी बार्षकीनाम ॥ अम्बासुनि
यह शाप बिचारि । तव प्रभाव युगभाग सुधारि ॥ एक भाग
करि नदीनवीन । लगी तपन तप गहि ब्रत पीन ॥ देखि तासु
दुस्तर तपचार । प्रगट भयेतब शंभुउदार ॥ कह्यो मांगुबर
तब अनुमानि । अम्बा कही जोरि युगपानि ॥ हमकर निज
भीषमको नाश । कियो चहति सो देहु महाश ॥ यहसुनि बोले





गिरिजारौन । एवमस्तु तुमचाहति जौन ॥ दोहा ॥ सोसुनिकै
अम्बा कही किमि होई यहकाज । हम युवती वह पुरुष नाहिं
युद्ध समागम साज ॥ उमा नाथ यह सुनि कहो नाहिं मिथ्या
ममबैन । यहतनतजि तुम होहुगी द्रुपद सुतामतिऐन ॥ चौपाई ॥
कछु दिनमें तुमपूरुष ह्वैकै । ह्वैहौ महारथी मुद ग्वैकै ॥ तब
भीष्महिं बधिहौ प्रणगहिकै । शंकर गुप्तभये इमि कहिकै ॥ वैश-
म्पायनउवाच ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै । भीषमसों बूझतभो
गुनिकै ॥ प्रथमसुता ह्वै पुरुष उजागर । भयो शिखण्डी किमि
कहि नागर ॥ यह सुनि कहे भीष्म धनुधारी । सुनोतौन भूपति
रणचारी ॥ द्रुपद पुत्रहित करि ब्रत साधन । शूलपाणिको कि-
यो अराधन ॥ तब करि कृपा शम्भु बरदानद । कहेमांगु बर
भूपति मानद ॥ भूपति कहे देहुसुत स्वामी । भीषम बधै जौन
बलधामी ॥ सोसुनि शम्भुकहे सुनुमानी । होई प्रथमसुतासुख-
दानी ॥ फिरि ह्वै पुरुषसिंह बलधामा । रणकरि लही बिजययश
कामा ॥ इमि कहि गुप्त भये शिवयोगी । घरआयोनृप सुतउप-
योगी ॥ अर्थसिद्ध गुणि आनँदछाये । पटरानिहि वृत्तांतसुनाये ॥
कमसोंगरब धारिनृपपतनी । कन्याजनतिभईहितजतनी ॥ तब
नृपशंभुबचन सतचीन्हें । पुत्रभयोयह प्रगटितकीन्हें ॥ जातक
कर्मकिये सविधाना । तौन भेदकाहू नहिंजाना ॥ भूषण वसन
पुरुष समगहिकै । बर्द्धित भयो पुरुष समरहिकै ॥ बिप्रसुतन
के सँगलिपिलीखो । आचारयसों धनुबिधिसीखो ॥ शंभुबचन
गुणि त्यागि अँदेशा । पुत्रविचारत द्रुपदनरेशा ॥ सानँद नाम
शिखण्डी भाख्यो । सुतसमप्रेमसहित सँगराख्यो ॥ तेहि तरु-
णापन पूरतदेखि । द्रुपद सशोच भयेअवरेखि ॥ दोहा ॥ नृप
पतनी नृपसों कही भूप करत कत शोच । सुने न कबहूं शंभुको
बचन लहब गतिपोच ॥ अवशि पुरुष यह होगयो ब्याहु करो
करि यत्न । मत करिकाहू नृपति की ल्यायो कन्यारत्न ॥ रोला ॥

भूपभूपन बोलिकै तबपूरि परम उछाह । सुता ल्यायेदशा
पतिकी किये बिधिवत ब्याह ॥ कछू दिनमें लहि समागम
ता नृपकीतौन । पतिहियुवती जानि अतिशय दुखित ह्वै ग
गौन ॥ मायकेकी सखीवाहि बुझायकै यहभेद । भईभेजति
तापास सँदेशपूरित खेद ॥ सुनत तौन दशार्ण नाथ हिरा
बर्म नरेश । भयो भेजत द्रुपद के ढिग दूतभाषि सँदेश ॥ द्रुप
के ढिग जाइकै सो दूतलै एकन्त । कह्यो भाषण कह्यो मो
दशार्ण दिशिको कन्त ॥ कौनको दुरमंत्र सुनि ह्वै मोहबश
चेत । भये यांचत सुताभम निजसुता ब्याहन हेत ॥ भयो
सो नहीं अबलौंनहीं ह्वैहै और । कियोजैसो कर्म तुमयह शठ
को गहिडौर ॥ होहु अबसन्नद्ध तातेकह्यो नृपकरिक्रोध । सहि
त मंत्रिन मारि तुमको करी भूपति बोध ॥ भीष्मउवाच ॥ द्रुप
भूपति दूत को यह बचन सुनिश्रुति छोल । रहो औचक ग
तसकर सरिस घरिक अबोल ॥ आनि साहस कह्यो तुम
सुने मिथ्याबैन । पुरुष है ममपुत्र नृपसों कहेहु सुवती हैन
भाषिइमि कहि बहुत आदर बिदा कीन्हों ताहि । जायनृप
कह्यो सो जिमि गयो द्रुपदहि चाहि ॥ भूपसो सुनि फेरि
त्रिहि बूझिकरि अनुमान । चलो सेनासाजि द्रुपदहि बधन
अमान ॥ चारके मुख द्रुपद सो सुनिहिये अति दुख आनि
जाय तनया की जननि ढिग कहे भूरि खगानि ॥ भूप देश
शार्णपतिमम सुतहि तनयाजानि । मोहिं जीतन चढ़ो आव
छली दोषी मानि ॥ लाज बश हम सकबनहिं लरि सामने
झूठि । होइजो करतब्य अब सो कहो भामिनि ऊठि ॥ वच
यह सुनिकही महिषी पूजि देवी देव । भूप होहु अशोच शंक
बचन को गुणिभेव ॥ दोहा ॥ यहसुनि द्रुपद सुमंत्रकरि पूज
लागे देव । प्रिय सम्बन्धी सोंकलह होइ नहीं जेहि भेव ॥ सु
निकै यह वृत्तान्त सब शोच शिखण्डिनि रोय । गोपित घर





कढ़ि गईं बिपिन मध्य दुखभोय ॥ देहत्यागको प्रणगहे गहन
बिपिन मधिजाय । थूण करण शुभ यक्षको लखो गेह सुखदाय॥
चौपाई ॥ निरजन बनमधि घरमनभावन । देखि शिखण्डी प्रवि-
शो चावन ॥ देखि शिखण्डिहि यक्षमहाशय । बूझतभो ऐबेको
आशय ॥ मैं धनपतिको अनुचर आरय । जोतूकहै करोंसो
कारय ॥ सो मुनि नृपततनया दुखनाशी । निज वृत्तान्त यक्षसों
भाशी ॥ कहि बृत्तान्त कही ह्वै आरत । यह दुख तात हियो
मम जारत ॥ ममदुख मेटन कहे गोसाईं । तौ करिदेहु पुरुष
पहिठाईं ॥ यह सुनियक्ष घरिक अनुमानी । कही शिखण्डीसों
बरबानी ॥ निज पुंसत्व तुम्हें हमदैकै । रहबतोर इस्त्रीपन लै-
कै ॥ समुदजाय तुम निजरजधानी । पूरुषप्रण करुप्रगट सया-
नी ॥ पैयह बचन कहत हमतोसों । यहनिबन्ध इतकरिलै मो-
सों ॥ पुरुष प्रगट ह्वै कछुदिन रहिकै । फिरिममढिग आयो
मुद लहिकै ॥ तब फिरिमम पूरुष पन दीजो । निज इस्त्री पन
हमसों लीजो ॥ यहिनिबन्ध को करुअस्थापन । तौहम देब
पुरुष पन आपन ॥ यह निबन्ध अतिदृढ़ करिलीन्हों । तब ह्वै
युवति पुरुषपन दीन्हों ॥ पुरुष सिंह ह्वै आनँद गहिकै । नृप
सुत नगरगयो रिजुकहिकै ॥ द्रुपदहि सब वृत्तान्त सुनायो ।
सुनिभूपति अतिआनँद छायो ॥ दोहा ॥ उतदशार्ण पतिसद-
लचलि निकट आइअति क्रुद्ध । कहिपठवत भो दूतमुख कहो
करै अबयुद्ध ॥ सोसुनिकै पांचालनृप भेज्योबिप्र प्रवीन । सो
दशार्ण महीपसों बोलोबचन अहीन ॥ भूपकह्यो पांचालपति
ममसुत पुरुष अमान । तनया तुमसोंकह्यो सो झूठो अहितन-
दान ॥ चौपाई ॥ नृपहिरण्यबर्मायहसुनिकै । युवतिएकभेजतभो
गुनिकै ॥ सोनृपगेह आय मुदभरिकै । निशिमेंतासु परीक्षाक-
रिकै ॥ भोरजाय तहँभाषीसानँद । नृपसुतपुरुष सरसरति दा-
नद ॥ सोसुनिभूपमोदसोंपागो । मिलाद्रुपदसों हितमगलागो॥

हयगज रतन शिखण्डिहि दैकै । निजपुरगो अतिआँनँदलैकै
इतसोयक्ष युवतिपनधरिकै । बसतरहोनिज गश्रमधि चरिकै
तहांएकदिनधनपतिआयो । यक्षनकढ़ोलाजसोंछायो ॥ यक्षन
थललखिअनुचितजाने । यक्षनसोंबोलेरिसिसाने ॥ यूथकरणहि
यगरबबसायो । तातेमूढ़ न मम ढिगआयो ॥ देहौंयाहि दा
मन भाये । तब सुयक्षवृत्तान्त सुनाये ॥ तब धनेश बुलवा
ताही । कहत भये तेहि युवती चाही ॥ अरेमूढ़ तैं अनुचि
कीन्हों । पूरुषपन देतियपन लीन्हों ॥ तोमधिरहै युवति प
ऐसो । रहै पुरुषनृपसुतहैजैसो ॥ बिनयकिये तबयक्षबिचक्षण
कहो शाप मेटनको लक्षण ॥ सो सुनिकै धनपति सुखपाये
तेहि कुशापको अन्त बताये ॥ रणमें मरी शिखण्डी जबही
होईपुरुष यक्ष यह तबहीं ॥ दोहा ॥ इमिकहिकै धनपति गये
नो भूप मतिमान । भावी ऐसे होति है भावी अति बलवान
कछुदिनमें तेहि यक्षढिग आपु शिखण्डीजाय । कह्योतातअ
लेहुनिज पूरुषपन सुखदाय ॥ सोसुनि यक्षप्रशंसिकै नृपकुम
को धर्म । बिदा कियो कहि धनदके शापदाप कोमर्म ॥ सोरठा
सोसुनि अति सुखपाय गयो शिखण्डी निजसदन । माता
तहि सुनाय मोदित करि बिलसत भयो ॥ तोमर ॥ सो सुनत
पद नरेश । भोकरत मंगलबेश ॥ सबपूजि देवीदेव । अरु
जिबिप्र सुभेव ॥ हय हेम गज महिदान । भोदेतसहित बि
न ॥ तब द्रुपदसुत सुखदाय । द्विजद्रोण के ढिगजाय ॥ सि
धनुष बिधिअवदात । भोपरमसुरथीख्यात ॥ यहिभांतिभीष
दक्ष । वृत्तान्तकहिपरतक्ष ॥ फिरिकहतभोमतिमौन । यहिभां
युवतीतौन ॥ होपूर्वयुवतीताहि । हमवधबनहिं जयचाहि ॥ य
मानि सोक्षितिरौन । तहँ कछुकक्षण रहि मौन ॥ गुणिगोपिहि
कोखेद । फिरि भयो बूझत भेद ॥ सोकहो अबहै आर्य । क
युद्ध अद्भुत कार्य ॥ तुम द्रोण करणसुबीर । कृप द्रोण सुत





धीर ॥ अरि सैनमधि करिगौन । लरिकिते दिनमें कौन ॥ जय
लहै बधि अरिसैन । सोकहो बिक्रम ऐन ॥ सुनि कह्यो भीषम
ईन । दशसहस योद्धापीन ॥ अरुसहस रथसमुदाय । हमबध-
व रोजसचाय ॥ दोहा ॥ जोबिशेष बिक्रम करौंतौ करि संगरघो-
र । एक मासमें मैंकरों अरि सेनाको ओर ॥ तब इमि बूझेद्रो-
णसों सोसुनि कहेअचार्य । मासएक लरि शत्रुदल हमहूंमारब
आर्य ॥ दोय मासमें शत्रुदल बधन कहे कृपबीर । दशदिनमें
नाशन कहो द्रोण तनय रणधीर ॥ करण कहे लरिपांच दिनहम
मारब अरिसैन । सोसुनिकै हँसिकहत भो भीषम बिक्रम ऐन ॥
सोरठा ॥ जो लगि भिरत न पार्थ टङ्कारत गाण्डीव धनु । इमि
जलपन अयथार्थ तौलगि मन मानो करो ॥ बसुकला ॥ यहखब-
रिपाय । नृप धर्मराय ॥ भट बन्धुसर्ब । अरुनृप सगर्ब ॥ तिनसों
सहास । कीन्हें प्रकास ॥ सबसुने तौन । उतभयो जौन ॥ तुम
कहो पार्थ । बाणीयथार्थ ॥ जयहित सहोश । लरि कितेदोश ॥
बधिशत्रु सैन । बिलसौ सचैन ॥ सोकहोतात । बिक्रम बिभा-
त ॥ दोहा ॥ भूपतिकेयेबचनसुनिमाधवकीदिशिहेरि । गुडाकेश
बोलत भयो बचनबीर रसमेरि ॥ हम चाहैं तौ निमिष मेंजीतैं
तीनोंलोक । पशुपति अस्त्रप्रयोग करि दियो जौनतपओक ॥
सोरठा ॥ पैंनचहत हमयेहु बिजय चहत करिसबिधिरण । सुजय
असंशयलेहु तोसँगसबयोद्धाप्रबल ॥ महिखरी ॥ तबनृपसुयोधन
भारलहि निज सैन सजवावत भयो । बहुशंख दुन्दुभितूर आ-
दिक बाद्य बजवावतभयो ॥ सबभूप निज निज सैन साजिसजि
बीररण चाहतभये । चढ़िबाहननि बरबीर रसको सिन्धु अव-
गाहत भये ॥ बढ़ि जाय योजन कइक दुन्दुभिफेरि अति आ-
नंद भयो । सब नृपन लायक बासगृह रचवाइ तहँ निवसतभ-
यो ॥ नृप धर्म सुनियह खबरिसैनसजाइ दुन्दुभिफेरिकै । चलि
अगारि निवसतभयो दुन्दुभि शब्ददश दिशि भेरिकै ॥ दोहा ॥

मधिमें योजन पांचमहि राखिउभय क्षितिपाल । युद्ध हेत
बसत भये गहे अमर्ष बिशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबंदीजनकाशिबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेनगोकुलनाथेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेउद्योगपर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

उद्योगपर्वसमाप्तः ॥

मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेख़ानेमें छपी
फरवरी सन् १८९१ ई० ॥



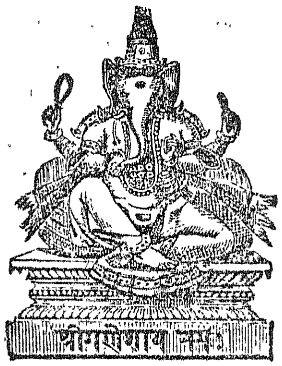


# महाभारतदर्पणो ॥

## भीष्मपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ ध्याय पद्मपद विष्णुके नर नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ मन अलभ्य तेहि लहनको हौं जु करेउ यहकाम । महिमा सीता रामकी हढ़बसाइ हियधाम ॥ सीताराम सुस्वामिप्रभु न्यामक बांछित दानि । अ-वशि करत सतकार्य्य सिधि सतपथ रत अनुमानि ॥ नीति निपुण प्रभुक्षमत नित शरणागत की खोरि । नाहिं निरखिहैं नेसुको लोलुपताई मोरि ॥ जासुनामलै तरत जन भव निधि अगम अपार । ते प्रभु करिहैं अवशिमोहिं अर्थार्णवके पार ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परम अनूप । ते सारथि देहैं बिर-चि भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थभट ॥ ध्याय उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तख्यो ॥ दोहा ॥ बैशम्पायनसों कहो जनमेजय क्षितिकन्त । कौरव पाण्डव किमिलरे सो कहिये बुधिवन्त ॥ चौपाई ॥ जनमेजय नृपकी यहबानी । सुनि बोले मु-निवर बिज्ञानी ॥ कुरुक्षेत्रमें कौरव राजा । हे पूरुब दिशि साहित

समाजा ॥ सहितसेन पश्चिमदिशि ताके । कियेबास पांडवसु
ताके ॥ शुचिसम्मत पंचक उत्तमथर । युद्धहेतु मधिमेंति
अन्तर ॥ पाण्डव नृपगण कर करिभाये । बासवेश्ममें बास क
राये ॥ भोज्यबस्तु अरुशय्यानीके । दीन्हें यथायोग्य सबहीके
दई भटनकहँ बिदित निशानी । जो निज परसूचक मनमानी
भोरहिदुर्योधन दलसाजे । चढ़ि पांडवके सम्मुखगाजे ॥ लखि
सरोषपांडव बलभारे । साजेदल बजवाइ नगारे ॥ सदल सुत
सह द्रुपद महीपा । युद्धहेतु पुलके कुलदीपा ॥ केशव अरुअ
र्जुन मुद्लीन्हें । परत्रासन शंखध्वनिकीन्हें । ताक्षण सबआ
बरबरणी । धूरिधारसों भईबिबरणी ॥ घनगण मांसरुधिर तेहि
क्षनमें । बरषतभे भविष्य गुणि मनमें ॥ मारुतशरकर कंप
डोले । अति जवसों भ्रमि इत उत ओले ॥ महाराज तेहि
मयामाहीं । रहे न सुभट अनत महिमाहीं ॥ बालवृद्ध तजि
युवा सोहाये । महिमण्डलके सबतहँआये ॥ दोहा ॥ रथकुंज
हय सुभट बिनु भयेहोत तेहिकाल । सर्बदेश तिनसर्बमें तोहि
देश विशाल ॥ युद्धहेतु सन्नद्धकै कौरव पाण्डवतत्र । धर्मयु
सिद्धान्तसों नियमैंवे ह्वैएकत्र ॥ चौपाई ॥ युद्धनिवृत्तभये स
कोई । मिलैंसप्रेम मित्रसम होई ॥ समबल बय भिरि संग
करहीं । समबाहन बारे भिरिलरहीं ॥ बिधनुबिरथ भागतन
तिनपै । तजैं न शस्त्रशस्त्रहैं जिनपै ॥ जोजोभिरै लरैसोसोई
भिरैनदूजो भटहित जोई ॥ एक सुभटसों द्वैभट कितहूं । त
न नीति निबाहैं नितहूं ॥ सूतशस्त्र पहुँचावन वारे । अरुजे
द्य बजावनहारे ॥ अन्य कार्य्यरत गाफिल जनपैं । तजैंनअ
युध गहिप्रणमनपैं ॥ यहनिबन्ध करिकैमनमाने । कौरवपांड
फिरि बिलगाने ॥ तेहिदिनमें बहुशकुन निरेखी । आय व्या
मुनिबर अवरेखी ॥ अति चिन्तित धृतराष्ट्रहि जानी । कह
भये सुबचन अनुमानी ॥ तजोशोचनृप धीरज आनो । नि





शत सुतन कालबशजानो ॥ नृपसमूह अरु सुभट घनेरे । जुरे
काल भावीकेप्रेरे ॥ ते अन्योन्य युद्धकरि मरिहैं । इर्षाभरे नेकु
नहिं टरिहैं ॥ यह भविष्य नृप टरिहिनटारे । अवशिहोतबिधि
जौन सुधारे ॥ तातेकाल कर्म्मकृत शोचौ । बढ़िशोचको त्याग
न रोचौ ॥ जो यहयुद्ध लखन अवरेखौ । तौचख दिव्यदेउँ
सबदेखौ ॥ दोहा ॥ महाराज यहसुनिकहे नृपलै ऊबि उसास ।
मुनिमैं नहिंचाहौं लखन पुत्रज्ञातिकोनास ॥ पृथक् पृथक् चा-
हतसुनो युद्धव्यवस्था सर्ब । करिदीजै ताकोयतन करिकै कृपा
अखर्ब ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै मुनिवर मतिमान । संजय कहँ
दीन्हों बरदान ॥ दिव्यचक्षु तुमहोहु महान । अश्रम अरु अ-
बध्य गुणवान ॥ युद्धव्यवस्था लखि अनुमानि । कहोनृपतिसों
आनँदखानि ॥ कौरवपांडव नृपतिसमूह । तासुकीर्त्ति हमकरब
सऊह ॥ नृपहम कहत इतोसिद्धान्त । लहतसुजय धार्मिकअरु
दान्त ॥ इमिकहिकै श्रीब्यासउदार । कहत भये फिरि शकुन
विचार ॥ शेनकंक गृद्ध अरुकाक । मोदैंचहुँदिशि जुरेनिशाक॥
सैनमध्य ह्वै काक समूह । दक्षिण दिशाजात करिऊह ॥ लोहि-
तकृष्ण इयाम परिवेष । शूरहि करत भयानक भेष ॥ कार्तिक
की राकाको चन्द । रक्तबर्णभो करता दन्द ॥ गृह शूकरसो
आखुभुक क्रुद्ध । झपटि उछलि फिरि बिरचत युद्ध ॥ प्रतिमा
सहित कँपति सबठौर । पतति बमति है रुधिर सगौर ॥ बिना
बजाये बाजति भेरि । चलै अहयरथ अनरथ हेरि ॥ कोकिल
केकीशुक सबकाल । बोलैं भीषन कृत दुखजाल ॥ अरुणोदय
में सलभ अनेक । उडैंपरम अशकुनके टेक ॥ उभैसन्धि मधि
में दिगदाह । होत करन अनरथको चाह ॥ दोहा ॥ अरुन्धती
पतिब्रतनकी सींवछोड़ि निजबानि । नभपैचलतिबशिष्ठके आ-
गे अनरथजानि ॥ बिना बलाहक होत है शब्द गगनमें घोर ।
होत सकल बाहननिके आंशू पतनअथोर ॥ प्रगटहोतहै गउन

में युगखुर एकहि बार । फूलेफरे अकालमें तरुकृत अनर अ
फार ॥ पांच चरण त्रयशृङ्ग द्वै पूंछचारि चखवन्त । वत्स हो
हैं पशुनके सूचक अशुभ अनन्त ॥ त्रिपद सदशन विषा
युत होत खगनके बार । अवशि होयगो भूमिपै नृपगण
संहार ॥ जनमें दुहिता तियनके पांच चारियकसंग । जनमत
ही निर्तहिं हँसहिं करहिं अनेकन रंग ॥ लोकबेद अरु शा
अरु बिरची बिधिकी रीति । ताहि खण्डि इमि प्रलयकर हो
बिबिध बिपरीति ॥ अर्क राहु अरु केतु ये हैं चित्रागत क्रू
ताते भरिहैं अवशि महि नर शोणितके पूर ॥ धूम्रकेतु है पु
पै भौम मघागत बक्र । लखि जीवहि श्रवणस्थ भो गहत
लबर चक्र ॥ उभै फालगुण पै करै अमल शनैश्चर देव । हो
महत उतपात निज भूपति याको भेव ॥ पूर्बभाद्रपद पै बिहि
परहि लखत भृगुदक्ष । ताते लहिहैं खेदबहु नृपसमूह युतपक्ष
धूम्रकेतु प्रज्वलित ह्वै बिलसहि ज्येष्ठामाहिं । नृपताते उतपा
आति ह्वैहै पुहुमीपाहिं ॥ शशि सूरहि स्वातिस्थ कहँ पीड़ि
हुगत तत्र । भेदि चक्र तिमि रोहिणिहि पीड़त नाशक छत्र
चक्र सर्बतोभद्रमें बिलसि मघा मधि भौम । पीड़त गुरु
श्रवनकहँ करता प्रलय असौम ॥ गुरु शनि साम्बतसरिक गी
गहि सुचक्र आसीन । बेधि बिशाखहि मुदित है करत अ
गुन पीन ॥ शशि सूरज यकबारही भये राहुसों ग्रस्त । ल
पक्षान्त त्रयोदशी मधिकृत प्रलय समस्त ॥ चित्रा स्वाती
सुमधि बसिकै राहु अमन्द । पीड़त कृतकहि भूपसो दा
दुःसह दन्द ॥ चारु त्रिछत्र सुचक्रमें प्रबल क्रूरग्रह सर्ब । पा
ग्रह कलशस्थहैं करता प्रलय अखर्ब ॥ चन्द्र सूर्य्यको ग्रह
भो एक मास में भूप । अवशि भयो चाहै बिघन असगुन
अनुरूप ॥ सोरठा ॥ दीरघ उलकापात तड़ितपात सम होतहै
छारवृष्टि कृतबात भूरिभयद डोलत अमित ॥ इमि बहुबिधि





घोर होत चण्ड असगुन सकल । ताते प्रलय अथोर होइहि
महिपै सुनहु नृप ॥ चौपाई ॥ इमि द्वैपायन मुनिसों सुनिकै । नृप
धृतराष्ट्र कहत भे गुनिकै ॥ तात कहे तुम शकुन निहारी । सो
हम राखे प्रथम बिचारी ॥ बन्धुबिरोध नाशको कारण । है सब
दिन सबर्ग संहारण ॥ पर इतनो गुणि साहस धरहीं । जेनर
लरि आयुधसों मरहीं ॥ ते ध्रुवबास स्वर्गको पावैं । कीर्त्तितासु
इत जगजन गावैं ॥ सुनि यह आत्मज नृपकी बानी । कहे बि-
चारि सो मुनि बिज्ञानी ॥ निजहित ज्ञाति वृन्दको मरिबो । है
जगमें अपयशको भरिबो ॥ निजकर सम्बन्धिनको बधिबो ।
है अमोघपातकको वृधिबो ॥ भयो तुम्हैं अनरथको करता ।
नृप यह राज्य धर्मयश हरता ॥ कालरूप भे सुवन तिहारे ।
कुलनाशक अवगुणसों भारे ॥ ताते कुलको रक्षणईछौ । शुचि
सुधर्म पुत्रन कहँ सीछौ ॥ राज्य युधिष्ठिर नृप कहँ देहु । जो वै
देहिं चाहिसो लेहु ॥ तासु अनुग ह्वै तुव सुतराजैं । मिटै सर्ब
अनरथ सुखसाजैं । नृपबाकज्ञ बाक्य सुनि ऐसो । कहो अनज्ञ
कहत है जैसो ॥ मोहत लोक स्वार्थहित मानो । लोकात्मक
हमहूं को जानो ॥ नहिं ममपुत्र कहो ममझानैं । धर्म अधर्म न
कछु अनुमानैं ॥ दोहा ॥ मोहिं आत्म कल्याण हित सदा आप
की आस । अब शुभ सूचक सगुन मुनि कहौ कहोतबब्यास ॥
अग्नि दक्षिणावर्त्त ह्वै बिमल बिधूम अनूप । ऊर्जित ह्वै आ-
हुति गहत सो जयदायक रूप ॥ और औरसों कछु कहैं तासु
अशुभ शुभअर्थ । यात्रामें फल करत हैं निज अनुरूप समर्थ॥
सनमुख बोलत बाकसो बरजत करत पयान । बोलै पाछे का-
कसो शुभसूचक सुखदान ॥ रूपशब्द रसयुत रहै जासु सुभट
गहिचाव । अवशि लहै हैं नृपति जय बुधि बलके अनुभाव ॥
होहिं अनुग घन बायु तौ सिद्ध होइ जयकार्य्य । इन्द्र धनुष
पीछू उवै सो सुजयद है आर्य्य ॥ होय अलपकी दीर्घ अति

सेना हे क्षितिपाल । रहैंहर्षयुत जासुभटसो जयलहै बिशाल
भागे कादर एकके भागत सिगरी सैन । फिरिसो सरितप्रव
सम रोके नेकु रुकैन ॥ कादरजन शतपांचसों पांचसुभटज
लेत । देव परायन नीतियुत नितजय लहै सचेत ॥ जो उपा
ते मिलत जय हैउत्तमजय तौन । मध्यम किये अधर्मछलक
अधम जय जौन ॥ सोरठा ॥ इमिकहिकै मुनि ब्यास गये बि
ह्वै कै स्वपद । नृपलै ऊबि उसांसघरी द्वैकलौं गुणि रहे ॥

इतिमहाभारतेभीष्मपर्वणिव्यासधृतराष्ट्रसम्बादोनामप्रथमोऽध्यायः॥

दोहा ॥ धीर साहसी भूपमणि नृपधृतराष्ट्र प्रवीन । संजय
इमि कहतभे पावनबचन अदीन ॥ चौपाई ॥ संजय जिहिमि
हितसबराजा । लरत मरत करि सदसद काजा ॥ तासु प्रमा
उदधिसह भाषो । सुनिबे को मममन अभिलाषो ॥ खण्डही
गिरिगण हैं जेते । तासु प्रमाण कहो हित हेते ॥ नदीनगर अ
देश सोहाये । यथा प्रमाण कहो मनभाये ॥ संजय कह्यो सु
नृपज्ञानी । मति अनुरूप कहत अनुमानी ॥ द्विबिध भूत ज
म अस्थावर । जंगम त्रिबिधकहत बकतावर ॥ अण्डज स्वेद
और जरायुज । तिनमेंश्रेष्ठ जरायुजनर द्विज ॥ चौदहभेदज
युज गणके । ग्राम्यसातअरुसातसुवनके ॥ सिंहब्याघ्रशूकरअ
बारण । ऋक्ष महिषकपि ये बनचारण ॥ नर हयगोखर खच्च
छागा । भेड़ि शान्तहे ग्राम्य बिभागा ॥ स्थावर पांचजाति
सुनिये । लतागुल्म बल्लीतरुगुनिये ॥ अरुत्वकसार सर्बतृण
नो । शीघ्र नाशगत बल्लीमानो ॥ इमिउनइस स्थावरजंगम
तिनमें पञ्चभूतकोसंगम ॥ चौबिसबरणसदृश इनसबसों
महिगायत्री सम तबसों ॥ महि मधि प्रगटि बिहरि महिपाह
होहिंनाश सिगरेमहिमाहीं ॥ ताते सर्बात्मकमहिपावनि । नृप
णके मन रुचिउपजावनि ॥ दोहा ॥ हैं सिगरे ऐश्वर्य्यसो गुण
हि युत ऐश्वर्य्य । याहीते महिहेतु ये लरत सकल नृप बर्य्य





पञ्चभूतमय भूमिपति हैंसिगरे जगतस्थ । नभ मारुतपावक
सलिल महि ये प्रभुमैं स्वस्थ ॥ महाराज क्षितिपालमणि क्रम
सों ये सम्पूर्ण । शब्द स्पर्शरुरूप रस गन्धसुगुण सों पूर्ण ।
…॥ शुद्ध शब्द मैं गगनवायु अस्पर्श शब्द मय । अग्निरूप
अस्पर्श शब्द मैं हैं हे धृतनय ॥ वारि शब्द अस्पर्शरूप रसमें
पटुजानत । शब्द रूप रस परसगन्ध मैं महि मुनि मानत ॥ हैं
ताते महि बहु गुणवती जग आधारवती महत । नृप अण्ड
ब्रह्म पर्य्यन्त सब इनसबमें इमि सब कहत ॥ दोहा ॥ इन सब
मधि सबमैं लसत भूमिब्यक्त परधान । और चारि जाने परत
नृप कीन्हे अनुमान ॥ पञ्चभूतमें सर्ब अरु हैं सबमें प्रभु एक ।
ह बिनु बूझे करत सब बहु बिवेक अबिवेक ॥ कञ्चन अरु
कटकादि सम नाम रूपको भेद । हैं नातरुसब ब्रह्ममें जानतशु-
द्ध अखेद ॥ कारणते प्रगटत सकल गगन आदि जिमि ईन ।
भूमि आदि सब होतहैं तिमि कारणमें लीन ॥ कवित्त ॥ कारणते
…मताते वायु ताते तेजहोत तासों होत जल तासों भूमि अव-
…तहैं । भूमि जल मधिजलतेजजल तेजमें सो वायुमेंत्योंवायु
…भमें सो कारणहीमें समातहै । ऐसो परपंच परमातमाको बि-
…चो मरीचिका समान बे प्रमाण जो बिभात है । रज्जुअहिस्वप्न
…की दशालों सांचो झूठो जौन महाराज ताकोई अताक्यों भा-
…क्यो जात है ॥ दोहा ॥ भूप बेधिकटिजाइ कोउ जो ब्रह्माण्ड महा-
…न । तौ तितहूं इमि लखिपरै किमिकहिये परमान ॥ परगुणि
…गणकसुजान जन करिकै तर्क प्रकर्ष । हे कीन्हें सिद्धान्तध्रुव
सुनिये नृपति सहर्ष ॥ नृप अचिन्त जो बस्तुहैं सो न तर्कसों
साध्य । बूझे निर्णयहार के हैं सो शतधा बाध्य ॥ मानत जिमि
आदरसमय निरखत बदनअनूप ॥ तिमिहम निजमनमेंलखत
सबप्रपंचको रूप ॥ ताते जम्बूद्वीपको कहियतु हैं ब्याख्यान ।
…थित जो लवणाब्धिसो सुनिये नृप सज्ञान ॥ द्वीप सुचक्राकार

यह तासु मध्यमेंभूप। मेरुशैल बसुकोण है कंचनमयो अनूप
चरणादोहा ॥ चौरासी चौरासी योजन अधऊरधसो पर्म। बिह
त तापै बिधि सुर ऋषिगण करता सरस सुधर्म ॥ दोहा ॥ उ
दिशिहि सुमेरुके नील शैल फिरि श्वेत । सबके उत्तर दि
शयल शृङ्गवान छबि देत ॥ दक्षिण दिशिताके निषध हेम
हिमवान । पूरब पाश्चिम समुदलों हैंते सकल महान ॥ बहु
योजन भूमिहै तिनके बीच सुजान । खण्ड सकलते चरत
पुण्य पुरुषमतिमान ॥ दक्षिण दिशि हिमवान के भरत ख
बिख्यात । उत्तर दिशि हिमवानके खण्डहैमवत तात ॥ हेम
औ निषधके मध्यखण्ड हरिबर्ष । तीनिखण्डये निषधके इ
सुनोसहर्ष ॥ खण्डइलावृत मध्यमें पार्श्वमेरुके भूप । उत्तरदि
है मेरुके श्वेतखण्ड शुभरूप ॥ चरणादोहा ॥ उतैंश्वेतगिरिके
ण्यकखण्डपरम रमणीय । शृङ्गवानके उतऐरावत खण्ड प
कमनीय ॥ खण्ड सुऐरावत अरुभारत नृपहैं धनुषाकार । च
कार भूमिके इत उत गिरिजा सदृश उदार ॥ पूरबदिशिहैं
के माल्यवानगिरिचारु । सैनगन्धमादन बिशद पश्चिमदि
उदारु ॥ इनके बिचहैं मेरुये परसे लवण समुद्र । नील नि
के मध्यये अतिरमणीय अक्षुद्र ॥ माल्यवानके पूरबदिशिमें
भद्रास्वनरेश । गन्धमादन सुगिरि के पश्चिम केतुमाल शु
देश ॥ उत्तरकुरु भद्रास्वअरु भरतखण्ड नृप मोर । केतुम
अरु खण्डये चारों चारों ओर ॥ चौपाई ॥ उत्तरदिशा
के पावन । कर्णिकारको बिपिन सोहावन ॥ बिलसैं तेहि
शम्भुगुसाईं । शिवा सहित शुभदानि सदाईं ॥ तहांमेरुते
मलउदारा । गिरीचारु सुरसरिकी धारा ॥ जाथर धसीधार
रिचारी । तहांचन्द्रमस ह्रदभोभारी ॥ निरखिधार सो आ
कारी । शङ्कर जटाजूटमेंधारी ॥ जटाजूटमेंधरि मुदछाये । क
हजार बर्षबिरमाये ॥ नृपति मेरुके दक्षिणआशा । हैकैला





प्रकर्ष प्रकाशा ॥ ताके उत्तरदिशि मनभावन । है मैनाकशैल
छबिछावन ॥ शैलहिरण्यश्रृंग ढिग ताके । हैमणिमयहै नृपबर
जाके ॥ ताकेनिकट बिन्दुसरनामा । हैसुसरोवर बरअभिरामा ॥
हैमबालुका शुचिरुचिपूरी । जोचहुँदिशि बहुमणिमय रूरी ॥
तहां भगीरथ शिवहि अराधे । सुरसरिहेत उग्रव्रत साधे ॥
उत्तर दिशिहवैगुप्त सुसरिता । प्रगटी दक्षिणओर सुचरिता ॥
जाथर यज्ञ अनेकन करिकै । लहीसिद्धि सुरपति ब्रतधरिकै ॥
ह्वैकै सातधार बरबरणी । धसी तीनिपुरमें अघहरणी ॥ सीता
नलिनी सिंधु सोहाई । जम्बूनदी पूतकर गाई ॥ दोहा ॥ अरु
वस्वोकसरा बिमल सरस्वती अभिराम । गङ्गासात प्रबाहये
गङ्गासात सुनाम ॥ हैपश्चिम दिशि मेरुके केतुमाल शुभदेश ।
पुण्य पुरुषतहँ बसतहैं कंचनबर्ण सुभेश ॥ सदाचार रत नारि
नर सुरगण सदृश अनूप । तिनको आयुर्बल बिशद अयुत
बर्षको भूप ॥ शैल गन्धमादन उपरि बिलसत सदा धनेश ।
राक्षस गुह्यक अप्सरन सहभूषे सोदेश ॥ शैल गन्धमादनहि
के बहुगिरि अवयव भूत । तिनपै बिलसत पुण्यजन पर्म धर्म
रत पूत ॥ सहस एकादशबर्षते जीवतहैं नरनारि । तेजपुंज
बलबीर्य्य में चरत सुसमपथ धारि ॥ राक्षसगण हिमवानपै
बिहरतसदा यथेष्ट। हेमकूटपर बिहरत सुगुह्यकगण गुणश्रेष्ट ॥
शैल निषध गोकर्णपै अहिगण करैं बिनोद। सदाश्वेतगिरिपै
असुर सुर बिहरैं लहिमोद ॥ रमैंसदा गिरिनिषधपै मोदत सब
गन्धर्ब । नील शैलपैरमतहैं बिदित ब्रह्मऋषि सर्ब ॥ शृंगवान
गिरिअमलपै बिलसैं अमर अखर्ब । भूप सप्तकुल शैलके कहे
नाम गुणसर्ब ॥ उत्तरदिशिमें मेरुके उत्तर कुरुजो देश । अमृत
तुल्य बरफल फरत तहँ बहुवृक्ष सुभेश ॥ इच्छित फलदायक
बिटप हैंतहँ कितक अनूप । क्षीरस्रव क्षीरी सुतरु हैंतहँ अग-
णित भूप ॥ भूषणस्रव अरु बसनस्रव हैं तहँ बिटप अमन्द

मणिसुबर्ण समभूमितहँ है हे नृपतिस्वछन्द ॥ नरच्युतह्वै सु
लोकते जन्मलेततहँ आय ।जनमत संगहि नारिनर धर्मशी
शुचिकाय ॥ बरधहिं क्रमसों पानकरि क्षीरी तरुको क्षीर। तुल
रूप बनशीलगुण सबक्षण सहचर धीर ॥ सहस इग्यारह ब
ते करि तहँ सुतप सप्रेम। तनतजि साथहि लहत हैं उत्तमप
कृतक्षेम ॥ भारुण्डा नामक बिहग तब निज चोंच पसारि
गहि तिनको तन देतहै गिरिकन्दरमें डारि ॥ पूरबपार्श्व सुमे
के देश अपूरबपर्म । अभिषेकिततहँ पूर्ण हो नृपभद्राश्व सु
र्म ॥ तहँ बिरचो भद्राश्वको भद्रशाल नवचारु । हैकालाम
द्रुममयो सुनिये भूप उदारु ॥ उन्नत योजन एकको तरुकाला
सुनाम । सदापुष्प फलयुत रहत तहँ अति अमल ललाम
तेज पुंज तहँनारिनर होतश्वेततनअक्ष । जीवतवर्ष हजारद
नादनृत्यमें दक्ष ॥ नित्य सुतरुकालाम्रको करिसुस्वादरसपान
सदातरुणते रहत हैं सुनिये नृपमतिमान ॥ हैं दक्षिण दि
मेरुके जम्बूवृक्षमहान । सर्बकामप्रद जाहिनित सेवतसिद्ध
जान ॥ एकसहस अरु एकशत योजन ऊंचो तौन । सह
अढ़ाई हाथसब ताकीशाखाजौन ॥ योगिक तासुप्रधानता
यह जम्बूद्वीप । है बिख्यात त्रिलोकमें सुनिये नृपकुलदीप
तासुसुफलके सुरसकी अनुपम नदी बिभाति । पश्चिम दि
ह्वैमेरुके उत्तर कुरु मधिजाति ॥ जीवतासु जल पान करिहो
कनक रुचिगात । क्षुधापिपासा जराश्रम तिनकेनिकटनजात
ताके जलके परसते कनकमयो सोदेश । जम्बूनद बिख्यात
तातें कनक सुभेश ॥ पूरबदिशि जोमेरुके माल्यवान है शैल
तासु शृङ्ग पै दिपत शिखि सम्बर्त्तक बरफैल ॥ प्रलय काल
करत सो भस्म चराचरसर्ब । सम्बर्त्तक सम और नहिं तेज
भरोअखर्ब ॥ माल्यवान के पार्श्वहैं शैलसुग्यारह और ।मा
ल्यवान ते सबहैं अवयव समकृतगौर ॥ च्युतह्वैके बिधिलो





तेजन्मत तहँ नरआय । पुण्यपुंज परसिद्धते चारु रजतरुचि
काय ॥ ऊरधरेताते तहां तपि तपिउग्र अमन्द । सो तनतजि
गहि अन्यतन पूरित परमानन्द ॥ ते सिगरे छाछठि सहस रबि
के सन्मुख जाय । रहि आगे अरपत अरघ सुनिये नृपसुखदा-
य ॥ रहि रहि तहँ छाछठि सहस बर्ष सर्ब शुचिरूप । लीनहो-
तहैं ब्रह्ममें क्रमसों सुनियेभूप ॥ सोरठा ॥ रमणकहै परजाय श्वेत
खण्डकोभूपमणि । शुद्धशुक्लशुचिकाय पुण्यपुरुषप्रगटत तहां ॥
एकसहस शतएक अरु शतार्द्ध नरअब्द मिति । जीवतते स-
बिबेक परममोदमें धर्मरत ॥ हंसा दोहा चरणा ॥ नील शैल अरु
गन्धमादन माल्यवान अरु नील । बर्षहिरण्मय तिनमधि रा-
जत बर्जित शूद्रसुभील ॥ रोला ॥ नदीहैता बर्षमधि हैरण्वती
अभिराम । तहां उत्तम खगनसह खगराज करतआराम ॥ पर-
म उत्तम पुण्यकृतनर करतहैं तहँ बास । शतएकादश अर्द्धश-
त अर्द्धाय तत्र सुपास ॥ शैल उत्तमशृंगवत पै शृंगमणिमय
तीनि । गुहापरम बिचित्रतामधिबसति देवीईनि ॥ शाण्डिली
शुभनाम ताको सुनहु नृपति प्रवीन । जाहि सुमिरे रहति जन
के सर्ब सिद्धिअधीन ॥ बर्ष ऐरावत उतैहैं शृङ्गबनके भूप । लव-
णनिधि तटलौंन तहँ रबि तपत तेज स्वरूप ॥ बरमनोहरस्व-
च्छशीतल रहत नित सो देश । करतआवृत ताहि मानो सहन-
क्षत्रनिशेश ॥जिताहार जितेंद्रिनर तहँ अमरपुरते आय। सह-
सतेरह बर्षबसि फिरि जात उततजिकाय ॥ क्षीरनिधिके तीर
उत्तर बसत श्रीभगवान। जासुईहामेंजुमाया मयो सबैमहान ॥
दोहा ॥ बिरचि बिनाशत रचत इमि लोकअनेकन जौन । सब
में सबथर सर्ब बिद है व्यापक प्रभु तौन ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिभूगोलबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा ॥ संजयसों इमिसुनि कहे नृप धृतराष्ट्र सुजान । अब
शुभ भारत बर्षको संजयकहोप्रमान ॥ संजयउवाच ॥ हैंनृप भार-

त बर्षमें शैलश्रेष्ठ शुचिसात । प्रथमनाम तिनके कहैं मनदै
नियै तात ॥ बिन्ध्यसु मलयमहिन्द्र अरुऋक्षवान अभिराम
पारिपात्र अरु सह्यगिरि शक्तिवान छबि धाम ॥ ढिगवर्त्ती ति
के शयलहैं लघुदीर्घ अनेक । गुप्तप्रगट नामक अमलसुनि
नृप साबिबेक ॥ अब कहियतुहैं नदिनके नामसुनो क्षितिकन्त
हैं जितनी यहि बर्षमें पानीभरी अनन्त ॥ कबित्त ॥ गंगा गोम
ती औ नदी गोदावरी गौतमीहै गण्डकऔ गौरी महागौ
अनुमानियै । त्रिदिवा औ दुर्गावती देशी देविका औदेवस्मृ
चुलका कपिंजला है जानियै । काबेरी सुकुंडली कुवीराकर्मना
शा कहौ कोसा करणा औकरतोया उरआनियै । कृशधाराकौ
शिकी करीषिणी औ कृमिकपी कपिला कुवारी कुशचीराकृत
मानियै ॥ अपरं ॥ चन्द्रभागा चंदनाऔ चित्रवाहा चित्रसेन
चन्द्रमा औ चर्मण्वती चित्ररथा सहियै । बेणातुंगबेणा कृष्ण
बेणा बिदिसा बितस्ता बाणीबीरा बिनदी बराननी है सहियै
बेत्रवती वृहती औ ब्राह्मनदी ब्रह्ममेध्या ब्राह्मणीऔ बिक
औ बैतरणी लहियै । बाहुदा दृषद्वती बिपापाऔ विपाशानद
बेदाश्वास वृषभा औवृषसाऊ कहियै ॥ अपरं ॥ शोणसुप्रयोग
औसरस्वती सुधामासिंधु सरावली शतवली शतकुम्भाकहैं
गुनि । सैब्यासरयूऔशीघ्रा सुनसात्रिसामा नदीताम्रा तमस
औस्थूल बालुकासुमोदा सुनि । पयस्वनि पूर्वापुरमालिनी औ
पासासिनी पिंजलापबित्रा अरु पालावती सुन्धुनि । पुरावत
प्रवराऔ पिच्छलाऔ चित्रपलाइच्छलाऔ इरावती भूपज
हिसवैंमुनि ॥ अपरं ॥ नर्मदानिचिन्त्याऔनिबाराऔनिरामभूप
भरद्वाजीभीमा भीमरथीभाखौं लहीहै । मकरी महेन्द्रामुक्तवत
मानवी मनुष्णा मन्दाकिनी मारिषा औ मनगा सुहदीहै । औ
हित अनंगा ओघवती अच्छिदा अशिक्री हेमाहस्ती सो
हरिस्रवा बरसदी है । ऋषिकुल्या राजनी रहस्या रोहो र





चित्रा रिन्द लोहितारणी औ लोहितासानदीहै ॥ दोहा ॥ यो
तीरथाजांबूनदी यमुनाजबछाभूप । और धूतपापानदीअरुधूत-
वती अनूप ॥ मित्रशिला बहुलानदी नदीशतद्रूस्वक्ष । कानयं
ढीधूतवती नदीरापती अक्ष ॥ बिश्वामित्री प्रभृतियेबरणी
नदीनरेश । अबकहियतुहैं हैं जितक भरतखण्डमेंदेश ॥ कबित्त ॥
कुरु कुन्त्य कान्तिकाहै कोशल कोसाध्य काश करुष कलिंगऔ
करी तप सुभेशहै । कुक्करशलप कालताप कुट्टकेकयहैं काश्मीर
कन्यक औकुन्तलसुकेशहै । कारककुलिन्द कुरुबर्णक करीषहैं
कुशाबिम्ब कालवऔकरकाबिशेशहैं । केरलकिरातकुकुरांगरऔ
कोकणहैं काबिलकमायूं औ कुशस्थ शुभदेशहै ॥ अपरं ॥ शाल्व
शूरसेनसिंधुसउशल्य सोतरहैंशिखर सुदेष्णसक सशिकसुथानै
शैलऔसुकन्द औस्वराष्ट्राऔसकूल्लोमा सउवीरासयरिन्ध
सौहृदबखानैंहैं । सिद्धऔसुमल्लिक औशाल्वसेनऔसमङ्गसुनय
सबाटऔ सकृद्ग्रह सुजानैहैं । जाङ्गलजठरअरु यामुनयमनद
वाजिअरत्वजकहतसब सुबिधिसयानैहैं ॥ अपरं ॥ परकाशप्रह्लाद
पांचालऔपुलिंदप्रति मत्स्यपत्यकर परांतपरसीकहैं । मालाम-
ह्यमंदक मगधमद्र सुमाद्रेय मल्वराष्ट्रमालव औमल्लज सुनी
कहैं ॥ मेरुभूत मेकल औमधमत्त मल्लअरु मल्लव औमहिष
मलीकहैं । मूषक माहेयऔमसीर म्लेच्छदेश भंजु महाराज
गुनियै मकारमें अतिकहैं ॥ अपरं ॥ बौधबक्रबक्रातपबंगऔबिदर्भ
भद्र बाह्लीक बटधान बानव बिख्यातहैं । बहुबाद्य बातज बिदेह
बाणा पर्व देश बैदाह बर्बर बन बासिक बिभातहैं । बेगस बि-
कल्प बिध्य बुल्लिका औबल्कल है परतङ्ग पार्वतसुदेश अव-
दातहैं । चेदि चर्ममण्डल औचीन महाचीन चोलाईजिका ये
नामैंचारौ चाहे जातहैं ॥ अपरं ॥ द्रविण दशार्ण दुर्ग दर्शक
औ द्रवीद्रव दाम्न दशमालिक औ भोज भूषिका अमन्द ।
बकल उपाकृत उपावृत अपरकुन्त अधिराज्य अश्वक औ

अपबह सुहै सुछन्द । आहिक अभीर अंग अपरान्त अरु
है आनरत अभ्र अमीसार औद्र निरदन्द । अमलअलि
औ अवन्त श्रीनहूणदेश रूपबाह ऋषिकार मन सुनो मो
कन्द ॥ अपरं ॥ नैकपृष्ठ निष्कुट निषाद नभकानन है गोम
निषध और गोपराष्ट है अनूप । गुण गान्धार गोपपालक
गच्छदेश खाशीर खण्ड कच्छ सुकांभोज शुभरूप । तिलम
तीरगस्त्र औ त्रिगर्त्त ताम्रलिप्त स्तन बालायतन रचितत
यज्ञजूप । एतेदेश विशद बिख्यात तिन्हैं कहैं जानि कहि
कहांलौं अब देशसिगरे हे भूप ॥ दोहा ॥ संजयसों फिरि
कहे संजय कहोप्रमान । सर्बद्वीप सबसमुद्रके सुनि बोलोमति
मान ॥ योजन अष्टादशसहस अरु षटशत मित भूप । जाहि
जम्बूद्वीपहै अतिरमणीय अनूप ॥ तासुद्विगुणहै लवणनि
नृप ताके चहुंओर । तितनो शाकद्वीपउत पूरितप्रभा अथोर
हैंनृपशाकद्वीपमें सातशैल अभिराम । खण्डसातअरु आप
तिनके सुनियेनाम ॥ प्रथम मेरु फिरि मलयगिरि फिरि ज
धारा शैल । रैवत श्यामक दुर्मफिरि केशरशैल सुफैल ॥ म
शैलपै बसतघन जलधारातेबारि । लैबरषत हैं बिश्वमय प्र
ईहा अनुसारि ॥ केशरिगिरिपै करतहैं मारुत सकल बिहार
हैं आयत येसर्बगिरि पश्चिम पूर्बउदार ॥ नृपहैंतिनके मध्य
सातखण्डछबिधाम । महामेरु तबजलदफिरि कुसुदोत्तरअ
राम ॥ मेरुमलय जलधारके इतये खण्डसुग्राम । खण्डउतेज
धारके हैंसुकुमार सुनाम ॥ रैवतगिरिके उतैहैं खण्डचारुकौमा
खण्डउतै गिरिश्यामके मणिकाञ्चन गुणगार ॥ हैंगिरिकेश
उतै मौदाकी वरखण्ड । क्रमसों तेगिरि खण्डहैं द्विगुण द्विगु
उतचण्ड ॥ हैजम्बू तरुते द्विगुण तहां शाकतरुपर्म । तातें
कद्वीपजो सेवैंताहिसुधर्म ॥ बिलसैं चारोंबर्ण तहँ देवतुल्य
ऐन । जरारोग असु मृत्युकी भयकछु तिनकहँहैन ॥ सुकुमा





अरु मणि जलानदी कुमारी यत्र । सीता सबिनी नदीहै चक्षु
बर्द्धिनी तत्र ॥ महानदी सह बहु नदी कहैं कहांलौं सर्ब ।
देश भेद तिनके न कहिसकैं देव गन्धर्ब ॥ है उत शाकद्वीपते
द्विगुणित क्षीरसमुद्र । तितनोई कुशद्वीप उत जहँ कुश यूप
अक्षुद्र ॥ भूपति हैं कुशद्वीपमें अधिकारी षटशैल । तिनके इत
उत मध्यमें सातखण्ड बरफैल ॥ तहां देव गन्धर्बसह बिलसत
प्रजा प्रवीन । सदाचार रत ज्ञान में सुरगण सदृश अहीन ॥
घृत दधि सुरा सुशर्करा जलनिधिके मधिभूप । शाल्मल क्रौंच
प्लक्ष अरु पुष्करद्वीप अनूप ॥ क्रमते द्विगुणित सर्बपै तिमि
गिरिखण्ड समेत । पुण्यपुरुषमय लसतहैं सुनिये ज्ञाननिकेत ॥
नृपशाल्मलद्वीपमें शाल्मलवृक्ष प्रधान । क्रौंचशैल है क्रौंच
सुनिये ज्ञान निधान ॥ प्लक्षद्वीपमें नृपतिहै प्लक्षवृक्ष बिख्यात ।
नामी पुष्करद्वीप में पुष्कर शैल बिभात ॥ भूपचतुर्दल कम-
लसम जम्बूद्वीपललाम । योजन तैंतिससहस है त्यहिलेखे में
व्याम ॥ त्यहिधारे बसु ओरते बसु दिग्गजबलधाम । सार्ब-
भौम सुप्रतीक अरु अंजन बावननाम ॥ पुष्पदन्त ऐरावतौ
पुण्डरीक बलवन्त । कुमुद आठ ये गजधरे महिबलबीर्य अ-
नन्त ॥ इतै कर्मकरि जीव सब सुनो बुद्धिमत भूप । क्रमते भो-
गत द्वीप सब निजकृत के अनुरूप ॥ एक ग्रामसम द्वीपसब
पालत बिधि गुणवान । न्यामक दायक कर्मफल ब्यापक ईश
महान ॥ सदाचाररत पुरुष कहँ लभ्य सर्बपद भूप । दुराचार
रत जीवते लहैं निरयको कूप ॥ अब रबि शशि अरु राहुको
सुनो भूप आख्यान । पृथक् पृथक् मैं कहतहौं थिरकरि मनहिं
सुजान ॥ द्वैशतकम षटदश अरु तीस सुसहस कोशको भूप ।
थौल्यगर्भ अरु मण्डल जानो रबिको उग्रअनूप ॥ शतकम षट
सहस्र एकादश तैंतिससहस नरेश । थौल्यगर्भ अरु मण्डल
जानो शशिको परमसुभेश ॥ मण्डल छत्तिस सहसको षट

सहस्रको थूल । गर्भ सुद्वादश सहसको तमको जानु अतूल
योजन छत्तिस सहस है शशिन्तदको परिवेष । योजन द्वाद
सहस है बिस्तर ब्याम बिशेष ॥ हे नृप योजन षटसहस ता
गुर्बता पूर । छादति छाया जासुलहि शशि सूरहि युतनू
बैशम्पायनउबाच ॥ सोरठा ॥ संजय यहि बिधि भाखि क्षितिप्रमा
धृतराष्ट्रसों । हियरे आनँदराखि गये बिदाह्वै समर महि॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्बणिभूगोलबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३

बैशम्पायनउबाच ॥ दोहा ॥ बध भीषमको निरखिकै संजयनृप
आय । करि प्रणाम इमि कहत भे दुसहदुःखसों छाय ॥ चौपाई
नृपजूझे भीषम रणचारी । धीर धुरीण बिदित धनुधारी ॥
रुषसिंह जो परदल जेता । गङ्गासुत महिमण्डल नेता ॥ जे
बरबीर धीर धनु धरिकै । नहिं हार्‌यो भृगुपति सों लरिकै
जाकेबल तुव सुत मुदलीन्हे । दुसहबैर पांडवसा कीन्हे ॥ ता
कहँ हांकि शिखण्डी मारे । रहे लखत सब सुवन तिहारे ॥ जे
निजबल परदल बल खोयो । सो अब शरशय्या पै सोयो
ह्वैबे योग न हो जो कबहूं । सो अनरथ देखो अब सबहूं
कारण याको मंत्र तिहारो । करहु कृपाके रिसि हियधारो ॥ ते
बीर्य्यनय धर्म अतुलको । रविभा अस्त आजु कुरुकुलको
दश दिनराति रक्षि तुवसेना । हतिअर्बुद परभट जगजेना
छिन्न मूल गुरु तरुसम गिरिकै । सोये शर शय्यापै थिरिकै
सुनि ये बचन मर्मभिद शरसे । अन्धभूप करुणा सों सरसे
शोकाकुलह्वै बोले बानी । आरत करुणारस सों सानी ॥ संज
शक्रोपम कुलनायक । किमि जूझो जगजैन सहायक ॥ के
रहे संग ताक्षणमें । के थिररहे भगेकेरणमें ॥ रविसम भीष्म
पर तम नाशत । रोक्यो कौननसे संभाषत ॥ हे कृप द्रोण
आछत भीषम । किमि भेनिधन शक्रसम भीषम ॥ जामदग्नि
कहँ जीत्यो जोई । किमि शिखण्डिसों हार्‌यो सोई ॥ याक्ष





गिरे भीष्मभट रथते । तब किमि भे ममसुत अनरथते ॥ सो
सब संजय गोइ न राखो । पृथक पृथक अब सादर भाखो ॥
दोहा ॥ भीष्म सत्व बोहित बिपद के अधेय ममपुत्र । ताहि बि-
ना अब ते सबै कहा करेंगे कुत्र ॥ भूप सहस्रनि एक तेहि का-
शीपुर में जीति । ले आये मम जननि कहँ जो स्वभ्रातृके प्री-
ति ॥ दनुज दैत्यके नाशहित सुरपति जासु सहाय । चाहत हैं
ते भीष्म किमि जूझे कहो बुझाय ॥ सोरठा ॥ ममसेनायुत चारि
भई मरे ते भीष्मके । बिना नाथकी नारि गोपबिना गौ यूथ
जिमि ॥ उपलहुते अधिकाय कठिन भयो ममहृदयअब । भीष्म
मरण सुनिहाय संजयजो दरकत नहीं ॥ चौपाई ॥ कर्म कियेको
फलमति बिगरे । लहन चहत अब ममसुत सिगरे ॥ तबजे
शठजूवामें जीते । अबतेहारि लहत मतिरीते ॥ भीष्म मरण
सुनिमम मनभाई । गहत न धीरज शोकबिहाई ॥ पुत्र मरण
को संशय भारी । भयो हमेंअब लेहुबिचारी ॥ अबतुम युद्ध
ब्यवस्था कहहू । ममअघ समुझि मौनमति रहहू ॥ सुनिधृत-
राष्ट्र भूपकी बानी । कहतभये संजय बिज्ञानी ॥ ब्यासहि बन्दि
कहें सुनुराजा । युद्ध ब्यवस्था सहित समाजा ॥ दुर्योधन यो-
धन सँगलीन्हें । दुःशासन कहँ शासन दीन्हें ॥ दुःशासन रथ
सुभट सजावो । नृप समूह कहँ शीघ्र बुलावो ॥ लैसंग सुभट
भूपगण दक्षण । हेकरतब्य भीष्मकोरक्षण ॥ हैं इमि भाषें भी-
ष्म सुजाना । हम शिखण्डिपै तजब न बाना ॥ वहहैं प्रथम
युवति हमजाने । तापैं तजब न शस्त्रअमाने ॥ बिनुमारे ह्वै
निडर शिखण्डी । तजिहि भीष्मपै शक्ति प्रचण्डी ॥ ताते नृप
न सङ्गलै हमको । रक्षितब्य है निति भीष्मको ॥ भीष्मकुशल
तौ जयमम करमें । बिना भीष्मकछु बनिहि न फरमें ॥ हमसब
कहँ तौ इतनो कारय । करिबो बध शिखण्डिको आरय ॥ औ-
रहि बधि भीषम जयलेहें । सार्बभौम पदहमकहँ देहें ॥ ताते

कहि प्रयत्न सब कोई। बधेहु शिखण्डिहि संशय गोई ॥ दहिने पीछे बायें आगे। रहिरक्षेहु भीष्महिभयत्यागे॥ बिनुराखे सिंहहि शशा मारहि । तौयहि बनमें सुचित बिहारहि ॥ दोहा ॥ सुभट उत्तमौ जासुदल दक्षिण दिशि रहि बीर । रक्षत पार्थहि बाम दिशि युधामन्यु रणधीर ॥ रक्षतपार्थ शिखण्डिकहँ अभय भी- ष्मसों तौन। ताको बधिबो कठिन है है यह शोच अगौन॥ सोरठा ॥ इतनेहीमें भूप बीती तौन बिभावरी । करि नितकर्म अनूप लगेसजनभट दुहुँ दिशा ॥ चौपाई ॥ सजहु सजहु रथ भट धनुधारी। भयो शब्द दुहुँदलमें भारी ॥ बाजे दुन्दुभिशंख अनेका । गहे शस्त्र सब सुभट सटेका ॥ रथीगजी हयसादी योधा। सुभट पदाती धीर सक्रोधा ॥ सजिसजिभे जिमि दुहुँ दिशिठाढ़े। भरे बीररस अमरष बाढ़े ॥ हयरथ गजगणमणि सुबरणसों । भूष दुहुँदिशिके सुबरणसों ॥ आयुध भूषणबसन सोहाये। मणि सुबरणमयसो भटभाये ॥ रत्नअमौलिक मयक मनीया । मुकुट छत्र युत नृप रमणीया ॥ चारु सुतड़ित मेघ सम सोहै। रणमण्डल सुखमासोंपोहै ॥ शाल्व जयद्रथ शकुनि नरेशा । जयत्सेन अनुबिन्दु सुभेशा ॥ बिन्दु श्रुतायुध अरु कृतबरमा । नृपति सुदक्षिण सरस सुधर्मा ॥ भूपबृहद्बल येदश राजा। और भूपगण सहित समाजा ॥ दश अक्षौहिणि सेना साजे । थिरि भीषमके चहुंदिशि राजे ॥ अक्षौहिणि दलसह बलभारे । रहे निकट सब सुवन तिहारे ॥ रजतमये सितहत युतरथपै । राजे भीष्म मध्यरण पथपै ॥ धारे श्वेत बचन तय गामी। गहे सर्ब आयुध गुणनामी ॥ सैन मध्य शोभितभेकैसे उडुगण मध्य राकापति जैसे ॥ दोहा ॥ सहित एकादश क्षौहिणी हैतुव सुतहे भूप । हैं सह सात अक्षौहिणी पाण्डव नृपति अनूप ॥ निज सैनिक क्षत्रियन कहँ भीषम निकट बुलाय।क हतभये इमि धर्म बिद क्षत्रधर्म समुझाय॥ समर स्वर्गको द्वा





है क्षत्रिनको सुखदाय। खुल्यो तौन अब शुद्धह्वै बसौ स्वर्गमें जाय॥ रोग ग्रस्थ ह्वैकै मरब क्षत्रिहि परम अधर्म । रणमें सन्मुख शस्त्रसों मरिबो सरस सुकर्म ॥ भीषमके ये बचन सुनि ह्वैप्रसन्न भट सर्ब । निजनिज यूथनि जायकै बिलसत भये अखर्ब ॥ इर्षा करिकै भीष्मसों करण सहित परिवार । भये निरायुध शस्त्र तजि परिहरियुद्ध बिहार ॥ पद्म बर्ण अरुसैब्य नृप चित्रसेन पुर मित्र । भूरिश्रवा सद्रोण सुत रक्षत चक्र प- वित्र ॥ नृपतिक्षेम धन्वा प्रबल शल्य द्रोण कृत बीर । रक्षक सेना सर्बके हैं नियमित रणधीर ॥ केतुमान क्षितिपाल अरु अरु भगदत्त नरेश। नृपति बिन्द अनुबिन्द ये हैं गजरथ शुभ भेश ॥ सोरठा ॥ द्रोण द्रोणसुत दक्ष कृपाचार्य बाह्लीक ये। बि- रचतभये सपक्ष ब्यूहसर्ब तो मुख बिशद ॥ चौपाई ॥ सहसेना सबसुवन तिहारे। हैं रक्षत भीष्महि गलभारे ॥ रथकेचक्रचरण हय गनके । तिनके रक्षक भट दृढ़ मनके ॥ साठिलाख हैं बीर पदाती । निजदल रक्षक परदल घाती ॥ कै यकलाख सुभट पदचारी। आगेचले खड्ग धनुधारी ॥ यहिबिधि निजदल गौ- रव सुनिकै । नृपधृतराष्ट्र कहतभे गुनिकै ॥ एकादश अक्षौहि- णिसेना । मखि मम पुत्रनकी जगजेना ॥ किमि पांडव चढ़ि सन्मुख आये । लघु सेनापति भीति न पाये ॥ सो कहि संजय संशय नाषो। मोमन सुनिबेको अभिलाषो ॥ सुनि संजय बोले सुनुराजा। धर्मज लखितुव सैनसमाजा॥ कहे धनंजयसों सुनि लीजै । बचनबृहस्पतिकोसुधिकीजै ॥ भरेएकमतसंगतिकरिकै। तौजीतैंलघु बहुसोंलरिकै ॥ ममदललघु परदलबहुभाई। ताते लीजैब्यूहबनाई ॥ अर्जुनकहेभूपअबरेखो। बज्रब्यूहहमाबिरच- तदेखो॥ बज्रपाणि जेहि निरमितकीन्हें। परदलदुखद मोहिंसो दीन्हें ॥ भीमसेनबरबलभटमर्दन। अतुलितबीरमेघसमनर्दन॥ गदापाणि बिलसै रहि आगे । जेहिलखि दुरै शत्रुभयपागे ॥

असको जो जियलोभ गँवाइहि । भीमसेनके सनमुख आइहि॥
दोहा ॥ इमि कहि रचना ब्यूहकी कीन्हें अर्जुन धीर । महाराज
सुनि लीजिये जिमि राखे भटबीर ॥ कबित्त ॥ आगे भीमसेन
तब धृष्टद्युम्न सहसैन भीमके उभैदिशि हेमाद्री सुतबलधाम।
पृष्ठरक्ष तिनके बिराट अरु धृष्टकेतु नायक अक्षौहिणीके अम-
नैत अभिराम । तिनकेहे रक्षक सुभद्रा द्रौपदीके सुत तब है
शिखण्डी सह पार्थ अश्वगुण ग्राम । पाश्र्व रक्षपारथके युधा-
मन्यु उत्तमौजा पृष्ठरक्ष युयुधान भूपति बिदित नाम ॥ अपरं॥
चेकितान यज्ञसेन द्रुपदसपुत्रबर्ग और भूपसिगरेप्रवीण अस्त्र
कलमें । रक्षत चहुं दिशिसों सैन चारुचढ़ै चाव चितमें रहेहे
चाहि जीतिलीबो पलमें । आयुत प्रमत्तमें जुमैगलके मध्यरहे
महाराज धर्मराज राजि मध्य थलमें । ऐसो बांधि सर्बतोबदन
बज्रब्यूह चल्यो पाण्डव नरिन्द दैनगारे निज दलमें ॥ दोहा॥
धृष्टद्युम्न पांचालपति सेनापति हेभूप । सबपै शासन कृतउचित
सर्बस्वबित शुभरूप ॥ नृपफाल्गुनके केतुपैआपुमहाकपिआय।
भयेबिराजत जयद प्रभु मङ्गल कृतसुखदाय ॥ ताक्षण बहुअ-
शकुनभये कहे पूर्वजिमिब्यास । अवशिभयो चाहै अनर्थ किये
कर्मकेआस ॥ कबित्त ॥ बाह्लीक शलऔ अम्बष्ठसिंधु सेनापति
अनुगामी द्रौणकेहे पृष्ठरक्षचाहैचैन । भूरिश्रवा रिपुंजय मित्र
सह तुवपुत्र मध्यगत भीषमके रक्षकहे सहसैन । शाल्वमत्स्य
केकयके पतिसह कृपाचार्य्य पाहैंदल उत्तरदिशामेंरहिबलऐन।
यवन किरातशाक पलवह संसप्तक ये दक्षिणदिशामें रहिरक्षक
हेजगजैन॥ अपरं ॥ भूपतुवसैनमें हैंमैगल प्रमत्तलाख प्रतिनाग
शतरथ रथप्रतिशतबाजि । प्रतिबाजिनियममें धनुर्द्धरहेदशदश
तिन प्रतिशत असिचर्मधारी रहेराजि । ऐसोब्यूह बांधिबीर
भीषम बिदित धीर धरे बीररसभे बिभातदै नगारेगाजि । साफ
जंग जीतिबेको सिगरे सुभटशूर साहसी सराहे सावधानसोहे





त्र साजि ॥ दोहा ॥ तुव पुत्रनको वृहतदल देखि युधिष्ठिर
प । चिन्तितह्वैकै पार्थसों बोलेबचनअनूप ॥ दुर्योधनकोवृह-
दल प्रबल सर्बभटजूह । शास्त्ररीतिसों भीष्मदृढ़ ब्यूहरचे
रिऊह ॥ इनसों जयपैबोसुनो मोकहँ कठिनलखात । सोसुनि
ले पार्थइमि मतिभय कीजैतात ॥ जासुसहायी कृष्ण प्रभु
वयोनि भगवान । जयलहिबेको हेतते संजयकह्यो सुजान॥
रि असंख्य अतिप्रबलभट दानवदैत्य अमान । लरेजबैतब
भुकृपा तेजीते मघवान ॥ तातेजयके लहनको संशय तजो
श । कृष्णचन्द्रकी कृपाते निजजय लहब सुभेश ॥ सोरठा ॥
ति अर्जुनके बैन नृपति युधिष्ठिर शंकतजि । प्रभुहिनौमिल-
चैन लखि निजदल मोदितभये ॥ इतनेमेंभगवान अर्जुनके
त हेतुगुणि । कहेसुनो मतिमान दुर्गाकी अस्तुतिकरो ॥
करी ॥ सुनिनिदेश प्रभुको हितजानि । हयतेउतरिपार्थ अनु-
नि॥ शुचिह्वैध्यायदेविकेपाय । अस्तुतिकिये भूरिसुखदाय ॥
मोदेविदुर्गे यशदानि । बिन्ध्य निवासिनि आनँदखानि ॥ जय
शिकि कात्यायनि कालि । जयशाकम्भरि कालिकरालि ॥
ण सहोदरि जयअसुरारि । जयतिचण्डि चामुण्डि कुमारि॥
द्रकालिजय जयतिकपालि । खड्गशूल धारिणि शिरमालि॥
यमाया श्रीह्री श्रीजगदम्बे । सन्ध्याप्रभा सर्ब अवलम्बे ॥
पुष्टि धृतिदीप्ति महानि । बिद्यानिद्रा क्षमा सुजानि ॥ जय
वित्री स्वाहाकारा । जयजग प्रभवे जगदाधारा ॥ जयतिब्र-
विये बरदानि । कैटभनाशिनि जयतिभवानि ॥ जयनिशुम्भ
दिनि बिहानि । कृष्णे अष्टभुजे कल्यानि ॥ कष्टबिदारिणि म-
दानि । सुमिरतनाम लहत जयखानि ॥ जयप्रदे जयबन्दौं
हिं । दीजैसुयश कृपाकरि मोहिं ॥ सुनिअस्तुति करुणाकी
न । अन्तरिक्ष रहिबोलीबैन ॥ थोरेदिनमें लहिजयपर्म । महि
लन करिहौ युतधर्म ॥ सुनिकै अर्जुन लहि अतिचैन । रथ

चढ़ि राजे परदलजैन ॥ दोहा ॥ पाण्डवके कल्याणको
सबबिधिपुष्ट । जासुसहायी कृष्णप्रभु निरखि भक्तसंतुष्ट ॥
कृष्ण अरु व्यासके अरु नारदकेबैन । नहिंमाने तवसुत
जयलैसँग बहुसैन ॥ सोरठा ॥ सुनि संजयके बैननृप धृत
महीपमणि । चित्तमें चिन्तिअचैन युद्धचरित सुनिबोचहै ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्बणिचमूसमागमबर्णनोनामचतुर्थोऽ

दोहा ॥ परब्रह्मपरमातमा विश्वयोनिभगवान । केकामद
गुणिगुणत गीताज्ञान निधान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्मक्षेत्र कुरु
में युद्धोत्सुक बरबीर । मामकपांडव जुटिकहा कियेकहौ हं
संजयउवाच ॥ व्यूहित पांडवकीचमू लखिदुर्योधनराय । जाय
आचार्यके कहतभये समुझाय ॥ यहपांडवको महतदल
खो हे मतिमान । द्रुपदपुत्रतवशिष्यसों व्यूहित सहितविध
चौपाई ॥ यामें भीमार्जुन सम युधिमें । हैंबिराट सात्वकि गुरु
धिमें ॥ चेकितान अरु द्रुपद नरेशा । कुन्तिभोजअरु सब
भेशा ॥ युधामन्यु काशीपति राजा । उतमौजा अभिमन्यु
साजा ॥ सुवनद्रौपदीके रणधीरा । अबसुनिये मामकबरवी
आपु भीष्मअरु अश्वत्थामा । कर्ण बिकर्ण शल्य बरसाम
भूरिश्रवा आदि रणचारी । हैंममहितकृत बहुभटभारी ॥
सकेमम बरदल घेरी । ममभट घेरिसकैं चहुंफेरी ॥ पर
जहँ नियमित भट जोई । तिमिरहि रक्षइ भीष्माहिं सोई ॥
इतनेमें भीष्म अकम्पन । निजदल हर्षन परदल शंकन ॥
बजावतभे रणचारी । दुर्योधनहिं सशंक निहारी ॥ दु
आदि बाद्यतिहि क्षनमें । बजेअसंख्यसु सैनसदनमें ॥ त
हृषीकेश छबिछाये । पांचजन्यशुभ शंख बजाये ॥ पौंड्र
कहँ भीम बजाये । देवदत्त कहँ पार्थ सोहाये ॥ शंख अ
बिजय कहँ चावन । लगे युधिष्ठिर भूप बजावन । शंख
षहि नकुल प्रियम्बद । सहदेव मणिपुष्पकहि जयम





रहु ते तहँ नरपति जेते । शंख बजावत भेसबतेते ॥ दोहा ॥
हाराज नभभूमिलों सहित कोणचहुँ ओर । पूरितभो तेहि
ण तहां दुःसह सहअति घोर ॥ कहो पार्थ तब कृष्णसोंमम
शीघ्र बढ़ाय । उभय सैनके मध्यमें थापितकरो सचाय ॥
रखोमें वहिसैनमें केकेभटबरबीर । मोसों लरिबे योग्यहैं यु-
त्सुकरणधीर ॥ सोसुनिकेशव हांकिरथ सैनसन्धिमधिजाय ।
हो लखौ परदल सुभट करतायुद्धसचाय ॥ रोला ॥ तहांभ्राता
तामह पितृब्य पुत्रन देखि । सार सम्बन्धी श्वशुर अरुसखा
हृदन पेखि ॥ निरखि मातुल मातुलेयन भागिने मनलेखि ।
त्र गुरु गुरुसुतन लखि इमि कहतभे अवरेखि ॥ स्वजनस-
न्धीस्वबन्धु स्वबर्ग येजन सर्व । युद्धहितजे खरे सन्मुखशस्त्र
णिअखर्व ॥ इन्हें लखि ममहृदयमें अति होत करुणा तात ।
न सूखत कण्ठ कितकै होतकम्पित गात ॥ मोहवशमोमन
ो नाहिं छोह छांड़ों जात । करबहम केहिभांति इनपै कठिन
युध पात ॥ राज्यसुख ऐश्वर्य जयकी हमैंबांछा नाहिं । मा-
न्धु निबन्धु कैबो उचितनहिं महि माहिं ॥ जासुसुख हित
ज्यचाहत तिन्हैं निजकरमारि । लहब कौन अपूर्बसुख महि
न्धुहीन निहारि ॥ बन्धुगण बधबंश छेदन पितृकर्मबिनास ।
प्रपातकबूझिममहिय भयोअतिशयत्रास ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार
हुभांति कहि परमशोकसों ग्रस्त । पारथ रथपै धरिदये धनु
डीव प्रशस्त ॥

तिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेअर्जुनबिषादोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

दोहा ॥ बोले प्रभु इमि तुमहिं लखि कहाकहैंगे लोग । यह
कीर्त्तिकर क्लीवता रणचढ़ि करब अयोग ॥ करहुयुद्ध शरध-
गहि संशय सकलबिहाय । रणचाढ़िकै करिबोदया कादरता
हि जाय ॥ सोरठा ॥ सुनिकेशवके बैन सजलनयन पारथकहे ।
ममन होत अचैन भीष्म द्रोणपै तजतशर ॥ तजोजातनहिं

बान शतधा पूजन योगपै । मोहिं न संशय आन होत ग
शर धनु गहत ॥ जिन्हैं मारि फिरि होय शोकाकुल ह्वै निज
ण । कहत शास्त्र बिद गोय तिनसों लरिबोनहिं उचित॥
बर्ग को नास दुहूंओर सों है अवशि । करिकैब्यर्थ प्रयास
लहैधौं जय अजय ॥ जयकरी ॥ बंधुबधनको दोष महान।
जानत नहिंवै अज्ञान ॥ सुनोजानि सोदोष भुलाय। किमि
बधैबंधु समुदाय ॥ करुणा नाम दोष अबभूरि। नाथ गयो
हियमें पूरि ॥ ताते ह्वै हतआत्म सुभाव। अरु संमूढ़ चेत
चाव ॥ बूझत हौं मैं शिष्यसमान। कहौकृपाकर करिअनुमा
जातेहोइ मोर कल्यान। कहै न ज्ञानवान अज्ञान ॥ लहि
दिवको राज्य महान । नहि दुरिहैं मम शोक अमान ॥ प्र
म लरब न कहत यथार्थ । इमिकहि रहे मौन ह्वै पार्थ ॥ बो
उभयसैन के मध्यसुनि अर्जुनके ये बैन। हँसिबोले करुणाय
केशव राजिवनैन ॥ कत अशोच्यको शोच तुमकरत कहाय
हान । अगत प्राणगत प्राणको नाहिं शोचत मतिमान॥
तुम ये सिगरे नहे कबहुंनमानेहु येहु। फेरि नरैहैं सोउमति
नेहु ध्रुव सुनिलेहु ॥ प्राप्तहोत जिमि देहमें देहीको पनमे
देहान्तरकी प्राप्ति तिमि गुणिपटु लहत न खेद ॥ अवस्था
रणमें रहत जैसे सोई जीव। देहांतरहूमें रहत तिमिहि क
मति सीव ॥ बिषयेन्द्री को परसहैं सुख दुखको दातार। ग
आगमन तासु नितसहौं ताहि नृपबार ॥ तिनसों जेनलहैं
था समसुख दुखगंभीर। मोक्ष अर्थ सामर्थ्यते पुरुषप्रवीण
धीर ॥ जोंसतसोंन अभावहै अस तन कबहुं सभाव। ल
अन्त सतअसत को ज्ञाता तत्त्वसचाव ॥ जासोंसब जग
सो अबिनाशीपर्म। कोऊकबहुं न करिसकै तासु नाशहद
अब्यय देहीकीसदा नाशमान यह देह। ताते संशय तजि
करि जयसों नवनेह ॥ जानत हंतातहि जो जेहि हत जा





जौन। तत्त्व न जानततै उभै नाहिं हतहन्ता तौन ॥ जात न म-
त न बीचह्वै थिरि बिनशतहै तात। आत्मा नित्य न देहके ह-
ने कबहुं हनि जात॥ अब्यय आत्महि लखत जो सुनहु पार्थ
सो आर्य। मनशै काकोघाति किमिहनै काहि केहिकार्य ॥ जि-
मि बिहाय जीरण बसन नव धारतनर तात। तिमि देही तन
जीर्ण तजि नूतन तन मधिजात ॥ छेदि सकै नहिं शस्त्रयहिपा-
क सकै न जारि । मारुत सकै न शोषि यहि बोरिसकै नहिं
बारि ॥ अबिकारी अरु सर्बगत नित्य अदह्य अछेद्य। तासु
शोच मतिकरहु गुणि तौन अशोष्य अछेद्य ॥ अथ जोजानहु
आतमहि नित्यजात म्रियमान। तऊ न शोचबउचिततहै गुणि
कौ मतिमान ॥ जातमात्रको मृत्युध्रुव मृतको जन्मअबाध।
ते निहचल अर्थ से उचित न शोच अगाध ॥ आदि अन्त
अब्यक्त अरु मध्य जासुहै ब्यक्त। तिन भूतनके हेतुकी करौ
कल्पना ब्यक्त ॥ आत्महि कोउ आश्चर्यवत कहत लखततिमि
कोय। सुनत कोउ आश्चर्यवत सुनेहु न बूझत कोय ॥ देही
नित्य अबध्यहै सबके तनमधि पार्थ। ताते उचित न शोचिबो
यह मत जानि यथार्थ ॥ और सुनो निज धर्मऊ ते टरिबो
नहिं श्रेय। क्षत्रिहि श्रेष्ठ न युद्धते अन्य धर्मको तेय॥ बिनमां-
गे यह प्राप्तभो खुलो स्वर्गको द्वार। ते क्षत्री धनि जे लहैं ऐसो
युद्ध बिहार ॥ रोला ॥ जौनकरिहौ पार्थ तुम यह धर्मशुभसंग्राम।
लहहुगे तौ पाप करि निज धर्म्म कीर्त्तिहि क्षाम ॥ लोक सिग-
रो करैगो अपकीर्त्ति तुव मतिमान। महतजनको मरण ते अ-
पकीर्त्ति अधिक अमान ॥ भीति पारथ भगे रणते कहैंगे जन
सर्ब। जासु मधिमें श्रेष्ठहौ तुम गुणहिंगे ते खर्ब ॥ कहहिंगेतव
अहित परुषअवाच्यबचन मलान। निन्दि हैं तवबीर्य्यताते को
पुरुषमहान ॥ हते लहिहौ स्वर्ग जीते भोगिहौ महि भूरि।
करौ निश्चय युद्धको करि सर्ब संशय दूरि ॥ दुःख सुख जय

अजय लाभअलाभ में सम भाव। मानि मनमें लरो पापनहो
गो यहि छाव ॥ सांख्य बिषयक बुद्धि तुम सों कहीयह हे धी
योग बिषयक कहतहैं अब सुनहु सुगुण गँभीर ॥ भये जा
युक्त छूटत कर्मबन्धन आसु। ताहि जितनो करो तितनो मि
त है फल तासु ॥ प्रबलबाधक कामनासो रहित सो शुभदा
करत ताको धर्मस्वल्पो महत भयसे त्रान॥ तत्त्व निश्चयअ
त्मिका बुधि एक है हे दक्ष। कामनायुत बुद्धि होति अनेकशा
अश्वक्ष ॥ दोहा ॥ कामात्मननहिं स्वर्गपर वेद बादरत पर्म
सब भोगे स्वर्गपति प्रतिज्ञापित है कर्म ॥ क्रियाबिशेष मई
गति जन्म कर्म फलदाय। तऊ कहतकर्महि अपर पुष्पित
चन सुनाय ॥ जे रत भोगैश्वर्य में ताते अपहित चेत।
समाधि मधि नहिं लहत शुद्धि बुद्धि तेहि हेत ॥ रोला ॥ त्रिगु
बिषयक वेद शीक्षक सर्ब कर्मप्रधान। ऊर्द्धमति अधगतिप्र
शक तौन हे मतिमान ॥ निर्द्वंद निति सत्वस्थ ह्वै निस्सङ्ग ता
तात। होहु अत्रिगुण चित्त जित जिमि अपरगति परभात
दोहा ॥ कर्म अनेक अनेक बिधि कहे भांति बहु वेद। सो स
पढ़िपढ़ि करि लहत लोक ब्यर्थ श्रम खेद ॥ यथा सरितते
तहैं जल निज काजप्रमान। चित्त शुद्ध मिति ताहि तिमि
गुणें मतिमान ॥ कर्म बिषे अधिकारतुव नहिंफलबिषे कदापि
संग अकर्मिनको तुम्हैं करैं न बसिकहु प्रापि ॥ करौकर्म्म यो
स्थह्वैताजितृष्णाअभिमान। सिद्धअसिद्धेअसुखदुखकर्मौयो
समान ॥ बुद्धियोगते दूरिहै तृष्णायुत कृतकर्म । ताते फल
जि मोरि मन साधौ कर्म स्वधर्म ॥ सुकृत दुकृत तजत
बुद्धियुक्त जे लोग । ताते साधौ योग तुम कर्म कुशलता
ग ॥ कर्मज फलको त्याग करि बुद्धियुक्त मतिमान। जन्मब
ते छूटि लहत उत्तमपर अस्थान ॥ मोह कलुष तजिबुद्धि त
ह्वैहै जबहिं प्रसन्न। श्रुत यथार्थ बैराग्यमें ह्वै है तबहिं प्र





न॥ बहुमत सुनि ह्वै बुद्धि तव थिरिहै लहि सिद्धांत। तबस-
माधि मधि अचल ह्वै लहिहौ योगहि दांत ॥ अरजुनउबाच ॥ स्थि
थित प्रज्ञ समाधि रत कहा प्रकाशक तासु। बोलन चलनसु-
भाव प्रभु तिनके कहिये आसु ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ त्यागि काम-
ना आपुमें करि आत्माको ध्यान। तोषत आत्मा नंदलहिसा-
थित प्रज्ञ महान ॥ सहनशीलता दुःखमें सुखमें निस्पृहबानि।
जे राग भय क्रोधजो सो स्थिति बुद्धि अज्ञानि ॥ बिगत नेह
सबमें सदा लहि शुभ अशुभ अमन्द। नहिं हरषत नहिं ल-
त दुख सो थितप्रज्ञ स्वछन्द ॥ शब्दादिक बिषयानसों कच्छु
गसमदक्ष। मोरत जोजननिज मनहिं सो थितप्रज्ञ प्रतक्ष ॥
इन्द्रिनको निग्रह किये मिटत बिषय बिधितात। रहतवासना
तसों ऊपर निरखतजात॥ सुयतन रतो सुपुरुषको मनइन्द्री
र लेहि। ते सुधि बुधि जे तिन्हहिं गहिमम पदमें मन देहि ॥
ये ते बिषयानके होत संगतेहि तासु। होत संगते काम फिरि
ते क्रोध प्रकासु ॥ होत क्रोध ते मोह तब स्मृति भ्रम कहत
होत। ताते प्रणशति बुद्धि सो नष्टनसे बुधि होत ॥ स्वाधी-
ते करत नर बशकरि इन्द्री सर्ब। चरत बिषय बिनु रागते
हत प्रसाद अखर्ब ॥ हानि होति सब दुःखकी लहे प्रबोध
साद। शुचि प्रसन्न चेतस भये थिरत सुबुधि अहलाद ॥ जे
युक्त श्रवणादिसों तिन्हैंन सुबुधि बिहार। सात्रधान मन बिनु
तेहि मिलत भावना द्वार॥ नहिं अभा निक पुरुषको शांति
ति हे पार्थ। शान्ति हीनको सुख कहां सुनि गुणिलेहु यथा-
॥ बिषयनमें इन्द्रियन सहमनके कीन्हे गौन। बिनशति
ज्ञा तिमि यथा नाव बायुबश जौन ॥ ताते बिषय बिहारते
प्रवीण करि सूर्ति । इन्द्रिन मो रत कराति हैं तासु बुद्धि
स्फूर्ति ॥ जामें जागत भूत सब सो योगिहि निशि तात।
मेंं सोवत भूतसब सोदिन मुनिहि बिभात ॥ कामवारि बिनु

कामना जो मुनि जलनिधिपाय । हर्षवृद्धि प्रगटत न सोल
शांति सुखदाय ॥ निस्पृह निर्मम ह्वै चरत जेसब काम बिहा
लहत शांतितै नहिं लहत जे तिन सहित अवाय ॥ पारथ
तुमसों कही ब्राह्मी थिति सुखदाय । याहिलहै जो ताहि
होत मोह सुखदाय ॥ अन्तहुमें यहि पै थिरे मिलत ब्रह्म
बान । करि प्रयत्न यापै थिरे सोई सुबुधि सयान ॥
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेसांख्ययोगबर्णनोनामषष्ठतमोऽध्या
अरजुनउवाच ॥ दोहा ॥ आत्म बिषयिनी बुद्धि गुरु जोतुव म
में इष्ट । घोर कर्म्ममेंमोहिं तो प्रभु कतकरत प्रविष्ट ॥ क
प्रशंसाकर्मकी करत आपु यदुराय । कबहुं प्रशंसा ज्ञानकी क
कहत सुखदाय ॥ प्रभु कहि मिश्रित बचन कत मोहितसे
मोहि । निश्चय करिकै एकअब कहिये श्रेयद जोहि ॥ श्रीभग
बाच ॥ कही पूर्ब निष्ठा द्विधा ज्ञान योग संचार । सांख्यन
योगीनकहँ कर्मयोग व्यवहार ॥ अनारम्भते कर्मकेहोत न
निष्कर्म । सर्बत्याग संकल्पते मिलत न सिद्धि सुधर्म ॥ क
कोऊ नहिं रहताकिये बिनाकछुकार्य । प्रकृतिजगुणकरि
करत सदाकर्म हे आर्य ॥ कर्मेन्द्रिनकहँरोकिजेकरत न
बिचार । रहत लगाये बिषयमें मनसो मिथ्याचार ॥ मन
इन्द्रिन रोकिजे बिषयनचरत यथेष्ट । कर्मेन्द्रिन करिकरत
कर्म योगते श्रेष्ट ॥ हैं अकर्मते कर्मबरकरौ कर्म अबिकार ।
कर्म नहिं सधैगो देहौंको व्यवहार ॥ बिष्णुप्रीति कृतकर्म
बिनु बण सिगरे कर्म । गुणि सो अर्थ अकामह्वै करौ सु
सुधर्म ॥ यज्ञ प्रजन रचि प्रजनसों पूर्ब कहो बिधि येहु । ये
तब कामद इन्हैं करि निज इच्छित लेहु ॥ तर्पित यज्ञ बि
सों तिर्पित ह्वै सब देव । तुमहिं पोषिहैं कामदै परमश्रेय
भेव ॥ सुमन देतहैं नरनकहँ बरषि बारि सब भोग । तेहि
बिनु अन्नभुक जेहैं अघभुक लोग ॥ बैश्वदेव आदिकहि





शेष खाततै पुण्य । आत्महेतु करि खातजेते पापात्म अगुण्य ॥
कवित्त ॥ भूत होत अन्नसों ते अन्न परजन्यसों औ परजन्य
यज्ञसों औ यज्ञकर्महीसों होत । कर्महोत वेदसों औ वेदहोत
अव्ययसों सर्बमय वेदकरै नित्य यज्ञको उदोत । या विधि प्र-
वर्त्तित अनादि चक्र चारु ताके अनुसार गमनमें मूढ़जे करत
ओत । भोगि सुख इन्द्रिनको मोदत सदाही ते वै जीवत वृ-
थाही जिये पुंज पापको तनोत ॥ दोहा ॥ आत्मामें रति जासु
नित आत्मतृप्त मतिमान । आत्महि लखि संतुष्ट जे तिनहिं
कार्यनहिं आन ॥ ताहि कर्मसों अर्थनहिं नहिं अकर्मसों काज ।
सर्ब भूतगणसों न कछु ताकहँ अर्थ समाज ॥ ताते सदा अशक्त
रहि करो निरन्तर कर्म । अनाशक्त रहि करि करम परपद लहत
सधर्म ॥ निति करि कर्महिते लहो परम सिद्धिजनकादि । लो-
कसंग्रहौ निरखिकै करिबो उचित न बादि ॥ ब्रह्मज्ञानसो युक्त
हे जनकादिक सब भूप । पारथ सुनु ते करत हे बिधिवत कर्म
अनूप ॥ यथा आचरत श्रेष्ठजन तथा चरत सब पोत । गुरु-
जन करत प्रमाणजो तासु अनुग सबहोत ॥ हमैं न कछु कर्त्त-
व्यनहिंप्राप्तिअप्राप्ति बिचार । तऊलोकहितं हेतिनित करत
कर्म आचार ॥ जो हमचरहिं न कर्ममें तौसो लखि जनसर्ब ।
कर्म त्याग करि चरिलहैं बंचित ह्वै गतिखर्ब ॥ यथाशक्तह्वै
करतहैं कर्म अपटु अज्ञान । तिमि अशक्तह्वै करत हैं कर्म
सकल विद्वान ॥ जे अज्ञानी कर्मरत तिन्हैं न भेद बताय । कर्म
छोंड़िये लाइये छोड़े तासु नशाय ॥ प्रकृतिकार्य इन्द्रियनसों
क्रियमाण सबकर्म । करतामानैआपुकोमूढ़नजानैमर्म ॥ जेगुण
कर्म बिभागको तत्त्व लखत अनुमानि । गुण बरतत निज गुण
बिषे गुणितेलहत न हानि ॥ प्रकृति गुणनमें जेअपटुकरें ममत्व
प्रधान । तेहि न चलावैं कर्मसो ज्ञानी बूझि निदान ॥ गुणि मम
बिषे समर्पि अब सिगरो कर्म यथार्थ । निर्मम अरु निष्काम

ह्वै युद्धकरौ हे पार्थ ॥ जो नर मम यहि मतबिषे तिष्ठत तेऊ
तात । शर्म न धर्म अधर्म सबकर्मन ते छुटिजात ॥ जेयुहि मत
रत होतनहिं गहे असूयागूढ़ । देह निष्ठके भ्रष्टमति नष्टचेतते
मूढ़ ॥ तुम अन्तर्यामी न्यामकहो तुम्हरे मतमें कोऊकाहेनाहीं तिष्ठत यहशंका कि
हेत कहतहैं ॥ पूर्वकृत्य जोसो प्रकृति बिदुषो तेहिअनुसार । चेष्टा
तौनअगाधहै तजौ शंकसंचार ॥ यामें पुरुषके स्ववश ताकोअभाव होतो
ताहेत कहतहैं ॥ प्रति इन्द्रिनके अर्थकहँ रागद्वेषमयजानि । तिन
केबश नहिंहोइसुनि शास्त्रबचनअनुमानि ॥ बर बिगुणो निज
धर्मनहिं परको सब गुणखानि । मरणश्रेय निज धर्म में परो
जय भयदानि ॥ अर्जुनउवाच ॥ बिनु चाहतहूं पुरुषभ्रमि परबश
परोसमान । कासों प्रेरित पापमें चरत कहो मतिमान ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ भये रजोगुणसों प्रबल कामक्रोध सउसंग । गहेअ
ग्निको गुण अथक् अरिहैं तन के संग ॥ जिमिछादित मल
सों मुकुर अनल धूमसों होत । तिमि आवृत कामादिसों ज्ञान
न करत उदोत ॥ इन्द्रीमनकामादिके हैं स्वछन्द अधार । तिन
सों ज्ञानहिं रूंधिते मोहत जनहिं सबार ॥ ताते प्रथमहिं इन्द्रि
यन कहँ बशकरिहै दक्ष । जीतो कामहिंज्ञानको नाशक जौन
प्रतक्ष ॥ केवल बाह्येन्द्रियनके जीते कृतार्थनाहीं जानोमन बुद्धिको जीतो चाहिये
ताको हेतुकहत हैं ॥ इन्द्री पर बिषयान ते तबमन तबबुधि जौ
न । बुधिके पर बिज्ञानमय आत्मा आनँद भौन ॥ यहि बिधि
बुधिते परे गुणि परआत्मा निजपक्ष । आत्मामें थितितासुकी
जोहि कामहिं हे दक्ष ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगबर्णनोसप्तमोऽध्यायः ७

दोहा ॥ पूर्व योग यहहम कहे रबिसों मनुसोंसूर । मनुभा
इक्ष्वाकुसों कर्मयोग यहपूर ॥ यहि क्रमते राजर्षिसब सुनोगु
णो सहचोप । बहुतकाल बीते सुनो भयो तासु अवलोप ॥ सोई
पुरातन योगयह तुमसों कहत सनेम । भक्तसखा मम मोहि





प्रिय हौ तुम पूरित प्रेम ॥ अर्जुनउवाच ॥ प्रथम जन्म रबि को
भयो पूर्व भयो तवतात । आदिहि तुम रबिसों कहे किमि बूझे
यहबात ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मम तुव बीते जन्मबहु हम जानत
सब तौन । तुम नहिंजानत आपनो जन्म आगमन गौन ॥
ईश्वर अज अव्यय जऊ हैं हमतऊसचाय । निज माया करि
प्रकृतिबश ह्वै इत प्रगटत आय ॥ केहिहेतु प्रकटहैं सोऊकहत हैं ॥
नशत धर्म अधर्म बढ़त जबजब तबतब जानि । सिरजत
हम निज आतमहि यह ममनित्य सुबानि ॥ रक्षणहित साधून
के खलके नाशन हेत । संस्थापन हित धर्मके जन्म युगन में
लेत ॥ दिव्य जन्म अरुकर्म को मर्म जेलखत निदान । देह
त्यागि फिरि देह नहिं पावत ते मतिमान ॥ त्यक्तराग भयक्रोध
मद मम पदरत तपपूत । हैंपारथ ममभक्त बहु ममआश्रयीअ-
पूत ॥ जे जिमि होत प्रसन्नमोहिं तिमि पोषत हमताहि । सब
ममपथ अनुगामित हैं भजतमोहिं तजि काहि ॥ सर्वआदिसुर
सर्वको जे सेवतफल चाहि । ते सब ध्यावत हमहिंहम देतशीघ्र
फल ताहि ॥ चारिवरण हम रचे करि भेदसहितगुणकर्म । क-
रता अकरता तासुहम सगुण अगुणकेधर्म ॥ मोहिं न लिम्पत
कर्म मोहिं कर्मफलाशानाहि । इमि जे जानत हैं हमहिं कर्म न
बाधत ताहि ॥ सिगरे पूर्वमुमुक्षुजन किये कर्म यहजानि । ताते
करहु सुकर्म तुम वेदउक्त अनुमानि ॥ कर्मकहा निष्कर्म यहि
हेत कबिनहूमोह । कहततौन जाकेलखे छुटति सृष्टिकीछोह ॥
कर्म बिकर्म अकर्म ये सदा जानिबे योग । श्रुतीअयुती असंग
में गहन तत्त्व संयोग ॥ कर्म बिषे निष्कर्मता निष्कर्महूमें
कर्म । निरखतसो पटुनरनमें कृत शुभकर्म सुधर्म ॥ बिनाकाम
संकल्प है जासु आरम्भ कर्म । ते पण्डित ब्रह्मबिदगहै ज्ञाना-
ग्निसों कर्म ॥ त्यक्त कर्म फल संगनित तृप्त अममता जौन ।
कर्मन बिषे प्रवृत्तऊ करत कछू नाहिं तौन ॥ त्यागिपरिग्रह जे

करैं चित्तआतमा युक्त । करिशारीरककर्म ते लहत न किल्वि
षङ्क ॥ तुष्टलाभ स्वागतलहै मत्सरहीन अदन्द । सदाशुद्ध
समभाव करि कर्म होत नहिंमन्द ॥ जे कर्तृत्व ममत्व बिनुज्ञा
नावस्थित चेत । बिष्णु प्रीति कृतकर्मको विनशत कर्मसहेत॥
अथ त्रयोदशयज्ञकहत हैं ॥ होता आहुति अग्नि हवि सिगरेब्रह्म
नूप । करै कर्म इमिजानिते लखै ब्रह्मको रूप ॥ पूर्व कर्म सु
यज्ञकोउ करत समेत बिधान । ब्रह्मअग्निमें जीव हबि होम
अपरसुजान ॥ होमतकोउइन्द्रियनकहँ संयमाग्निमें जानि । हो
मतकोउबिषयानकहँ इंद्रियाग्निमेंआनि ॥ सबइंद्रिनके कर्मअ
प्राणकर्म कहँ कोइ । आत्म सुसंयम योग सिखिमें होमतधी
सोइ ॥ द्रव्य साध्य तपसाध्य अरु योगसाध्य मखकोइ । स्वा
ध्याय ज्ञान मख करत कोउ सुयती सुब्रती सोइ ॥ एकादशयज्ञक
हतहैं ॥ होमत प्राणअपान मय प्राण बिषे आपान । रो
धतप्राण अपानकरि प्राणायाम बिधान ॥ द्वादश यज्ञ कहतहैं
होमत प्राणबिषय कोऊ इन्द्रिन नियताहार । हैंते सिगरे य
कृत बिनुकल्मष, व्यवहार ॥ अथ साधारण नित्यउचित त्रयोदशोयज्ञ
बलिवैश्वादिक कृत्यकरि अतिथिन दै लहि शेष । भोज
कृत्य ते यज्ञकृत लहतब्रह्मपद भेष ॥ नहिं अयज्ञ सुखसो
याहूपुर को बास । अन्य लोककी कोकहै तिनकहँ इतउत
स ॥ बेदमुखे बिस्तारितहैं यहिप्रकार बहुयज्ञ । तेकर्मज निष्प
र्म नहिं हैं हेपटुसरवज्ञ ॥ सर्बयज्ञ ते श्रेष्ठ है ज्ञानयज्ञ हेपार्थ
सर्बयज्ञको परमफल ज्ञान निदान यथार्थ ॥ सेवित कै गुरु
पत्रिसुनि प्रश्नहि करि अनुमान । ज्ञानी शिष्यहि करत
ज्ञान प्रभाव बिधिदान ॥ जाहिजानि नहिंमोहइमि होइ प्रा
होइअस्त । मोमें अथवा आपुमें निरखौ भूतसमस्त ॥
पापिनते पापकृत अधिकौ सोऊतात । लहैज्ञानप्लवतौ अ
भवसागर तरिजात ॥ यथासमिधके शयलकहँ जारतज्वालि





कृशान । सर्बकर्मकहँ करतहै भस्मतथा गुरुज्ञान ॥ नहींज्ञानके
सदृश है कछुपवित्र मुदमौन । योगकर्म साधनकरें प्राप्त होत
तौन ॥ जितइन्द्री तितपर सहितश्रद्धाते लहिज्ञान । सोजन
थोरेहि कालमें परपद लहत महान ॥ संशयात्मा अज्ञजे अ
नगअश्रद्धावान । नशततासु दोऊदिशा सुनोपार्थ मतिमान॥
कर्मयोगसों ज्ञानसों संशयछूटोजासु । तिन्हैं न बाधत कर्मते
पावत पर्म सुपासु ॥ तातेमो अज्ञानते संशय जौन हृदस्थ ।
ज्ञानखंगसो काढ़ितेहि कर्मयोग कुरुस्वस्थ ॥

इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेयज्ञयोगोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

अर्जुनउबाच ॥ दोहा ॥ कर्मनको संन्यासअरु कर्मयोग यक
नाथ । चाहिप्रशंसतहौ कहौ कौनश्रेष्ठ हेनाथ ॥ श्रीभगवानुबाच ॥
संन्यासयोग ये उभयहैं करताश्रेय अमन्द । तिनमेंयोग बिशेष
है चितशुचिकर निरदन्द ॥ कर्मयोग निष्कामकृत जे संन्या
सीसोय । ह्वैज्ञानीते बन्धसों छूटत कल्मषगोइ ॥ सांख्यहियो
गहि पृथक्करि कहत अपंडित लोग । शुद्धउभयमें एक फल
है नितिसंयोग ॥ मिलत सांख्यसो स्थानजो कर्मयोग सो
लेत । सांख्य योगकहँ एककरि पश्यत ज्ञान निकेत ॥ दुस्तर
अदहैंसुनो बिनायोग संन्यास । कर्मयोगयुत पुरुषको पूरत
शीघ्रहिआस ॥ योगयुक्त बिजितात्मजे नित्य जितेन्द्रियस्वक्ष।
सब भूतात्मक आतमा बन्धहोत नहिंदक्ष ॥ कहत सुनत पर
सत स्वपत चलतदेत लखिलेत । गुणत अकरता आपु कहँ
परम तत्त्वबिद चेत ॥ संगत्यागकरिकर्मजे ब्रह्मार्पण करिदेत ।
ताहि न परसत पापजल जलज पत्रकेनेत ॥ कायिक बाचिक
मानसिक इन्द्रिनसों सहधर्म । योगी आत्मा शुद्धहित करत
अकामुककर्म ॥ त्यागिकर्मफल ब्रह्मबिद पावत नैष्ठिकशान्ति ।
अपटुफलासी कर्मकृत बन्धितहोतअकान्ति ॥ करिअर्पण सब
कर्मको योगीजन लहिमोद । करत करावत कछूनकरि तनपुर

मध्य बिनोद ॥ कर्म और कर्तत्व अरु कर्मनको फलताहि
सिरजत परमातमा न रबि कमल कुमुदवत आहि ॥ कवि
ईश्वरनकरत करावत न कछुकर्म तातेनहिं लेतपाप पुण्य
जनको । सूरज प्रकाशित करतपै न गहतहै कर्मगुण दोष
प्रकाशितके तनको । चाहि कछु सिद्धिकर्म करेजो अज्ञान
ताते गोपीज्ञान भूलिआपैं आछेपनको । स्वप्नमें ज्यों सा
भौम छोटेसों सतायो जात मोहिंत्यों लहतदुख जीवदुखी
को ॥ दोहा ॥ जे नाशे शुचिज्ञान सो भ्रमकरता अज्ञान । द
शावत तेहिज्ञानसो परमतत्त्व सुखदान ॥ अस्तिब्रह्म नि
यी जे ब्रह्म परायणदक्ष । लहत अपुनरा वृत्ति ते ज्ञानी
प्रतक्ष ॥ गोब्राह्मण गजश्वान अरु चर्मकारमेंशुद्ध । समद
जेतेपुरुष पंडित परम प्रबुद्ध ॥ इतहोंजीते स्वर्गते निजमें
समभाव । सबमें ब्रह्म अदोषसम ते ब्रह्मज्ञ सचाव ॥ मुदि
होतनहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय । तेज्ञानी थिर बु
पटु अमल अमोह सचाय ॥ बिषयस्पर्शज क्षणिकसुख बिष
रतजेदक्ष । लहत ब्रह्मबिदते अनघ परमानन्द प्रतक्ष ॥ बिष
स्पर्शजभोगजो दुखदायकहैंतौन । आदिअन्तवतसोनतेहिं
रमतबुधजौन ॥ देहपतनलोंजोसहै कामक्रोधकोबेग । सोयो
सो नितिसुखी तासुकरैको सेग ॥ अन्तःसुखवन्तः अरु अ
ज्योंति अमन्द । लहत ब्रह्म निर्बाणते लहि शुचि ब्रह्मानन्द
सबकेहितरतब्रह्मबिदलहतब्रह्मनिर्बाण । इतहूउतबिदितात्म
प्राप्तब्रह्मनिर्बाण ॥ अथध्यानयोगरूपं ॥ बाह्यस्पर्शन बाह्यकरि करि
मधि चख आम । प्राणअपान समानकरि करत सुप्राणायाम
मन इन्द्रीजित मोक्षपर बिगतेक्षा भय क्रोध । सदामुक्तते
बिद किये मुक्ति मगशोध ॥ सर्बभूतके सुहित अरु ज्ञाता ई
मोहि । जानिलहत है शान्तिनर अमल तत्त्वयह जोहि ॥
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतियोगबर्णनोनामनवमोऽध्याय





भगवानुवाच ॥ दोहा ॥ पार्थकर्म जो करतहैं सर्ब फलाशाभग्नि ।
न्यासी योगी सोई नहिं नरग्नि युत अग्नि ॥ जाहि कहत
न्यास सोइ योग बिचारो पार्थ । आशा नाश किये बिनायो-
नहीं यथार्थ ॥ बांछित योगारूढ़को कारणकर्म अकाम ।
रण योगारूढ़को हैं संन्यासललाम ॥ बिषयबिषे अरुकर्ममें
बेन बर्त्तितहोइ । करैत्याग संकल्पको योगारूढ़ोसोइ ॥ आपु-
हित रिपुआपनो यहकरि शुद्ध बिचार । करै आपुसोंआपनो
बिघ्निक उद्धार ॥ बन्धुआपनो आपुजे जीतेआत्महिआप ।
जित चित्त रिपुसम करत आपुहि आप सँताप ॥ जेप्रशान्त
त आतमा सुखदुख जिन्हैं समान । ते परमात्महिं लखतहैं
में सम सुखदान ॥ तृप्तज्ञान बिज्ञानसों अचल जितेन्द्री
क्ष । हेम उपलहित शत्रुमें सम मतियोगी दक्ष ॥ एकाकी
र चित्तबसि निर्जनसुस्थलचाहि । बुध्यात्महि योजितकरत
न्ति सिन्धु अवगाहि ॥ दर्भ अजिन अरु बसनमें आसन
अमन्द । राखि अमलसम भूमि कै उदासीन स्वच्छन्द ॥
करिकै एकाग्रमन जिताचित इन्द्रिय वृत्ति । साधै योग स-
ति करि बाह्य क्रिया निरवृत्ति ॥ समकरिकै शिरग्रीव कटि
कै अचलसुजान । अवलोकै नासाग्रइमि साधै योग महा-
॥ संचितात्म निर्भय ब्रती यती मनहिं संयम्य । चित्तलाय
में सुबुधि साधै योग अगम्य ॥ योजितकरि यहिभांतिमन
मामें बहुकाल । लहतपरम निर्बाण पद योगी लहि मुद
॥ अशन निरशन शयनसो करै न अतिशय जानि । युक्त
र बिहारते होत दुःखकी हानि ॥ ह्वै बिशेषते अचलमन
मामें लगिजात । जबतबनिस्पृह होयकै योगीपरम बिभा-
॥ निहचल दीपत भांतिजेहि दीपक निर्बातस्थ । तिमिआ-
में लायमन बिलसत योगी स्वस्थ ॥ कै निरुद्धइमि योग
पेखत आत्महि यत्र । रहत तितैहीमनसदा फिरि नहिं तो-

षतअत्र ॥ बुद्धिबाह्यतहँ परमसुखअनघ अगोचरपाय ।च
न फिरि मत तत्त्वसों रहतसदा लपटाय ॥ जेहि लहिदूजोला
नाहिं मानत अधिकसुजान । टरतनतासों लहेहुदुखआगान
बलवान ॥ सब दुखके संयोगकी है बियोगसों योग । बश
इन्द्रियमनहिं से शतधा करिबेयोग ॥ धीरे२सुमति सो करि
वृत्तिधरिधीर । आत्मामें थिर मनहिं करि चिन्तहिकरै नती
जहँजहँ जावैचपलमन तहँतहँ सोंगहिल्याय । दृढ़करि आ
अमलमें देवै ताहि लगाय ॥ शान्त मनस योगीलहत अ
सुख अभिराम । तासों ते अति सुखलहत ब्रह्मस्पर्शसुना
आत्महि सबभूतस्थअरु आत्मामें सबभूत । लखत योगयु
त्मा समदरशीमजबूत ॥ सबथरपै लखिमोहिंजो मोमें
सर्व । ताहि न हमभूलत कबहुं हमहिं न तौन अखर्व ॥ ल
मोहिं सर्वस्थजो मत अद्वैत उदोत । कर्म अकर्म चहो
मोसों नाहिं च्युतहोत ॥ सुखदुख ब्यापे आपुपै जिमिजानै
मान । सबमें जानै भांति तिहि सोयोगी नहिंआन ॥ अर्जुनउवा
कहे योग तुम तासुनहिं थिरतासिद्धलखात । गहन चपल
को गहन बायु गहनते तात ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ पार्थ असंशय
पल मन को गहिबो दुःसाध्य । पर बैराग्य अभ्याससों है
सों श्रमसाध्य ॥ अजित चित्त जनकहँ सदा है दुष्प्राप्य
योग । प्रासहोत जितचित्तकहँ सिद्धसुयोगप्रयोग ॥ अर्जुनउवा
श्रद्धाते चरि कर्म तजिचरत योग हित जानि । तहँसों बिच
जासुमन लहै कौनते हानि ॥ शाखा चूक्यो कपिसदृश
अभ्रसम तौन । उभय भ्रष्टबिनशत कहा कहौ कृष्णसतज
श्रीभगवानुवाच ॥ सुनहुपार्थ इत उत कहूं तासु नाश नहिं है
सदाचार रत कहँ न कहु दुर्गति करत उदोत ॥ पुण्य
को लोक लहि बसि बहुकाल सचाय । शुचि श्रीमन्तन के
जनमतहै ते आय ॥ धीमतयोगिनके कुले अथवा प्रगट





य । जगमें ऐसो जन्म है दुर्लभ शुचि सुखदाय ॥ पूर्व जन्मकी
बुद्धिको होत तहांसंयोग । करत यतन तिहि सिद्धहित तजि
विषयेन्द्रियभोग ॥ ताहीपूर्बाभ्याससोंकरतयोगव्यापार । ज्ञाने-
च्छितजन थिरततरि कर्मकाण्ड व्यवहार ॥ जन्मांतरसोंशुद्ध
चरि सजतनयोगविधान । योगीलहि उतकृष्टगति ध्यावतब्रह्म
महान ॥ तपकृतसों शास्त्राज्ञसों कर्मनसों हेपार्थ । अधिक होत
योगीकरौ ताते योगयथार्थ ॥ सब योगिनहूंते सुनो जेजन
शुचिममभक्त । तेजनमोकहँ परमप्रिय जे न अनत कहुंशक्त ॥
इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेआत्मसंयमयोगोनामदशमोऽध्याय :

श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ मोमेंसदा अशक्त ममआश्रय निति
करियोग । जानतयथा समग्र मम सुनियै सो उतयोग ॥ चारु
ज्ञान बिज्ञानसों तुमसों कहे अशेष । जाहिजानि नहिं जानिबे
को कछु और बिशेष ॥ सहसन नरमें एककोउ करतयोग अ-
भ्यास । तिन सहसनमें एककोउ जानत तत्त्वप्रकास ॥ अनल
अनिल महिबारि नभ मनबुधि अरु अहँकार । आठभेद मम
प्रकृतिकेक्षेत्रात्मकव्यवहार ॥ क्षेत्रज्ञात्मकअन्यमम प्रकृतिश्रेष्ठ
बिख्यात । जीवभूतजो जगतको धारण करतातात ॥ सर्वभूत
की योनिये सुनोपार्थ मतिमान । हैंहम सिगरे जगतकी उत-
पति लयअस्थान ॥ नहिंहमसों कछुपृथक्तर हैहेपारथआन ।
मोमेंपोहित्त सर्वजग गुणमें मुनिगण मान ॥ रस जलमें शशि
सूरमें हैममप्रभाउदार । वेदगगनमें प्रणवधुनि नरमें बलव्य-
वहार ॥ पुण्यगन्ध हम भूमिमें रबिमें तेजमहान । जीवन सि-
गरे भूतमें तपकृतमें तपज्ञान ॥ सर्वभूतके बीजहम बुद्धिमानमें
बुद्धि । तेजस्विनमें तेजहम सुनो धनंजय लुब्धि ॥ हैं हम बल
बलवानमें बरजि रागअरुकाम । अबिरुद्ध धर्म सबभूतमें हैं
हम अति अभिराम ॥ जे त्रिगुणात्मक भावहैं ते सब हमसों
जात । मोमें ते तिनमें न हम इमिध्रुव जानोतात ॥ मोहिं त्रि-

गुणके भावसों सब जग रहो भुलाय । मोहिं न जानत त्रिगुण
सों युक्तसुनो शुचिकाय ॥ दैवीदुस्तर गुणमयी मम माया है
तात । मोहीमें रतहोतजे ते ताकहँ तरिजात ॥ दुष्कृत मूढ़
नराधम जेहि मम बिषेअभाव । माया अपकृत ज्ञानते गहैं
आसुरीभाव ॥ ज्ञानार्थी अरु आर्त अरु अर्थार्थी अभिराम।
अरु ज्ञानीभये चारिजन भजत हमहिंसबयाम ॥ तिनमेंज्ञानी
सरसहै एक भक्ति नितयुक्त । ज्ञानी मोहिं अत्यन्त प्रिय हम
ज्ञानिहि सुप्रशक्त ॥ हैचारौं उत्कृष्टते दानी मम आत्मैव । यु-
क्तात्मा सो मोहिंमें अस्थिन रहत सदैव ॥ ज्ञानीसो बहुजन्म
में होतप्राप्त मोहिंपार्थ । भयेपूर्णता ज्ञानकी तोको कहतयथा-
र्थ ॥ बासुदेव प्रभु सर्वहै इमिजानतहै जौन । प्राप्तहोतहैसोय
मोहिं सोईहै मतिभौन ॥ चिन्तिकामना अज्ञजे ध्यावत प्रिय
करिजाहि । बूझिभाव तत्रस्थहम देततौन फलताहि ॥ नाश-
मान फल तौनसो तिन अज्ञनकोतात । जेजेहि पूजत प्रेमसों
तेनर तिनमें जात ॥ अब्ययअरु अब्यक्त हम तिनकहँसबहि
समान । ब्यक्तमानतेलखतहैंजेअतिशयअज्ञान ॥ सबकहँनहिं
हैं प्रगटहम माया छादितरूप । मूढ़ न जानत मोहिंअज अ-
ब्यय अमल अनूप ॥ जानैहम सबभूतको तीनिकाल ब्या-
ख्यान । नहिंकोउ जानत ममकछू सुनहु पार्थ मतिमान ॥ द्वंद
द्वेष अस्नेहअरु कामक्रोध बशसर्ब । जन्तुमोहिं यहि सृष्टिमें
गुणत न खर्ब अखर्ब ॥ जेहि सुपुण्यकृतके भये निर्गत सिगरे
पाप । द्वन्दराग निर्मुक्तते भजत मोहिं निस्ताप ॥ जन्म मरण
के मोक्षहित ममआश्रित मतिमान । निरखतहैं ते ब्रह्मविद
अध्यात्मक धरिध्यान ॥ मोहिंलखत अधिभूतजे आधि सुदैव
अधियज्ञ । होहिंप्राण यात्रासमय ते सुजान तत्त्वज्ञ ॥
इतिभीष्मपर्वणिकृष्णार्जुनसम्बादेज्ञानविज्ञानवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः॥
अर्जुनउबाच ॥ दोहा ॥ प्रभुकोब्रह्मअध्यात्मकोकोहै कर्ममहान।





अधिभूतसुको अधिदैवको कोअधियज्ञ सुजान॥ केहिबिधिप्राण
पयानक्षणस्मरणीयहौआर्य । कहौकृपाकरिकृष्णप्रभुज्ञापकक्कार-
णकार्य ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ अक्षरब्रह्म स्वभावजो सोअध्यात्मसुभाग ।
भूतभाव उद्भवकरण कर्मद्रब्यकोत्याग ॥ अधिभूतसुजो भूतहै
नाशमान स्वच्छन्द । ग्राहकजोशब्दादिकोसो अधिदैवअद्वन्द ॥
हैंदेहिनकेदेहमें हम अधियज्ञमहान । हैं अभिमानीयज्ञके बिष्णु
वेदको न्यान ॥ अन्तकाल स्मरणमम करि प्रास्थित तजि देह ।
सो पावत मम भावध्रुव करि मम पदसों नेह ॥ जेहि जेहि भा-
वहि स्मरत हैं तन तजि करत पयान । ते तेहि भावहि लहतहैं
भये बासनावान ॥ ताते सबक्षण स्मरहु मोहिं करहु युद्ध मति-
मान । मोमें अरपत बुद्धि मन ते मोहिं प्रापत न्यान ॥ योगा-
भ्यास सुयुक्तिजे आनहिं अनुगत नाहि । परम पुरुष पै जातते
चिन्ति निरन्तर ताहि ॥ कबि पुराण न्यामक स्मरहु तनुते तनु
धातार । अचिन्त्यरूप रबि बरणकृत तमते परे बिहार ॥ भक्त
अचलमन योग बलसो मरि भूमधि प्रान । परम पुरुषकहँ ल-
हतहैं प्राणहिं करत पयान ॥ बदत वेदविद जाहि जेहि मधि
मुनि होतप्रवृत्त । सोपद अक्षर परमशुचि कहियतु करण नि-
वृत्त॥ सब द्वारन संयमित करि हियसे मनहिं निरोधि । प्राण
सुथिर करि मूर्द्धपै योगधारणा शोधि ॥ ब्रह्मभूत ओंकार कह
उचरि सुमिरिमोहिं तात । तनतजि करतपयान जो सो परपद
मधिजात ॥ जो अनन्य चेता सदा सुमिरत मोहिं न आन ।
तेहि योगी कहँ सुलभ हम पारथ सुनो निदान ॥ हमहिं पाय
फिरि नाहिं लहत जनम सकल दुखभौन । परम सिद्धिगति
गौनतहँ होत महात्मा तौन ॥ ब्रह्मलोक पर्य्यन्त है पुनरावृत्ति
निदान । साश्वत मोपद प्राप्तको फेरि न जन्म बिधान ॥ सहस
चौकड़ी युगनलौं बिधिको दिन परमान । ताही मिति रजनी
महा सुनो पार्थ मतिमान ॥ जिते ब्यक्त अब्यक्त ते प्रभवत है

दिन पाय । रात्रीलहि पुनिसब बिनशि मिलत प्रकृतिमें जाय॥
तेई दिन लहि प्रगट फिरि निशि लहि नशत समस्त । प्रगटि
बिनशि भोगत रहत निजकृत मलिन प्रशस्त ॥ है अव्यक्तसों
परे सो अन्याव्यक्तस्थान । जो सबभूतनके नशे नशत न सु
नहु सुजान ॥ अक्षर अरु अव्यक्त इति उक्तिपरमगति जौन।
निवृतहोत नहिं जाहि लहि परम धाममम तौन ॥ लभ्य अ
नन्य सुभक्तिते सोपर पुरुषमहान । सर्व जासु अन्तस्थसब जा
सों व्याप्तसयान ॥ आगम औरनिरागमन पावत है मतिमान।
करि पयान जेहि कालमें कहियत तौनविधान ॥ अर्च्यभिमानी
देव अरु दिन अभिमानी स्वक्ष । शुक्लपक्ष अभिमान अ
सुनो पार्थ बरदक्ष ॥ उतरायण बपुमास षट तिहि अभिमानी
देव । तिन्हैं प्राप्तह्वै जात जो सुनो तासु तुमभेव ॥ होत मोक्ष
को प्राप्त सो होत न आगम तास । अक्षर अव्यय ताहि लहि
कीन्हें रहत प्रकास ॥ धूमाभिमानी देव अरु रात्र्यभिमानी
जौन । कृष्ण पक्ष अभिमानि जो है देवसुनौ बलभौन ॥ दक्षि
णायन बपु मासषट तिहि अभिमानी देव । अरु शशिज्योतिहि
पाय जे जात तासु सुनु भेव ॥ स्वर्गहि लहिफल भोगि सब
फेरि निवृत्तसो होत । जानतयह वृत्तान्त हैं जिनके ज्ञानउदोत॥
अर्चिरादि धूमादिइन द्वैपथह्वै सबजात । लहत अनावृति
आवृतिहि क्रमसों जानेहुतात ॥ इन मार्गनको जानि फल यो
गीकर अनुमान । रहतअनालस यतनमें होहुसँयोग सुजान॥
वेदयज्ञ तप दानमें जितनो फल सुखदान । तिन्हैं अतिक्रम
करि लहत योगी परअस्थान ॥

इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमयोगवर्णनोद्वादशोध्यायः॥

श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ सहित ज्ञानबिज्ञान अरु परम गुह्य
व्याख्यान । कहियतु हैं जेहि जानिकै मुक्तहोत मतिमान॥ बि
द्यन को अरु गुह्यको राजा उत्तमपूत । धर्मजासु प्रत्यक्ष फल





अव्यय सुसुख अकूत ॥ जे जनहैं यहिधर्मके शुचि श्रद्धासों
हीन । मोमें होत न प्राप्तते भ्रमो करत हैं दीन ॥ कांचन अरु
कटकादि सम सबजग हमसों व्याप्त । हैं ममस्थ सब भूतसुनु
भूतस्थन हमआप्त ॥ नाहिं ममस्थहै भूतहे निरखे निर्गुणभाव।
भूत भृतौ भूपस्थ नहिं भूतवृन्द करछाव ॥ सबथर गत मारुत
यथा है नभस्थ हेतात । तिमि ममस्थ सबभूत हैं अमबीज बि-
ख्यात ॥ सर्वभूत कल्पान्तमें ममसुप्रकृतिमें लीन । होततिन्हैं
कल्पादि में सिरजि करत हम पीन ॥ ह्वै निज प्रकृताधीनजग
रचियतु बारम्बार । मोहिं न बाधत कर्मकृत अरत अराग बि-
हार ॥ मैंजो नाथ प्रवर्त्तकसु तेहिसों प्रकृति पुरानि । बिरचति
जगतेहि हेतु जगसाक्षितिलीजे जानि ॥ जेभावज्ञ न मूढ़तेभ्रमि
माया भ्रम माहिं । गहे मानुषी देहमोहिं ईश्वर जानतनाहिं ॥
व्यर्थाशाअरु कर्मते व्यर्थज्ञान अरुचेत । गहेराक्षसी आसुरी
प्रकृति तमसरजहेत ॥ जामेंहिंसाहोयबहु प्रकृतिराक्षसीतौन ।
जामें होयमदादि बहुसो आसुरिमतिभौन ॥ जे महान दैवीप्र-
कृति आश्रित सत्वप्रधान । ते अनन्यमन भजहि मोहिं गुणि
अव्ययमतिमान ॥ भजनस्वरूप कहियतु हैं ॥ सन्तत कीर्तत मोहिं ते
दृढ़व्रत मनजित स्वक्ष । प्रणमत नवधा भक्तियुत गहिउपास-
नादक्ष ॥ ज्ञानी भजत अभेद गुणि गुणि कोउ सेवकस्वामि ।
भजत कोऊ गुणि सर्वगत कोउ त्रिमूर्तिको गामि ॥ हम मख
स्वाहा स्वधाहबि अग्निआज्य द्विजमंत्र । हम माता धाता
पिता बेद्य प्रणव अरु तंत्र ॥ भर्त्तागति साक्षी शरण सुहित
निवास निधान । प्रभव प्रलय प्रभु बीजहम हैं अव्यय मति-
मान ॥ हम बरषत हम तपत हमकरत अवर्षणरूप । हम अमृ-
तु हममृत्यु हम सत अरुअसत अनूप ॥ जे सुयज्ञकरि इष्टि
मोहिं चहैं स्वर्गमें ओक । पाय पुण्यफल ते बसत सुरनायककै
लोक ॥ भोगि स्वर्गगत पुण्यह्वै पतत भूमिपै फेरि । वेद निष्ठ

कामी इबिधि लहत गतागतहेरि ॥ जे अनन्य चितभक्त मम
भजत मोहिंयुतभक्ति । तिनके रहति अधीन नित सर्बयोग की
पंक्ति ॥ औरहि पूजत भक्तियुत जेऊतेऊ भक्त । मोहीं पूजत
पार्थ पै अबिधि पूरबकशक्त ॥ हमहीं हैं सबयज्ञके भोक्ता ईश
महान । मोहिं न जानत तत्त्वसों ताते तपत न दान ॥ जे ध्या-
वत हैं जिनहिं ते अवशि तासुढिगजात । जे ध्यावत हैं मोहि
ते मम ढिग आवत तात ॥ पत्र पुष्पफल तोय जो अरपत
हमहिं सभक्ति । ह्वै प्रसन्न हम लेतसो तस्योपरिअनुरक्ति ॥
अशन हवनदानादि जो करहुकर्म ब्यापार । करौ ममार्पणतौन
सब यह मत मंजुलसार ॥ इमि संन्यास सुयोगसो युक्तात्मा ते
तात । कर्मबन्ध शुभ अशुभफल सो छुटि ममढिगजात ॥ हम
सबमें समभाव अरु है मोहिं प्रियनाहिं कोइ । ढिगबर्त्ती ऐकी
अगिनि शीत देति है खोइ ॥ यदपि दुराचारी महत मोहिंभजै
जोउ सोउ। साधुमानिबे योग तेहि कहौ असाधुन कोउ ॥ शीघ्र
होतधरमात्मा लहत शांति सोदास । ध्रुवतुम जानो नशत नहिं
ममजन लहत सुपास ॥ बैश्यशूद्र तियआदि दै पापयोनि हैं
जेउ । मम आश्रित ह्वै परमगति ध्रुवपावत हैं तेउ ॥ ममसु
भक्त जो पुण्यजन अकथनीयहै तौन । लोक अनित्य असुख
हिलहि मोहिं भजै पटुतौन ॥ ममपूजक ममभक्त जे मोमें रत
मतिमान । लहत परमपद तेसुबुधिपापशान्ति बिज्ञान ॥

इतिभीष्मपर्बणिकृष्णार्जुनसंबादेराजबिद्यागुह्यबर्णनोत्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

श्रीभगवानुबाच ॥ दोहा ॥ तव हितार्थ फिरि कहत हौं बचनप
रमसुदान । सुनो धनंजय तौनतुम तासु पूर्ण प्रियमान ॥ नहिं
जानत ऋषि सुमनगण ममसुप्रभवहेतात । सबऋषिगण अरु
सुमनके हम हैं आदि बिभात ॥ अजअब्यय अरु लोक को
ईश्वर जानत मोहि । जेते सब मानवन में असम्मूढ़ बिधिजो
हि ॥ असम्मोह बुधिज्ञानसम क्षमासत्य दमदान । सुख दुख





भाव अभावभय अभय अहिंसामान ॥ समता तपयशअयश
अरु तुष्टिभावजो होत । पृथक् पृथक् ते भूतमें मोसों करत उ-
दोत ॥ सनकादिक ऋषिचारि अरु भृगुआदिक ऋषिसात ।
चौदह मनु मानस सम तिनसों सबजग जात ॥ मम बिभूति
अरु योग यह लखत तत्त्वसों जौन । निस्संदेह सुयोगते युक्त
होत है तौन ॥ हम सबके हैं प्रभवअरु न्यामक सुनो यथार्थ ।
भावयुक्त बुधमानिइमि भजत मोहिं हे पार्थ ॥ जासु चित्तमेंहम
बसत शतधा ते मतिमान । कथत मोहिं मोमें रमत तोषतमो-
सों न्यान ॥ तिनभक्तनकहँ देतहम बुद्धियोग सो तात । जातेमो
ढिगप्राप्तिते अमलअनन्यबिभात ॥ नित्यप्रकाशित चारुअति
ज्ञानदीपसों तासु । हमनाशतअज्ञानतम करिअनुकम्पाआसु ॥
अर्जुनउबाच ॥ परब्रह्म परधाम अज अब्यय पुरुषपुरान । आदि-
देव तुमकहँ चहत नारदादि मतिमान ॥ आपहु कहोसो सर्ब
सति नहिंसंशयहै नेक। जानत हैं न स्वरूपतव सुरअरुअसुर
अनेक ॥ आपुहि अपने रूपको जानतहौ तुमनाथ । यातेमो-
को जानिकै निज चरणनकेसाथ ॥ फिरिअशेषतेकहौप्रभु निज
बिभूति ब्यारूयान । जासों ब्यापि समस्त जग बर्त्तितहो मति
मान ॥ किमिजानै केहिभाव में चिन्त्यमान तुमतात । बिस्तर
सों सो कहहु प्रभु सुनिमोमन न अघात ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ आ-
पनि दिब्य बिभूतिहम पारथ तुमसों भन्त । कहिप्रधानताता
सुनहिं बिस्तरसों मम अन्त ॥ सब भूताशय आतमा हैं हम
मतिमान । आदिमध्यअरु अन्त हम सबकेसुनहु निदान ॥
आदित्यनमें बिष्णु रबि ज्योतिमानमें भात । शशिनक्षत्र में
मरुतगणमें मरीचिहमतात ॥ कबित्त ॥ वेदनमें सामवेद देवनमें
बासव औ इंद्रिनमें मनचेत भूतनमें हमहैं। रुद्रनमें शङ्कर अ-
क्षनमें धनपति बसुनमें अग्नि सिखरीमें अरुहम हैं । गुरुसु-
राधनमें सिन्धुसरिता गनमें सबसेनापतिनमें कार्त्तिकेयहमहैं-

ऋषिनमें भृगुबरबाणीमें एकाक्षरयज्ञनमेंजपतरुमें अश्वस्थहम
हैं ॥ अपरं ॥ ऋषिनमेंनारदहिमालयथावरनमें औसिगरेगन्धर्बनमें
हमचित्ररथहैं । सिद्धनमेंकपिलऔ उच्चैश्रवा अश्वनमें गजन
में सुरगज बीरज अकथहैं । अस्त्रनमें बज्रकाम धेनु धेनुगनमें
औ सर्पनमें बासुकि प्रजन मनमथ हैं । नरनमें नरनाह सा
शस्त्रधारिनमें ध्यायबेके योगनमें हमदाशरथहैं ॥ दोहा ॥ दैत्यन
में प्रहलादहम गणक गणनमें काल । मृगगणमें मृगराजहम
गरुड़ खगनमें आल ॥ गवन कृतनमें पवनहम मकर भखनमें
तात । सुरसरि हम स्रोतसनमें मुनिमें ब्यास बिभात ॥ पितर
में हम अर्यमा हम नागनमें शेष । नियम कृतनमें यम बरु
जलचरमें सबिशेष ॥ कवित्त ॥ आदिअन्त मध्यहम सब सृ
वाननमें अध्यात्मबिद्या सबबिधन में हमख्यात । हमबाद
कतनमें अक्षरनिमें अकारहमहैं अक्षय काल हममृत्युअबद
त ॥ द्वन्दहै समासन में हम कामफलप्रद हमहीं वृहत सा
साम वेदमें बिभात । हमऐश्वर्य हमस्मृतिमेधा धृतिक्षमा कीर्ति
बाणीश्रीहैं सबनारिनमेंहमतात ॥ अपरं ॥ छन्दनमें गायत्री मास
में मार्गशीर्ष तेजतेजवाननमें ऋतुन में ऋतुराज । छलन
जुवाव्यवसायन में जय हम तेजनमें तेजवान सत्वनमें सा
साज । वृष्णिनमें बासुदेव पाण्डवमें पारथ औदण्ड दण्ड
तनमेंकबिनमेंकबिराज । नीतिजीति चाहकमें मौनगुह्य मंत्रन
ज्ञानज्ञानवाननमें राजानिमें सम्राज ॥ दोहा ॥ सर्बभूतको बीज
सो हमहैं हेपार्थ । हमैंबिना जो भूतसो नाहिं कछु सुनहुयथार्थ
हैनदिव्य ममभूतको अन्तसुनो हेआर्य । एकदेशसों एकहैं
बिभूति कृतकार्य ॥ ज्ञानबुद्धिबल रूपधन बिद्याआदि समस्त
कीउतकृता जहँलखौ तहँममभूतप्रशस्त ॥ ज्ञानवानतुमहौ क
कहैअधिक हेतात । एकअंशसों सर्बजग मेंहमब्यापि बिभात
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेबिभूतियोगवर्णनोचतुर्दशोऽध्यायः





अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ नाथकृपाकरि जो कहे परमगुह्य ब्या-
ख्यान । सो सुनिभो ममभ्रम शमन दमन मोहअज्ञान ॥ भू-
तनको भवनाशकृत सुनो सबिस्तर तात । लखोचहत तवरूप
प्रभु जोपर परम बिभात ॥ जो तेहि लखिजे योगमोहिं जानौ
तत्वनिकेत । तौदरशावहु रूपनिज सानँदकृपा समेत ॥ श्रीभग-
वानुवाच ॥ लखहु पार्थ ममरूपसो शतसहस्र सहभेष । बिधि
गिरिसागर आदिजग तनमें लखौ अशेष ॥ नहिंलखि सकि
हौ पार्थयहि चखतेसी ममरूप । दिव्यचक्षु हम देतहैं निरखौ
प्रभाअनूप ॥ इमिकहि दरशावतभये प्रभु परमेश्वररूप ॥ चख
मुख पगभुज अनगिने अदभुत दरश अनूप ॥ दिव्यगन्ध
स्रकआभरण आयुधधरे अनन्त । सर्बआचरणसों भये केशव
कमलाकन्त ॥ एककालमें सहसरबि दिपैंगगनपै आय । तऊ
नतहँ प्रभुकी प्रभा कीसमताकहि जाय ॥ पृथक् पृथक् तहँसर्ब
जग प्रभुकेतन मधिदेखि । करिप्रणाम पारथकहे बिस्मय सों
हियभेखि ॥ प्रभु निरख्यों तुव देहमें सर्बभूत समुदाय । शिव
बिरंचि सुरसिद्ध ऋषि उरगबिहँग खगराय ॥ निरखिपरे अग-
णित उदर चखमुख ऊरू हाथ । आदि अन्त अरु मध्य तुव
लखि न परत हेनाथ ॥ चारुकिरीटी अरुगदी चक्री बर्चसधा-
म । लखततुम्हैं ज्वलनार्कसम दुरनिरीक्षअभिराम ॥ वेदितव्य
अक्षरपरम तुमप्रभु बिश्वनिधान । साश्वत रक्षकधर्म्मके पुरु-
षोत्तमभगवान ॥ शशिरबिनेत्र अनन्तप्रभु नित्यअनादि अ-
नन्त । दीप्तहुताशन बदनजग लहि तुवतेज तपन्त ॥ नभमाहि
सबदिशिमें भये पूरित एकअनूप । ब्यथितभयो त्रैलोकप्रभु
लखितुम उग्रस्वरूप ॥ रोला ॥ कितेअसुर समूहशरणे होततब
तजिदर्प । कितप्रणत सिद्ध ऋषिगण करत अस्तुतिअर्प ॥
रुद्रबसु गन्धर्ब आश्विनि साध्यमारुत यक्ष । पितरसुर साचरज
निरखतकरे अचपल अक्ष ॥ उग्ररूप निरेखि यहभे ब्यथित

सिगरेलोक । ब्यथित कैहम सधृति नहिंलहि दीप्तिको अव-
लोक ॥ दशन बिकट कराल कालानल सदृश तब आस्य
देखिदिग भ्रमभयो मोहिं प्रसीद लखिमम दास्य ॥ पुत्रस
धृतराष्ट्रके सहसैन नृपति समूह । औरजेमम संगके महिपाल
अरु भटजूह ॥ सर्बतेतव मुखेप्राबिशत शलभअगिनि समान।
परेदशनान्तरनि चूर्णित उत्तमांग महान ॥ बेगसों जल नदिन
को जिमि उदधिमाधि चलिजात । तथा प्रविशत सकलये तुव
बदनमें हेतात ॥ दीहरसना करत चालन जगतग्रसत समान।
करेप्रतपित लोकत्रयकरि तेजपरम प्रधान ॥ कहौप्रभु करिकृपा
को तुम उग्ररूप अमान । चहत जान्यो भेदतुव नहिंलहतकरि
अनुमान ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ लोकक्षयकृतकालपरम प्रबुद्धहम पर
वान॥बिनापाण्डव सर्बसुभटन करब शीघ्र अप्रान ॥ लरौताते
लहौशत्रुन जीति सुयश अमन्द । हतेहमसों सकलयेतुव ब्याज
मात्र स्वछन्द ॥ संजयउबाच ॥ कृष्णकेये बचन सुनिकै पार्थयुग
करजोरि । कम्पिगदगद ह्वैरोमांचित कहेनौमि बहोरि ॥ सत्य
प्रभु तुवप्रकृतिसों जगलहत त्रयबिधि जौन । बिश्वतुमसों
ब्याप्त तुम परधाम आनँद भौन ॥ आदिकर्त्ता आपु कर्त्ता के
अनादि अनंत । अग्निरबि शशि दिशपलोकप तुमहिं श्रुति
स्मृतिभंत ॥ बिश्वकरता बिश्वपालक बिश्वमें भगवान । बार
बार प्रणाम सब दिशि सों तुम्हहिं मनमान ॥ क्षमेहुप्रभु मम
अज्ञताके भावसिगरे तौन । कृष्ण हे हे सखायादव कहतहैं हम
जौन ॥ दोहा ॥ यहतुव महिमा महततेहि बिनु जाने हे नाथ।
वाप्रमाद वाप्रेमसों वासहास रहिसाथ ॥ शयन अहार बिहार
में अनुचित भाष्यो जौन । पिता पुत्रको क्षमततिमि क्षमहुँकृपा
करि तौन ॥ लखेअगोचर रूपयह ब्यथव्रतहै मोहिंत्रास । चा-
रुसउम्य स्वरूप गहि दीजै नाथ सुपास ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ मम
प्रसन्नता ते लखेहु तुमममरूप सगौर । जपतप मख दानादि





करिलख्यो न कबहूं और ॥ तजौ भीति अब लखहुमम पूर्ब
स्वरूपउदार । इमिकहि दरशावत भये रूपमदनमदगार ॥ कहै
पार्थ यहरूपलखि मोसप्रकृति ममचेत । सुनिप्रसन्नह्वै कहत
मे केशव कृपानिकेत ॥ ममस्वरूप दुरदर्श है लखेहु पार्थ तुम
ताहि । लखिबे को बांछित रहत नित्य सुमनगण चाहि ॥ वेद
यज्ञ तप दानसों नहिंस्वरूपसों दृश्य । है शुचि भक्ति अनन्य
सों ज्ञातदृश्य अस्पृश्य ॥ नित्य समर्पण कर्मकृत परम भक्त
ममजौन । बर्जित संग ममत्व बिनु प्राप्त होत मोहिंतौन ॥
इतिभीष्म पर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादे बिश्वरूपदर्शनबर्णनोपंचदशोऽध्यायः
अर्जुनउबाच ॥ दोहा ॥ सगुण स्वरूपी तुमहिंजे ध्यावत है सर्ब-
ज्ञ। ध्यावत निर्गुण जे तिनमधि प्रभुके योगज्ञ ॥ श्रीभगवानुबाच ॥
नित्यलग्न श्रद्धा सहित मोमें मन आवेशि । ध्यावत जे मम
भक्तते हैं मोहिंयुक्त बिशेशि ॥ ध्यावत इन्द्रिन नियमि जे अगुण
अचिंत्य स्वरूप । प्राप्तहोत मोमें तेऊ पाय सुसिद्धि अनूप ॥
पै अचिंत्य अब्यक्त में करि अशक्त नितिचेत । लहत क्लेश
अतिही सुनो पारथ बुद्धिनिकेत ॥ जे मम बिषे समर्पि कै सर्ब
कर्म कृतजात । मोहिंजपत हमतासुहैं उद्धरता हे तात ॥ मोमें
मनथापित करें बुद्धि प्रवेशनकार्य । देहत्यागके अन्तसों निव-
सत मोमें आर्य ॥ जो मोमें नहिं करिसकै थिरचंचल मनताहि ।
तौ अभ्यास सुयोगसों करै आप्त मोहिंचाहि ॥ जो अभ्यास में
अक्षम तौ करिये ममहितकर्म । ममहित करिकै कर्मनर लह-
त सिद्धि तजिभर्म ॥ ममहित कर्मन करिसकै जो मम आश्रित
अक्ष । कर्मनके फल पक्षको करैत्यागतौ दक्ष ॥ श्रेय ज्ञान अ-
भ्यास सों ध्यान ज्ञानसों श्रेय । ताहूसों फल त्याग अरु तासों
शांति अमेय ॥ निर्द्वेषी शुचि कारुणिक निर्मम योगी तुष्ट ।

कुलनाथात्मज गोपीनाथकबिने शान्तिपर्बके मोक्षधर्म के छः अध्यायतक व दानधर्म के प्रारंभ से रिबंशतक बनाया ॥

मनबुधि मोमें आर्पिमम भक्तमोहिं प्रियपुष्ट ॥ अनहित का
न आपुनहिं होतकबहुं उदबिग्न । जोभय हर्ष अमर्ष बिनु
प्रियमोहिं अबिघ्न ॥ अनपेक्षी दृढ़ निश्चयी उदासीन स
भाव । तजेसर्ब आरम्भ सो ममप्रिय भक्तसचाव ॥ मुदितहो
नाहिं पायप्रिय दुखित न अप्रिय पाय । समसुखदुख अरिमि
में सो ममभक्त बनाय ॥ निन्दा अस्तुति तुल्यजो अपटुमौ
अनिकेत । तुष्टलहैजो ताहिमें थिरमति भक्तसहेत ॥ तजे स
अरु शुभअशुभ तजे दोषजे सर्ब । तुल्यमान अपमानसु
दुखमों भक्त अखर्ब ॥ धर्म्यामृतयह परम हित यथाउक्त तौ
जौन । चाहि उपासत साराधिक भक्त मोहिं प्रियतौन ॥
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेभक्तियोगबर्णनोनामषोडशोऽध्याय

अर्जुनउवाच ॥ दोहा ॥ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञऔ ज्ञानज्ञेयहैं जौन
प्रकृति पुरुषके येकहौ जान्यो चाहततौन ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
शरीर है क्षेत्र है सुनो बुद्धिमत पार्थ । चित आत्मा क्षेत्रज्ञ
जानत याहि यथार्थ ॥ सर्बक्षेत्रमें पार्थ मोहिं जानहु प्रभुक्षेत्रज्ञ
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको ज्ञान ज्ञान सर्बज्ञ ॥ जो अरुजैसे क्षेत्र
जासु बिकार बिभात । जैसो तासु प्रभाव सो सुनो सबिस
तात ॥ ऋषिगणसों अरुवेदमें ब्रह्मसूत्रपद माह । पृथक् पृ
है कथित सो सुनो पार्थ नरनाह ॥ अहंकार बुधिभूत अरु
न्द्री मन शब्दादि । इनमें क्षेत्र प्रसिद्ध है कहत वेद विद नादि
इच्छासुखदुखद्वेषधृति अरुचेतनाउदार । मनइन्द्रीअरुआत
ये हैं क्षेत्र बिकार ॥ अथज्ञानलक्षणम् ॥ कवित्त ॥ कोमलता शांति
अदंभता सुअमानित्व शुचिता औ थिरता अहिंसानिरहंका
बैराग्य इन्द्रियार्थ बिषे आत्म निग्रह आचार्यको उपासना
चित्तत्व ब्यवहार । इष्ट औ अनिष्ट बिषे समचित्त गोपीना
जन्ममृत्यु जरा ब्याधि दोष दुःखकोबिचार । पुत्रदारऔ गृ
दिमेंअशक्तता सदैवमो मधिअनन्य भक्तिकीबो ज्ञानहैउदा





दोहा ॥ जो निर्जन सेवित्व अरु जनगण बिषे अप्रीति । नि-
ति शास्त्रज्ञ सुज्ञानमें कीबो निष्ठा नीति ॥ चारु तत्व ज्ञानार्थको
दरशन हैमतिमान । इनको कहिये ज्ञान अरु इनते इतर अज्ञा-
न ॥ अब कहियतुहैं ज्ञेय जो सुनो तासु ब्याख्यान । नशत न
असतअनादि जो परब्रह्मभगवान ॥ पाणिपाद शिर नेत्रमुख
श्रुतिसबदिशि में जासु । बिलसत सबथर ब्यापि सो बेदबदत
गुणतासु ॥ सर्बेन्द्रिय के गुणनिको ग्राहक बिस्वेबीश । बर्जित
सब इन्द्रियनसों अनाशक्त जगदीश ॥ बाहेर अन्तःभूतगण
चर अचरसुजान । अबिज्ञेयसूक्ष्मत्वते निकटदूर थितवान ॥
है अभिन्न सब भूतसों बिलसत भिन्नसमान । भरता हरता
भूतगणको प्रभु ज्ञापक ज्ञान ॥ सबज्योतिनके ज्योतिकृत तमते
परे बिहार । ज्ञेयज्ञानसों गम्य हम सर्ब हृदिस्थ उदार ॥ क्षेत्र
ज्ञान अरु ज्ञेय कहि प्रगट सुनायेतात । जाहि जानि मम भक्त
मम भाव हेतु लपटात ॥ प्रकृति पुरुषये जगतके जननी जनक
अनादि । सोबिस्तर सों प्रगट करि कहैं वेद बिदनादि ॥ कार-
ण कार्य कर्तृत्वमें हेतु प्रकृती दक्ष । सुख अरु दुख भोक्तृत्वमें
हेतु पुरुष परतक्ष ॥ कारणहै इन्द्रिय सकल अरु शरीर है का-
र्य । लगीरहतिहै बिषयमें याते जानत आर्य्य ॥ करत पुरुष
प्रकृतिस्थि ह्वै प्रकृतिज गुणको भोग । कारण सद सद योनि
को त्रयगुणको संयोग ॥ दर्शक न्यामक नित्य जो भर्त्ता भोक्ता
तात । परमात्मा प्रभु ख्यातसो तनमधि पुरुष बिभात ॥ प्रकृ-
ति पुरुषकहँ गुणनिसह इमि जानतहैं जौन । बर्त्तमान सबमें
तऊ फेरि न जन्मत तौन ॥ देखत आतमहि आपुमें कोउ करि
आपुहिध्यान । कोउ सांख्य बिधियोगते कोउ करिकर्मबिधान ॥
जे अजान इन बिधिन मधि तेसुनि गुरु के बैन । ध्यावत आ-
त्महि नेम सों तेऊ तरत सचैन ॥ थावरसंगमहैं जिते तेसिगरे
हैं तात । क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संगम सोहैं जात ॥ परमेश्वरसब

भूत में सम बिलसत है पार्थ। नहिं बिनशे बिलसत लखत य
सो लखत यथार्थ ॥ सब थर सम इस्थित प्रभुहि सबथर ल
खतसमान । पुष्ट करतसब भांति निज कारय तौन सयान
प्रकृतिहिसों क्रियमाण है तिते जिते सबकर्म । लखत अकर्त
आतमहि लखत लखत सो पर्म ॥ पृथक् भावसबभूतको ज
निरखै एकस्थ । लखै बिस्तरित एकसों लहै ब्रह्मसों स्वस्थ
अनादित्व अगुणत्वसों प्रभुदेहस्थ प्रशस्त। करत न कछु ता
ते नहीं होत दोषसों ग्रस्त ॥ तथा सर्वगत आतमहि कर्मन
लिप्त करोत । यथा सर्वगत सुष्णतासों नभ लिप्त न होत
यथा प्रकाशत सकलजग कहँ रबि एकअमन्द । तथाप्रकाश
त क्षेत्रसब क्षेत्री परमस्वछन्द ॥ लखतक्षेत्र क्षेत्रज्ञको ज्ञानच
क्षुसों बीच । भूतप्रकृतिपर मोक्षबरते नरलहत निभीच ॥
इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेप्रकृतिगुणबर्णनोनामसप्तदशोऽध्याय

भगवानुवाच ॥ दोहा ॥ उत्तमासिगरे ज्ञानसों फिरि कहियतुप
ज्ञान । परम सिद्धि मुनिगण लहत जाहि जानि सबिधान
यह शुभज्ञान उपासिकै लहि मम रूपहि तात । कल्पादि सुक
ल्पान्त में कबहुँनशत नहिंजात ॥ सत्वरजस तम त्रिगुण ये प्र
कृतिज सुनु कैस्वस्थ। बरधिबाधि ते करत है देहिनको देहस्थ
एकएकये बराधि जिमि बाधत करि जे कार्य । सो सबक्रमसों
कहत हैं सुनो धनंजय आर्य ॥ बढ़त सत्वतबहोत है निर्मल ह
दय सज्ञान । तासोंसुख संगमाहि लहि बँधत जीव मतिमान
बढ़े रजो गुणके बढ़ति तृष्णा महत अमान । कर्मसंग लहि
बँधत तासों जीवसुजान ॥ तामस बढ़े अज्ञानबढ़ि करत ह
यको अन्ध । लहि प्रमाद आलस्य तब जीव होतहै बन्ध
सत्व प्रकाशक सुख जनकरजस करावत कर्म । ज्ञानगोपित
मस करत प्रगट प्रमाद अधर्म ॥ सोरठा ॥ सत्वरजतमाहिगोपि
रजतमसत्वहिद्वाबिकै । सत्वरजाहितमलोपि प्रगटकरत निज





धरम ॥ दोहा ॥ ज्ञानशर्म्मकर सत्वरज ज्ञापक कर्मसलोभ । ता-
मसकरत प्रमाद अरु क्रोध मोहमदक्षोभ ॥ बढ़े सत्वके करत
तन त्यागन जो तनवान। सोसोलोक लहैलहैजेतत्वज्ञसुजान ॥
बढ़े रजसतन त्याग जो करत होतनर तौन । पावत कुत्सित
योनितन तजत बढ़े तम जौन ॥ सात्विकिको फल ज्ञानसुख रज
को फल दुखपर्म । तामस को अज्ञानफल बरणत ज्ञातामर्म ॥
होत सत्वसों ज्ञानअरु रजसों लोभ महान । तमसों मोह प्र-
मादअरु होत अज्ञान अमान ॥ गच्छत ऊर्ध सतोगुणी राजस
तिष्ठत मध्य । अधोगच्छत हैं तामसी असत्कार्य आराध्य ॥ क-
र्ता जानत गुणिहिजो नहिं आपुहि युतचाव । निजकहँ गुणि
तम गुणन ते परे लहतममभाव ॥ जब देहीइन त्रिगुणकहँ जी-
तत सहित बिधान । जन्ममृत्यु दुखसों तबहिं मुक्तहोत मति-
मान ॥ अर्जुनउवाच ॥ त्रिगुणहि जीते को कहा चिह्नकहो सो
तात। काअचार केहिभांति प्रभुअनघत्रिगुणतरिजात ॥ श्रीभग-
वानुवाच ॥ सत्वप्रवृत्ति बारजतमस कियोकरैनिजकर्म । इमिगुणि
मोमेंलीन नितरहत तौन बिदमर्म ॥ उदासीनवत रहतसो अ-
नालिप्त सर्बत्र । गुण प्रगटत निज गुणनि इमि अचल गुणत
सर्वत्र ॥ सुखदुख कंचन उपल प्रिय अप्रिय तेहि सम पार्थ ।
त्यागीसबके यतनको जीतेगुणनि यथार्थ ॥ सोरठा ॥ जपतमोहिं
तजिओत गहि अनन्य शुचिभक्ति जो । जीतिगुणनिकहँहोत
ब्रह्मभावके योगसों ॥ दोहा ॥ तातपर्यते ब्रह्मको हम सुप्रतिष्ठा
स्थान । अरु साश्वत शुचिधर्मको अरु परसुखको स्थान ॥
इतिभीष्मपर्वणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेप्रकृतिगुणभेदबर्णनोअष्टादशोऽध्याय :

दोहा ॥ ऊर्द्ध मूल अधशाख अरु परण छन्दमय यज्ञ । तरु
अश्वत्थ जग ताहिजे जानतते वेदज्ञ ॥ सोरठा ॥ सबके ऊरध
स्वक्ष ईश्वर अव्यय परम है । ताते अधसुनु दक्ष जीवतौन
शाखा बपुष ॥ कबित ॥ बढ़ो गुण जलसों सुबिषय प्रबालयुत

शाखा अधऊरधको परसे लसत तासु । अध मूल लसैंते मैं करमानुबन्धीकृत ऊरधसों क्रमतेत्यों अधसोंकरेप्रकासु । आदि अन्त ध्रुवरूप दीसै ताहि तरुकोण ताहिसंग त्यागदृढ़आयुध सों छेदि आसु । शोधै तेहि पदकी सुगैल जाहिआपिफेरि परसै न भूमिमोदैपाय सरसै सुपासु ॥ दोहा ॥ मैं शरणागत नाथइमि आरत बचनसुनाय । प्रकृति पुरातनको प्रभव पुरुषहि लहत सचाय ॥ निर्मानी निर्मोह जित संगअदोष अकाम । ध्यानाव-स्थित चितलहै परमसुपद अभिराम ॥ यहां न दीपत सूर्यशशि नाहिं पावक शुचिरूप । जहां जाइ नाहिं फिरत फिरि सोममधाम अनूप ॥ शुद्ध सनातन अंशमम जीवभूत अबिभंग । सो मन सह ज्ञानेन्द्रियन कहँ नित राखतसंग । तिन प्रकृतिस्थन कहँ लये गहत तजत तनतौन । गहेरहत तिनकहँ तथा यथागन्ध कहँ पौन ॥ कबित ॥ रसनाकरण चक्षुघ्राण परसनमन इन्हैं मय तनुतन तामैं नित्य बासकरि । बिबिध बिधाननके थूलदेह मैं बिलसिभोग बिषयानको करत महामोदभरि । कहैं कबि गो-पीनाथ यह जो वृत्तान्त ताहि जानत न मूढ़ जाने ज्ञानवान ध्यानभरि । ऐसे मनसह पंचतत्त्वन सखानसम सब थर रहै संग लीन्हेंजीवमायाकरि ॥ दोहा ॥ तेजअग्निशशिसूरमें सोमम तेज अमन्द । हमपोषतसब औषधिन कहँ ह्वै सोम स्वछन्द ॥ धारत भूतसमूह हम महिमें प्रविशि बिचारि । हम पचवत जठराग्नि ह्वै अन्नजौन बिधि चारि ॥ हम सबके हृदयस्थहैं हमरो सोस्मृति ज्ञान । सबदेवनमेंवेद्यहम करतावेद बिधान ॥ कबित ॥ लोकमें पुरुषदोय क्षर औक्षर सुनो क्षर प्रतिबिम्बवत होतनाशमानजौन । अबिकारी अचल सोअक्षर अमन्द औरै तिनसों इतरपरमात्मा प्रसिद्ध तौन । धारे सब लोकन जो अ-क्षरसों परे ताते ख्यात पुरुषोत्तम न प्रकृति तियाको रौन । यहि बिधि जानतजे मोहिं पुरुषोत्तम ते मोहिंको भजततासों





सरवज्ञ दूजो कौन ॥ सोरठा ॥ परम गुह्य यह शास्त्र कहे पार्थ जेहिजानिकै । कृत्यकृत्य सतपात्र बुद्धिमान नरहोत है ॥

इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेपुरुषोत्तमंयोगबर्णनोएकोनविंशोध्यायः

श्रीभगवानुबाच ॥कबित्त॥ राजसीतेहोतनरतिन्हैंदोयसम्पदहैदैवी अरुआसुरीते सत्यतमकेनिदान । मृदुताअहिंसाक्षमातप यज्ञ सत्यशांतिअभयअलोलुपतादयाशमदमदान । ज्ञानकोसंयोग औस्वध्यायकरुणो अद्रोहतजत्याग धीरज सुशौचकीबो जप ध्यान । इन्हैंआदिसतकाज दैवीसम्पदातात सेवतसप्रेम तिन्हैं सत्वमयमतिमान॥ अपर॥दम्भदर्पअभिमानक्रोधरुच्छताअज्ञान आदिकलिखेजे गणेकारजअसतहैं । सम्पदाते आसुरीहैबन्ध करताइन सेवैं सदा तामसीते अधकोखसतहैं । त्रातासबथर मैंसुदाता मंजुसुकृतिकी गोपीनाथदीह दैवीसम्पदा लखतहैं । दैवी शुचि सम्पदामें प्रगटभये हौ तुम शोच मतिकरो शोचें शोच सों ग्रसतहैं ॥ दोहा ॥ दोयभूत यहि लोकमें आसुर दैव प्रधान । कहे देव अब कहतहैं आसुर को ब्याख्यान ॥ आसुर जन मानत नहीं प्रवृतिनिवृति ब्यवहार । शौच सत्यजानतन तेनहिं जानत आचार ॥ कहतअनीश्वर जगतकहँ कहि अ-सत्यउपखान । रजबीरज संभव सकलनाहिंकछु आनविधान ॥ यहि बिचारमें दृष्टि करि नष्टात्मा अज्ञान । उग्रकर्मकर जगत केनाशक होत अमान ॥ काममये अतिदम्भ युत मानमदा-न्वित मूढ़ । असतग्रहण करि मोह ते चरत अशुचि ब्रतगूढ़ ॥ मरणावधि चिन्तित रहत योग क्षेमके हेत । कामभोग उतकृष्ट यह निश्चय करत अचेत ॥ आशापाश सहस्रसों बद्धभरेरिसि काम । मदनभोग हितधन सचतकरि करि कुतसितकाम ॥ यह भोमोकहँ लब्ध यह ममपौरुष सों प्राप्त । निरखिअन्य धनक-हत यह ह्वैहैं ममहैआप्त ॥ मैं मार्‍यों यह शत्रुकहँ हतिहौं और अनेक । हम ईश्वर भोगी सुखी बलीसिद्ध सबिबेक ॥ हमकु-

लीन जनवान हम नहिं मोसमकोउअन्य । इमि मोहितअज्ञा
न सों गुणत आपु कहँधन्य ॥ थरअनेकमें लायाचित भ्रम
मोहकेजाल । कामभोगरतते पतत जहँअतिनरककराल ॥ आ
पुहि जानत आपुबर सधन भये अभिमान । करतयज्ञसो दं
सोनाम हेतु अविधान ॥ अहङ्कार बलदर्पअरु युतकामादि
सर्ब । निज परदेहस्थहि सुमोहिं द्वेषत ईर्षत खर्ब ॥ परेआसु
योनिमें अमोकरत तेमूढ़ । मोहिं लहे बिनु लहतहैं क्रूर अध
गतिमूढ़ ॥ तीनि नरकके द्वारहैं काम लोभ अरु क्रोध । इ
त्यागि आचरतते करत परम गतिशोध ॥ करिउल्लंघन शा
स्त्रबिधि चरत स्वइच्छा जौन । सिद्धि परमगति सुख शुभहि
नहिं पावतहैं तौन ॥ ताते शास्त्र प्रमाण सो कारज कृत्यअकृ
त्य । शास्त्र उक्त्य बिधि जानिकै है गुणि करिबो नित्य ॥

भीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंवादेदैवासुरुसम्पदबिभागबर्णनोबिंशोऽध्याय

अरजुनउबाच ॥ सोरठा ॥ जेकै श्रद्धावान त्यागि शास्त्र बिधिमख
यजत । सत्वरजसतमन्यानकहा तासुनिष्ठाकहौ ॥ श्रीभगवानुबाच ॥
दोहा ॥ देहिनकी श्रद्धात्रिधा पूर्बकर्म परभाव । सात्वकि राज
सि तामसीहोति सुनो गहिराव ॥ श्रद्धासबको होतिहै शुद्धसत्व
अनुसार । जेहिजासिश्रद्धाहोतितेहितैसोपदनिरधार ॥ सात्विक
ध्यावत सुरनकहँ राजसराक्षसयक्ष । भूतप्रेतगण कहँयजत
तामस भ्रम प्रतक्ष ॥ जेअशास्त्रमत गहि तपत दम्भ युक्तत
घोर । रागरतेते बिनुलखे ममआज्ञाकीओर ॥ भूतग्राम देहस्थ
अरु हम हृदयस्थस्वछन्द । तेहि कृश करजानौतिन्हैं असुर
निश्चयीमन्द ॥ कबित्त ॥ आहारयज्ञ तपदानये त्रिबिधहोत ति
नको कहत जौन भेद ब्यवहारहै । आयुसत्वबलसुख प्रीतिऔ
अरोग्यकार धृत सिता क्षीरयुत सात्वकि अहारहै । अतिकटु
आमल लवण अति अति ऊष्णराजसीको प्रिय शोक दुखद
अहारहै । अशुचिउच्छिष्ट गतरस कांचो औअसद्य तामसअ





हारसोअनाछो अनाचारहै ॥ अपरं ॥ यज्ञहैं त्रिबिधतामें सात्व-
किकी सुनो रीति फलमें अईहा ताको प्रथमबिधानहै । वेदउक्त
ईश्वरकी आज्ञा जानि करतब्य बिधिवत की खोजी यज्ञसात्व-
कि महानहै । फलचाहि दम्भयुत नामकाम हेत जौन कय्यो
जातयज्ञ तौन राजस अमानहै । मंत्रहीन बिधिहीन श्रद्धा द-
क्षिणा बिहीन अन्न दान हीनयज्ञ तामस मलानहै ॥ अपरं ॥
कायिक औ बाचिक औमानस त्रिबिधतापपूजन सुमनगुरुप्रा-
ज्ञद्विजगनको । तीरथ परयटनस्नान ब्रह्मचर्य्य मृदुता औ
शुचिता अहिंसा तपकायिक सुजनको । अनुद्वेगकर सत्यप्रिय
हित बोलिबो औपुण्य पाठवाक्तप मोदकश्रवनको । शुचिमन
परहित हेतिबो औ भावशुद्धि मौन आत्मनिग्रह अरागतपमन
को ॥ अपरं ॥ श्रद्धासों तपित तप होतहै त्रिबिध सुनोफलआ-
शा त्यागि कियो सात्वकि परमहै । सतकार मानपूज्य ह्वै हेत
दम्भयुत कय्यो जात तप तौन राजस करमहै । कार्य सिद्धिदे-
हनाशाबधि हठि कीबो और साधिबो मशानजामें जाहिर भ-
रमहै । परनाश हेत हेति करै उग्रतपतौन तामसतपस्या ताको
तीक्षण मरमहै ॥ अपरं ॥ देशकाल देखिदीबो अन उपकारीबर
पात्रनको जानि तौन सात्वकि सुदान है । प्रति उपकार हेतदी-
बो दीबो फलचाहि क्लेशित ह्वै दीबो तौन राजसबिधानहै । दी-
बो जो अपात्रको अदेशकालमाधिक असतकार दान तौन ता
मस मलान है । ताते यह बूझि कीबो सात्वकि को साधन सो
मतिमान जनताका सरससयानहै ॥ दोहा ॥ ॐतत्सत् ये त्रि-
बिध हैं शुभद ब्रह्मकेनाम । प्रथमतिन्हैं उच्चार बिधि करैं वेद
मखग्राम ॥ तातेॐ तत्सतइति उचारि वेदविददक्ष । तपमख
दानादिक क्रियाकरै सुबिधिवतस्वक्ष ॥ तपमखदानादिकक्रिय-
हि शुचि मतितत इतिमानि । करत मुमुक्षु फलार्थबिनुवेद उक्त
अनुमानि ॥ साधुभाव सतभावमें अरु सुकर्म में पार्थ । सतशा-

ब्दहि योजितकरत वकताशुद्ध यथार्थ ॥ दानयज्ञ तपमेंसुरी
सोंसतहै मतिमान । असतअश्रद्धासोंकरत जौनयज्ञतपदान
इतिभीष्मपर्बणिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेश्रद्धाबिबेकयोगबर्णनोएकबिंशोध्याय

अरजुनउवाच ॥ दोहा ॥ नाथतत्त्व संन्यासको अरुसुत्यागकोतत्व
पृथक् पृथक् चाहतसुन्यो कहौ सहितभिनत्व ॥ श्रीभगवानुवाच
काम्यकर्म को न्यासतेहि कहत सुकबि संन्यास । सर्ब कर्मफ
त्यागको कहत त्यागबुधिरास ॥ त्याजकर्म जेदोषवत कहतप
मतिमान । कहत अपर मख दान तप कर्मन त्याज बिधान
तामेंमम निश्चय सुनो त्यागत्रिबिध हेआर्य्य । सात्वकि राज
स तामस सुकारण अनुगतकार्य्य ॥ यज्ञदान तपकर्म ये हैं
त्याज्य हैं कृत्य । चित्तशुद्ध करियेसकल पावनकरता नित्य
तजि ममत्व अरु त्यागिकै सर्बफलाशा स्वार्थ । शुद्धकर्म क
तब्यनिति यहमम निश्चयपार्थ ॥ शतधा कृत्यसुकर्मको त्या
न उचित अराग । करत मोहसों त्यागजो सो है तामस त्याग
दुख स्वरूप गुणि कर्मजो तजत क्लेशभय मानि । सो है राज
त्यागनाहिं तौनत्याग फलदानि ॥ वेदउक्त करतब्य गुणि कर
कर्म सबिधान । करतफलाशा त्यागसो सात्वकि त्यागमहान
कबित्त ॥ कर्मजे दुखद तिन्हें निन्दत हैं जेन औ न सुखद क
जानि इष्टकरि लेत हैं । सत्वसमाबिष्टते प्रविष्ट तत्त्व ज्ञापन
उतकृष्ट मतिह्वै फलाशा त्यागिदेतहैं ॥ देहवान त्यागिन
कत हैं अशेषकर्म ताते कर्मफल त्यागी त्यागी ते सहेतहैं । इ
औ अनिष्ट मिश्र तीन कर्मफल तेवै त्यागी कौन लभ्य
अत्यागी के निकेत हैं ॥ अपरं ॥ सिगरे करम ताके सिद्धि है
सुनो पार्थ सांख्य शास्त्रबिषे पांचकारण बिख्यात हैं । देह
अधार अरुकर्त्ता ममत्व बुधि करण जे इन्द्रिमन आदिक
भात हैं । चलनादि चेष्टाअरुदैव जौन प्रारब्ध तीनौं बिधि
इनहींसों कीन्हेंजात हैं । तामधि अकेले आतमा को मानैं





ताते दुर्मतिअज्ञात हैं न पटुअवदातहैं ॥ दोहा ॥ नहिंहम करता
जाहि हैं अतिशय दृढ़यहभाव । सोयाहिलोकहि हतेहुनाहिं होत
बद्ध तजिचाव ॥ ज्ञानज्ञेयज्ञातात्रिबिध कर्म कथनमधिख्यात ।
करण कर्म करता त्रिबिध कर्म ग्रहण मधितात ॥ कबित्त ॥ ज्ञान
कर्म करता येत्रिबिध गुणभेद सो है सांख्यमें कथितहैसो जानै
ज्ञानी मुनिये । भिन्न भिन्न भये सर्बभूतमें अभिन्नभाव मानि-
बो जोज्ञान तौन शुद्ध सातौ गुनिये । न्यारेन्यारे देखिन्यारे न्यारे
भाव मानिबो जो न्यायमत ज्ञानहि गुणैरजो गुनिये । दूहैं सर्ब-
मयआत्मा कै जानिबोसो ज्ञानै तामस प्रधान बोधकोसो मतौ
सुनिये ॥ अथत्रिबिधकर्म ॥ रागद्वेषफल चाहत्यागि करतब्यगुणि
कृतजौन कर्मतौन सात्विक बिहारहै । फलहेत दंभसो प्रयास
करि कियोकर्म जौनतौन राजसको असदअचारहै । परपीड़ा
हिंसा और अयुक्त द्रब्य ब्ययवान मोह सों कियो सो कर्म
तामस असारहै । सोई सावधान तत्त्वबिद जे बिचारि करिसा-
त्विक करम मुक्तिपदजो उदारहै ॥ अथ त्रिबिधकरता लक्षणम् ॥ धीर
उतसाह युत अहंकार रागबिनु सिद्धऔ असिद्ध समसात्विक
तेकरता । रागी सफलाशा लुब्ध हिंसात्मक औ अशुचि हर्ष
शोकवान कर्त्ता राजसअचरता । आलसी अयोग्य शठ दीर्घ-
सूत्री औ अनम्र अबिबेकी कर्त्ता तामसी जे अनादरता । सा-
त्विक फलाशा त्यागि पावत अचलते जे दोयतिन सों न छूटै
भाव क्षरता ॥ छप्पै ॥ गुण प्रभावसों बुद्धि त्रिबिध है सुनिये
सुधि सों । बन्ध मोक्षयुत हेतु गुणति है सात्विकबुधि सों ॥
कृत्यअकृत्य अधर्म धर्म अयथा बिधि जानत । सोहै राजसबु-
द्धि सदा असतै बिधि हानत ॥ धर्महि अधरम गुणति धर्म
अधर्महिं गुणि चरति । सर्ब अर्थ बिपरीत इमि गुणि तामस
बुधिअघभरति ॥ अपरं ॥ त्रिबिधहोतिधृति जौनि प्राणइन्द्रीमन
गनकी । गतिजोजासों रुकैतौनि सात्विक धृतिजनकी ॥ अर्थ

धर्म अरुकाम हेतुकीबांछाभावनि । तेहिगहिजो थिररहतितौनि
राजसिधृतिबावनि ॥ जोशोकस्वप्नभयमोहमद अरुबिषादगहि
नहितजति । तौनितामसी धृतिअहितनितिअघगतिकीमतिस
जाति ॥ छप्पै ॥ त्रिबिध होतसुख सुनौजौन सुखप्रथम जहरसम
अन्तअमीसम होत तौन सुख सात्विकअनुपम ॥ इन्द्रीबिष
सँयोग आदि अमृतसमजोसुख । बिषसमलहि परिणाम तौन
राजसदायक दुख ॥ अरु आदिहु अन्तहु बिषसदश आल
को मोहन असत । जौन प्रमादज तौनसुख तामसतासों स
नशत ॥ दोहा ॥ पृथिवी दिव देवन बिषे ऐसो कछूनपार्थ । प्रकृ
तिज गुण सो हीनजो जानहु इतो यथार्थ ॥ महिखरी ॥ भेवि
क्षत्री बैश्यशूद्र स्वधर्म अनुगतगुणमये । सोधर्म गुणअनुस
र तिनके कहत जे त्यागित नये ॥ शमशान्ति दम बिज्ञान शु
चिताकाजजे सतपरमहैं । आस्तिक्य मृदुता ज्ञानतेसबविप्र
शुभकरमहैं ॥ धृतितेज आयुधमें कुशलताशूरता सानँदगहै
अरुदान ईश्वरता स्वभावज क्षत्रिके येकरमहैं ॥ बाणिज्य गो
पालन कृषीये बैश्यके निति धर्म हैं । ये तीन तिनकी करबसेव
शूद्रको कृत मर्महैं ॥ नहिं निज करमरत रहत जेते लहतसि
यह ध्रुवगुनो । निजकर्म करिकै ईश्वरहि नितअरचि सिधि
वत सुनो ॥ निजधर्म बिगतो अंगपरकेसांगमोंहैश्रेष्ठहे । नहिं
होत किल्विष कबहुंकीन्हे नियतधर्मयथेष्ठहे ॥ निजधर्मस्व
भाविक न त्याज्य सदोष तदपि महानहैं । आरंभ सिगरे दो
युत नितिधूम अग्नि समानहैं ॥ नहिं होत कितहूं शक्त निस्पृ
रहत सबथर सबिधि जो । फल त्यागते सो लहतअतिबर नि
ष्टति पथकी सिद्धिजो ॥ दोहा ॥ सिद्धि मिलै जिमि मिलतहैब्रह्म
सुनो मतिमान । कहत सबिधिसो ज्ञानकी निष्ठापरअमलान
त्यागे शब्दादिक बिषय तजे द्वेष अरुराग । आत्महि निश्च
धैर्यसों करे द्वन्दको त्याग ॥ शुचि सुबुद्धि सों युक्त अरुध्या





योग परदक्ष । निर्जनबल सेवीकरै कायबाक मनस्वक्ष ॥ बैरा-
गी लघु भोजनी निर्मम निरहंकार । काम क्रोध तजिशान्तते
पावत ब्रह्मउदार ॥ ब्रह्मज्ञानी मोदमें कांक्षा शोच बिहाय । सब
में सममति लहतहै मम सुभक्ति सुखदाय ॥ जानत सोममभ-
क्ति सो ममस्वरूपको भेद । जानि भेद सो मम बिषे प्रविशत
तजि निर्वेद ॥ मम जपको आश्रय गहे करै जऊ सब कर्म ।
मम प्रसादसों लहतसो जो शाश्वत पदपर्म ॥ लहि बिवेक बु-
धि अरपिमोहिं कर्मनित्यनैमित्य । ममशरणागत होतपटुबुद्धि
योग आश्रित्य ॥ ममप्रसादसों दुर्गसब तरतममाश्रितजौन ।
अहंकारसों नहिं सुनत यह मत बिनशत तौन ॥ ज्ञानगर्व सों
जो कहौ लरब न तौ सुनिलेहु । सोमिथ्याकै प्रकृति वश लरि-
हौ हैं ध्रुव येहु ॥ कर्मज सगुण स्वभावसों परबश परे समान ।
मोह त्यागि लरिहौ सुनत कटुपर बचनअमान ॥ ईश्वर निति
सब भूतगणको हृदयस्थ यथार्थ । गुणीदारुदारा सदृशसबहि
भ्रमावतपार्थ ॥ होहु तासु शरणागतै शुभबिधिसों मतिमान ।
ताके शुभद प्रसादसों लहिहो पर सुस्थान ॥ पारथ हम तुमसों
कह्यो परमगुह्ययहज्ञान । तेहिबिचारि सोईकरौ इछौ जो मति-
मान ॥ परमबचनममसुनहुफिरिसर्बगुह्यतमजौन । हौअतिदृढ़
ममइष्टतुम तातेकहियततौन ॥ मदाकार मनभक्तमम ममहित
करताकर्म । ममसुप्रणामीलहत मोहिंहैप्रिययहदृढ़मर्म ॥ कबित्त ॥
ममसुप्रणामी मदाकारमन ममभक्तहोहु हेतिहोहुमम हेतकरता
सुकर्म । मोहिंप्राप्तह्वैहौ प्रिय जानिकै कहत सत्यकरिकै प्रति-
ज्ञा यह निज भेदको सुमर्म ॥ और एककहत सुनोसो मनदैके
गहौएक मेरो ईश्वर न त्यागिकैसकलधर्म । सिगरे जे पाप ता-
ते तुम्हैं मोचिहौं मैं तात शोच मतिआनोसांचमानो मों बच-
नपर्म ॥ दोहा ॥ जे न शुश्रूषा कराहिं जे अतप अभक्तमलान ।
ममद्वेषी तिनसों कबहुं हैन बाच्ययहज्ञान ॥ करियोजित मम

भक्ति में परमगुह्य यह जौन । परमभक्ति मम बिषे कहि प्राप्त
होतमोहिंतौन ॥ मम प्रियकृत तिनके सदृश हैनभूमिपैआन
कहत सांच नाहिं अन्यथा सुनोपार्थ मतिमान ॥ सुनहिं पढ़हिं
पढ़ि गुणहिं जे यह मम तुव सम्बाद । क्रमसे सो उतकृष्टपद
लहहिं सहित अहलाद ॥ ह्वै यकाग्रचित सुनेहु सो जो हम
कही यथार्थ । सुने मोह अज्ञान तुव मिट्यो कहौ हे पार्थ ॥
अर्जुनउवाच ॥ नश्यो मोह प्रगटीसुस्मृति तुव प्रसादसों ईश ।
त सन्देह निदेश तुव करिहौंबिस्वेबीश ॥ संजयउवाच ॥ परमपु
रुष हरि पार्थको यह अद्भुत सम्बाद । ज्ञानयोग प्रद हम सुने
लहिकै ब्यास प्रसाद ॥ सुमिरि सुमिरि सम्बादसो अनुक्षण
प्रगटत हर्ष । नृपति सुमिरिसो रूपभो बिस्मय मुद उतकर्ष ।
जहँ योगेश्वर कृष्णप्रभु पार्थ धनुर्द्धर यत्र । श्रीमति नीति बि
भूति जय ममसत है ध्रुवतत्र ॥

इतिश्रीकृष्णार्जुनसंबादेसंन्यासादितत्त्वनिर्णययोगबर्णनोद्वादिंशोऽध्यायः

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ मोह त्यागि यह तत्त्वसुनि गुणि करतब्य
स्वधर्म । रणहित भे सन्नद्धगहि शरधनु पार्थ अभर्म ॥ शरधनु
धारे पारथहि निरखि महारथ सर्ब । बीर बचन कहि कहि
उमहिं गरजे गहि गहि गर्ब ॥ चौपाई ॥ पाण्डव आदिक सबभट
रूरे । शंखबजावत भे मुदपूरे ॥ भेरी आदि बजे बहु बाजे
धीर धुरीण बीरबर गाजे ॥ सुर गंधर्ब पितर गण मोदत । ऋ
षिगण सुरपति संग बिनोदत ॥ युद्धलखन हित हुलसे मनमें
नभपै थिरे आइ तेहि क्षनमें ॥ तात्क्षण धर्मराज बिधि ज्ञाता
तजि शर धनुष कवच तनत्राता ॥ रथते उतरि अकेले सादे
शत्रुसेन मुखचले पयादे ॥ यहिबिधि भूपहि जात निरेखी
पारथ हिय संशयसों भेखी ॥ रथते उतरि पयादे धाये । भाइन
सहित भूपपै आये ॥ गेतहँ बासुदेव सब जानत । नृपगण गर्व
आचरज मानत ॥ नृप सों कहे धनञ्जय ऐसो । अब तुम करत





काज यहकैसो ॥ इबिधि जुरे दल तजि उतसाहू । का गुणि
शत्रुसेन मधि जाहू ॥ भीमसेन आदिक सबभाई । यहिबिधि
कहत भये समुझाई ॥ चलेजात नृप सुनियह बानी । दिये न
कछु उत्तर अनुमानी ॥ कहो कृष्ण हँसि हमसों जानी । जो नृप
धर्म नीति उरआनी ॥ बन्दि गुरुनकहँ कारज करई । सो जय
लहै न टारे टरई ॥ सर्बशास्त्रबिद नृप नयगामी । जात गुरुन
ढिग जययश कामी ॥ दोहा ॥ नृपति धर्मकहँ भीष्मपै यहि बिधि
आवत देखि । दुर्योधनके सुभट सब कहत भये अवरेखि ॥
लखौ युधिष्ठिर भूप डरि मेलकरन के हेत । जात भीष्मढिग
लाज तजि कुलहि कालिमा देत ॥ चौपाई ॥ लखे बिना सेना लखि
हारो । ऐसो कहूंन निलज डरारो ॥ जाके ऐसो पक्ष सुभाई ।
सो कस शत्रुन देखि डराई ॥ अल्प पराक्रम अति भयसाने ।
नृपतियुधिष्ठिर नितिके जाने ॥ इबिधिपरस्पर कहि सुनि सि-
गरे । हरषित भये भूप मति बिगरे ॥ हँसिबोले अब सुनो चुपा-
ई । का ये कहत भीष्मसों जाई ॥ भो संशय दुहुँ दलमधि
राजा । जात भीष्मपै नृप केहिकाजा ॥ जाइ भीष्मपै नृप मुद
माचे । बन्दिचरण करजोरि उबाचे ॥ तात न करत बनत स-
माषन । चाहत युद्धअर्थ अनुशासन ॥ देहुकृपाकरि आशिष
आला । जासों मिलै बिजयकीमाला ॥ कहोभीष्म सुत मोढिग
आयहु । बर अनरथकर मूल नशायहु ॥ नातरु लखि अनुचित
सुत पापा । देइत दुसह अजयकर शापा ॥ अब प्रसन्न हम
सुत मुदपागौ । तजि संशय बांछित बर मांगौ ॥ दास अर्थ के
पुरुष सबहू । अर्थ न दास पुरुषके कबहू ॥ ताते दुर्योधन बिधि
बाधे । है मोहिं अर्थ सुगुणसों बांधे ॥ निज दिशिह्वै लरिबेसों
आना । मांगौ निज हितकर बरदाना ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहेयुधि-
ष्ठिर इतहीं रहहू । ममहित होइ मंत्रसो कहहू ॥ दोहा ॥ कहे
भीष्मतुव अर्थको साधन कहो न जाय । कौरव की दिशि त्यागि

छल लरब धर्म मम न्याय ॥ मोसों लरि जय जोलहै ऐसो
महिपाहिं । नरपति नरकी को कहै सुरनायकऊ नाहिं ॥ युधि
उवाच ॥ योहींसों करजोरि मैं मांगों कृपानिकेत । कहि औरन
आपुसों जय लहिबेके हेत ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनोपार्थ आ
रेखि निजदलमें अबजाहु फिरि । मृत्यु कालमम देखि आ
फिरिममपास तुम ॥ जयकरी ॥ तबह्वै बिदा भीष्मसों भूप । ग
द्रोणपै आनँदरूप ॥ करि परदक्षिण करि परणाम । जोरिपा
करि बिनय सकाम ॥ कहोरहो भीषम सों जौन । कहो द्रोण
तेहिबिधि तौन ॥ सोई कहो द्रोण मतिमान । प्रथम कहो
भीष्म सुजान ॥ सोकहि कहो द्रोण सज्ञात । हम प्रसन्न मां
बर तात ॥ कहे भूप हम पावैंजीति । सो बिधान साधैंकरि प्रीति
कहे द्रोणहै ममध्रुवधर्म । कौरवके हित लरिबो पर्म ॥ लरि ह
सों जयपावै जौन । ऐसोतीनिलोकमें कौन ॥ तुव ईछितके
धिकीबात । लखि निदानकछु कहो न जात ॥ कहभूप तुवबिक्र
जानि । हम इमि कहे जोरियुगपानि ॥ तुम ज्ञाताकाकहौं बुझ
य । निज बधकीबिधि देहु बताय ॥ कहोद्रोण नहिं असको
बीर । मोहिं हतै जो धनुधर धीर ॥ जब हम मरण आ
ठानि । होहिं अचेत अचलकरि पानि ॥ शस्त्र बिहीन निरा
तब आय । बधै बधैसो लाजभुलाय ॥ अतिसति बकता
सबिधान । सुनि दृढ़ अप्रिय बचन अमान ॥ त्यागैंगे हम
धनु बान । सुनोभूप यहसत्य महान ॥ दोहा ॥ द्रोणाचार
बचन सुनि नृपभरेहुलास । करिप्रणाम ह्वैबिदागे कृपाचार्
पास ॥ सबिधिबन्दिपगकहतभे कहेभीष्मतेजौंन । सुनिआ
सोईकहो कहोभीष्महैतौन ॥ सोकहिकृप नृपसोंकहे निजदि
थितिसोंआन । चाहौसोमांगौनृपतिधर्मशीलमतिमान ॥ सोर
मम जयहेतु अचार्यनिज बधकी बिधिदेहुकहि । यह कहि
गुणिआर्य कहि न सके मोहित भये ॥ नृपके चितकीचाह गुणि





गौतमनृपसों कहे । हम अबध्य नरनाह ममबधको न उपाय
कछु ॥ युद्ध ब्यवस्था देखि हम रणतजि जैहैं अनत । तुम जय
लहौ बिशेखि सत्यकहत संशयतजौ ॥ रोला ॥ कृपायुत कृप के
बचन सुनि नृपतिपूरि अनन्द । जायमातुल शल्यपै करिउचित
कृत्य अमन्द ॥ कहो है जो भीष्मसों सो कह्यो सो सुनिशल्य ।
कहे भीषम प्रथम जो हो कहे बचन अशल्य ॥ भूप कौरव त-
रफ ह्वै हम लरब अब ममधर्म । याहि तजिजो और चाहो
कहो तौन सुकर्म ॥ कहे पांडव सूत सुतको तेजनाश सनेम ।
युद्धमें तुम कीजियो मम सुजय हेत सप्रेम ॥ माद्रपतितबकहे
करिहैं अवशि हमयहकाज । जाय अब निज सैनमें तुम करो
युद्ध समाज ॥ सहित बन्धुन निजसैन प्रति गये नृपअभिराम ।
सूतसुतके पासगे तब कृष्णआनँदधाम ॥ जायतासों कहो प्रभु
हम सुने यह हमकर्ण । भीष्मसों करि द्वेषत्यागो युद्धकरि दृढ़
पर्ण ॥ लरैं जौलौं भीष्म तौलौं चलौ उनकी ओर । आइयो
फिरि इतै जूझे भीष्मके लहि भोर ॥ कहो करण कहौ कहातुम
कृष्ण कैसे बैन । भूमिपति को अप्रिय करिबो उचित हमको
है न ॥ बचन यहसुनि गये केशव जहां पांडुनरेश । हैं युधिष्ठिर
करे निजदल सौंवपै शुभभेश ॥ धर्मनृप तहँ पुलतु स्वरसों क-
हो बांह उठाय । करैआय सहाय ममजो गुणे धर्म सुन्याय ॥
बचनयह सुनि रहे चुपह्वै सुभटसिगरे धीर । कहो टेरियुयुत्स
हमहैं तुव सहायकबीर ॥ भाषि इमिसो भेरिदुन्दुभि कौरवीदल
त्यागि । आय पांडव भूपसों भो मिलत अति अनुरागि ॥ राज
पुत्र युयुत्सको नृपकरि उचित सतकार । कवचभूषण शस्त्रधारे
चाहि युद्ध बिहार ॥ आदिनृपते सर्व निजानिज बाहननपैजाय ।
ब्यूहढिगकरि पूर्ववत भे लसत सुखमाछाय ॥ बजे बाजे दुहूं
दिशिगो शब्द दशादिशिपूरि । लगे हींसन तुरगगाजन लगे
मंगल भूरि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ संशय यहिबिधि दर्पयुत जुटे

उभयदल तत्र । चल्योशस्त्र कितसोंप्रथम कहौतौन अवअ
संजयउवाच ॥ दुर्योधनके बचनसुनि दुःशासन बरबीर । भीष्म
आगे करि बढ़े सह सेना रणधीर ॥ भीमहिं आगे करि प्रब
पांडव सब सहसैन । इच्छियुद्धबर भीष्मसों सन्मुखचले सो
न ॥ चौपाई ॥ हयहींसनि गज गर्जनिभारी । रथ घण्टनकी
बिकरारी ॥ अगणितबाद्य भेद श्रुतिमर्दन । अरुभट गण
भूरिनिनर्दन ॥ भो अति दुसह शब्द तेहि क्षनमें । पूरि र
गुणवान गगनमें ॥ ह्वै सरोषतब भीम भयंकर । गरजत
अरिदल प्रलयंकर ॥ सो गर्जनिसबधुनिसों बर्द्धित । कै कीन
पर भट हिय मर्दित ॥ भीमहि गरजित आवत देखी । तुवसु
सिगरे अतिशयतेखी ॥ सत्वरशर धनुयोजित कीन्हे । भीम
शर छादित करिदीन्हे ॥ जिमि निहार मधिसूर बिराजत । 
मिकरिभीमहिं भे सबगाजत ॥ तबसपुत्र पांडव बलभारे । 
वरतुव पुत्रनपै मारे ॥ बीरअभीर धीरभरिरिससों । मारनल
बाण दुहुँ दिशिसों ॥ चल कोदण्ड न युतते कोहे । बिजुलि
सहित घननिसमसोहे ॥ शरसों बन्धु समागमसाजा । कलुक्ष
देखिरहे सबराजा ॥ चढ़ेचाव फिरिभिरि बलबाढ़े । लगे ल
रण कर्कश गाढ़े ॥ अतिशय तुमुल युद्ध भोमण्डित । हांकि
कि भटभिरे प्रचण्डित ॥ धूरधारमें तरणिछपाने । काहूनिज
नहिं अनुमाने ॥ को आयोको गो केहिमारो । इतोन काहूत
निहारो ॥ दोहा ॥ शोणित सों पूरित धरणि बिरजभई हे भू
ऊरध रज छाई घनी सुखमासनी अनूप ॥ चारु अमल पाव
विषद अध बिषतरित बिभात । रहै धूम ऊपर घुमड़ि यथा
निरबात ॥ तब भीषम तकि पारथहि निजरथ शीघ्र चला
हांकिबाण मारतभये अति उदण्ड दृढ़धाय ॥ चौपाई ॥ पार्थबा
भीषमपै मारे । कोपिभीष्म पारथहिप्रहारे ॥ प्रबल बीर दो
धनुधारी । दोऊरण कर्कश रणचारी ॥ दोऊ दोउनकोबधई





आगेबढ़ैं हटैं नाहिंपीछे ॥ कठिनयुद्ध नृपतिनसों माच्यो । रण
महिमें भीषमताराच्यो ॥ सात्वकि कृतबरमासों भिरिकै । उद्ध
युद्धकीन्हें तहँ थिरिकै ॥ रथचलाय अभिमन्युप्रबीरा । भिरो
वृहद्बलसों रणधीरा ॥ भीमसेन भट भरिरिस अतिसों । भिरो
हांकिनृप कौरव पतिसों ॥ भरोगर्व दुःशासन पुलको । देत भ-
यो भिरि जो रणकुलको ॥ तो सुतजो दुर्मुख भटभारी । तासों
सहदेव भिरे प्रचारी ॥ भिरे शल्यसों पांडवनायक । नृपतिधर्म
जयलहिबे लायक ॥ धृष्टद्युम्न वृत्तान्तबिचारी । चाहि द्रोणसों
भिरो प्रचारी ॥ भूरिश्रवा भूपसहसाजा । भिरोशंख नृपसोंजय-
काजा ॥ जो बाह्लीक भूपवरतासों । अभिरे धृष्टकेतु भरि
भासों ॥ राक्षसबीर अलम्बु सुक्रोधा । तासों भिरो घटोत्कच
योधा ॥ भिरे शिखण्डी अश्वत्थामा । कठिन युद्धकरता जय
कामा ॥ भिरि भगदत्त बिराटमहीपति । लरे चाहि कीरतिअ-
तिदीपति ॥ दोहा ॥ वृहतक्षत्र भिरि करतभो कृपाचार्यसोंयुद्ध ।
तजेशस्त्र प्रति शस्त्रते बध बिचारि अतिक्रुद्ध ॥ द्रुपद जयद्रथ
भिरिभये विरचित युद्ध अमान । तजिअन्योन्य अनन्त शर
किये कठिन घमसान ॥ लरे जूटिसुत सोम अरु तुवसुत बीर
बिकर्ण । हनत परस्पर बाणबर चाहि चाहि परमर्ण ॥ चौपाई ॥
चेकितानअरुसुभट सुशरमा । भिरि भे करत युद्धभरि परमा ॥
भिरे शकुनि प्रति बिन्ध्यअधर्षन । बारिद बाणबूंदके बर्षन ॥
भिरे सुदाक्षिण अरु सुतबरमा । तजै बाण तन तरु के बरमा ॥
इरावाण अर्जुनसुत सोई । लरयो श्रुतायुषसों रिसभोई ॥ नृ-
पति बिन्द अनुबिन्दसुधीरा । सुतसह कुंतिभोज रणधीरा ॥
भिरिभे करत युद्ध अतिभारी । परबध निज निज सुजय बि-
चारी ॥ पांचभाय नृपकेकय थरके । पांचभूपगान्धार बगरके ॥
ते सर्वगभिरि आनँद लीन्हे । कठिन कराल युद्धअति कीन्हे ॥
तोसुत बीरबाहु धनुधारी । लरो उत्तरा सों रणचारी ॥ अर्जुन

सुत अतिशय रण कर्कस। चेदिराटसों भिरो अधर्कस॥ यहि
बिधि द्वन्दसहस्रनि जूटे। रथगजहयसादी जय ऊटे॥ भिं
पदाती भट अनगिनते। शस्त्रअसंख्य चले तहँ तिनते॥ ध्व
ज धनु कवचपरस्पर काटैं। हनेबाणसहि हनि हनि डाटैं॥
हे पूरिशार इतहूं उतहूं। रह्यो न रथ बाकी कहुं कितहूं॥ बढ़ि
बढ़िबीर गर्वगहि गाढ़ो। हनै बाणकहि अब रहु ठाढ़ो॥ प्रबल
प्रकर्ष पराक्रम सगरे। पृथक् पृथक् कहिजातनानिगरे॥ दोहा॥
मच्यो युद्ध तहँ अति तुमुलकहत होत निरवेद। भूपति रह्यो
मुहूर्तभरि प्रगटद्वन्दको भेद॥ तदनन्तर उनमत्तह्वै रह्योनक
छू बिवेक। युगसमुद्रसम उमड़ि मिलिलागे लरन सटेक॥ म
हाराज तेहि क्षण कटे हयगज पुरुष अनेक। घनेघाय घा
सुभटजुरैंमुरैं नाहिं नेक॥ कटि शरसों अभिमन्युके होतहि ध्वज
पपात। भीम मुदित ह्वै करत भे भीमनाद हे तात॥ लखिप्र
पितामह भीष्मतब ह्वै सरोष अनखाय। छाय देतभे कुंवर
बाण असंख्य चलाय॥ चौपाई॥ यहलखि महारथी दशधाये
अभिमन्युहि रक्षण हित आये॥ भीमबिराट द्रुपद धनुधारी
श्वेत उत्तरा अरिमदगारी॥ पांचभायकेकय पतिराजा। आ
ये दश सहित समाजा॥ तिन्हैं देखि भीषम रिसिधारे। तीनि
बाणबरद्रुपदहि मारे॥ एक एक शर सब कहँदीन्हें। तब क्षु
प्रशरकरमें लीन्हें॥ ध्वजा भीमकी काटी तासों। पुरुषसिं
भरि क्रोध महासों॥ तीनि बाणभीषम के तनमें। हनेभीमगर्वि
त ह्वै मनमें॥ एक बाण कृप के तनमारे। कृतबरमा पै बसुश
डारे॥ उत्तर कुंवर गजस्थ सक्रोधा। चल्यो शल्यपै लखि
योधा॥ अति जवसों गज रथ पै आवत। देखि शल्य शरभ
चलावत॥ लगे बाण गज अति रिस धारी। हतेसिचारि हय
नृप रथचारी॥ तब नृप शल्य क्रोध अति कीन्हें। शक्ति अ
मोघ पाणि मेंलीन्हें॥ तजी ताहि उत्तर पै पविसी। नृपसुत





तन मधिमों प्रविसी॥ नृपसुत मुरछि गिरोमहिपाहीं। रह्यो न
जीव क्षणौतन माहीं॥ तब गहि गङ्गगजहि नृपडाटे। रथतेतु-
रित कूदिकर काटे॥ दोहा॥ कटेपाणिगज गिरतभो करि धुनि
मेघसमान। घरी न तनमधि थिरतभो गोपायन करि प्रान॥
ऐसो अद्भुत कर्म करि शल्य भूप हरषाय। कृतबरमाके सुरथ पै
भयो बिराजत जाय॥ बन्धु मरणलखि श्वेत तब अतिसक्रोध
ह्वैडाटि। शल्यआदि भटसातके तुरित दयेधनुकाटि॥ सोरठा॥
तब तेते धनु डारि और और धनु गहतभे। श्वेतक्रोध बिस्ता-
रिकाटि दये तेऊ तुरित॥ सबते गहिगहि शक्ति तजे श्वेत पै
मरण हित। श्वेत शक्तिकी पंक्ति शरसों काटीबीचही॥ तोमर॥
तब श्वेत अतिशय क्रोधि। ध्रुवमरण परकोशोधि॥ नृपरुका
रथके काय। शर हने अति दृढ़घाय॥ शरलगे नृपमुरछाय।
गिरिपरो चेत गँवाय॥ लखि नृपहि मुरछित सूत। रथ दूरि
लागो धूत॥ तब श्वेत करि अति गोर। जेरहैं पटभट और॥
हय सूत धनुध्वजतासु। शरमारि काटे आसु॥ फिरि शल्य पै
करिकोप। भो चलत गहि बध चोप॥ तब भयो हाहाकार। तो
सैन मध्य अपार॥ दोहा॥ शल्य भूप पै रिस भरो श्वेतहि आ-
वत देखि। भयो मरण निजु शल्यको यह तोसुत अवरेखि॥
तब आगेकरि भीष्म कहँशल्यहि पीछे डारि। लरत भये सब
शल्यकहँ यमके मुखते वारि॥ सोरठा॥ नृप ताक्षण तेहि खर्ब
भयो युद्ध अतिशयतुमुल। तोसुतसर्व सगर्ब पाण्डव सर्बसबर्ग
सों॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ यहि बिधि जूटि अधर्मीकिये युद्ध जिमि दे
सकल। सोसबयुद्ध सुकर्म पृथक्पृथक् संजयकहो॥ संजयउवाच॥
चौपाई॥ शत सहस्रक्षत्री भयत्यागे। सेनापति श्वेतहि करिआगे॥
भरे बीररस आनँद पागे। तौसुतको बल देखनलागे॥ भिरे
हांकि दुहुँदिशि के योधा। करि मारुत की गति अवरोधा॥
भीष्म श्वेत भिरि गौरव कीन्हें। अगणित रथ भटबिनु करि

दीन्हें ॥ शिर असंख्य शत्रुनके काटे । रण मण्डल रुण्डन सों
पाटे ॥ अगणित गजहय रथ बिनुभटके । ब्याकुल फिरैं चहुं
दिशि भटके ॥ लगेबाण कितने भट गिरहीं । उठैं सँभारि हांफि
फिरि भिरहीं ॥ लगेबाण भट गिरैं गजनते । जिमि कपिके गा
गिरे कुजनते ॥ बिनाशीश के बहुभट बांके । इत उत फिरैं बी
रसछाके ॥ बाहुकटे भट कितने डोलैं । हटैं न नेकु सामुहेबोलैं
गजते गिरत सांकरनि अटके । इत उत फिरैं बीरबहु लटके
कटैंबाजि गज रथ भट केते । महिपै खरे लरे जयहेते ॥ रहे
बिनुक्षतके भट एकौ । बच्योन शोणित सों थरनेको ॥ कितेबा
धनु ध्वज दुहुंदलके । कटेकटे गज हयके हलके ॥ महाराज
निये दुहुं दलमें । सुभट असंख्य कटे तेहि पलमें ॥ अद्भुत यु
भयो तहँ राजा । कहँ कहांलों सकल समाजा ॥ दोहा ॥ इत भी
षम उत श्वेत ये दोऊ प्रबल अमान । उभय सैन मधिसेशरा
रोपे प्रलय महान ॥ बीरश्वेतके शरन सों ह्वै ब्याकुल भयपाय
हमहिं आदि कितने रहे शरके बाहरजाय ॥ तिनके जीवन दा
निभे भीषम अचल उतंग । उतके ऐसे भटनको श्वेतशैल
अविभंग ॥ गुरुतोमर ॥ बर धनुषके सन्धानसों । नभ छायदीन्हें
बानसों ॥ रबिपरे देखि न दूरलों । घिरि मघाके घनघेरलों
अति शब्दमढ़ि धनु बानके । पथ पूरिदीन्हे कानके ॥ तहँश्वे
बो रण ठानको । नहिं परो सुनि निज आनको ॥ दोहा ॥ पाण्डव
के हित श्वेत अरु कौरव के हितभीष्म । किये युद्ध अतिशय
तुमुल जो देखे अति भीष्म ॥ भीषम मारत तेहि दिवस पांडव
की सबसैन । श्वेत जौन बारण करत महाबीर गजजैन ॥ चौपाई
निज दलमर्दत श्वेतहि देखी । पिता तुम्हारभीष्म अतितेखी
बाण बिशाल श्वेतपैडारे । जे तरु पाहन बेधन हारे ॥ तब भी
ष्महिं भटश्वेत प्रचारे । बाण अमान अनगिने मारे ॥ भीष्महि
श्वेत श्वेत कहँ भीषम । हने असंख्य बाण बरभीषम ॥ दोऊ





बिधिवत धनुबिधि सीखे । दोऊ बर धनुधर मैंलीखे ॥ दोऊ
धनु बिधि सिधि के शीक्षक । दोऊ निज निज जयके ईक्षक ॥
दोऊ अस्त्र अमोघ प्रहारैं । दोऊ अस्त्र अस्त्र सों वारैं ॥ दोऊ
बीर सिंहसम गरजें । लगे अनेक बाणनहिं लरजें ॥ अस्त्र
अमोघ भीष्म के चीन्हें । तिनकहँ श्वेत ब्यर्थ करि दीन्हे ॥ यह
गुणितौ सुत नृपदुर्योधन । गर्वितआय भिरो लैयोधन ॥ तब
वाजि भीष्महि तिनसों लरिकै । तिन्हैं पराजितकरि मुदभरिकै ॥
फिरि भट श्वेत भीष्मसों भिरिकै । लाग्यो लरन पूर्ववत थिरि
कै ॥ वृत्रबिडौजा समते दोऊ । लरत भये नहिं हारैकोऊ ॥
श्वेत सात शर अतिअनियारे । कोपि भीष्मके तनमधि मारे ॥
तबतौ पिताभीष्म अतिरोखे । मारेताहि बाण दश चोखे ॥
श्वेत हने तब गाहिप्रण मनमें । बाण पचीस भीष्म के तनमें ॥
दोहा ॥ अतिअद्भुत यहकर्मकरि बिहँसि श्वेतभट चण्ड । दश
शरसों दशधा कियो भीषमको कोदण्ड ॥ काटिधनुष फिरि शी-
घ्रगहि अन्यबाण उद्दण्ड । तालध्वज बर भीष्मको करतभयो
द्वैखण्ड ॥ केतुपतत लखितौ तनय करतभये अनुमान । करि
निजबश अब भीषमहिं बधत श्वेत बलवान ॥ शंख बजावत
भेमुदित पांडवभट समुदाय । निज सुभटन सों कहत भे दुर्यो-
धन अनखाय ॥ कुरुकुल को रबि भीष्म अब होन चहत है
अस्त । शिथिल पराक्रम ह्वै भये श्वेतदाहसों ग्रस्त ॥ चौपाई ॥
दुर्योधन नृपकी सुनिबानी । भिरे आइ योधा अभिमानी ॥ कृत-
बरमा बाह्लीक नरेशा । चित्रसेन अरुशल्य सुभेशा ॥ जरा-
सन्धको सुत भटभारी । अरुतौ सुतबिकर्ण धनुधारी ॥ अरु
शाल बीरधीर बलवाना । भिरिभे हनतअनेक बिधाना ॥ तिन
सों भिरोश्वेत तब तैसे । भिरैंबायु घन बनसों जैसे ॥ क्षणमें
तिन्हैं बिमुख करियोधा । बहुरि भीष्मसों भिरो सक्रोधा ॥ अ-
तिकर लाघव कीबिधि ठाटे । शरसों धनुष भीष्मको काटे ॥

तब भीषम अतिरिस बिस्तारी। सोधनु त्यागि और धनुधारी
ब्रहुशर हनेश्वेतके तनमें। तब भटश्वेत कोपि अतिमनमें
बाणवृष्टि भीषमपै कीन्हे। कुरुपति कहँशंकित करिदीन्हे॥
भये भीषम यहजाने। पाण्डव गर्ब सर्ब हरषाने॥ सो लखिकै
षम अतिरोखे। तजेश्वेतपै बहुशर चोखे॥ भीषम जितने
चलाये। शरसोंतेसबश्वेतबराये॥ फिरिभीषमकोबरधनुसोऊ
काटोश्वेतलखोसबकोऊ॥ तुरतहिभीषमसोधनुत्यागो। लैय
और महारिसपागो॥ सावधानशर योजित करिकै। भयेतज
धनु बिधि अनुसरिकै॥ दोहा॥ चारौंहय शरचारिसों द्वैशर
ध्वजतासु। एकबाण सों सारथिहि भीषम काटो आसु॥
सूत हय तब प्रबल योधा श्वेत अधर्ष। रथतें कूदिखरो भ
महिपै भरोअमर्ष॥ महा रथिन को श्रेष्ठतिहि भीषम बि
निरेखि। तीक्ष्णबाणअनेकसों हनतभये अवरेखि॥ महिखरो
तब श्वेतकरिअति क्रोधनिज धनुबाण रथपै डारिकै। मणिहे
मण्डित शक्तिबर यमदण्ड समतेहि धारिकै॥ इमिहांकि बोल
भीष्मसों अबजाहु मतिकहुँ भागिकै। बपु खिन्न तनसों भि
प्राणहिं करति यह उरलागिकै॥ यहिभांति कहिसो शक्तिमा
भीष्मपै बलभूरिकै। लखि सुवनतौ सबकिये हाहाकार अति
भय पूरिकै॥ तेहिज्वलत उलका सदृश आवत देखिवेग मह
नसों। हनिबीचही नवटूक कीन्हों भीष्मबर बसुबानसों॥ नि
शक्ति ब्यर्थनिरेखि श्वेत समर्थ भट अतिक्रोधिकै। लैगदाब
समान घनसम गरजि बढ़ि बिधि शोधिकै॥ सो भीष्मपै
तजत तासुप्रभाव बिदते भीतिकै। रथत्यागि महिपै गयेश
प्रभाव ताको रीतिकै॥ सोगदा रथपै परतरथ ध्वजसूत ह
भस्मित भये। तबधाय तौसुत भूपभीष्महि और रथपर क
लये॥ चढ़िऔर रथपै भीष्मधनु टंकारकरि सुखमामये। च
मन्दमन्द अनन्दयुत बढ़िश्वेतके सम्मुख गये॥ दोहा॥ ताक्ष





नभबाणी भई ऐसेमें अबयाहि। करिउपाय भीषमबधै यहक्षण
निर्मित चाहि॥ तहांबिरथ श्वेतहि निरखि पार्षत सात्वकिभी-
म। धृष्टद्युम्न अभिमन्युअरु केकय पतिभटभीम॥ धृष्टकेतुयें
महारथ चलेश्वेतपैधाय। बीचहि तिनसों भिरतभे द्रोणशल्य
कृपआय॥ इमिआड़ेतेतिन्हैं जिमि बायुबेगकोशैल। महतयुद्ध
भिरिकरतभे जीति तरुणिकेछैल॥ सोरठा॥ लखिइनकोअवरोध
श्वेत खड्ग गहिगर्वयुत। अतिप्रगल्भ करिक्रोध काटिदयो
धनुभीष्मको॥ चौपाई॥ तबभीषम अतिरिसबिस्तारे। गहिधनु
बाणचढ़ायसुधारे॥ भीमादिकसुभटनकेतनमें। बहुशरहनेपकारि
रणमनमें॥ तबप्रचण्ड शरकरमें लीन्हों। ब्रह्ममन्त्रसों मंत्रित
कीन्हों॥ ताकोहने श्वेतपै कैसे। बज्रहिदण्ड वृत्तपै जैसे॥ सो
शर कवच भेदहिय भेदी। गोधरणी मधिपर दलखेदी॥ अरि
दल तमको शूरअमाना। श्वेतगिरो तबह्वै गतप्राना॥ सो
लखि पांडव अतिशयशोचे। तोसुत सिगरे चिन्तामोचे॥ दु-
शासन आनँद सों छाये। जङ्गमजय दुन्दुभी बजाये॥ पांडव
अति अमरष सों पागे। थिरिभिरि युद्धकरनफिरिलागे॥ श्वेत
मरणकी अति प्रियबानी। सुनि धृतराष्ट्र कहो अनुमानी॥ जब
मरि परोश्वेत रणधीरा। तबपांडव पांचाल प्रबीरा॥ कियेकहा
सो सञ्जयभाषो। सुनिबेको मममन अभिलाषो॥ पांडवरहि
बिराटके घरमें। लहेबहुत सुखकहिये धरमें॥ ताके दोयतनय
मरवाये। सञ्जयकहो लाज कछुपाये॥ हम अनुमानि कहैंतुम
मानो। अब अनरथको मूल मिटानो॥ पारथ भीमकोपि यहि
कारण। भरिहैं महिशोणित केधारण॥ दोहा॥ हम गान्धारी
कृपाकृप भीष्म द्रोण बलराम। बिदुरब्यास को कहोनहिं मानो
तोसुत क्षाम॥ सब पांडवको मनरह्यो राखैं रीतिसदैव। दुर्यो-
धन हठिरण रचे करैकहा अबदैव॥ संजयउवाच॥ महाराज तेहि
दिवसको तब बीतो युगयाम। भयेप्राप्त तीजोपहर भिरे फेरि

बलधाम ॥ कृतबरमा सहशल्य कहँ देखिशंख बरबीर। सोमि
सुरथ समूहसों भरोकोप रणधीर ॥ दण्डपाणि समचण्ड
टंकारत कोदण्ड । चलोशल्यपै बेगसों गुणिकीबो द्वैखण्ड
इमि शंखहि आवत निरखि जानिशल्यको घात। सातभूप
सिमिटिकै जुटत भये हेतात॥ जयत्सेन अरु वृहद्बल अरु
शल्य नरेश । बिन्दभूप अनुबिन्दये महारथी भटवेश ॥ भू
शल्यको तनय अरुबीर जयद्रथ भूप । एकसाथ भिरिशंख
कीन्हों युद्धअनूप ॥ चौपाई ॥ घूमिघने घनगिरिपै जैसे। बरष
बारिबूंदते तैसे ॥ बाण अनेक शंखपै मारैं । सुभट शंखलखि
रिस बिस्तारैं ॥ तिन सबके धनु सुखमापाटे । सात क्षुरप्रबा
सों काटे ॥ धनुष समूह काटिभो गरजत । परदल भटगण
हियदरजत ॥ सोलखि भीषमअति रिस धरिकै। ताल सह
धनुशब्दितकरिकै ॥ चलेशंखपैघनरवकीन्हें । लखिसब पां
अनरथ चीन्हें ॥ तब सत्वर अर्जुनबढ़ि आगे। भीषमसों
बिरचनलागे॥भिरेसिंहद्वैरणकाननके। कुशलप्रहारकनखबा
नके ॥ परमप्रचण्ड प्रगलभप्रचारैं । मारैंशर शरशरसेवारैं
माच्योकठिन युद्धतेहिपलमें। हाहाकार मच्योदुहुँदलमें॥ तौ
क्षण शल्यगदालैकरमें। रथतेउतरिशीघ्रचलिफरमें॥बधेति
जेमरदनपथके। घोरेचारिशंखकेरथके ॥ असिगहिशंख स्व
परित्यागी । गेजहँपारथरणअनुरागी ॥ गुडाकेशसोंयुद्धविहा
भीषम भिरेद्रुपदसों जाई ॥ अगणितबाण द्रुपदपरडारे । ह
गज सुभट असंख्यसँहारे ॥ केरलमत्स्यदेशकेयोधा । सहस
हतेभीष्मकरिक्रोधा ॥ दोहा ॥ दहैघनेबनको यथालागिदवा
अमान। तथा पांडवीसैन कहँ हती भीष्मके बान॥ तरुणत
णिकहँ ग्रीष्ममें जिमि न सकै लखिकोइ । तिमि ताक्षण त
भीष्मकहँ सक्यो न कोऊ जोइ ॥ ब्याकुल पांडवके सुभटत्रा
लहो न तत्र। ऐसे थरनाहिं हौन हे भीषमके शरयत्र॥ भीष





को धनु देरलों रह्यो मण्डलाकार । हय गज भट कितनेकटेको
करिसकै शुमार ॥ इतनेमें सन्ध्याभई भीषम युद्धबिहाय। कुरु-
पतिकहँ मोदितकिये घनरव शंखबजाय ॥ तदनन्तर ते उभय
नृप निजनिज डेरन जाय। किये अहारादिक क्रिया सहितसैन
समुदाय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिप्रथमयुद्धबर्णनोनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ निज सैनिक नृपभटन कहँ देसुअहार सुपास । धर्म
नृपति बन्धुन सहित गयेकृष्णके पास ॥ रोला ॥ भीष्मकोलखि
कर्म चिन्तित धर्म प्रभुपै जाय । सुजयपैबो जानि दुरलभ क-
हतभे बिलखाय ॥ कृष्णदेखौ भीमबिक्रम भीष्ममममदल भूरि ।
दहत कच्छहि अग्निजिमि तिमि दहत बाणन पूरि ॥ सुभट
मम रणधीर सम्मुख भीष्मके जे जात । ज्वलनते प्रज्वलितके
ढिग शलभ सदृश लखात ॥ बधे लाखन रथी भीषम दिव्य
अस्त्रचलाय । परमउग्र प्रभावसों नहिं बचतभट समुहाय ॥
इन्द्र बरुण कुबेर यमनहिं सकैंभीष्महिं जीति । ताहिजीतै कौन
महिपै जोरि जयसों प्रीति ॥ भीष्म जाकेओर तासों युद्धको
प्रणठानि । होन चाहत सृष्टिमेंहम अनय अघकी खानि॥ सु-
भट सम्बन्धी सुहित ममअर्थ मारेजात । ताततातहू अर्थको न
समर्थलाभ लखात ॥ उदधि बिक्रम भीष्मको तेहिमध्य परि-
हरिसर्व । अवशि ह्वैहैं मग्नअब नहिं बाचिहैं यहिपर्व ॥ भीष्म
केसम अस्त्रबिद तौ सखासों रणकर्म । लखत हैं मध्यस्थ सम
नहिंजानिये केहिमर्म ॥ करतकोमल युद्धयासों शत्रुपावतहारि ।
द्रोण भीषम करण कृपहैं जासुदिशि प्रणधारि ॥ एकभीम सु-
बीर भुज बलसों लरत गहिचाव । हतैचौबिधि सैनबहुदै ग-
दनके गुरुघाव ॥ एकभटके लरेऐसे मिलिहि कैसेजीति । भीष्म
द्रोणादिकन सों जय अन्य दलकी ईति ॥ आपु निरखौ गौर
करि ममसैनमें भटतौन । जलददावहि जिमिकरैं तिमिशान्त

भीष्महिंजौन ॥ कृपाकरि अबकरहु प्रभु निज कृपाको फलव्य
क्त । राज्यलहि हमसबजाते करैंचिन्ता त्यक्त ॥ भाषि यहिविधि
कृष्णसों चुपरहे भूपति धर्म । कहतभे तबधर्म नृपसों कृष्ण
ज्ञाता मर्म ॥ भरत कुलमणि शोचत्यागो होहु धीरजधाम । अ
वशिलहिहौ राज्यअरि हति जीतिकै संग्राम ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न
तब प्रीतिरत सेनानाथ अनूप । हतिहि शिखण्डी भीष्मकौं
निश्चय मानौभूप ॥ यह सुनि धर्म नृपालमणि बोलेबचन गँ
भीर । मम सेनापतिहौ सुतुम धृष्टद्युम्न रणधीर ॥ यह सम्मत
है कृष्णको जीतौशत्रु समस्त । हम सबर्ग हैं तुव अनुग लेहौ
सुयश प्रशस्त ॥ चौपाई ॥ सो सुनिधृष्टद्युम्न हरषाने । बोलेब
चन बीररस साने ॥ सुद्विज द्रोणके नाशन हेतू । निर्मितमोहि
किये वृषकेतू ॥ भीष्मशल्य कृप आदिक जेते । ह्वैहैं कालि
ब्यथित सबतेते ॥ कालिह सैनपै जययश लेहौं । सुभटन समा
सिखापन देहौं ॥ धृष्टद्युम्नकी बाणी सुनिकै । भूप युधिष्ठिरबोले
गुनिकै ॥ बिरचौ क्रौंच ब्यूह मनभायो । जो सुरगुरु सुरपतिहि
बतायो ॥ सो सुनि धृष्टद्युम्न मुदलीन्हें । क्रौंच ब्यूहकी रचना
कीन्हें ॥ चोंचतासु अर्जुन धनुधरता । परदल प्रबल बिदीरण
करता ॥ लैसँग रथीलाखदश साजे । द्रुपद भूप शिरकेथर रा
जे ॥ कुन्तिभोज अरुचैद्य ससाजा । राजेचारु चक्षुह्वै राजा ॥
सत्तरिसहस लाखदशभाये । योधाभये ग्रीवछबि जाये ॥ एका
र्बुद अरु बीससहसभट । सहहैंधर्मपीठिथर परगट ॥ सुवनद्रौ
पदीके रणधीरा । अरु सात्वकि अभिमन्यु सुबीरा ॥ वाहलीक
देशकेर धनुधारी । रथी अयुतसह भीम सुखारी ॥ दक्षिणपक्ष
भये अरिमर्दन । गदा प्रहारक घनसम नर्दन ॥ नकुल और
सहदेवहि आदिक । अयुतरथी रणधीर प्रमादिक ॥ सहबरवा
म पक्षह्वै सोहे । धृष्टद्युम्न सेनापतिकोहे ॥ दोहा ॥ केकयसैन्य
बिराटये जघनपालिहैं भूप । तीससहस्र रथीनसह आयुधगहे





अनूप ॥ उभयपक्ष अरुपुच्छकहँ करिआवृतबरबीर । गजसादी
योधारहेधनुधारीरणधीर ॥ क्रौंचब्यूहयहिबिधिबिरचिधृष्टद्युम्न
मतिमान । सूर्योदय निरखतरहे खरेधरे धनुबान ॥ चौपाई ॥ क्रौंच
ब्यूह बिरचित लखिराजा । दुर्योधननृप सहित समाजा ॥ द्रो-
णाचारयके ढिग जाई । भरेमोद इमिकहे बुझाई ॥ ये सिगरे
ममभट भटनायक । सदल पांडवन जीतन लायक ॥ तिन्हैं
सहित तुममम जयहेतन । रक्षहु निति भीष्महिं रहिजेतन ॥
जयउवाच ॥ तदनु सुभीष्म द्रोणसह चावन । बिरचे महाब्यूह
मनभावन ॥ सुभटअसंख्य रथिनसह भीषम । आगेचलतभये
प्रतिभीषम ॥ भीष्महिं रक्षत द्रोणाचारय । चले अनेकरथिन
सह आरय ॥ सुभट समूह सहित बलभारे । शकुनि द्रोणके हैं
रखवारे ॥ भूरिश्रवा शल्यसह राजा । अरु भगदत्त बिन्दुसह
साजा ॥ अरु अनुबिन्दु आदिभट जाने । रहे बामदिशि आ-
नँदसाने ॥ सोमदत्त अरुबीर सुशरमा । अरुकाम्बोज अधर्ष
अमरमा ॥ अरु अयुतायुश्रुतायु सुदक्षिण । अगणित भटन
सहित हे दक्षिण ॥ कृप कृतबरमा अश्वत्थामा । सात्वत आदि
भूपबर सामा ॥ सुभट असंख्यन सह धनुधारी । रहेपीठिरक्षक
रणचारी ॥ यहि बिधि बिधिवत ब्यूह बनाई । दुर्योधननृप ओ-
जबढ़ाई ॥ सुभटबन्धुगण सहितसोहाते । शंखबजावतभे मुद-
राते ॥ दोहा ॥ सोसुनि पारथ कृष्णप्रभु सहित सुभट समुदाय ।
शंख बजावतभे मुदित सरस शुभद सुखदाय ॥ बाजे बाजन
गहगहे दुहूंओर तहँभूप । नभमहिलौं पूरितभयो शब्दअसह्य
अनूप ॥ तबनिज सुभटनसों कहे दुर्योधन बलधाम । लरहु
शीघ्र हतिपाण्डवन लेहुसुजय अभिराम ॥ सोरठा ॥ सो सुनि
सुभट अमान तजे पाण्डवनपै बिशिख । चलन लगेतब बान
दुहूंओरसों भूपमणि ॥ चौपाई ॥ लागे चलनबाण अनियारे ।
सर्पसदर्प सदृशभयभारे ॥ बीर बिरत्वलखावन लागे । परदल

दन्द मचावनलागे ॥ बाढ़ि बाढ़ि इत उत डाटनलागे । रथ हय
धनुध्वज काटनलागे ॥ शरवर इत उत फरकन लागे । लगि
कुण्डलपै ठरकन लागे ॥ बहुशिर कटिभुज छेदन लागे । बहु
हिय उदर बिभेदन लागे ॥ बहु हययूथ विदारन लागे । बहु
गज गरट सचारन लागे ॥ बहुभट महिपै लोटन लागे । बहु
गिरि भूमि खरोटन लागे ॥ बहु भटघायल ऊबन लागे । बहु
शोणित मधि डूबन लागे ॥ बहुभट घायल घूमनलागे । बहुत
खरे कै झूमन लागे ॥ बहुभट भटन प्रचारन लागे । तकि
तकि बाणन मारन लागे ॥ ऐसो भीषम युद्ध निहारी । धनु टं
कारि भीष्म धनुधारी ॥ भीमादिक सुभटन पैरोखे । तजत भये
अगणित शरचोखे ॥ यहिबिधिवरकर लाघवकीन्हें । ब्यूहभेद
भेदितकरिदीन्हें ॥ अर्जुन निजदल अर्दितदेखी । कहेकृष्णसों
अतिशयतेखी ॥ तातभीष्म ममब्यूह बिमर्दत । गहेगर्व बारिद
सम नर्दत ॥ अब बिलम्ब मतिकरहु गोसाईं । ताढिग चलहु
पौनकीनाईं ॥ दोहा ॥ कहेकृष्ण अबहोहुतुम यत्नवानदृढ़चाय।
तौरथभीषमके सुरथ सोंहमदेत मिलाय ॥ इमि कहि प्रभुयहि
भांतिगे चीरि सुभट समुदाय । जल प्रवाह में मीनजिमि पीन
मीन कढ़िजाय ॥ यथा मत्तद्विप गहनबन मधि तरु अर्दतजात।
तिमि सुभटन मर्दत गये भीषम के ढिगतात ॥ धृष्टद्युम्न सा-
त्वकि सहित अरु अभिमन्यु सुछत्र । सुवन द्रौपदी के गये
अर्जुन के सँग तत्र ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि पार्थहि आवत देखी।
भीषम हियो रोषसों भेखी ॥ बिदित बीर सुखमासों छाये । रथ
बढ़ाइ सन्मुख चलिआये ॥ महारथिनको शीक्षक कूजा । भिरै
पार्थ सों को असदूजा ॥ बढ़िभीषम अर्जुनहिंप्रचारे । हनेबाण
सत्तरि अनियारे ॥ चौंसठि शर दुर्योधन मारे । द्रोणाचार्य
पचीस प्रहारे ॥ हने बिकर्ण तीनि शरचोखे । अश्वत्थामा साठि
अनोखे ॥ तीनिबाण आर्त्ताइनि दीन्हें । तब सगर्व पारथ रिसि





कीन्हें ॥ शर पचीस भीषमपरघाले । कृपाचार्य पै नवशर आ-
ले ॥ दुर्योधनपै अति अनियारे । पांच बाण हनि गरजि निहारे ॥
अश्वत्थामा के गुरु तनमें । हने साठि शर कोपितमनमें ॥ आ-
र्ताइनिपैत्रय शर छांड़े । तीनि बिकर्ण सुभट पै मांड़े ॥ द्रोण
द्रुपदके सुतसों भिरिकै । लागेकरन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ फिरि
भीषम करलाघव लीन्हें । मारे असीबाण बर चीन्हें ॥ तब तौ
तनय हँसे बरियारे । सुनि पारथ अतिरिस बिस्तारे ॥ पैठितु-
रित दलमाधि अतिकोपे । भटसंहारि प्रलय आरोपे ॥ हाहा-
कार मच्यो तौ दलमें । पार्थहते अगणितभट पलमें ॥ दोहा ॥
तब दुर्योधन दुखितह्वै कहे भीष्मसों बात । पारथ मर्दत मम
बलन तुम्हरे देखततात ॥ तुम्हरे कारण करतभट मम हितरत
रणधीर । लरत न पारथसों लखत खरो मौनह्वैबीर ॥ सोरठा ॥
कछु उपाय करितात हतो पार्थ कहँ शीघ्र अब । भीषम सुनि
यहबात क्षात्रधर्म कहँ धिक कहे ॥ चौपाई ॥ गये पार्थ के रथ
प्रतिरथलै । दुर्योधनको सुजय अरथलै ॥ द्रोणतनय दुर्योधन
राजा । अरु बिकर्णये सहित समाजा ॥ रक्षणहेतु भीष्मके
पीछे । ठाढ़े रहत भये जयइछे ॥ सात्वकि आदि बीरधनु
धारी । हे पार्थहि रक्षतरणचारी ॥ भीषम पार्थहि नवशरमारे ।
भीष्माहिं दशशर पार्थप्रहारे ॥ फिरिशीघ्रगशर सहसचलाई ।
दीन्हें दशदिशि जालबनाई ॥ बाणजाल बाणन सों भीषम ।
काटिहने शर अहिसम भीषम ॥ पार्थहि भीष्म भीष्मकहँ पा-
रथ । अगणितशर मारे गुणिस्वारथ ॥ दोऊ बाण अनागिने
मारैं । दोऊबाण बाणसों वारैं ॥ दोऊबीर बिदित धनुधरता ।
दोऊ अद्भुत संगरकरता ॥ दोऊरथ बर इतउत फेरैं । दोऊ
हतिबे की गतिहेरैं ॥ दोउन के रथ अरु धनुदोऊ । मण्डलसम
दरशै सब कोऊ ॥ दोऊ शरपंजर करिडारैं । दोऊबाणन मारि
बिदारैं ॥ दोऊहनैं न दोऊमोहैं । दोऊ भरे रुधिर सों सोहैं ॥

दोउन के हैं बाणनिभेदे । मनसमइतउत फिरत अखेदे ॥ दो
घनसम धनुटंकारैं । दोऊगर्व भरे हंकारैं ॥ दोहा ॥ इकधनु
धुनिसों दई दोऊ दशदिशिपूरि । सो थरतरकस सो करो दो
तजि शरभूरि ॥ तहँ प्रभुके उरमधिहने भीष्मतीनि बरबान
लसेकृष्ण पुष्पिततरुन किंशुक सुतरुसमान ॥ तब अर्जुनअ
तिकोपकरि तीनिबाण संधानि । भीषमके सार्थिहि हने चा
श्रवणतक तानि ॥ जे जाके रथसूतहय धनुध्वजानमें बान
मारे तिनके तिनाहिं तिमि मारे ते मतिमान ॥ भीष्म पार्थभि
भांति यहि कीन्हों युद्धउदण्ड । दोऊ अनुपम परमभट दो
प्रबलप्रचण्ड ॥ चढ़े बिमानन सुरनगण देखिसुयुद्ध बिहार
करीप्रशंसा भीष्मअरु अर्जुनकी बहुबार ॥ सोरठा ॥ यहि बि
युद्ध बिधान सुनिधृतराष्ट्र कहैंतहां । सुनुसंजयमतिमान दैख
है जो सोकरै ॥ तीनिलोकके जौन भीषम तासों पार्थ भिरि
इबिधिलरे यहबैन सुनतहोत बिस्मयमहा ॥ जयकरी ॥ धृष्टद्युम्न
अरु द्रुपद अमान । कैसे लरेकहो मतिमान ॥ सुनिबोलेसंज
मतिऐन । भूपतिकहो न ऐसे बैन ॥ तीनिलोकमें ऐसो कौन
लरिजीतै पारथ कहँ जौन ॥ धृष्टद्युम्न कहँ द्रोणअमान । बे
तभये मारिबहुबान ॥ मारिभल्ल शरबर दृढ़घाय । रथसों सू
हि दयेगिराय ॥ धृष्टद्युम्नतब रिसबिस्तारि । मारे नब्बे बा
प्रचारि ॥ तब करिद्रोण क्रोध बिकराल । करिदीन्हे सब दि
शरजाल ॥ फिरिलीन्हें शरबर अतिघोर । बज्रसमान अ
कठोर ॥ पाण्डवलखि तेहिशरकोरूप । हाहाकार कियेसुनुभू
धृष्टद्युम्न लखिडरे न नेक । रहे अचल सम खेरसटेक ॥ का
दण्डसम आवत देखि । काटो ताहि शरनसों तेखि ॥ सो
बीचहि कटत निरेखि । हरषेपाण्डव सुदिन सरेखि ॥ धृष्टद्यु
तब रिसउरआनि । द्रोणबीरको बध अनुमानि ॥ तजी श
अति तीक्ष्णपीनि । द्रोणकाटि तेहि कीन्हीं तीनि ॥ फिरिका





बिबाणकराल । धृष्टद्युम्नको धनुष बिशाल ॥ दोहा ॥ धृष्टद्यु-
म्नतब गुरुगदा गहिकर अतिशय कोप । तजो द्रोणपै द्रोणके
नाशन को लहिचोप ॥ मारिबाणबर सो गदा बीचहि काटि
आचार्य । धृष्टद्युम्नके गातमधि हने बाणबहुआर्य ॥ सोरठा ॥
धृष्टद्युम्न है चण्ड तबहिं और को दण्डगहि । पांचबाण उद्द-
ण्ड हने द्रोणके गातमें ॥ चौपाई ॥ दोऊ शोणित मये अमेहे ।
पुष्पित किंशुक तरुसम सोहे ॥ फेरि द्रोण काटत भे हनिशर ।
धृष्टद्युम्न भटबर को धनुबर ॥ करलाघव करिकै अतिहरषे ।
धृष्टद्युम्न भटपर शरबरषे ॥ मारि पांचशर बर धनुधारी । बधे
सूत अरुहय रथचारी ॥ फिरिहनिबाण धनुष बरकाटे । करला-
घव की सुखमा ठाटे ॥ बिरथबिधनु रिपुबचननजासों । हनत
गदाभो बरभट तासों ॥ सोऊगदा बाणसों छेदी । गरजेद्रोणा-
चार्य अखेदी ॥ तबगहिखड्ग चर्मअतिभारी । रथतजि धृष्ट-
द्युम्न प्रणधारी ॥ जबसों चले द्रोणपै तैसे । चलैसिंह करिबर
पै जैसे । तहां द्रोण अति पौरुष कीन्हें । बाणनमारि न आवन
दीन्हें ॥ थिरि बीचहि नृपसुतभट चीन्हें । सगरेबाण ढालपर
लीन्हें ॥ धृष्टद्युम्न कहँ यहिबिधि देखी । भीममहारथ अति-
प्रेमतेखी ॥ आइ बेगसों गुरुहि प्रचारे । मारे सातबाण अनि-
वारे ॥ धृष्टद्युम्न कहँ अन्य सुरथपै । थापिलगे बिहरण रण
पथपै ॥ तब दुर्योधन कहे सुगतिसों । भटश्रुतायु कालिंग नृ-
पतिसों ॥ सेनसहित तुम सत्वरजाई । करोसहाय द्रोणकी भा-
ई ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै कालिंगपति नृपश्रुतायु सहसैन । जाइ
भीमसों भिरतभो बरषतबाण सचैन ॥ धृष्टद्युम्नकहँ त्यागितब
निजरथ द्रोणचलाय । द्रुपद बिराटमहीपसों भिरतभयेहरषाय
सोरठा ॥ धर्म नृपति के पास धृष्टद्युम्नतब जातभे । बिरचे युद्ध
बिलास भीमश्रुतायु महारथी ॥ तवधृतराष्ट्रमहीपकहे कहौ सं-
जयसबिधि । किमिश्रुतायुकुलदीपलरोभीमभटप्रबलसों ॥ तोटक ॥

नृपजोसुनिबो अभिलाषत भे । सुनिसंजय सों इमि भाषतभे
दुर्योधनको अनुशासनलै । सहसैन श्रुतायु शरासनलै ॥ जब
दुर्योधनके तटसों । चलिगो भिरि भीम महाभटसों ॥ निहक
क व्यालसमान बने । शर भीमहिं सों तेहिभीम हने ॥ दोहा
केतु भंग नरनाह तब सहनिषाद समुदाय । नृप श्रुतायु केसा
बढ़ि भिरो भीमसों जाय ॥ भानुमान नृपचैद्यपति सोऊबढ़िस
सैन । भिरोभीमके भटनसों सुनि निज नृपकेबैन ॥ रथहय
गणित सहसअरुमैगल अयुत बलिष्ट । पैदरसुभट असंख
सहभेतेसमरप्रबिष्ट ॥ सोरठा ॥ इनसोंभिरेसचायभीमसेनकेसा
थिरि। सहितसैन समुदायचेदिमत्सकारूषपति ॥ चौपाई ॥ उभ
ओरकेसुभटसमाजा । कठिनयुद्धकीन्होंभिरिराजा ॥ पदचारि
सोंभिरेपदाती । भिरेरथिनसोंरथीबिघाती ॥ भिरेअश्वसादीह
सादी॥भिरेगजस्थगजस्थप्रमादी ॥कियेसुरासुरसंगरजैसेलर
भयेतहँतेसबतैसे ॥ रुधिरमासकोकरदमकीन्हें । निजपरसुभ
न काहूचीन्हें ॥ कितने साथहि अस्त्रप्रहारे । साथहि गिरि
तनसों न्यारे ॥ साथहि चढ़े बिमानन हरखैं । संग अपसरन
रण परखैं ॥ कितने बहु प्रति द्वन्दिन मारे । पुरुष सिंहरणी
पिन बिहारे ॥ कितेमरैं बहुसुभट न ज्वैकै । कितने गिरैंअ
मरे ह्वैकै ॥ कितने अस्त्रलगेहू ओलैं । कितने शीश कटे
डोलैं ॥ कितने निजसम सुभट निहारी । मारैंअस्त्रअमोघ
चारी ॥ कितने योजिचाप शरडाटैं ॥ हटैंन शीश शत्रुके काटैं
कितने बिना तके शरत्यागैं । सन्मुख आइपरैं तेहि लागैं॥
हिबिधि घोरयुद्ध तेहिक्षनमें ॥ भयोभूप मणिगुणियेमनमें॥त
उतके भट अरदित ह्वैकै । गयेपिछिलिबलधीरज ग्वैकै ॥भी
मसेन रण कर्कश गाढ़ो । रह्यो रथस्थ अकेलो ठाढ़ो ॥ दोहा
महारथी मणिभीम तहँ करि अतिकोप कराल । कालिंदी द
मधिकरी बाणदृष्टि तेहिकाल ॥ चौपाई ॥ तब श्रुतायुको सुतभ





धारी । शक्रदेव नामकभटभारी ॥ बाणअनेक भीमपैडारे । भी-
मताहि अगणित शरमारे ॥ तब तिहि हतेभीमके रथके । बाजी
गुणिकरता अनरथके ॥ हयन मारिनिजसुदिन निहारी । भयो
हतत बहुबाण प्रचारी ॥ तेहिलखि भीमक्रोध बिस्तारे । गदा
आयसी फेरि प्रहारे ॥ लागति भईगदा तेहिक्षनमें । सूतध्वजा
नृपसुतके तनमें ॥ मरिध्वजसहते गिरेगिरैजिमि । युगकपि तरु
सँग गिरिवरतेतिमि ॥ निजसुतको मरिबो लखिराजा । नृपश्रु-
तायु सहसैन समाजा ॥ चैद्यनिषाद सदलभरि रिशि सों । घेरि
लये भीमहिं चहुंदिशिसों ॥ घेरि बाण बर मारनलागे । मारहु
धरहु पुकारन लागे ॥ तबभट भीमगदातजि करते । गहिअसि
चर्मकूदि रथबरते ॥ कठिन कराल कोपसों पागो । सुभटसमूह
सँहारन लागो ॥ लखिश्रुतायु अतिरिस सों छायो । अति शी-
घ्रशरएक चलायो ॥ सोशर भीम खड्गसोंकाटो । गजहिसिंह
जिमि तिमितेहिडाटो ॥ फिरिश्रुतायु नृप रिसकरिमारे । चौदह
तोमर अति अनियारे ॥ भीम पराक्रम भीमअखेदे । असिसों
बीचहि तिनहूं छेदे ॥ दोहा ॥ इतनेहीमें चैद्यपति भानुमान नृप
स्वस्थ । धनु टंकारत भीमके सन्मुख गयोगजस्थ ॥ गरजिसिं-
हसमभीम तब तापैं चलेसबेग । हने चैद्यनृप बाणबहु रुक्यो
नसुभटअसेग ॥ दीहद्विरदके रदनपै कूदिसुपदधरिधीर । जा-
य खरो भोजहँ रहो भानु मानभटबीर ॥ सोरठा ॥ निजढिगभीम-
हिं देखि भानुमान इमि जकिरह्यो । सिंहहि निकट निरेखि रहै
मंदिचख द्विरद जिमि ॥ गुरुतोमर ॥ तहँभीमसेनहिं देखिकै । का-
लिंगपति अति तेखिकै ॥ गुरु शक्ति मार्‍यो तानिकै । तेहिभीम
आवत जानिकै ॥ तरवारि तीक्षण बाहिकै । द्वैकरे बीचहिचाहि
कै । फिरि चैद्यनृपकोडाटिकै । शिर झेलि दीन्हे काटिकै ॥ सोरठा ॥
भीमसेन बलवान भानुमान कहँ बिबिध बधि । करिकसीसकिर-
पान हनेद्विरदकेशीशमधि ॥ दोहा ॥ लगेखंग चिक्कार करि गिरत

भयोगजराज । प्रथमहिकूदिगयो अनत भीमसुभट शिरताज॥ चौपाई ॥ कूदिजाइ महिपै असिधारी । भीमसेन दुर्मदरणचारी॥ आप्लुत सूत उष्णा तहि आदी । ग्रामभेद करि घनसमनादी॥ कितनेके शिरभुज कितनेके । काटेझपटि सुकाटिकितनेके॥ काटेद्पटि उरूकाहूके । काटे गिरह गुल्फ काहूके ॥ कितनेके घा उरथर काटे । कितने भटबरके करकाटे ॥ उदर बिदारे भटअ गणितके । फारेचर्मपाणि अगणित के॥ द्विरद असंख्य अरीदि करि दीन्हें । कितने अपग अकर करि दीन्हें ॥ अद्भुत विक्रम करि इमि रणमें । हतीअसंख्य सैन तेहि क्षणमें ॥ मथैग्राहवा लघुसर जैसे । भीमसेन दलमरदोतैसे ॥ चपल प्रबलभटद्दी बिरुझानो । कालचक्रसमतहां लखानो ॥ भीमबाहगिरितेसंच रिता । बहीतहांशोणितकीसरिता ॥ तुङ्गबाजि गजराजनरनके रुण्ड मुण्ड अरु हाथ चरनके ॥ अंग रथनके ध्वजधनुबाना शक्तिगदादिक आयुध नाना ॥ कटे गिरे तहँ परे अनेरे । तिन्हें याद समतामधिहेरे ॥ हयगज रथभट तेहिमधि धावैं । तेसब तरणहार समभावैं ॥ दोहा ॥ लगे धकामरि भूमिपै गिरे अनेक नबीर । अगणित गिरि दबि चरणतर गेतन तजि यमतीर॥ इमि अरदित निज सैन लखि नृपश्रुतायु अनखाय । भीष्महि लै निजसैन मधि भिरो भीम सों जाय ॥ ताहीक्षण रथलै गयो रथी अशोक सुधीर । तापैचढ़िकै सिंहसम गरजोभीमसुबीर॥ चौपाई ॥ रथचढ़ि नृपसों कहे रिसाई । अब रहु खरो न जाति पराई ॥ यहसुनि नृप श्रुतायु अतिरोखे । मारतभये बाण नव चोखे ॥ भीमसेन तबधनु टङ्कारी । हने सातशर प्राणप्रहारी॥ तिनके लगे श्रुतायुनरेशा । गेसुरलोक त्यागियहभेशा ॥ सत्य देव अरु सत्य सुनामी । हे श्रुतायु केभट अनुगामी ॥ भीमसेन अतिगौरव लीन्हें । ताक्षण तिनहूंकोबध कीन्हें ॥ तब निषाद पति सम्मुख आयो । केतुमत्त जो भटबर गायो ॥ तीनि बाण





अति तीक्षण गनिकै । भीमसेन ताकेउर हनिकै ॥ तुरित ताहि यम लोक पठायो । गरजि सगर्व सुशंख बजायो ॥ तबकालिंग भूपके योधा । चैद्य निषाद बीर करिक्रोधा ॥ तेसबसिमिटिभी- मसों भिरिकै । युद्ध करन लागे तहँ थिरिकै ॥ शक्ति परश्वध शर अनियारे । गदाआदि बहु आयुध डारे ॥ तब पाण्डवगहि गदा बिशाला । रथसों कूदिभयो बिकराला ॥ सत्ताइससैसुभट सँहारे । तब भागे बहुभट भयभारे ॥ कै बिनु स्वामि भगेगजके- ते । बहु निज दलभट मरदेतेते ॥ भागि किते भट फिरे लजाई । कितने बहुरैं लाज बिहाई ॥ दोहा ॥ कितने निजरथ थिरि रहें भिरैं कि ते बलवान । होहिं सर्बते ज्वालाढिग प्रापत शलभ स- मान ॥ तहांकठिन तरवारिलै भीमसेन उमदाय । हने कौरवी सैनके अगणित भट समुदाय ॥ ताही क्षण सेनाधिपति धृष्ट- द्युम्न हरषाय । मत्स्य चेदि कारूषसों कहे लरौ फिरिजाय ॥ महबरी ॥ सेनाधि पतिके बचन सुनि ते सुभट फिरि भिरि परतभे । बहुशस्त्र बहुबिधि वाहि वाहि बिशाल विक्रम करत भे ॥ चढ़ि सरथ पै तब भीमधनुगहि शरनसों दुरदिन करे । तहँ द्रुपद सुत सँग तासुरहि बहु भटनकेजीवनहरे ॥ यह अतु- ल विक्रमयुद्ध कर्म निरेखि अति आनँद भरे । नृपधर्म बढ़िसह सैनमें तहँ भीमके अनुढिग खरे ॥ इमि निरखि ताक्षण सखा भीमहिं लरत अनुपम भावसों । रथहांकिसत्वरगये ताढिगसु- भट सात्वकि चावसों ॥ दोहा ॥ भीमसेन अरु सात्वकी धृष्टद्यु- म्न बलवान । ह्वै एकत्र कीन्हें तुमुलयुद्ध सुनो मतिमान ॥ ता- क्षण कालिंगी सुभट बोले होयबिहाल । भीमरूप यह भीम है यहि दल जनकोकाल ॥ चौपाई ॥ यह सुनि भीषम धनुटंकारी । बीरभीम पैचले प्रचारी ॥ भीष्माहिं लखिते तीनों योधा । तीनि तीनि शर हने सक्रोधा ॥ तब भीषम अतिरिस बिस्तारे । तीनि तीनि शर तिनकहँ मारे ॥ फिरिशर सहसमारि जगजेना । दई

बिडारि पाण्डवी सेना ॥ तबतजिचारि बाणकी राजी । हतेभी
मके रथके बाजी ॥ भीमसेन तबशक्ति चलाई । भीष्म कोपि
तेहिं मगहि गिराई ॥ तबगहि गदाभीम रणचारी । कूदि भीष्म
पे चलो प्रचारी ॥ इतनेमें सात्वकि रिस बरसों । बधेभीष्मकेसू
तहि शरसों ॥ मरे सूत के हय भयपागे । निजदल ओर सु
थलैं भागे ॥ ताक्षण भीमसेन प्रण लीन्हें । कालिंगी दलभट
बिनु कीन्हें ॥ लखतरहे तौसुत सबभाई । सके न कोऊ सन्मुख
जाई ॥ धृष्टद्युम्नलखि आनँद धारे । भीमहिं निजरथपै बैठारे ॥
तबसात्वकि सुखनिधि अवगाहें । भीमहिं बिधिवत बहुतसराहें ॥
कालिंगी दल बलसों रीते । नृपतब दिवस यामयुगबीते ॥ तब
नुभीम निजरथपै चढ़िकै । सात्वकि धृष्टद्युम्नसह बढ़िकै ॥ भीर
सगर्व भरे अतिबलसों । लागेफेरि लरनतौ दलसों ॥ दोहा ॥
तहँगौतम अरुशल्य अरु अश्वत्थामाबीर । धृष्टद्युम्नसोंभिरत
भे जानि परम रणधीर ॥ शुद्धधनुर्द्धर उद्भट धृष्टद्युम्नबलवा
न । द्रोणतनयके सुरथके तुरगहते हनिबान ॥ मृत हयरथतजि
जायतब अश्वत्थामा बिप्र । बैठि शल्यके सुरथपै हनेबाणबहु
क्षिप्र ॥ धृष्टद्युम्नरणधीरसों लरत तीनि भट देखि । रथबढ़ाय
अभिमन्यु तहँ जायभिरो अतितेखि ॥ सोरठा ॥ कृपहि हनेनव
बान शरपचीस हनि शल्यकहँ । आठनराच अमान द्रोणतनय
कतनहने ॥ तबद्वादश शर चण्ड शल्य हने अभिमन्यु कहँ ।
कृपत्रयबाण उदण्ड हने द्रोणसुतएक शर ॥ तोमर ॥ तहँकुंअर
लक्षणदेखि । करिअरुण अक्षणतेखि ॥ बढ़िसहित पक्षणधाय
भोभिरतताक्षणजाय ॥ लखिबिदितलक्षणअक्ष । अभिमन्युरक्ष
णपक्ष ॥ भिरि सहित दक्षिणतत्र । भेहनत तिक्षण पत्र ॥ दोहा ॥
दुर्योधनको तनयअरु अर्जुनकोसुतबीर । उभय बंधुयेभिरि तहां
कियेयुद्ध गम्भीर ॥ लक्षणकेतनपांचशतबाणहनेअभिमन्यु । तब
लक्षण अभिमन्युको धनुकाटकरिमन्यु ॥ चौपाई ॥ तबअभिमन्यु





कुजय अनुरागी । अन्यधनुष गहि सोधनु त्यागी ॥ बहुशरहनि
लक्षणकेतनमें । ब्याकुलकरत भयोतेहिक्षनमें ॥ निजपुत्रहिअति
ब्याकुलदेखी । भूपतिदुर्योधनअतितेखी ॥ नृपनसहितबढ़िफेरि
घेरी ॥ लगेलरन अभिमन्युहिघेरी ॥ तहँअभिमन्युलरोसबजा-
तों ॥ द्रोननतेकुनटरोसुप्रनसों ॥ लखिअर्जुन सुतत्राणबिचारी ।
अवरातनसोंभिरप्रचारी ॥ क्षणमेंबाणअसंख्यप्रहारे । अगणित
गजहयभटबधिडारे ॥ दुर्योधनभूपतिकेदलमें । हाहाकारमचोतेहि
पलमें ॥ इमिअर्जुन शरछादित कीन्हें । दिनरजनी नहिंकाहूचीं-
न्हें ॥ कितनेभट बिनुबाहनकीन्हें । बहुबाहन बिनुभटकरिदीन्हें ॥
धनु बिध्वज बिनुशर पगकरके । किये असंख्य भटन युगधर
के ॥ ब्याकुलह्वैतजिधीरजलाजा । तौसुतकोदलबिचलोराजा ॥
तिमिकेसरिकेकरसों मरादित । भगैंअसंख्यद्विरदह्वैअरादित ॥
तिमिअर्जुन के शरसों छेदे । भागे हय गजभटअतिखेदे ॥ ता-
सम नृप हे समबल जेऊ । सके न भिरि अर्जुनसों तेऊ ॥ जे
सन्मुख रणधीरज रांचे । तेयमलोक गये नहिं बांचे ॥ दोहा ॥ तहँ
भीषम हँसि द्रोणसोंकहे लखो आचार्य । कृष्णसहित भटपार्थ
को अद्भुत बिक्रम कार्य ॥ कालकराल समानभो यहि क्षणपार्थ
अमान । अब यासों लरिजय लहै ऐसोको बलवान ॥ सरितप्र-
वाहसमान कहुँभागी फौजरुकैन । फेरेहुँघायल अमितभट फि-
रिलरि जीति लहैन ॥ ताते अब संध्यो भईतजौ युद्धउपचार ।
चलि डेरन निजभटन कहँदेहु अहार बिहार ॥ इमिकहिभीषम
फेरिरथ सहित सुभटसमुदाय । उचित कृत्यसब करतभे निज
निवास थरजाय ॥ सोरठा ॥ तब पाण्डव हरषाय जयदुन्दुभिब-
जवाइकै । निज डेरन मधिजाय किये अहारादिक क्रिया ॥

इतिश्रीभीष्मपर्वणिद्वितीयदिनयुद्धवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दोहा ॥ तीजेदिन भोरहि रचो भीषम गारुड़ब्यूह । पृथक
पृथक्सब अंगमें राखि प्रबल भटजूह ॥ तासु तुण्डथर लसत

भे भीषम धीरधुरीन । चखभे भारद्वाज अरु कृतबरमा
पीन ॥ केकय मत्स्य त्रिगर्त्त अरु बाटधान भटभूरि । सह
द्रोणतनय भये शिर गौरवसों पूरि ॥ भूरिश्रवासुजयद्रथ
शल्यभगदत्त । ग्रांवभयेये भूमिपतिलै बहुसुभटप्रमत्त ॥
धनबन्धुन साहितसहित सैनसमुदाय । बिशदपीठि धरल
ह्वै सगर्व उमदाय ॥ बिन्दभूपअनुबिन्द अरु सूरसेनबल
न । सक कांबोजन सहितहे पुच्छगहे धनुबान ॥ दाशेरक
लिंगभटसहसँग लै निजसैन । जरासन्ध को तनय हो
पक्ष सचैन ॥ कानर पौर बिकुंजपति अंधाधिप ये सर्व ।
दृहद्दल के रहे बामपक्षगहिगर्ब ॥ जयकरी ॥ यहिबिधि तो
ब्यूहित देखि । पारथ धृष्टद्युम्न अवरेखि ॥ अर्द्धचन्द्रवत
अनूप । बिरचिबिराजे सुनियेभूप ॥ भीमतासु हे दक्षिणओ
लै सँग भूपति सुभटअथोर ॥ सात्वकि अरुअभिमन्युसु
पांच द्रौपदीके सुतधीर ॥ इराबाण करता अति युद्ध ।
घटोत्कच दै अति क्रुद्ध ॥ येहेबामछोर अतिघोर । नृपन
बिक्रमकर ओर ॥ द्रुपद बिराट नीलक्षितिपाल । धृष्टकेतु
कुलको काल ॥ चेदिकाशि कारूष नरेश । धृष्टद्युम्न पांचा
सुबेश ॥ बीराशिखण्डीअरिदलजैन । रहेमध्यमें सदलसैन
गजानीक मधितहँ बलधाम । रहे युधिष्ठिर नृप अभिराम
सबके रक्षक हे जगऐन । श्रीकेशव प्रभु राजिवनैन ॥ पा
इमिरचि ब्यूह सऊह । भेदन हिततौ सुतको ब्यूह ॥ घन
स्वन दुन्दुभि बजवाय । लागे तजन शस्त्र समुदाय ॥ तौदि
केभट प्रबल प्रचण्ड । लगेप्रहारन अस्त्र अखण्ड ॥ भट
भटनप्रचारि प्रचारि । लागे हनन सिहारि सिहारि ॥ उभय
मधिअतिबिकराल । गयोपूरिअस्त्रनकोजाल ॥ दोहा ॥ उमडि
ड़िभिरि लरतभेसुभट समूह सघट्ट । भूप भूपभिरि रणरचे
सावन्तगरट्ट ॥ भूपतितेहिक्षणमचत भो यहि बिधिकोघमसा





शिको अरुनिजआनको रहोनकाहुहिज्ञान ॥ चौपाई ॥ सुभटनके
मुण्डन सों । कटेबाजि गजके झुण्डनसों ॥ भूपअगम्य
तहँधरणी । रुधिर धारसों भरी बिबरणी ॥ धनुध्वज घण्टा
घनेरे । परे कटेरथ अगणित हेरे ॥ भिरत असंख्य क-
निरेखे । बिनुभुज फिरतसुभट बहुदेखे ॥ भरेरुधिरसों भट
जाने । तहँ सब असुर समान लखाने ॥ भीष्मद्रोण पुर
नरेशा । शकुनि बिकर्ण भयानक भेशा ॥ शल्य जयद्रथ
सबराजा । हती असंख्य सैनसहसाजा ॥ भीमघटोत्कचसा-
किबीरा । सुवन द्रौपदीके रणधीरा ॥ चेकितानये भटधनुधा-
अगणित तौदल हते प्रचारी ॥ निजदल मर्दत पार्थहिज्वै-
बहु नरपाल एकमत ह्वैकै ॥ कैयक सहसरथिनसह कढ़ि-
पार्थहिघेरि लियेतहँ बाढ़िकै ॥ शक्ति परश्वधशर अनियारे ।
आदि बहु आयुधडारे ॥ तब पारथकरलाघव कीन्हे । दश
शरपंजर करि दीन्हे ॥ परके अस्त्ररोंकिसब राखे । धन्य
सुरगण भाखे ॥ सात्वकि अरु अभिमन्यु सुधीरा ।
शकुनि सों भिरे प्रबीरा ॥ रण दुर्मद ते गौरव लीन्हे । हे
कठिनयुद्ध तहँ कीन्हे ॥ दोहा ॥ तहँकर लाघव करि शकुनि
बहुबाण अचूक । क्षणमें सात्वकिको सुरथ करि दीन्हेशत
॥ तब सात्वकि अति क्रोधसों आयत चखकरि बङ्क । नि-
तजि अभिमन्यु के रथ पैगये निशङ्क ॥ सोरठा ॥ दोऊबीर
धीर धनुर्द्धर अस्त्रबिद । मारि अनगिने बान किये स-
शकुनिहि बिकल ॥ चौपाई ॥ ताक्षण भीष्मद्रोण रणचारी ।
शंखधुनि धनु टंकारी ॥ जाइ धर्मके सम्मुख चावन । लगे
पै बाणचलावन ॥ तहँ नृपधर्म नकुल दोउ भाई । कीन्हों
सों दुसह लराई ॥ दुर्योधन भट बिधि अनुसरिकै । रथस-
सह बढ़िरिस भरिकै ॥ भीम घटोत्कच भट सों भिरिकै ।
करनलागे तहँ थिरिकै ॥ तहां घटोत्कचभट हे आरय । अ-

तुल युद्ध कीन्हों जयकारय ॥ भीमसेन शर एक सुधारी॥
सुतके उरहने प्रचारी ॥ लगे बाण नृप मुरछित ह्वैके । स्य
परिडरे सवज्वैके ॥ दुर्योधनहिं अचेत निहारी । भगो फेरि
सूत बिचारी ॥ नृपके रथहिपराजितदेखी । भगीफौजसबभय
भेखी ॥ ताक्षण भीमादिक धनुधारी। बहुशर हनेप्रचारिप्रचारी
लरत रहे पारथ सों जेऊ । ह्वै व्याकुल तब भागेतेऊ ॥ भीष
द्रोण बहुत कहिहारे । थिरे न नेकु सुभट भयधारे ॥ भी
द्रोण रोंकतहैं ठाढ़े । फिरे न तेजे गनेउ सुकाढ़े ॥ इतनेमें
योंधन चेते । धनु टङ्कारि बहुरि रणहेते ॥ निजदल भागत
खि रिसपागे । फिरहु फिरहु इमि टेरन लागे ॥ दोहा ॥ दुर्यो
नके बचनसुनि नृपगण फिरे लजाय । क्रमसों सिगरे सु
फिरिलरन चले समुहाय ॥ तब दुर्योधन भूपगुणिकहे भी
सों जाय । सुनो पितामह ममबचन लखो कहा अलभाय
चौपाई ॥ तुम्हरे जियत सैन मम अरादित । होति भगति श्री
ह्वै मरदित ॥ ऐसो तुमहिं न उचित गोसाईं । ममदुर्दशा
खो यहि ठाईं ॥ जीतहिं तुम्हहिं पाण्डु सुत रणमें । ऐसो
हुंन भासतमनमें ॥ द्रोण द्रोणसुत कृप तुम देखत । ममद
बिचलत नेकु न तेखत ॥ अब यह बूझिपरो दृढ़हमको । हैं
ये पांडुतनय तुम सबको ॥ ताहीसों तुमकौतुक पेखत । मम
होय न सो अवरेखत ॥ जो तुमको करिबो हो ऐसो । तौप्रथ
हिं कहिदेते तैसो ॥ तौ हम तबहीं बूझिकरणसों । उचितम
करि भिरित परनसों ॥ जो हमत्याज न तुम सबहीको । तौ
रिये करि अकपटहीको ॥ सुनिदुर्योधनकी यहबानी । हँसि
लेभीषम अनुमानी ॥ महाराज हमगोइ नराखे । कहक बा
मितुमसों भाखे ॥ हैं अजेय पाण्डव सुरबरसों । कबहूं जीति
जैहैं नर सों ॥ तब नाहिं मानेहु मानन लायक । अबकत शो
करहु नरनायक ॥ वृद्धपुरुष हम निज अनुरूपा । करबयुद्ध





निरखेहु भूपा ॥ आजु पाण्डवन कहँ यहि रणमें । निरखिपरा-
जित मोदहुमनमें ॥ आजु असैन पाण्डवन करिहौं । रणमण्ड-
ल श्रोणितसों भरिहौं ॥ दोहा ॥ भीषमके ये बचन सुनि तो सुत
सब हरषाय । बजवावतभे दुंदुभी घनरव शंखबजाय ॥ ताक्षण
पाण्डव नृपनसह शंख बजाये भूरि । बजवाये दुंदुभि घने अ-
ति आनँद सों पूरि ॥ सोरठा ॥ तेहि दिनको युगयाम ताक्षणबी-
तो भूपमणि । उभयसैन बलधाम युगसमुद्रसम फिरि भिरे ॥
॥ कहे तब धृतराष्ट्र संजय कहो सहित बिधान । ठानिप्रण
यहि भांति भीषमकिये किमिघमसान ॥ कहे संजय भाषि ऐसो
भीष्म निजरथ हांकि । पाण्डवी दल प्रबलसों भिरि लरनला
गे डांकि ॥ सब्र सेना सहित तो सुत सर्व तदनु सगर्व । जाय
भिरि भे लरत रक्षत भीष्मतेहि तेहि पर्व ॥ युद्ध अति सै तुमु-
ल ताक्षण मचो तहँ हे भूप । लगे तकितकि सुभट घालन श-
स्त्र विविधअनूप ॥ खरोरहुमाति भागुमास्यो पस्योमारुसँभारि ।
आउ सम्मुख जातकित नहिं बचतअस्त्र प्रहारि ॥ एक एक
सुशब्द ये बहु बार भाषतभूरि । युद्ध थलपै दुहूं दलमें रह्यो
तेहि पल पूरि ॥ अस्त्र अस्त्र तनुत्र अस्त्रनके जटनसों शब्द
भयो तहँ सो भयद परसत भयो महि अरु अब्द ॥ सुभट
गज हयरथ असंख्यन दुहूंदलके तत्र । कटेपलमें भूपमणिसो
कहत बनत न अत्र ॥ तहां भीषम किये कार्मुक मण्डलाकृत
चव । तजे बाण बिशाल अगणित अतुल अकथ अले-
ख ॥ कुपित अहि समशरन सों सब दिशा दीन्हींछाय । हते
अगणित द्विरद हय अरु रथिन के समुदाय ॥ सबै दिशिमें
फिरत भीषम को सुरथमनमान । लखे सबकोउ तहां भूप अ-
लात चक्रसमान ॥ सर्वथर सब रथिनसों तेहिसमय नृप सब
ओर । एक भीषम सहस सम सो जुरोहो तहँ जोर ॥ लखे जे
जेहि ओर भीष्महि लखे ते तेहि ओर । देखि इमिसब गुणे

भीषम करतमायाघोर ॥ एक एक इषुनसों एकैक मैगलमारि
भीष्मक्षणमें दिये अगणित द्विरद महिपै डारि ॥ भये सम्मु
भीष्मके तहँ गये ते यमलोक। एकपल भरि सुभटकोऊ सक्यो
नहिंकरिरोक ॥ पाण्डवनके सैनमधितव मचो हाहाकार। भ
व्याकुल सुभट सब नहिं लहे तहँ त्रातार ॥ दोहा ॥ अगणि
गज हय भटबधे तहँ भीषम गहिटेक। जेहि न लगो शरभी
ष्मको ऐसो रहो न एक ॥ मारतण्डसम भीषमहि लखिनस
क्योकोउतत्र। आतप सम छादित दुसह शर निरखे सर्वत्र
भीषमके शर बरनसों मर्दितभई अचैन। सहि धीरज नहिंरी
सकी भगी पाण्डवीसैन ॥ चौपाई ॥ पारथ बासुदेव के देखत
भगीफौज जीवन अन्नरेखत ॥ कोऊ काहुहि संग न लीन्हें
बन्धु पितासुत सखा न चीन्हें ॥ गिरत उठत भागत फिरिता
कत। भगे पदाती आरत भाषत ॥ रथी गजीहय सादी कौते
निजदल मर्दत भगे अचेते ॥ हैं सधीर पांडव सब भाई। भ
और सब लाजबिहाई ॥ आरतशब्द महा तेहिपलमें। भ
भूप पाण्डवके दलमें ॥ तब रथरोकि कृष्णअनुमानी। कहो
नंजय सों यहबानी ॥ पूर्व सभामधि तुमहे पारथ। प्रणकीन्
सो करहुयथारथ ॥ भीषम द्रोणादिक बरबांके। दुर्योधन
सुभट निशाके ॥ जे लरिहैं मैं तिनको हनिहौं। रणकेबीच क
नहिं गनिहौं ॥ बहुदिन गये समयसो आयो। अबइत करि
निजमनभायो ॥ भगो जात तोदल यहिक्षनमें। अब सो प्र
करिहौ केहि दिनमें ॥ कहे कृष्णसो सुन्निहितजानी। कहतभ
पारथ अभिमानी ॥ तातशीघ्र परदल मधिहलिये। भीषम
ढिग रथलैचलिये ॥ बूढ़हि एकबाणसों मारी। रथसोंदेउँ भू
परडारी ॥ सो सुनिकृष्ण हांकिबर घोरे। रथ लैगये भीषम
धोरे ॥ पार्थहिनिजढिगभीष्मनिहारे। गर्जिसिंहसमधनुटंकारो
दोहा ॥ भीषम सों पार्थहि भिरत लखिबहुभट धरि धीर





सत्वर फिरिकै भटन सों लरनलगे बरबीर ॥ क्षणमें अगणित
बाण तजि भीषमबीर प्रसन्न। सध्वज पार्थके रथबरहि करि-
दीन्हें सुप्रछन्न ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहां पार्थ बाणैतको ठाटठाटो।
बने बाणसों भीष्मको चापकाटो ॥ महाबीर ज्योंचाप सो डारि
दीन्हों। महाचंड ह्वै और कोदंडलीन्हों ॥ सुदोर्दण्डसो तानि
टंकार कैकै। लगे मारिबेबाण उद्दंडलैकै ॥ बलीपार्थ त्यों बाहि
कैबाणचीन्हों। तहांसोऊकोदंड दोखंडकीन्हों ॥ दोहा ॥ तबभी-
षम तहँ कहत भे साधु साधु हे बीर। ऐसो दुस्तर करम करि
सकै कौन रणधीर ॥ निज पौरुष परमान अब करो युद्ध तजि
भर्म। इमिकहि गहि धनु आनफिरि लगे करनरणकर्म ॥ अ-
र्जुन पै लागे करन बाणवृष्टि तेहिकाल। अर्जुन लागे भीष्मपै
मारन बाण बिशाल ॥ चौपाई ॥ तहँ प्रभुनिजसारथ्यसुजानसु।
दरशावत भे सदय सज्ञानसु ॥ यहि बिधिसों रथचालनकीन्हें।
अगणित बाण व्यर्थ करिदीन्हें ॥ तब भीषम बहुशर तेहिक्षन
में। हने पार्थ अरु प्रभुके तनमें ॥ फिरिबहुसहस बाण परिहरि
कै। सरथ पार्थकहँ छादित करिकै ॥ पाण्डवके जे भट फिरि
आये। रहे तिन्हैं फिरिमारिभगाये ॥ बाण असंख्यमारि नभ
पथपै। देहिंछाइ पारथके रथपै ॥ जौ लगि पारथ बाण बिदारैं।
तौलगिभीषम बहुभटमारैं ॥ भीषमको गौरव लखिऐसो। पा-
रथको मृदुता लखि तैसो ॥ मनमें गुणत भये यदुनायक। नहिं
कोउ भीष्महि जीतनलायक ॥ आजुहि भीष्मबीर जगजेना।
हतिहि सर्व पाण्डवकी सेना ॥ पाण्डवको दल बिचलितदेखी।
कौरव हियो गर्व सों भेखी ॥ शोच बिहाय सुचित ह्वै मोदत।
भीष्महि सबिधि प्रशंसि बिनोदत ॥ पारथ लखि भीषमकी गु-
रुता। करि न सकत निज गुणकी पुरता ॥ ताते हम पाण्डवके
कारन। हतत भीषमहि आन बिचारन ॥ कृष्ण बिचार कियेयह
जौलौं। भीष्महने अगणित शरतौलौं ॥ छायदियेदशदिशिशर

चोखे । सो लखिकै केशवअतिरोखे ॥ दोहा ॥ इतनेहीमें द्रोणकृ
शल्य जयद्रथआदि । भूपसदल सबपार्थपै भुकेप्रकर्षिप्रमादि॥
लखिसात्विकि तिनसोंकहे भगतरहे जेबीर । फिरहुफिरहु निज
धर्म गुणि क्षत्रीभट धरिधीर ॥ ऐसो भाषतपुलित स्वरसों निज
सुरथ बढ़ाय । भिरि ममदल सों पार्थकी लागे करन सहाय॥
तब सात्विकिसों प्रभु कहे करि चख अरुण अमंद । जाहिंगये
जेजे थिरे तेऊ जाहिं स्वछंद ॥ चौपाई ॥ भीष्मद्रोण आदिकजे
रणमें । तिनाहिं बधब अब हम यहि क्षणमें ॥ इमिकहि चक्रपा
णिमें लीन्हें । करि आमित ऊरधभुज कीन्हें ॥ रथते कूदिसिंह
सम परखत । चले भीष्मपै धीरन धरषत ॥ प्रभुको पाणिनाल
बपु सरसो । लसो चक्रतहँ बारिजबरसो ॥ रिसि रबिसों बिक
सित रणदिनमें । निरखि रह्यो तहँ धीरज किनमें ॥ जानि कुरु
नको क्षयसब राजा । भये प्रकम्पित सहित समाजा ॥ पुरुष
सिंह अनुपम छबिछावत । कृष्णचन्द्र कहँ निजदिशि आवत॥
लखि भीषमकरि अचल शरासन । करत भये प्रभुसोंसम्भाष
न ॥ आवहु आवहु त्रिभुवनस्वामी । सादर मोहिंबधहु खगगा
मी ॥ प्रभुतुमसों हत ह्वैबो रनमें । इतउत श्रेष्ठगुणैं हममनमें॥
इतनेमें यह अनुचित जानी । कूदि सुरथसों पारथज्ञानी ॥ चलि
सत्वर प्रभुको भुजधारी । कहेक्षमहु प्रभुक्षमहुबिचारी ॥ तऊस
क्रुद्धकृष्ण नहिंमाने । तब पारथपगसोंलपटाने ॥ नृपलबदशये
डगपै ताथर । थिरे नीठिकै प्रभुबिपदाहर ॥ बिनय करी पारथ
बकताबर । क्रोधहि तजहुकृष्णकरुणाकर ॥ हम सबको आपु
हिकी गतिहै । यह सबजग जानत प्रभुसति है ॥ दोहा ॥ सुत
अरु बन्धुनकी शपथ मोहिं सुनो मति मान । उतहमजो प्रणहैं
किये सोतजिकरब न आन ॥ लहबअन्तजिमि कुरुनको करिहैं
सोइउपाय । यहसुनि केशव मुदित ह्वै रथपर बैठेजाय ॥ पा
रथरथ पै जाइ तब टंकारे कोदण्ड । शंख बजाये कृष्ण प्रभु





जनार्दन अतिचण्ड ॥ भुजंगप्रयात ॥ उभयसैनमें त्यों बजे भूरि
बाजे । कली कौशलीते बलीबीर गाजे ॥ लगे बाहिबेबाण तेबीर
बांके । गने शूरजे शत्रुसेना निशाके ॥ हने पार्थके बज्रसे बाण
क्रूरे । बढ़ी कौरवी सैनको पूरपूरे ॥ गजी अश्वसादी रथी भूरिजू
भे । तबै पार्थसोंये प्रमाथीअरूझे ॥ दोहा ॥ शल्यभीष्म भूरि-
श्रवा दुर्योधन क्षितिपाल । हने पार्थपै वेगसों अस्त्र करालबि-
शाल ॥ शल्य गदा भूरिश्रवा सातबाणकी पंक्ति । तजे हने तो
मृत नृपति तोमर भीषम शक्ति ॥ तिनसबके तेअस्त्र सबकाटि
शरन सों पार्थ । किये महेन्द्र सुअस्त्रको बिषद प्रयोगयथार्थ ॥
हरिगी ॥ करि उग्र अस्त्र अमन्दको सुप्रयोग तहँ पारथ हते ।
रणभरे अचल अनेक भट तोसुवनकेजेहितरते ॥ कोदण्डबर
गाण्डीवसों निर्मुक्त अनुपम शरघने । रथतुरंग गजनर धनुष
ध्वज शरभये काटत अनगिने ॥ तेहि समय धनुगांडीवको टं-
कारसुनि पहिंचानिकै । भटभगे हैं द्रुपदादि ते सब फिरतभे
अनुमानि कै ॥ गांडीवकी धुनिदीह सुनि सुनि सुभटतो शंकित
भये । निर्मुक्तबाणअमोघसों बहुमरेबहु शंकितभये ॥ जेबीर तहँ
धरिधीरताक्षण पार्थकेसंमुखभये । भिदि शरनसों तेसकल तन
तजितुरतहीयमपुरगये ॥ कपिराजकेतुप्रबीरगो तहँमण्डलाकृत
धनु रह्यो । नहिंएकभटयहि ओरको तेहिमारिबेको क्षणलह्यो ॥
सब दिशि बिदिशि सब शरबरणसों पूरिपारथ रिसभरे ।
नरनाग हयके रुधिरकी बरनदी तरु बिरचित करे ॥ मद मेद
मांस समानहे सबजन्तुसे तामधि परे । अरुअस्त्र अखिलअ-
पार समतहँ फिरत हे इतउततरे ॥ दोहा ॥ इतनेमें सन्ध्याभई
गई अस्तिगत सूर । उभयओर फिरि चलतभो उभयभटनको
पूर ॥ शल्यादिक सब भूपगण तेहि दिन निजथरजात । भये
पराहत पार्थको बर बिक्रम अवदात ॥ अयुत रथी अरु सातसै
गजकरि दुस्तर काज । हय पदचारी अनगिने पार्थ बिनाशे

आज ॥ यहिविधि लरि तीजे दिवस निशि निजनिजथरजा
करी अहारादिक क्रिया उभयसैन समुदाय ॥

इतिभीष्मपर्वणितृतीयदिवसयुद्धवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः २५॥

दोहा ॥ चौथो दिन लहि भोरहीं उभय भूपदल साजि। जवावतभे दुन्दुभी समरभूमि मधिराजि ॥ अर्धचन्द्र बर अरु गारुड़ ब्यूहअपार । बिरचि पूर्बवत करतभे धनुषटं कार ॥ मैगलरथ मंजुल महत चख श्रुतिके सुखदान । राजे ने निशान अरु बाजे घने निशान ॥ सोरठा ॥ शंख बजायब य सुधनु चढ़ाय चढ़ायके । सुरथ बढ़ाय बढ़ाय भिरत भये भटनसों ॥ भुजंगप्रयात ॥ भिरे हांकदे पायदे पायदे सों । रथी रथी ऐ भिरे काय देसों ॥ भिरे बाजिसादीनसों बाजिसादी । मैगली मैगलीसों प्रमादी ॥ घने बाणमारैं घनेबाण वारैं । टारे टरैं नाटरैं ताहिटारैं ॥ हनैंबाण हीरे भरेक्रोधडाटैं । उरू क जानू भुजा शीश काटैं ॥ ध्वजाचाप छत्रै रथैभूरि छेदैं । सूत बाजीनके गात भेदैं ॥ गदाशक्ति औभिण्डिपालै करा घनेतोमरैं भल्लनाराच घालैं ॥ कितेमैगलीबाजिसादीनमा कितेबाजि सादी गजीये बिदारैं ॥ रथी बाजिसादीनसों राच्यो । रथी मैगली येकहू जंग माच्यो ॥ दोहा ॥ बिनुमारे मरें मारे मरें अनेक । मार बिनु मार सदृश मारें किते सटेक घोरयुद्ध यहि भांतिको मचोतहां क्षितिपाल । उभय ओरके टनके शिरचढ़ि निरतोकाल ॥ पांचताल मिति उन्नत शुचि लध्वज बान । भीष्म पार्थ कहँ लखितहां संमुखचलेअमा चौपाई ॥ द्रोण शल्य कृप आदि प्रमाथी । लैसँग सहसन सुसाथी ॥ दुर्योधन भीषमके गोहन । चले वेगसों जयकेछोहन तिन्हैं देखि अभिमन्यु रिसाई । सहसरथिन सह सुरथ बढ़ा सरित प्रबाह सदृशअति जवसों । बीचहि भिरत भयो ति सबसों ॥ कठिनयुद्ध माचोतहँतिनसों । पृथक् पृथक् कहि नि





नसों ॥ मंत्रित ज्वलित ज्वलनसम ताथर । लसो पार्थकोसु- योधाबर ॥ तहँअगणित सुभटनबधि कढ़िके । भिरे पार्थसों भीषम बढ़िके ॥ सहित द्रोण कृप तासुत राजा । गये भीषमके सहसाजा ॥ चित्रसेन अरु अश्वत्थामा । भूरिश्रवा शल्य कामा ॥ सुत सांजमन भूपकायेसब । भिरे पार्थके सुतसोंनहँ ॥ तिनसों भिरो पार्थसुत तैसे । सरगजसों कहरि शिशु से ॥ लहेनते अभिमन्यु सुभटकी । तुलताधनु बिधि नागर टकी ॥ अभिमन्युहिं अतिप्रबल निरेखी । सदलसबै नृपअ- तिशय तेखी ॥ पारथसुतहिं घेरि सबदिशिसों । लागे हनन बरि रिसि सों ॥ तहँ अभिमन्यु अशंकित मन सों । तिन न काटि शरन सों ॥ अश्वत्थामाके गुरु तनमें । हने शर कोपित मनमें ॥ दोहा ॥ लखि सांजमन नरेशके सुतको जा उदण्ड । आठ बाण सों काटिके करि दीन्हों बहुखण्ड ॥ सोमदत्त तेहि क्षण हने शक्ति प्रचण्डी चाहि । काटि दये अ- भिमन्यु भट तीक्षण शर हनि ताहि ॥ चौपाई ॥ पांचबाणअति- य अनिआरे । शल्य भूप के तनमधि मारे ॥ तबनृपशल्यक्रोध छाये । करिलाघव शतबाणचलाये ॥ तिन्है काटि अभिमन्यु चारी । हते शल्य के हयरथ चारी ॥ निरखिबिचाख्यो तोसुत जा । जीतैंगे ये सहित समाजा ॥ तबहिंपचीससहस भटगन- को । शासनदयो कुपित तब मनको ॥ तुम सब शीघ्र बधो हे भाई । मम सम्मुख लरिलहत बड़ाई ॥ ते सिगरे भट सत्वर धाई । लागे तासों करन लराई ॥ सोलखि धृष्टद्युम्न अनखाई । चतुरंगिणि सेना सह आई ॥ भिरो सकल सेनासों कैसे । घने पितसों मारुत जैसे ॥ जात पार्थ पै कृपहि निरेखी । धृष्टद्यु- म्न सेनापति तेखी ॥ तीनि बाण अनुपम दुखधारे । भालदेश भिमारि प्रचारे ॥ भट कृतबरमाको अनुचारी । ताकहँ बधो भल्ल बरमारी ॥ मद्रदेशके श्रेष्ठ भटनको । बेधे हनि दशशर

गहिअनको ॥ दमनाहिं हतो एकशर मारी । धृष्टद्युम्न दलपति
धनुधारी ॥ ताथरसुत सांजमन नृपतिको । बीरनमें बरणोव
अतिको ॥ धृष्टद्युम्न दलपति के तनमें । दश शर हने कोपक
मनमें ॥ दोहा ॥ दशशर मारे सूतकहँ नृपको सुत ह्वै चण्ड
तब दलपति नृप तनय को धनुकीन्हों दोखण्ड ॥ चारि बा
हनि हनतभो बाजीचारि अमान । पृष्ठरक्ष अरु सूतको बे
मारिद्वै बान ॥ सोरठा ॥ तब नृपको सुतधीर खड्ग चर्म गहिकू
के । करत पैंतरे बीर धृष्टद्युम्न पै चलतभो ॥ गुणतोमर ॥ नृपसु
ताहि आवत देखिकै । सेनाधिपति अवरेखिकै ॥ बहुबाणमा
भूमिकै । तेहि बारि नृपसुत घूमिकै ॥ बहुढालपै ढरकायकै
ढिगगयो असिफरकायकै ॥ तेहि धृष्टद्युम्न के शीशमें । सो
गदा मारी शीशमें ॥ शिरसक्यो नाहिं लहि झेलसों । फाटि
टिगोफल बेलसों ॥ तब गिरोमरि सुतभूपको । जोबिदितसाग
रूपको ॥ नृप सांजमन बिनु बारभो । यहि ओर हाहाकारभो
तब सांजमन अतिकोपिकै । बढ़िभिरो जयकोचोपिकै ॥ दोहा
थिरहु थिरहु रहु भाषिकै नृप सांजमनकठोर । धृष्टद्युम्नकेगा
में हने तीनिशरघोर ॥ हनेशल्य नृप तीनि शर धृष्टद्युम्न
गात । धृष्टद्युम्न तिनकहँ हने तितनेशर अवदात ॥ दुहूं और
भटन सों मचायुद्धतहँ घोर । पृथक्पृथक् सो सब कहे भूपल
को ओर ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र महीप । कहँ सु
संजय कुल दीप ॥ प्रतिदिन मम भट होत अचैन । अरु
तिदिन हारति मम सैन ॥ बिधिको निर्मित प्रबलप्रयोग । मो
ममसुभटनहारनयोग ॥ हँसिबोले संजयमतिमान । नृपहमक
सत्य नहिंआन ॥ तुमजोकरी अनीति महान । अब ताकोफल
मिलत निदान ॥ सुनिबोले धृतराष्ट्र लजाय । कहत रहे
कहहु बुझाय ॥ तबसंजय बोले सुनुभूप । शल्यनृपति नवबा
अनूप ॥ मारे धृष्टद्युम्नके काय । धृष्टद्युम्नतब क्रोधबढ़ाय ॥ ह





शल्यकहँ अगणितबान । शल्यहने बहुबाण अमान ॥ घोरयुद्ध
कीन्हें ते धीर । अतुल पराक्रम तुल बलबीर ॥ तबनृप शल्य
सुभटता ठाटि । शरसोंदये शरासनकाटि ॥ काटिशरासन शर
समुदाय । धृष्टद्युम्नपै हनेसचाय ॥ धृष्टद्युम्न कहँपीड़ितदेखि ।
श्रीअभिमन्यु बीरअति तेखि ॥ हने तीनिशर कठिन कराल ।
शल्यभूपके तन मधिहाल ॥ हनिहनि अस्त्र अस्त्र प्रति ऊटि ।
कठिन युद्धकीन्हों ते जूटि ॥ सुवन पार्थको बीर अधर्ष । तहां
शल्यपै भयो प्रकर्ष ॥ दोहा ॥ तब दशरथिन समेत बढ़ि दुर्यो-
धन नृपजाय । शल्यहि मधिमें कारिलगे तजन अस्त्रसमुदाय ॥
दुर्मर्षण दुर्मुखसुभट दुःशासन रणधीर । दुर्योधन पुरमित्रअरु
सत्यव्रत बरबीर ॥ चित्रसेन अरु दुःसह अरुबिकर्ण बलवान ।
सुभट बिबिंशत ये सुदश बीरसुनो मतिमान ॥ तब उतके दश
बीरबर भिरेआय हेतात । पांच द्रौपदीके सुवन धृष्टद्युम्न बि-
ख्यात ॥ भीमनकुल सहदेव अरु भटअभिमन्यु उदार । येदश
दशभट भिरितहां कीन्हें युद्ध अपार ॥ चौपाई ॥ माचो कठिन
युद्ध तिन तिनसों । होतहँ जुटोजोर जिन जिनसों ॥ प्रतिद्व-
न्दिनको नाश बिचारी । मारतभये प्रचारि प्रचारी ॥ तहँदुर्यो-
धन नृपरणचारी । बरकर लाघव बिधिअनुसारी ॥ चारिबाण
अतिशय अनियारे । धृष्टद्युम्न दलपति कहँ मारे ॥ शरपचीस
दुरमर्षणमारे । चित्रसेन शर सातप्रहारे ॥ शरशर हने बिबिं-
शत बरभट । हनेदुशासन त्रयशर परगट ॥ धृष्टद्युम्न अति
गौरव लीन्हें । भूप कठिनकर लाघव कीन्हें ॥ इनसबके तनम-
धि अनियारे । बाणपचीस पचीस प्रहारे ॥ भटअभिमन्यु सुबीर
प्रकरषो । पुरमित्रहि दशशर हनिहरषो ॥ सत्यव्रतहि दशबाण
प्रहारी । गरजो पार्थतनयधनुधारी ॥ माद्रीतनय शल्यसों भि-
रिकै । बाणवृष्टि कीन्हेंतहँ थिरिकै ॥ तिनपैशल्यबाण बहुघाले ।
एक एकसों तीक्षण आले ॥ तहँ दुर्योधन भूपहिदेखी । भीम-

सेन ध्रुववध अवरेखी ॥ अति गुरुगदा आयसी गहिकै । रथ
पर खरोभयो थिरुकहिकै ॥ सानुमान सम भीमहिं देखी । भगे
सकल तौसुत भयभेखी ॥ लखिसिगरेक्षितिपाल सकाने । अन-
रथ होनचहत अनुमाने ॥ दोहा ॥ तब मगधाधिप सोंकहे दुर्यो-
धन क्षितिपाल । निजदल सहबढ़ि लखिबधो भीमहिं तुमयहि
काल ॥ सोसुनि मगधाधीश गुणि गुरु जययश कहँचोपि । अ-
युत गजस्थन सहित बढ़िचलो भीमपै कोपि ॥ आगेकरि मग-
धेशकहँ दुर्योधन सहसैन । दुन्दुभि बजवावत चलोसर्ब गर्बको
ऐन ॥ सोरठा ॥ गजानीक अतिभीम निज सन्मुख आवत नि-
रखि । कूदिचलो भटभीम सुरथ सानुते सिंहवत ॥ चौपाई ॥ गदा
पाणि भुज ऊरध कीन्हे । काल कराल दण्डजनुलीन्हे ॥ बढ़ि
भटभीम सिंहसम गरज्यो । सकल गजस्थनको हिय दरज्यो॥
गजानीकमधिगदाप्रहारो । अगणितद्विरद निमिषमधिमारो॥
हतेबज्रधर जिमि दनुजनको । हतेभीमतहँ तथा गजनको ॥
सुवनद्रौपदीके रणधीरा । सहदेव नकुल बांकुरे बीरा ॥ अरु
अभिमन्यु बीरधनुधारी । धृष्टद्युम्न ये नवभट भारी ॥ भीम-
सेन भटकेढिग रहिकै । सगरब हियो रोषसों नहिकै ॥ करिकीं
करलाघव अतिगाढ़े । हनिहनिबाण क्षुरप्र उकाढ़े ॥ कियेगज-
स्थनके शिरछेदन । को केहि हत्यो लख्यो यहभेदन ॥ प्रपतैं
मुण्ड बितुण्डनते तिमि । गिरैंशिला बहुशृङ्गनिते जिमि ॥ कटैं
शीश भटनसे करिनपै । गतशाखा तरु यथा गिरिनपै ॥ ऐरा-
वतसम गजपै रूढ़ा । मगधाधीश नरेश अबूढ़ा ॥ पार्थतनयके
सम्मुख आयो । चाहिप्रबल गजसों हतवायो ॥ तबअभिमन्यु
द्विरदके तनमें । मारेबाण कोपकरि मनमें ॥ करिचिक्कार द्विरद
मतवारो । रह्यो खरोह्वै भयसों भारो ॥ तब अभिमन्यु क्षिती-
शहि डाटे । बाण क्षुरप्रमारि शिरकाटे ॥ दोहा ॥ मगधाधीश महीप
को बधि अभिमन्यु कुमार । बाणवृष्टिकरि करतभो सुटभनको





संहार ॥ भीमसेन तहँ हनतभो अगणितमत्त बितुण्ड । तोरे
अगणित द्विरदके चरणदन्तअरुशुण्ड ॥ रोला ॥ प्रबलमत्त बि-
तुंड बरके झुंडबीच अभर्म । भीमबिक्रम भीमभट तहँ कियो
अद्भुतकर्म ॥ गदागुर्बी आयसी दृढ़दीर्घ ताहि प्रहारि । द्विरद
अगणित मारिक्षणमें दिये महिपै डारि ॥ शैलसमते द्विरद ता
थर लसे महिपैभूरि । गलित जलसँग गेरुखानि समान शो-
णित पूरि ॥ खरशोणित बमत बहुलहि गदाको व्यापार ।
धसी बहुगिरि गुफासों मनु भारतीकी धार ॥ भगे बहु गज
भीमको तहँ देखते डरपाय । उड़े रंहस बायुबश जिमि तरु-
नको समुदाय ॥ रथी हयबहु सुभट पैदर मरेतिनसों मर्दि ।
धृष्टद्युम्नादिक निरखिसो हँसे भूरिननर्दि ॥ भरीशोणित गदा
गुर्बीलये चरतअधीम । मारिगज समुदायताथर लसतभोभट
भीम ॥ शूलभृत कलपांतमें जिमि नाशभूतसमस्त । कालरू-
पकराल निरतत करतचालन हस्त ॥ दोहा ॥ गजानीक मर-
दित निरखि दुर्योधन अनखाय । सर्ब भटन सों कहतभे बधो
भीमकहँ जाय ॥ सुनि अज्ञा नृपशक्रकी सुभट मेघसमुदाय ।
भीम अचल पै चलतभे युद्धभूमि नभछाय ॥ आवत लखि
उमड़ो प्रबल सिन्धु सरिस दलसर्ब । भिरिबेलासम ताहि भो
रोकत भीमसगर्ब ॥ चौपाई ॥ प्रबिशि सैनमधि भीम रिसाई ।
लाग्यो हतन सैन समुदाई ॥ रथपर हयगजगणपर महिपर ।
हते असंख्य सुभट सो ताथर ॥ गदापाणि भटबर बिरुझानो ।
शूलपाणिसम तहां लखानो ॥ नहिंबढ़िजोर दिये भट केऊ ।
रहेदूरि डरपत हे तेऊ ॥ तहांभीम जिनके दिशि देखे । मरे
आजु ध्रुव तिन अवरेखे ॥ क्षुधित गयंद इक्षुके बनमें । लसै
लसो तिमि भीमभटनमें ॥ तहँ अभिमन्यु आदि धनुधारी ।
रहे भीमभटके सहचारी ॥ भूपति कठिन युद्ध तेहि पलमें । म-
चो दुहूंदल मधि सब थलमें ॥ निजदल मरदत भीमहिंदेखी ।

बिदित धनुर्द्धर भीषम तेखी ॥ चलो भीमभट अरिमरदन पै
जिमिबर फणिमणि ग्राहक जनपै ॥ फूतकार सम बहुशर आ
ड़त । गे अरिगणके हियभय माड़त ॥ भीष्महि निजपै आ
वतलखिकै । बढ़िसम्मुख भो भीम हरखिकै ॥ सात्वकि यह
वृत्तान्त निहारी । चलो भीष्मपै धनुटंकारी ॥ तहँ इतके बहु
योधा भिरिकै । सके आड़ि सात्वकिहि थिरिकै ॥ देखिअलंबु
असुरअमाना । हने सात्वकिहि बरदशबाना ॥ सात्वकिताहि
चारिशरमारी । बढ़ि भीषम पै चले प्रचारी ॥ दोहा ॥ इतनेमें
भूरिश्रवा भिरि सात्वकिसों भूप । हनतभयो नवबाणअति ती-
क्षण रचित अनूप ॥ जेहि सात्वकिबहु शरहने सो सात्वकिहि
अनेक । बाहिअस्त्र प्रति अस्त्रते कीन्हें युद्धसटेक ॥ चौपाई ॥ यह
लखिकै दुर्योधनराजा । बढ़िसबन्धु सहसैनसमाजा ॥ भूरिश्र-
वहि मध्यमें करिकै । लगेपरनसों लरन सँभरिकै ॥ तब सब
पांडव इनसब जनसों । लरनलगे भिरिनिर्भयमनसों ॥ अति-
शय कठिनयुद्धतहँमाचो । सबकेहियेबीररसराचो ॥ गरुईगदा
पाणिमेंलीन्हें । तहांभीम अतिविक्रमकीन्हें ॥ नन्दकतौसुतभट
बलवाना । कोपिहनेसि भीमहिंबहुबाना ॥ दुर्योधननौशरहनि
हरषे । लहिअवसर अगणितशरबरषे ॥ तबगुणिभीमचढ़ेनिज
रथपै । गरजिबिराजतभेरणपथपै ॥ तहां बिशोक सूतसोंभाषे ।
येसबममबध हितअभिलाषे ॥ तातेइन्हेंबधबहमक्षणमें । रहेहु
सो यत्न सदातुम रणमें ॥ इमि कहिकै निजधनु टंकारे । दुर्यो-
धनहिं बाण दशमारे ॥ तीनिबाण नन्दकके तनमें । मारेभीम
गर्वगहिमनमें ॥ तौलगि साठिबाण अनियारे । दुर्योधन क्षिति-
पाल प्रहारे ॥ हने तीनिशर सूत बिशोकहि । अरु काटो धनु
दृढ़ताओ काहि ॥ तुरित वृकोदर सो धनुतजिकै । गहि धनु
आन सगर्ब गरजिकै ॥ मारिक्षुरप्र सुबाणअखेदे । दुर्योधन
नृपको धनुछेदे ॥ दोहा ॥ सो धनुतजि दुर्योधनो गहि अतिदृढ़





को दण्ड । भीमसेनके उर बिषे हनेबाणउदण्ड ॥ अति कठोर
सो शरलगे मुरछिभीम बलवान । अचल अचेष्टित ह्वैरहे रथ
परमृतकसमान ॥ ताक्षण सब पाण्डव सिमिटि महाक्रोध सों
पूरि । दुर्योधन नृप सदल पै बरषत भे शरभूरि ॥ तोमर ॥ दुहुँ
ओर सो तेहि जाम । शरचले अति अभिराम ॥ शरपूरिगे सब
ओर । नहिं परो लखि कछुऔर ॥ तब चेतिभीम प्रचंड । टंकोरि
वृकोदंड ॥ तौतनयनृपकेगात । शरआठमारेतात ॥ जोशल्य
मद्राधीश । तेहिहनेबाणपचीश ॥ तौतनयनृपनाहिंतत्र । थिरिस-
कोअन्यत्र ॥ तौतनय चौदहजाय । तबभिरतभे गहिचाय ॥
नृप सुनो तिनकेनाम । अरु किये जिमिसंग्राम ॥ दोहा ॥ सेना-
पति जलसन्ध अरुउग्रसुलोचनबीर । भीम अलोलुप भीमरथ
भीमबाहुरणधीर ॥ दुःप्रधर्ष दुर्मुखबिकट अरु बिबित्सुशल
तौन । अरु सुखेण ये भीमसों भिरे सुनौ क्षितिरौन ॥ चौपाई ॥
सब भीमसेन सों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हीं तहँ थिरिकै ॥
निक्षुरप्र शरभीम सुखारो । सेनापतिको शीशबिदारो ॥ फिरि
ति तीनिबाण अनियारे । जलसन्धहिबधि महिपैडारे ॥ तद-
सुखेणहिं हति सुखपाये । बधिउग्रहि यमलोक पठाये ॥ तब
निभीम बाहुको शरसों । न्यारो करत भयो शिरधरसों ॥
भीम भीम रथको तेहिक्षणमें । मार्‍यो भीम वृकोदर रणमें ॥
नु सुलोचन को बधकरिकै । गरजत भयो मोदसों भरिकै ॥
हि बिधितो बसुसुत कहँ स्वामी । बधेभीम दुर्मद जयका-
मी ॥ तब जे भट हेते भयपागे । थिरि नहिं सके बेगसोंभागे ॥
यह लखिकै भीषम अति माखे । सकल महा रथिकन सो
भाखे ॥ अब मति क्षोभ जीवको करहू । भिरिभिरि यथाप-
राक्रम लरहू ॥ सोसुनिकै सबभट उमदाने । चलेभीमपै अति
रिससाने ॥ तिनसोंभिरत भयेभटउतके । हितकारी पांडवबल
तिके ॥ भिरि इत उतके भट सहसाजा । तुमुल युद्ध कीन्हीं

तहँ राजा ॥ अति उन्नतमैगल मतवारो । तदारूढ़ भग
रिसारो ॥ धनुषअशनि गरि गरजि प्रकरषो । घनेबाण बा
समबरषो ॥ दोहा ॥ तब भीमादिक सुभटबर प्रबल हिल
गात । बहुशरमारे क्रोध करिबज्रसदृशअवदात ॥ क्षतजरु
रकी धारबहु तेसों गज तेहिकाल । अगणित अरुण सुल
युत घनसम लसो बिशाल ॥ सोरठा ॥ ताक्षणसो गजराज
प्रेरित भगदत्तसों । परदल मरदन काजचलो गरजि घन
सम ॥ चौपाई ॥ लखि तेहि गजको रूप दराजा । डरपे पा
सहित समाजा ॥ जानि असह्य पराक्रम गजको । लखे उ
नदुसह मरजको ॥लखिभीमहि भगदत्तप्रचारे । बाण बिश
हृदयमधि मारे ॥ लागेबाण भीमभट अरछित । ध्वजसों
भिरि रहो ह्वै मुरछित ॥ उतके सुभटन शंकित देखी । अत
महि इमि मूर्छित पेखी ॥ हँसि गरजो भगदत्त नरेशा ।
आजु पांडवन अलेशा ॥ मूर्छित भये भीमभट जबहीं । रा
बीर घटोत्कच तबहीं ॥ ह्वै प्रछन्न माया बिस्तारी । प्रगटो
भयानक धारी ॥ ऐरावत गजबरपै बैठो । मोछउमेठि ऐंठि
ऐंठो ॥ दिग्गज तीनि साथमें सोहे । तिनपै तीनि असुर आ
कोहे ॥ यहि बिधि चारि कालसम धाई । नृप भगदत्त बी
जाई ॥ चारिउ दिशिते घेरि गजन सों । लागे हनन अ
शरनसों ॥ चतुरदन्त तेगज भिरिरिसिसों । लागे हननगज
सब दिशिसों ॥ गजभगदत्त भूपको तनसों । ह्वैपीड़ित ति
गजगनसों ॥ करि आरत धुनि चिघरोताक्षण । सोसुनिभी
त भे पांडव गण ॥ तब भीषम द्रोणादिक सबसों । कहे सु
यह मन दै हमसों ॥ दोहा ॥ मायावी राक्षस प्रबल बीरघटो
च जौन । भगदत्तहि चाहत बधन यहि क्षण सो बल भौन
तातेअब उत शीघ्र चलि नृपको करोसहाय । मरननपावैश्र
र सों भिरि लरिलेहु बचाय ॥ सोरठा ॥ द्रोणादिक भटसब





नके ये बचनसुनि । बरषतबाणसगर्ब चले बेगसों असुरपै ॥
हिबरी ॥ तहँ इन्हैं जात घटोत्कच पै सकल पांडवदेखिकै । अ-
बेगसों रथहांकि उनपै चलत भे अति तेखिकै ॥ तबकौरवी
लप्रबल बढ़ि निज ओर आवत पेखिकै । बरबीर धीर घ-
त्कच तिहि नृपहि तजि अवरेखिकै ॥ बढ़ि तुरतइनपैचलो
धनुटंकारि भटन प्रचारिकै । इमि देखि ताकहँ द्रोणसों तहँ कहे
भीष्म बिचारिकै ॥ यह प्रबलराक्षस कौतुकी सुसहाय तासों
रनको । नहिंहोत मम मनचाव युतनहिं गुणतअबइतथिरन
॥ बल धैर्य्य बिक्रम शूरता अरु अस्त्रबिधिके मर्मसों । यह
तिबे कीयोगहैं नहिं बज्रधररण कर्मसों ॥ भिरि पांडवनके
रणसों इत सकल बाहन श्रमितहैं । सबसुभट शस्त्रजक्षतन
अति भये पीड़ित श्रमितहैं ॥ अबलरै यासों अभिरि ऐसो
तनहिं कोउ सुचितहै । यहबूझि आजु उपायकछु करिबहुरि
लिबो उचितहै ॥ करि रजनीमें बिश्राम फिरि संग्रामभोरहि
रबहे । यहबचनसुनिसबनृपति गुणितुमकहेसोसातिइमिकहे॥
॥इहिमतको सिद्धान्त करि पलटि जुगुतिसोंसबै । निजडेरन
तिचलतभे लज्जितसेतजिगर्ब ॥ दुर्योधननृपके दलहि रणते
मुख निरेखि । पांडव बजवावत भये दुन्दुभि सुदिनसरेखि॥
दनंतर पांडव सदल निज डेरन मधिजाय । उचित कृत्य
ब करतभे निशिदिनके सुखदाय॥ सोरठा ॥ निज डेरन मधि
य चिंतित दुर्योधन नृपति । उचित कृत्य करवाय शोका-
लागे भीष्मपै ॥

इतिभीष्मपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धवर्णनोनामषष्टविंशोऽध्यायः २६ ॥

बैशम्पायनउबाच ॥ दोहा ॥ समाचार चौथे दिवस कोसुनि वृद्ध
हीप । संजयसों बूझत भये सुनहु भूप कुलदीप ॥ धृतराष्ट्रउवा-
च॥ संजय सुनि पाण्डवनको नित्य अमानुषकर्म । निजपुत्रन
हारि सुनि होत मोहिं अति भर्म ॥ पाण्डव सबै अबध्य हैं

कै हैं योगीदक्ष । जातेवै नहिंमरत निति ममसुत मरतप्रतक्ष
करन चहत है भीम अब ममसब सुतकोनास । संजय यहनि
श्चय समुझि होतमोहिं अतित्रास ॥ भीष्मद्रोण कृप सहितम
सुतइमि रणतेजाय । कियेकहा सोसब कहो हेसंजयसमुझाय
रोला ॥ कहेसंजय सुनोनृप इत और कछुनहिं भेद । कियेजो
कुकर्म तुम यह तासु कुफल सखेद ॥ करत पाण्डव धर्म
निति उचित कर्म बिधान । करत नित्य अधर्मअनुचित तन
तोअज्ञान ॥ किये तो सुत पाण्डवन सों यथा अनुचित का
नीचजन नाहिं करत ऐसे कबहुं अनय अधर्म ॥ द्रोण भीष
व्यास कृपहम बिदुर ये बहुबार । मनेकीन्हें सो न माने भूप
तुवबार ॥ पाण्डयन कहँजीति हैं यह सुतनको मतमानि । कि
कारण जान ताको काजयह दुखदानि ॥ भूप दुर्योधन रज
में भीष्मके ढिगजाय । कहो यह जोकहो हमसों नृपति
बिलखाय ॥ कहे तासों भीष्मइमि हेसुनो कौरवनाथ । क
तुमहिं बुझाय हमबहुबार गहिगहिहाथ ॥ पाण्डवन कहँ भा
दैकरि सुहित प्रेम बढ़ाय । भूमिभोगौ सहित बन्धुन कपट
बिहाय ॥ सो न मानो भूपतुमयह लखोतासु निदान । इहै
वशि कुमंत्रकोफल कहत सबल सुजान ॥ भूपजीतै पाण्ड
कहँबीर ऐसो कौन । सुनो मनदै कहतहौं मैं हेतुताको जौन
सदा रक्षक पाण्डवनके कृष्ण करुणा ऐन । कृष्णको सुप्रभा
हमसो कहे सुमुनि सचैन ॥ कहैंतुमसों तौन हम तुम सुनो
दे भूप । सुनेपावन करणसों इतिहास परमअनूप ॥ एक दि
बिधिगंधमादन शैलपै अनुमानि । राजसुरन समेत ध्याये
भुहि जग हितजानि ॥ लखे बिधि तहँ गगनपै प्रज्वलितप
अमंद । तेजराशि बिमानपै आसीन पुरुष स्वछंद ॥ लखत
उठितुरित वेधा नौमि युगकर जोरि । भयेगदगद कियेअस्तु
ति गहे भक्ति अथोरि ॥ सुप्रसीद प्रभुपदुमाक्ष पुरुष पुरा





पावनकर्ण । पद्मगर्भ सुपद्मनाभ सुस्वाहिपद्माभर्ण ॥ कवित ॥ बि-
श्वावसु बिश्वेश बिश्वमूर्त्ति बिश्वकृत बिभवसी निरामयभूत
भव्य भगवान । पादतो धरणिदिशि बाहु दिवसीसुतप बल
सत्य धर्म्म कर्म्म करलव्यबलवान । मूर्त्तिहमसुरकाय शशिसूर
चखचारु अग्नितेज जलखेद बायुश्वास सुखदान । अश्विनि
श्रणगिरा जीभिवेद संस्कार आपुकहै बिश्वमय नाथ करुणा
निधान ॥ दोहा ॥ तुवप्रसादते हम रचत सबथर भूत समस्त ।
सबकी गतिहै आपुसों सबसाधि आपु प्रशस्त ॥ नाथ हतेतुम
असुरगण जिते सुरनके हेत । ते सब ह्वै हैं भूमिपति व्यथवत
महिहि अचेत ॥ ताते प्रभुतुम करिकृपा भूषिबिशद यदुबंश ।
बसुदेव कै करहुमहि भार बिबुध अवतंश ॥ प्रथम सिरजि
निजअंशसों संकरषणहिं उदार । तदनु प्रगटह्वै कृष्णतुम हरेहु
भूमिकोभार ॥ जयकरी ॥ करि सुप्रद्युम्नहिं आत्मज बार । लहेहु
तासु अनिरुद्ध कुमार ॥ इमिबिभज्य निजअंश उदार । ह्वै मा-
नुषहरिये महिभार ॥ सुनि तथास्तुकहि श्रीभगवान । करुणा-
निधिभे अन्तर्द्धान ॥ तब सुरगण बिधिसों यहभेद । बूझे सो
बिधि कहेअखेद ॥ परब्रह्म निर्गुण भगवान । जोअव्यय अव्य-
क्त महान ॥ तासों हम यहबिनयसचेत । कीन्हों जगधुरनाशन
हेत ॥ सुनि प्रभुकहे लेन अवतार । क्रमसों हरण भूमिकोभार ॥
ह्वै यदुबंशज कृष्ण उदार । करिहैं महिपै भूरि बिहार ॥
तहँजे जानिहैं मानुषताहि । तेसब मन्दबुद्धि पटुनाहि ॥ ज्ञेय
रूप ज्ञापक चितज्ञान । ज्ञाता करता प्रभु भगवान ॥ न्यामक
ईश्वर कृष्णहि जानि । भजिहैं ते लहिहैं सुखखानि ॥ इमिकहि
गे वेधा निजलोक । गेसुर ऋषिगण निज निज ओक ॥
सुनो भूमिपति यह इतिहास । परशुराम अरु नारदव्यास ॥
मार्कण्डेय सुमुनि अवदात । हमसों कहेरहे हेतात ॥ आत्मज
जासु बिरंचि प्रधान । सोजगदीश कृष्ण भगवान ॥ लखिपा-

एडवको धर्म सुनीति। हैं उनपै अनुकूल सप्रीति ॥ दोहा ॥
बिचारि हम प्रथमहीं भूपतुम्हैं बहुबार। दियो सिखापन सु
न तुम मानैसो ब्यवहार ॥ हैं नारायण कृष्णप्रभु अर्जुन
विख्यात । करि तिनसों इमि बैरतुम लहौ कुशलकिमितात
जहां कृष्ण तहँ धर्महै जहां धर्मजयतत्र। इहां न कृष्ण न धर्म
होय सुजयकिमि अत्र ॥ सोरठा ॥ भीषमके ये बैन सुनि दुर्यो
भूपमणि । कृष्णहिंराजिवनैन परमेश्वर जाने समुझि॥ चौपाई
भीष्म पितामहसों यहसुनिकै । अवनीपति दुर्योधन गुनिकै
कहे कहौप्रभु गुण मनभाये। सोसुनि भीषम अतिसुख पाये
जेहि बिधि प्रभु जग उत्पति कीन्हें। पृथक् पृथक्सो सब
दीन्हें ॥ सोकहि कहे भीष्म गुरुज्ञानी । पांडव यथातथ्य
जानी ॥ हैं कीन्हे केशवहि अराधित। तासोंपावत सुजय अ
धित ॥भीष्मपितामह यहिबिधिकहिकै । चुपहवैरहे मौनता
हिकै ॥तबतौतनय बिदाहवैजाई। सोइजगे फिरिनिशाबिता
निरखिभोरनृप अमरषबाढ़े। उभयसैन साजिसाजिमैठाढ़े॥
भीष्म अतिगौरव लीन्हें। मकरब्यूहकी रचनाकीन्हें ॥ मुख
रहेआपु जगजेना । करि सबअंगचतुरंगिनिसेना ॥ सोलखि
पांडवअतिकोहे। बिधिवत बाजिब्यूह अतिसोहे ॥ मुखथर
भीमभट भारी । बिदित पराक्रम अरि मदगारी ॥ धृष्टद्यु
अरुबीर शिखण्डी । चखभेअनमिष अमलअदण्डी॥ सा
किशीश पार्थभे ग्रीवा। लैसँग बहुभटपालक सीवा॥ बामपक्ष
द्रुपदनरेशा । सदल सपुत्र भयानक भेशा ॥ दक्षिण पक्ष
जयलायक । केकयपति अक्षौहिणि नायक ॥ नृपति युधि
सहितसमाजा । पृष्ठदेश हे सुनियेराजा ॥ सुवन द्रौपदीके
मर्दन। अरु अभिमन्यु सिंहसम नर्दन ॥ पुच्छरक्ष हे अरि
गंजन । निज चरितन गुरुजनमनरंजन॥ इमिरचि बाजिब्
अति भीषम। चलो भीमभट जहँहैं भीषम ॥ दोहा ॥ मकर





मुखभीष्म पै बरषत बाण निशाल । बाजिब्यूह मुखभीम भट
चलो चलै जिमि काल ॥ तब भीषम अति क्रोधकरि बरषि
बाणसमुदाय। पांडवके दलकेभये मोहित करकसचाय॥सोरठा॥
निजदल अरदितदेख बीरधनंजय क्रोधकरि । भयो भयानक
भेख हन्यो भीष्मपै सहसशर ॥ चौपाई ॥ लखि दुर्योधन भूपति
ज्ञानी। कही द्रोणसों यहिबिधि बानी॥ पूर्बदिवसमेंपांडवआई।
बधे सुभटबहु अरुबसु भाई ॥ भीष्म आदि तुम सबबलभारे।
एक प्रमाण पुरुष नहिंमारे ॥ हम तुम्हरे भीषमके बलसों। ल-
रत चहतहैं इन्द्र प्रबलसों ॥ नाहिं पांडवन गुणत हे रणमें। ते
तुव लखत करत इमि रणमें ॥ ताते अबगुणि ममहितधरिये।
निजअनुरूप पराक्रम करिये ॥ यह सुनिद्रोण क्रोधसों भरिकै।
लगेलरन करलाघव करिकै ॥ निजदल मर्दत द्रोणहिं देखी।
भिरोआय सात्वकि अतितेखी॥ सात्वकि द्रोण बीरबरभिरिकै।
कठिन युद्धकीन्हें तहँ थिरिकै ॥ करिकर लाघव द्रोण रिसारे।
दशशर भालदेश मधिमारे ॥ सोलखि भीमसेन अतिरोषे।
तजे द्रोणपै बहुरण चोषे॥ ताक्षण द्रोण भीष्म धनुधारी। अरु
नृप शल्य बिदित रणचारी ॥ बरकरलाघवके बितरनसों। भी-
महिं दीन्हें छाय शरनसों ॥ ताथर सुवन द्रौपदीकेरे। अरु अ-
भिमन्यु बीरयहहेरे ॥ तेषटभट अतिगौरव लीन्हें। इन्हें शरन
सों छादित कीन्हें ॥ कठिन युद्धमाचो तहँ ताथर। भिरे उभय
दिशिके योधाबर ॥ दोहा ॥ भिरो शिखण्डी आयतहँ भीषम
ताहि निहारि । पूर्बनारि यहजानि तजि युद्धकिये नतनारि ॥
सोरठा ॥ ताक्षण जानि अनर्थ द्रोणशिखण्डीसों भिरे। दोऊबीर
समर्थ बीरभाव बिधिमधि थिरे ॥ तोमर ॥ तो तनय तब अति
माखि । दलमध्य भीष्महिं राखि॥ बहु दुन्दुभी बजवाइ। बढ़ि
चलो रिससों छाइ ॥ सो निरखिभट भीमादि। बढ़ि भिरे घन
घनमनादि ॥ तहँ मचो संगरघोर। बहुभट कटे दुहुँओर ॥ बहु

भये शीश बिहीन । बहुभयेकर पदछीन ॥ बहुतजे तोमरबान
बहुभल्लशक्ति अमान ॥ हनि भिन्दिपालसटेक । बहुहतेगुण
अनेक ॥ बहुसुभट गहि असिचर्म । लरिहने भटन अमर्म
कटिगिरत बेपरमान । शिर उपलवृष्टिसमान ॥ नरमुण्डकरपद
रुण्ड । कटिपरे तुरगबितुण्ड ॥ केभुण्ड शोणितबीच । इमिलस
अमल अनीच ॥ मनुभारतीमधिजाद । परिरहेलहिअहलाद
कटि गिरत सुभट गजस्थ । तन भरें रुधिर अवस्थ ॥ ते गिर
इमि लखिजात । जिमिघने उलकापात ॥ भिरि गिरेकितनेबी
धरु मारु टेरत धीर ॥ बहुबीर ह्वै बिनु शीश । करिरहे धनु
कसीश ॥ दोहा ॥ कितने भट भिरि परस्पर बाहनअस्त्रबिदा
बाहुयुद्ध भिरि करतभे महाक्रोध बिस्तारि ॥ तहां कपिध्वज
थभट घनधुनि धनुटङ्कारि । मरदतभोतोदल प्रबल अगणि
बाण प्रहारि ॥ चौपाई ॥ अगणित भटन प्राणबिनु कीन्हें । अ
गणित अंगभंग करि दीन्हें ॥ बहुगज किये बिनाकर रदके
बहुभट कीन्हें बिना द्विरदके ॥ कितने सुरथकरे बिनुबाजी । अ
गणित कीन्हें बिनुरथ साजी ॥ बहुहय किये बिगत हयसा
बहुगज कीन्हें बिगत प्रमादी ॥ बहुबाहन ह्वै ह्वै गतबाहक
इत उत भगत फिरे बिनुगाहक ॥ बहु बाहक गतबाहनह्वैकै
लरत भये थिरि महिपै ज्वैकै ॥ कीन्हें बिनुध्वज बहुयुथपनको
दिये अधनुकरि बहुसुभटनको ॥ करिअतिकर लाघव हेराजा
छाय दिये तो सुभटसमाजा ॥ तो सैनिक गणको तेहि क्षनमें
रह्यो न दिशा ज्ञानगुणि मनमें ॥ इमि पारथघन केशर बनमें
भये मगन इतके भटरनमें ॥ पारथके धनुकी धुनि सुनिसुनि
ह्वै अधीरइतके भट गुनिगुनि ॥ भीष्मपितामह के ढिगदगो
तब सगर्व भीषमभे अगरे ॥ मद्र त्रिगर्त्त देश के योधा । अ
कालिंगज सुभट सक्रोधा ॥ भट गान्धार देशकेजेते । अ
सो बीर देशके तेते ॥ हयारोह निज दल सहनायक । अ





जयद्रथ सैन्धव नायक ॥ चौदह सहस्रसुभट रण धीरा ।
सहित शकुनि दुर्मति बरबीरा ॥ बढ़ि भीषमके सँग अति
बलसों । भिरे जाय पांडव के दलसों ॥ रथीगजी तुरगस्थ बि-
घाती । भिरे परस्पर बीर पदाती ॥ भिरेभीष्म पारथसों जाई ।
शल्य युधिष्ठिर भिरे रिसाई ॥ बीर अवंति देशको राजा । का-
शिराजसों भिरो ससाजा ॥ दोहा ॥ पुरुषसिंह भटभीमसों भिरो
जयद्रथ बीर । हांकि भिरो सहदेवसों भट बिकर्ण रणधीर ॥ दु-
र्मुखन अरु शकुनिये निज निज धनुटंकारि । सदल मत्स्यपति
सों भिरे सगर्व प्रचारि ॥ चेकितानअरु द्रुपद अरु सा-
त्यकि बीर प्रचण्ड । द्रोण द्रोणके पुत्रसों भिरे कराषिकोदण्ड ॥
॥ धृष्टद्युम्न बलवान कृप कृत बर्मासों भिरो । करत भये
घमसान यहि बिधिद्वन्द्व सहस्र जुटि ॥ भुजंगप्रयात ॥ मचोघोर
संग्राम ताठौर भारी । चढ़े चाव चोखे भिरे युद्धचारी ॥ उभय
ओरके बीरलै नामटेरैं । थिरौ हेथिरौ भाषिके बाण प्रेरैं ॥ किते
बाणमारैं कितेशक्तिझेलैं । कितेभिन्दिपालैं कितैभल्ल मेलैं ॥
किते खड्ग लीन्हे पिले खब्बखेलैं । कितेलै गदा घूमिदै घाव
ठेलैं ॥ बिना अस्त्र ह्वै कैकितेबीरटूटैं । भरेगर्वसों तालदै हां-
कि जूटैं ॥ भिदे भूरि शस्त्रानसों बीरकेते । खरे हे भरे कोपसों
युद्ध हेते ॥ भिरेबीर केते गिरैं फेरि ऊठैं । न संग्राम के ग्रामसों
कुतूठैं ॥ बिना शीशके ह्वै कितेबीर डोलैं । किते मारुरेमारुरे
मारुबोलैं ॥ दोहा ॥ सुबरण सों बिरचित बिशद बरण बरणके
भूरि । अस्त्र अनगिने जेरहे चलत उभय दिशिपूरि ॥ हेमम-
यी कोदण्ड अरु भूषणमय दोर्दण्ड । चपल असंख्यन होत हे
अध ऊरध जे चण्ड ॥ जानिपरो तिनकहँ निरखि मनुघनघटा
अनेक । अनुक्षन प्रगटाति दुरति फिरि प्रगटाति दुरतिसटेक ॥
चौपाई ॥ हय गजभट अगणित तेहि रणमें । कटे कटे अगणित
भटक्षणमें ॥ कितने मत्त द्विरद बिरुझाने । बाधि बहु भटनगये

बधिजाने ॥ अस्त्रजाल सों थिरि तिहि पलमें । भे मोहित भट दुहुँदलमें ॥ ताक्षण मत्स्याधिप रणधीरा । अरु बिराट बुद्धि गँभीरा ॥ लै सँग सुभट शिखण्डिहि कोपे । भिरे भीष्म जयहित चोपे ॥ कृप विकर्ण अरु बहुभट गणसों । भिरे पा भरिजय के प्रणसों ॥ सदल जयद्रथ के सँग ह्वैकै । बहुतौतन क्रोधसोंग्वैकै ॥ भिरे भीमसों अमरषसाने । भीमतिन्हैंलखिअ हरषाने ॥ शकुनि उलूक पितासुत ताक्षन । सहदेवसौंहभिरे तापन ॥ नकुल त्रिगर्त्तनसों भिरि राजा । किये युद्ध भिरि ज यश काजा ॥ केकय अधिप शाल्वसों भिरिकै । भूपति ल भयो तहँ थिरिकै ॥ सात्वकि चेकितानरणचारी । अरु अभि मन्यु विदित धनुधारी ॥ तो पुत्रनसों भिरि रण कीन्हें । बाण नहानि व्याकुल करि दीन्हें ॥ सेनाधिपति द्रुपद सुत योधा भिरो द्रोणसों सबल सुयोधा ॥ गजानीक युत धर्मनरेशा । की न्हो युद्धभयानक भेशा ॥ फिरि इमिबीरधीर तकितकिकै । भि बीर रससों छकि छकिकै ॥ दोहा ॥ मांस रुधिर के पंकसों पूरि कैहैंभूप । रणमण्डलभो कालकेपाक सदनकेरूप ॥ गुरुतोमर ॥ त दुंदुभिके भेरको । हयमैगलनकेटेरको ॥ बरधनुषकेटंकारको । अ भटनकेहुंकारको ॥ बहुभल्लतोमरधानको । असिभिन्दिमटोपमि लानको ॥ रवरह्योपूरिदिशानमें । तेहिसमयकेघमसानमें ॥ दोहा ताक्षणभीषमभीमकहँ निजदलमर्दतदेखि । हनतभये बहुबाण बरबधकी बिधिअवरेखि ॥ चौपाई ॥ तहांभीमअति रिसबिस्ता री । दीरघशक्ति भीष्म पै डारी ॥ भीषम शक्तिहि आवत देखी बीचहि काटि दये अतितेखी ॥ फिरि क्षुरप्रशर करमें लीन्हों मारि भीमको धनुद्वैकीन्हों ॥ लखि सात्वकि भीषमपैरोखे । स त्वरहने बाणबहु चोखे ॥ तबहिं भीष्मबर बाणप्रहारो । सात्वकि के सूतहि बधि डारो ॥ तब सात्वकिके रथके बाजी । निजबश भये बिनारथ साजी ॥ रथयुत इत उत दौरनलागे । धरहु धरहु





ब भौरनलागे ॥ दुचित भये पाण्डव तेहि क्षनमें । तहँ लहि समय भीष्म गुणि मनमें ॥ बरकरलाघव बिधि बिस्तारे । पर-दलके अगणित भटमारे ॥ सो लखि बीर पांडवी दलके । भिरे भीष्म भट सों अतिबल के ॥ तब इतके द्रोणादिक योधा । जु-टिकीन्हें तिनको अवरोधा ॥ नृप बिराट अति कोपितह्वैकै । हने तीनि शर भीष्महिं ज्वैकै ॥ तीनिबाण तुरगनके तनमें । उरगण समारत भे रनमें ॥ तब भीषम दशशर अनियारे । नृपबिराट तनमधि मारे ॥ अश्वत्थामा भट रणचारी । लखि अर्जुनहिं क्रोध बिस्तारी ॥ मारतभयो बाणषट तैसे । लषणहिं हनेजल-दस्वन जैसे ॥ दोहा ॥ तब पारथ अति कोपकरि मारिबाण उद्द-ण्ड । अश्वत्थामा बीरको धनुकीन्हें दोखण्ड ॥ सो धनुतजिकै द्रोण सुत गहिअनित्य कोदण्ड । हनेपार्थकेगातमें दशकमशत शरचण्ड ॥ सोरठा ॥ सत्तरिबाणबिशालहने कृष्णकेगातमें । लखि करिकोप करालपार्थहनेअतिकठिनशर ॥ चौपाई ॥ बेधितासुअति दृढतनुत्राणा । प्रविशो तनमधि सोबर बाणा ॥ भयो न व्यथित द्रोण सुततासों । बरषत रह्यो बाण भरि भासों ॥ जेइमि तासु शूरताचाहे । तेइतकेभटताहिसराहे ॥ गुरुकोतनय गुरुहि प्रिय भारी । अरु विशेषसोबिप्रप्रचारी ॥ पारथतापै करुणा धरि-कै । गये अनतही रिस परिहरिकै ॥ दुर्योधन भीमहि लखि रोखे । हनेबाणदश अतिशयचोखे ॥ तब कुरुपतिकहँ भीम प्र-चारे । हने बाणदश अति अनियारे ॥ भीमहि सो तेहि भीम प्रहारी । घोर युद्ध कीन्हों धनुधारी ॥ भटअभिमन्यु धीर रण-चारी । चित्रसेन कहँ दश शरमारी ॥ सत्तरिबाण भीषम कहँ मारे । पुरमित्रहि शरसात प्रहारे ॥ चित्रसेनमारे तेहि क्षनमें । दशशर पार्थतनय के तनमें ॥ भीषम हने बाणनव ताही । अरु पुरमित्र सातशर चाही ॥ तबअभिमन्यु क्रोधकरिडाटो । चि-त्रसेन नृपको धनुकाटो ॥ तबबहु भूपक्रोधसोंपागे । घेरिताहि

शर मारनलागे ॥ तहांधनंजय को सुत बरभट । करतभयो अ
ति बिक्रमपरगट ॥ सब के बाणकाटि महिडारे । सबके तनमा
बाण प्रहारे ॥ दोहा ॥ अर्णव मधि बड़वाग्नि समलस्यो त
बरबीर । पार्थ तनय अभिमन्यु भट बिदित धनुर्द्धर धीर
ऐसेसंगरमें निरखि अभिमन्यु हि निश्शंक । भिरोजायलक्ष्म
कुंवरकीन्हें भृकुटीबंक ॥ सोरठा ॥ निरखि लक्षणहिं तत्र तत
पार्थको कोपकरि । गुणि लीबो जयपत्र हनत भयो षट बा
बर ॥ जयकरी ॥ फिरि सूत महाबलकेतनमें । षटबाण हनेरि
मनमें ॥ तेहि ताक्षणलक्षण बीरबली । बहुबानहने गहि पैं
भली ॥ अभिमन्यु महारिस त्योंगहिकै । अबआइहु मो शर
कहिकै ॥ सब बाजि हते तेहिके रथके । चलिजे कबहूं पथमें
थके ॥ फिरि सूतहि मारि गिरायदयो । करमेंतबबाण करा
लयो ॥ लखि लक्षण सत्वर शक्तिहने । अभिमन्यु करेतेहि
घने ॥ यहदेखतही कृपजू बढ़िगे । तेहि लै अपने रथपै कढ़िगे
दुर्योधन को सुत ताक्षण में । यमके मुखते बचिगो रणमें ॥
उभयसेनसों होतभो घोरयुद्ध तेहिकाल । पृथक्पृथक् कहि
लहे तासुअन्त क्षितिपाल ॥ अद्भुत बिक्रमतहँ कियो सात्व
बीर अमान । कारिकरलाघव तजतभो अनुपम अगणित बान
सोरठा ॥ जिमिकब किमि जलदान तजत बारिनहिं लखिपरत
तिमि सात्वकिके बान गहत तजतनहिं लखिपरे ॥ मदिरा
तहँ छाय दीन्हें बीरसात्वकि बाणबर चित्रित बने । अति चप
अति सन्धानमें हति डारि दीन्हें भटघने ॥ यहिभांति निज
बधत लखि कुरुनाथ तोसुतरिसभरो । इमि कह्यो अयुत रथी
नसों लरि सात्वकीको बधकरो ॥ सुनिरथी ते बढ़ि कोपक
भिरि सात्वकी सों लरतभे । भिरि सात्वकी के शरन सों ब
सुभट तिनमें मरतभे ॥ बहुभये अकर असूत अधनु अभा
बहुरण तजि गये । यहदेखि भूरिश्रवा सात्वकि बरिके सन्मु





भये ॥ दोहा ॥ कारि करलाघव सबिधि तहँ भूरिश्रवा अमान ।
सात्वकिके दलपै दये छाय उरग समबान ॥ सोरठा ॥ ह्वैब्या-
कुल तेहिकाल सात्वकि के भट भगे तिमि । जिमि लखिसिंहै-
हि हाल मत्त गजहितजि कलभगण ॥ चौपाई ॥ सात्वकिके दश
सुत बलभारे । तेसब भूरिश्रवहि प्रचारे ॥ कहत भये इमि अ-
तिशय माषे । हम सब तुमसोंरण अभिलाषे ॥ पृथक्पृथक् कै
साथहि लरिये । जिमि चाहौ तिमि संगर करिये ॥ कैतुम हमहिं
जीति जय लहिहौ । कै हमसों मरि नभपथ गहिहौ ॥ सोसुनि
भूरिश्रवा मुसुकाई । कह्यो लरहु सबसाथहि आई ॥ सोसुनि ते
दशभट अतिहरषे । भूरिश्रवा पर बर शर बरषे ॥ ते सिगरे
अगणित शरमारे । भूपकाटि सब महिपै डारे ॥ तृतियपहर में
ते भिरि ताथर । कीन्हों घोरयुद्ध योधाबर ॥ भूरिश्रवा कियो
अतिबिक्रम । काटि दियो सबके धनुक्रम क्रम ॥ फिरि तिनके
शिर छेदन करिकै । गरज्योहियोमोदसों भरिकै ॥ निजदलपुत्र-
नके बधदेखी । भूरि पराक्रम सात्वकिलेखी ॥ सत्वर भूरिश्रवा
सों भिरिकै । कठिन युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ रथके हय अरु
धनुध्वजभारी । काटि परस्पर ते रणचारी ॥ खड्ग चर्म गहिगहि
रथत्यागी । लरनलगे अतिरिससों पागी ॥ यहि बिधि लरत
सात्वकिहि पेखी । पाण्डव भीमसेन अवरेखी ॥ शीघ्र सात्व-
किहि रथपैलीन्हें । कहिसुबचन आश्वासितकीन्हें ॥ दोहा ॥ दु-
र्योधन भूरिश्रवहिलै निजरथपै तत्र । बजवावतभे दुन्दुभी मनु
लियजयपत्र ॥ दुर्योधन क्षितिपाल भणिकै सगर्व तेहिकाल ।
अर्जुनपै भेजेसुभट सहसपचीस कराल ॥ तिन्हें सँहारे निमिष
में पारथधीर धुरीण । नरगजहयके रुधिरकी सरितहिकीन्ही
पीण ॥ ताक्षण भीषम बीरबर घोरयुद्ध करिभूप । अगणित भट
रणमें हने भये भयानक रूप ॥ इतनेमें संध्याभई अस्त होत
भसूर । फिरि निजनिज डेरन गये उभय भटनके पूर ॥ सोरठा ॥

निजनिजडेरन जाय उचित कृत्यसब करतभे । इमि पचयों दि
पायभयो युद्धहे भूमिपति ॥

इतिभीष्मपर्बणिपंचमदिवसयुद्धबर्णनोनामसप्तबिंशोऽध्यायः २७॥

दोहा ॥ लहि छठयोंदिन भोरहीनित्यकृत्य करिसर्ब। सजतभे
निज निज सयन भूपतिगहि गहिगर्ब ॥ लहिआज्ञा नृपधर्मके
धृष्टद्युम्न मतिमान । मकरब्यूह बिरचितभयेअनघ अभेद्यअम
न॥ चौपाई ॥ शिरभे पारथ द्रुपदनरेशा। सहदेवनकुल चक्षु शुभ
देशा ॥ मुखभे भीमसेन अरिमर्दन । पुरुषसिंहबारिदसमनर्दन
सात्वकि सहित युधिष्ठिर राजा । अरु अभिमन्युबीर सहसा
जा ॥ सुवन द्रौपदीके रणधीरा । अरुभट प्रबल घटोत्कच बी
रा ॥ येभेग्रीव बिराट ससेना । पृष्ठ देशभे अरिदल जेना ॥ पां
भाय नृपकैकय थरके । अरुभट धृष्टद्युम्न बलबरके ॥ बामपा
ह्वै सदल बिराजे । रण मण्डल सुखमासों साजे ॥ ससयन चे
कितान नरनाहू । अरुनृप धृष्टकेतु बरबाहू ॥ दक्षिण पक्षब्यू
को ह्वैकै । खरभये अमरष सों ग्वैकै ॥ इराबाण अरुबीर शि
खण्डी । पुच्छभये लैसेना चण्डी ॥ कुन्तिभोज नरपति रा
चारी । अरुनृप सतानीक धनुधारी ॥ सदल भयेहे पद आ
नाशन । गर्बि गरजि टंकारि शरासन ॥ यहिबिधि मकरब्यू
रचि जतिसों । लसे भूप पाण्डव बलअतिसों ॥ उनको मक
ब्यूह लखि भीषम । बिरचे क्रौंचब्यूह अतिभीषम ॥ तुण्ड त
सुभेद्रोण सुकामा । चखभे कृप अरु अश्वत्थामा ॥ नृपबाह्ली
भूप कृतबरमा । सदल शीशभे पूरित परमा ॥ दोहा ॥ सूरसे
आदिक नृपन सहदुर्योधन भूप । भे उरक्रौंच सुब्यूहको आयु
गहे अनूप ॥ देश प्रस्थला को अधिप नृपति सुशर्मा बीर
निज दल युतभो ब्यूहको बामपक्षगंभीर ॥ चूलिक जवन तुषा
अरु सकदेशस्थ समस्त । क्रौंचब्यूह के होत भे दक्षिण प
प्रशस्त ॥ नृपति श्रुतायुस सतायु अरु भूरिश्रवा नरेश। क्रौं





ब्यूहके जघनह्वै शोभित भये सुभेश ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि रचि
रचि ब्यूह उभय बन्धु अमरष भरे । बाढ़िबाढ़ि सह भटजूह भिरि
भिरि लागे लरन तहँ ॥ चौपाई ॥ भिरेगजस्थगजस्थ प्रचारी ।
जूटे रथी रथी धनुधारी ॥ हय सादिनसों भिरि हयसादी । की-
न्हेयुद्ध सिंह समनादी ॥ भिरे पदातिन सों पदचारी । केशरि
समरण बिपिन बिहारी ॥ भिरे गजनसों रथीप्रमाथी । भिरेरथ-
स्थ हयस्थ ससाथी ॥ भिरे रथिनसों किते पदाती । कुशल
अस्त्र बिधिमें दृढ़घाती ॥ कितने हयसादीतेहि क्षणमें । मरदन
लगे पदातिन रणमें ॥ कितने तुरग गजनपै डारे । तोमरसांग
भल्लअसिमारे ॥ घनसमान सेना चतुरंगी । मणिमय धनु
असितुरित सुअंगी ॥ कूजनि हय गजकी चहुँ ओरा । अरु
दुन्दुभि धुनि गरजनि घोरा ॥ आयुधपात बारिझरि दुरदिन ।
सरुधिर रणमहि शरध्वज कुमुदिन ॥ रथनेमिनकी धुनि सुनि
काने । बोलत बिबिध बिहँग उमदाने ॥ मणिगण मुकुटआभ-
रण वारे । जुगुनूजाल समाननिहारे ॥ सुभटनकी घुमरनि गहि
धाई । सो जनु चली प्रबलचौपाई ॥ रुधिर भरे भटगज हय
करे । तेजनु बिटपबारिसों पूरे ॥ मरेबाजि नरगणके केशा ।सा-
डबल सम तहँ लसेसुभेशा ॥ रणमण्डल सुखमासों सानो । प्रा-
बिटकाल समानलखानो ॥ दोहा ॥ तहां भीमअति बेगसोंचलो
द्रोणपै तात । देखिद्रोण तब शरहने भीमसेनके गात ॥ भीम-
सेन तब कोपकरि तीक्षण शर सों मारि । द्रोणबीरके सारथिहि
दीन्हें महिपै डारि ॥ सोरठा ॥ द्रोणाचार्य अभर्म आपुबागगहि
द्रुति सों । कीन्हें अद्भुत कर्म बरषि बाण अरिसैनमें ॥ भीष्म
द्रोण तेहि ठौर उतके अगणित भटबधे । पारथभीम सगौरभट
असंख्य इतके हते ॥ चौपाई ॥ तब धृतराष्ट्र कहतभे ऐसो । सं-
जय होतलिखे बिधि जैसो ॥ दल अरु बन्धुद्रब्यबलगुण सों ।
मसुत भूप अधिक है उनसों ॥ जैसेभट अगणितममदलमें ।

तैसो एक न उनके बलमें ॥ भीष्मद्रोण कृप अश्वत्थामा। इ
समको उत बिक्रम धामा ॥ ममसुतसो लहि लहि मनभाये
मोंदित सब नृप मम दिशि आये ॥ नहिं सुनि बिनै नातगुनि
क्षोहन । आय लरत ये नृप मम गोहन ॥ सबबिधि उन कहुँ
जीतन लायक । है दुर्योधन कुरुकुलनायक ॥ सो नहिं जीति
लहत नित हारत । नितवै मम अगणित भटमारत ॥ वैभीष
द्रोणादि भटनको । जीतत यह ब्यथवत मम मनको ॥ बिदु
अनेकबार समुझायो । नहिं दुर्योधन हिये बसायो ॥ जो कहु
बिदुर कहत हे आगे । सो अब आवन चाहत आगे ॥ सुनि
यह अन्यभूपकी बानी । कहतभयेसंजय अनुमानी ॥ नृपश्र
होत जितो अनभल है। सोसब तुव अवगुणको फलहै॥ गृह
दाहादिक अनरथ जेते । भये किये नृप तुम सबतेते ॥ गुणो
न जुवा युद्ध करवावत । अबकतइतनो शोच बढ़ावत ॥ अ
नितदुस्तर अनरथ सुनिहौ। लहि दुखदुसह दोषनिजगुनिहौ
दोहा ॥ तुम्हैं न बूझे बिनु कियो दुर्योधन कछुकर्म । मनै किये
तुम जौननाहिं कीन्हों तौनअधर्म ॥ तातेअबकछुमति कहौ मति
कहवावहुभूप । युद्धब्यवस्था सुनहुसब निजकृत के अनुरूप
सोरठा ॥ करत कर्म नर जौन सुखद दुखदजेहि भांतिको। अ
शितासुफल तौन लहतभूप इतकै उतै ॥ रोला ॥ मचे संगरघो
भीम असंख्य सेना मर्दि । निरखिकै तौ सुतनको समुदाय घ
सम नर्दि ॥ चपलरथ चलवाय बाणन मारिब्यूह बिदारि। भये
प्रविशित सैनमें बहु बाजिगज भटमारि ॥ पाय निजदल मध्य
भीमहिं सिमिटि तौ सुतसर्ब। लेहु जीवतपकरि यहि यहसमुझि
गहि गहि गर्ब ॥ चले सम्मुख भीमके सँग लये सेनाभूरि। भी
मबीर प्रचण्ड तिनमें देतभो शर पूरि ॥ हनत आयुध सकल
तौ सुत सर्ब दिशिसों घेरि । चलेभीम सुधीर पै अब भागुमानि
इमिटेरि ॥ जानिकै वृत्तान्त तौसुत भटनको तब भीम । गदा





गहिकै कूदि रथसों भिरोबीर अधीम ॥ तुरग रथ गजसुभट
अगणित मारि मरदतबीर । सयनके मधि देशमें चलिजातभो
रणधीर ॥ तहां बिगत सहायप्रविशित बीर भीमहिं देखि।धृष्ट-
द्युम्न महारथी तजिद्रोण कहँ अवरेखि ॥ चलो सत्वर भीमके
ढिग तजत अगणित बान । द्रोणसों उत भिरतभो तब द्रुपद
भूप अमान ॥ कौरवीदल मधि प्रविशि भट धृष्टद्युम्न उदार ।
भीम बिनुरथ भीमको लखि भयो दुखित अपार ॥ भयो बूझ-
त सारथिहि भरि नयन चैन गँवाय । भीम भट मम प्राणप्रिय
का भयो देहु बताय ॥ कहतभो नृप तनयभटसों सारथी इमि
तत्र। भीम गहि गुरुगदा गे कुरुनाथ भूपति यत्र ॥ दोहा ॥ मम
बध हितजे उदिततें क्षणमें तिन्हैं बिपोहि । मैं आवों तौ लगि
रहौ तुम बत कहिगे मोहि ॥ चौपाई ॥ ऐसो बचन सूतसों सुनि
कै। धृष्टद्युम्न सेनापति गुनिकै ॥ भीमसेन ममसखा सोहायो।
अरु सम्बन्धी जग में गायो ॥ ताहि बिना निजदलमें जाई ।
कहब कहा सुभटनसों भाई ॥ भीरिपरे तजि संगिहि जोई। नि-
जबचाव गुणिन्यारे होई ॥ दैवनकरततासुभल कबहूं । अयश
नरक तेहि अबहूं तबहूं ॥ ताते गयो जहां नरचारी । जाततहां
इमब्यूह बिदारी॥ इमिकहि धृष्टद्युम्न धनुधारी। चलोसैन मधि
भटन प्रचारी ॥ जितह्वै भीमसेन दल मर्दत । गयो रहोसिंहै
सम नर्दत ॥ बरषत बाणगहे मगसोई । गयो न आड़ि सक्यो
तेहिकोई ॥ यहिबिधि बीरजाइ मधि दलमें । लखतभयो भीम-
हि तेहि पलमें ॥ तिमि बिहरत सुभटन तेहि मारत । सोसब
दिशिफिरि भटन सँहारत ॥ अगणित गज हय भट बधि डा-
रे। हाहाकार सैनमें पारे ॥ धृष्टद्युम्नहमि भीमहिं देखी । निकट
गये हिय मुदसों भेखी ॥ सादर निज रथपरबैठारे । लगेरहे
शरातिन्हैं निकारे ॥ फिरिते उभयबीर मदमाते । लागेलरनबीर
रसराते ॥ दोहा ॥ एककालमें अतिप्रबल अनिल अनल बनपाय।

जिमि बिचरै तिमितहँ लसे ते युगभटगहिचाय ॥ तहँ नि
बंधुनसोंकहे दुर्योधन अनखाय । द्रुपद तनय इत भीमकी अ
ओ करन सहाय ॥ अबयाको बध करहु लरि करिकै कछूउ
य । तौ मम जीवन सुफल है जोयह जियत न जाय ॥ चौपाई
यहसुनि सिगरे भट भय त्यागे । धृष्टद्युम्न कहँ मारनलागे
घनजलजाल अचलपरजैसे । तापरबरषे ते शर तैसे ॥ धृष्ट
द्युम्न तहँ अति रिस धारयो । तिनपै मोहन अस्त्र प्रहारयो
तब तो सबसुत मोहित ह्वैकै । जड़सम भये चपलता ग्वैकै
भूपति तहां लराई बिगरी । भगी फौज तिहि थरकी सिगरी
वादिशि जीति द्रुपद कहँ आरज । शंख बजायो द्रोणाचारज
सुनो द्रोण तहँ ताही क्षणमें । मोहितभे सबकौरव रणमें ॥
रितगये तित धनुटंकारत । पाण्डवके दलमें भय पारत ॥ यहि
बिधि शीघ्रद्रोण तहँ आये । ते भट तिनहिं हनत नहिं पाये
तहँ तो सुतन प्रमोहित देखी । बरप्रज्ञास्त्र तज्यो अवरेखी
तबहीं चेति उठे सबयोधा । लगे पूर्ववत लरन सक्रोधा ॥ त
क्षण धर्म भूप अनुमानी । निज सुभटनसोंकही सुबानी ॥ भीम
गयो परदलमें जब सों । खबरि न तासु मिली कछु तबसों
होति मोहिं अति चिन्ता भाई । सादर लेहु खबरि उत जाई
भयो कहाका करतब कीन्हों । केहि केहि मारि आजु यशली
न्हों ॥ यह सुनि द्वादश भट बलपूरे । चले सदल बरषत श
रूरे ॥ दोहा ॥ पांचभाय केकय अधिप अरु अभिमन्युसुबीर
पांचद्रौपदीकेसुवन धृष्टकेतु रणधीर ॥ ये द्वादशभट चले त
रचि सूचीमुख ब्यूह।बधतइतके ब्यूहपर मर्दत भटगुणब्यूह
सोरठा ॥ मचोरहो तेहिकाल अर्जुनसों अरुभीष्मसों । संग
कठिन कराल दक्षिणदिशिमें भूपमणि ॥ तोमर ॥ अभिमन्यु आ
दिक बीर । जेचले उतरणधीर ॥ भटइतैके अवलोकि। नहिंस
के तिनकहँ रोकि ॥ तेहनत भटन बिनोदि । गेभीमके ढिगमो





दि ॥ तहँ भीम तिनकहँ देखिं । अतिमुदित भे अवरेखि ॥ त-
हँ मचो संगरघोर । शरपूरि गेअबओर ॥ कैकेय नृपति उदा-
र । भटभीमको करिप्यार ॥ निजसुरथपर बैठाय । भिरिलगे
लरन सचाय ॥ तेहिसमय नृपअभिराम । दिनगयोहो युगया-
म ॥ सुतद्रुपदकोबलवान । भिरिद्रोणसों सबिधान ॥ करिधनुष
कोसंधान । मोहनत अगणित बान ॥ तबद्रोण ताकहँ डाटि ।
बरधनुषदीन्हींकाटि ॥ इमिकाटिकैधनुतासु।बहुबाणमारेआसु ॥
भटद्रुपदसुत तेहि ठौर । गहितुरित बरधनुओर ॥ आचार्य्य
भटके गात । शरहने सत्तरिजात ॥ तबद्रोण बरशरप्रेरि । धनु
तासु काट्यो फेरि ॥ फिरि मारिबर शरचारि । बरबाजि चारों
मारि ॥ नृपसुतहि बिरथ निहारि । आचार्य्य धनुटंकारि ॥ स-
बभटन के तकि काय । शरहनतभो दृढ़घाय ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न
रणधीरतब निज रथतजि अनखाय । बिदितबीर अभिमन्युके
रथपर राज्योजाय ॥ ताक्षणआयो सुरथलै रथी बिशोकसुजान ।
केकयके रथसों गयो तापैभीम अमान ॥ सोरठा ॥ दुर्योधन
क्षितिपाल सदलभिरो तबभीमसों । गहिकोदण्ड कराल भीम
हने तेहिबिशिख बर ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन नृपरिसबिस्तारे । बाण
बिशाल भीमकहँमारे ॥ घनसम गरजि भीमतेहि क्षनमें । हने
तीनिशर नृपके तनमें ॥ भीमाहिंहनेभूपदुर्योधन । दुर्योधनाहिं
भीम जयशोधन ॥ ताक्षण सबतों सुत अभिमानी । भिरेभीमसों
मनरथ जानी ॥ भिरो भीम तिन सबसों तैसे । भिरैबायु तरु
गणसों जैसे ॥ बाणबिशाल परम अनियारे । सबके तनमेंभीम
प्रहारे ॥ हनेभीमकहँ बहुतिनते तब । तिन कहँ भीम भीमकहँ
तेसब ॥ सोलखिभट अभिमन्युहि आदी । तिनपै चले सिंह
समनादी ॥ तिनहिं देखि तोसुतभयपागे । तुरितभीमसोंलरिबो
त्यागे ॥ लरनलगेसबतिनसों भिरिकै । तजनलगे आयुध फिरि
फिरिकै ॥ तहँअभिमन्यु जीतिसों रतिकै । हयबिकर्णके रथके

हतिकै ॥ बाणपचीस बिकर्णहि मारे । अबथिर रहुमति भागु
चारे ॥ तब बिकर्ण निजरथ तजिपथपै । गोचालि चित्रसेन
रथपै ॥ तेयुगबीर एकतेह्वैकै । अतिअभर्मअभिमन्युहिज्वैकै
छायदेतभेजालशरनके । हरणहार जे प्राण परनके ॥ ते युगा
जितने शरडारे । सबअभिमन्यु बाणसों वारे ॥ दोहा ॥ पांचबा
अभिमन्युके तनमेंलागेभूप । ताक्षण गत भो दिवसको पह
तृतीय अनूप ॥ कैकेयनसों लरतभोदुःशासन बरबीर । दुर्यो
धन सोंभिरतभे द्रौपदेय रणधीर ॥ सोरठा ॥ इमि भिरि भि
गहिगर्वघोरयुद्ध तेकरतभे । याहीबिधि भटसर्व ठौर ठौरभि
लरतहे ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाघोर संग्राम ताचोसमाचो । गुणा
इहै धौं प्रलयकाल साचो ॥ बलीभीम औभीष्म औ पा
योधा । तनय पार्थ को औ कृपाचार्य क्रोधा ॥ तनय द्रोणा
औ बली द्रोणधीरा । घटोत्कंच औ सात्वकी शल्य बीरा
गणोबीर भूरिश्रवा रोष राते । पिता द्रौपदीको हियो जा
ताते ॥ ससेनाइन्हैं आदिदै बीर कोहे । सहस्रै सहस्रा
से तत्र सोहे ॥ लसै अंशुसे अस्त्रके भेद रूरे । चहूंओरजेहे
वै ठौरपूरे ॥ सरी आयसी ज्वालकी जाल जामें । दहैलोमा
सैनकेजीवतामें ॥ गजरथादि बीरानकीबेगमारी । महाबायु
सर्व आशाप्रचारी ॥ प्रलयबारिके पूरसी पूरिसोही । बढ़ी शो
णितोदा नदी तत्र जोही ॥ दोहा ॥ मारुमारु धरु मारु औ
मार्यो करौ बचाउ । आउखरोरहु भागुमति सहु ममशर
घाउ ॥ ये अरु धनु टङ्कार अरु अस्त्रबेगको शब्द । अस्त
अस्त्रामिलापको रह्यो परसि महि अब्द ॥ सोरठा ॥ दुर्योध
क्षितिपाल लखि दिनको चौथो पहर । करि अतिकोप करा
चलो भीम पै बेग सों ॥ चौपाई ॥ दुर्योधनाहिंआपु पै आवत
निरखि भीमबोलो मनभावत ॥ चौदह बर्ष कल्पसम बीतो
चाहत यह शुभदिन चित चीतो ॥ अबमैं तोहिंबधतहौं क्षणमें





पैमति भागु खरोरहु रणमें ॥ द्रुपदसुताके कचको कर्षण । कर-
वायो तुम जौन अमर्षण ॥ शकुनिकर्णके मतसों जैसे । कीन्हैं
है तुम कर्म अनैसे ॥ आजु तुम्हैं तिनको फल दैहौं । हियको
ताप मेटि सुख लैहौं ॥ इमिकहि छब्बिस शरअनियारे । दुर्यो-
धन के तनमधि मारे ॥ हनिद्वैबाण धनुष द्वैकीन्हों । द्वैशर हनि
सूतहि बधिदीन्हों ॥ फिरि हनि चारिबाण छबिछाये । तुरगन
हति यमलोक पठाये ॥ काटोछत्र बाण द्वैमारी । ध्वजकाटो शर
तीनिप्रहारी ॥ मणिमय ध्वजबर गिरत लखानो । चपलागिरी
जलद ते मानो ॥ घन समगरजि कालसमरोखो । दरशावतभो
बिक्रम नोखो ॥ फिरि दशबाण सूतके तनमें । हने भीम अति
कोपित मनमें ॥ तेहि क्षण बीर जयद्रथ जाई । भिरो भीमसों
नृपहि बचाई ॥ कृपाचार्य्य तहँ तुरता कीन्हें । भूपहि निज रथ
पर करि लीन्हें ॥ दुर्योधन नृप मूर्च्छित ह्वैकै । रथपर परे डरे
सब ज्वैकै ॥ दोहा ॥ कैयक सहस्ररथीनसह तहां जयद्रथ धीर ।
धेरि भीमसों लरतभो तिनसों भीमसुबीर ॥ धृष्टकेतु अभि-
मन्यु अरु द्रौपदेय कैकेय । ये सब भिरि तो सुतन सों कीन्हे युद्ध
अमेय ॥ चित्रसेन चित्रांग अरु चारु चित्र बलवान । उपन-
न्दक अरुनन्द अरु बीर सुचारु अमान ॥ सुभटाचित्र दरशान
प्रबल अरु सुचित्र ये सर्व । तो सुत भिरि अभिमन्यु सों कीन्हों
युद्ध सगर्व ॥ चौपाई ॥ तहँ अभिमन्यु सुयुद्ध बिहारी । तिनके
बाण बाण सों बारी ॥ पांच पांचशर तिनकहँ मारे । ते सब
फिरिअगणित शर डारे ॥ सब शरकाटि बाणपरिहरिकै । क्षणमें
तिन्हैं पराजित करिकै ॥ भट अभिमन्यु बिदित धनुधारी । तब
बिकर्ण सों भिरो प्रचारी ॥ तापै तजि चौदह शरगनिकै । हय
ध्वज धनु अरु सूतहि हनिकै ॥ डारिदिये महिपै तेहि क्षनमें ।
भट अभिमन्यु कोपकरि मनमें ॥ फिरिशर एक श्रवणलौंतानी ।
हन्यो बिकर्णहि भट अभिमानी ॥ सोशर अति तीक्षण निरखे-

दी । लगि बिकर्णको दृढ़तन छेदी ॥ रुधिर भरो धरणीमें धँसि
गो । तब बिकर्ण मूर्च्छा कै बसिगो ॥ यह लखिभट बिकर्ण के
भाँई । पार्थ तनय सों करी लराई ॥ सुवन द्रौपदी को श्रुतक
मा । तासों भिरि दुर्मुख बरपरमा ॥ सातबाण हनिताके तनमें
फिरिकाट्यो धनुध्वजतेहि क्षनमें ॥ फिरिहनि तेरह शर रिस
अतिकै । डारि दैतभो सूतहि हतिकै ॥ तब श्रुतकरमा अति
रिस कीन्हों । शक्ति बिशाल पाणिमें लीन्हों ॥ तासों दुर्मुखको
तनभेदो । सो लखिकै तो सुत अति खेदो ॥ श्रुतकर महिगत
रथ लखि आई । भटसुत सोम तासु प्रिय भाई ॥ लैनिजरथ
पै आनँद पागो । सरुचि पूर्बवत् बिहरन लागो ॥ ताक्षण में
श्रुतिकीर्त्ति सुबीरा । सुवनद्रौपदीको रणधीरा ॥ तोसुतजोजय
सेन गनायो । तासों भिरि अतियुद्ध मचायो ॥ तहँतो सुतजय
सेन सुनामी । काट्योतासु धनुष जयकामी ॥ दोहा ॥ सो लखि
कै सुतनकुलको शतानीक बलवान । हनतभयो जयसेनकेआँ
में बर दशबान ॥ तबतो सुत दुःकर्ण भट मारो बाण उदण्ड
शतानीक रणधीरको काटि दियोकोदण्ड ॥ गुरुतोमर ॥ तबशता
नीक रिसाय कै । गहि आन धनुष चढ़ायकै ॥ रहु खरो कहि
शर एक सों । धनुतासु काटो टेकसों ॥ षटबाण फेरिप्रहारिकै
हय सहित सूतहि मारिकै ॥ शर एक दीरघ झेलिकै । दुःकर्ण
के उरमेलिकै ॥ हति भूमिपैकरि देतभो । अति दीह आनँदलेत
भो ॥ दुःकर्ण कहँ हत देखिकै । तोपांच सुत अतितेखिकै ॥ भिरि
शतानीक अमान सों । थिरि हनन लागे बान सों ॥ तहँ भिरे
तिनसों गौरसों । भट शतानीक सुडौरसों ॥ दोहा ॥ ताक्षणकेकय
के अधिप पांच भाय रणधीर । तिनपांचौ भट सों भिरे हनत
अनगिने तीर ॥ घोरयुद्ध तहँ होतभो तिनसबसों क्षितिपाल
रण मण्डलमें तेहि दिवस निरतो कालकराल ॥ महिखरी ॥ अति
युद्ध घोर महान नृप सब ठौर तहँ तिहि दिन भयो । गजतुरग





नरके रुण्ड मुण्डन सों सुरनमण्डल भयो ॥ तिहि दिवसरजनि
मुहूर्त्त गतलों सुभट सिगरे तहँ लरे । लखि लखि परस्पर भरे
अमरष गरब गहि गहिनहिं टरे ॥ तब भीष्म शंख बजाय भट
समुदायलै निज दिशि गये । नृप पाण्डु सयन समस्तलै निज
शिविरको शुभ मगलये ॥ निज निज सुडेरन जाय बिधिवत
निति करम सबकरत भे । करि शयन सहित बिधान श्रमको
खेद सबपरिहरतभे ॥ दोहा ॥ यहि बिधि छठयें दिनभयो घोर
युद्ध हे भूप । पृथक् पृथक् नहिंकहि सके कहे बिशेष अनूप ॥

इतिश्रीभीष्मपर्बणिषष्ठदिनयुद्धबर्णनोनामअष्टबिंशोऽध्यायः २८ ॥

दोहा ॥ सप्तम दिनके आगमनकी रजनी लखि शेष । सजन
लगे सब उभयदलके सैनिक भट वेष ॥ ताक्षण दुर्योधन नृपति
चिन्तित ह्वै अनुमानि । भीष्म पितामह सों कहे निजहितकर-
ता जानि ॥ चौपाई ॥ तुम सब बिधि करतामम प्रियको । तातें
कहउँ शोच निज हियको ॥ भीम अकेलो कढ़ि निजदल सों ।
करि ममब्यूहविदीरण बलसों ॥ आयोसिंह सहशमधि दलमें ।
अगणित भटन संहार्यो पलमें ॥ तहँ तेहि बिधि तेहि देखेउँ
तबलों । मो मन धीर धरत नहिं अबलों ॥ तासों हम जयचा-
हत स्वामी । ह्वै तौ भुज बलके अनुगामी ॥ यह सुनिकै भीषम
हँसि बोले । भरे बीररस बचन अमोले ॥ मन वच क्रमहमतो
जय चाहत । जीवन चाहि न निज तन पाहत ॥ जेहि बिधि तुम
जय पावहु राजा । हम सबघरी गुणत सो काजा ॥ परजे महा-
रथी भटरूरे । हैं पाण्डव के सँगबलपूरे ॥ नृपन सहजातिन सों
जय लहिबो । यथा जियत केशरिको गहिबो ॥ तथा पराक्रम
तिनसों लरिहौं । तनत्यागावधि तोहितकरिहौं ॥ लरिपांडवन
बिकलकरिदेहौं । तौ प्रिय करि रणमें मुद लेहौं ॥ भीषमकी यह
बाणीसुनिकै । दुर्योधन नृप पुलके गुनिकै ॥ चावचढ़े दुंदुभिब-
जवाये । परदलमुख निज दल चलवाये ॥ बिबिध रंगके ध्वज

छत्रणसों । अरु हय गजरथभट अत्रणसों ॥ तौ सुतकी सेना
तहँ राजी । गाहियहिबिधिकी सुखमाताजी ॥ मानहुँ उदयाचल
कैं जंगम । चाह्यो अस्ताचलको संगम ॥ दोहा ॥ तेंहि क्षण दु-
र्योधन नृपहि निरखि शोचसों ग्रस्त । कहे भीष्म साहसजनक
बचन बिशाल प्रशस्त ॥ हम कृप द्रोण बिकर्ण शल द्रौणिश-
ल्य भगदत्त । बिन्द भूप अनुबिन्द अरु कृतबरमा मदमत्त ॥
भूरिश्रवा बाह्लीक अरुबीर दृहद्बल भूप । इन्हैं आदि अग-
णितनृपति जे अतिरथीअनूप ॥ सोरठा ॥ येसब कीन्हेकोहदेवन
जीतन योग हैं । त्यागे तिनको मोह तौजय हिततेसुभट सब ॥
पै नृप पाण्डव सर्ब हैं अजेय निश्चय सुनो । सबदिन क्षणसब
पर्ब जासु सहायक कृष्ण प्रभु ॥ चौपाई ॥ इमि कहि भीष्मपिता-
मह ज्ञानी । मण्डलब्यूह रचे अनुमानी ॥ रथगज हय अरु पै-
दर गनसों । कीन्हों आवृत परमयतन सों ॥ प्रति गज सात
सात रथ कीन्हे । रथप्रति सात तुरँग करि दीन्हें ॥ हय प्रति
सात सात भटरूरे । राखे खड्गपाणि बलपूरे ॥ तिन प्रतिसात
धनुर्द्धर राखे । प्रबल बीरजे जयअभिलाखे ॥ अयुत अयुतग-
ज रथ हय चीन्हें । तोसुत सिगरे निज सँग लीन्हे ॥ भीषमके
रक्षक ह्वै रनमें । चले शत्रु पै गर्बित मनमें ॥ इतको मण्डल
ब्यूह निहारी । बज्रब्यूहबन रचो बिचारी ॥ बिरचित ब्यूह नि-
रखि दुहुँदिशिसों बढ़ि बढ़ि भिरेबीरभरि रिससों ॥ द्रोणाचार्य
जीतिकीमतिसों । भिरेमत्स्यपतिबीर बिरतिसों ॥ भिरोशिखंडी
सोंबलधामा । बीरबांकुरोअश्वत्थामा ॥ सहदेवनकुलसदलसा-
मासों । भिरेमद्रपति निजमामासों ॥ धृष्टद्युम्न सोंभिरोप्रचारी ।
दुर्योधननरपति रणचारी ॥ भूपबिंद अनुबिंदरिसाई । युधाम-
न्यु सों करी लराई ॥ बीर घटोत्कच बाढ़िरिस अति सों । भिरो
प्राग्जोतिष के पति सों ॥ भिरो सात्वकी सो तहँ राजा । बीर
अलम्बुष सहित समाजा ॥ दोहा ॥ धृष्टकेतुसों भिरतभो भूरि





श्रवानरेश । चेकितानसों भिरत भे कृपाचार्य बरवेश ॥ चित्र-
सेन तौ तनय अरु दुर्मुख हे रणधीर । अरु बिकर्ण सों भिरत
भोभट अभिमन्यु सुधीर ॥ भूपश्रुतायुधसों भिरे धर्मराज बल-
वान । यहि बिधि भिरि भिरि सुभट सबकिये कठिनघमसान ॥
चौपाई ॥ अगणित सुभट भीमसों भिरिकै । लगे लरन चहुँदि-
शि फिरिफिरिकै ॥ कइक सहस्र सुभटजय ऊटे । चहुँदिशि घे-
रिपार्थसों जूटे ॥ तिन्हैं देखि पारथ धनुधारी । कहे कृष्ण सों
बचनबिचारी ॥ जे ये मम हतहित अनुरागे । तजत अस्त्र अति
रिसि सों पागे ॥ नाशत तिन्हैं आजु हम क्षणमें । मम बिक्रम
निरखौ यहि रणमें ॥ इमिकहि पार्थ शरासनकरषे । नृपसमूह
पर बरशर बरषे ॥ ते सिगरे अतिगौरव लीन्हें । पार्थहि शर
सों छादित कीन्हें ॥ तब पारथ अति रिस बिस्तारे । सादर
ऐन्द्र सुअस्त्र प्रहारे ॥ काटिबाण सब इतके क्षनमें । हनेअस्त्र
तिन सबके तनमें ॥ असनाहिं रह्यो एकभट तिनमें । युगशर
लगो होइ नाहिंजिनमें ॥ ऐन्द्र अस्त्रसों बेधित ह्वैह्वै । भगेसु-
भट सबब्याकुल ह्वै ह्वै ॥ गे भीषमके ढिग अति आरत ।
शङ्कित फिरि फिरि अरिहि निहारत ॥ सो लखि भीषमरिस
बिस्तारी । चले पार्थपै धनु टंकारी ॥ तात्क्षण दुर्योधनअनखा-
ई । सत्वर तिन सुभटन पै जाई ॥ कह्यो भीष्ममम दलकोनाय
क । जात अकेलो बरषत शायक ॥ बेगितासु सँग तुम सब
जाहू । लरिनिःशंकलेहुजयलाहू ॥ दोहा ॥ दुर्योधन के बचनसुनि
तेसब शंकाबिहाय । लरनलगे परभटनसों भीषमके सँगजाय ॥
इमि शासन दै भूप भिरि धृष्टद्युम्न पै जाय । लगो पूर्बवतलरन
भिरि मारि बाणदृढ़ घाय ॥ सोरठा ॥ घोर युद्ध तेंहि साम दल
मण्डलमें मचतभो । सब के हिय अभिरामबिशदबीर रसरचत
भो ॥ तोमर ॥ तहँ द्रोणबीर कराल । अति कोपकरि त्यहिका-
ल ॥ नृप मत्स्यपतिके काय । हनि बिशद बाणसचाय ॥ फिरि

मारि द्वै शर आसु । धनु ध्वजा काटे तासु ॥ तब भूप सो
अनखाय । गहिआन धनुष चढ़ाय ॥ भट द्रोण कहँ ललकारि
तकि तीनि बाण प्रहारि ॥ हे सुरथके हय चारि । शरचारि तिन
कहँ मारि ॥ फिरि सूतके तनपांच । भो हनत बर नाराच
फिरि दोय शरसों बीर । ध्वज धनुष काटो धीर ॥ दोहा ॥ तदनु
द्रोणशर आठ हनि बधे तासुहय सर्ब । सूतहि बधिशर एकसों
गरजो लहि अतिगर्ब ॥ तब निज रथसोंकूदिकै मत्स्याधिप म
तिमान । निजसुत शङ्ख सुबीरके रथपैगयो अमान ॥ चौपाई
पितापुत्र ते अतिरिस लीन्हें । द्रोणहि शरसों छादित कीन्हें
तिनके सबशर काटि अचारय । तजे अमोघ बाण जय कारय
लागि शंखके उरमें सोशर । कटिगो बेधि गिरोसो महिपर
निज आत्मजहि मरो लखि डरिकै । मत्स्याधिपति युद्ध परि
हरिकै ॥ गो बिराट नृपके ढिग तबहीं । तबतेहि जियत बिचा
र्यो सबहीं ॥ सो लखिकै अगणित भट उतके । भिरे द्रोणसों
अतिबल युतके ॥ बीर शिखंडीअश्वत्थामा । कठिन युद्धकीन्हें
जय कामा ॥ तहां शिखंडी लाघव करिकै । भयद असंख्यबाण
परिहरिकै ॥ तींनिबाण अतिशय अनियारे । द्रोण तनय
भ्रूमधिमारे ॥ तदनु द्रोणसुत धनुविधि ठाटे । तासु सूतहयधनु
ध्वज काटे ॥ तब नृप तनय चर्म असि गहिकै । रथसों कूदि
खड़ोरहु कहिकै ॥ बिचरन लगोभूमि पै तैसे । बाज बिशाल
गगन में जैसे ॥ बहुशर हने द्रोण सुत ताक्षन । लगो न एक
बाण ताके तन ॥ कितने असिसों काटिगिराये । किते चर्म पै
आड़ि बराये ॥ तबद्विज मारि बाणबरआसू । दीन्होंकाटिचर्म
असितासू ॥ तदनुकोपि बहुशर अनियारे । द्रुपद तनयके तन
मधिमारे ॥ दोहा ॥ धीरशिखण्डी बीरतबखण्डित असिजोताहि
बाहत भो द्विज तनय पै अतिबलसों बधचाहि ॥ लखि आवत
असिखण्डसो द्विज सुतबीर उदण्ड । मारिबाण बरबीचही





करिदीन्हें दोखण्ड ॥ ताहि काटि बहुशर हने द्रुपद तनय के
काय । सात्वकिके रथपर गयो तब सो युद्ध बिहाय ॥ गीता ॥
सात्वकी रणधीर भटतहँ क्रोधबर बिस्तारि । हनतभो बहुबाण
सुभट अलंबुषहि ललकारि ॥ राक्षसौ सोकोपि सात्वकिको श-
रासन काटि । भयोबरषत बाण अगणित राक्षसीबिधि ठाटि ॥
सात्वकी भटप्रबल तत्र सुऐन्द्रअस्त्र प्रहारि । किये ताकहँ बि-
कल ताकी सर्बमाया बारि ॥ भयो यहिबिधि बिकलराक्षस स-
कोनहिं थिरतत्र । छोड़ि सन्मुख सात्वकी को भागिगोअन्यत्र ॥
प्रखर ह्वै तेहिसमय सात्वकि बर्षिबाण सटेक । हते इतके सुभट
अरु गजराज बाजिअनेक ॥ धृष्टद्युम्न उदण्डभट टंकारिबर
कोदण्ड । हने तो सुत भूपके तनबाण बहु अतिचण्ड ॥ भूप
दुर्योधन हने तेहिबाण अहिसमभूरि । धृष्टद्युम्न सुदेतभो तो
तनयपर शरपूरि ॥ धृष्टद्युम्न नरेन्द्रसुत हनिचारिशर तेहि
काल । बधत भो तो तनयके रथते तुरंग बिशाल ॥ फेरिमारे
भूपकेतन सातशर रिस पागि । चर्मअसिगहि चलोतापै नृप-
तितब रथत्यागि ॥ शकुनि सत्वर जाय ताथर नृपहि नीति सु-
नाय । गयो लैढिग भीष्मके निज सुरथपर बैठाय ॥ रथी कृत-
बरमा सुअरथी सुजयको बलवान । भीम भटसों करतभो तेहि
समय अति घमसान ॥ भीम हनिशरचारिताके सुरथके हय
मारि । सारथिहि बधि काटि केतुहि दयेमहिपै डारि ॥ खड़ोरहु
कहिहने अगणित बाणताके काय । भूप कृतबरमा न तहँ करि
सकोकछु ब्यवसाय ॥ त्यागि निजरथ भागिबैठो वृषभके रथ
जाय । भीम ताक्षण हतेहय गज भटनके समुदाय ॥ बचन यह
सुनि कहेनृप धृतराष्ट्र रिस बिस्तारि । सदा संजय कहतहौ मम
ओरकी तुमहारि ॥ सदलसब पांडवनको अतिबिशद बिक्रम
ओज । भांति भांति प्रशंसि संजय कहतहौ तुम रोज ॥ दोहा ॥
यहसुनि संजय कहतभे सुनिये कुरुपति भूप । तोसुत सिगरे

लरतनित निज बिक्रम अनुरूप ॥ सदल पुत्रतो प्रबल अति
करता युद्ध बिनोद । पैतुव निज अपराधसों लहत न रणमें मो
दं ॥ प्रापि पांडवनके निकट ब्यर्थ पराक्रम होत । जिमि साग
मधि उदधिजल स्वाद न करत उदोत ॥ सोरठा ॥ सब क्षितिप
को नांस ह्वैहैतुव अपराध सों । करिकै युद्ध प्रयास मरि बसिहै
सुरलोकमें ॥ चौपाई ॥ अब नृप युद्ध ब्यवस्था सुनिये । सोनिज
कृत तरुकोफल गुनिये ॥ भूपबिन्द अनुबिन्द सुबीरा । अरु
भट इरावाण रणधीरा ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तहँ भिरिकै । मानि
परस्पर सबदिशि फिरिकै ॥ इरावाण करलाघव करिकै । प
क्षुरप्रशायक परिहरिकै ॥ अति अनुबिन्द भूपके बाजी । का
धनुष ध्वजाछबि साजी ॥ तब अनुबिन्द सुरथ परित्यागी
गयो बिन्दके रथपै भागी ॥ तहां कठिन कोदण्डहि गहिकै
गर्बित क्रोध दवासों दहिकै ॥ बरषत भयो भयानक शा
यक । जे तनु त्राण बिदारण लायक ॥ ते युगबन्धु एकथ
ह्वैकै । मारे जितने शायक ज्वैकै ॥ सिगरेबाण काटितेहिक्षनमें
इरावाण अति कोपित मनमें ॥ अति तीक्षण गुरुशायक हनि
कै । सूतहि बधों खड़ोरहु भनिकै ॥ ह्वैअसूत हयरथ लैभागे
गये दूरिचलि भयसों पागे ॥ इमिअवंति पतिसों जयलहिकै
मोदो इरावाण तहँरहिकै ॥ नागसुता को सुतसो भारत । भयो
तहां अगणितभट मारत ॥ नृप भगदत्त घटोत्कच भिरिकै
कीन्हें कठिन युद्धतहँ थिरिकै ॥ नृप भगदत्तगजस्थ सोहायो
रथीघटोत्कच सुखमा छायो ॥ दोहा ॥ भगदत्तहि अगणित बि
शिख हने घटोत्कच बीर । घटोत्कच अगणित बिशिख हनेन
पति रणधीर ॥ कोपितजे भगदत्त नृपचौदह बिशिखअमान
तिन्हैं काटिराक्षस नृपहि मारे सत्तरिबान ॥ गुरुतोमर ॥ भगदत्त
नृप तब तेखिकै । हनिचारिशर अवरेखिकै ॥ हय तासु रथ
मारिकै । भोनदत धनुटंकारिकै ॥ तब राक्षसाधिप क्रोधिकै





तकि शक्तिमारी शोधिकै ॥ भगदत्त नृपसो काटिकै । बरबाण
डारो डाटिकै ॥ हैडम्ब तांक्षण भीतिकै । गोभागि तिमिरथरीति
कै ॥ लरि इन्द्रसों भयपूरिकै । जिमिनमुचि धीरज दूरिकै ॥ भग-
दत्त नृप तेहिकालमें । मोधसत परदल जालमें ॥ भट पांडवन
के सैनके । करिदेतभो बेचैनके ॥ दोहा ॥ सहदेव नकुल सुबीर
अरु शल्य मद्रपति भूप । घोरयुद्ध तहँ करतभे अनुपम अप्र-
तिम रूप ॥ तेयुग भ्राता शल्य कहँदये शरनसों छाय । शल्य-
हते तब नकुलके थरके हय हरषाय ॥ गुरुतोमर ॥ तब नकुल
अनुपम भेवके । गेसुरथ पै सहदेवके ॥ युग सुभटते यकठौर
ह्वै । सन्धानि धनुषसगौर ह्वै ॥ निज मातुलहि शरपूरसों ।
तहँछाय पूरनूरसों ॥ तबशल्यभूप सुठानसों । तकि तिन्हैं छाये
बानसों ॥ सहदेव तब अतिकोपकै । शरहनो बधको चोपकै ॥
सो बिशिख कठिनकराल ह्वै । तन बेधि कढिगो लाल ह्वै ॥
तब शल्य इत उत जोहिकै । गिरिपरो रथपै मोहिकै ॥ लखि
सूत भयसों पागिगो । रथहांकि सत्वर भागिगो ॥ दोहा ॥ इमि
शल्यहि भागतनिरखि तोसुत अचरज जानि । माद्री सुत पै
शल्यकी कृपा गुणी अनुमानि ॥ तेयुग धनुटंकारि तब हर्मिम-
र्दो तोसैन । असुरनमुहि मरदीयथा इन्द्र उपेन्द्र सचैन ॥
सोरठा ॥ तहँश्रुतायुषहि देखिनृप तेहिदिनकेमध्यमें । नृपतियुधि-
ष्ठिर तेखि थिरुथिरु कहि नवशरहने ॥ चौपाई ॥ नृपश्रुतायु निज
धनुटङ्कारी । हनेसातशर प्राणप्रहारी ॥ तेशर कवचभेदि धासे
तनमें । रबिकर समदरशेतेहि क्षनमें ॥ तब पांडवपति अति-
शयरोखो । मार्यो तासु हियो शरचोखो ॥ फिरिहनि एकबाण
मनभायो । काटेतासु केतुछबिछायो ॥ तबश्रुतायु अति रिसबि-
स्तारे । सातबाण नृपके तनमारे ॥ सांक्षणकोपि धर्म बलवाना ।
भोप्रचण्ड सहस्रांशु समाना ॥ लखिइतकै सबसुभट सकाने ।
बिबरणभये मरणअनुमाने ॥ हनिक्षुरप्रशर पांडवराजा । काटो

ताको धनुषदराजा ॥ फेरिश्रुतायुष नृपकेहियमें। मारेबाणजा
बधाजियमें ॥ फिरि हनिचारि बाणअनियारे । हति चारोंह
महिपरडारे ॥ करि करलाघव हनिशर भायो। हतिसूतहि यम
लोक पठायो ॥ ताक्षणअतिभय भरोश्रुतायुष । सत्वर भा
गयो लै आयुष ॥ करिऐसो बिक्रम क्षितिनायक। बर्षत भो
दलमाधि शायक ॥ ब्याकुल ह्वै भागो दल इतको। मिटोचा
तो सुतके चितको ॥ बदन बगारे काल समाना । लख्यो त
नृपधर्म अमाना ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य्य सों युद्धकरि चेकिता
अनखाय। कर लाघव करिदेतभो शर समूह सों छाय ॥ कृ
पाचार्य्य अतिक्रोधकरि शरसो सब शरकाटि। चेकितानके गा
में बहुशर मारेडाटि ॥ बहुरि बाणषट मारिकै धनुष काटिगा
गर्ब। हतिसूतहि फिरि हततभे रथके घोड़ेसर्ब ॥ बसुकला ॥ त
चेकितान। करिरिस महान ॥ गहिगदा घोर। अतिशय कठो
र ॥ बलसों असूदि। तजि सुरथ कूदि ॥ हनिगदा आसु। ह
तुरगतासु ॥ सारथिहि मारि। तहँ दयोडारि ॥ तेहिहन्योआर्य
भट कृपाचार्य ॥ षटदश सुबान । लखिअति अमान ॥ त
त्राणभेदि। तन दयोछेदि ॥ दोहा ॥ चेकितान तबगरजिकै ग
आयसी ताहि। झेलतभो कृपबीर पर अतिबलसोंबधचाहि
असह अशनि समतेहि गदहि आवत लखिद्विजराज। ह
सहस्र शर बीचही काटिदयो जयकाज ॥ चौपाई ॥ तबअसिच
पाणिमें लैकै। चेकितान नृपमन निरभैकै ॥ कृपपै चलो सिं
सम गरजत। तासु सहाइनके हियदरजत ॥ कृपाचार्य्य लखि
भरि रणभासों। गहि असिचर्म भिरेबढ़ि तासों ॥ समरणधी
बीरते भिरिकै। अनुपम युद्ध कियेतहँ थिरिकै ॥ हनि अन्यो
सक्षत तन ह्वैह्वै। गिरेभूमिपै मूर्च्छित ह्वैह्वै ॥ लखिरणक
आइरणपथ पै। लैगो नृपहि डारि निज रथपै ॥ शकुनि कृपहि
निजरथपै लीन्हें। क्षतनिरखि अतिबिस्मय कीन्हें ॥ धृष्टकेतुअ





नुपम रणचारी। भूपति भूरिश्रवहि प्रचारी ॥ नब्बे बाण हनत
भो बलसों । अनर करहिं जे लागि उपलसों ॥ भूरिश्रवाभूप
रिसि अतिकै। नृप सुतके हय सूतहि हतिकै ॥ करत भयो बा-
णनकी बर्षा । करिधनु बिधिकी गति उतकर्षा ॥ धृष्टकेतु गो
निज रथ तजिकै। शतानीकके रथपर लजिकै ॥ तोसुत चित्र-
सेन रण कर्कस। अरु दुर्मर्षण बीर अधर्कस ॥ अरु बिकर्ण ये
भट योधा बर। लखि अभिमन्युबीर कहँताथर ॥ हांकि हांकि
भिरि सहित समाजा। कठिन युद्ध कीन्हें तहँ राजा ॥ भट अ-
भिमन्यु कोपि तेहि क्षनमें। बहुशर मारे तिनके तनमें ॥ दोहा ॥
क्षणमें तिन तीनों भटन के हय सूतहि मारि। अर्जुनसुत अ-
भिमन्यु भटदीन्हों महिपैडारि ॥ हनि बाणनसों करतभो तिन्हैं
पराजितबीर। जिमि त्रिदोषकहँ सुरससों नाशत बैद्यगंभीर ॥
समुझि भीमके बचन नहिं बध्यो तिन्हैं अभिमन्यु। हततभयो
अगणित भटन अति प्रवृद्ध करि मन्यु ॥ महिबरी ॥ यहनिरखि
भीषम हांकिरथ अभिमन्यु भटपै चलतभे। चलि रथी कइक
हजार तासंग शत्रुदल दलमलतभे ॥ निज सुवनपै इमिजाल
भीष्महिं देखि पारथ रिसिगहे । टंकारि बर कोदण्ड शर स-
न्धानिकै सबसों कहे ॥ करि चपल अश्वन शीघ्र भीषमपैचलो
अबचाहिकै। अभिमन्युपैजेजाततिनको नाशकरिबो चाहिकै ॥
सुनि कृष्ण सुरथ चलाय तत्क्षण भीष्मपै सत्वर चले । तेहि
समय इतके सुभट सिगरे निरखि पार्थहि खल भले ॥ तहँभट
सुशर्मा बीररक्षक भीष्मको तेहि देखिकै। चहुंओर बर्षतबाण
पारथ कहतभे अवरेखिकै ॥ तुम किये जितक अनीति ताको
पाय फलयहि याममें । तन त्यागि निज पितुके निकट अब
जातहौ यमधाममें ॥ यहसुनिसुशर्मा बीरतहँ नहिं कछुकउत्तर
देतभो। बढ़ि कइक सहस रथीन सह भिरि घेरिसबदिशिलेत
भो ॥ अति घोर संगर मचो तहँ सब ठौर शर पूरित भये ।

भिद्रि पार्थ केशर बरणसों मरि सुभट बहु यमपुरगये ॥ दोहा ॥
तिनके बाणनसों तहां ताड़ित ह्वै तेहिकाल । पार्थ धनुर्द्धर
करतभो बिक्रम कठिन कराल ॥ प्रति बाणन सों काटिकै सब
के सब कोदण्ड । सबके तनमधि हनत भो चारि पांच शर
चण्ड ॥ सोरठा ॥ पार्थ सुभट रणधीर भटअसंख्य क्षणमें बधे।
ताकि त्रिगर्त पति बीर हांकि भिरो निज भटन सह ॥ चौपाई ॥
साठि रथी हैं ताके रक्षक । काल सदृश परदल के भक्षक ॥ ते
सिगरे अतिबलसों हरषे । बाण असंख्य पार्थपर बरषे ॥ तब
पारथ धनु बिधि अनुसारे । साठि बाणसों तिनकहँ मारे ॥ म-
ण्डल सम कोदण्डहि करिकै । हते असंख्य सुभट रिसि भ-
रिकै ॥ जीतितिन्हैं पारथरणचारी । चलोभीष्म पै धनुटंकारी॥
तब कुरुपति अति रिसि सों मढ़िकै । सहसन भूप रथिनसह
बढ़िकै ॥ सबदिशिकरत बाणकोदुरदिन । सत्वर भिरो पार्थसों
त्यहि छिन ॥ पार्थधनुर्द्धर सहित समाजा । क्षणमें तिन्हैं जीति
सुनुराजा ॥ भिरोजाय भीषमसों तैसे । गज प्रमत्त करिवरसों
जैसे ॥ भीम नकुल सहदेव समेता । सदल युधिष्ठिर भूप स-
चेता ॥ तत्क्षण तहां गये अतिबलसों । लहत जीति इतके
सब दलसों ॥ कृप शल शल्य जयद्रथ भूपा । चित्रसेन ये सु-
भट अनूपा ॥ तिनसों आइ भिरे तेहि पलमें । घोर युद्ध माचो
तेहि थलमें ॥ हनि हनि हनि अगणित अनियारे । मारु मारु
थिरु मारु उचारे ॥ सनसन ठनठन घन घन घोरा । छम
छम छप छप धुनि दुहुंओरा ॥ प्रगट पूरिगो सब दिशिमाहीं।
शर बिनु रहो नेकु थल नाहीं ॥ दोहा ॥ बीर शिखण्डी बिधतु
ह्वै मुरत भयो तेहि ठौर । देखि युधिष्ठिर भूप तहँ रिसिकरि
कहे सजोर ॥ भीषमके बधको कियो तुम सुप्रतिज्ञा तात । सो
भुलाय बिबरण भये अब कत मुरुके जात ॥ यह सुबचन शर
सानसों निजमन आयुध ओपि । चलो शिखण्डी भीष्मपै शर





बर्षत अतिकोपि ॥ भुजंगप्रयात ॥ घनेघोर नाराचको जालकीन्हें।
बली भीष्मपै ज्यों चलो घात लीन्हें ॥ भिरोधाय त्यों शल्य
भूपालतासों । लरे ते तहां सो कहो जाय कासों ॥ महीपाल
सो अग्निमय अस्त्र डार्यो । शिखण्डी तहां बारुणास्त्रै प्रहा-
र्यो ॥ मिटो अस्त्रसों अस्त्रको दर्पहूरो । नशैशांतिसों ज्योंमहा
कोप कूरो ॥ दोहा ॥ यहिबिधि दोऊ बीर तहँ कीन्हें युद्ध बिशा-
ल । जानन पायो भीष्मपै द्रुपद तनय तेहिकाल ॥ नृपति यु-
धिष्ठिर को धनुष काट्यो भीषम धीर । हँसो जयद्रथ देखिसो
कोपोभीम सुधीर ॥ चौपाई ॥ गहि गुरुगदा कूदि रथ बरसों। च-
ली जयद्रथ पै त्यहि थरसों ॥ देखि जयद्रथ रिसिबिस्तारो । नव
शर आउ आउ कहि मारो ॥ सहि तिन बाणन कहँभटभारी ।
मार्यो तब गतासु रथचारी ॥ तोसुत चित्रसेन तेहि क्षनमें ।
बहुशर हने भीमके तनमें ॥ तहांभीम अति रिसिसों छाये ।
चित्रसेन पै गदा चलाये ॥ गदहि देखि तोसुतके साथी । बि-
डरिगये जे गणप्रमाथी ॥ तिमिते बिडरिगये भयराखी । जिमि
शर लखि गुरपरते माखी ॥ चित्रसेन अति भयसों पागी । ग-
है असि चर्मगयो रथत्यागी ॥ रथसोंकूदि गयोसो तैसे । चारु
मृगसों केशरि जैसे ॥ लागी गदा तासुरथ पै तिमि । प्रपतैब-
ज्र सुतरुवर पै जिमि ॥ सहय सूतध्वजभो रथचूरण । कपिखग
खावस जिमि नरु पूरण ॥ खेदित भयो भीम तेहि क्षनमें । तो
सुत सिगरे मोदे मनमें ॥ चित्रसेन कहँ वै निज रथ पै । लगो
बिकर्ण चरण रण पथपै ॥ तिहि क्षण घोरयुद्ध तहँ माचो । मा-
नो काल क्रोध करि नाचो ॥ तहँ भीषम अतिसै रिसिकरिकै -
सकल दिशा बाणन सोंभरिकै ॥ सत्वर रथचलाय सुनुराजा ।
चले धर्म पै सहित समाजा ॥ दोहा ॥ कोपि युधिष्ठिर भूप तब।
सहित नकुल सहदेव । चले भीष्म पै वेग सों यथापार्थिक पै
देव ॥ भीष्म युधिष्ठिर पै किये शरपंजर तेहि काल । धर्म्म

भीषमपै करतभे कठिन शरनको जाल ॥ सोरठा ॥ दोउ बी
बिशाल काटि काटि शर शरनसों । तजैं शरनको जालमे
झीलि के परनसों ॥ चौपाई ॥ भीषम अति करलाघव कीन्हें
क्षणमें नृपहि अलख करिदीन्हें ॥ धर्म नृपति तब अनर बि
चारयो । अतिसै चण्ड एक शर मारयो ॥ भीषम सोशर आ
वतदेखी । बीचहि काटिदये अवरेखी ॥ सोशर काटि चारिश
मारी । मारेतासुतुरगरथचारी ॥ तबतहँतजिसो सुरथसमाजा
गयो नकुलके रथपरराजा ॥ ताक्षणमेंसहदेव दोउभाई । कौ
भीष्मसों कठिन लड़ाई ॥ तहँ भीषमकेशर चण्डनसों । पीड़ि
भरे रुधिर मण्डनसों ॥ निज बन्धुन लखि अनरथजानी । धर्म
कहे भूपनसोंबानी ॥ तुमसब महारथी अबलरिकै । बधौ भीष्म
कहँ धीरजधरिकै ॥ सोसुनि भट अति रिसिसोंपागे । घेरि भीष्म
कहँ मारन लागे ॥ तहांभीष्म बिक्रमबिस्तारे । अगणितसुभ
निमिषमेंमारे ॥ नागयूथमधिकेशरिजैसों । लसैलसो तहँभीष्म
तैसों ॥ तहांयुधिष्ठिर नृपकेदलमें । हाहाकार मचो तेहिपलमें
निरखि शिखण्डी रिसिसों छायो । बढ़िभीषमके संमुखआयो
टेरिकहत इमि थहिथर थिरि कै । करहुयुद्ध अबमोसों भिरिकै
देखिशिखण्डिहि भीषमज्ञानी । अनत गये तेहितिय अनुमानी
दोहा ॥ संजय गणसों भिरे तब भीष्मपितामह जाय । ती
पहर दिनको तहां बीतिगयो क्षितिराय ॥ धृष्टद्युम्न अरु स
त्यकी तेहि क्षण धनु बिधि धारि । अगणित भट यहि ओर
दीन्हें महिपैडारि ॥ चौपाई ॥ तेहि दिन तेहि छिनमें तेहि थरमें
हाहाधुनि सुनि इतरणघरमें ॥ भूप बिन्द अनुबिन्द ससाजा
तिनसों जाइ भिरो सुनुराजा ॥ अतिरणधीर बीरते बांके । यु
कलामें निपुण निशाके ॥ घोरयुद्ध कीन्हें भिरि भिरिकै । चपल
बक्र के सम फिरि फिरि कै ॥ तहां द्रुपद सुतके बरबाजी
हत्यो अवन्ति नाथ रणसाजी ॥ धृष्टद्युम्न तब निजरथ तजिकै





सात्यकि के ढिगगयो गराजि कै ॥ यहलखि धर्मभूप अनखाई ।
चपलप्रबलदलसहतहँजाई ॥ भिरे अवंत्याधिपति नृपतिसों ।
गुणि दीबो नभगति बलअतिसों ॥ तबतौतनय क्रोधसों मढ़ि
कै । कैयकसहस रथिनसह बढ़िकै ॥ भूपबिन्द अनुबिन्दहिघे-
री । अरिसों लरनलगे दैभेरी ॥ तेहिक्षणअर्जुन धीरधुरन्धर ।
कीन्हो बाणा नलको धन्धर ॥ अगणितहयगजभटबधिडारे ।
शोणितकी सरिताबिस्तारे ॥ लख्योद्रोणकहँतहँतेहि क्षनमें ।
जैसे अग्निजिमि तृणकेबनमें ॥ तेहिक्षण अस्ताचल गिरिवर
र । बिलसे अरुण अरुणद्युतिधरवर ॥ लखि दुर्योधन निज
भटगणमें । कहेकरो अति बिक्रम रणमें ॥ सोसुनि सिगरेभट
रणचारी । कीन्होंघोरयुद्ध पणधारी ॥ दोहा ॥ तिमि उतके भट
करतभे घोरयुद्ध तेहिकाल । पृथक् पृथक् है अकथ नृप सब
शरको जाल ॥ इतनेमें संध्याभई भेअदृश्य दिनराय । निज
निज डेरन चले नृप शंख बजाय बजाय ॥ महिखरी ॥ जेलरतभे
तिहिठौर तितसोंबीरते डेरन गये । अस्नान औषधि भोजना-
दिक क्रिया करिसानँद भये ॥ नरपाल सिगरे बसनभूषण ग-
हरुचिसों धरतभे । फिरिगान नृत्यादिकन में रतहोइ श्रम
परिहरतभे ॥ करिशैन कीन्हें चैन सिगरी रैनभट आनँद भरे ।
तहँहिं किये तिनके शोच जेसुत बन्धुपितु रणमधिमरे ॥ उतयुद्ध
महिमें शिवाभूत पिशाचगण बिहरतभये । अरु गृध्रआदिक
विशोणित मांसभक्षण ब्रतलये ॥ दोहा ॥ सतयेंदिनमेंहोतभो
इहिबिधिको संग्राम । कहे भूपमणि आपुसों हैं विशेषजेग्राम ॥
इतिश्रीभीष्मपर्बणिभाषायांसप्तमदिनयुद्धवर्णनोनामएकोनविंशोऽध्यायः ॥
दोहा ॥ अब अठयें दिनको सुनो महतयुद्ध हेभूप । शेष रज-
नि लखि सजतभे सैनिक सुभट अनूप ॥ रथ हयकुंजर भटन के
साजन सजनविधान । उभै सैनमें होतभो तेहिक्षण शब्द महा-
न ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन भीषम रणधीर । चित्रसेन अरुद्रोण सु-

बीर ॥ सागर प्रतिम अमोघ सुब्यूह । विरचत भये तहां कौ
ऊह ॥ दाक्षिणात्य मालवआवंत्य । देशीजे नृपभटहितसंत्य
तिन्हैं साहित भीषम बलवान । आगे चले धरे धनुबान ॥ क्षुद्र
पारद और पुलिन्द । गणन सहितफिरि द्रोण अरिन्द ॥ मगध
कलिङ्ग पिशाच सुदेश । के भटसह भगदत्त नरेश ॥ चलो द्रो
के पीछेगाजि । प्रबल प्रचण्ड सैनबर साजि ॥ मेकल त्रैपुरत्र
चिबुकस्थ । अरु असंख्य भट निजदेशस्थ ॥ साहितवृहद्ब
बीर उदण्ड । तदनु चलत भोगहि कोदण्ड ॥ तदनुत्रिगर्तचल
बलपूरि । सहकांबोजप्रबलगणभूरि ॥ अनुत्रिगर्त नृपकौ श
भौन । अश्वत्थामा कीन्हींगौन ॥ तदनु सबन्धु ससेनासर्व
दुर्योधननृप चलोसगर्व ॥ दुर्योधनके अनु अवदात । राजेकृपा
चार्य्य बिख्यात ॥ सागर प्रतिम ब्यूह यहिठौर । बिरचेभीष
करिकैगौर ॥ अगणित रंगके अगणित आम । लखेपता
छत्रललाम ॥ तौदलकी सुखमा तेहियाम । लसतभई अनु
अभिराम ॥ दोहा ॥ इतको ऐसो ब्यूह लखिपांडव कुलपतिभू
धृष्टद्युम्न सों कहत भे बिरचो ब्यूह अनूप ॥ धृष्टद्युम्न यहसु
रचे शृङ्गाटक बरब्यूह । इविधि राखिसब दिशनमें बिधि
सुभट समूह ॥ चौपाई ॥ भीमसेन सात्यकि रणधीरा । लसेशृ
ह्वै सदल सुबीरा ॥ लैसँग कइक सहसभटसाजे । पारथशृ
मध्यमेंराजे ॥ नृपसमूह सह सहित समाजा । हेमधिदेशयुधि
ष्ठिरराजा ॥ यहिबिधि नृपसमूह सब अंगमें । राजलसैं स
संगमें ॥ सुवन द्रौपदीके मनरंजन । बीर घटोत्कच अरिद
गंजन ॥ अरु अभिमन्यु बिराटनरेशा । राजतभे रहियदि
देशा ॥ पांडव यहिबिधि ब्यूह बिरचिकै । लसे बीररस रंग
रचिकै ॥ भेरी शङ्खादिक बहुबाजे । जेबाजे धुनि सुनि घ
लाजे ॥ निजानिज प्रतिमनिहारि निहारी । योधाभिरे प्रचा
प्रचारी ॥ शक्तिपरश्वध भल्ल कृपाना । भिन्दिपाल तोम





रबाना ॥ तकि तकि हनन लगे दुहुँदिसि सों । धीरधुरीणभरे
अति रिसिसों ॥ तहां भीष्म बिक्रम बिस्तारे । अगणित
सुभट निमिष में मारे ॥ कितने रथी बिरथ करि दीन्हें ।
कितने सुरथरथीबिनु कीन्हें ॥ कितने तुरग किये बिनुसादी ।
हय बिनु कीन्हें किते प्रमादी ॥ किते द्विरद द्विरदस्थ सँहारे ।
किते पदाती महिपर डारे ॥ कितने धनुषध्वजा रथकाटे । पर
दल मध्य भूरिभय पाटे ॥ दोहा ॥ भिरो भीष्मसों भीम तब दी-
न्ह धनुटंकारि । गरजि मेघसम बज्रसम बाण अनगिने मारि ॥
ताक्षण तौदलमें भयो ऐसो शब्दअपार । भिरो भीष्मसों भीम
ज कहा करत करतार ॥ चौपाई ॥ भीष्म भीमको निरखि समा-
गम । इतसब गुणो बिपतिको आगम ॥ तहां भीम अति बि-
क्रम कीन्हें । लखि दुर्योधन चिन्ता लीन्हें ॥ ह्वै प्रकर्ष पाण्डव
ब हरषे । बाण बारि बारिद सम बरषे ॥ लखि दुर्योधन भूप
बिचारी । लै सँग सब सुबन्धु रणचारी ॥ बढ़ि भीषम के ढिग
ह्वै ठाढ़े । बर्षण लागे बाणउकाढ़े ॥ तहां भीमहनि शर मजबू-
तहि । बधिडारो भीषम के सूतहि ॥ बिगत सूतह्वै हयभयपा-
गे । रथ लै इतउत दौरन लागे ॥ भीमबीर तब अवसर पाई ।
अति तीक्षण शर एक चलाई ॥ तो सुत भट सुनाम तेहि
पिकै । सिंहसदृश गरजो महि मधिकै ॥ सो लखितोसुत
अतिरिसाई । भिरे भीमसों भीतबिहाई ॥ बहवासी अपराजित
योधा । अरु आदित्यकेतु करिक्रोधा ॥ दण्डधार पण्डितक
कोदर । अरु बिशालचख सातसहोदर ॥ येसिगरे अतिरिस
आये । क्षणमें बाणअसंख्य चलाये ॥ बीरमहोदर भटतेहि
छनमें । नवशर हन्यो भीमके तनमें ॥ भटआदित्यकेतु सत्तरि
शर । पांच हन्यो बहवासी तेहिथर ॥ दण्डधार नब्बेशरमारे ।
अरु बिशालचख सातप्रहारे ॥ दोहा ॥ अपराजित बहुशरहन्यो
भीमसेनकेकाय । बीरपण्डितक हनतभो तीनिबाण दृढ़घाय ॥

तहां भीम अतिचण्डह्वै सातबाण बरमारि । क्रमसों तिनके
काटिशिर दीन्हें महिपरडारि ॥ समुझिप्रतिज्ञा भीमकी ताश्र
सोसुतसर्व । लखिसिंहहि करि यूथसम भागेताजि ताजिगर्व
रोला ॥ भूप दुर्योधन कहतभो भटनसों तेहिठाम ॥ घेरिभीमहि
बधौ तुम सब बीरबल बुधि धाम ॥ भूपको सुनि बचन बढि
बढ़िबीरबहु इकबार । भीमसों भिरिकरतभे तेहिठौर युद्ध
पार ॥ निरखि बन्धुनको मरण कुरुनाथ अतिदुख पाय । भीष
के ढिगजाय ऐसो कहतभे बिलखाय ॥ भीम मारत बन्धु मम
अरु भटनको समुदाय । आपुसों मध्यस्थ समहौ लखतठो
छपाय ॥ करत आंशू पतन जब इमि कह्यो तो सुत भूप । भी
ष्म तब इमिकह्यो नृपसों सत्यबचन अनूप । पूर्व तुमसों क
हम कृप द्रोण बिदुर बिचारि । सो न मानेहु तासु फल अ
लखहु नैन पसारि ॥ युद्धके आरंभमें हम कह्योहा समुझाय
द्रोण केकय संग मम निति रहेहु तुम सब भाय ॥ भीम त्या
लहैगो ज्यहि बधैगो तेहि तत्र । भूलिसो कत गये हमसों द्रो
सों अन्यत्र ॥ शोच अबकतकरौ भावी होइगी नहिं आन ।
पांडवसुरनहूं सोहैं अजेय अमान ॥ भूप ताते धीर धरि अ
लरौ त्यागौ शोच । युद्धमें तनत्याग क्षत्रिहि श्रेष्ठगति नहिं
च ॥ बचन यह सुनि कहे तहँ धृतराष्ट्र नृप भरि नैन । दे
चाहत होत सो कछु पुरुषके बशहैन ॥ द्रोण भीषमद्रोणसु
कृप भूरिश्रव भगदत्त । आदि सबममसुभट बीर अजेयप्र
ल प्रमत्त ॥ तिन्हैं आछतरोज मम सुत सदल मारे जात ।
ण्डवनमें एक को नाहिं होत कबहूं घात ॥ अन्ध नृपको बच
यह सुनि कहे संजय बैन । द्यूत बिरचत समय बरजे बि
दायक चैन ॥ सो न मानो ससुत तुम अबलीजिये फलता
सुनो क्रमसों पुत्रमित्र सबर्ग सबको नासु ॥ सुनोनृप अबम
जिमि युगयाममें संग्राम । बढ़ीजामें शोणितोदा नदी अ





अठाम ॥ दोहा ॥ तोसुतको समुझायतिमि भीषम ह्वै अतिचंड ।
परदल मर्दन लगे करि मंडल सम कोदंड ॥ तहँ आज्ञालहि
धर्मकी भिरे भीष्मसोंबीर । धृष्टद्युम्न सात्वकि द्रुपद धृष्टकेतु
रणधीर ॥ भूपतिबीर बिराट अरु कुन्तिभोज कैकेय । सुभट
शिखण्डी सब सहित निज निज सैन अमेय ॥ सोरठा ॥ तिनसों
अति संग्राम सदल भीष्मसों मचतभो । कोकहि सकैप्रमान
जहँ जैसो संगर भयो ॥ दुर्योधन तेहि काल कहे अनेकन नृपन
सों । तुम सिगरे क्षितिपाल होहु सहायकभीष्मके ॥ चौपाई ॥
नृप निदेशसुनि अगणित राजा । चले भीष्मके ढिगसहसाजा ॥
तिनसों भिरे बीचही जाई । चेकितान अर्जुन बरदाई ॥ अरु
सुत द्रुपद सुताके योधा । सदल प्रचारि किये अवरोधा ॥ मा-
चो घोर युद्ध तहँतिनसों । पृथक् पृथक् कहिनिवरै किनसों ॥
भीमसेन अभिमन्यु सुधीरा । सुभट घटोत्कच अतिरणधीरा ॥
तिसँग सहसनभट मनभाये । सिगरेदल मधिद्वन्दमचाये ॥ इमि
चितीनिगोलते अतिबल । मर्दनलागे तोसुतकोदल ॥ भूपति
सुनो द्रोणतेहिक्षणमें । अद्भुतबिक्रमकीन्हेंरणमें ॥ हतिउतके हय
गज अरु बीरन । यमपुरमें कीन्हो संकीरन ॥ भीमसेन अतिगौरव
कीन्हें । द्विरदअसंख्य प्राण बिनुकीन्हें ॥ अगणितद्विरद किये
बिनुरदके । अगणितहय कीन्हें बिनपदके ॥ अगणितरथीगजी
हयसादी । बधतभयो तहँभीमप्रमादी ॥ सहदेवनकुल बीरतेहि
दलमें । प्रलयकाल रोपेतौ दलमें ॥ ह्वैसरोषमर्दतभेहयदल ।
अगणितभटकरि दीन्हेंपैदल ॥ अगणिततुरग कियेबिनुभटके ।
बहुभट किये हायहारटके ॥ तेहिक्षणबहुहय गजभय पागे । भट
बिनु फिरे सकल दिशिभागे ॥ दोहा ॥ बाणनको दुरिदिन तहां
करि पारथ रणधीर । शोणितकी सरिता बही समुद समान गँ-
भीर ॥ कृतबर्मा कृप द्रोणसुत भगदत्तादिकबीर । हति इनके
अगणित सुभट भेजिदये यमतीर ॥ इतउतके बर प्रबलभट

भये सक्रुद्धकराल। उभयसैनमें करतभो प्रलयकालसमकाल॥ जन लागे टेरि॥ भट इरावाण विशाल। इमि चपलभो त्यहि
सोरठा॥ शकुनि सबन्धु ससैन अरु हार्दिक्य महीप मणि। भो काल॥ इन सर्बको शर घात। नहिं छुवन पायो गात॥ तब
गर्व बल ऐन चले शत्रुकी सैन प्रति॥ चौपाई॥ इन्हैं देखि तहँ सर्व ये यह चाहि। गहिलेन चाहेताहि॥ तब पार्थकोसुतशूर।
भयो सक्रोधा। इरावाण अर्जुन सुत योधा॥ हयानीक सहवाहि सब अस्त्रविद्या पूर॥ असि चर्मकी विधि ठाटि। धनुबाण सब
अति बलसों। सत्वर भिरो शकुनिके दलसों॥ तिनसों भयो केकाटि॥ भटपांच तिनमें मारि। तहँ दये महिपर डारि॥ हो
घोर संग्रामा। कटे असंख्य सुभट बलधामा॥ इरावाण बल वृषभ नामक जौन। गोभागि घायल तौन॥ तहँ तिन्हैं निप-
बुद्धि निकेता। ताक्षण तहँ करिकै शर सेता॥ करिकै प्रबरच तित पेखि। तो तनय नृप अति तेखि॥ हो आर्ष्यशृङ्गी नाम।
तुर बिधिबलको। व्याकुल कियो शकुनिके दलको॥ सो लखि भटवीर राक्षस आम॥ इमि दयोशासन ताहि। तुमबधौ सा-
कै अतिशय अनखाई। षटभटप्रबल शकुनिकेभाई॥ गजा र याहि॥ सोबीर धनु टङ्कारि। बढ़िचलो तेहि हङ्कारि॥
वाक्षसुक आर्जव बीरा। चर्म बाण अरु वृषभ सुधीरा॥ बर्पत दोहा॥ मायावी राक्षस प्रबल दै सहस्र हत शेष। हय सादी
तोमरबाण दपटिकै। इरावाण पै चले झपटिकै॥ बरज्योशकुनि सुभटन साहित लस्यो भयानक भेष॥ अति प्रचण्ड भट रा-
न तेसब माने। इरावाण पहँगे उमदाने॥ सदल जाय ताके साहि निजपर आवत देखि। गरजि सदल बढ़ि भिरत भो
दलमाहीं। करन लगे सुभटनकी नाईं॥ इरावाण तब निजभट रावाण अतितेखि॥ चौपाई॥ परदल निजसों अधिकनिहारी।
गनसों। कहत भयो अति गर्वित मनसों॥ येअब जानन पावैं क्षस तहँमाया बिस्तारी॥ रहे शत्रुके सँगभट जितने। आपु
फिरिकै। बधौ इन्हैं लरिबिधिवत भिरिकै॥ सोसुनि सुभटभिरे करतभो निर्मित तितने॥ उभय ओरके योधा भिरिकै। घोर
तिन सबसों। कहि कहि मृतकभये तुम अबसों॥ तिनसोंनिज युद्ध कीन्हों तहँथिरिकै॥ हनिअन्योन्य पराक्रम करिकै। दिवगे
दल मर्दित देखी। तेषटबन्धु बीर अतितेखी॥ घेरि इरावत स्थूल देह परिहरिकै॥ तेयुग योद्धा ह्वैगतसेना। भिरे हांकि
कहँ सब दिसिसों। मारणलगे बाण भरि रिसिसों॥ हनि हनि समद जगजेना॥ जिमि प्रमत्त मैगल युग लरहीं। अनुपम
अति तीक्षण शर चीन्हें। इरावाण कहँ कीलितकीन्हें॥ दोहा॥ अतुल पराक्रम करहीं॥ तिमि सोहे तहँ ते रणचारी। निज
नागसुतासों प्रगटसुत अर्जुनको गतमर्म। भूपति ताक्षणकर निज जय यशके अनुसारी॥ इरावाण तहँगरुता लीन्हों। अ-
तभो अतिशय अद्भुतकर्म॥ तासुगातमधिहेगड़े इनकेमारेबान। सों तासुधनुष द्वै कीन्हों॥ ह्वैअचाप राक्षस भयपागी। गयो
तिनहीं को लय लय हने इनकहँ बीर अमान॥ परके शोणित गन मधि धीरज त्यागी॥ इरावाण अतिरिससों पागो। नभ
सों भरे परके हने सडौर। निजनिज बाणन सों भिदि मोहित भयो तासु सँग लागो॥ तहँ बरभट तो ठाटन लागो। असु-
भेतिहि ठौर॥ तोमर॥ तहँ इन्हैं मूर्च्छित देखि। सुत पार्थको हि असिसों काटन लागो॥ आर्ष्यशृङ्ग तहँनिदरि जिमूतन।
अवरेखि॥ गहिचर्म अरु किरवान। कै पायये बलवान॥ भो अद्भुत कला करतभो नूतन॥ इरावाण काटै तनतासों। नूतन
चलत इनपै धाय। वध करनको उमदाय॥ तेहि समय येभट से प्रगटत भारिभासों॥ इरावाण सोऊ तन काटै। फिरिसो
सर्ब। फिरिह्वै सचेत सगर्ब॥ बढ़ि इराबाणहिं घेरि। शर त दि बीरताठाटै॥ स्वप्न मनोरथ कैसो कौतुक। राक्षस करत

भयो तहँसौंतुक ॥ फिरिराक्षस कछुमाया करिकै । प्रगटोअति
दीरघवपु धरिकै ॥ दोहा ॥ प्रवलघोरबपु गहिचलो गहन ताहि
त्यहि ठौर । इराबाण तबभो बिकट नागरूप करि गौर ॥ अ
सहसन अहि प्रगटकरि घेरिलेतभो ताहि । गरुड़रूप तब ग
हतभो राक्षस निजजय चाहि ॥ गरुड़रूप गसिलेत भो स
नागन कहँ खाय । इराबाण लखि जकिरहो करिनसको ब्यव
साय ॥ मातृपक्ष के छाव अरु धृत स्वरूपके भाव । गरुड़रू
लखि जकि रहो इराबाण तजि चाव ॥ तब सो राक्षस समय
लहि काटि चारु शिर तासु । लहि अपूर्व जयगयो ढिग दुर्यो
धन के आसु ॥ सोरठा ॥ उतके सुभट प्रधान अरु पाण्डवनहि
तात हे । इराबाण बलवान यहिबिधि मारोगो यहां ॥ महिबरो
तेहिसमय युगदल मध्यसबथर मचो हो संगरमहा । जिमिलो
सबभट तत्रनहिं अब जातसो बिधिवतकहा ॥ अभिमन्यु सा
त्यकि भीष्म पारथ भीम द्रोणाहिं आदिकै । भट उभय दिशि
प्रलय पारो रहेघनसम नादिकै ॥ तहँ इराबाण सुबीर कोबध
निरखि अति अफसोसिकै । हैडम्बराक्षस भट घटोत्कच भयो
गर्जत रोसिकै ॥ नृपतासु गरजनि घोर धुनि ब्रह्माण्ड मधि
ब्यापित भई । सब ओर सागर छोरलौं सहशैल महि कम्पित
भई ॥ बहु सुभट इतके ह्वै रोमांचित स्वेद भरि बिवरणभये
सुनि सिंहकी गरजनि द्विरद गण सदृश दीहद रणमये ॥ इमि
गरजि घनसम बीर राक्षस भटन सह बल मद मयो । अति
कुपित काल करालसम कुरुनाथके सम्मुख गयो ॥ तेहि समय
इतकेबीर अगणित भीति भूपहि तजि गये । तब कोपि भूपति
तजे तापै बाण अगणित मणिमये ॥ तहँ अयुतगजदल सहित
थिरिबंगाधिपति नृपसाथमें । भोकरत अतिसंग्राम मण्डल स
दृशकरि धनुहाथमें ॥ दोहा ॥ गजारूढ़ भटजूहसों राक्षसगणसों
तत्र । घोरयुद्ध नृपहोतभो कहैंकहांलौं अत्र ॥ शक्ति परशु





भल्ल शर आदिक आयुध भूरि । बारिदवृष्टिसम उभयदल मध्य
रहे तहँपूरि ॥ राक्षस गण अति प्रबल हनि शक्ति शिला तरु
बान । क्षणमें बधे अनेक गजअरु बहुभट बलवान ॥ सोरठा ॥ के
अर्दित तेहिकाल भरे रुधिर अगणित द्विरद । मर्दत निजदल
जाल चिघरत भागिगये अनत ॥ निजदल बिचलत देखि
दुर्योधन भूपालमणि । भरोगर्व अति तेखि भिरो राक्षसीसैन
सों ॥ चौपाई ॥ भिरि राक्षस गणसों तेहि क्षणमें । अद्भुत बिक्रम
कीन्हे रणमें ॥ बीर चारि राक्षसके दलके । रहे मुख्य बरभट
अति बलके ॥ बिद्युत जिह्वाअपर प्रमाथी । बेगवन्तजिमि
मद युत हाथी ॥ अरु भट महा रउद्रप्रबीरा । तिन्हैं मारि
भेजे यम तीरा ॥ सो लखि बीर घटोत्कच योधा । कह्यो भूप
सों करि अतिक्रोधा ॥ संगछालिन कहँलै छल करिकै । ममगुरु-
जनसों महि धन हरिकै ॥ बहुदिन कियेराज्य मुद भरिकै । अब
कहु खड़ोभागु मतिडरिकै ॥ आजुतोहिं हति कठिन शरन सों ।
उऋण होहुँगो निज गुरुजनसों ॥ इमिकहिदाबि अधरदांतन
सों । हनत भयो शरबर घातनसों ॥ तबदुर्योधन रिसबिस्तारे ।
बाण पचीस तासु तन मारे ॥ तब राक्षस करि क्रोध अथोरा ।
मारत भयो शक्तिअतिघोरा ॥ बज्र सदृश तेहि आवत देखी ।
बङ्गाधिपति भूप अवरेखी ॥ गजचलाय करिकै मन गाढ़ो ।
भोभूपति के आगे ठाढ़ो ॥ तबसो शक्तिभीमता पागी । गज
कुम्भनके मधिलागी ॥ मैगल तुरित गिरोतहँ मरिकै । नृप
ताकूदिगजहि परि हरिकै ॥ ताक्षणमें दुर्योधन राजा । भग्न
निरखि निज सुभट समाजा ॥ क्षात्रधर्मको चिन्तनकरिकै । ख-
ड़ोरहो तहँ धीरज धरिकै ॥ दोहा ॥ साहस करि तहँ रहिखड़ो
योजित करि शर चण्ड । तज्यो राक्षसाधिपतिपै करषि कठिन
कोदण्ड ॥ बज्रसदृश निपतत निरखि दुर्योधनको बान । सो
शर तजि कीन्हों ब्यरथ राक्षस चपल अमान ॥ भूपतिकोशार

व्यर्थ करि निज कार्मुक टंकारि । घनसम गर्जतभो असुर तौ
दल मधिभय भारि ॥ सोरठा ॥ सो गर्जनि सुनि भूप भीष्मकह
तभे द्रोणसों । राक्षस काल स्वरूप गर्जत भयो प्रचण्डअति॥
रोला ॥ तासु गर्जनि सुनि सुनो यह परतहमको बूझि । लरत है
कुरुनाथसों वह भरो गर्व अरुझि ॥ आसि भूपहि जीतिराक्षस
गहेहै उत्कर्ष । प्रगट जान्यो जातधुनिसैं जीतिकै सो हर्ष ॥ कौ
रक्षण भूपकोउतजाय तुमसबआर्य्य । भूपकोरक्षण सबहिहैं एक
उत्तमकार्य्य ॥ जाहि जोवहिओर हमतौपार्थ इतसबसैन । बधै
क्षणमें सव्यसाचीअस्त्रविद्याऐन ॥ भीष्मको यहबच्चन सुनि उत
चले सत्वरबीर । द्रोणकृपबाह्लीक भूरिश्रवाशल्यसुधीर ॥ चित्र-
सेन बिकर्णअरुअनुबिन्द बिन्दनरेश । नृपजयद्रथ बृहद्दलअरु
सोमदत्तसुभेश ॥ अरुबिबिंशत बीरअरु सुतद्रोणकोगहिगर्ब ।
कइकसहसरथीन युत तहँ जातभेयेसर्ब ॥ देखिइनसब भटनको
नहिं भयो कम्पित तौन । भयोसबपै बाण बर्षत उपलमेदक
जौन ॥ दोहा ॥ उतके राक्षस प्रबल अरु इतकेयोधा सर्ब । भिरे
प्रचारि प्रचारि तहँ भरे बीररस गर्ब ॥ भूपति ताक्षण होतभो
तहां कठिन घमसान । सनसन चलि ठनठन लगन लगे दुहूं
दिशिबान ॥ दहत बांसको बनयथा गिरिपै गिरत पषान । होइ
शब्द तिमिहोतभो ताथर शब्द महान ॥ सोरठा ॥ महाघोर सं-
ग्राम तिनसों ताक्षण होतभो । बीतिगयो युगयाम तेहि दिनको
क्षितिपाल मणि ॥ चौपाई ॥ अति दुर्मद राक्षस रणचारी । इन्द्र
धनुष सम धनु टंकारी ॥ हनि क्षुरप्रशर अतिशयचोखो ।
काट्यो धनुष द्रोणको नोखो ॥ मारि भल्ल चोखो मनभायो ।
सोमदत्त कोध्वजा गिरायो ॥ तीनि बाण बाह्लीकहि मारे । चित्र-
सेन पै तीनि प्रहारे ॥ फिरि हनि एकबाण बरचीन्हों । भट बि-
कर्ण के भ्रूमधिदीन्हों ॥ तब बिबर्ण भट मूर्च्छित ह्वैकै । रथपर
पर्‍यो चेतबल ग्वैकै ॥ नृप अवन्ति पति केवर रथके । हनिशर





चारिबधे हयरथके ॥ नृपति जयद्रथके धनुकेतू । काटत भयो बि-
रचिशरसेतू ॥ भूपबृहद्दलकहँकरिसक्षिण । मारतभयो बाणबर
तीक्षण ॥ हनि बहुबाण शल्य के तन में । मोहितकरत भयो तेहि
क्षनमें ॥ इमि सबके तनमधि शरमारी । सबके हने बाणसबबा-
री ॥ सबकहँ बिमुखकरतभो रनसों । बीरघटोत्कच पूरोपनसों ॥
यहि प्रकार सबभटनबरजिकै । दुर्योधन पै चलो गरजिकै ॥ कुरु-
पति तहँ तेहि आवत देखी । फिरि फिरि भिरेबीर सब लेखी ॥
हनि असंख्य आयुध अनियारे । राक्षस भटहि बिकल करि
डारे ॥ ताक्षणमें राक्षस रणधीरा । गोनभमधि जिमि सतनस-
मीरा ॥ दोहा ॥ घूमि जलद सम गगनमधि गर्जतभोतेहिकाल ।
सोधुनि सुनिकै भीमसों कह्यो धर्म क्षितिपाल ॥ दुर्योधनकीसे-
नसों लरत घटोत्कच बीर । तासुगरजसुनि ताहिपै बूझिपरत
वरभीर ॥ भीषमसों भिरि फाल्गुण हैं रक्षत निजसैन । तुम
सब सादर जाहुतहँ है राक्षस बलऐन ॥ जयकरी ॥ सोसुनिशीघ्र
चलो बलवान । अरि दल मर्दत बर्षत बान ॥ भीम सत्यधृति
सौचिति बीर । सुवन द्रौपदीके रणधीर ॥ छत्रदेव बसुदान म-
हीप । अरु अभिमन्यु बीर कुल दीप ॥ काशिराज को सुतभट
चण्ड । अरुनृप क्षात्रधर्म उद्दण्ड ॥ जोबिख्यातअनूप सुदेश ।
नायकताकोनीलनरेश ॥ कैकयसहसरथीलैसंग । अरुषटसहस
मत्तमातंग ॥ बर्षतशरसत्वरतहँजाय । लागेकरनयुद्धदृढ़ घाय ॥
सहित घटोत्कच ते भट सर्ब । रोपेप्रलयकालतेहिपर्ब ॥ दोहा ॥
धीर धनुर्द्धर बिदित भट इत द्रोणादिकसर्ब । भीमादिक उतके
सुभट सिगरेप्रबल सगर्ब ॥ उभैओरसों उभैदिशि छायदये शर
जाल । यमपुर बर्द्धित किये करि शोणित नदीबिशाल ॥ जिमि
आयेजलकीउलद भगतलोकतजिओक । तिमिअगणित देही
तहां तनतजिगे यम लोक ॥ भुजंगप्रयात ॥ गजीअश्वसादीरथी
भूरि योधा । भिरे हांक दैदैगहे क्रूरक्रोधा ॥ कितेशक्ति चालैं

किते भल्लघालैं । किते तोमरैं औकिते भिन्दिपालैं ॥ कितेखड्ग
बाहैं किते बाणडारैं । कितेकौ गदा आयसी यष्टिमारैं ॥ कहूं
जंगमाच्यो रथी औ रथी सों । कहूं बाजिसादीनसों औ रथी
सों ॥ कहूं जङ्गहो पैदरों औ रथी सों । गजीऔ गजीऔगजी
औ रथी सों ॥ कहूंबाजिसादीनसों बाजिसादी । कहूंबाजिसादी
पदाती प्रमादी ॥ कहूंबाजिसादी गजीसों भिरेहे । कहूंपैदरैपैदरै
सों थिरेहे ॥ कहूंमैगलैं मैगलैं युद्धमाच्यो । सुबाजीनबाजीनसों
रङ्गराच्यो ॥ बिना बाहनैं कै किते बीरबांके । भिदे बाण भल्लान
हूसों निशांके ॥ भरे गर्व बैरीनको देखि टूटैं । भिरैं तालदैदै
छुटैंफारि जूटैं ॥ कटे शीश केते फिरैं रोषराते । खरेहे किते गर्वके
दर्पमाते ॥ किते मोहि बाहैं गदा शापियों पै । मरेबीरकेतपरे हा-
थियों पै ॥ कितेको खिलेभल्लसों तत्रठाढ़े । हनैं भूरिबाणौं महारोष
बाढ़े ॥ गहेधीरताबीरताभूरिठाटैं । करीबाजि बीरानके गातकाटैं ॥
करैंदीह चिग्घार केते बितुण्डैं । भगैं औ गिरैं औ मरैंह्वै बि-
शुण्डैं ॥ भयोभूपताठौर संग्रामजैसो । यथायोग कासोंकहो जाय
तैसो ॥ सोरठा ॥ सोधनुतजि धनुऔर भीमचह्यो जौलगिगहन
तौ लगि नृप करिगौर हन्यो तासु उरमाधि बिशिख ॥ लागेसो
शरघोर भीमबीर मोहित भयो । सोलखि घनसमशोर करि
राक्षस नृपसों भिरो ॥ चौपाई ॥ अभिमन्युहि आदिक बरबलके
महारथी जितने वहि दलके ॥ रहे तहांते सब त्यहि क्षनमें
चले भूपपै बधगुणि मनमें ॥ सो लखिकै चिन्तित ह्वै मन सों
द्रोणकहे इतके सुभटन सों ॥ उतके महारथी भट सिगरे । जेध-
नुधरमें लिखेआदिगरे ॥ चलेबेगसोंनृपपर तेसब । रक्षहु नृपहि
जाइसत्वरअब ॥ सुनिआचार्यको यह अनुशासन । चलेसुभटट-
ङ्कारिशरासन ॥ भूरिश्रवाशल्यकृपआदी । रहेतहांजेसुभटप्रमा-
दी ॥ बर्षत शरतेसब अतिजवसों । गर्जत जायभिरेतिनसबसों ॥
तौ लगिचेति भीम रणचारी । बर्षन लगो बाण धनुधारी ॥ त-





क्षणद्रोण भीम कहँमारे । छब्बिस बाण सरस अनियारे ॥ तहां
वृकोदर अतिरिस कीन्हें । दश बरशर गुरुके उर दीन्हें ॥ तिन
बाणन सों बेधित ह्वैकै । मोहि परोद्विज इतउत ज्वैकै ॥ द्रोणा-
चार्यहि मूर्च्छित देखी । नृप अरु अश्वत्थामातेखी ॥ चलेभीम
पैबर्षत बाना । सोलखि कोपि भीम बलवाना ॥ धनुतजिदीर्घ
गदागहि करसों । नृपपै चलो कूदि रथ बरसों ॥ सो लखिद्रो-
ण कृपादिक योधा । किये भीम भटको अवरोधा ॥ दोहा ॥ जिमि
घनसब दिशिसों सरहि देहि बारिसों पूरि । भीमहिं शर छादित
किये तिमिते तजि शर भूरि ॥ अभिमन्युहि आदिक सुभट सो
लखि अनरबिचारि । सत्वरइतकेभटनसों भिरे प्रचारिप्रचारि ॥
तिहि क्षणदेश अनूपको नृपति नील बलवान । अश्वत्थामहिं
टेरिकै हन्योहिये मधि बान ॥ चौपाई ॥ तबअति रिसकरि अश्व-
त्थामा । करत भयो अति अद्भुत कामा ॥ हति सबबाजी नृपके
रथके । किये पथिक यमपुर के पथके ॥ फिरि बरबाण लाय धनु
गुनमें । हन्योनीलभूपतिकेउरमें ॥ तबअनूपपतिमूर्च्छितह्वैकै ।
लयो मृतकसम रथपर स्वैकै ॥ नीलहि मूर्च्छित निरखि
गरजिकै । बीर घटोत्कच असुरगरजिकै ॥ सदलचलोसम्मुख
द्विजबरके । रचत सेतु रणनदमें शरके ॥ अगणित भट दल
सों काढ़ि काढ़िकै । भिरे द्रोणसुतसों बाढ़ि बाढ़ि कै ॥ द्रोणतनय
हू अति रिस लीन्हें । क्षणमें तिन्हैं पराजित कीन्हें ॥ निज
सुभटन कहँ बिचलत देखी । राक्षस राज घटोत्कच तेखी ॥
प्रगट करतभो माया ऐसी । लखी न सुनी आज लकजैसी ॥
इतके भट मोहित ह्वै जासों । लखतभये पूरेबिपदासों ॥ इतके
द्रोणादिक भट जेते । हते गये राक्षससों तेते ॥ इमि अन्योन्य
देखि भट सिगरे । भीति भगे धीरज सों निगरे ॥ तेहि क्षणमें
इतके भटरूरे । शङ्ख बजाइ मोद सों पूरे ॥ सोगति हम अरु
भीषमहेरे । रहि चैतन्यबार बहुटेरे ॥ फिरौफिरौ भट धीरजधा-

रौ । यह मिथ्याजो प्रगट निहारौ ॥ दोहा ॥ मायाबी राक्षसप्रब-
ल जौन घटोत्कच बीर । ताकी यह माया सकल फिरहुलरहु
धरि धीर ॥ सोसुनि कोऊ सुभट नाहिं थिरो फिरो धरिधीर । दु-
र्योधन नृप अति दुखित गयेभीष्मके तीर ॥ पाणिजोरिकै कहत
भे लै लै ऊबि उसास । यथा घटोत्कच जय लहो करिकै अतुल
प्रयास ॥ सोरठा ॥ सुनों पितामह दक्ष तौ भुजबलको अनुगह्वै । पां-
डव प्रबल सपक्ष तिनसों हम सङ्गर रचैं ॥ रोला ॥ एकदश अक्षो-
हिणीमम बिदित सेनासर्ब । लरतिकरत निदेश जिमितुम तथा
नितियहि पर्ब ॥ आशारित तौ तुव सुबशहम साहित सेनाजौन ।
भीमसेन घटोत्कचसों हारि पावततौन ॥ पाण्डवनसों हारिहम
जो लहतसो दुखभूरि । अरस काठहि अगिनि जिमि तिमि
मोहिं दाहत पूरि ॥ सुनो ताते आजुलाहितौ कृपाको परसाद ।
राक्षसाहि निज हाथसों हति चहतअति अहलाद ॥ होइ मम
कर तासुबध तिमिकरहु बिक्रम तात । भूप के सुनि बचनभीषम
कहे उचित सुबात ॥ आपु सब के अधिपहौ महराजयहसुनि
लेहु । आपुसबसों लरौ सबथर तुम्हहिं उचित न येहु ॥ धर्म
आदिक आय बनसों लरहु तुम गहिचाय । अधिपह्वै तुम भृत्य
गणसों लरहु मति बढ़िजाय ॥ द्रोण हम कृपशल्यसात्वकि
शकुनि अरु भगदत्त । द्रोण सुवन बिकर्ण आदिक बीरसकल
प्रमत्त ॥ करबसंगर घोर सब कहँ बधबकै बधिजाब । बधबअरु
बधिजायबेमें नेकुनाहिं अरसाब ॥ बीर राक्षसके बधनको तुमैं
जो अतिचाह । देहु शासन बधैवहि भगदत्त भट नरनाह ।
भाषि यहि बिधि भूमि पति सों भीष्म कुरुकुलवृद्ध । कहतभौ
भगदत्त नृपसों बचन करण समृद्ध ॥ इन्द्रसमअति प्रबलहौ
भगदत्त तुम जगजैन । सदलबढ़िभिरि लरि बधहु भटराक्षस
हि सहसैन ॥ भीष्मको यह बचनसुनि भगदत्त भेरिनिशान
पाण्डवीदल प्रति चलतभो तजत अगणित बान ॥ निरखि





भूपहिबीर उतके भीम आदिक सर्ब । भिरे बढ़ि बढ़ि तजतआ-
युध करत शोर सगर्ब ॥ घोरसंगर किये तहँ भिरि उभयदिशि
के बीर । कटे अगणित बाजि गजरथ धनुष भट रणधीर ॥
मचो संगर घोर तब भगदत्त द्विरदबढ़ाय । चलोसम्मुखभीम
के बरबिशिखसों दिशिछाय ॥ देखिसो अभिमन्यु आदिकबीर
धीरसमस्त । भिरतभे भगदत्त सों करि जीतिबे को कस्त ॥
भरि शक्र समान ते सब बज्रसम बहुबान । हने साद्विरद भूप
गिरिपै जानि परमअमान ॥ क्षतज शोणित धारसों भरि गहे
अनुपम रूप । धातु चित्रित शैलसम तहँ लसो साद्विरदभूप ॥
बीर भूप दशार्णपति द्विरदस्थ भट त्यहि काल । चलो नृपभ-
गदत्त पै करि शरनको अतिजाल ॥ दोहा ॥ देखिताहि भगदत्त
नृप करि अति क्रोध अमान । तकि ताके गिरि सम गजहिमारे
चौदह बान ॥ लगे बाण भागे द्विरद करिआरत चिग्घार । मर्दत
निज दल कढ़िगयो दूरि भयोभय भार ॥ ताहि पराजित देखि
कै भीमादिक भटसर्ब । प्राग्जोतिष पति सों कियो घोरयुद्धगहि
गर्ब ॥ सोरठा ॥ कालानलाहि समान भयो तहां भगदत्त नृप ।
मारि अनगिने बान उतके अगणित भटबध्यो ॥ अगणित
भट तजिधीर ह्वै पीड़ित रणतजि भगे । जिमि सिंहहि लखितीर
भागे करिबर को निकर ॥ चौपाई ॥ भगे सुभट पाण्डवके दलके ।
जे बिरदैत गिने बरबलके ॥ निजदल बिचलत लखिबलवान ।
बीर घटोत्कच सुभट अमान ॥ अतिकराल ह्वै रिसबिस्तारी ।
मारत भयो शूल अति भारी ॥ लखिसो शूलबज्रसम आवत ।
नृपति काटिभो मगहि गिरावत ॥ शूलहि काटि शक्तिलैकरमें ।
तज्यो घटोत्कच पै नृप फरमें ॥ बीर घटोत्कच शक्ति निरेखी ।
कूदि पकरि तोरतभो तेखी ॥ यह लखि बिस्मयभे सुरसिगरे ।
करत प्रशंसा पाण्डव अगरे ॥ तब भगदत्त शरासन गहिकै ।
अब मतिभागु खरोरहु कहिकै ॥ हनिशर एक भीमके तनमें ।

हने राक्षसहि नवशर क्षनमें ॥ तीनि बाण अभिमन्युहि मारे।
कैकेयनकहँ पांच प्रहारे ॥ क्षत्रदेवको दक्षिण भुजवर । काटि
दैतभो हनितीक्षण शर ॥ पांचपांचशर अति अनियारे । पां
चौ द्रौपदेय कहँ मारे ॥ फिरि तजि चारिबाणकी राजी । बधे
भीमके रथके बाजी ॥ हनिशर तीनि ध्वजा द्वै कीन्हें । एकसा
रथीके उरदीन्हें ॥ तब भटभीम गदागहि कूदो । लखितो सुत
गणको मुद मूदो ॥ नृप तेहि थर ताही क्षणआये । कृष्ण स
हित अर्जुन छबि छाये ॥ दोहा ॥ दुर्योधन तहँ देखि तेहि ह्वै
चिन्तित तेहिठौर । भेजतभो अगणित सुभट जेज्ञाता रणतौरा
तेहिक्षण नृपतेहि थरमचो संगर अतिशय घोर । अरुण अरु
णई गहतभे प्रापि प्रतीची छोर ॥ सोरठा ॥ कृष्णार्जुनहि सखेद
भीम सुनावतभो तहां । करता अति निरवेद इरावानको बध
दुखद ॥ जयकरी ॥ निजसुत इरावानको नास । सुनिपारथ लैउ
बि उसास ॥ भरि करुणासों भये अचैन । कहे कृष्ण सों ऐसे
बैन ॥ कुरु कुलको क्षय हेतु लखाय । प्रथमकह्यो जोबिदुरबु
झाय ॥ ब्यासादिकसिगरे मतिमान । कहो न मानैं वेअज्ञान॥सो
दिनभयो प्रगट यहआय । अबमोसों कछु कहो न जाय ॥ ज्ञाति
बन्धुकोनाशमहान । दुहूंओरसों होत निदान ॥ राज्य हेत करि
इतो प्रमाद । राज्य लहेको धिक अहलाद ॥ अधनहि मरण श्रेष्ठ
हे आस । नहिं हतिबन्धु राज्यको प्रास ॥ नृपति धर्मजब मांगे
ग्राम । तबनहिं हमको लगोललाम ॥ अब सो जानिपरो अभि-
राम । लखिकरिबो यह कुत्सितकाम ॥ जो प्रभु अबहम त्यागैं
युद्ध । क्लीवकहैं तौ क्षत्री शुद्ध ॥ ताते अबकरि युद्ध बिहार । उ
चित जाव रणआर्णव पार ॥ तातकरहु अब चपलतुरंग । निर
खौ मम दुस्तररणरंग ॥ यहसुनिकै केशव हरषाय । कीन्हेंचपल
तुरंग बढ़ाय ॥ घोरयुद्धभो नृपतेहि ठौर । कहैं कहांलौं गुरुता
गौर ॥ मारु मारु धरु मार्यौमारु । शब्द भयो अतिभयद अ-





पारु ॥ दोहा ॥ तेहिथर नृपतो तनय सब लैभट द्रोणहि संग ।
बढ़िबाढ़ि कै भिरिभीमसों लगे करनसब जंग ॥ भीषमकृप भग-
दत्तअरु नृपति सुशर्माबीर । पारथसों भिरिकै तहां लगे लरने
रणधीर ॥ हारदिक्य बह्लीकये भिरे सात्वकिहि देखि । भिरत
भयो अभिमन्युसों नृपअम्बष्टपतितेखि ॥ यहि बिधि सिगरे
सुभट भिरि किये घोर संग्राम । शोणितकी सरिता भई समुद्र
समान अछाम ॥ चौपाई ॥ मचे घोरसंगर हे आरज । भीम कियो
अति दुस्तर कारज ॥ ब्यूढोशत्रु सुवनतो ताको । शिरकाटेहनि
चारसुप्रभाको ॥ फिर कुण्डलिन केर बधकीन्हों । फिर बैराटहि
यमपुरदीन्हों ॥ अनाधृष्टको बध फिरिकरिकै । बध्यो सुबाहुहि
शर परिहरिकै ॥ कुण्डेलहि यमलोक पठायो । दीर्घबाहुकहँहति
मुदपायो ॥ दीर्घ बर्चसहि हति फिरितरजो । कनकध्वजहिहति
घनसम गरजो ॥ इमिनवबन्धुन को बध देखी । भगे सकल
तोसुत भय भेखी ॥ तोपुत्रनकहँ भीम निपाते । ह्वै तिहि स-
मय द्रोण रिसराते ॥ डारैबाण भीमपै तैसे । घनबन बरषैंगिरि
पै जैसे ॥ गिरिसम भीम बाणबन सनिकै । बध्यो तिन्हैं अति
रिससों हनिकै ॥ छाग सदृश तोसुत रणधीरा । वृकसम लसो
वृकोदरबीरा ॥ करिकै बिरथ अम्बष्टहि क्षनमें । भट अभिमन्यु
कोपकरिमनमें ॥ मारतभयो बाण अनियारे । जे उतुंग गिरि
बेधन हारे ॥ तब अंबष्टपति युद्ध बिहारी । मारत भयो फेंकि
असिभारी ॥ सोअभिमन्यु बीचही काटे । फिरितीक्षणशर हनि
तेहि डाटे ॥ तब अंबष्ट बिचारिरण पथपै । गोहार्दिक्य भूप के
रथपै ॥ दोहा ॥ इमिसिगरेभट जुटितहां कियेयुद्धउद्दण्ड । रुण्ड-
मुण्डनसों किये रण मंडल अतिचण्ड ॥ महिषरी ॥ तहँ रुण्ड
मुण्ड बितुण्ड मानुष तुरँगके अगणितपरे । करकुण्डलन सह
घने बहुकर कुण्डलन बिनु छबि भरे ॥ तनुत्राण सहतनु त्राण
बिनुशिर त्राणयुत शिरत्राणके । बहुपरे ह्वै अधमरे भटबहुपरे

ह्वै बिनुप्राणके ॥ कटिगिरे धनुसहपरे अगणित भुजातहँ अनुपम बने । शर धनुषताने शोणितक भिदिपरे मरिभट अनगिने ॥ असिशक्ति मुद्गर गदा पट्टिश भल्लकरकासिकसिगहे बहु सुभट कटि कटिपरे ठटिऋटि भूरिछबिसोंलसिरहे ॥ बहुरु धनुध्वज चक्रचामर मुकुट भूषणमणिमये । रथचर्मआयुधदल अंकुश परे थरथर लखिलये ॥ जिमिचलत आयुध दुहूं दिशि सों घने मढ़ि तकितकि नखे । तिमि गिरत नरगज बाजिएक बार अगणित तहँ लखे ॥ मदमेद मज्जा मांस शोणित अति सों धरणीभई । जिमिपूर्बमधुकैटभ दैत्यके नाशमें मेदिनिभई इमिहोत संगर भूपतेहि दिन रजनि द्वै घटिका गई । तब यु तजितजि उभयसेना उभय दिशिकी मगलई ॥ दोहा ॥ निज निज डेरनजाय सब कियेअहार बिहार । अठयें दिनमें इमि भयो प्रलय पयोधिपसार ॥

इतिश्रीभीष्मपर्बणिअष्टमदिवसयुद्धबर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

संजयउवाच॥दोहा॥ गत अठयेंदिनकी रजनि मधिदुर्योधनराय सौबल दुश्शासन करण सों इमिकह्यो बुलाय ॥ सदलपांडव सों लहब केहि प्रकार जयतात । उनसों जयपैबो हमैं दुस्त परमलखात ॥ भीष्मद्रोण कृपशल्य अरु भूरिश्रवा सुबीर । त हिंउनसों जयलहत सो कारण कवन गँभीर ॥ यह संशय ब थवत हमहिं करहुतासु परिहार । यह सुनिकै बोल्योकरण सुनि भूप उदार ॥ शपथ आपुकी करिकहत हमयह सांची बात भीषम पांडव पै करत दीहदया हे तात ॥ शस्त्रग्रहण तजि तजै भीषमयुद्ध बिहार । सहित सदल पांडवन को हम करि संहार ॥ तातें भीषमके निकट आपुशीघ्र अबजाय । शस्त्रत्या करवाइये यह बिधि सबिधि बुझाय ॥ सूततनयके बचन सुनि दुर्योधन तजित्रास । सेवित सुभट समूहसों गये भीष्मके पास ॥ सोरठा ॥ करि बिधिवत परणाम बैठि सुआसन बिशदपै





जोरि पाणि अभिराम कहत भये चख सयलकरि ॥ रोला ॥ तात आश्रय आपुको लहि रहतहीममपास । सहितशक्र सुरासुरन के जीतिबेकी आस ॥ पाण्डवनकी कौन गिनती जहां एसोमान । सुनोताते करौ ऐसी कृपाकरि अनुमान ॥ सदल योधा प्रबल अरिको नाशकै यहि काल । होहिं हम अति धन्य महिपै पाय सुयश बिशाल ॥ मन्दभाग्य बिलोकि ममकै मोहिं दोषीजानि । करहु उनपै दया जोतौ देहु शासनमानि ॥ कर्ण उनकहँ बधैयामें नहीं संशयनेकु । भाषि इमि ह्वैरह्यो चुपतो प्रमानी एकु ॥ भीष्म सुनि यहबचन चुपरहि घरिकलों करि सोच । कोपयुत ह्वै कहतभे फिरि कोपको करिमोच ॥ वाक शरसोंहियो ममकत वृथाबेधत भूप । करत हमतो काज नित निज शक्तिके अनुरूप ॥ छिप्योहै का तुम्हैं बिक्रम पांडवनको जोन । दह्यो जब खांडीव बनको जीति इन्द्रहितौन ॥ छोड़ि तुमकहँ भगेजब कर्णादियोधा सर्ब । छोरिपांडव लये तुमकहँ गहोजबगन्धर्ब ॥ हमहिं आदिककर्ण तकसबसुभटहे तो संग । आपु जबहिं बिराटपुरको गये सहित उमंग ॥ बीरअर्जुन सुभट कै तहां सम्मुखआय । जीति सबको बसन भूषण सहित लैगोगाय ॥ बिदितबीर निवातकवची तिन्हैं जीत्योपार्थ । जिन्हैं जीति न सकैबासव सुरन सह गुणिस्वार्थ ॥ दियेद्रुपद भगाय तुमकहँ सूतसुत सहयत्र । पार्थद्रुपदहि जीतिगहिकै दये द्रोणहितत्र ॥ जानिबिक्रम पाण्डवनको कहतहौ इमिभूलि । किये तु अनुमान भूपति कुमतिपै अनुकूलि ॥ जासु रक्षककृष्ण कर्ता जगतके जगदीश । सकैको तेहि जीतिसो जयलहहि बिस्वेबीश ॥ निदरिसबके बचन तुम हठि रचो रण ब्यापार । मारि उनकहँ आपुकत नाहिं लेत सुजयअपार ॥ पाण्डवनकहँ गहु तुमकरिप्रगट बिक्रमउद्ध । तजिशिखण्डिहि और सब कहँ बधब हमकरियुद्ध ॥ बधहिं गे कै हमहिं उतके सुभटहे

क्षितिपाल। मारिउनकहँ लेब हमके सुजयसुयश रसाल ॥ तज-
हुचिन्ता भूप हम इमि करब संगर आजु । लोकसकल प्रशं-
सिहै बहुदिवसलों जोकाजु ॥ भीष्मके ये बचन सुनिनृपजानि
कारयसिद्धि। मोदिगे निज शिविरकहँ जो लसतपूरित ऋद्धि
तहांरजनि बिताय नृप सजवाइकै निजसैन । कहे दुश्शासन
सुभटसों जानि बलबुधि ऐन ॥ प्रबलदै अरु बीस बिशद अनी-
कनी भटभूरि । करहु नियमित रक्षणारथ भीष्मके मतपूरि
भीष्म बधिहै आजुसिगरे शत्रुको समुदाय । तजि शिखण्डिहि
कहो हमसों पितामह गहिचाय ॥ काज सबकहँ एक रक्षा
भीष्मकोहेतात। भीष्मसबकहँ मारिदेहैं सुजय अतिअवदात
द्रोण गोतम नृप बिबिंशित शकुनि शल्य नरेश । सदा रक्षहिं
भीष्मकहँ ये निकटरहि सबदेश ॥ भूपकेये बचन सुनि तेसब
लभीष्महिंघेरि । सहित तोसुत भयेठाढ़े दीहदुन्दुभि भेरि
पार्थ धीरधुरीण भीष्महिं सदल इबिधि निहारि । धृष्टद्युम्
सुबीरसों इमिकहे बचन बिचारि ॥ भट शिखण्डिहि करि
सम्मुख भीष्मके गहिचाव । रहब रक्षक तासुहम करिप्रग
आत्म प्रभाव ॥ दोहा ॥ भीषम तेहि दिन रचतभे ब्यूह सर्
तोभद्र । राखि सर्बथल प्रबलभट जे करतारणभद्र ॥ कृपकृ
बरमा शैब्यअरु शकुनि जयद्रथबीर । नृपति सुदक्षिणभीष्
अरु सिगरे तोसुत धीर ॥ राजे आगे ब्यूहके रहेदाहिनीओर
द्रोणशल्य भूरिश्रवा अरु भगदत्तअथोर ॥ भूपबिन्दअनुबिन्
अरु सोमदत्तक्षितिपाल। अश्वत्थामाभटसदल रहेबामदिशि
पाल ॥ सुभट त्रिगर्त्तन सहिततहँ दुर्योधन क्षितिनाह। ब्यू
मध्यमें थिरत भे पूरित परमउछाह ॥ नृपति श्रुतायू प्रबलम
असुर अलम्बुष बीर । पृष्ठदेश रक्षतरहे सहसेना रणधीर
यहिबिधि ब्यूह बनायहवै मारतण्ड समचण्ड । भीष्मपिताम
लसतभे सहकरशर कोदण्ड ॥ सोरठा ॥ उतैयुधिष्ठिर भीम औ





माद्रीके उभयसुत । महारथी भटभीम दलके आगे लसतभे ॥
सात्वकिभूप बिराट धृष्टद्युम्न ये सैनसह । करि संगरको ठाट
खरेभयेदिशिदाहिनी॥ बिजयशिखण्डीबीर चेकितानअरुघटो-
त्कच। कुन्तिभोज रणधीर सदल लसतभे बामदिशि ॥ केकय-
पति सबभाय द्रुपद औरअभिमन्युभट । सैनसहित उमदाय
पृष्ठपालह्वै लसतभे ॥ महाब्यूह अतिउग्र इमि पांडवरचि
भटनसह । मुदसों भरे समग्र अरुणबदनकीन्हें खरे ॥ जयकरी ॥
यहिबिधि रचिरचि ब्यूहबिशाल । उभयबन्धु कौरवकुलपाल ॥
दुन्दुभि आदिबाद्य बजवाय । दुहुँ दिशिसों बढ़िचले सचाय॥
महाराजसुनिये तेहिकाल । भोअनेक अपशकुन कराल ॥ दुहूं
ओरसों आयुधभूरि । लगे चलन भीषमता पूरि ॥ चौपाई ॥
माचो घोरयुद्ध तेहिक्षनमें । लखि सुरगण बिस्मितभे मनमें ॥
तहँ अभिमन्यु बीर रणचारी । सुरथ बढ़ाय सुभटन प्रचारी ॥
घनसम गर्जत भयो अमाना । बारिधार समबर्षे बाना ॥
काल दण्ड सम बाणप्रहारी । अगणित भट कीन्हेंनभचारी ॥
ह्वै बिकराल प्रलय आरोप्यो । घने भटनकीगुरुता लोप्यो ॥
सगज गजस्थ सहयहयसादी । हते असंख्यरथस्थ प्रमादी ॥
अर्जुनसुवन दवाग्नि अमाना । बाण जालवर लपट समाना॥
इतकेसुभटबिहँग भय पागे । सहि न सकेसाहस बनत्यागे ॥
मरेकिते कितने भट भागे । उड़त झोलजिमि तिमितेलागे ॥
तासुबाण करि निकर महाना । पंकिल थलसमतहां लखाना॥
इतके भट करि गण समतामें । परिन लखे त्राता बिपदामें ॥
लख्यो फाल्गुण सुततेहि क्षणमें । बज्रपाणिसम बिचरत रणमें ॥
सब थरलसे तासु शर तैसे । पुष्पित बनमें षटपदजैसे ॥ द्रोण
जयद्रथ अश्वत्थामा । कृपहि आदि जेभट जयकामा ॥ तिन
सबकहँ मोहित करि बीरा । लख्योअरजुन अति रणधीरा ॥
मण्डल सदृश धनुष तहँ ताको । लसत भयोनृप परमप्रभाको ॥

दोहा ॥ निजदल मर्दत देखिकै अभिमन्युहिं तेहिकाल। असुर
अलम्बुषसों कह्यो दुर्योधन क्षितिपाल ॥ तुम बिनु याकोनाश
नाहिं करि सकिहैं भट और। ताते तुम बढ़ि लरिबधौ याहि सु-
भट शिर मौर ॥ यहसुनिकै अतिघोर धुनि करि राक्षसरणधीर।
रथ बढ़ायकै जातभो जहँ अभिमन्यु सुबीर ॥ सोरठा ॥ प्रबल
राक्षसहि देखि निजरथ चपल बढ़ायकै। अर्जुनको सुत तेहि
चलो बेगसों तजत शर ॥ चौपाई ॥ अर्जुन सुवन भिरै बढ़िजब
लों। राक्षस बीर अलम्बुष तबलों ॥ मर्दि असंख्यसुभटजग
जेना। दईबिडारि पाण्डवी सेना ॥ तहां द्रौपदीके सुतगनको
लखि सरोष प्रमुदित करिमनको ॥ तिनपै तजतभयो बरबाना
हने ताहि तेऊ बलवाना ॥ शशिहि पांचग्रह घेरहिं जैसे। भिरे
असुरसों तेसबतैसे ॥ अगणित बाण असुरके तनमें। हनत
भये ते कोपित मनमें ॥ रुधिर भरोतहँ असुर लखानो। रबि
के किरिण सहित घनमानो ॥ बरबाणनसों बेधित ह्वैकै। मू
र्च्छितचेति फिरि तिनकहँ ज्वैकै ॥ शर धनु ध्वजाकाटि तिनके
सब। पांचपांच शर हनत भयो तब ॥ फिरि सूतहि हनि शा
यक चोखो। बध्यो हयन करि बिक्रमनोखो ॥ तबलखि तिन्हैं
बिरथबलवाना। चलो बधनको करिअनुमाना ॥ सो लखिअ
र्जुनसुत भट भारी। हनत भयो बहु बाण प्रचारी ॥ सोअभि
मन्युहिं बहुशर मास्यो। सो असुरहि बहु बाण प्रहास्यो ॥ दो
ऊ बीर धीर रण चारी। दोऊ बिदित महत धनुधारी ॥ तुल
बलबीर भावसों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हें तहँ थिरिकै ॥ सुनिधृत
राष्ट्रकहै अनुमानी। सह बिस्तार कहौ गुरु ज्ञानी ॥ दोहा ॥ मुनि
संजय बोले सुनो भूपति सह बिस्तार। राक्षस अरु अभिमन्यु
जिमि कीन्हें युद्ध बिहार ॥ बर्षत अगणित बिशिखबर राक्षसभट
उद्दण्ड। थिरुथिरुकहि अभिमन्यु पै चलत भयो ह्वै चण्ड।
गुरुतोमर ॥ अभिमन्यु ताकहँ देखिकै। गुणिबन्धु हन्ता तेखिकै





कोदण्डवर सन्धानिकै। बहुहने शर प्रणठानिकै ॥ सो असुर
ताहि प्रचारिकै। भो मुदित बहुशर मारिकै ॥ शरतासु अग-
णित काटिकै। अभिमन्यु ताकहँ डाटिकै ॥ शर आठताकीदेहँ
में। भो हनत चुभि जय नेहमें ॥ तब असुर अतिशय कोपकै।
भोहनत नवशर चोपकै ॥ तजिशर हजारन जोरसों। भो भरत
तम धुनिघोरसों ॥ अभिमन्यु तब नवबानसों। तेहिदयो बेधि
बिधान सों ॥ तब असुर योधा तरजिकै। भोहनत बहुशर गर-
जिकै ॥ अभिमन्युको तन भेदिकै। ते गयेकढ़ितेहि खेदिकै ॥
अभिमन्यु असुरहि हांकिकै। बहुबाण मारेताकिकै ॥ ते बेधि
असुर सुबीरको। कढ़िगये भूषिशरीरको ॥ तब असुर भयसों
भागिकै। तजियुद्ध पगद्दै भागिकै ॥ भोकरत माया मोहनी। तम-
मयी जो भय पोहनी ॥ वहि सैनमें तम छायगो। मुदिभटनको
भवसायगो ॥ अभिमन्यु ताके भानको। तब तजे भास्कर बान
को ॥ दोहा ॥ भास्कर अस्त्र अमोघके बर प्रभावते भूप। बिनशी
माया आसुरीभयोप्रकाश अनूप ॥ अगणित मायाकरतभो यहि
बिधि असुर सगर्ब। व्यर्थ कियो अभिमन्यु इमि दिव्य अस्त्रसों
सर्ब ॥ तब अभिमन्यु प्रचारतिहि मारे अगणित बाण। थिरि न
सक्यो राक्षसभ गो रथहि त्यागिलै प्राण ॥ सोरठा ॥ राक्षस पलिहि
भगाय अर्जुनको सुतलसतभो। दाहिबनहिं छवि छाय प्रज्वलित
अग्नि अधूम सम ॥ चौपाई ॥ तेहि भगाय अभिमन्यु सुजेना।
मर्दत भयो तावकी सेना ॥ जिमि मद गलित मतंग अमाना।
मर्दै पद्मको बन तेहि माना ॥ निज दल मर्दित बिचलित देखी।
पिता तुम्हार भीष्म अतितेखी ॥ अगणित रथिन सहित धनु
बर्षत। भे अर्जुन सुतपै शर बरषत ॥ सब दिशिघेरि घोरधुनि
कीन्हें। सारदशर पंजर करि दीन्हें ॥ उभय वंशको गुणअनुस-
रिकै। अर्जुन सुत तहँ बिक्रम करिकै ॥ सब सों भिरो अकेलो
तैसे। तरुण तरुणसों मारुत जैसे ॥ निज सुतपै इमिभीर नि-

रेखी । अर्जुन अति अनरथ अवरेखी ॥ तजत असंख्य बा
बर रूरे । मर्दत अगणित भटबल पूरे ॥ भिरो आय भीष्म
कैसे । भिरै सुसिंह सिंह सों जैसे ॥ दुर्योधन नृप सहित समा
हे रक्षत भीष्महिं तहँ राजा ॥ तिमि उतके बहुभट भरि
सों । हे रक्षत अर्जुनहिं यतन सों ॥ तहँ कृप बढ़िकै धनुटंका
बाण पचीस अर्जुनहिं मारे ॥ इतनेमें सात्वकि भट बढ़िकै
न्यो कृपहि शर रिससों मढ़िकै ॥ तब कृप नवशर ताहि प्रहा
जे अतिशय सुन्दर अनियारे ॥ तबसात्वकि अतिरिसबिस्ता
अति प्रचण्ड शर कृपपर डारे ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा बीच
सो शर दीन्हों काटि । तब सात्वकि तजिकृपहि शर ताकहँ
डाटि ॥ अश्वत्थामा बीरतब मारो बाण उदण्ड । सात्व
को धनु काटिकै हने बाण बहुचण्ड ॥ तब सात्वकि सों धनु
तजि गहि दूजो कोदण्ड । अश्वत्थामा कहँ हने साठि
उद्दण्ड ॥ भिदि तिन बाणन सों तहां मूर्च्छि द्रोण सुतबीर ।
ति हनत भो सात्वकीके तन अगणित तीर ॥ सोरठा ॥ फिरि
बाण बिशाल काटि ध्वजा घनसम गरजि । हनि बाणनको
ल गोपिदेतभो सात्वकिहि ॥ चौपाई ॥ सात्वकि तिहि अगणि
शरमारे । सो सात्वकि पहँ बहुशर डारे ॥ मारिअसंख्य बाण
लैसे । सात्वकि छाय दयो तेहि तैसे ॥ प्राविटकाल यथा
घोरा । गोपहि रबिहि घेरि चहुँ ओरा ॥ सोलखिद्रोण कोप
ति गहिकै । हने बाण बहुथिरुथिरु कहिकै ॥ तब सात्वकिरिस
बिस्तारी । द्रोणहि हने बीसशरभारी ॥ इतनेमें अर्जुनरणचारी
भिरे द्रोणसों धनुटंकारी ॥ अर्जुन द्रोण भिरे तहँ राजा । जि
नभमें बुध शक्र समाजा ॥ यह सुनिवृद्ध भूप अनुमानी । संज
सों बूझी यह बानी ॥ अर्जुन द्रोणहिं सरस सनेहू । रहोपरस्प
तुम गुणिलेहू ॥ ते निर्दय ह्वै ह्वै कै तेहिथर । कैसेलरे कहो
बुधिवर ॥ यह सुनि बोले संजय आरय । नृपगुणि क्षात्रधर्म





आरय ॥ हने यथेष्ट द्रोण कहँ पारथ । पार्थहि हने द्रोण लखि
पारथ ॥ पारथबारिद्रोणके बानन । हनि शर तीनि पुरुषपंचा-
नन ॥ छाय देतभो बहुशरद्विजपै । तब अतिकोपि द्रोण अरि
द्विजपै ॥ करिकर लाघव बिक्रम बरसों । पार्थहि छाय देतभो
शरसों ॥ पारथबीर कोपि तेहि क्षनमें । बहुशर हने द्रोणके तन
में ॥ सोलखिदुर्योधन अतिमाखे । बीर सुशर्म्मा नृपसोंभाखे ॥
करोद्रोणको रक्षणबाढ़िकै । सो सुनि भूप सुशर्म्मा काढ़िकै ॥ घन
समगरजत बीर अमाना । बर्षत भयोबारिसम बाना ॥ दोहा ॥
बाण सुशर्मा के बिशिख हंस सदृश नभछाय । मुकुटराशिसम
पार्थपै पतत भये दृढ़घाय ॥ तब अर्जुन अति कोपकरि मारि
अनगिने बान । ससुतसुशर्मा भूप कहँव्यथितकियो बलवान ॥
तहँ त्रिगर्त्त पति पुत्रसह मरिबेके प्रणलागि । शर बर्षत भट
पार्थपै चलो क्रोधसों पागि ॥ अति बिक्रम कीन्हों तहां पार्थ
बीर उद्दण्ड । निज बाणनसों तासुसबशरकाटे ह्वैचण्ड ॥ सोरठा ॥
तब पारथ करि शोर तज्यो अस्त्रबायब्य वर । मढ़ो बायु अति
घोर इतनृप तासु प्रभावसों ॥ अगणित सुभट अमान तासों
मर्दितभे इतै । सो लखि द्रोण सुजान शैल अस्त्रछोड़त भये ॥
चौपाई ॥ मारुत शमित भयो नृपतासों । तब पारथ भरि क्रोध
महासों ॥ हनि असंख्य शर हतिबहुबीरा । कियो सुशर्महि
बिगलित धीरा ॥ सो लखि दुर्योधन कृप योधा । अश्वत्थामा
शल्य सक्रोधा ॥ बिंद और अनुबिंद नरेशा । अरु बाह्लीक
नृपभट बेशा ॥ अरुकम्बोजाधिपति सुदक्षिण । घेरिपार्थ कहँ
करेसपक्षिण ॥ नृप भगदत्त श्रुतायुस सेना । भिरे भीमसों
लखि दल जेना ॥ भूरिश्रवा शकुनिशल राजा । माद्रीसुतसों
भिरे ससाजा ॥ सहतो सुतनभीष्म रणचारी । भिरे धर्मसों
धनुटङ्कारी ॥ गजानीक लखि भीम उमहिकै । रथसों कूदोसु-
गदा गहिकै ॥ गदा पाणि तहँ भीमहिं ज्वैकै । सब गजरथ यो-

धारिस ग्वैकै ॥ घेरि लये भीमहिं बढ़ि तैसे । घन समुदायस
कहँ जैसे ॥ तहां भीम अति बिक्रम करिकै । बधो अनेक हि
रंद संचरिकै ॥ लसो भीम यहि भांति गजनमें । जैसे प्रब
बायु घन बनमें ॥ मारिगदा करि कुम्भ पदनपै । अति उत
अतिदीह रदनपै ॥ हते असंख्य द्विरद मतवारे । भगेअसंख
भीतिसों मारे ॥ मर्दत निज दल ते गजरूरे । सब दिशिमेंभ
रत धुनि पूरे ॥ दोहा ॥ गजदलबिचलत देखिकै भगेसुभटसमु
दाय । त्यहि क्षणमें युगयाम दिन गयोसुनो मनलाय ॥ म
दिवसमें भीष्मतहँ कियो घोर संग्राम । लुनित धान्यसमपर
लहि मर्दितभो बलधाम ॥ तहां शिखण्डी द्रुपद अरु धृष्टद्यु
बलवान । नृपबिराटयेभीष्मसों कियेकठिनघमसान ॥ नृपबिरा
कहँ एकशर तीनि द्रुपद कहँ मारि । धृष्टद्युम्नकहँ एकशर मा
भीष्म प्रचारि ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्नबलवान तीनि बाण भीष्महि
हने । नृपबिराट दशबान मारे द्रुपद पचीसशर ॥ बाणपची
अमान हन्यो शिखंडी शंक तजि । तहँभीषम मतिमान पुणि
त किंशुकसम लसो ॥ जयकरी ॥ तब भीषम अति रिस बिस्ता
रि । तीनि तीनि शर तिनकहँ मारि ॥ सुभट शिखंडी युवति
बिचारि । हन्योन शायक दीन्हों बारि ॥ बाण एकहनि द्रुपदहि
डाटि । शरसोंदयो शरासनकाटि ॥ तबनृपद्रुपद औरधनुधारि
मारेपांच बाण ललकारि ॥ सूतहिहने तीनिबरबान । जेकरत
अनरथको ठान ॥ त्यहि क्षणभीम सात्वकी बीर । सुवन द्रौप
दीके रणधीर ॥ पांचभाय केकयपति भूप । अरुसात्वकि क्षिति
पाल अनूप ॥ महारथिन सह धर्मनरेश । भिरे भीष्मसों नृ
तेहि देश ॥ दोहा ॥ तिमि इतसों तौ तनय सब महारथिन सं
ऊटि । पाण्डब भट सों लरतभे अमरअसुरसम जूटि ॥ घो
युद्ध तहँ होतभो कहैं कहांलों भूप । शोणितकी सरिता बहीं
मुद समानअनूप ॥ कितने रथहयबहि गये परिशोणितकेधार





कितने गिरत मतङ्गके तर दबिगे लहिभार ॥ सोरठा ॥ अर्जुन
बधेसटेक सुभट असंख्य त्रिगर्त्त के । तीक्ष्ण बिशिख अनेक
हन्यो सुशर्मा पार्थपहँ ॥ चौपाई ॥ नवशर हने पार्थके तनमें । स-
त्तरि हने कृष्णकहँ क्षनमें ॥ तब अर्जुन अति रिस बिस्तारी ।
भूपके शर निज शर सों बारी ॥ प्रलयपारि भूपतिके दलमें ।
दियो बिडारिसुभट सब पलमें ॥ भगे त्रिगर्त्तभूपके योधा । ह्वै
अनाथ सम बिगलित बोधा ॥ बहुगज रथहय तजितजिभागे ।
गिरत उठत ताकत भय पागे ॥ हांकि बाजि गजरथभटरूरे ।
भागेदीन दशासों पूरे ॥ तिन्हैं सुशर्मा बहुबिधिटेरे । तेनहिं मन
भागिवेसों फेरे ॥ यह लखि दुर्योधन अनखाई । लैसँगसबसेना
सहभाई ॥ करि आगे भीषम कहँ राजा । भिरे पार्थसों सहित
समाजा ॥ उत सब पाण्डव बढ़ि सबदिशिसों । भिरे कौरवनसों
भरि रिसिसों ॥ अर्जुन अरु भीषम तहँ भिरिकै । घोरयुद्ध
कीन्हों थिरि फिरिकै ॥ भिरि सात्वकि अरु नृप कृतबरमा । क-
ठिन युद्ध कीन्हों तेहि थरमा ॥ दोहा ॥ द्रुपद द्रोण ये भिरि तहां
कियेघोर घमसान । भीमसेन बाह्लीक भिरि कीन्हो युद्धमहान ॥
चित्रसेन अभिमन्यु कहँ हने अनगिने बान । बेधे ताकहँ तीनि
शरहनि अभिमन्युअमान ॥ चित्रसेनके सुरथके हनिहति सिगरे
बाजि । सिंह सदृशगरजत भयो सुरथ शृङ्गपै राजि ॥ चित्रसेन
तब शीघ्रही कूदि सुरथ सों त्यागि । दुर्मुख के रथपै गयोभभरि
भीतिसों पागि ॥ सोरठा ॥ सूत सहित तेहि देश ह्वै बेधितभट
द्रोण सों । भयगहि द्रुपद नरेश भागिगये निज सैनप्रति ॥
भीमसेनके चण्ड बाणनसों भिदि बिरथ ह्वै । तजिबाह्लीक
प्रचण्ड लक्ष्मण के रथ पै गयो ॥ चौपाई ॥ कृतबर्मा कहँ बहुशर
हनिकै । सात्वकि अति आनँद सों सनिकै ॥ रथबढ़ाय भीषम
सों भिरिकै । हने साठिशर छबि सों घिरिकै ॥ तबभीषम करि
कोप कराला । तजे शक्ति अति बिशद बिशाला ॥ सात्वकि

ताहि बीचही छेदे । सो लखिकै दुर्योधन खेदे ॥ तब सात्वकि
न्हिज शक्ति चलाये । भीषमताकहँ काटि गिराये ॥ काटि शक्ति
भीषम अतिरोखे । हने सात्वकिहि नवशर चोखे ॥ सो लखि
रथी पांडवन केरे । राखि सात्यकिहि भीष्महिं घेरे ॥ अतिशय
घोर युद्ध तहँ माचो । मानहुंकाल कुपितह्वै नाचो ॥ यहलखि
दुर्योधन अनुमानी । दुश्शासनसों बोले बानी ॥ भीषम पाण्डव
के सुभटन सों । घिरिछादितभे सरस शरन सों ॥ रक्षण तासु
महत है कारय । मम जय को कारणहे आरय ॥ महारथिनसह
बढ़ि तुम आसू । रक्षहु भीष्महि हति दल तासू ॥ यह सुनि
सह सेना बढ़िसोई । भिरोपाण्डवनसों भयगोई ॥ उभयसेनके
भट भिरिभिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥ हयदलसहित
शकुनि तेहि क्षनमें । जयहित उमहि गर्व गहि मनमें ॥ बरषत
बाण भिरतभो जितिसों । सहदेव नकुल सुधर्मनृपतिसों ॥ दोहा ॥
तोमर पट्टिश भल्ल अरु शक्ति परश्वधबान । झेलिउभयदि
शिके सुभट किये कठिन घमसान ॥ दशहजारयोधाप्रबलहय
सादी तिहिकाल । तहँभेजतभो चाहिजय दुर्योधनक्षितिपाल ॥
तेहि क्षण चपल तुरीनके खुरथारनको शब्द । दहत बांस को
बिपिन तिमि कढ़िपरसत भो अब्द ॥ सोरठा ॥ हय हिंसनको
शोर पूरि गयो सब दिशनिमें । उध्व युद्ध अतिघोर क्रुद्धि क्रुद्धि
भटकरतभे ॥ वसुकला ॥ तेहिक्षण ससैन । बलबुद्धि ऐन ॥ युत बन्धु
बीर । नृप धर्मधीर ॥ ह्वै चपल हिष्टि । करि बाण वृष्टि ॥ हति
हय समूह । अरु सुभट जूह ॥ तोदलदबाय । दीन्हों भगाय ॥
तजि सकल सौज । भागिचली फौज ॥ पाण्डवअमान । लहिमुद
महान ॥ करिशंखनाद । गहिअति प्रमाद ॥ झेरतनिशान । बाजि
भरे शान ॥ यहसमय देखि । तोतनय तेखि ॥ नृपशल्य ताहि
अति प्रबलचाहि ॥ भोकहत येहु । सुनु सुबलगेहु ॥ तौभाजि
नेय । तजिशर अमेय ॥ अरु धर्म भूप । ह्वै बिकट रूप ॥ मारि





दल सँहारि । दीन्हौं बिडारि ॥ तुमबढ़ि सरीति । लरिलेहु-
जीति ॥ दोहा ॥ दुर्योधनको बचन सुनि शल्यभूप हरषाय । रथ
समूह सह बढ़िभिरो धर्मनृपति सों जाय ॥ धर्म नृपति तिनसों
भिरो लैसँग सुभट अथोर । महतयुद्धतहँ होत भो यमपुर ब-
र्द्धन घोर ॥ शल्यभूप के हियहने धर्मभूप दशबान । हने नकुल
सहदेव शर सात कठोर अमान ॥ शल्य मारि तिनकहँ प्रथम
तीनि तीनि शरचण्ड । साठि धर्म नृपकहँ हन्यो द्वैद्वै तिन्हैंउ-
दण्ड ॥ सोरठा ॥ घोर युद्ध तेहिकाल भूपति तेहिथर मचतभो ।
शोणित सरित बिशाल रुण्ड मुण्ड मय बढ़िबही ॥ यह लखि
धीर धुरीन भीम सुबीर अमित्र जित । करत सुबिक्रम पीन
भिरो शल्य नृपसों तहां ॥ तेहि क्षण भीषम क्रुद्धि कठिन परा-
क्रम करतभो । जिमि मृगराज प्रबुद्धि गजराजन के यूथमधि॥
चौपाई ॥ द्वादश बाण भीमकहँ मारे । नवशर हनि सात्व-
किहि प्रचारे ॥ तीनि सुबाण नकुलके तनमें । हने सात सह-
देवहि क्षनमें ॥ द्वादश बाण धर्मके उरमें । धनु टंकारि हन्यो
सातितुरमें ॥ धृष्टद्युम्न कहँ बेधिननरदे । यहिबिधि अगणित
सुभटन मरदे ॥ द्वादशबाण सरस अनियारे । नकुल प्रचारि
भीष्मकहँ मारे ॥ सात्वकिहने तीनिशरचोखे । धृष्टद्युम्न सत्तरि
शरनोखे ॥ गरज्यो भीम सात शर हनिकै । द्वादश हने धर्म
नृप गनिकै ॥ तेहिक्षण द्रोण सात्वकी भीमहि । पांचपांच शर
हने अधीमहि ॥ सात्वकि भीम क्रोधअति करिकै । तीनितीनि
सायक परिहरिकै ॥ बेधि द्रोणकहँ गर्बित मनमें । सिंहसदृश
बिचरे रणबनमें ॥ त्यहिक्षण सकल देशके योधा । घोरयुद्ध
कीन्हों गहिक्रोधा ॥ भीषमतहां धनुष टङ्कारे । करि मण्डलसम
भटसंहारे ॥ अग्नि समान भीष्मके बाना । अरिदल भो तृण
बिपिन समाना ॥ सुभट चेदि कारूष सुथरके । चौदह सहस
बीरबल बरके ॥ भिदि भीषम के शरसों तहां । गये शूरगण

निवसत जेहां ॥ यहिबिधि अगणित सुभट सँहारे । हाहाधुनि
परदल मधिपारे ॥ दोहा ॥ कालचक्रसम धनुष रथ करिकै
भीषम तत्र । अगणित भटहति निमिषमें भेजे यमपति यत्रा॥
काटिसरथ अगणित रथी सहहय नेक हयस्थ । सगज अनेक
गजस्थ हतिपरदल कियो अस्वस्थ ॥ डाटि डाटि अगणित
सुभट काटि काटि रणधीर । काल कुदेरेको अजिर रणमहिकि
यो सुबीर ॥ सोरठा ॥ भगी पांडवीफौज ह्वै मर्दितभटभीष्मसों॥
तजितजि संगर सौज भगत गिरत उठिलखिभगत ॥ चौपाई॥
पांडव को दल बिचलत देखी । रोको सुरथ कृष्ण अवरेखी॥
कहे पार्थ सों सुनो यथारथ । यह सोई दिन है हे पारथ ॥ जो
दिन तुम इच्छितहेबहुदिन । निरखौ प्राप्त भयोअब सोक्षिन॥
अब कत मोहिं रहेहौ आरज । करहु सभामधि कोपनकारज॥
यहसुनि पार्थ कहतभेशोचत । नहिंअबध्यको बधमोहिंरोचत॥
धिगराज्यहिजाके हितस्वामी । होतबनत अनुचितपथगामी॥
करहु चपल अश्वनकहँसाईं । निरखो मम बिक्रम यहि ठाईं॥
सुनि प्रभुहांकि श्वेत रँगघोरे । कीन्हें शीघ्र भीष्म के घोरे॥
भिरे भीष्म सों पारथ जबहीं । पलटे उत के योधा तबहीं॥
भीषमतहँ करलाघव करिकै । तीक्षण शरअसंख्यपरिहरिकै॥
गोपि दयो पारथकहँ क्षनमें । लखिसबभट बिस्मितभे मनमें॥
तहँ यदुनायक अनरथचीन्हें । बेधितहयन चपलअतिकीन्हें॥
तेहिक्षण पारथ हनिशर चोखो । काटो भीषमको धनु नोखो॥
तब भीषम धनु आन चढ़ायो । पारथ सोऊ काटि गिरायो॥
साधुसाधु तब भीषम कहिकै । बर्षे शरअति बरधनु गहिकै॥
भीषम ह्वै प्रचण्ड अतितेहिक्षिन । कीन्होंकठिन बाणको दुर्दिन ॥ दोहा ॥ केशव करिकै प्रकट तहँ निज सारथ्य महान ।
रथ चालन में व्यर्थकरि दये अनगिनेबान ॥ काटे पार्थ असं
ख्यशर तऊ अनगिनेबान । सहै कृष्ण पारथहितहँ मारभीष्म





अमान ॥ सहस छिद्र जलयंत्र सों कढ़ै यथा जलधार । चल
भीष्मके धनुष सों तिमि तहँ बाण अपार ॥ यहि बिधि पारथ
रथहि छाय शरन सों बीर । बधेअसंख्यन भटनकहँ भीषम
भट रणधीर ॥ सोरठा ॥ पारथ को मृदुयुद्ध लखि भीषम कहँप्र-
बल लखि । यदुनायक ह्वै क्रुद्ध रथताजि भीषम पै चले ॥ करे
तुरंगप्रतोद अनुमानतबध भीष्मको । चले भीष्मकेकोद पुरुष
सिंह यदुनाथप्रभु ॥ रोला ॥ महिहि मर्दतयदुपतिहि तेहिसमय
आवत देखि । जातमारे भीष्म इमि सब कहतभे अवरेखि ॥
भीष्म आवत प्रभुहि लखि सन्धान धनुको बारि । कहत भे
स्वामि कृष्णके करमरण श्रेय बिचारि ॥ आय ममबध कीजिये
प्रभु कृष्ण करुणा ऐन । युद्ध मधितुव हाथ मरिबो परम
महिमा ऐन ॥ इते में गुणिकूदि रथसों पार्थ पीछे धाय । गहे
चरणहि रुके तबगे चरणसों लपटाय ॥ खरेभे तब कृष्णपारथ
कहतभे करजोरि । नाथऐसो करे होइहि महत लघुता मोरि ॥
स्वयसत्कृत शस्त्रकी मोहिंशपथ हे मतिमान । मारि भीष्महि
लहब जय तिमिकरब युद्धबिधान ॥ बचन यहसुनि कृष्णराजे
सुरथपै फिरिजाय । टंकारि बरको दंड भीषम दये फिर शर
छाय ॥ किये दुरदिन पार्थबर्षाबाण की करिभूरि । उभय दिशि
मे चले आयुध रहे सबदिशि पूरि ॥ बधेसैन असंख्य इतके
सुभटपाण्डव बीर । बधेउतके सुभट अगणित पिता तो रण
धीर ॥ उभयदिशिके सुभट सिगरे किये बिक्रम घोर । मारुमा-
रुमारु थिरु धुनि पूरिगो सब ओर ॥ चण्ड ग्रीषम समय
जैसो मारतंड समान । भयो भीषम भीष्म तेहि दिन दुसह अ-
तिशय अमान ॥ दयोकरि शरजाल सबदिशि बध्यो अगणित
सेन । पांडवीदल मधिन भट कोउरह्यो तहँ सहचैन ॥ दोहा ॥
जैसे दवानलकी लपट जिमि तरु शलभ समूह । तिमि भीषम
शरबधे भट हय मैगलजूह ॥ काटि असंख्यन बाण धनु

ध्वजरथ शक्ति अनेक। रुंड मुंड शोणित मयी रणमहिकी
टेक ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाबीर बीराधि श्री भीष्म योधी। श्रो
करीपै महासिंह क्रोधी ॥ प्रलय कालके कालसो क्रूर ह्वै
प्रलयकाल रोष्यो प्रबीरान ज्वैकै ॥ करे मंडलाकार कोद
भारी। दयेपूरि नाराचजे गात न्यारी ॥ यथा भूरि भेकी
ब्याल कोह्यो। तथा पांडवी सैनमें बीरसोह्यो ॥ दोहा ॥ सब
सबजनपै दयो पूरिशरनकोसेत। रह्यो न उतके भटनकहँ
लरिबेको चेत ॥ जिमिसबात अति वृष्टिमें कछु करिसकै
कोइ। तिमि तेहिक्षण उतते सुभट रहेअचेष्टितहोइ ॥ महि
तिहि समय भीषमबीरके बर शरनसों भिदि भट घने।
गिरतहे यकसाथ अगणित रहेजकि तकिभय सने ॥ बहु
आयुध डारि कितने लये आयुध भगिचले। बहुभगे बा
त्यागि कितने सहित बाहन भयरले ॥ बहुनिरखि बिनु
वार बाहन पकरि चढ़ि सादर भगे। बहुबीरघायल भगत
गिरि रहत परिश्रति भयपगे ॥ यहिभांति हाहाकार नृप
सैनमधि सबथर मचो। कल्पान्त सोदिन भीषमभव धनु
गति विधिवत नचो ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार करि एकरस बिक्र
भीषम धीर। रबि अथयेलों लरतभो प्रलयपारि रणधीर
इमि निजदल मर्दित निरखि लहि तेहि दिनको अन्त। सहि
सैन डेरन गये धर्मराज क्षितिकन्त ॥ दुर्योधन तब सहस
निज डेरन मधिआय। किये अहारादिक क्रिया महा मोद
छाय ॥ सोरठा ॥ ससयन पांडवभूप किये अहारादिक क्रिया
समुझि भीष्मको रूप तजीआश जयलहनकी ॥ रोला ॥ निरा
बिक्रम भीष्मको ह्वै ब्यथित पांडवभूप। बैठिपुरुष प्रधान
भेकरत मंत्रअनूप ॥ मंत्रिऊबि उसांसलै तहँ बिकल ह्वै
धर्म। कृष्णप्रभुसों कहतभे निजपिता महको कर्म ॥ कृष्णदे
भीष्म कीन्हों अतुल बिक्रम आजु। दल्याइमि ममसैन जि





ब नलिनको गजराज ॥ गनेभट ममओरके जेभये संमुख
तासु। ज्वलन ढिग गतशलभ सम तहँ भयेते सब आसु ॥
इन्द्र कुबेर यमके जीतिबेके योग। भीष्मतासों युद्ध क-
लहै जयको लोग ॥ कृष्ण लरिबो भीष्मसों सो वृथा
हि जय आश। जानिकै करवाइबोहै बन्धु गणको नाश ॥
भीष्मके शरघात सों हैं ब्यथित हित समुदाय। तासु रक्षणहेत
ब हम बसब बनमें जाय ॥ भूपको यह वचन सुनिकै कह्यो
दुकुल चन्द। धर्मभूपति धीरधारो तजौसिगरो दन्द ॥ आपुके
बंधुये हैं प्रबल बिक्रम भूरि। भीष्मको बध करहिंगे ये बि-
द बाणनपूरि ॥ अर्जुनाहिंको नहिंरुचै बधिभीष्मकोतौ मोहिं।
दुशासन मारि भीष्महिं देउँ आनँद तोहिं ॥ पाण्डवन को
हित जोमम अहित सोनहिं आन। अहित ममसो पांडवन
अहित कहत सयान ॥ शिष्य सम्बन्धी सखामम अनुज
बलवान। तासु हित हम प्राण दीबो गुणत तूलसमान ॥
के ये बचन सुनिकै कहे धर्म नरेश। सत्यमम सम कौन
पक्ष आपु सुवेश ॥ कहेंहम केहिभांति प्रण तजि आपु
जै युद्ध। नाथ अबमैंकहतहौं जोमंत्र अतिशयशुद्ध ॥ भीष्म
कहँ देनभाषो मंत्रवादिनजौन। भीष्मपहँचलि बिनयकरि
आजु लीजे तौन ॥ भीष्म करिहैं युद्ध उनकी ओरयह
तात। अवशिहम जयलहबउनको पायमंत्रबिभात ॥ दोहा ॥
भूपको बचनयह सुनिकृष्णादिक तत्र। करिसम्मत सादर
वृद्धभीष्महैयत्र ॥ कृष्ण नृपति सबबंधुसह धर्मभीष्मपहँ
यथा उचित अभिबंद्यभे बैठत आनँद पाय ॥ जयकरी ॥ कै
तहँभीष्मउदार। कीन्हें कुशलप्रश्नब्यवहार ॥ फिरिबूझै
आगमकोहेत। तबबोले नृपधर्म सचेत ॥ तातपूर्ब बिनतीगुणि
करिसोपै तुमकृपाअथोरि ॥ देनकहो होश्रेयदमंत्र। आयो
चाहि सोतंत्र ॥ निज बधकी बिधिमंत्र अघोर। देहुबता-

य सुजय गुणिमोर ॥ यह सुनि बोले भीषम चाहि । पूर्वशि[illegible]समेत। रहे तिनके पृष्ठपालक करे अबिचल चेत ॥ तासु पीछू
युवती ताहि ॥ आगे करि सब सुभट समूह । मम संमुख[illegible]हो दलपति धृष्टद्युम्न ससैन । रहे तब नृपधर्म अरु सहदेव
रचिब्यूह ॥ हम तापै शर हनब न नेक । रहि ताके आड़े [illegible]कुलसचैन ॥ तासुपीछू रहोदलसह नृपबिराट प्रकर्षि । बीर
टेक ॥ बढ़िहनि अति अनियारे बान । ममबध करै पार्थ [illegible]समय द्रुपदहो तब सहित सेनाहर्षि ॥ पांचभाय महीपकेकय
वान ॥ पार्थ बिना कोउ सुभट अनूप । तऊ न मारिसकिहि[illegible]शके रणधीर । धृष्टकेतु ससैनहै सबचमू रक्षकबीर ॥ बिरचि
हिं भूप ॥ जाहु कालिह की जो यह काज । सुनि भूपतिगेस[illegible]हिबिधि ब्यूह पांडव दुन्दुभी बजवाय । चलेबढ़ि यहिओर
समाज ॥ बहुरि बैठि डेरन मधिजाय । लागे कहन पार्थ [illegible]धिबत शरनसों दिशिछाय ॥ दोहा ॥ इत आगेकरि भीषम
खाय ॥ बाल पनेमें रजभरि गात । जबहम जायकहततेहेता[illegible]हैं महारथिनसह संग । सबतो सुतहैं तदनुहैं द्रोण सपुत्रस-
तब भीषम मोहिं अङ्क लगाय । ऐसोकहत रहे दुलराय ॥[illegible]ग ॥ गजानीकसह तदनुहो नृपभगदत्त अमान । कृप कृत-
तो तातके रहैं तात । नहिं हम तात तिहारे तात ॥ इमि[illegible]रमा सुभटहैं तासुअनुग बलवान ॥ तबहो काम्बोजाधिपति
बिधि सब दिन सबयाम । लालत रहे भीष्म गुणग्राम ॥बे[illegible]दल सुदक्षिण बीर । तदनु बृहद्बल शकुनिअरु जयत्सेन रण-
ज्ञानी योगी ब्रतीपटु वृद्ध पितामह स्वच्छ । यहि बिधि पा[illegible]र ॥ तदनुसदल सब भूपहैं पृष्ठपाल उद्दण्ड । यहिबिधिरचि
सुब्रततेहि हम न बधबहे दच्छ ॥ बधैभीष्म मम सैनकै क[illegible]चिब्यूहभे भिरत उभयदलचण्ड ॥ सोरठा ॥ होतभयो तेहि
अरु कै मोहि । होइअजयकै जय न हम बधब भीष्मकहँजो[illegible]काल उभय ओरके भटनसों । उद्धयुद्ध विकराल यमपुर आति
अर्जुनके ये बैन सुनि क्षात्रसुधर्मसुनाय । कियेकृष्ण सन्न[illegible]र्दन करन ॥ चौपाई ॥ तिहिक्षण पांडव भट रणधीरा । अति
बहुप्रकार समुझाय ॥ सोरठा ॥ अर्जुनसों सिद्धान्त करिभी[illegible]कर्ष दुर्मद रणधीरा ॥ शर बर्षत बर ब्यूह बिदारत । बलसों
के बधनको । कियेरजनिअतिक्रान्त निज निज डेरनजायस[illegible]सुभट असंख्य सँहारत ॥ चले शिखण्डिहि आगे करिकै ।

इतिश्रीभीष्मपर्वणिनवमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥ भीषमके बधको प्रण धरिकै ॥ तिहिक्षण भीमार्जुनकेमारे । अ-

संजयउवाच ॥ दोहा ॥ दशयें दिनको भोर लहि उभयभूप[illegible]गणित भट यमलोक सिधारे ॥ सहदेव नकुल सात्वकिहि आ-
साजि । ब्यूहबिरचिभिरिलरतभे भेरिदुन्दुभीगाजि ॥ बैशम्पायन[illegible]दिक । जे उतके भट परम प्रमादिक ॥ तिनके शरघातनसों
बाच ॥ दोहा ॥ यहसुनिकैधृतराष्ट्रनृप कहोकहौकरिब्यक्त । कि[illegible]पीड़ित । ह्वै भागे इतके भट ब्रीड़ित ॥ सहि न सके शर घात
रचि ब्यूह लरेउमँगि ह्वै जयसों अनुरक्त ॥ संजयउवाच ॥ रा[illegible]सहितके । दशदिशि भगे सुभट सबइतके ॥ नृपधृतराष्ट्रहारि
भोर लखिकै रजनिके वहि मंत्रिके अनुसार । साजि सेना[illegible]निज सुनिकै । संजयसों बूझै इमि गुनिकै ॥ भीषम निजदलबि-
पांडव ब्यूह बिशद अपार ॥ किये आगेभट शिखण्डिहि ता[illegible]चलितदेखी । कहौकहा कीन्हें अवरेखी ॥ संजय कहो सुनो तेहि
तहँ दुहुंतीर । रहे रक्षक भीम अर्जुन अति प्रबल रणधीर[illegible]तनमें । भीषम गहि अतिशय रिस मनमें ॥ बाणवृष्टिकोदुरदिन
रहे तिनके पृष्ठरक्षक द्रौपदी के बार । अरु सुभट अभिम[illegible]कीन्हें । अरिको दल ब्याकुल करिदीन्हें ॥ अगणित गजहयभट
करता दुसह युद्ध बिहार ॥ सुभट सात्वकि चेकितानतरेशसौं[illegible]थकाटे । रुण्ड मुण्डसों रणमहिपाटे ॥ सब दिशिमें भीषमकहँ

तेहिक्षन। लखि सबहोतभये बिस्मितमन॥ मण्डलसदृश धनुष
करिसरस्यो । घनसम गर्जि बाण बन बरस्यो ॥ तहँ भीषमको
बिक्रमतकिकै। रहे सकल पाण्डव तकि जकिकै ॥ तोसुत जब
इमि बिक्रमचाहे। भीष्महि भांतिअनेकसराहे ॥ दोहा॥ तेहिक्षण
अर्जुन बरषि शर हति अगणित भट आसु। सुभट शिखण्डिहि
बेगसों सम्मुख कीन्हें तासु॥ हन्यो शिखण्डी भीष्मके उरमाधि
शायक तीन। उदासीन सम भीष्म तब बोले बाणीपीन॥ हनो
बाण वा मतिहनौ हम न मारि हैं तोहि। पूर्ब रच्यो बिधितोहि
जो सोई अजहूं जोहि॥ चौपाई॥ शरसम बचनभीष्मको सुनि
कै। कोपि शिखण्डी बोल्यो गुनिकै ॥ हम तुम्हार सबबिक्रम
जानैं। जानि आजुतुमसों रण ठानैं॥ बधब आजु हम तुमकहँ
आरय। यह सुनि करोबने जोकारय॥ इमिकहि पांचबाणअनि-
यारे। तकिभीषम के उरमाधि मारे॥ समय बिलोकि मुदित ह्वै
पारथ। कहे शिखण्डीसों गुणिस्वारथ॥ हम तुव अनुग रुकौं
मति नेकौ। पीड़ि न सकिहि तुम्हैं भट एकौ॥ कृप अरु द्रोण
आदि जो योधा। हम करिहैं सबको अवरोधा॥ तुम बढ़िबधौ
भीष्मकहँ भाई। लहौ अपूरब सुयश बड़ाई॥ भीष्महिं बधे
बिना भिरि जगमें। हम तुम सुनब हास्यपगपगमें॥ तातेकरौ
काजअब सोई। जाते जगमें हँसी न होई॥ इतने में इतकेभट
रूरे। भिरे करत बिक्रम बलपूरे॥ पारथभीम शिखंडिहि शर
सों। छाय दये करलाघव बरसों॥ तहँ अर्जुन अति बिक्रम
कीन्हें। क्षणमें तिन्हें पराजित कीन्हें॥ तेहिथर निज दल बिच-
लत देखी। भूपति दुर्योधन अतितेखी॥ कहेभीष्म सों लखौ
न नरदत। पांडवसदल सैनमम मरदत॥ दहै अग्निबनजिमि
गिरिपाहीं। तिमिते बिहरत ममदल माहीं॥ दोहा॥ जिमिगो-
पालक अति प्रबल वृषभनको समुदाय। जाय भजावतभीम
तिमि ममदल देत भजाय॥ ऐसे आपतकालमें तात तुम्हैं





बिनु और। ममत्राताको होयहे सुभटन के शिरमौर॥ जयकरी॥
यह सुनिकै भीषम करिगौर। कहे सुनो भूपति शिरमौर॥ तुम
सोंजो हमकीन्हों पूर्ब। परमप्रतिज्ञा गहिप्रणगूर्ब॥ अयुतरथी
मारबहम रोज। सो प्रति दिन कीन्हों कहिओज॥ तासों अ-
धिक बधेनिति जौन। हय गजभट तुम निरखे तौन॥ आजु
करबतिमि दुस्तरकर्म। पालिसत्यको जो शुभधर्म॥ बधबपां-
डवन कहँ कै तात। हम बधिजाब अचल यह बात॥ इमिकहि
कै भीषम बलवान। लागो तजन बज्रसम बान॥ तेहि क्षणनिज
बिक्रम दरशाय। बधेसहस्रन भट समुदाय॥ दोहा॥ पांडवजल
निधिके अनुग गेभट सरित महान। करष्यो तिनकोतेज जल
भीषम सूर समान॥ मार्यो अयुत गजस्थ अरु अयुतहयस्थ
सुधीर। लाख पदाती भट बध्यो तेहि क्षणभीषम बीर॥ इमि
भीष्महि निज दल बधत लखिपांडवभटसर्ब। बधको करि अनु-
मानभे भिरत उमँगिगहि गर्ब॥ सोरठा॥ एक भीष्म तेहिकाल
बहुपांडवभटसों लरत। देखिपरो क्षितिपाल भिरो घननसों मेरु
सम॥ सो लखि सबतो पुत्र महारथिन सह ऊटिकै। भीष्महि
रक्षणसुत्र करि रण बिरचे जूटिकै॥ चौपाई॥ माचो घोर युद्ध
तेहि क्षनमें। भरो बीररस सबके मनमें॥ तोमर शक्तिभल्ल
शररूरे। रणमंडलमें अबिरल पूरे॥ तहँभीषमअति गौरवली-
न्हें। अविचल अरिदल अरिदित कीन्हें॥ भीषमको बिक्रमल-
खिपारथ। कहे शिखंडी सों गुणिस्वारथ॥ भय मतिगहहु भी-
षमसों आरय। हम हनि बाण बधब जयकारय॥ यहसुनिभूप
सुवन भयत्यागी। चलो भीष्मपै रिससों पागी॥ सहदेवनकुल
द्रुपद रणधीरा। चेकितान अभिमन्यु सुबीरा॥ नृपबिराटअरु
भट सेनानी। सात्वकि आदि सुभट अभिमानी॥ जबसों चले
भीष्मपै तैसे। अगणित गरुड़ब्यालपै जैसे॥ सो लखिइतके
भट भय धारे। यहि बिधि भिरत भये रिस भारे॥ चेकितान

सों भिरो अमर्षण । चित्रसेन अरिदलको धर्षण ॥ धृष्टद्युम्नसों
भिरो प्रचारी । कृतबर्मा अनुपम रणचारी ॥ बहत सुबीरवृको
दूर तासों । भूरिश्रवा भिरो भरि भासों ॥ बीर बिकर्ण नकुल
सों भिरिकै ॥ कीन्हों घोरयुद्ध तहँ थिरिकै ॥ कृपाचार्य सहदे
हि आड़े । बाण असंख्य बज्रसम छांड़े ॥ दोहा ॥ भिरोघटोत्क
च असुर सों तो सुत दुर्मुख बीर । सात्वकि सों भिरिलरतभो
दुर्योधन रणधीर ॥ भिरत भयो अभिमन्यु सों भूप सुदक्षिण
दक्ष । आभिरो द्रुपद बिराट सों द्रोण तनय भटअक्ष ॥ भिरो
युधिष्ठिर भूप सों द्रोणाचारय हर्षि । बढ़ि अर्जुनसों भिरतभो
दुःशासन धनुकर्षि ॥ सोरठा ॥ बर्षत बिशिख सगर्ब चलेभीषम
जे सुभट । इतके योधा सर्ब इमि बढ़ि बढ़ि तिनसों भिरे ॥ स
घन शस्त्रगो पूरि जलप्रवाह सम नृप तहाँ । हय गजरथ म
भूरि याद सदृश तामधि लसे ॥ चौपाई ॥ उतसब भीष्महि मार
हारे । इतसब भीषमके रखवारे ॥ घोर युद्ध माचो तिनतिनसों
भयो समागम नृपजिन जिनसों ॥ तहँ दुःशासन भट रणचारी
कीन्हों अद्भुतबिक्रम भारी ॥ तिमि पार्थहि बाणनकी मेला
करि रोंक्यो जिमि सिंधुहि बेला ॥ तीनि बाण अतिशय अति
यारे । हांकि पार्थ केतन मधिमारे ॥ बीसबाण केशवके तनमें
मारत भयो मर्म गुणि मनमें ॥ कृष्णहि पीड़ित लखि रिस
गहिकै । शत शर हन्यो पार्थ थिरु कहिकै ॥ तेशर दुःशासनके
तनमें । कवच भेदि प्रविशे तेहिक्षनमें ॥ तीनि बाण दुःशासन
तबहीं । भ्रू मधि हन्योलख्यो सो सबहीं ॥ तेहि क्षण पारथ
अति उतकरषे । दुःशासन भटपर शर बरषे ॥ दुश्शासन अति
रिस सों मार्‌यो । तापै अगणित बाण प्रहार्‌यो ॥ तब पारथ
काटेधनु तासू । अरुरथ मारि तीनिशर आसू ॥ बहुशर हने
दुशासन बीरहि । तब दुःशासन गहिअति धीरहि ॥ गहि
धनुबानचढ़ाय सुधार्‌यो । बाण पचीस पार्थकहँमार्‌यो ॥ तब





पारथ बहु बाण चलाये । दुश्शासन सब काटि गिराये ॥ तब
पारथ अति चोखे शायक । मारेजे तरु भेदन लायक ॥ दोहा ॥
तिन बाणन सों ब्यथित ह्वै भागिभीष्म के तीर । जायके
मूर्छित ह्वै बहुरि चेतिलरतभो बीर ॥ फिरि चढ़िकै रथऔर
भटसमूह सहजाय । भिरतभयोफिरि पार्थसों महाक्रोधसों
धाय ॥ गुरुतोमर ॥ यहिभांति सबभट जूटिकै । भेलरत अनरथ
कटिकै ॥ दोर्दण्ड बिक्रम भूरिसों । कोदण्ड केक्रम मूरिसों ॥
दिशि छाय दीन्हों बानसों । अरु भल्लशक्ति अमान सों ॥ बहु
रन सों शरकाटिकै । हनिशस्त्र अगणित डाटिकै ॥ बध चाहि
चाहिप्रकर्षह्वै । तजिजीवनाश अधर्षह्वै ॥ वैभीष्मपै चलिजान
को । अतिकरो संकरठानको ॥ ये आड़िबेकी रीतिसों । अतिलरे
करि रतिजीतिसों ॥ धनुकाटिबाण प्रहारहीं । धनुआन गहिशर
मारहीं ॥ बहुबाण मारिप्रचारहीं । डटि डारि डरडर डारहीं ॥
भेदिशरन सो नाहिं मानहीं । बढ़िचलैं बधिबे आनहीं ॥ अरि
भुग अगणित मारिकै । करि ब्यथित इन्दहि टारिकै ॥ बहु
सुभट उतके जोरसों । तकि चलहिं भीष्महि तोरसों ॥ तब
सुभट इतके जूटिकै । त्यहिआड़ि राखै टूटिकै ॥ जिमि नावप-
रिजल भौंरमें । रुकिरहै ते तेहि तौरमें ॥ बहु ब्यथितह्वै टरि
आयकै । फिरि सँभरि जूटैं आयकै ॥ जलफेर लहि जेहि
भावसों । दुरि जुरैं नौका बायुसों ॥ दोहा ॥ होत भयो तेहिठौर
नृप यहि प्रकारको युद्ध । दुसह पराक्रम करतभे सिगरे योधा
क्रुद्ध ॥ तेहि क्षण द्रोणाचार्य लखि बहु असगुन बिकराल ।
अश्वत्थामा सों कहे गुणि अनरथ की माल ॥ यहिदिन में अति
होत हैं अगणित असगुन घोर । होन चहत अनरथकछू
मरिहैं सुभट अथोर ॥ भीषमके बधकोकियो प्रण जेहिदिनको
पार्थ । सोदिन आज लखातहै चाहत होन यथार्थ ॥ सोरठा ॥
पारथ गहि अतिगर्ब करिआगे द्रुपदात्महि । तेसँग योधासर्व

जान चहत हैं भीष्मपहँ ॥ भीष्म शिखंडिहि जोहि युद्धत्याग
करिहैं अवशि । जानि परत यह मोहि बधिहि भीष्मकहँ पार्थ
तब ॥ चौपाई ॥ ससयन धर्म नृपति सों भिरिकै । हमइत लरब
चक्रसम फिरिकै ॥ तुम अब निकट भीष्मके जाहू । रक्षहु
भीष्महि सहित उछाहू ॥ रणचढ़ि मरब श्रेष्ठ कै जीतब । हारि
जियबलघुगरिमा रीतब ॥ अति चिरकाल पुत्रको जीवन । जग
महँको चाहतहै जीवन ॥ स्वामि काज हित ताहि मरणको
कहियतु शाश्वत धर्म्म धरणको ॥ हाहाकार मचो सबथलमें
माचो तुमुल युद्धयहि पलमें ॥ मरिबेको निश्चय ध्रुव करिकै
करत युद्ध सबभट प्रण करिकै ॥ भीषम के बध रक्षणहेतू
बँध्यो उभय दिशिसों शरसेतू ॥ भीष्म अमृतके हितसब तैसे
लरतलरे दितिसुत सुर जैसे ॥ आमिष हेतु बाज युगभिरिकै
लरत लरत तिमि युगदलथिरिकै ॥ ऐसेमें करि बिक्रम चावन
रक्षहु जाय भीष्मकहँ भावन ॥ यह सुनि अश्वत्थामा परखत
चलो भीष्मके ढिग शरबरषत ॥ इतनेमें दशभट रणचारी
भिरे भीमसों प्रबलबिचारी ॥ कृपभगदत्त शल्यकृतबर्मा । चित्र
सेनदुर्मर्षणशर्मा ॥ सुभट बिन्द अनुबिन्द नरेशा । बीर जयद्रथ
अनुपम भेशा ॥ अरु तो सुत विकर्ण धनुधारी । येदशबीर बि
दित भटभारी ॥ दोहा ॥ येदशबीर महारथी सहित सुभट समुदाय
भीमसेनके सुरथपहँ देतभये शरछाय ॥ नवनवशर कृपशल्यके
कृतबर्माके तीनि । लगिबेधतभे भीमको देह अनूपम पीनि
चित्रसेन भगदत्त अरु भट बिकर्ण बलवान । भीमसेन कहँ
घेरिकै मारे दशदशबान ॥ हन्यो जयद्रथ तीनिशर दुर्मर्षण
शरबीश । हनेबिंद अनुबिंद नृप पांच पांच शरईश ॥ सोरठा ॥
बहुशर तिनकेकाटि भीमसेन अतिक्रोधकरि । गरजि सिंह सम
डाटि हनत भयो तिनकहँ बिशिख ॥ चौपाई ॥ आठबाण कृतब
मैंहि मारे । शल्यहि सात बाण अनियारे ॥ कृपको धनुषकाटि





धनुधारी । हने सातशर अरि रणचारी ॥ तीनतीन शर तीक्षण
दीन्हें । बिन्द और अनुबिन्दहि दीन्हें ॥ दुर्मर्षण पहँ बीस
प्रहारे । चित्रसेन परशर शर डारे ॥ दशशरहने बिकर्ण सुयोध-
हि । आठ जयद्रथ नृपति सक्रोधहि ॥ कृप तबगहि सुआन
कोदण्डहि । दशशर मारे भीम प्रचण्डहि ॥ तहां भीम अति
रिससों सनिकै । कृपाचार्य्य कहँ बहुशर हनिकै ॥ तुरग जयद्रथ
नृप के रथके । बधत भयो जे गरुवे गथके ॥ फिरि हनि एक
बाण मजबूतहि । दयो गिराय सचिव सम सूतहि ॥ तब रथ
त्यागि जयद्रथ आरय । बहुशरहन्यो सुजय के कारय ॥ सोल-
हिभीमबीर अतिरोखे । काटिदयो धनुहनि शरचोखे ॥ चित्र-
सेन के रथपै तबहीं । गयो भूपभो बिनु धनुजबहीं ॥ अति
बिक्रम तेहिदिनके रणमें । कीन्हो भीमसेन तेहिक्षणमें ॥ काटि
काटि सबके अगणित शर । सब कहँ हनि बेधत भो तेहि थर ॥
तेहि क्षण शल्य आदि सबयोधा । मुरिफिरि जुरि कीन्हें अव-
रोधा ॥ अब रहु खरोभागु मति कहिकहि । बरषे शर असंख्य
रिस गहिगहि ॥ दोहा ॥ तहँ सबके तनमें हने पांच पांच शर
भीम । सत्तरि मारे शल्यकहँ जे अति तीक्षण भीम ॥ पुरुषसिंह
रि सिंहसम गरजि बाणदश मारि । सबपै डारेबाणबहु सब
बाणन बारि ॥ शल्य शल्य समबाण नव तेहि हनिभयो बि-
शल्य । मारि बिशोकहि एकशर कियो प्रगट कौशल्य ॥ सोरठा ॥
भीमसेन तेहिकाल सेन समान परो निरखि । इतकेभट खग
पाल लसे कालबश बिवश सम ॥ ते बहुभट बहुबार हने भी-
मकहँ बाणबहु । बहुबिधि बहुशर धार भीम हने तिन बहुन
कहँ ॥ तोमर ॥ तिहि समय सब क्षितिपाल । शर तीनि तीनि
बिशाल ॥ भट भीमसेनहि मारि । भे मुदित धनु टंकारि ॥ तब
भीमबीर प्रचारि । शर तीनि शल्यहि मारि ॥ भगदत्त कहँशत
बान । मोहनत जानि अमान ॥ कृतबर्मको धनुकाटि । भो बाण

मारत डाटि ॥ सो भूपगहि धनुऔर । शरहनत भो भूठौर
तब भीमतिन केगात । मधि किये बहुशर पात ॥ तब तजे
भट सर्ब । बहु अस्त्र गहिगहि गर्ब ॥ सब काटि सो रणधीर
भोहनत बहु शरबीरः॥ बहुभटनसों तेहि याम । लखि घि
भीमहिआम ॥ भट प्रबल फाल्गुणकोपि । शर पात प्रलय
रोपि ॥ जेसुभट भीमहि घेरि । हेलरत तिनकहँ हेरि ॥ ति
सबन पै शरजाल । हनिभयो कढ़त बेहाल ॥ अति प्रबल
हढ़घाय । तेबीर दोऊभाय ॥ सह बिशद बज्र सुचक्र । स
शक्र अरुउपशक्र ॥ भटदितिज केमनमोरि । जयस्वर्ग लीन
छोरि ॥ दोहा ॥ भीमार्जुन को निरखि तब अति बिक्रम ति
याम । कह्यो सुशर्म्मा बीरसों दुर्योधन ह्वै क्षाम ॥ अमर अम
पति सहश ये डारि अस्त्र गिरि भूरि । भीष्म अमृतके हेतद
उदधि मथतु बलपूरि ॥ ताते तुम सहसैन बढ़ि बीरभाव
जूटि । भीमार्जुनको बध करहु परम अगम जय ऊटि ॥सोर
दुर्योधनको बैन समुझि सुशर्मा सैनसह । बढ़ि बुधि बिक्रम
भिरो आर्जुन भीमसों ॥ चौपाई ॥ तिहिक्षण पाण्डुतनय दो
भाई । भूपति कीन्हों कठिन लराई ॥ सबके बाण हजारन बे
सबके गात शरन सों भेदे ॥ बहु शरकाटि पाण्डवन केरे ।
बहुशर तिनके तनमेरे ॥ भीमपार्थ जग जीतन लायक । ति
सबदिशनिअनगिने शायक ॥ बिदित एकादश भट जे इतके
करता अबिरलनद शोणित के ॥ क्षणमें तिनकहँ मोहित की
कै । बधे सहस्रन भटमुद धरिकै ॥ गज हय धनुध्वज अगणि
काटे । भीषम तारण महिमधि पाटे ॥ कालसहश तहँ पार्थ
ज्वैकै । भगी फौज अतिब्याकुल ह्वैकै ॥ भीमार्जुन को बिक्र
देखी । दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ नहिं तहँ बढ़ि तिनसों मु
जोरे । खिसिलि गये भीषम के धोरे ॥ सुभट एकादश तत
थिरिकै । लरे भीम अर्जुन सों भिरिकै ॥ तहां शल्य बिक्र





बिस्तारो । भल्लपार्थके उरमधिमारो ॥ सोसहि पार्थकोपिशर
चोखो । काटे तासु धनुष अतिनोखो ॥ तब गहि आन धनुष
नृपचायक । हने पार्थकहँ तीनि सुशायक ॥ पांच बाण केशव
तनमें । नवशर हने भीमकहँ रनमें ॥ तेहिक्षण भीमार्जुन बल
धारे । शर झरि प्रलय पयोधिपसारे ॥ दोहा ॥ लहि शासन तो
नय को तेहिक्षण गे तेहि देश । शर बर्षत भटद्रोण अरु ज-
यत्सेन मगधेश ॥ जयत्सेन तहँ भीम के बहुमारे बसुबान । तेहि
द्रह शर हनिबध्यो सूतहि भीम अमान ॥ बिना सूतसब ता-
हय रथ लैभागेतासु । लखि पैंसठिशर भीमकहँ द्रोण हने
व आसु ॥ सोरठा ॥ तबहीं भीम सुबीर हन्यो द्रोणके गातमधि ।
साठि तीक्षण तीर हर्षि गर्वसों कराषिधनु ॥ अर्जुन बहुशर
मारि बेधि सुशर्म्मादिकनकहँ । अनुपमधनु टंकारि सदल चलो
बढ़िभीष्मपहँ ॥ चौपाई ॥ सुभटशिखण्डहि आगेकरिकै । भीषमके
बधको प्रणधरिकै ॥ पाण्डवसकल सहित सबयोधा । चलेनि-
शितभट अवरोधा ॥ धृष्टद्युम्नकोशासनलहिकै । बढ़ोचतुर्बिधि
दल बिधिगहिकै ॥ भीष्म आदि इतकेभटरूरे । तिनसों भिरे
तपसोंपूरे ॥ यहमुनिकै धृतराष्ट्रउवाचे । कहोलरे किमिते रिस
राचे ॥ सुनि संजयबोले सुनुराजा । लरे यथाभट सहितसमा-
जा ॥ भीष्मार्जुन को दुसह समागम । भयोअजय जयलक्ष्यको
आगम ॥ बाहनसहस सुभट रथघोरे । बधे भीष्म अगणित
यतोरे ॥ नृप तेहिक्षण में भीषमज्ञानी । गहि निर्वेद दशाअ-
भिमानी ॥ चाहिस्वबध करुणासों सानी । बोले धर्मभूपसों बा-
नी ॥ हे सर्बज्ञ युधिष्ठिरआरय । नितिजन बधको गुणि निज
कारय ॥ मोकहँ भइ गलानि अबताते । करौप्रयत्नबधो मोहिं
जाते ॥ जो हे तात मोर हितुचाहो । तौ बधिमोहिं बचन मम
निबाहो ॥ यह सुधिसब पांडवमुद लहिकै । बढ़तभये जैश्रियपति
कहिकै ॥ चले सुभट भीषम पै तैसे । बहु हरिह्द्द द्विरद पहँ

जैसे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न भाषत चल्यो चलोचलो रणधीर। मारि
धृत भीष्मकहँ आजुहठि पार्थ शिखंडी बीर ॥ तेहिक्षण तासु
सर्बअरु द्रोणादिक भटसर्ब । घेरिभीष्म कहँ बढ़िभिरे तिन
गहि अति गर्ब ॥ पांचालन सुभटन सहित पारथ बर्षतशर
आगेराखि शिखंडिकहँ चलो भीष्म हे तत्र ॥ सोरठा ॥ जे
के रणधीर तेहि क्षणबढ़ि आड़ेपरे । तिनसों उतके बीर
प्रचारि प्रचारिइमि ॥ चौपाई ॥ सात्वकि भिरो द्रोण के सुतसों
धृष्टकेतु पौरवबल युतसों ॥ भट अभिमन्यु धनुष टंकारी। दु
र्योधनसों भिरोप्रचारी ॥ भिरोभीम भगदत्त नृपतिसों। गज
नीक मर्दत बलअतिसों ॥ सहित बन्धुसह सैन सुभेशा। भि
द्रोणसों द्रुपद नरेशा ॥ भिरो बृहद्बल नृपके छोहन। पार्थतन
सों लै दल गोहन ॥ पार्थ शिखण्डी सों बलभारे। भिरे नृप
सह सब सुत थारे ॥ यहिबिधिसकल सुभट भिरिभिरिकै। क
ठिन युद्ध कीन्हों थिरि थिरिकै ॥ घोर युद्ध माचो तेहि पल म
गिरे असंख्य सुभट दुहुँदलमें ॥ शब्द अघात मढ़ो महिदि
लों। कियेयुद्धसब भिरिपुर शिवलों ॥ दुर्योधनअभिमन्यु मह
सै। कीन्हें घोरयुद्ध तजित्रासै ॥ अगणितबाण काटिकैताके
नवशरहने भूप बरभाके ॥ तब अभिमन्यु सुशक्तिचलाई। नृ
तेहि शरसों काटि गिराई ॥ पार्थतनय तब नृपके उरमें। तेर
बाण हने अति तुरमें ॥ इमितेहि भूप भूपकहँसोऊ। हनिअति
बिक्रमकीन्हों दोऊ ॥ यहिप्रकार सिगरे भटराजा। कीन्हींमहा
युद्ध सहसाजा ॥ दोहा ॥ काटि काटिधनुध्वजलरे डाटिडाटिरिस
पूरि। बारि बारिअगणित बिशिख मारिमारिशरभूरि ॥ सुभ
भूप शिशुपालको धृष्टकेतु बलवान । अरुपौरव ये भट तहँ
किये कठिन घमसान ॥ टारि टारि डरमरण को डारि डारिक
बाण। छेदि छेदि शरशर हने भेदि भेदि तनुत्राण ॥ हठ धा
धरि करि करि बिधनु बाधि बांधितुरग समस्त । रिस सों भी





मारि लरतभे गहिगहि खंग प्रशस्त ॥ सोरठा ॥ जूटि जूटिस-
न्धान उठि उठि फिरि फिरिचक्रसम। टूटि टूटि बलवान छूटि
छूटि जुटिछुटिजुटे ॥ तहँ लरि लरि यहिभांतिह्वै अचेतगिरि
गिरिलसे। लहि लहि अनुपम कांति जिमि दहि दहि थुगतरु
लसे ॥ जयत्सेन तबजाय लयोपौरवहि सुरथपर। उतसहदेव
धाय चेदिपतिहि रथपैलयो ॥ महिधरी ॥ तिहिसमय लहि नर-
पतिहि सों अभिमन्यु ह्वै गरबित खनो। नृप कोशलेश बृह-
द्बलहि हनिबाण कीन्हों अनमनो ॥ शरपांच हनि फिरि बीस
शर नृपबृहद्बल तेहि हनतभो। अभिमन्यु तेहिशर आठहनि
धव काटिधनुशर हनतभो ॥ गहि आनधनु नृप बृहद्बल अभि-
मन्यु कहँबहु शरहने। अभिमन्यु ताकहँ हन अगणित बाण
अति अनुपम बने ॥ इमि उभयभटते बिशद बिक्रम बितरि
अति संगर करे। सब सुभट यहि बिधि करे अतिशय युद्धअ-
ति अमरषभरे ॥ दोहा ॥ जिन जिनसों भिरणीभई तेतेभट तेहि
ठौर। कीन्हें अद्भुत युद्धतहँ बूझिलेहु करिगौर ॥ अर्जुन अग-
णित भट मरदि प्रतिद्वन्दिन बिचलाय। सहित शिखण्डीभी-
षमढिग आयो दलहि दबाय ॥ तेहिक्षणमें भगदत्त नृप गजा-
रूढ़ भटउद्ध । जायशीघ्र आड़त भयो त्यागिभीमसों युद्ध ॥
सोरठा ॥ दयो शरनसों छाय प्राग्ज्योतिष पति पार्थकहँ। हन्यो
पार्थ दृढ़घाय तेहि बहुशर सबकाटिशर ॥ चौपाई ॥ तहँ भगदत्त
भूप भिदि लहिदुख। रहिनहिंसको पार्थके सन्मुख ॥ गजचला-
यजियबे कि रीतिसों। जाय भिरतभो द्रुपद नृपतिसों ॥ पार्थ
शिखण्डी सों तब सादर। कहो चलौभीषम पहँ सादर ॥ तेहि
क्षणमें इतके बहुयोधा। भिरे पार्थ सों करिअवरोधा ॥ माचो
घोरयुद्ध तहँ राजा। कटे असंख्यन भट सहसाजा ॥ भीषम के
बध रक्षण लागी। लसे सकलभट संशयत्यागी ॥ युद्ध युवाभट
खेलनहारे। प्रणसमभीषम सुख दुखहारे ॥ तेहि क्षण भीषम

गौरवलीन्हें । भूप सुनहु अति बिक्रम कीन्हें ॥ चौदह सहस्र
सुभट बधिडारे । अगणित गजहय सुरथ बिदारे ॥ तजि पा
एडवन भूपतेहि पलमें । तजे धीरसब भट वहिदलमें ॥ अस
नहिं एकरह्यो उतकोई । उबरत गुणै आपुकहँ जोई ॥ नृ
तेहि समय शिखण्डीबिनुडर । हनेभीष्म कहँ तीक्षणदशशर
तब भीषम तिहि लखोतिरीछे । युवति बिचारिन बधिबोईछे
कह्यो पार्थ नृप सुत सों तेहि क्षण । अब बढ़ि बधौभीष्म कहँ
गहि पण ॥ नहिं तुम बिनु यहि दलमें चायक । है कोउ भीष्म
हि बधिबे लायक ॥ यह सुनि सुभटशिखंडी बढ़ि कै । गरजो
भीष्महि शर सों मढ़िकै ॥ दोहा ॥ तृणसमान तिन शरनकहँ
जानिभीष्म अनखाय । तोमर शर भल्लान सों दयो पार्थकहँ
आय ॥ मण्डल सम कोदण्ड करि बरषि बज्र समबान । अग
णित हय गज सुभट बधि पूरो प्रलय महान ॥ तिहि क्षणपा
ण्डव सैन सह धरि धीरज करिकोप । बढ़ि भीषम सों भिरत
भे गहिबधिबे कीचोप ॥ सोरठा ॥ परदल मधितेहि काल लसो
भीष्म अस्त्रन सहित । जिमिलहि कै तरु जाल ज्वलित ज्व
लिन ज्वालन सहित ॥ बसुकला ॥ तहां तिहि याम । बली भट
आम ॥ दुःशासन कर्षि । सुआयुध बर्षि ॥ असंख्य रथीन
कियेरथहीन ॥ अनेकरथान । अमानवबान ॥ किये तहँगाजि
हतेबहु बाजि ॥ लख्योतेहिठौर । मनोयमऔर ॥ धनंजयदेखि
भिरो तबतेखि ॥ उभयभटउद्ध । किये अतियुद्ध ॥ दोहा ॥ लरि
मुहूर्त में फाल्गुण भूपजीति तहँताहि । सहित शिखण्डीभटन
सह चलो भीष्मपहँ चाहि ॥ भीषमके भुजबलबिशद के पनाह
में आय । रहि बढ़ि मुरि रहि बढ़ि बहुरि सहै दुशासन घाय ॥
सोरठा ॥ तेहि क्षण भीषमपार्थ भट समूहसों लरत हे । द्रुपदपुत्र
गुणिस्वार्थ बर्षत होशर भीष्मपहँ ॥ चौपाई ॥ भीषमसहै तासु
शर कैसे । मैगलमत्त बारि भरिजैसे ॥ इतके सब सुभटन सों





शासन । कुरुपति कहे शोचयुत करिमन ॥ बढ़ि बढ़ि लरौपार्थ
सों भिरिकै । सादर बधौ शिखंडिहि थिरिकै ॥ सोसुनि सबभट
भय त्यागी । भिरे पार्थ सों नृपहित लागी ॥ तहँ इतकेसुभ-
टनको रक्षण । भीष्मकरत हे हनिपर पक्षण ॥ अंग बंगकालिंग
रथ के । कोकण कैकयआदि नगरके ॥ सकल दिशनके नृप
मदाने । भिरेपार्थ सों अमरष साने ॥ दिब्य शरन सों पारथ
रणमें । सदल तिन्हें जीतेतेहि रणमें ॥ अगणितहय गजभट
बिडारे । अगणित भगेन साथसिहारे ॥ तिहि क्षणपारथसु-
ट अमाना । सधनुसरथकै चक्रसमाना ॥ नृपसमूहबाधिसहित
समाजा । सबथर पूरिबाण सुनि राजा ॥ दुश्शासनकहँ हनि
सुजाना । तुरग सारथिहि बध्यो अमाना ॥ नृप बिबिंशतिहि
नि बहुशायक । कीन्हों बिरथ भटनको नायक ॥ हनि बहु
सायक शल्य नरेशहि । अरुबिकर्ण कृप सुभट सुभेशहि ॥की-
न्ह बिरथ मारिसब सूतन । अरु सुदेशके हय मजबूतन ॥ कै
बिरथ भागिते योधा । गये दूरकढ़ि तजिअवरोधा ॥ दोहा ॥
महारथिन कहँ जीति तहँ गयेदिवस युगयाम । तरुण तरणि
सम दुसहभो पारथ सुभट ललाम ॥ शर किरणन सों करषिभट
जीवनको रसधीर । बर्षावतभो रुधिरजल रबिसमपारथबीर ॥
इतिभीष्मपर्बणिदशमदिनयुद्धयुगयामसमाप्तिर्नामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥
रोला ॥ उभय दिशिके भटनको तहँ लख्यो करतब जौन ।
सो कैसो स्वप्नअब नहिं जात भाषो तौन ॥ चित्रसेन बिकर्ण
अरु शल्य तो सुतबीर । बिरथ ह्वै दुरिआय फिरि चढ़ि
रथ पै रणधीर ॥ धनुष कर्षन बाण बर्षत जायफिरि तेहिठौर ।
मर्दन पांडवीदल गहे अनुपम डौर ॥ ब्यथित ह्वै तेहि
समय परदल लसतभो यहि भाव । लसै बरधित सरितमें जि-
मि बायुबश परिनाव ॥ बीर भीषम बिरचि अबिरलसेततजि
शर भूरि । रुण्ड करपग मुण्ड सों रणभूमि दीन्हीं पूरि ॥ पार्थ

आदिक सुभटउतके बर्षि आयुध सर्ब । बधे अगणित सुभ
गज हय जूहते तेहि पर्व ॥ सुभट सिगरे दुहूंदलके जीवित
शा बारि । घोर संगर किये लैलै नाम टेरिप्रचारि ॥ भीष्मपै
चले इतशर आड़िबे के हेत । डरैंनाहिं नाहिं टरैंमारैं मरैं र
शरसेत ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण भीषम रामकी दई शस्त्र बिधिसों
ह्वै ताड़ित शरपातसों प्रगट कियो गहिगर्ब ॥ पांच हजा
रथीबधे बधेसहस्र नरेश । हय पैदर चौदह सहस सहस मतं
सुभेश ॥ मारे सात महारथी अरु बिराटको भाय । शतानी
तेहि बधतभो मारिबाण दृढ़घाय ॥ जेनृप पारथके अनुग ब
आये सहसैन । तिन्हैं मारि यमपुर दयो भीष्मबीर जगजैन
सोरठा ॥ इमि हति सुभट समूह चमूमध्य बिलसत भयो । त
उत के भटजूह लखि न सके दिशि भीष्मकी ॥ चौपाई ॥ भी
को इमि बिक्रम देखी । कहे पार्थसों प्रभु अवरेखी ॥ तो
मरदि भीष्म रणधीरा । लसत सैनमधि अनुपम बीरा ॥ ब
ताहि अति बिक्रम करिकै । तौ जय लहौ सिन्धुरण तरिकै
तुम बिनु आन न सुभट अमाना । सहि जो सकै भीष्मकर
ना ॥ यहसुनि पार्थ मारि शर चीन्हें । सरथभीष्मकहँ गोपि
कीन्हें ॥ तहँभीषम सिगरे शरतासू । काटि दये बाणनसों आ
तिहि क्षण धृष्टकेतु धनुधारी । सहदेव नकुल भीम रणचारी
चेकितानअरु द्रुपद नरेशा । धृष्टद्युम्न सात्वकि भट वेशा
पांचभायकेकयपति राजा । अरु बिराट नृप सहित समाजा
कुन्तिभोज हैडम्ब सोहाये । द्रौपदेय सौभद्र गनाये ॥ सु
सुशर्मादिक तहँ लरिकै । भीष्म बाण सागरमें परिकै ॥ बू
हे ब्याकुलता गहिकै । तरे पार्थ बल बोहित लहिकै ॥ धरि
रज जय सों अनुरागे । ह्वै सरोष रण बिचरन लागे ॥ पा
सों रक्षित भयहीना । रथी शिखंडी सुभट नवीना ॥ बिगतभी
बिक्रमसों सरस्यो । शर समूह भीषमपै बरस्यो ॥ सुभटनसहि





र्थतेहि क्षनमें । चलो भीष्मपहँ गर्बित मनमें ॥ दोहा ॥ चेकि-
तान सात्वकि द्रुपद धृष्टद्युम्न सहदेव । चलेभीष्मपहँ हनत
र नकुल बिराट सुभेव ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु ये बर्षत शायकै
रि । भिरे भीष्मसों प्रबलभट महा क्रोधसों पूरि ॥ इनसबके
गणित बिशिख काटि भीष्मरणधीर । सहि असंख्य शर शर
षि बधे अनगिने बीर ॥ सोरठा ॥ होतभयो तेहिकाल उभय ओर
भटन सों । कठिन युद्ध बिकराल पृथक्पृथक्को कहिसकै ॥
भुजंगप्रयात ॥ धनंजय सुनो भूप तेहां सुयोधा । गुणीअस्त्रओ
बमें जो सुबोधा ॥ मढ़ो भूरि नीहारको भानु जैसे । इतै के
योधानको टारितैसे ॥ बली दीहकै कै शिखण्डीहि आगे । च-
भीष्मपै छोह औ मोह त्यागे ॥ अनेकै सुयोधान के बाण
ड़ै । घनेबाण सों भीष्मको गातमाड़ै ॥ दोहा ॥ तिहिक्षण से-
पति प्रभृत उतके योधासर्ब । अगणित आयुध भीष्म पहँ
रेगहि गहिगर्ब ॥ तिनसों मर्दित ह्वै सुभट भीष्मभूप तेहि
ल । नेकु जनायो नहिं ब्यथा भयोकोपि बिकराल ॥ चौपाई ॥
हि क्षण भीषमधीर धुरीना । रोप्यो प्रलयकाल कालीना ॥
प ज्वलन शर ज्वाल महाना । पर चतुरंगी जगतसमाना ॥
व्य अस्त्र मारुत समघोरा । करि दीन्हों ब्यापित चहुँओरा ॥
धिर वृष्टि तेहि दिनकी बर्षा । सदृशभई अतिशय उतकर्षा ॥
ण परदल मधि क्षणनिज दलमें । क्षणदलसे भीष्मतेहिपल
॥ धुनि धनु नेमिअस्त्र बर्मनकी । महत गरजबारिद शर्मन
॥ यहि बिधि प्रलय काल समकरिकै । बध्यो असंख्यनसु-
ट बिचरिकै ॥ भीम धनंजय द्रुपद बिराटहि । सात्वकि धृष्ट-
म्न भटडाटहि ॥ हनि अगणित शर बेधि प्रचारे । ते अग-
त शर शर सों वारे ॥ तेषट भट दशदश शर चीन्हों । मारि
ष्मकहँ बेधित कीन्हों ॥ भीष्मको तन शर सों मढ़िकै । शर
रि कियो शिखण्डी बढ़िकै ॥ हनि क्षुरप्रशरपारथ तबहीं । का-

ट्यो धनुष लख्यो सो सबहीं ॥ सो साहिसके न शल कृतवर्मा
द्रोण जयद्रथ शल्य सुपर्मा ॥ भूरिश्रवा कठिन रणचारी। अ
भगदत्त बिदित धनुधारी ॥ दिव्यशरनकी वर्षा करि करि
भिरे पार्थसों अति रिस धरिधरि ॥ मारुमारुधरु मारु पुकारत
गे परदलमधि अतिभय भारत ॥ दोहा ॥ सो लखि सात्यकि
भीम अरु द्रुपद बिराटनरेश । अरु अभिमन्यु घटोत्कचधृष्ट
द्युम्न शय बेश ॥ द्रोणादिक भटसातसों भिरिये सातौ बीर
घोर युद्ध कीन्हों तहां सबदुर्मद रणधीर ॥ रक्षित पारथसुम
सों अभय शिखण्डीतत्र । अधनु भीष्मपहँ बराषेशर ध्वजका
ट्यो हनि पत्र ॥ गहोभीष्म तब और धनु सोऊकाटो पार्थ। ग
हत मात्रइमि बहुत धनु काटे गुणिकै स्वार्थ ॥ सोरठा ॥ सुनु
भूप तेहिकाल भीषम अतिशय क्रोधकरि । मारीशक्तिबिशाल
तेहिकाट्यो शरपांच हनि ॥ महिबर्री ॥ तहँकटे बहुनिजधनुषपा
बल शक्तिब्यर्थ निहारिकै । इमिभये मनमें गुणतभीषम शो
अति बिस्तारिकै ॥ हमएक धनु सों पांडवन कहँ बधन शक्ति
अमान हैं। परमैं वै किमि जासुरक्षक कृष्णप्रभु भगवानहैं
यहि हेतु वे सब अबधहैं अरु द्रुपद सुत तिय भाव सों। नहिं
लहब उनसों जीति नाहक लहब दुखशर घावसों ॥ पितुदय
जो बरदान मोहिं स्वच्छन्द मरण सुतोषिकै। अबआजुआय
समय सो अबमरें हम मन मोषिकै ॥ यह समुझि आशयभी
ष्म की गगनस्थ बसुऋषि कहतभे । तुम सुने सोमत श्रेष्ठय
सुनि भीष्म आनँद गहतभे ॥ यह सुनो भीषम सुबुधिकै ह
सुनो सुमुनि प्रभाव सों । तब बजी दुन्दुभि गगनमें सुरभ
सुमन सुचावसों ॥ तेहि समय भीषम ज्ञानबर तहँ भये मृदु
रिस त्यागिकै । लखि सह शिखण्डी पार्थ भे अति प्रबलरिस
सों पागिकै ॥ बहुशर शिखण्डी हने भीषम तिन्हैं मृदु त
समगने । तब पार्थधनु गांडीवकहँ टंकारि बहुशायक हने॥





दोहा ॥ तिहि क्षण बहुभट बज्रसम हनेअनगिने बान । तिनपै
शर बर्षत भयो भीषमबीर अमान ॥ द्रुपद तनयके शरनसों
भीष्महिं अब्यथित देखि । बज्रसदृश अगणित बिशिख हने ध-
नंजय तेखि ॥ फिरि काटत भो भीष्म को धनु क्षुरप्र शरमारि ।
काटि धनुष अगणित बिशिख मारेमरण बिचारि ॥ सोरठा ॥ तब
भीषम धनुआन गहितिहि मारे तीनिशर । हनि क्षुरप्र बरबान
पारथकाटो सोउधनु ॥ चौपाई ॥ इमि जेजेधनु भीषम धारे ।तेते
पारथ द्वैकरिडारे ॥ काटिकाटि धनु अगणितबाना । हन्योभीष्म
कहँपार्थअमाना ॥अतिबेधितभीषमतेहिक्षनमें । कहोदुशासन
सों गुणि मनमें ॥ अमर असुरकहँ जीतनलायक । पारथ हनत
बज्रसम शायक ॥ बाणसहस्रनसो ममगातहि । बेधत उपल-
पात जिमि पातहि ॥ पारथहने बाणतहँ जिमिजिमि । कहतभये
भीषमइमि तिमितिमि ॥ पारथ केयेशर अनियारे । हैं नशिखण्डी
भटके मारे ॥ बज्र सारसम गरुतापूरे । ममगातहि बेधतजेरूरे ॥
तेयेशर अर्जुनके डारे । हैं नशिखण्डी भट के मारे ॥ जेमम गा-
तहि बेधत तैसे । बरमाधमाहिं सेंगवाजैसे ॥ अतितीक्षण अर्जु-
नके येहैं । नाहिं नाहिंबाण शिखण्डी केहैं ॥ कालदण्ड समला-
गत जेते । नाहिं शिखंडिके अर्जुनके ते ॥ रुद्र शूलसम जेशर
चोखे। अरु कोपित फणिपति समजोखे ॥ अतिअबिरल मम
तनमेंलागत । जिनके लागत धीरज भागत ॥ तेयेशर अर्जुन
के सिगरे । नाहिं शिखंडि के लागतनिगरे ॥ जेयेलागि ममजी-
वहि करषत । तेयेबाण धनंजयबरषत ॥ दोहा ॥ आयुध सिगरे
भटनके तिमिनाहिं ब्यथवत तात । जिमि पारथके बज्रसम बर
बाणनकेघात ॥ इमिकहि भीषमपार्थकहँ मारीशक्तिकराल ।
तीनि बाणसों पार्थतेहि काटिदयो क्षितिपाल ॥ तिहिक्षण इत
के भटनसों उतके सबभट जूटि । लरतरहे नाहिं भीष्मपहँ जाय
सक्यो कोउछूटि ॥ सोरठा ॥ तबतहँ भीषम कोपि खड्ग चर्मबर

गहतभे । मनमें ध्रुवप्रणरोपि मरिबेको जयलहनको ॥ लखिहीनि
अगणित बाण बिदित धनुर्द्धर पार्थभट । काटिचर्म तनुत्राण
शतधा कीन्हो निमिष में ॥ चौपाई ॥ नृपति युधिष्ठिर यहगति
देखी । अति प्रसन्नता सों हियभेखी ॥ कहोभटनसों अनतन
थिरहू । सादर बाढ़ि भीषमसों भिरहू ॥ सोसुनिकै सबभट धनु
करषत । चले भीष्मपर आयुधबरषत ॥ जिमि सुरपति कोशा
सन लहिकै । ब्रजपैचले मेघमुद गहिकै ॥ तिमि इतके स
योधा फिरिफिरि । सिमिटि लरेफिरितिनसों भिरिभिरि ॥ घो
युद्धमाचो तेहिथलमें । कटी असंख्य बाहिनीपलमें ॥ पूरिमां
शोणित सों धरणी । भई भयावनि बिशद बिवरणी ॥ तिहिथ
पार्थ बिदित धनुधारी । करिअद्भुत बिक्रम रणचारी ॥ मारि
असंख्यनभट जगजेना । दई बिडारि तावकी सेना ॥ जे इतके
बरणेबर योधा । तिन न तजेतहँ को अवरोधा ॥ पतित मतंगन
समबल आगर । बिहरेलहि अनुपम रणसागर ॥ मारुमारुधुनि
अति शय घोरा । रह्योपूरि तेहिक्षण चहुंओरा ॥ सहितशिख
डिपार्थभट लायक । बर्षतभयो भीष्मपहँ शायक ॥ तेहि क्षण
भीषम सुभट सुमेधा । रह्यो न कहुंतिलभरि बिनुबेधा ॥ भिदिभे
भीषमको तनतैसो । लसत कुम्भ झिझियाको जैसो ॥ भीष्म
सुबुधिहे ताहू क्षनमें । भूपति रह्योन बिक्रम तनमें ॥ दोहा ॥ इमि
बेधितह्वै भीष्मके भयेशिथिल सबगात । मूंदिगयेचष तपित
ह्वै छूटिपरो धनुतात ॥ रहे कछूदिन भीष्मतब व्यथित दश
यह पाय । प्राचीदिशि शुचि शीशकरि गिरे ईश्वरहि ध्याय ॥
पतत भीष्मके होतभो हाहा धुनिसबठौर । गिरोकेतु सबभट
को सुबुधिनको शिरमौर ॥ इते लगेहे भीष्मके तनमाधि दीरघ
बान । जिनपैरहिनाहिं भूमिकहँ परस्यो भीष्मसुजान ॥ तेहिक्षण
कीन्होंभीष्ममहँ दिव्यभाव आवेश । भई प्रकम्पित मेदिनीध
नबरषे तेहिदेश ॥ सोरठा ॥ रहि मूर्च्छित क्षणएक फिरि सचेत





ह्वै भीष्मतहँ । ज्ञाता शास्त्र बिवेक सुने सुरनके बचनये ॥ दक्षि-
णायन सुभान शुचि न कालतन तजनको । यहसुनि भीष्म
सुजान कहोनकछुदिनतजब तन ॥ रोला ॥ जानिभीषमकोपतन
सुरसरितकरि अनुमान । तहांपठयेऋषिनकहँ तेचले हंसस-
मान ॥ हंसरूपी आयते ऋषिदेखि भीष्महिंतत्र । करिप्रदक्षिण
चलत ऐसे कहनलागे तत्र ॥ दक्षिणायन भानुहं याहि समय
नाहिं सुजान । भीष्मकैसे देहतजिहैं बीरबर बलवान ॥ भीष्म
आशय समुझितिनको कहतभे इमितात । दक्षिणायन सूर्य्य
लौलगि तजब नाहिं हमगात ॥ पिता हमको दयोबर स्वच्छन्द
मरण अबाध । समय लहि तन तजबकरि तेहि बचनको
अवराध ॥ भीष्मको लखि पतन पाण्डव सैनसह हरषाय ।
कियो पूरित शंखधुनि जयदुन्दुभी बजवाय ॥ भये अतिशय
व्यथित सब तो तनयसैन समेत । रहे ठगि नाहिं सके करि
करतव्य कछु जयहेत ॥ बचन यह सुनि कहतभेधृतराष्ट्र नृप-
ति सशोक । तबहिं हम यहगुणो अबहति गयो बलबूतओ-
क ॥ जबहिं भीषमकहो युवति शिखंडि सों न कदापि । लरब
हम तजिहियो अतिधृत बिशद ब्रतहि उथापि ॥ भीष्मकोसु-
नि मरण मोहिय बज्रसदृश कठोर । नहीं दरकत हाय यासों
कौनकष्ट अथोर ॥ रामसों लरि बहुत दिन नाहिंगयो हति जो
बीर । ताहि मास्यो द्रुपद सुत हनि होति अतिशयपीर ॥ भीष्म
जब शर तल्पपरपरि लसे तदुपरि जौन । भयो सहित बिधान
सबइत कहोसंजय तौन ॥ भूप के ये बचन सुनिकै कहेसंजय
बैन । गिरत भीष्महिं देखिइतको भयो चूरणचैन ॥ उतैपूरो
मोद सों थरलसो तेहिक्षणतात । कुमुद कंजन सहितशरजिमि
होत लहि परभात ॥ धाय कौरव सकल पांडव आय भीष्महिं
घेरि । तजत चषजल भये ठाढ़े शोकसों मनमेरि ॥ सिद्धचारण
ऋषय मानव गहे शोच महान । करीअस्तुति भीष्मको करि

कर्मब्रत गुणगान ॥ भीम आदिक भटनसों कर्णादि भटमनमो-
रि । धारि तीक्षण लाज तहँ नहिं सकेइक्षणजोरि ॥ पायशासन
भूपको तेहि समयसुरथ चलाय । गयो दुश्शासन रहेजहँ द्रोण
लरत सचाय ॥ द्रोणसों भो कहतनिपतन भीष्मकोसुनिताहि ।
शोच क्षणक अचेत रहि फिरि चेति इतउत चाहि ॥ युद्धकरिबो
बारि भटन समेत आयुध त्यागि । द्रोणआये भीष्मके ढिगम-
हत दुखसों पागि ॥ दूत सबथर पठै पांडवकियो युद्ध निवृत्त ।
सकल पुरुषप्रधान आये तहां शोच प्रवृत्त ॥ प्रजापति के नि-
कट सुरगण सदृश भट समुदाय । लसे शरशय्यास्थ योगी
भीष्मके ढिग आय ॥ देखि प्रांजलि खरेकुरु पाण्डवनकहँबि-
लखात । भीष्मबूझो कुशल सब सों बचन कहि अवदात ॥
कह्योफिरि मम शीश अधको लंबि अति दुखदेत । देहु शुचि
उपधान तिहि अवलम्ब ताके हेत ॥ सुनत तोसुत दीर्घमृदु उप-
धान शुचिमँगवाय । देन चाह्यो भीष्मतेहि लखि कहतभे अन-
खाय ॥ सुनो ऐसी बीरशय्याको न यह उपधान । भाषिइमितहँ
देखि पार्थहि कह्योकंहि अनुमान ॥ देहु तुम उपधान पारथ उ-
चित जैसोअत्र । बचनयहसुनि पार्थ शरधनु पाणिमेंकरितत्र ॥
गरो गद्गदकरें जल सों पूरि आयत नैन । देहु आज्ञा करों
सोमैं कहेऐसे बैन ॥ बहुरिआज्ञा भीष्मकी लै मंत्रि तीनिसुबा-
न । थोजि धनुमें त्यागि दीन्हीं बिरचि शुचिउपधान ॥ तूलके
समपायकै उपधानभीषममोदि । कहेबहुतप्रशंसि पार्थहिनिरखि
कै सबकोदि ॥ जोन देते पार्थ तुम उपधान शय्यारूप । पावते
तौ शापहमसों हरण सत्वअनूप ॥ नृपन सों फिरिकहे हमइमि
रहबजौं लगिसूर । जाइहैं नाहिं दिशाउत्तर शुभद आनँदपूर ॥
इतेमें बहु भिषजआये शल्य उधरण हार । लिये निजहथियार
औषध जासुसगुण उदार ॥ तिन्हें लखि तो तनय नृप सोंकहे
भीषम बैन । इन्हें धन दै मुदित करिकै बिदा करहुसचैन ॥ पाइ





[illegible]सी दशा अबकछुभिषजको नाहिं काम । पालिक्षात्र सुधर्म
[illegible]ब हम लही गति अभिराम ॥ खोदि परिखा चहूँदिशि इत
[illegible]तरक्षक राखि । जाहुनिज निज सिबिर प्रति सब मोहमनको
[illegible]खि ॥ शरन सह मम दग्धकरियो भूप सुनि यह बात । किये
[illegible]न दै बिदा सिगरे भिषज गणको तात ॥ आदि परिखायतन
[illegible]ब करवाय नृपति अखर्ब । तीनि तीनि प्रदक्षिणा करि नौमि
[illegible]धिवतसर्ब ॥ भीष्मकीसुमहानताको करत बर्णनमोहि । जाय
[illegible]जनिज सिबिरप्रति करतब्यकीन्हेंजोहि ॥ भीष्मभटकेपतन
[illegible]अति मुदितपाण्डवयत्र । रहेकेशवकहोतिन सोंजायनिशिमें
[illegible]॥ सुरासुरहू सों अजेयसुबीर योधापर्म । भीष्मजूझे आजु
[illegible]तो तेजसों हैधर्म ॥ कहेतबनृपधर्म प्रभु तो कृपासोंसबहोत ।
[illegible]त भवनिधि जपतजेतो नाम करण उदोत ॥ जगतउतपति
[illegible]ण पालन हार कृत संहार । होति मम हित चरत महिहि
[illegible] यह उपचार ॥ सत्यजो तुम कहेऐसो भाषि प्रभु सुखदाय ।
[illegible]तभे निज सिबिर कहँ सब भांति सुख सरसाय ॥ रजनिबीते
[illegible]य नृप अरु सकल पुरुषप्रधान । गये जहँ शर तलपपै है
[illegible]म धारे ध्यान ॥ नारि नरजन नगरसों तहँ आय लहि दु-
[illegible]र । भये बरषत भीष्मपहँ स्रक लाज चन्दन चूर ॥ शस्त्र
[illegible]न बिहीन नृप अरु भटनको समुदाय । बन्दि भीष्महि भ-
[illegible]ठत महत दुखसों छाय ॥ भीष्म तब शरघात बेदन ग्रहण
[illegible]रि चषखोलि । देहु पानी पियनको इमिकहे धीरे बोलि ॥ बा-
[illegible]शीतल भोज्य अनुपम तनय तो मँगवाय । देन चाहे भीष्म
[illegible]इमि कहतभे अनखाय ॥ बाणशय्या प्राप्त हमहिं न उचित
[illegible]नृप भोग । देन चाहतल्याय जोबिनु लखे उचितप्रयोग ॥
[illegible]षि इमितहँकह्यो भीषम कहां अर्जुन ख्यात । पार्थ उठिकर
[illegible]रि बोले देहुआज्ञा तात ॥ भीष्म बोले पार्थतो शरघातसों
[illegible]गात । तापित बेदन दुसह पूरित बेदन सूखतजात ॥ देहु

पानी यथा बिधिसुनि पार्थ धनुष चढ़ाय । सुरथपै चढ़ि
प्रदक्षिण दाहिनी दिशिजाय ॥ धनुष कहँ टंकारिकै परज
अस्त्र लगाय । तानिश्रुतिलों त्यागिबेध्यो भूमिकहँ दृढ़घाय
प्रगटितासों भीष्मके मुख परो अमलउदार । सौरभित
परम शीतल अमृत सम जलधार ॥ पार्थको यहअति
नुष कर्म अद्भुत जोय । साचरज ह्वै ह्वै रोमांचित त्रसे
सबकोय ॥ अमृत सम जलपान करिकै तृप्तह्वै गांगेय ।
प्रशंसा पार्थकी इमिकहे बचन अमेय ॥ पार्थतुमसों कौन
गमें धनुर्द्धर तपधाम । नार्दसों हम सुनेतो व्याख्यान सर्ब
लाम ॥ तेजवतमें श्रेष्ठरबि जिमि बिहँगमें बिहगेश। धनुष
में तथा होतुम श्रेष्ठबीर बिशेश ॥ रामहम कृपव्यास संज
बिदुर द्रोणाचार्य । कहे बहुबिधि सुनोनहिं धृतराष्ट्र सुवन
नार्य ॥ कछूदिनमें तौनभटसह बन्धुनृप समुदाय। सुनहुपा
समर महिमधि गिरीह्वैहतकाय ॥ भाषिइमिदुर्योधनहिंल
दुखित बिबरण रूप । कहेतासों भीष्मत्यागो क्रोध हेकुरु
करत पारथ धनुष बिधिमें जौन अद्भुतकर्म । तासुकर्ता
जगमें गहेक्षात्र सुधर्म ॥ जितेदिव्य सुअस्त्रहैं तिन सबैको
तार । एकपारथ जगतमें कैकृष्ण जगकरतार ॥ सर्बबिधि
ज्ञ पारथ सर्बथा जगजैन । सुरासुर गंधर्बहूसों जेयकबहूँहैन
सुनोताते ताततासों मिलौतजि सबबैर । निरखि इनको
त्यागो गर्बगुरताघैर ॥ बन्धुनृपहतशेष सबनहिं जाहिजौल
मारि । करौतौलगि पांडवनसों मेलनीति बिचारि ॥ हाइ
मम मरणलों यहियुद्ध बरकोअन्त । बचे अबतक बचेजेते
दल सबक्षितिकन्त ॥ हमैंयहमत रुचतहै कल्याणकोकरता
औशि करिबे योगहै गुणिशुद्ध शुभउपचार ॥ देहुआधोरा
उनको इन्द्रप्रस्थ सुधाम । हस्तिनापुर रहौतुमसब पूर्बवत
आम ॥ भाषिऐसे बचन भीष्म शल्य प्रतापिलगात । मूंदि





रहे चुपह्वै योगबिधिगहितात ॥ परमसुखद सनीति ऐसे
मकेयेबैन । रुचेनाहिं तोसुतहि जिमि म्रियमानपथ्यगहेन॥
व्य योगी भीष्मकहँ तब निरखि ध्यानावस्थ । गयेसब दुहुं
र निजनिज सिबिर स्वस्थ अस्वस्थ ॥ दोहा ॥ तबभीषमको
न्तिकै अनुपम दिब्य प्रभाव । कछुशंकितह्वैकै तहां आयो
ण अचाव ॥ भीषम के ढिगभो खरो महत मोहसों मोहि ।
रजन्न शय्यास्थप्रभु कार्त्तिकेय समजोहि ॥ महाबाहुहे भी-
हे योगीकुरुश्रेष्ट । प्रभु निरखो राधेयमैं कीजैकृपायथेष्ट॥
सुनि भीषम नेहयुत एक सुपाणि पसारि । कर्णहि अंकल-
इकै कहो रक्षकन टारि ॥ सोरठा ॥ वत्सन तुम राधेय नार्द
यहहै कहे । सूर्य सुवन कौन्तेय तुम सुवननसुत सूतके॥
॥ होतुमदान शीलमतिमान। क्षात्रधर्ममहँ प्रौढ़महान॥
र्जुन सदृश धनुर्द्धरबीर । सर्ब अस्त्र ज्ञाता बरबीर ॥ काशी-
नृप समुदाय । तुमजीते धनुबिधि शरसाय ॥ जरासंध
अतिशय बलवान । भयो न रणमें तुम्हैंसमान ॥ होतुम सर्ब
ति गुणवान । इतोदोषहो करताम्लान ॥ कौरवअरु पांडव
बीच । तुमजातन हेगहिमतनीच ॥ मंत्र करत हेबर्द्धन बैर ।
हतरहे कटुबचन सघैर ॥ सोयह सूतसंगकोदोष। होतोमधि
अवगुणको कोष ॥ ताते हम निदरतहैं तोहि । कुलभेदन कृत
तरथजोहि ॥ अबतुम जो इतआये हाल । ताते हमप्रसन्न
हिकाल ॥ हम अबकहैं सुनो तुमतौन । करौकाज कुलरक्षक
तौन ॥ पांडव अरु तुम सोदरभाय। मिलोप्रेमसों बैरबिहाय॥
न्हें मिलतमिलैंगे सर्ब । मिटिहिनाशको कारणखर्ब ॥ मम
प्रभृत भारतीयुद्ध । राखिप्रसिद्ध मिलोह्वैशुद्ध ॥ यहसुनि
यो कर्णप्रणवान । तातकहे तुमसत्यनआन॥ वृद्धव्रतीयोगी
तिमान। कस न कहौ अस सहित बिधान ॥ दोहा ॥ पर यह
नियेत्यागमम कुन्तीकीन्होतात । बर्द्धितकीन्हो सूतनृप दियो

मोद अवदात ॥ यथा पाण्डवनके परम हितकेशव बिख्यात तिमि हम हित कौरवनके हैप्रसिद्ध यहबात ॥ महिवरी ॥ य बात पालन हेत हमकहँ श्रौशि करिबो उचितहै । धन पु तन लिय त्यागिसों कुरुनाथकहँ जो रुचितहै ॥ प्रभु होत भवितब्यसो नहिं टरतटारे होतहै । सबचरितसो अनुक्रम गहि भवितब्य करजो सोतहै ॥ हमगुणत पाण्डव सर्व सब समरमध्य अजेयहै । है एक हमसों जेय जगमें यदपि प्र अमेयहै ॥ अब बैर करब निवृत्त नहिं ममसुबश हमसति हतहैं । ध्रुवभयो तिनको चहै फल जे होत असगुण महतहै हमकरब संगर पार्थसों तुम देहुशासन मोदिकै । तो कृपाते यलहब अरिदल मध्यप्रबिशिबिनोदिकै ॥ कटुबचन बहु अ नबश हम कहे तुमकहँ तातजे । तेक्षमहु सब पितु क्षमत जि शिशु कहत अनुचित बातजे ॥ सुनि कहे भीषम कर्णसों इ सत्य जो यह तुमकहे । नहिं टरति भावी लरौ ताते स्वर्ग हि प्रणकरि अहे ॥ तजिशङ्क सम्मुख समरमें लरि मरबसोग पर्म है । लरिकरौ बिक्रम यथारुचि यह क्षत्रियनको धर्महै दोहा ॥ इमिकहि भीषममूंदि चष भे फिरि ध्यानावस्थ । नौ कर्णरथ चढ़िगये जहँ कुरुनाथ अस्वस्थ ॥ भीष्मपर्वमेंनृप यो यहिबिधिदशदिन युद्ध । पढ़िहिसुनिहि जो याहिसो लहि चारुपदशुद्ध ॥ सोरठा ॥ मूको बांचै बेद पंगु तरै गिरि ध्याय हि । अगमजासु शुचिभेद तासु कृपालहि इमि कहे ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रबिंदीजनकाशीबासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेभीष्मपर्वणिदशमदिन युद्धवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥

भीष्मपर्वसमाप्तः ॥

# महाभारतदर्पणो ॥

## द्रोणपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिराब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ जयकरी ॥ रामचन्द्र के पद जलजात । मधि बसायमन अलिअवदात ॥ पाय अ- त महिमा मकरन्द । करतगान भारत शुभछन्द ॥ जोश्रुति पर- त सबसुखदान । करनहार सर्वज्ञ सुजान ॥ प्रभु सर्वज्ञ सर्ब त जौन । सबथर सोइदूजो कौन ॥ जोइछितजो सोई होत । औरन करताकछू उदोत ॥ यह बिचारि तजिसंशय सर्ब । बिर- त भाषा भारत पर्ब ॥ ताकी ईहाकी अनुसार । लहब भार्त अर्णव कोपार ॥ श्रीश्री सीतापति श्रीराम । सिद्ध करत निज नको काम ॥ दोहा ॥ पारथ के स्वारथभये सारथि परम अनूप। सारथ देहैं बिरचि भारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबर ीर राम परमपद पारषद । मंगल मूरति धीर पारथ स्वरथ जरथ बर ॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तर्यो ॥ जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥ जब प्रभु परमासाधि मनमोये । भीषम शरशय्यापर सोये ॥ किये महातब सहित समाजा । निज निज शिविर जाइ सबराजा ॥

बैशम्पायन मुनि यह सुनिकै। कहतभये भूपातिसों गुनिकै ॥ ति
हिदिन संजय दलमधि आई। संध्याभये भूपपहँ जाई ॥ करि
प्रणाम शोकाकुल भूपहि। बैठे ध्याय श्यामघन रूपहि ॥ तैं
उसास लै शोक महासों। भूपति कहत भये इमि तासों ॥ तात
भयो तदनन्तर जैसो। पृथक्पृथक् अब कहु सबतैसो ॥ सुनि
संजय बोलेताजि अनदै। भूपति सब सुनियेसो मनदै ॥ फिरि
लरिबे कहँ अमरष भारे। उभय भूमिपति सैन सँवारे ॥ घने
निशान गहगहे बाजे। बने निशान बहबहे राजे ॥ नृपतेहि सम
यतावकी सेना। भई बिना भीषम जगजेना ॥ जिमि अजयुत
वृकनसों घेरित। रक्षक बिना होइ भयमेरित ॥ बलि बिन
भयो असुरदल जैसो। भयोभीष्म बिनुतोदल तैसो ॥ तहँइत
के सबभट गुणि मनमें। करण करण कीन्हें तेहिक्षनमें ॥ भीषम
सदृश बिदित धनुधारी। करण बीर कर्कश रणचारी ॥ परशु
राम सों धनुबिधि सीखो। सब धनु धरके पहिलेलीखो ॥ दोहा
महारथी मणिकरण तेहि कहे अर्द्धरथियत्र। भीषम सो सुनि
करण कियो प्रतिज्ञा तत्र ॥ जौलगि भिरि पाण्डवनसों भीषम
करिहैं युद्ध। हम तबलगि नहिंधनुगहब पालि प्रतिज्ञाशुद्ध
भीष्म जीतिहैं पाण्डवन कहँ तोभूति बिहाय। हम भूपतिस
ह्वै बिदा बसब बिपिन मधि जाय ॥ पाण्डव बधिहैंभीष्मक
जोतौ लरि हमएक। मारि पाण्डवन भूपकहँ देबराज्य गहि
टेक ॥ करि ऐसो प्रण दश दिवस लरोनहीं रणधीर। अबलरि
यहि सैनको रक्षणकरो सुबीर ॥ रोला ॥ समुझि बिक्रम पार्थके
गहि भूरिभीति अपार। भीष्म भटके गिरे नृपसब भये बि
त्रातार ॥ भाषिऐसे बोलि करणहि कहेन्नृपति समस्त। भीष
पारथ के सदृश तुम करणबीर प्रशस्त ॥ सिन्धु बिक्रम पा
कोतेहिमध्य परिहमसर्ब। होनचाहत मगन रक्षण करोतुम यहि
पर्ब ॥ नृपनकी यहदशा सुनि धृतराष्ट्र नृपति अचैन। कहो यह





सुनि करणतिहि थर कहे कैसेबैन ॥ कहो संजय नृपनके ये बचन
सुनि रणधीर। करण धीर अभीतवत इमिकह्यो बचन गँभीर॥
बुद्धि बिक्रम शक्ति स्मृति धृतिधर्म तेज असेग। दिव्य अस्त्रन
की कुशलता आदि सुगुण अनेग ॥ जासुमाधिसो भीष्मरण
में गयोबधिजौं तात। तौन इतभट एकको अब बाचिबो लखि
तात ॥ ब्रतीदेव समान कुरुकुल वृद्ध भीषमबीर। गिरो रणमें
समुझियह नहिं गहत मोमनधीर ॥ भाषि ऐसो करण लागे
रुदनकरण सक्षोह। तदनु नृपसब उच्चस्वर सों किये रुदन
समोह ॥ बहुरिधीरजधारि ऐसो कह्यो करण सुजान। सत्य
जगत अनित्य जोगिरि परो भीष्म अमान ॥ बध्यो भीष्महि
पार्थ तासों भिरैगो भटकौन। सहैकिमि तेहि वृक्षउलटै गिरि-
नकहँ ज्यों पौन ॥ रहे जिमि यहि दलहि रक्षत भीष्म उनसों
जूटि। तथाअब हम करब रक्षण लरब उनसों ऊटि ॥ शरन
सों बधि पाण्डवन कहँ देउँगो यम लोक। बधिहि हमकहँ
समरमें कै पार्थ बिक्रम ओक ॥ सर्ब पाण्डव कृष्ण सात्यकि
बहुत बिक्रम भौन। जूटि तिनसों युद्ध करिकै बचिहि दूजो कौन॥
तपहि बांधत बृहत तप अरु बलहि बल नाहिं आन। जीति
उनसों लहब हम मन होत उत्सववान ॥ मित्रसो जो करैसङ्कट
समयमें उपकार। बूझिसो हमहोब उत्रिण भूप सों यहिबार ॥
भाषि यहि बिधि करणबीर सुबीर रससों छाय। बस्त्रभूषणक-
वच नूतन गहत भे मँगवाय ॥ भयो धारत अस्त्रधनुष तुणीर
आदि अशेष। चपल अश्वन लायरथमें लस्यो अनुपम भेष॥
पूर्ण दधि सों पात्र लखिकै दुन्दुभी बजवाय। कहतभो इमिजो-
रियुगकर भीष्मके ढिगजाय ॥ करण हमहैं देवब्रत करिकृपाहेरो
मोहि। कहौमंगलप्रद बचन कल्याण कारण जोहि ॥ कोप अर्जुन
करणमंत्री ब्यूहबितरनहार। भूप के अबकौन तुमसों अरिनको
हन्तार ॥ मृगनको क्षयकरत जिमि मृगराज तिमि अरितास।

तुम्हैं बिनु सब कौरवनको कियो चाहत नास ॥ बज्रसदृशश्र-
मोघ धनु गाण्डीवको शरपात । समुझि शङ्कित कौरवी दल
तुम्हें बिनु है तात ॥ पार्थ के रथनेमिकी धुनि धनुषकी टंकार।
शरनकी झरसहै ऐसो और कौन उदार ॥ लहे जय भृगुराम
सों तुम ताहि जीत्यो जौन । पार्थ तासों सकैलरि असबीर तु-
जो कौन ॥ कृपा लहिकै आपुकी हमचहत जीतन ताहि। देहु
शासन सुजय हित चित चावयुतकरिचाहि ॥ कर्णके सुनिबच-
न भीषमदेशकाल बिचारि। करि प्रशंसा तासुतासों कहेसरुचि
निहारि ॥ सर्ब दिशिके नृपन कहँ तुम जीति करि रणघोर। दये
करि कुरुनाथ के बशमारि सुभटअथोर ॥ बंधुसम बन्धीन सोहे
मित्र जगमें श्रेष्ठ । कहतहैं हम मुदित ह्वै तुमकरो युद्ध यथेष्ठ॥
यथाकौरव पौत्र मम तुम तथाहौ प्रिय मोहि। होइहितकुरुनाथ
को तिमि करोबिक्रम जोहि ॥ भीष्मके ये बचन सुनिकै नौमि
कर्ण सचाय । गयो योधन सहित जेहि थर रहे कुरुकुलराय॥
देखि कर्णहि युद्ध हित सन्नद्ध तो सुतसर्ब । सहित योधनभये
मोदित बहुरि गहि बरगर्ब ॥ कह्यो दुर्योधन नृपति इमि कर्ण
सों सबिचार । लरैं केहिबिधि शत्रुसों अब कहौ सो उपचार॥
कर्णयहं सुनिकह्यो नृपतुम सकल भांति सुजान । आपुकहिये
समुझि अब करतब्य जौन बिधान ॥ कर्णके ये बचन सुनि कै
कह्यो कुरुकुल भूप । सैनपति ह्वै भीष्म दशदिनकियो युद्ध अ-
नूप ॥ परोसो शरतल्प पर अब सैनपति करिकाहि । लरैंताहि
बताय दीजै तेजबल बुधि चाहि ॥ बिना सेनापति सयनजिमि
बिना करिया नाव । सकति नहिं करतब्य करि बिन सूतरथजे-
हि भाव॥ भूप के ये बचन सुनिकै कह्यो बचन सुबीर ।सैनपति
के योग्यहैं इतसकल नृप रणधीर ॥ बुद्धि बिक्रम धैर्य्य युत हैं
सकल सब कुलवान । रुचै ताकहँ करो सेनाधिपति सहित
बिधान ॥ मान्यसब कहँ वृद्धगुरु है द्रोणधीर धुरीन । रुचै





तौ तेहि करो सेनाधिपति यह मतपीन ॥ और ह्वै है सैनप-
ति तौ बढ़िहि इर्षा दोष । द्रोणह्वै है सैनपति तौ सबन के
सन्तोष ॥ मंत्र यह सिद्धांत करिकै भूपनृपन समेत । करि
प्रशंसा द्रोण सों इमिकह्यो निजजय हेत ॥ तात ह्वै सैनाधिपति
तुम करहु रक्षण सैन । पाय तुमकहँ अधिप ह्वै है सैनममजग
जैन॥ भूप के ये बचन सुनिकै कह्यो द्रोणाचार्य्य। होब हमसे-
नाधिपति तो सुयश हित है आर्य्य॥ सर्ब बिद्या शस्त्र बिधिअ-
भ्यसित सब व्यवसाव । करबहमभिरि पाण्डवनसों गहे अनु-
भाव ॥ मारि सुभटन पाण्डवनकहँ देउँगो करि मौन । धृष्ट-
द्युम्न न बध्य हमसों प्रगट कारणतौन ॥ बचन यह सुनिमुदित
ह्वै सह नृपन सहित बिबेक । भूप द्रोणहि कियो सैनाधिपति
को अभिषेक ॥ बजे अगणित बाद्यभे उत्साहयुत सबबीर । क-
हत सबके बदन सों इतजयति शब्द गँभीर ॥ सैनपति ह्वैद्रोण
रच्यो शकटब्यूह अभेद । राखि सबथर सुभट ज्ञाताशस्त्रसं-
चारा भेद ॥ भूप सैन्धवकालिंगको अरु भट बिकर्ण ससैन । अरु
जयद्रथ रहे दक्षिण ओर दायकचैन ॥ सहित हयदल शकुनिसब
गन्धारभटन समेत । रह्यो तिनकोपक्ष रक्षसचाव चपलसचेत ॥
चित्रसेन ससेन कृप कृतबर्म कृत रणउद्ध । भट दुशासन अरु
बिविंशित लये योधा शुद्ध ॥ बामदिशि हेरहे तिनके पक्षरक्षक
बीर। यवन सककाम्बोज गणसह नृपसुदक्षिण धीर ॥ शिवय
मद्र त्रिगर्त्त मद्रु अम्बष्ट आदिकसर्ब। भटनसहतोतनय भूपति
गहेगुरुतागर्ब ॥ सहित द्रोणाचार्य्य कर्णहि किये आगे भूप ।
पृष्ठरक्षक लसो मधिमें समर मखको जूप ॥ शकटब्यूहअभेद्य
लखितको धर्मभूप निहारि । रचोनिजदल मध्यअनुपम क्रौंचब्यूह
बिचारि॥ ब्यूहमुखमेंरहो अर्जुन बिदितधीरधुरीन।रहेसबथरपूर्ब-
कृत सबसुभट योधापीन ॥ बिरचियहि बिधिब्यूह अगणितदुन्दु-
भी बजवाय। युद्धहित बढ़िचले दोऊ भूप सदल सचाय॥ घोर

असगुनहोतभे तेहि समय सुनिये तात । तुरगगज नर नृपनके
जे नाश करणविख्यात ॥ घोर संगर कियो तेहिदिन सुभ
सिगरे जूटि । द्रोण पारो प्रलय परदल मध्यजय यशऊटि
पांचदिन अतियुद्ध करिकै भटनको शिरताज । द्रोण हति अ
क्षौहिणीसों अधिक सैनसमाज ॥ धृष्टद्युम्न सुधीरसोंलहि नाश
तनतजि जाय । भयो निवसत जहां बिलमत शूर शुचि प
पाय ॥ परम आनँद लहे पाण्डव पायजय अभिराम । सैनस
तोसुवन सबभे दुसह दुख लहि छाम ॥ मढ़त हाहाकार धु
तारि बिसत बेलाधीर । भरत भो तोसैन महिं मधि शोकसि
गँभीर ॥ दोहा ॥ द्रोणाचारयको मरण सुनि धृतराष्ट्र सुभूप
कुलिशपातसों हत सदृश भेभयरत गतरूप ॥ जकि अबोल
रहि घरिकलों फिरिलै ऊबिउसांश । संजयसों बूझतभये तजि
निज जयकी आश ॥ सिगरे दिव्य सुअस्त्रको शीक्षक द्रोण
चार्य्य । धृष्टद्युम्न ताको बध्यो करिकै सोरणकार्य्य ॥ भयो बि
रथकै बिधुनकै कैभो मोहित धीर । जाते रणमें बधिगयो प
शुराम समधीर ॥ जयकरी ॥ मरणद्रोणको सुनि हे तात । अ
मोसों कछुकहो न जात ॥ चाहत दैवहोतसो अर्थ । सिगरो पु
रुष पराक्रम ब्यर्थ ॥ कुलिशहुते मम हृदय कठोर । फटत
सुनिऐ सोदुखघोर ॥ द्रोणहि रक्षतहे तेहिकाल । केके इत
सुभट बिशाल ॥ केकै सुभट उतैसोंऊटि । लरद्रोणसों सम्मु
जूटि ॥ लहि पाण्डव भटको शरजाल । केइतकिये स्वर्गपथ
चाल ॥ केके भगे द्रोणकहँ त्यागि । केके लरे बीररसपागि
किहि किहि बधे द्रोण वहिओर । किन्हें भगायो करिशर जोर
कैसोसंगर भोतेहिठौर । जूझो जहां सुभट शिरमौर ॥ रण
सुभट द्रोणको पात । कबहूंरहो न जानोजात ॥ तौन अनर्थ भ
यो यह हाय । अब मोसों कछुकहो न जाय ॥ करिप्रलाप यहि
बिधि बहुबार । गिरोभूप लहिशोक अपार ॥ भूपहि मुरछित ल





लहि त्रास । दौरि उठाये दासी दास ॥ अतिशीतल जल
मुखधोय । अँगमें अतर गुलाबसमोय ॥ गतमुरछा लखिकै
वपाय । सिंहासनपरधरे उठाय ॥ शोकाकुलह्वै ब्याकुलफेरि ।
कतभे नृपदुखहि बखेरि ॥ दोहा ॥ एकधनुर्द्धर बिदितजो सब
को जेतार । धृष्टद्युम्न तेहि किमि बध्यो कहो तौनउपचार ॥
वन दाहत अगिनि जिमि तिमिमरदत परसैन । द्रोणहि
रिद सदृश केहि कियो शमित गहिचैन ॥ बरणि बरणिगुण
णके अरु बिक्रम ब्यवहार । बार बार बूझो नृपति भोजिमि
बिहार ॥ सोरठा ॥ मोहित भये अचैन नृपलहि दशाप्रलाप
। भरोशोकसों ऐन बूझेकहे अनेक बिधि ॥ जासु सहाई
णु उतपति पालन नाशकृत । सकल भांतिसों जिष्णु कहि
भावप्रभुके कहे ॥ दोहा ॥ ब्रजमथुरा द्वारावती सोजे अद्भुत
। कियेकृष्ण सोसकलकहि कहे भूप गुणिमर्म ॥ चौपाई ॥
जो जोकृत चाहै मनमें । प्रगटहोइ सोसो सबक्षनमें ॥ सो
रथी धनंजय सुरथी । जीतै ताहि कौन जयअरथी ॥ येयुग
नारायण जाने । दुर्योधन तिनसों रणठाने ॥ किमि कल्याण
इ मम सुतको । कसन होइ हित ईछित उतको ॥ भयोकाल
तृप दुर्योधन । करत न प्रभु महिमाकोशोधन ॥ जगजेतार
बध्य सुआरय । बिदितभीष्म अरु द्रोणाचारय ॥ ते जूझे
वि अजों नचेतत । नहिं हठतजि कुलरक्षण हेतत ॥ जौ बि-
ति तव लखि ये माखे । पाण्डव तासु द्विगुण अभिलाखे ॥
हहि सिद्धि अवशि सोकारय । जोजूझेये युगभट आरय ॥
य युधिष्ठिर जाहित कारण । इमि बिचरत जगभार निवा-
ण ॥ मरण द्रोण अरु भीषम केरो । संजयसहि न सकत मन
रो ॥ कढ़त न प्राण गहत निठुराई । अब मोसों कछुकहो न
ाई ॥ होत चहत है धरमी जोई । चहत अधरमीसो नहिंहोई ॥
मसुतके जय हेतुअरूझो । कैसो बिक्रम करिद्विज जूझो ॥

किमि उतके योधाभट नायक । चले द्रोणपहँ बरषत शायक ॥ जनवरकरि अनुमान बोले बरबाधक बचन ॥ करि अङ्कुतरण
किमिशर बरषत इतके योधा । बाढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधा ॥ तब हम भूपहि सकबगहि। जोरहि नृपके संगलरिनाहिं पाहै
दोहा ॥ कहो पांचदिन तहँ भयो केहिप्रकारको युद्ध । लरे समर्थ भट ॥ चौपाई ॥ रणमें पाहत पारथ जाही । पकरिनसकैइन्द्र
किमि किमि चरे केके योधाउद्ध ॥ वृद्ध भूपके ये बचन सुनि सम ताही ॥ भूपसुबीर पार्थयुत जबलों । रबिसमलखिबोयोगन
जय सतिमान । कहे सुबौ मनदै कहत हमसब सहित बिधान बलों ॥ मम सुशिष्य अरु तरुणउजागर । धर्म शील बिक्रम
सोरठा ॥ लहि अभिषेक अमंद सेना अधिपतिको सविधि। गुणसागर ॥ दिव्य अस्त्रदेवनसों लहिकै। हम सों अधिकभयो
परम अनंद ह्वै प्रसन्न नृपसों कह्यो ॥ जयकरी ॥ भीषमके पीत गहिकै ॥ तापै केशव तासु सहाई । ताढिगधर्महि सकबन
हित जोहि । तुम कीन्हों सेनापति मोहि ॥ तातें हम प्रसन्नई ॥ तातें तुम सब सम्मत करिकै । रचिउपचार चाव सोंच-
यहिकाल । मांगो ईछित सुबर रसाल ॥ सुनिभूपति हरषे जकै ॥ पार्थहिकीन्हेंउ नृपसोंन्यारे । नृपहिदेवहमहाथतुम्हारे ॥
हेत । दुःशासन अरु करण समेत ॥ करिकै मंत्र कहेहरषाय ह सुनि तो सुतअति हरषाने । धर्म भूपकहँ निजकर जाने ॥
जीवत पकरि धर्मकहँ ल्याय ॥ देहु मोहिं मांगों बरयेहु । यथो द्रोणसों जो सम्भाषन । तेहिको दृढ़ करिबे हितशासन ॥
सुनिबोले द्रोणसनेहु ॥ धन्ययुधिष्ठिरनृपतुम जासु । चाहेयह दलमें बजवाइ नगारे । सब सुभटनके श्रुतिमधिडारे ॥ इत
नचधकुलनासु ॥ निरखिधर्मको धर्मअनूप । अहितौ चरत सुहि सबयोधा सोसुनिकै । हरषितभे सहजाहिजय गुनि कै ॥ सु-
अनुरूप ॥ अथवापाय सुजयगहिचैन । रक्षणहेतु सुहित यह सब वृत्तान्त सोहाये । चारधर्म कहँ जायसुनाये ॥ सुनि
सैन ॥ आधोराज्य देन अनुमानि । मांगे तुम यहबरनयजानि वाणी निज चारनकी । नृपगुणि बिधि सों बिधि टारनकी ॥
द्रोणाचारय के येबैन । सुनिदुर्योधन भूप सचैन ॥ सके छपाय बन्धुनकहँ निकट बोलाये । सबसों यह वृत्तान्त सुनाये ॥
हियकी बात । कहेद्रोणसों गुणि अवदात ॥ कपट न छपत यो धनंजय सो तुमतैसे । रहे हुन लहै मोहिं द्विजजैसे ॥ द्रो-
पाये तात । आपुहि प्रगटि होत बिख्यात ॥ कह्योभूप सुनि चारय मम हित कारण । कीन्हेंयह अन्तर बरबारण ॥ दोहा ॥
यह नीति । धर्महि मारिन पाइब जीति ॥ नृपति युधिष्ठिर ते तुम रक्षत रहेहु मोहिं सदासबठौर । जाते नहिं ईक्षितल-
बध देखि । सबकहँ बधी पार्थ भट तेखि ॥ सब पाण्डव क दुर्योधन यहिडौर ॥ भूपतिकेये बचन सुनि पार्थ कहेभवित-
मारेजौन । ऐसोबीर सुरासुर कौन ॥ बचिहि पांचमें जो भ। त्याग आपुको द्रोणको बनन हमैं करतब्य ॥ मम जीवत
एक । नाशिहि सबकहँ सोगहिटेक ॥ दोहा ॥ तातेयह मत ज नाथको सिद्ध न यहअनुमान । तुम्हैं गहनको जो लहैशक्र-
दहै धर्म नृपति गहिल्याय । खेलिद्यूत फिरिजीतिकै बनकहँ सों बरदान ॥ सोरठा ॥ अर्जुन के ये बैन सुनि पाण्डवनृपचैन
पठाय ॥ सत्य प्रतिज्ञा धर्म जब बसिहैं बनमें जाय । भीमआहि । उमँगि चलाई सैन बजवावतदुन्दुभिघने ॥ चौपाई ॥ दुं-
सब तासु सँगजैहैं तजिव्यवसाय ॥ करि निबन्ध बहुदिबस भिशंख आदि सब बाजे । अगणित दहुँओरसों गाजे ॥ भरो
रचि जूवाजयपाय । होब बहुत दिनकहँ सुचित यह मम रसबके मनमें । लागोहोन युद्धतेहि क्षनमें ॥ माचतभयो
सुखदाय ॥ सोरठा ॥ कपटभरे दुखदान नृपके ऐसे बचन सुनि द्ध अति घोरा । पूरि रहे आयुध दुहुँओरा ॥ बाढ़ि बढ़ि योधा

भरि भरि रिस सों । डारनलगे अस्त्रदुहुं दिशिसों ॥ थिररहुखरे
देखु बाकि बाकि कै । मारन लगे बाण तकितकि कै ॥ मारुबचार
आउकहि कहिकै । झेलनलगे शक्तिगहि गहिकै ॥ बरषतश
बढ़ि द्रोणाचारय । भो प्रविशत परदल मधि आरय ॥ क्षणद
समजहँ तहँ दुहुंदलमें । बिचरतभयो द्रोणतेहिपलमें ॥ अति
शय चपल धनुषरथ करिकै । लसो अनेक सदृश रणचरिकै
ज्वलित कृशानुचरै जिमि बनमें । तिमि बलसों परदल मधि
रनमें ॥ रथीपदाती भटहयसादी । मारिअसंख्य गजस्थप्रमा
दी ॥ बरंधित कियो रुधिर को सागर । बिशद बिक्रमी द्रोणउ
जागर ॥ निज दलमर दत द्रोणहिदेखी । सुभटन सहितयुधि
ष्ठिर तेखी ॥ चले द्रोण पहँ बरषत शायक । सो लखिकै कौर
कुलनायक ॥ सुभटन सहित शरासनकरषत । तिनसों भिर
भये शर बरषत ॥ शकुनि सुभट सहदेवहि तकिकै । भिरोबी
रस बरसों छकिकै ॥ दोहा ॥ शर क्षुरप्रसों काटिध्वजबंधि सू
को गात । माद्री सुतके गात पै करतभयो शरपात ॥ तासुसू
धनुध्वज तुरगबन्धि शरनसों बीर । शकुनिहि मार्यो साठिश
माद्री सुत रणधीर ॥ सोरठा ॥ शकुनिबीर उद्दण्ड कूदिसुरथस
गहिगदा । भट सह देव प्रचण्डके देखत सूत हिबध्यो ॥ चौपाई
लखिसह देव बिदित रणचारी । गहि गुरुगदात्यागिरथभारी
फेरत दण्ड दण्ड के डौराणि । गहत पैंतरे के सब ठौ रणि
झपटत करत उदावद पटिकै । दारुण दण्ड पाणिसम दृटिकै
चाहि चटकता सों चढ़ि अड़दै । मार्यो गदागदापै धड़दै ॥
टतजुटत छूटिकैछावन । लगेलरनलखि चषलल चावन ॥ थि
थिरिउचटिउचटिफिरि फिरिफिरि । घनेघाव घालेघिरि घि
घिरि ॥ खरेखलारबली भट दोऊ । कोपित गणेन गोपितकोऊ
धृष्टद्युम्न भटवर सों भिरिकै । लागे लरन द्रोण तहँ थिरिकै
भिरो बिबिंशतिभीम प्रबलसों । धनु करषत शरबरषत बल





॥ शायक बीस परम अनियारे । भीम बिबिंशतिके तनमारे ॥
र बिबिंशति हनिशरचोखे । बधेभीमके तुरग अनोखे ॥ धनु
जकाटि गरब गहितोखो । तदनु वृकोदर भट अतिरोखो ॥
पाणिह्वै कूदि झपटिकै । बधेतासु सबतुरग दपटिकै ॥
हिअसि चर्म बिबिंशतियोधा । सुभट भीमसों भिरो सक्रोधा ॥
ल्य नकुलसों भिरिकै चावन । लखो पराक्रमभय सरसावन ॥
ष्टकेतु सों भिरि कृपआरय । कीन्हों घोरयुद्ध जयकारय ॥
॥ भिरे सात्वकी सोंगरजि कृतबरमा रणधीर । घोरयुद्ध
हां तहां तेदोऊ बरबीर ॥ सुभट सुशरमा सभापति भिरि
हीं अतियुद्ध । ससयनकरण बिराट भिरि कीन्हों संगरउद्ध ॥
द्रुपद भगदत्त नृप कलित कराल कठोर । बारि बारि शर
रि शरकीन्हों संगरघोर ॥ भिरोशिखण्डी बीरसों भूरिश्रवा
मान । शक्तिभल्ल तोमरबरसि कियो कठिनघमसान ॥ चौपाई ॥
स प्रबल अलम्बुष बीरा । भिरो घटोत्कचसों रणधीरा ॥
माया बिदरणचारी । दोऊबली बिदित भटभारी ॥ गुप्त
ट कैह्वै बहु बिधिसों । कीन्होंयुद्ध राक्षसी सिधिसों ॥ ल-
कुँवरक्रोधसों मढ़िकै । अभिरो क्षत्रदेवसों बढ़िकै ॥ नृप
नुबिन्द महारिसकीन्हों । चेकितानसों भिरिरणलीन्हों ॥ ल-
सौभद्रहि प्रबलबिचारी । ढूँढ़ो नृप हार्दिक्य प्रचारी ॥ तेहि
भिमन्यु जानि रणकरकश । कीन्हों बाणवृष्टि करि बरकश ॥
व बरषि बाणवर चीन्हें । तापहँ शरपंजर करिदीन्हें ॥ अ-
नको सुतरचि शरसेतू । काटेतासु क्षत्रधनु केतू ॥ बहुशर
नि पौरव केतनमें । बेधेतुरग सारथिहि क्षनमें ॥ फिरिअमोघ
योजितकरिकै । गरजो अरिबधको प्रणधरिकै ॥ लखिपौ-
करिलाघव करसों । काट्यो तासुधनुष युगशरसों ॥ तब
भिमन्यु तौन धनुतजिकै । खड्ग चर्म गहि कूदि गरजिकै ॥
चल चरत पैंतर पथपै । गो हार्दिक्य भूप के रथपै ॥ करिपद

घात सूतके उरमें । दयो गिराय सुरथते तुरमें ॥ असिसों काटि
ध्वजामणि भूषित । गहेभूपके चिकुर अदूषित ॥ दोहा ॥ प
सिंह बराद्विरद सम नृपहार्दिक्यहि देखि । गहि असि च
चलो गरजि नृपति जयद्रथ लखि ॥ आवत देखि जयद्रथ
तजिहार्दिक्यहि बीर । कूदिगर्जितापै चलो अर्जुन सुतर
धीर ॥ तेहिक्षण इतके भटहने तोमर पट्टिश बान । तिन्हैंका
नृपसोंभिरो भटअभिमन्यु अमान ॥ सोरठा ॥ क्रुद्धिक्रुद्धि भटउ
जूटिछूटिजुटि छूटिजुटि । खड्गयुद्ध बिधियुद्धशुद्धबीररस ग
करो ॥ रोला ॥ ढालमें अभिमन्यु केलगि भूपकी तरवारि । टू
आधी गिरीसोनृप सिन्धुनाथ निहारि ॥ चपलतासों तुरितप
पद कूदिपीछू जाय । बेगसों फिरिबीर आयो सुरथपै अनखाय
मत्तगजहि भजाय गरजत करतचालनशुण्ड । लसैजिमि गज
राज तृणसम गुणत करिवर झुण्ड ॥ करतचालन खड्गग
जत लखत लसत निशङ्क । खरोतिमि अभिमन्यु कहँल
शल्यअरिगज पङ्क ॥ शक्तिडारत भयोतहँ अभिमन्यु आव
देखि । कूदि गहिकै बध्योतासों तासु सूतहि लेखि ॥ देखि
अभिमन्यु कोयह अतुल बिक्रमभूरि । सकल पाण्डव तेप्र
सत महामुदसों पूरि ॥ पांडवनको हरषलखि तोतनयसबदु
पाय । बाण बरषत भयेतापै गर्बसों सरसाय ॥ पार्थसुतको त
खि बिक्रम शल्यधीर धुरीन । कूदिरथसों चलोगहिकै गद
अतिशय पीन ॥ दोहा ॥ इमि शल्यहि आवत निरखि दण
पाणिसमचण्ड । कालदण्डसम गदागहिसो चलोभीमउदण्ड
आउशीघ्र भाषतखरो पार्थतनय कहँबारि । आउइतै इमिभू
सों भाषत भयोप्रचारि ॥ सोसुनिकै अभिमन्यु पहँगयो न नृ
रणधीर । रहु उतहीं रहुउतहि इमि कहि बढ़िभिरो सुबीर
सोरठा ॥ दोऊखरे खलार दोऊ बरणे बिक्रमी । दोऊ रणजेत
गदायुद्ध कीन्हों तहां ॥ चौपाई ॥ अद्भुतयुद्ध कियो तहँ दोऊ





दोऊप्रबल कहैं सबकोऊ ॥ दोऊघूमि चक्रसम झपटैं । घालैं
व चावसों दपटैं ॥ दोऊदटि दटि दुहुँन प्रचारैं । कूदिकूदि
ठिबढ़ि बाढ़िमारैं ॥ दोऊमन ममतासों माड़ैं । सहैंघाव नहिं
धीरज छाड़ैं ॥ दोऊ घालैं गदा उकाढ़ैं । दोऊ गदा गदासों
ाढ़ैं ॥ लागैगदागदा पहँजबहीं । कढ़ैं फुलंग दुहुनसों तबहीं ॥
ऊलसे रजनि महँजैसे । युगतरु वर जुगुनू युत तैसे ॥ दोऊ
ात दुहुँनके थूरे । दोऊरुधिर धारसों पूरे ॥ दोऊ कूदि कूदि
रिजितिसों । टूटिटूटि अभिरैं बलअतिसों ॥ दोऊगदा हनैं
तिबलसों । दोऊगात बचावैं कलसों ॥ दोऊभट रणदुन्द
ावहिं । अरदित भयेगदाके घावहिं ॥ इमिदोऊ लरि थिरि
रिथिरिकै । मुरछिपरे महिपैगिरि गिरिकै ॥ लखि कृतबरमा
ाता करिकै । नृप शल्यहि निजरथपै धरिकै ॥ पांडवगणसों
कित मनमें । रथचलाय दुरिगो भटगनमें ॥ क्षणमें चेति
ाम रसपागो । बहुरिखरोह्वै गरजन लागो ॥ माचो घोरयु-
तेहिपलमें । कटेअसंख्य सुभट दुहुंदल में ॥ दोहा ॥ ह्वैमर-
त पांडवनसों बिमुखभई मम सैन । बजवाये जय दुन्दुभीधर्म
ूप जगजैन ॥ सोलखिकै वृषसेन भट सुवन कर्णकोबीर । मर-
तभो दल पांडवीकरिशर झररणधीर ॥ बधिसहसनहयगज
भट बरधित करि यम लोक । कुपित कालसम लसतभो रण
हिमधि बलओक ॥ सोरठा ॥ नकुलतनय रणधीर शतानीक
सों भिरो । दोऊभट बरबीरघोरयुद्ध कीन्हों तहां ॥ गुरुतोमर ॥
हँ करणको सुतकोपिकै । तिहि बाण बरषो तोपिकै ॥ बरभटन
विधिठाटिकै । भो मुदित धनुध्वज काटिकै ॥ सोतासु सोदर
खिकै । भिरिकरणसुतसोंताखिकै ॥ भटप्रबल धनुषबिधानसों ।
हि छायदीन्हों बानसों ॥ वृषसेनकहँशर धारमें । लखि मगन
हि रणगारमें ॥ भट द्रोण सुवनहिं आँदिकै । भेभिरत तिनसों
दिकै ॥ सोदेखिभट वहि ओरके । बल बुद्धिसैन अथोरके ॥

बढ़िभिरेइनसोंहांकिकै । येभिरेउनसोंदांकिकै ॥ तेहिसमयसंग
घोरभो॥थिर मारु मास्यो शोरभो ॥ भीमादि भट तेहि कालमें
चरिकालसमभटजालमें ॥ इतप्रलयपूरपसारिकै। बहुसुभटगज
हय मारिकै ॥ शर शक्तिपट्टिश छायकै । भे नदतदल बिचलाय
कै ॥ निज भटन बिचलत हेरिकै । जनियुद्धत्यागहु टेरिकै ॥
धीर तिनकहँ फेरिकै । भट द्रोण क्रोध बखेरिकै ॥ करिदुसहदु
दिनबान सों । बढ़िबितरिबिधि घमसानसों ॥ गोप्रत्रिशिपरदल
बीचमें । बधिकरत बहुभट कीचमें ॥ <sup>दोहा</sup> ॥ बरषतशर मरदत
भटन चलो भूपकीओर। हने युधिष्ठिर द्रोणकहँ तीक्षणबाणअ
थोर ॥ काटि बाण सबभूप के काटि कठिन कोदण्ड । चलोबेग
सों गहनको द्रोणाचार्य प्रचण्ड ॥ सोरठा ॥ धृष्टद्युम्नरणधीरतेहि
क्षण बढ़िआवत भयो । भयो युद्ध गम्भीर धृष्टद्युम्न अरुद्रोण
सों ॥ चौपाई ॥ तहां द्रोण अति बिक्रम कीन्हों । सब दिशि श
पंजर करि दीन्हों ॥ द्वादश बाण शिखण्डिहि मारे। उत मौज
पहँ बीश प्रहारे ॥ हने पांच शर नकुल सुबीरहि । हने पांच
सात्वकि रणधीरहि ॥ द्वादश बाण भूप के तनमें । हन्योसात
सहदेवहि क्षनमें ॥ द्रौपदेय गण कहँ गनिनोखे । मारेतीनितीं
नि शर चोखे ॥ दशशर मारि मत्स्यपति राजहि । व्यथितकिय
परसैन दराजहि ॥ इमि हनि सबकहँ मोहित करिकै । चलो
भूप पहँ प्रणअनुसरिकै ॥ तेहिक्षण हांकि जुगन्धर राजा । भि
रत भयो बढ़ि सहित समाजा ॥ भल्लप्रहारितातिहि बधिआरय
बहुरिभूप पहँ चलो अचारय ॥ तबफिरिबढ़ि कीन्हों अवरोधा
पांचभायकेकयपतियोधा ॥ द्रुपदबिराट सात्वकीबीरा । सिंहसेन
शिविभट रणधीरा ॥ व्याघ्रदत्त येसबभटनायक । भिरेद्रोण सों
बरषतशायक ॥ तहँअतिबिक्रम करिरणचारी । सबपैअगणित
बाणप्रहारी ॥काटिअसंख्यन शरसबहीके । द्वैद्वैकरि सबके धनु
नीके ॥ बधिकै व्याघ्रदत्तबलओकहि । भेजिसिंहसेनहिंयमलो





कहि॥सबदिशिसेतुशरनकोजोरे । गयोधर्मकेरथकेधोरे ॥ दोहा॥
तेहि क्षणमें वहिसैनमें भयोशोर हे आर्य्य। गहिभूपहि लैजान
अब चाहत द्रोणाचार्य्य ॥ यहि दलमें आनँद भयो भयोशब्द
गम्भीर । भूपहिगहि ल्यावत अवशि भटआचार्य रणधीर ॥
ताही क्षणमें पार्थभट प्रबल बायुसम आय । बाणबेगबशकरि
राजहि देत भयो बिचलाय ॥ लखि पार्थहि आचार्यतजि नृप-
गहनकी आस । युद्धत्यागि रथहांकिकै आये नृपके पास ॥
तेतने में सन्ध्याभई तजितजि रण उपधार । आय जाय निज
निज शिविर किये अहार बिहार ॥
इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्बणिप्रथमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामप्रथमोऽध्यायः १
दोहा ॥ निज सुपर्बके प्रथम दिन कीनिशिमध्य बिचारि ।
द्रोण कहत भे भूप सों बिहित बचन निरधारि ॥ रोला ॥ भूप तुम
प्रथमही हम कहे करि अनुमान । धर्मके ढिगरहिहि जब
तहिं पार्थ सुभट अमान ॥ तबहि हमगहि धर्म नृप कहँदेब तुम
पहँ ल्याय । रहे पार्थहि भूप कहँनाहिं सकिहि सुरपति पाय ॥
यातेताते कहैं हम जो करौ तौन उपाय । युद्धहित कोउ उठै
पार्थहि अनतकहुं लैजाय ॥ इतैतब हम जीति सबकहँ पकरि
ल्यापहि भूप । देब तुमकहँ लहेहु जय निज मंत्रके अनुरूप ॥
द्रोण को सुनि बचन भूप त्रिगर्त्त पति गहि शोष । कहोनृपसों
पार्थको कहिपूर्ब रण कृत दोष ॥ पार्थ कीन्होंपूर्ब हठकरिबहुत
हम अपकार । करत प्रति अपकार तेहिलै अनत लरिय-
बार ॥ भाषियहि बिधि सत्यरथ अरु सत्य बरमहि आदि ।
पांच भाय त्रिगर्त्त पतिरथ अयुत सहित प्रमादि ॥ तंडकर
मालवहिके बीरधीर धुरीन । तीन सहस रथीनसह तिमि
ललितभे प्रणपीन ॥ सुभट माबेल्लकललिस्थन युतअयुत रथ-
वानें। नृप सुशर्म्मा प्रस्थलापति कियोतिमि प्रणठान ॥ और
बहु देशीय भूपति अयुत सुरथीबीर । किये सम्मतसर्ब साठि

हजार योधाधीर ॥ द्विजनकहँ देदान बिधिवत पूजिसुर समु
दाय। ज्वलनकहँ तहँ ज्वलितकरि सबकिये शपथ सचाय
हरैजो परदत्तबा निजदत्त जो ऋतुकाल। रमैनहिं निजतरु
सों रहिस्वस्थ कुमति कराल ॥ तजै जो शरलाग तनकहँ कौ
द्विजको द्वेष। करैजो अपकार दाहैग्राम जौनकुभेष ॥ श्राद्ध
दिनकरै मैथुन जौन अरुजे मूढ़। देहिपिण्डा जीव गणकहँ कौ
ममतारूढ़ ॥ औरपाप अनेक करिकरि लहै नरगति जौन
तजैरण बिनुबधे पार्थहि लहै सोगति तौन ॥ शपथकरि यहि
भांति भाषो पार्थसों भटउद्ध। चलौ दक्षिणओर काढ़िकै करहु
हमसोंयुद्ध ॥ पार्थतिनके बचनसुनि गहिक्रोध रणउत्साह। धर्म
नृपसों कहतभे करिशत्रुबध की चाह ॥ सर्ब संसप्तक करत हैं
युद्धहित आह्वान। जात हैं हमलरन तिनसों करहु शासन
दान ॥ पार्थसों इमिकहे भूपति कियोजो प्रणद्रोन। सुनेहौतुम
तौनकीजै होइजात सोन ॥ कहो पारथ सत्यजितहै परमभट
रणधीर। जियतताके तुम्हैंगहिनहिं सकिहि कोऊबीर ॥ सत्य
जित रणसिंह बिधिबश जायजब हतिअत्र। युद्धतजि तबशीघ्र
आयहु रहैंहम नृपयत्र ॥ भाषिइमि पदबन्दि नृपके पार्थ आ
शिषपाय। गयेतहँ जहँरहेभूप त्रिगर्त्तके समुदाय ॥ देखिपार्थहि
जातउतकुरुनाथ अतिहरषाय। सैनसहबढ़िभिरे नृपसों दुन्दु
भी बजवाय ॥ उतैपार्थहि देखि संसप्तक सुयोधा सर्ब। भि
दुन्दुभि कियेअतिशय घोरधुनि गहिगर्ब ॥ देखितिनकहँ मुदु
बश गुणिपार्थ शंखबजाय। कियेशंकित सहित बाहन सकल
भटन अचाय ॥ धीरधरि तेभये बरषत बाण धनुबिधिठाटि
सहस पन्द्रह बाणसों सबपार्थ दीन्हेकाटि ॥ बाणदशदश हने
पार्थहि सुभटसब तेहिठौर। पार्थतिनके हनेशायक तीनितीनि
सडौर ॥ पांच पांच सुबाणते सबहने पार्थहिफेरि। पार्थतिनके
गात द्वैद्वै बाणदीन्हें मेरि ॥ पूरिदीन्हों पार्थकोरथ डारितेशर





पूरि। यथाबारिद बारिधारन देतसरवरपूरि ॥ कृष्णपारथ सुर-
पर इमिपरे शायकघोर। यथा पुष्पित तरुनपै अलिवृन्द बि-
ततशोर ॥ काटि तिनके बाण अगणित पार्थधीर धुरीन। हने
के गातमधि बहुबाण तीक्ष्णपीन ॥ पार्थके सुकिरीट मध्य
बाहु हनिशर तीस। भयो गरजत मेघसम जयजानि बिस्वे
स ॥ काटिताको धनुष पारथ हनेतेहि बहुबान। भूपतहँ तेहि
समय तिनसों भयोअति घमसान ॥ भटसुशर्म्मा सुधनु सुरथ
धर्म्म गहिगहि टेक। हनेपार्थहि पार्थ तिनकहँ हने बाणअ-
नेक ॥ काटिधनुध्वज मारिसूतहि बिधिसुधन्वहि बीर। कियो
तिनकहँ ब्यथित तेहिक्षण पार्थ भट रणधीर ॥ लखिसुधन्वहि
आरत रथसों भरे अनुचरतासु। रहेजहँ कुरुनाथ दलसह गये
हैं सबत्रासु ॥ पार्थके शरजालसों ह्वै ब्यथित तजि उत्साह।
चहैं भट संसप्तकन तहँ भागिबे की चाह ॥ कह्यो तबहिं त्रिगर्त्त
तिकरि शपथको अनुमान। लरौंधीरज धारि जैहैं एकदिन
है प्रान ॥ बचन यह सुनि सुभट सिगरे बहुरि धीरजधारि।
लगे बरषण बाण बधबाधि जायबो निरधारि ॥ मढ़ोसंगर घोर
पारथ दिव्य अस्त्रचलाय। दियेभरि सबपर भटनके आपने
काय ॥ सूतरथ ध्वज धनुष भूषण बसन देखि अभेद। लगे
हनन परस्पर सबजानि पार्थ अखेद ॥ जानिकै सबपार्थ निज
मारिगहि गहिमोद। दुन्दुभी बजवाय बहुनृप लगेकरन
मोद ॥ सुभट अगणित पार्थ सों भिरिदये शरसों छाय।
पारथ तुरँग तहँनहिं परेनेकु लखाय ॥ कहे तेहिक्षणपार्थ
यदुनाथ ह्वै अतिखिन्न। जियतहौ कै नहीं कै तुमभये रथ
भिन्न ॥ कृष्णके ये बचन सुनिकै पार्थ अतिअनखाय। अस्त्र
वायव्य तजिकै दयेमारुतछाय ॥ उड़ेशर संसप्तकनके पर-
सब ओर। तुरँग गज रथ सुभट लागे भ्रमण सभय
शोर ॥ बाहुपग कटिशीश जानूभटन को तेहिकाल। भयो

काटत शरनसों तहँपार्थ भटबिकराल ॥ धनुष ध्वजकर गजन
के अरुहयन केशिरपाय । काटि दीन्हींपाटि महिशर रुधिरको
सरसाय ॥ इतैद्रोणाचार्य्य बिरचे बिशद गारुड़ब्यूह । राखि
बिधिवत अंगप्रति अति रथी योधा जूह ॥ लसे गारुड़ ब्यूह
को मुख आपु द्रोणाचार्य्य । लसेबन्धुन सहित शिरह्वै भूप
गुणि जयकार्य्य ॥ कृपाचार्य्य सुबीर अरु कृतबर्म भूपसुभेश ।
लसेयोधन सहित गारुड़ ब्यूह के चखदेश ॥ भूत शर्माक्षेम-
शर्माअरु नृपति करकर्ष । यवनसक कम्बोजसिंहलअरुकालिंग
सहर्ष ॥ शूरसेन अभीर कैकय दरदभट समुदाय । लसे गारुड़
ब्यूहको ह्वैग्रीव धनुषचढ़ाय ॥ शल्य भूरिश्रवा बाह्लीक सो-
मदत्त नरेश । एक अक्षौहिणि सैनसह लसेदहिने देश ॥ नृप
सुदक्षिण बेद अरु अनुबिन्दु नृप सहसैन । बामदिशि होद्रोण
को सुतबिदित भट जगजैन ॥ मद्रमागध पौंड्र अरु सांबष्ट अरु
गान्धार । पार्बती भट पीड़ि थरमधि लसेरण करतार । कर्ण
बैकर्त्तन सपुत्र सज्ञातिसैनसमेत । लसे गारुड़ब्यूहको ह्वै पुच्छ
गर्बनिकेत ॥ जयद्रथसम्पाति भोजअरु भीमरथवृषपर्ब । क्रा-
थनैषध भूमिजय उरभये सदल सगर्ब ॥ देखि गारुड़ब्यूह इत
सेनाबिपति करिऊह । रचोबिधिवत अर्द्धचन्द्राकार अनुपम
ब्यूह ॥ देखिगारुड़ ब्यूह इतको धर्मनृपति सशंक । गहे धृष्ट-
द्युम्न सुबीरसों इमि कहे तत्रसशंक ॥ गहैहमाहिं न द्रोण जाते
करेहुसो उपचार । बचन यहसुनि कह्यो नृपसों धृष्टद्युम्न उदार ॥
हमहिं जीवत तुम्हहिं गहिनाहिं सकिहि द्रोण कदापि । आजु
महिमा द्रोणकी करियुद्ध देउँ उथापि ॥ भाषिइमि बजवाइ
दुन्दुभि सैनसह बढ़िबीर । द्रोणसों भिरिलरन लागो द्रुपदसुत
रणधीर ॥ दुहूं दिशिसों चलनलागेशक्तिशरदुहुँओर । दुहूंदि-
शिके भटनसों तहँमचोसंगरघोर ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नकहँद्रोणसों
युद्धकरत तहँदेखि । धृष्टद्युम्नसों भिरतभो तासुतदुर्मुखतेखि ॥





तेयुग योधा उद्भट कियेतहां अतियुद्ध । जीति दुर्मुखहि द्रोण
सों भिरोद्रुपद सुतक्रुद्ध ॥ फिरि दुर्मुख अतिक्रोधकरि बरषि
बज्रसम बान । धृष्टद्युम्न सों भिरिगयो करत कठिन घमसान ॥
चौपाई ॥ द्रोणाचार्य्य कोपि तेहि पल में । पारे प्रलय पाण्डवी
दलमें ॥ भिरेपदातिनसों पदचारी । भिरेरथिनसों रथी प्रचारी ॥
भिरे हयस्थनसों हय सादी । भिरे गजस्थ गजस्थ प्रमादी ॥
हांकिहांकि बढ़िबढ़ि भिरिभिरिकै । लागेकरनयुद्धथिरिथिरिकै ॥
तोमर शक्ति भल्ल अनियारे । भिन्दिपाल आदिक भयहारे ॥
आयुध बिबिध बिबिध बिधि मारण । लगे बीरपर ब्यूह बिदा-
रण ॥ कितने द्विरदअभट ह्वैह्वैकै । लगेलरन सम्मुख ज्वैज्वै
कै ॥ जुटै कुम्भ कुम्भनसों गरजें । हटि हटाय अतिबल सों
तरजें ॥ गहिगहि करन करनसों झटकैं । मारैं रदन रदनसों
हटकैं ॥ अभिरैं रदन रदनसों जबहीं । प्रगटै अगिनि रदनसों
तबहीं ॥ रदक्षत युत कितने गज कोहे । झरना सहित शैल
समसोहे ॥ कितने हटिडरि चिघरत भागे । गरजत किते जात
सँग लागे ॥ इमि निज निज अधिपनके बैरण । लरे अनेक
तुरँग मद मैरण ॥ यहिबिधि मचेयुद्ध हे आरय । चलो धर्मकहँ
गहन अचारय ॥ बाणवृष्टि करि ब्यूह बिदारण । मरदत भटन
भूरिभय भारण ॥ मण्डल समको दण्डहि कीन्हें । फिरत चक्र
सम गुरुता लीन्हें ॥ दोहा ॥ इमि बिप्रहि आवत निरखि नृपति
युधिष्ठिर कोपि । बाणवृष्टिकरि द्रोणकहँ दयेनिमिष में तोपि ॥
काटिशरन सों सकल शर भयो भयानकरूप । चलो द्रोण तेहि
क्षण उतै हाहाधुनि भोभूप ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षणह्वै अतिचण्ड
सुभट सत्यजित बेगसों । टंकारतको दण्ड भिरत भयो बरषत
बिशिख ॥ चौपाई ॥ भिरो सत्यजित द्विजसों तैसे । भिरो वृत्र
बासवसों जैसे ॥ दोऊ बीरबांकुरे गाये । मत्तमतंग सरिस रिस
छाये ॥ धीर धुरीणधनुषबिधिचरिचारि । तोमरभल्लनकी झरि

करिकरि ॥ भरे गर्ब भिरि सहित समाजा । घोर युद्ध कीन्हों
सुनुराजा ॥ बरषि सत्यजित शरबर धरके । काटि अनगिने शर
द्विज बरके ॥ पांचसुबाण सूतकहँ मारे । दशदश शर सब हयन
प्रहारे ॥ उभय पार्श्व रक्षित के तनमें । दशदश शर मारे तेहि
क्षनमें ॥ बहुरि बिरचि बाणन के सेतुहि । काटतभयोद्रोणके
केतुहि ॥ सोलखि द्रोण महारिस लीन्हें । शरसों तासु धनुष
द्वै कीन्हें ॥ भिरि दश बाण परम अनियारे । बीर सत्यजित के
तनमारे ॥ सोधनु त्यागि औरधनु गहिकै । नृप शरतीस हन्यो
थिरुकहिकै ॥ तेहिक्षण एकभट उतसों बढ़िकै । भिरो द्रोणसों
इतलखु पढ़िकै॥ अतिशयबाण वृष्टिकरितुरमें । हन्योसाठिशर
द्विजके उरमें ॥ तेहिक्षण रिसकरि द्रोणाचारय । भयोकाल सम
ताबध कारय ॥ तिनदूनौं भटके धनुनोखे । काटतभयो मारि
शर चोखे ॥ फिरिहनि एकबाण मजबूतहि । भेज्यो यमपुर वृक
के सूतहि ॥ दोहा ॥ करि अतिशय करलाघवै बधिसब हयबल
ओक । शरक्षुरप्रसों वृकहिबधि देतभयोसुरलोक ॥ तुरितसत्य-
जित और धनुगहिहनि अगणितबान । तुरँगसूतसह द्रोणकहँ
बेधतभोबलवान॥ तोमर ॥ तेहिसमयद्रोणाचार्य्य । बधतासुगुणि
जय कार्य्य ॥ शरभल्लको समुदाय । हनिदियेतापैछाय ॥ फिरि
धनुषताकोकाटि ।मोहनतबहुशरडाटि ॥ गहिसत्यजितधनुऔर।
मोहनतबाणसडौर ॥ तबद्रोणकरि अतिकोप । गहितासु बधको
चोप ॥ शरअर्द्धचंद्राकार । हनिबधेतेहितेहिबार ॥ जबसत्यजित
रणधीर । मरिगिरो महिपैबीर ॥ तेहिसमय सबपांचाल । भेव्य-
थित बिकल बेहाल ॥ दोहा ॥ सत्य जितहि निपतत निरखि
कै नृपधर्म बिरूप । बैठियामिनी तुरँग पहँ गयेदूरिकढ़ि भूप ॥
चेदि मत्स्य कारूषपति अरु केकय पांचाल । अरु कोशलपति
द्रोणसों भिरतभये तेहिकाल ॥ तिनसबके माधि नृपतहां लसो
द्रोण भटनाह । लसत प्रज्वलित ज्वलन जिमि महागहन बन





ह ॥ चौपाई ॥ मत्स्यराज को अनुज सुबीर । शतानीक अनु-
न रणधीर ॥ सूत तुरँग अरु द्विजके तनमें । हनत भयो षट
र तेहिक्षनमें ॥ फिरिसगर्बकै घनसम नादित । द्रोणहिकीन्हों
तासों छादित ॥ सबशरकाटि द्रोणअति रोखो । बध्योताहि
तिशर अतिचोखो ॥ भगे मत्स्यपतिके भटसिगरे । गणे रहे
बली अदिगरे ॥ पुरुषसिंह द्विजबरकी दपटैं । दावानलसम
की लपटैं ॥ सहि न सके उतके भटएकौ । थिरनसके धरि
रज नेकौ ॥ प्रलयकालके रुद्रसमाना । लसतभयो तहँ द्रोण
माना ॥ हय गज रथ भट अगणित काटे । रुण्डमुण्ड सों
महि पाटे ॥ बरधित कियो रुधिरकी सरिता । निज बिक्रम
रिवरकी चरिता ॥ निज बिक्रमकी गुरुतालीन्हें । सबथरपर
गुधरसटकीन्हें ॥ यहिबिधि निजदल मरदित देखी । सदल
न्धु धर्मनृप तेखी ॥ घनसमूह समबढ़ि अतिबलसों । भिरे
ह द्विजराज सदलसों ॥ घोरयुद्ध माचो नृपतिनसों । पृथक्
क् कहि निबैरेकिनसों ॥ पांचबाण अतिशयअनियारे । बीर
लण्डी द्रोणहिमारे ॥ पांचबाणबसुदानप्रहारे । सात्वकि शत
मारिप्रचारे ॥ दोहा ॥ उतमौजाशरतीनि अरुयुधांमन्युबसुबान ।
बाण मारतभयो क्षात्रधर्म बलवान ॥ धृष्टद्युम्न दशबाण
क्षत्रदेव शरसात । तीनि बाण मारतभयो चेकितान दृढ़
त ॥ द्वादशशर मारतभयो धर्मभूप कैचण्ड । काटे तिनके
बिशिख द्रोण कर्षिको दण्ड ॥ सोरठा ॥ बिरचि शरनको सेतु
बीरनपहँ द्रोणतहँ । भटदृढ़सेन सचेतु ताहिबधो हनिवर
शिख ॥ सबके अगणितबान काटिकाटि सबकहँ बिशिख ।
निवबाण अमान बधतभयो भट क्षेमकहँ ॥ महिबरी ॥ हनि
खंडिहि बाणद्वादश बीस उतमौजहि हने । नृप क्षत्रधर्महि
तमो शर असी अतिअनुपम बने ॥ बसुदान कहँ हनिभल्ल
क्षण बधितुरित यमपुर दयो । बधिक्षत्रदेवहि भल्लशरसों

गरजि घनसम मुदलयो ॥ नृपभट सुदक्षिण बीरतेहि तकिवा
छब्बिस हनतभो । हनियुधा मन्युहि बाण चौंसठि सेतु शर
तनतभो ॥ भट सात्वकिहि हनि तीसशर द्विजराज घनस
गरजिकै । सब भटनपहँ इमिबाण बरषत चलो नृपपहँ तर
कै ॥ दोहा ॥ इमिद्रोणहि आवत निरखि भूपभूरि भयपाय।
दूरि कढ़िबेगसों चंचल तुरँगचलाय ॥ तेहिक्षण नृप पांचा
को सुवन सुरथहि बढ़ाय । भिरोद्रोणसों हांकिकै बरषत बा
सचाय ॥ हतिताके सूतहि तहां काटिधनुष बधिताहि । मर्द
भो सब भटन कहँ द्रोणसुभट जयचाहि ॥ चौपाई ॥ उड़ैबायुब
ह्वै तृणजैसे । भयेपराजित परभटतैसे ॥ द्विजके शरभर
तेहि पलमें । हाहाकार मचो परदलमें ॥ यहसुनि वृद्धभूप ल
आनँद । संजयसों बूझै सुनुमानद ॥ इविधिरुद्र समद्रोण
देखी । केभट तहां थिरे अवरेखी ॥ कुरुपति लसो मोदल
कैसो । अबकहु शीघ्र सूतसुत तैसो ॥ संजय कह्यो सुनो ते
क्षनमें । कुरुपति ह्वै अतिमोदित मनमें ॥ कह्यो कर्णसों य
पलमाहीं । द्विजसों जूटिसकत कोउनाहीं ॥ अगिनि अल
अनगिने देखी । भगेंकरिनि जिमि भयसों भेखी ॥ तिमिल
बाणजाल द्विजवरके । थिरि न सकत अबयोधा परके ॥ जि
सिंहहि लखि मृगगण भाजत । भगेजात तिमिभयसों पागत
थिरिहैं ये लहि निजनिज ठीहा । नहिंफिरिहैं गाहिरणकीईह
सगरब भीम क्रोधगहि गाढ़ो । है अबलरत अकेलो ठाढ़ो
देखियाहि मोमन मुदरांचत । बधोजात अबयह नहिंबांचत
यहसुनि कर्णकहो सुनुराजा । भीम बधिहि सबसेन समाजा
बधै भीमकहँ को असयोधा । करिहि भीमकर को अवरोध
पाण्डव सब अजेय अनुमानो । बिचलित लखिमति निज
जानो ॥ दोहा ॥ सुनिगरजनि भट भीमकी क्षणमेंफिरि सबवी
तोदलमें चाहत प्रलय पारण सबरणधीर ॥ परन चहततैं द्रो





दुसह युद्धकोभार । तातेढिगचलि द्रोणको रक्षणकरो सवार ॥
सुनिकर्णके बचनये दुर्योधनसहसैन । शीघ्रद्रोणके ढिगगये
दुभिभोरिसचैन ॥ चौपाई ॥ इतनेमें पांडवकीसेना । फिरतभई दु-
द जगजेना ॥ सात्वकिआदि बीरभटरूरे । चलेद्रोण पहँ
मरषपूरे ॥ इतकेसब योधाजयऊटे । पृथक्पृथक तिनसों इमि
टे।तो सुत दुर्मुख भट रणचारी । भिरो भीमसों धनुटंकारी ॥
त्वकि सों कृतबरमा भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥
रो क्षत्रधर्मा सों राजा । नृपति जयद्रथ सहित समाजा ॥
खि युयुत्सुकहँ भिरो प्रचारी । तोसुत भट सुबाहु धनुधारी ॥
रि अतियुद्ध युयुत्सु अखेदे । शर सों तासु उभयभुजछेदे ॥
रो युधिष्ठिर सों रण कर्कस । सल्लभूप रणधीर अधोर्कस ॥
बाह्लीक सदलबढ़ि हदसों । भिरो ससैन महीप द्रुपदसों ॥
बिन्द अनु बिन्दरिसारे । भिरि बिराटसों रणबिस्तारे ॥ श-
तीकजोसुवन नकुलको । तासों भूतकर्म भिरि पुलको ॥ शता-
कताको बध करिकै । मर्दतभो मम दल रणचरिकै ॥ जोसुत
मबिदित भट तासों । भिरो बिबिंशति क्रोध महासों ॥ श्रुति-
मासों भिरि रिस लीन्हे । चित्रसेन अति संगर कीन्हे ॥ नृप
ति बिन्ध्य विदित जयकामा । तासों अभिरो अश्वत्थामा ॥
॥ अर्जुन सुत श्रुतिकीर्त्ति जो तासों भिरोप्रचारि । दुःशा-
नको सुत बरषि शायक धनुटंकारि ॥ तासु सूत ध्वज धनुष
हँ तीनि बाण सों काटि । अर्जुनको सुत द्रोणपहँ चलो बीर
धि ठाटि ॥ सोरठा ॥ तब लक्ष्मण रणधीर बढ़ि ताकहँ आड़त
सो । लरिकाट्यो बर बीर लक्ष्मणको ध्वजअरुधनुष ॥ तब
क्ष्मण बलवान आन धनुष गहिक्रोधकरि । कियो कठिन घम-
सान श्रुति करमा रणधीरसों ॥ चौपाई ॥ मारु मारु धरु मार्‍यो
रसों । भिरो बिकर्ण शिखंडी भटसों ॥ अंगदबीर भिरोअति
लसों । उत मौजा नरनाह सदलसों ॥ पनी पुहुमिपालक पुर-

जितसों । भिरो दर्पटि दुर्मुखभट इतसों ॥ दुर्मुखके भूमधिहि
शायक । कियो सनाल कमलमुख लायक ॥ पांचभाय नृपके
य पति सों । भिरो ससैन कर्ण अतिबलसों ॥ तिन्हैंकरण करण
हि ते चीन्हे । शर घनमें गोपित करि दीन्हे ॥ दुर्जय भिरोनी
सों राजा । जयत्सेनसों बिजयसमाजा ॥ तोसुतजयभटअनुप
योधा । कियो काशिपतिको अवरोधा ॥ क्षेमधूर्ति अरु वृह
सुबाई । सात्वकिसों भिरि कियो लराई ॥ भिरो अम्बष्ट भूप स
चावन । चेदिराज रणद्वन्द मचावन ॥ चेदिराज सों लरिअ
जिदिकै । गिरो अम्बष्ट शरन सों भिदिकै ॥ बार्धक्षेमसों भि
प्रचारी । कृपाचार्य्य अनुपम रणचारी ॥ भिरोभूप मणिमन
बलीसों । भूरिश्रवा नृप भांति भलीसों ॥ भूरिश्रवाकाटि धनु
तासू । काटत भयो छत्रध्वज आसू ॥ काटि पताकहि घनस
गरज्यो । बधि सूतहि तड़ितासम तरज्यो ॥ तब मणिमन्तभू
असिगहिकै । कूदो रथसों थिरु थिरुकहिकै ॥ दोहा ॥ असिल
बध्यो तुरंगसब अरु सूतहि नरनाह । तबहिंकूदि भूरिश्रवागय
और रथमाह ॥ पांडवभूपसों भिरतभो भट वृषसेन ससैन।घो
युद्ध कीन्हों तहां ते दोऊ दलजैन ॥ भिरो घटोत्कच असुरसों
असुर अलम्बुषबीर । घोरयुद्ध कीन्हों तहां ते दोऊ रणधीर
यहि बिधि द्वन्दहजार जुटि कीन्हों युद्धअपार । पृथक्पृथक्
सो सब बरणिसकै भूप कोपार ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धनरेशसों
जय सों बूझतभये । इबिधि जूटि तेहि देश कीन्हों कैसो युद्ध
सब ॥ संजयउवाच ॥ चौपाई॥ यहि बिधि जूझे सुभट समाजा।भग
जानीक सह बढ़ि कुरुराजा ॥ सगरब चलो भीमपहँ तैसे।चले
जलद जुरिबृज पहँ जैसे ॥ भूपहि निरखि भीम धनुकरषत
सम्मुख भयो भूरि शर बरषत ॥ भीमसेनकी शरकी बरषा
सहिनसको गजदलगहि धरषा ॥ बहुगज भागिचलेभय पूरे
जिमि मारुत बश ह्वै घनरूरे ॥ गजदल बिचलत लखिदु





धन। अतिरिस गहिकरि धनु बिधि शोधन ॥ भीमसेनकहँबहु
शर मारे । जेतरु पाहनबेधनहारे ॥ भीमसेन तब अति रिस
कीन्हे । नृपहि शरनसों छादित कीन्हे ॥ काटि धनुष ध्वजछत्र-
हिक्षनमें । बहुशर हने भूपके तनमें ॥ दुर्योधनहि बिकलतहँ
देखी । बंगाधिपतिभूप अति लेखी ॥ मैगलमत्तबढ़ायप्रचारत ।
भिरो भीमसों धनु टंकारत ॥ तेहि लखि भीम बिशिख अनि-
वारे । तोसु द्विरदके शिरमधि मारे ॥ लागेबाण द्विरदशिरधुनि
कै । गिरोभूमिपै आरत धुनिकै ॥ मैगलगिरो भूमिपहँ जबलों ।
भीमबधे तेहि भूपहितबलों ॥ नृपहि मरतलखि नृपके अंगी ।
भागिचलेमरदत निजसंगी ॥ भूपहि तेहिक्षण भीमप्रमाथी ।
बधे असंख्यन भट हय हाथी ॥ दोहा ॥ गजानीक बिचलतनि-
लखि असुर राज भगदत । चलो गरजिकै भीमपहँ चंचलकरि
गजमत्त॥कसि मस्तकहि बितुंडसोगरजत शुंडउठाय। धायजाय
[...]पायसों बध्यो तुरग समुदाय ॥ बधि तुरंग महिरथ मरदि
तब गरजो गजघोर । तबहिं भीमगे द्विरद के पिछिले पगकी
ओर ॥ चौपाई ॥ लगो पिछौंहे मूक प्रहारण। घूमन लगो द्विरद
[...]धारण ॥ फिरो चक्र सम मैगल जिमि जिमि । तासँग
फिरो वृकोदर तिमि तिमि ॥ यहिबिधि घारिकघूमि रणकर्कश।
कूदि सामने गयो अधर्कश ॥ तबकर कुण्डलमधि तेहि करि
कै । पगसों हनन लगो गज अरिकै॥ तब गहि शुण्ड घूमि सो
भटवर । गयो मत्त मैगल के उत्तर ॥ तेहिक्षण शोरभयो वहि
दलमें । भीमहिं बध्यो द्विरद यहिपलमें ॥ सो सुनि धर्म शोच
सों बाढ़िकै । घेरयो गजहि रथिन सह बढ़िकै ॥ सहसन बीर
[...]यो उतकरषे । सगज भूप पहँ शायक बरषे ॥ तेहिक्षण नृप
अंकुशकेचारण । किये असंख्य शरनकेबाण ॥ चलोबढ़ाय
द्विरद भयछावन । पगसों चाहि रथिनमरदावन ॥ तब निज
द्विरद बढ़ाय सुबीरा । भिरो दशार्णाधिप रणधीरा ॥ प्राग्ज्यो-

तिष बरबलसों पूरण । बधै अरिहि जो रणमें तूरण ॥ भिरि
भे लरत द्विरदते तैसे । लरैं सपक्ष शैल युग जैसे ॥ गजप्रमत्त
भगदत्त असुरको । ताके गजहि बध्यो बल पुरको ॥ हनि भग-
दत्त सातशर रूरे । बधि दशार्णपति कहँ मुद पूरे ॥ उतके म-
हारथी सब दिसिसों । हने असंख्यन शरभरि रिसिसों ॥ लगे
शरन सहनृप गज कोहे । लघु तरुबन सह गिरिसम सोहे ॥
दोहा ॥ पाय इशारा भूपको बढ़ि सो गजबल भूरि । सहय सा-
त्वकी के रथहि फेंकि देत भो दूरि ॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों
सात्वकिबीर उदण्ड । राजि और रथपै भयो टंकारतकोदण्ड ॥
जेहि भटकी दिशि लखत भो नृप सो गजतेहिकाल । रथचला-
यसो दूरगो जानिकाल बिकराल ॥ रोला ॥ मारि बहुगज मर्दि
अगणित सुभट हय रथसाज । प्रलय पारतभयो परदल मध्य
सो गजराज ॥ सुभट भीम रथस्थ ह्वै तेहि समय सुरथ बढ़ा-
य । चलत भो भगदत्त नृपपहँ तजतशर दृढ़घाय ॥ देखि भी-
माहिं बली बारण शुंडमधिभरि बारि । दूरहीं सों भयो बरषत
भीमपहँ बहुधारि ॥ लगे सो जलधार ताके सुरथके हय सर्व ।
सकै नाहिं समुहायरथलै दूरि गे तजिगर्ब ॥ देखि सो रुचिपर्व
नृपरथहांकि धनुटंकारि । बिशिखबरषत भिरतभो भगदत्तसों
ललकारि ॥ रोंकितांहि सुपर्बभूपहि बज्रसम हनिबान । बेधि
हिय बधिलस्यो वृत्रहि मारि जिमि मघवान ॥ देखिसो सौभद्र
अरुसुत द्रौपदी के बीर । धृष्टकेतु युयुत्सु अरुनृप चेकितान
सुधीर ॥ भये बरषत बाण तबबढ़ि गरजिसो गजराज । गहि
युयुत्सु सुबीरको रथ कियो चूर्ण ससाज ॥ कूदि बीर युयुत्सुतब
गो औररथपहँधाय । बाणबरषतभये सबभट द्विरदपहँ भय
पाय ॥ क्रोधसों युत उग्रउन्नत करेरदशिरशुंड । चपल सब
दिशि घुमड़ि गरजत काल सदृश बितुंड ॥ सुभट उतके भीति
गहि गहि दूरिरहिफरकोल । रहे बरषत प्रबलगजपहँ बरशा-





नके गोल ॥ देखिबन मांजार कहँ जिमि करे पक्षी शोर । तथ-
उतके रथी सबरव किये रहि चहुँओर ॥ भीति पूरित निज भा-
टनको शब्द सुनि यहि ओर । अरु नृपति भगदत्त को गज
गरजकी धुनिघोर ॥ कह्यो पारथ कृष्णसों उत शब्द भीषण
होत । जानियत भगदत्त ममदल मध्य प्रलय तनोत ॥ इन्द्र
के गजराजके कुल जनित तासु मतंग । जानियतु यहि समय
मरदत सैन के सब अंग ॥ भूप वह अतिप्रबल अरु अति प्र-
बल वह गजराज । तुम्हैं बिनुउत तिन्हैं जीतै कौन सुभट स-
माज ॥ दोहा ॥ बेगि उतैअब चलहुप्रभु नातरु वह जगजैन ।
प्रलय पारियहि दिवस में बधिहि सकल ममसैन ॥ यह सुनि
केशव हांकिरथ शीघ्र चले वहिओर । लखि पीछू टेरत चले
संसप्तक भटघोर ॥ चौपाई ॥ चौदह सहस रथी बलभारे । फिर-
हुफिरहु इमि टेरिप्रचारे ॥ सो सुनि अर्जुन इत उत गुनिकै ।
रथफिरवाय भिरो धुनि धुनिकै ॥ चौदह सहस रथी अति हर-
षै । बाण असंख्य पार्थपहँ वरषै ॥ तहां पार्थ अतिकोपप्रकाशे ।
ब्रह्म अस्त्रसों सब कहँ नाशे ॥ क्षणमें तिन्हैं जीति रणजेता ।
बहुरिचलो अति सुबल निकेता ॥ तदनु सुबन्धु सुशरमाराजा ।
चलो प्रचारत सहित समाजा ॥ तब पारथ अति चिन्तित
ह्वैकै । फिरि भो भिरत धर्म निज ज्वैकै ॥ बेधि सुशरमहि सात
शरनसों । धनुध्वज काटि क्षुरप्रबरनसों ॥ बन्धुसुशरमा को
रणधीरा । सहय ससूत बध्यो तेहिबीरा ॥ देखि सुशरमा अति
रिस गहिकै । मार्यो शक्ति खरोरहु कहिकै ॥ पारथ निरखि
बाण बिधि ठाटी । तीनिबाण सों बीचहिकाटी ॥ तोमर तज्यो
कृष्ण कहँ देखी । काटो ताहि पार्थअवरेखी ॥ बहुरिअसंख्यन
शर परिहरिकै । नृपति सुशरमहि मोहित करिकै ॥ नृप आयो
ममदल कहँ कैसे । बन बरषत घन गिरिपहँ जैसे ॥ लखितेहि
साहस गहि भटएकौ । बढ़ि भिरि आड़ि सको नहिं नेकौ ॥

निपतै बाज लवा पहँ जैसे । भिरो असुर भूपति सों तैसे ॥
दोहा ॥ बज्र सदृश शरवृष्टि करि सिगरो दल बिचलाय । नृप
प्रमत्तभगदत्त पहँ देतभयो शरछाय ॥ दशहजार धनुधररथी
नृप तेहि क्षण धरिधीर । भिरि बरषेशर पार्थ पहँ घनजिमि
गिरिपहँ नीर ॥ भिरि तिनसों पारथ तहां शरदुरदिनताछाय ।
बधे असंख्यन सुभटभट अगणित दयेभगाय ॥ चौपाई ॥ लखि
भगदत्त क्रोधकरि मनमें । द्विरद बढ़ायचलो तेहि क्षनमें ॥
पारथ लखि शरपंजर कीन्हों । द्विरद प्रमत्तहि बढ़नन दीन्हों ॥
तब भगदत्त शरासन कर्ष्यो । अबिरलबाण पार्थपहँबरष्यो ॥
पार्थ काटि अगणित शरतासू । हने असंख्यन शर तेहि
आसू ॥ तिमि शर काटि हनत भो बानन । नृप भगदत्त पुरुष
पञ्चानन ॥ रथी गजी दोऊ बलधामा । यहि बिधि कियो
घोर संग्रामा ॥ मचो घोर संग्राम गरजिकै । द्विरद पार्थ पहँ
चलो तरजिकै ॥ कृष्णहांकि तब तुरग सुसजकै । रथलै गये
बामदिशि गजकै ॥ बढ़ि सम्मुखसों गजरिस लीन्हें । बहु
हय भट रथ मरदित कीन्हें ॥ सुनि धृतराष्ट्र कहो कहु तैसो ।
तदनन्तर तिन कीन्हों कैसो ॥ संजय कह्यो भूप तेहि पलमें ।
भोअतिघोर युद्ध सब दलमें ॥ भूपपार्थके शरदुहुँ दिसिसों ।
चले यथा अहि पूरित रिसिसों ॥ नृपभगदत्त प्रबलभटरोखो ।
कृष्णहि हन्यो बाण अतिचोखो ॥ नृपको धनुष काटि तब पा-
रथ । बरषत भयो बाण गुणि स्वारथ ॥ तुरित और धनु गहि
नृप मारे । चौदह तोमर अति अनियारे ॥ एक एक शर हनि
तिन सबमें । पार्थ दिये करि द्वैद्वै मगमें ॥ दोहा ॥ काटि असं-
ख्यन बाणबर मारि असंख्यन बान । मत्तद्विरद को बरम बर
काट्यो पार्थ अमान ॥ टूक टूकह्वै आयसी बरम गिरो महि
पाहि । तब बेधित भो शरनसों मैगल बिगत पनाहि ॥ तज्यो
कृष्ण पहँ शक्तिबर प्राग्ज्योतिषपति धीर । ताहि बीचहिबाण





सों काट्यो पार्थ सुवीर ॥ सोरठा ॥ बाण अनगिने काटि काटि
छत्र अरु काटि ध्वज । हने नृप गजहि डाटि पार्थ सिंह दश
बाण नख ॥ बाण अनगिने काटि साठिबाण फिरि हनतभो ।
शर धनुषबिधि ठाटि हनत भयो फिरि उभय शर ॥ चौपाई ॥
तेहि सधीर तहँ धीरधुरीना । नृप भगदत्त सुभट कालीना ॥
वैष्णवत मंत्र सुबैष्णव पढ़िकै । बर प्रभाव अंकुश मधि मढ़ि-
कै ॥ छोड़ारत पारथ पै तैसे । बासव बज्र वृत्रकहँजैसे ॥ कृष्ण
लखि तेहि अनरथ चीन्हों । ह्वै सन्मुख निज उरपहँ लीन्हो ॥
तेहि परसि सोअस्त्र सुहायो । बैजयन्ति स्रजह्वै छबिछायो ॥
लखि पारथभटअभिमानी । कह्यो कृष्णसों अनुचितजानी ॥
नाहिं अछत प्रणताजि हे आरय । कतकीन्हों तुम ऐसोकारय ॥
मैं अशक्य जब होब गुसाईं । तब तुम उचित किहेहु यहि
ठाईं ॥ यहसुनि कृष्ण मोदसों पागे । अस्त्र प्रभाव बतावनला-
गे ॥ तात सुनहु यह कथा सोहावनि । है मम चारिमूर्त्ति मन
भावनि ॥ करै उग्रतप महिपै एका । एकलखै सत असत बिबे-
का ॥ एक लोकके आश्रित ह्वैकै । करैं कर्म निज मायाज्वैकै ॥
सहसचौकड़ी युगयक सोवति । जागि बहुरि जगरचि मुद मो-
वति ॥ सोवह मूर्त्ति जगतको नायक । जे बरयोग्य तिन्हैं बर-
दायक ॥ तेहि तेहि समय देतबर देखी । मांगत भई भूमिमुद
लेखी ॥ दानव देवतादि गण सबसों । होइ अबध्य सुवनसम
तबसों ॥ दोहा ॥ नरकासुर सुत तासु तेहि ह्वै प्रसन्न तेहि
काल । अस्त्र सुबैष्णव दीन हम सो यह अस्त्र बिशाल ॥ याके
ह्वैवे योगनहिं और तिहूंपुर माह । ताते हम याकहँ कियो
व्यर्थ सुनो भटनाह ॥ यथा पूर्व नरकासुरहि हम मास्यो है
तात । तथाबधो तुम याहि अब बेधि शरनसों गात ॥ सोरठा ॥
सुनि केशवके बैन पार्थ ऐनबल बुद्धिको । धनु टंकारि सचैन
हतभयो शरसेतु फिरि ॥ छाय असंख्यन बान मारि असंख्यन

बाणवर । पारथवीर अमान भगदत्तहि व्याकुल कियो ॥ तोमर
तुहँ बरषि शर रणधीर । भटपार्थ अनुपमवीर ॥ अतिदी
तीक्षण बान । सविधान करि सन्धान ॥ अति दीह भल्ल
भौन । गजमत्तनृपकोजौन ॥ तकितासु कुम्भनकेर । मधिभा
उन्नतफेर ॥ भोहनतबज्रसमान । सोधस्यो पुरुषप्रमान ॥ बी
चलनको तेहि देश । नृपदयो गजहिनिदेश ॥ गजदयो शास
टारि । जिमि दारदीकी नारि ॥ करि आर्त्तधुनि बलवान । ग
गिरतभो तजिप्रान ॥ दोहा ॥ चख उघरन के हेतु नृप लट
पलन उठाय । रहत रह्यो बांधे सदा सुबसन पट्टबनाय ॥ सु
नभबाणी सुरनकी ताहि बाणसोंकाटि । हन्यो भूपके हृदय मा
भल्लपार्थ भटडाटि ॥ अर्द्धचन्द्र शरमारि भिरि धरसोंशीश
दारि । भटप्रमत्तभगदत्तकहँ दीन्हों महिपैडारि ॥ सोरठा ॥ हतिभ
दत्तहि तत्र धीर धनुर्द्धर पार्थभट । अगणित सुभटएकत्र का
भयो यमलोकमें ॥ चौपाई ॥ तदनुबीर गान्धार राज सुत । पा
जयकर बर तेजमयुत ॥ निजदल दलत देखि तेहि क्षनमें । श
काचल गरबित ह्वैमनमें ॥ बरषतबाण सदलबाढ़िभिरिकै । ल
लरन पारथसों थिरिकै ॥ सौबल ते युगबंधु अमाना । कीन्हेंत
कठिन घमसाना ॥ रचिशरजाल पार्थतहँ तेहिक्षन । हने अ
रुयन शर सबके तन ॥ गरजि सिंहसम धनुबिधि ठाटे । हय
सूतवृषकके काटे ॥ वृषकाचलके समबल भारे । सुभट पांच
तेहिक्षण मारे ॥ निज रथ त्यागि बिचरि रणपथपै । वृषका
काचलके रथपै ॥ एक रथस्थ बन्धुदोउ बीरा । घोरयुद्ध की
रणधीरा ॥ इनबहु बाण पार्थ पहँडारे । पार्थ इन्हें अगणि
शर मारे ॥ ये बहुबाण पार्थके छेदे । इनके बहुशर पारथभेदे
क्षणमें पार्थ बाण झरि करिकै । बेधे तिन्हें गिरे ते मरिकै ॥
मातुलन प्राण बिनु ज्वैकै । रुदन किये तौ सुतमुद ग्वैकै ॥ नि
बन्धुन कहँ निपतित देखी । माया कियो शकुनि अति तेहि





युध भेद जगतमें जेते । लागे गिरन पार्थपहँ तेते ॥ भूत
पिशाच सिद्ध वृक व्याला । रीछ शृगालगीध बिकराला ॥ करत
र धुनिभरि अति रिसि सों । चले धनंजय पहँ सब दिसिसों ॥
॥ दिव्य अस्त्रसों पार्थ तब माया सकलबिनाशि । शरबर-
भो शकुनि पहँ धनुष बिधान प्रकाशि ॥ सो लखि बिरची
जलमयी माया शकुनि सचाय । अर्जुनकेरथपै गयो महाघोर
छाय ॥ ज्योति शस्त्रसों पार्थ तब लोप करतभो तासु । श-
नि देखि सो जलमयी माया कीन्हों आसु ॥ तब आदित्य
अस्त्रको अर्जुन कियो प्रयोग । भो लोपित जलधारसब उत
पे सबलोग ॥ इमि निज माया ब्यर्थ लखि लहिबाणन को
त । चढ़ि सुअश्वपै भगतभो शकुनिबीर बिख्यात ॥ सोरठा ॥
क्षण पारथबीर कालरुद्र सम चण्डह्वै । बरषिबाण रण-
र दलत भयो दलकौरवी ॥ महिखरी ॥ तेहि समय इतके
भट सिगरे बिकलह्वै अति भयपगे । तजि सखास्वामीपिता
न हांकि गजरथ हय भगे ॥ बहुगये ढिग कुरुनाथके बहु
द्विजके ढिग गये । बहुगये काढ़िअति दूरि फिरि नाहिंलखे
अतिभय मये ॥ करि श्रुवासम बरबाण अगणित पार्थसब
पावनकै । रण अग्नि रणमहँ कुण्ड मधिबहुसुभट दीन्हें हवन
॥ करिचक्र समरथ धनुष इत सबठौर तेहिबिचरत तहां ।
हं भये सम्मुख सुभट कोऊ भगेहे निरखत जहां ॥ गजतुरग
गणित सुभट रथशर बरषि पारथ बधतभो । तेहि समयनृप
सैनमधि अतिप्रलय पूरणनधतभो ॥ यहि भांति तौदलमर्दि
पुन बहुरिदक्षिण दिशिगये । गाण्डीव धनु धुनिदुसहधुनि
सर्प समशर भरिदये ॥ इतसैन आरत देखिद्रोणाचार्य्य
ति कोपित भये । निज धनुष चक्रसमान करि परसैन मधि
भरि दये ॥ गजतुरग भट समुदाय बेधत बधत शरपंजर
भोचलत धर्मनरेश पहँ तेहि गहनको मन प्रणधरे ॥ दोहा ॥

तेहिक्षण सात्वकि भीम अरु धृष्टद्युम्नरणधीर । चलेबेगसों
द्रोण पहँ सहित सुदल नृपबीर ॥ यहि बिधि आवत द्रोणपहँ
निरखिपाण्डवी सैन । सदल गयोढिग द्रोणके तौ सुतनृपबल
ऐन ॥ बिपिन बासको दुखसमुझि तजिजीवनकी आस । पाण्ड
व तेहिक्षण करत भे अतिशय युद्ध प्रयास ॥ सोरठा ॥ जैसोयु
महान नहिं वृद्धन देख्यो सुन्यो । भो तैसो घमसान सुनो भू
तेहिक्षण तहां ॥ चौपाई ॥ कम्पित भई भूमि तेहि पलमें । क
असंख्यन भट दुहुँदल में ॥ परदल दलतद्रोण जहँ फिरिकै
आड़त धृष्टद्युम्न तहँ भिरिकै ॥ तिहि क्षण नील नृपति भटभ
री । मरदतभो ममदल रणचारी ॥ निज दल मरदत नीलहि
देखी । टेरिकह्यो इमि द्विजसुत तेखी ॥ हे नृपनील आइभि
मोसों । मैंजयलेन चहतहौं तोसों ॥ यह सुनि नील भटनपति
हरिकै । भिरो द्रोण सुतसों शर झरिकै ॥ तहँ द्विजसुत क
लाघव ठाट्यो । धनु ध्वजछत्र नृपतिको काट्यो ॥ तबगहिख
चर्म रथ तजिकै । नृपति बिप्रपहँ चलो गरजिकै ॥ तिमिआव
लखि अश्वत्थामा । मारि भल्ल शर अति अभिरामा ॥ शि
बिनु कियो नीलके गातहि । दियो अतुल आनँद तौ तातहि
लखि सबपाण्डव अतिदुख लीन्हें । द्रोण तनय परशर भ
कीन्हें ॥ भीम गरजि निज धनुटंकारे । द्रोणहि साठि बाण
मारे ॥ दशशर हन्यो कर्णके तनमें । भीमभीम भटगर्बितमनमें
छब्बिसबाण द्रोण तेहिमारे । द्वादश शरबर करणप्रहारे ॥ स
सुबाण द्रोण सुत दीन्हें । षटशर हनि कुरुपति मुद लीन्हें
अगणित बाण काटि तिन केरे । भीम तिन्हें शर हने घनेरे
दोहा ॥ तेहिक्षण धर्मनरेश कर अनुशासन सुनिधाय । आव
भे ढिगभीमके घनेसुभट समुदाय ॥ इतके उतके अतिरथीब
णे बीरअमान।गरजिगरजि भिरिभिरि तहां कियेघोरघमसान
सोरठा ॥ यथाघेरिघहराय बारिबूंदबरषतजलद । तथासुभटस





धायटेरिटेरिबरषेबिशिख ॥ चौपाई ॥ तोमर शक्तिभल्लअनियारे ।
दापरश्वधशरभय भारे ॥ खड्ग शतघ्नी आदिकरूरे । आयुध
दुहूँदिशिपूरे ॥ गजहय सुभट असंख्यन मारिकै । शोभित
रुधिर मधिपरिकै ॥ बहुभटभिरि मूर्च्छित ह्वैगिरहीं । चेति
रि फिरिफिरि उठिलरहीं ॥ मारेमरे किते हयसादी । मरेअन-
ते गजीप्रमादी ॥ मरेअसंख्य रथी तेहिक्षणमें । हाहाकार
तभो रणमें ॥ उमगिबही शोणितकी तरणी । रुण्ड मुण्ड
यमहा बिबरणी ॥ नृप तेहिक्षण सेनापति उतको । बिदित
र अनुपम युत बलको ॥ सदल द्रोणके ढिगनियरानो । बर-
दिव्यअस्त्र मनमानो ॥ सो लखिनृप अरु अश्वत्थामा ।
शल्य भूपति बलधामा ॥ भूपबिन्द अनुबिन्द ससाज ।
जगजैन जयद्रथ राजा ॥ बरषत बाण मंत्रपढ़ि पढ़िकै ।
सों भिरतभये बढ़िबढ़िकै ॥ तहांद्रोण अतिबिक्रम कीन्हों ।
गणित भटन कालपुर दीन्हों ॥ ताहीक्षण अर्जुन भटगायो ।
सप्तकन जीति तहँआयो ॥ बिरचि बाणपंजर सब थलमें ।
खोप्रलय तावकी दलमें ॥ प्रति सन्धान अनागिनी सेना ।
रतभयो बीर जगजेना ॥ दोहा ॥ व्याकुल ह्वै इतके सुभट
न धीरज धारि । भागिकरणके ढिग गये पाहकप्रबल बि-
रि ॥ सोलखि करण प्रचण्डभट कोदण्डहि टंकारि । भिरत
भट पार्थसों बरषत बाणप्रचारि ॥ काटिअनागिने बाणकरि
रथक्रोध अमेय । प्रलयकरन भटकर्णपहँ तज्योअस्त्र अग्ने-
सोरठा ॥ दिव्य सुअस्त्रचलाय दिव्यअस्त्र धारतभयो । करण
र दृढ़घाय धीरधनुर्द्धर बिदितभट ॥ प्रबलउभयरणधीर घोर
कीन्होंतहां । डारि सुअस्त्रगँभीर बारि सुअस्त्र अमोघसों ॥
॥ भीमसेन सात्यकि भटनागर । धृष्टद्युम्न दलपति बल
गर ॥ तीनि तीनि शर करणहिं मारे । जे शरपाहन बेधन-
॥ तेहिक्षण काटि पार्थके बानन । रिसकरि करण पुरुष पं-

न्चानन ॥ काटि शरनसों तिनकेचापन । लागेबाण पार्थपर था-
पन ॥ तबते भटअति रिस बिस्तारी । तीनि सुशक्ति करणपहँ
डारी ॥ तीनि तीनि तीक्षण शरबरसों । काटेतिन्हैं करणतेहि
थरसों ॥ शक्ति न काटिशरासन करषत । भयोबाण पारथपहँ
बरषत ॥ काटितासु अगणित शरनोखे । पार्थहने तेहि बसुश
चोखे ॥ होलघुबन्धु करण को ताको । नाशकियो हनिशर ब
भाको ॥ शत्रुंजयहि मारि षटशायक । बधतभये पारथ भटन
यक ॥ बहुरिठाटि धनुधर के ठाटहि । बधत भयो भटबीर बि
पाटहि ॥ यहि बिधि तीनि सुबन्धु करणके । बधे पार्थ रचिसे
शरणके ॥ तेहि क्षण भीम क्रोधसों नहिकै । रथसों कूदि च
असि गहिकै ॥ बधतभयो रणरंग बिचक्षण । पंद्रह सुभट क
णके पक्षण ॥ बहुरिजाय रथपै तेहि क्षनमें । दशशर हन्य
करणके तनमें ॥ एक सुबाण सारथिहि मारे । चारिबाण तु
गनहिं प्रहारे ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न असि चर्मगहि कूदि सुरथस
धाय । वृहच्छत्र नैषध नृपहि बधत भयो रिसछाय ॥ तदनु च
न्द्रबर्मान्नृपहि बधि निजरथ पै जाय । धनु गहिबाण तिहत
हने करणके काय ॥ सात्वकिभट धनु आनगहि चौंसठि श
अवदात । हने प्रचारिप्रचारिकै करणबीर के गात ॥ फिरिसा
त्वकि बरभल्लसों धनुषकरण को काटि । तीनिबाण मारतभय
गरजि सिंहसमडाटि ॥ सोरठा ॥ तौसुत नृपसो देखि द्रोण जय
द्रथ सैनसह । बरषत शायक तेखि भिरे सात्वकी भीमसों
जयकरी ॥ इतउतके योधा तेहियाम । भीषण युद्ध कियो अभि
राम ॥ बधिबधि भट गजबाजी भूरि । नदी रुधिरकी दीन्हि
पूरि ॥ पगकरशुण्डमुण्ड अरुरुण्ड । कटेतुरगरथ ध्वजाबितुण्ड
परेजासु मधियाद समान । बिलसे घने घने मयदान ॥ दोहा
यहिप्रकार सबद्योस लरि जानिअस्तगत सूर । युद्धत्यागि
रनगये उभयभूपबलपूर ॥ करिआहारादिकक्रियाइतउतसुभ





समस्त । निशिबितई कथिपार्थको बिक्रम परम प्रशस्त ॥
इतिश्रीद्रोणपर्वणिद्वितीयदिनयुद्धसमाप्तिर्नामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥
दोहा॥ ब्यर्थ प्रतिज्ञा द्रोणकहँ लखि दूजे दिनभूप । कपटजानि
तौ तनयनृपशोचत भये बिरूप॥ तीजेदिनके भोरही सबकेसुनत
सचाय । पाणिजोरिकै द्रोणसों कहतभये अनखाय ॥ जयकरी ॥
णमें देखि आपुके कर्म । हमैंपर्‍यो यहजानि अभर्म ॥ ममभम
र्जुन मधि समप्रीति । करिराखत तुम युग दिशि रीति ॥ ताते
पहि निकट कै पाय । गहो न तुम प्रण दयो भुलाय ॥ जो तुम
हन चाहते ताहि । तौनसकत यमशक्रौपाहि ॥ रोला ॥ भूपके ये
चन सुनिकै कह्यो द्रोणबुझाय । नृपतितासों लहै को जयकृष्ण
जासुसहाय ॥ महारथ भटबिदित पुरुषप्रधान योधा एक । देब
समबधआययहिदिनकहतहौंगहिटेक ॥ आजुबिरचबव्यूह और
नजासुजानत भेद । पार्थहि लैजायकोऊ दूरि कढ़ितजिखेद ॥
द्रोणके येबचन सुनिकुरुनाथ पायेमोद । पारथहिलैजायसत्तक
कियेयुद्धबिनोद ॥ द्रोणतबइत रच्यो अनुपम चक्रव्यूह अमान ।
जासुमधि अभिमन्यु पैठ्यो गरजि बरषतबान ॥ करिअमानुष
र्म अगणित सुभट बधिसो तत्र । गयोबधि षट बीर बरसो
भयो आनँद अत्र ॥ कहैतब धृतराष्ट्र नृप सुनि सूतसुतकी
बात । मरणसुनि अभिमन्यु को मोहिं होत करुणा तात ॥ कहो
अब सबदशा तहँकी पृथक् पृथक् बुझाय । गयोबधि अभि-
मन्यु जिमिधसि ब्यूहमध्य सचाय ॥ कह्यो संजयसुनो भूपति
द्रोण जिमिकरि ऊह । चक्रव्यूह अभेद बिरच्यो राखि योधा
समूह ॥ महारथ भटअयुत कृत अरु कर्णआदिक बीर । सहित
मधिमें रह्यो तौसुत भूप अतिरणधीर ॥ पाण्डवन की सैन स-
म्मुख लसोद्रोण अडोल । रह्यो ताथर नृपजयद्रथ बिदितबीर
अतोल ॥ सिन्धुपति के पास हौसुत द्रोणको बिख्यात । तीस
तौ सुतशकुनि भूरिश्रवा शल्य बिभात ॥ लसे सुभट असंख्य

सबदिशि कइक मंडलजोरि । कौन योधा जौन तामधिजाय न जीतन लायक ॥ नाहिं अति कठिन युद्ध तुम देखे । व्यूह
मण्डल तोरि ॥ भीम आदिक बीर उतके भिरे धनुटंकारि दारब लघु अवरेखे ॥ हौबालक मति साहस करहू । बूझि
भयो ताक्षणयुद्ध सोकहि सकैको निरधारि ॥ तहां अद्भुत लख्यो चारि काजअनुसरहू ॥ सुनत बचन सुनि हँसिरणचारी ।
बिक्रम द्रोणको तेहिकाल । देतभो मढ़िप्रातिभटन पहँ तोमरत लो अर्जुनसुत धनुधारी ॥ कहा द्रोण आदिक भटसूरे । जि-
को जाल ॥ शरनसों दल पांडवनको मर्दि बिरचतराह । जा देखि तुम भय सों पूरे ॥ विष्णु बिश्वजित मातुल मम हैं ।
चाह्यो धर्मनृप पहँ गहन कीगहिचाह ॥ दोहा ॥ इमिदल मरदत ता आरजुनको जेहि सम है ॥ हमलरि इन्द्रहि जीतनचाहत ।
द्रोणकहँ निजादिशि आवतदेखि । कहतभये अभिमन्यु सों धर्म हि संग रहि सुरगण पाहत ॥ चलो सुरथलों शङ्क बिहाई ।
नृपतिअवरेखि ॥ चक्रव्यूहबिरच्यो कठिनद्रोण बुद्धिबलधाम बहु मम बिक्रम प्रभुताई ॥ यह सुनि सूत हांकि सबघोरे ।
हमकोऊ जानतनहीं तासुभेद अभिराम ॥ तुम अर्जुनकै कृष्ण लै चलो द्रोणके धोरे ॥ तीनि बारषिक रथके बाजी । चले
अरु कैप्रद्युम्न बलवान । चक्रव्यूहके भेदकहँ जानत औरन सों गहिगति ताजी ॥ धनु टंकारत बरषत शायक । तासँग
आन ॥ जयकरी ॥ ताते दै मम प्रियबरदान । चक्रव्यूहभेदौ म ले सुभट भट नायक ॥ असुर सैनमुख शक्रहि जैसे । चलत
तिमान ॥ जाते पार्थ न निंदै मोहिं । सोई करौ समौ यह जोहि लै सँग सुरगण तैसे ॥ दोहा ॥ इमि आवत अभिमन्यु कहँ
भेदि व्यूहमधि प्रविशौ तात । देहु मोहिं जययश अवदात खि द्रोणादिकबीर । भिरेयथा घनघोर सों भिरै सतेजसमीर ॥
धर्मभूपके सुनिये बैन । कहतभयो अभिमन्यु सचैन ॥ तौहित युद्ध तेहिक्षणमच्यो कहैं कहांलोंभूप । रुण्डन मुण्डनसोंमही
हेत भेदि यहव्यूह । मर्दि शत्रुके सुभट समूह ॥ जाब मध्य भयानक रूप ॥ चौपाई ॥ मच्यो घोर संगरहे आरज । पार्थ-
रचि शरसेत । पै नृप इतनो सुनो सहेत ॥ व्यूह मध्य जैबेकी नय करि अद्भुत कारज ॥ मारि बिदारि डारिसम्मुखसों । इत
राह । हम जानत हैं सुनो सचाह ॥ भीरपरे कढ़िबेको ठौर । नहि भटन पूरिदै दुखसों ॥ पूरि पयोधि प्रलयको पलमें । व्यूह
जानत सुनु नृप शिरमौर ॥ दोहा ॥ राह प्रगटकरि व्यूह मधि दारि धस्यो मम दलमें ॥ सकै न पैठि और भट तितके । राखे
तुम प्रविशौ बलऐन । सो मग गहितौ अनुगमन हम सबकरब किसुभट सब इतके ॥ पार्थ सुतहि निजदल मधि लहिकै ।
ससैन ॥ भीम कह्यो सुतव्यूह कहँ भेदि देखावहु राह । हमतौ के सुभट मारु धरु कहिकै ॥ रथीगजी हयसादी योधा । सब
सँग अतिरथिनको नाशकरब सहचाह ॥ सोरठा ॥ धसबकढ़ रि घेरि कियो अवरोधा ॥ आयुध भेद सर्ब सब दिसिसों ।
बहुबार सुततौ सँगलखिराह हम । मैं करिहौं संहार गने गने रन लगे भरे अति रिसिसों ॥ बाद्यभेद बजवावन लागे ।
भटबरनको ॥ चौपाई ॥ तबअभिमन्यु धनुषटङ्कारे । बोले बचन गज रथिन नचावन लागे ॥ अब रहु खरो भागु मति कहि
बीररस भारे ॥ बाणन मर्दि शत्रु भट जूहहि । भेदि अभेद बि हि । शर झरकरी क्रोध सों नहि नहि ॥ तहँ अभिमन्यु सु-
कट यह व्यूहहि ॥ हम प्रविशत तुम लखि मुद धरिये । बिक्रम टबर धानुष । भूप करतभो कर्म्म अमानुष ॥ मण्डल सदृश
करतबनैसो करिये ॥ इमि कहिकहो सूतसों कारज । रथलै च रासन करिकै । चक्रसमान सुथल पै चरिकै ॥ अगणित सु-
लहु द्रोणपहँ आरज ॥ सूतकह्यो सुनु हे भटनायक । द्रोणाचा ट शीश बिनु कीन्हें । अगणित बिनुकरपग करिदीन्हें ॥ अ-

गणित भटनकिये बिनुबाहन । बिनुभटकिये असंख्यनबाहन
अगणित धनुध्वज रथहय काटे । अगणित द्विरदकाटि म
पाटे ॥ अगणित बिधिके अगणित शायक । काटत भयो ब
भटनायक ॥ हियो बेधि अगणित भटमारे । भाल बेधि बहु
महिडारे ॥ दोहा ॥ यथा त्रिपुरके सैनमधि पूर्ब लसे त्रिपुरारि
तिमि ममदल मधि लसतभो पार्थ तनय धनुधारि ॥ तेहि
भट अभिमन्युसों ह्वै मर्दित रणधीर । बंधु पिता सुत त
भजे जे भट बिदित सुबीर ॥ सोरठा ॥ निजदल बिचलत दे
दुर्योधन अनरथ समुझि । बरषत शायक तेखि भिरत भ
अभिमन्युसों ॥ चौपाई ॥ तासों भिरत भूपतिहि देखी । द्रो
महा अनरथ अवरेखी ॥ कहत भये सुभटनसों ततक्षण । स
दरकरहु भूपको रक्षण ॥ सुनिकृप करण वृहद्बलराजा । श
नि शल्य शल सहित समाजा ॥ कृतबरमा अरु अश्वत्थाम
भूरिश्रवा भूरिजय कामा ॥ पौरव अरुवृषसेन उजागर । स
त द्रोण सब बिक्रम सागर ॥ करि करि कोदण्डन को करष
लगे पार्थसुत पै शर बरषण ॥ काटि असंख्यन शायक इन
बरषि बाण दिनमणि रणदिनके ॥ क्षणमें सबहि पराजित
रिकै । गरज्यो पार्थ तनय मुद धरिकै ॥ तब ये सहे न गरज
तासू । फिरि फिरि फिरि अभिरतमे आसू ॥ सब दिशिसों
भिमन्युहि घेरी । अब मति भरमि भागु इमि टेरी ॥ बरष
लगे बाण अनियारे । जैसपक्षअहिसम भयकारे ॥ काटिबा
सों सबकेबानन । भट अभिमन्यु पुरुष पञ्चानन ॥ सबके
मधि शायक मारे । लखि सबअद्भुत कर्म बिचारे ॥ तब सि
भट कोपितह्वैकै । चक्रसमान चरत तेहि ज्वैकै ॥ भांति अ
बाण झरि कीन्हें । सब अभिमन्यु ब्यर्थ करि दीन्हे ॥ रबि
किरण सदृश बरभाके । सब थर पूरिरहे शरताके ॥ दोहा ॥ ते
क्षण दुस्सह हनतभो अभिमन्युहि नवबान । हनतभयो द्वाद





शिख दुःशासन बलवान ॥ द्रोणहने सत्रह बिशिख कृतबरमा
र सात । हनो बिबिंशत क्रोधकरि सत्तरि शर अवदात ॥
आचार्य्य भूरिश्रवा तीनि तीनि बर बान । हने तासु षट हनत
शल्यनरेश अमान ॥ हने वृहद्बलआठशर अश्वत्थामासात ।
र्योधन नृप हनत भो तीनि नराच बिभात ॥ सोरठा ॥ शकुनि
दीप प्रवीन दोयबाण मारतभयो । तीनि तीनिशर पीन हन्यो
बहि अभिमन्युभट ॥ चौपाई ॥ असमक नृपको सुवन तरपि
। अतितीक्षणदश बाण अरपिकै ॥ थिररहु थिररहु कहि रण-
री । बहुरिकियो योजित शर भारी ॥ लखि अभिमन्यु गर्ब
हि मनमें । मारिबाणदश ताहीक्षनमें ॥ हय सारथी ध्वजा धनु
सु । काटि शीश काटत भो आसू ॥ ताहि मरत लखि भरि
तिभयसों । इतके सुभटमोरि मनजयसों ॥ शोचन करिसनीर
लनीरज । भागत भये दूरि करिधीरज ॥ ताक्षण बिचलत
खि निजसेना । करण द्रोण कृपशलजगजेना ॥ सोमदत्तकृप
श्वत्थामा । भूरिश्रवाशल्य गुणधामा ॥ वृन्दारक वृषसेन सु-
। नृप सुखेन अनुपमरणधीरा ॥ सुभट कुंडभेदी नरनाहू ।
बिबिंशत दीरघबाहू ॥ नृपति प्रबाहु ललित्थ प्रतर्दन ।
र्योधन घनसदृश ननर्दन ॥ गरजिघेरि तजि जियको भरषा ।
पार्थ सुत पै शरबरषा ॥ अगणित बाण भटनके सहिकै ।
गणित बाण काटि बिधि गहिकै ॥ मारत भयो करणके तनमें ।
अतितीक्षण शरगहिप्रण मनमें ॥ सोशर भेदि करणके गातहि ।
ति दुख दयोभूप तोतातहि ॥ ह्वैबेधित कांप्यो सो परणी ।
मि गिरि कँपत कँपेते धरणी ॥ दोहा ॥ बहुरि बरषि शर भटनपहँ
सुखेन कहँबीर । दीर्घलोचनहि बधतभो हनि अतितीक्षण
र ॥ बध्योकुण्डभेदी भटहि हनि अतितीक्षणबान । रचतभयो
सेत फिरि पार्थ तनय बलवान ॥ मारे करण पचीस शर
भिमन्युहिं तेहिकाल । अश्वत्थामा हनतभो बीसबाण बिक-

राल ।।सोरठा।। रचि सब दिशि शरजाल शक्रात्मजको आत्मज
माऱ्यो बाण बिशाल शल्य भूपके हृदयमधि ।। बसुकला ।। वह लो
बान । सोनृप अमान ।। शर धनुषडारि । युतभुज पसारि ।। नहिं
चेतमोहि । गिरिपऱ्यो सोहि ।। बरबल निकेत । शल्यहि अचेत
सब सुभट देखि । अनरथ सरेखि ।। मन भीत मेरि । भगिगये
फेरि ।। तहँ लसो धीर । अभिमन्यु बीर ।। जिमि बणयनाहि
गजगोल माह ।। दोहा ।। यहसुनि दुख लहि वृद्धनृप कह्यो कहे
तेहिठौर । भिरतभये अभिमन्युसों कौन सुभट करिगौर ।। संजय
बोले तेहि समयतो दल सागर ताहि । मथत पार्थसुत मन्दर
हि अनुज शल्य को चाहि ।। धनुटंकारि प्रचारिकै डारिदीहदय
बान । अभिमन्युहि हय सूतसह ताड़ित कियो अमान ।।सोरठा
हनि तीक्षण शर भूरि काटि बाहुधनु छत्रध्वज । पार्थतनयशर
तूरि तासु शीश छेदन कियो ।। चौपाई ।। तासु मरणलखि अनु
चर ताके । रथीगजी हयसादी वाके ।। मारु मारु धरु मारुपुका
रत । बरषत बाण धनुष टंकारत ।। पार्थसुतहि सब दिशि म
घेरी । लगे प्रहारण थिरुथिरु टेरी ।। तेहिक्षण पार्थतनयब्यव
साई । दरशायो बिक्रम अधिकाई ।। सिखी कृष्ण अर्जुन स
जेती । कीन्हो प्रगट अस्त्रबिधि तेती ।। धनुष अलातचक्रसम
करिकै । घूमि असंख्यन शर परिहरिकै ।। द्रोणादिकन भटन
कहँ डाटत । तिनके हने बाण सब काटत ।। शल्य अनुजनरप
ति के दलमें । पारतभयो प्रलयतेहि पलमें ।। पलमें बधेअन
गिनेहाथी । रथीगजी घोरे सहसाथी ।। ह्वै मरदत बहुभटस
पागे । तजिरणखेलखेततजिभागे ।। सोदल मरदिबीर उत्कर्ष्यो
शर द्रोणादि भटन पै बरष्यो ।। तेहिक्षण तासु पराक्रम देखी
द्रोण हियो आनँद सों भेखी ।। कृप सों कह्यो लखौ हे आर्य
करत पार्थसुत कैसो कारय ।। अनुपम पिता पुत्रये दोऊ । नहि
इनसम रण कोबिद कोऊ ।। पार्थ सदृशयह यहिसम पारथ





तिहुंपुर जीतन योग यथारथ ।। गहिअपूर्व बिधिकरषिशरासन ।
आज चहत यह सबदल नाशन ।। दोहा ।। द्रोणाचारयके बचन
सुनि सुप्रशंसा तासु । करणादिक सों कहतभो दुर्योधन गहि
गासु ।। अभिषेकित धनु धरणको शीक्षक द्रोणाचार्य । करत
नहीं अभिमन्यु के मरिबे लायक कार्य ।। रोला ।। शिष्यपुत्र सु
शिष्य के ये पुत्रवत श्रुति बैन । बचन सो गुणि ताहि रक्षतमूढ़
बिक्रमऐन ।। जौनममहित होयकरिबो तौन गुणिनिजधर्म । करौ
बध अभिमन्युको निज प्रतिम करिकरि कर्म ।। सुनत दुःशास-
न बचन यह कहतभो गहिगर्ब । बधत हैं हम याहि ठाढ़े लखैं
योधा सर्ब ।। भाषि इमि करि मुदित भूपहि गरजि धनुटंकारि ।
जाय सम्मुख पार्थ सुतके भयो भिरत प्रचारि ।। क्रोध करिअ-
भिमन्यु मारे बाण छब्बिसताहि । ताहि दुःशासन हनत भो
बाण चौदह चाहि ।। चक्र सम रथ दुहूंदिशिते फेरि फेरि स-
क्रोध । लरे करि करि शर बरनसों शरनकोअवरोध ।। कह्यो तौ
सुतबीर सो अभिमन्यु सत्व अगाध । सभामधि हठि कियेतुम
गहि बसन जो अपराध ।। आजुलेहों बैर सो तौ नाशकरियहि
काल । भाषि ऐसो हन्यो ताके हिये बाण बिशाल ।। दोहा ।। अ-
ति तीक्षण सो शर धस्यो हियमाधि पुंख प्रमान । माऱ्यो फेरि
पचीसशर पार्थ तनय बलवान ।। तब मूर्छित ह्वै सुरथपै गि-
रत भयो रणधीर । रथलै भागो सारथी दुखित भयोरणधीर ।।
सोरठा ।। तौसुत भूपति देखि दुःशासनकी दुरदशा । महाब्यथित
ह्वै तेखि कह्यो धनुर्धर करणसों ।। चौपाई ।। अर्जुनसुत ममदल
माधि धसिकै । द्विरदन मध्य सिंहसम लसिकै ।। बिरचत चण्ड
तरणिकी नाईं । सब कहँ बध चाहत यहि ठाईं ।। निजबिक्रम
प्रगटित करि आसू । मित्र करहु अब तुम बधतासू ।। सोसुनि
करण क्रोध अति कीन्हें । तापहँ शरपंजर करि दीन्हें ।। काटि
असंख्य बाण अनियारे । तिहिंसत्तरि शर करणहि मारे ।। ताहू

क्षण द्रोणादि गमनसों । लरत रहो सो पूरोप्रनसों ॥ अगणित
दिव्य अस्त्र भयमाड़त । भो अभिमन्यु करण पहँ छाड़त ॥ राम
शिष्य अस्त्रनकी झरिकै । वारयो सकल अस्त्रगण धरिकै ॥ शर
झरि करि करणहिकहि मोहित । काट्यो धनुष पार्थसुतकोहित ॥
जौलगि करण गह्यो धनुबाना । तौ लगि हन्यो अनगिनेबाना ॥
गहिधनु आन करण धनुधारी । बारत भयो बाण झरि भारी ॥
फिरि अभिमन्यु धनुष बिधि ठाट्यो । सूतसुवनको धनु ध्वज
काट्यो ॥ लखि यह दशा गोलसों कढ़िकै । भिरो सूतको लघु
सुत बढ़िकै ॥ तिहि दशबाण हन्यो तेहि क्षनमें । प्रबलपार्थसुत
भट के तनमें ॥ तब अभिमन्यु महत शर मारे । काटि तासु
शिर महिपै डारे ॥ निरखिबन्धुको बध हे राजा । करण व्यथित
भो सहित समाजा ॥ दोहा ॥ तब करणानुज के सुभट रथगज
तुरँग बढ़ाय । भिरि अभिमन्यु सुबीरकहँ दियेशरन सों छाय ॥
तिनमें अगणित भटनकहँ बाधि निशंक रणधीर । मर्दि परा-
जित करत भो अगणित भटन सुबीर ॥ फिरि करणहि बेधत
भयो मारि अनगिने बान । तब चढ़ि चंचल तुरँग पै करणभ-
गो तजिसान ॥ सोरठा ॥ क्रोध गर्बसों पूरि यहिबिधि करणहिं
बिमुखकरि । बरषतभो शर भूरि और भटनके रथनपै ॥ भुजं-
प्रयात ॥ बली बीर बीराधिको बार बांको । दल्यो तो दलै जो
वलै चारिधाको ॥ करी रुण्ड मुण्डानमें मेदिनीये । नदीलोहु
की भीरुही खद्नीये ॥ गजी बाजिसादी रथी के गरहैं । डरे
तासुमारे अरेमारु रहैं ॥ घने पाणि ऊरू परेतासु काटे । लसे
तेमनोजादके जूहपाटे ॥ दोहा ॥ बहुबिनुपग बहुबिनुचरण बहु
बिनुकर बिनुमुण्ड । लखेतासु काटेबिना बहु बिनुमुण्ड बितु-
ण्ड ॥ मरे अधमरे अधकटे कटेलटे भटभूरि । भूपलखे जहँपार्थ
सुत युद्धरच्यो रिसपूरि ॥ अगणित हयगज रथनके कटेपरे सब
अंग । धनु ध्वजछत्र किरीटबहु लखेतासु कृतभंग ॥ सोरठा ॥





बिदित धनुर्द्धर उद्ध श्रीअभिमन्यु उदण्ड भट । काल रुद्रसम
क्रुद्ध बिलसत भो तौसैन मधि ॥ चौपाई ॥ ऐसोतासु पराक्रम
सुनिकै । बूझतभयो वृद्धनृप गुनिकै ॥ इबिधि कुमार अकेले
आयो । ममदल मध्य करत मनभायो ॥ तब भीमादि बीरबर
भाये । रहेकहां तहँ कत नहिंआये ॥ संजयकह्यो सुनो नयगा-
मी । चारोभाय धर्मजय कामी ॥ सात्यकि धृष्टद्युम्नभट नागर ।
द्रुपद बिराट बुद्धिबल सागर ॥ धृष्टकेतु आदिक भटरूरे । चले
तासुपीछू बलपूरे ॥ भट अभिमन्यु बिदित धनुधारी । धस्यो
सैनमधि ब्यूह बिदारी ॥ भीमादिकन भटनसों भिरिकै । राख्यो
रोकि जयद्रथ थिरिकै ॥ सुनि धृतराष्ट्र कह्योसुनि येहू । संजय
मोहिंभयो सन्देहू ॥ भीमादिकपर सुभट समाजा । रोक्योतिन्हैं
जयद्रथ राजा ॥ भीषमद्रोण जिन्हैं नहिंजीते । तेकतभे बिक्रम
सों रीते ॥ जाते रोकि जयद्रथ राख्यो । कहौभेद ममभन अ-
भिलाख्यो ॥ संजय कह्यो सुनो मनभावत । भेद तुम्हेंहम भूप
बतावत ॥ द्रुपदसुतहि जब बनसों हरिकै । चल्यो जयद्रथ लै
प्रणधरिकै ॥ जीत्योताहि भीमतेहि क्षनमें । तबनृप अतिगला-
निकरि मनमें ॥ रहि इकान्त करि शम दम साधन । सबिधि
शम्भुको कियो अराधन ॥ दोहा ॥ कछुदिनमें हरस्वप्नमें कह्यो
मांगु बरदान । तबहिं जयद्रथ भूपयह बरमांग्यो मनमान ॥
सदलसर्ब पांडवनकहँ रणमेंकरि बिनुगर्ब । जीतिअकेले आड़ि
हम राखैंदीजै सर्ब ॥ कह्यो शम्भुबिनु आरजुन लहिहौ सबसों
जीति । नृपतेहि बरके भेवइमि राख्योआड़ि सनीति ॥ सोरठा ॥
सदल जयद्रथ भूप लरिससैन पांडवनसों । करो भयानकरूप
युद्धभूमि अतियुद्ध करि ॥ चौपाई ॥ शायक बरषत ब्यूह बिदा-
रत । मग जाननहित गजबधि डारत ॥ जेहि मगगयो बिदित
धनुधारी । पार्थतनय अनुपम रणचारी ॥ सो मगकियो भटन
सों पूरित । सैंधवनृप हरबरसों नूरित॥पांडव सदल न आवन

पाये । किये कितक विक्रम मनभाये ॥ ममदल मध्य अकेलो
धसिकै । भट अभिमन्यु भटनसों गसिकै ॥ बिशदबीर अति
बिक्रम कीन्हों । अगणित भटन स्वर्गपुर दीन्हों ॥ रथसमूहसों
घेरित ह्वैकै । वृषसेनहि अतिगरबित ज्वैकै ॥ तासु धनुषध्वज
शरसों काटे । सूतहिमारि हयन कहँ डाटे ॥ रथलैभगे सूतबि
बाजी । मरद्तानिज पैदर भटराजी ॥ तबनिज रथहिबढ़ाइ बि
शारद । शत्रुनबर बिक्रमको मारद ॥ अगणित बाण धनुषध्वज
काटत । भो बसातपति भूपहि डाटत ॥ तिहिनृप साठिबाण
अनियारे । ताहीक्षण अभिमन्युहि मारे ॥ तब अभिमन्यु अ
रुण करिईक्षण । किये तासुबध हनिशर तीक्षण ॥ भरेक्रोध इत
अगणित योधा । शर बरषतहैं करिअवरोधा ॥ करिअभिमन्यु
बाणबिधि शोधन । होतहँ मर्दत अगणित योधन ॥ काटिअसं
स्यन शर सबहीके । भयोबधत अगणित भटनीके ॥ दोहा ॥
सबके बहुशर काटिसहि हनिसबके तनबान । लसतभयो अभि
मन्युतहँ बिचरत शक्रसमान ॥ सिगरेभट अभिमन्युपहँ इमि
डारतहैं बान । जिमिगिरि शृंगहि घेरिकै जलबरषत जलदान ॥
बधत रह्यो बहुभटनकहँ यहिबिधिसों दृढ़घाय । जिमि सागर
मथि महतझष लघु मीननकहँ खाय ॥ सोरठा ॥ पार्थतनयबल
धाम सरत चक्रसम भ्रमततहँ । भयो अलख तेहियाम निज
पुर शरके जालमधि ॥ जयकरी ॥ तहँ गोलबहु यहिओरके
भजिचले सुभट अथोरके ॥ अभिमन्युके शरघातसों । जिमिपात
रंध्रसबातसों ॥ तब शल्यनृप बलधामको । सुत रुक्मरथ शुभ
नामको ॥ इमिकह्यो सबसों टेरिकै । फिरिलरहु दुन्दुभि भेरि
कै ॥ हम बधतयहि बरबाणसों । कैलेतगहि सहप्राणसों ॥ इमि
भाषिधनु टंकारिकै । अभिमन्यु भटहि प्रचारिकै ॥ हँकवाइरथ
अतितोरसों । शरतीनि मार्‍यो जोरसों ॥ अभिमन्यु तबअति
कोपसों । भरि बीररसको ओपसों ॥ भोबधत ताकहँ डाटिकै





रकाटि युगभुज काटिकै ॥ बध रुक्म रथको देखिकै । तब
सु अनुचर तोखिकै ॥ बरबुद्धि बिक्रम बेषके । जे जैनसन
शेषके ॥ भटराजसुत शततरपिकै । तेहिघेरि शायक अरपिं
॥ तहँ दयेताहि अदेखिकै । बधकरणको अवरेखिकै ॥ अभि-
न्यु तबभट ठानसों । गन्धर्वअस्त्र बिधानसों ॥ तहँ बिचरि
नकोनाशकै । भोनदत बदन सहासकै ॥ सोदेखि इतअतित्रास
। तौ सुतहि शोच उसासभो ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण दुर्योधन
पति सह चतुरंगिनि सैन । बढ़ितासोंभिरि घरिकलरि नाहिं
रिसको सचैन ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे तासुरणकर्म ।
नि संजय मोहिं लगतहै अति आश्चर्य सभर्म ॥ बिमुखभ-
मोसुवननृप तबके भटरणधीर । तासों भिरे प्रचारिकै कहो
दि गंभीर ॥ सोरठा ॥ संजयकहो नरेश भगत देखि दुर्योधन-
। डरपि त्यागिसो देश भगी सैन सबकौरवी ॥ चौपाई ॥ दल
चलत लखिकै कृतबरमा । द्रोण द्रोण सुत पूरित परमा ॥
कुनि वृहद्बल कर्ण सुबीरा । दुर्योधन भूपति रणधीरा ॥ अ-
बिक्रमकरि करि धनुकरषत । भये पार्थ सुत पै शरबरषत ॥
हँ अभिमन्यु अकथरण कीन्हें । क्षणभेंतिन्हैंबिमुखकरिदीन्हें ॥
न्हैं बिमुखलखिकै तेहिक्षनमें । लक्ष्मणकुवँर कोपकरिमनमें ॥
रहु अब न भागुयहि रटसों । भिरतभयो अभिमन्यु सुभट
॥ तहँ लक्ष्मणहिं भिरत लखि तासों । फिरे द्रोण आदिक
रिमासों ॥ ते युगबन्धु सुबीर परस्पर । लगे हनन अति
क्षणशरबर ॥ अब तू मरि देखत यमलोकहि । इमि सुनाय
क्ष्मण बलओकहि ॥ मारि क्षुरप्र सुबाण अदूषित । काटेउ
रुशीश मणि भूषित ॥ बधि लक्ष्मणहिं पार्थसुत तरज्यो ।
षसिंह सिंहहि सम गरज्यो ॥ लक्ष्मण मर्‍यो भूप तेहिपल
। हाहाकार मच्यो यहि दलमें ॥ शोकाकुल नृप धीरज धा-
त । मारुमारु इमि भयो पुकारत ॥ तब कृपद्रोण करण कृत-

बरमा । सुभट वृहद्बल भूप अभरमा ॥ अश्वत्थामा भट ध
धारी । येषट महारथी रणचारी ॥ धनु टंकारि भिरे आति सि
सों । बरषण लगे बाण सब दिसिसों ॥ दोहा ॥ तहँ सब दी
शरसेत रचि तिनसबकहँ बिचलाय । पलटि जयद्रथ पहँच
भट अभिमन्यु सचाय ॥ तब तेहि अंतर माधिरहे जेते नृपम
जूह । ते सब आड़त भे बरषि तीक्षणबाण समूह ॥ क्राथ नृ
ति को पुत्रअरु अरु कलिंग पतिभूप । अरु निषादपति सुद
ये बिदित भयानकरूप ॥ सोरठा ॥ अगणित योधन मारि का
असंख्यन बाणतहँ । भट अभिमन्यु प्रचारि बध्योक्राथ नृप
सुतहि ॥ चौपाई ॥ बिदितबीर अद्भुत रणकरता । धीर धुरीनध
राधुरधरता ॥ क्राथसुवनके जूझतराजा । भीतिभगे सबसुभ
समाजा ॥ फिरिकृपद्रोण कर्ण कृतबरमा । भूप वृहद्बल पूरि
परमा ॥ अरु अश्वत्थामा धनुधारी । येषटमहारथी रणचारी
घेरि ताहि धनुकर्षण लागे । बाणजाल बहु वर्षणलागे ॥ ते
क्षण भीमादिक भटरूरे । आति बिक्रम कीन्हें बलपूरे ॥ सद
जयद्रथ इमिशर छाये । नाहिं सुतके ढिग आवन पाये ॥ क
अभिमन्यु बीर बिधिपालन । तिनषटरथिन बाणके जालन
छायकाटि अगणित शर तिनके । बचै न तरु गण लागे जि
के ॥ बाण पचास द्रोण कहँ मारे । वृहद्बलहि शरबीस प्रहारे
असी बाण कृतबरमहिं हनिकै । मारेकृपहि साठिशर गनिकै
दशशरमारे अश्वत्थामाहिं । एक सुबाण कर्णबलधामहिं ॥ ह
अमोघ आति तीक्षण तीरहि । बधतभयो वृन्दारक बीरहि
ताहि पचीसबाण अनियारे । मारिद्रोणसुत धनुटंकारे ॥ हन्य
द्रोणसुतकहँ शर चोखो । पार्थ तनयभटबीर अनोखो ॥ बहु
द्रोणसुत धनुटंकारी । हनेताहिशर साठि प्रचारी ॥ दोहा ॥ अ
गणितशर सब भटन के काटिसुभट अभिमन्यु । फिरिअश्व
त्थामहि हने तीस सुशर करिमन्यु ॥ शतशर मार्‌यो द्रोणतेहि





आचार्य दशबान । अश्वत्थामा आठशर बाइसकर्णअमान ॥
तभयो पचासशर नृपति वृहद्बल बीर । गरजत भो हनि
शर कृतबरमा रणधीर ॥ सोरठा ॥ भटअभिमन्यु अमान
त चक्रसम बरषिशर । दशदश तीक्षणबान हनत भयो
भटनकहँ ॥ महिखरी ॥ फिरिकोशलपति वृहद्बल को बेधि
क्षण बानसों । नृपकाटि धनुध्वज सूत तुरगन बधेशरहनि
तसों ॥ कै बिरथ बिधनु महीपसों असिचर्म गहि रथत्यागि
भो चलतभट अभिमन्युपहँ आति क्रोधसों मन पागिकै ॥
मि देखि तेहि अभिमन्यु ताक्षण बाण तीक्षण मारिकै । हिय
करि बध तासु गरजत भयो धनु टंकारिकै ॥ दशसहस
था बधे तबलों पार्थसुत तेहि दिनतहां । भटद्रोण आदिक
महाबिक्रम करत हे सबक्षणजहां ॥ बधि वृहद्बल नरपतिहि
अभिमन्यु धनु टंकारिकै । शरकर्णिमारे करणभटके कर्ण
भि हुंकारिकै ॥ फिरि हनेबाण पचास कर्णहि कर्ण तितनेते-
ते । इमि लरिपरस्पर उभय शोणित भरे तन अनुपमबने ॥
सचिव हे भटकर्णकेआति प्रबलपरदल दरगने । तेहिसमय
कहँ बधतभो अभिमन्यु हनिहनि शरघने ॥ फिरि मारि
दशबाण सबकहँ बाणसबके काटिकै । मगधेशकेसुत अश्व-
हि बध्यो धनुबिधि डाटिकै ॥ दोहा ॥ कुंजरकेतन भोजनृप
बधकरि तेहिकाल । चरत चक्रसम भटनपहँ रचत भयो
जाल ॥ दुःशासनके सुतहने अभिमन्युहि दशबान । ताहि
त शर हनतभो भटअभिमन्यु अमान ॥ मारि सातशर क-
भो भागिबचो तोतात । अबयहि क्षणतोहिं बधतहौं मारि
अवदात ॥ सोरठा ॥ इमि कहिकै जयकार्य्य बाणबज्र सम
तभो । सोशर द्रोणाचार्य्य काटिदये शरतीनसों ॥ चौपाई ॥
अभिमन्यु कोप आतिकीन्हों । केतुद्रोणको द्वैकरिदीन्हों ॥
निबाण नृपशल्यहि मारे । शल्यताहि नवबाण प्रहारे ॥ तब

अभिमन्यु काटिध्वज तासू । बधि सारथिहि मारिशर आसु
षटशर हने शल्यके तनमें । मुरछित भयो भूप तेहिक्षनमें
तब अभिमन्यु बिदित भटनायक । शत्रुंजयहि बध्योहनि श
यक ॥ बध्यो चन्द्रकेतुहि रणकरकश । बध्यो सूर्य्य भासहि
शरकश ॥ मेघबर्चसहि बधिमहि डार्‌यो । बधि सुबर्चगहि ध
टंकार्‌यो ॥ बधिइन पांचभटन भटनोखो । शकुनिहि हनतभ
शरचोखो ॥ सौबल ताहि तीनिशरमारी । चिन्तित भो अ
प्रबल बिचारी ॥ अद्भुत तासु युद्धबिधि देखी । द्विजसों कह
कर्ण अवरेखी ॥ शक्रसमान सुयुद्ध बिशारद । शक्र सुवन
सुत रणभारद ॥ अबिरल बाण बज्रसम बाहत । क्रमसों सब
बधन यहचाहत ॥ रुद्रसरिस रणबिधि अवगाहत । दावान
सम दल बनदाहत ॥ यहगुणि दयाधर्म्म मतिगहिये । अ
याके बधकी बिधिकहिये ॥ यहसुनि बोले द्रोणाचारय । अ
करतयह अद्भुतकारय ॥ सबदिशि धनुमण्डल दरशावत
कोऊसुभट सिद्धिनहिं पावत ॥ दोहा ॥ काटत सबके बाण
मारत सबकहँ बान । निजपर शरके जालमधि बिचरत च
समान ॥ मारिमारि शरबज्रसम कीन्हेसि पीड़ितमोहि । त
मोहिं अतिहोतसुख तासुपराक्रम जोहि ॥ सोरठा ॥ यहसु
करण बिचारि कहतभयो इमिद्रोणसों । आजुहि सबदल म
देनचहत यह पितुहिजय ॥ चौपाई ॥ गुणिनिज धर्महि धी
धरिकै । हैंअबहम इतठाढ़े अरिकै ॥ नातरुतासु शरनके ध
न । चाहत पीड़ित प्राणपरावन ॥ सुनियह सूत सुवनकी बा
द्रोणाचार्य्य कहो अनुमानी ॥ हमअर्जुनहि दये मनमान
कवच अभेद्य तौनयह जानत ॥ जोबधि सकहुतासु हयसूत
काटिसकहु जोधनु मजबूतहि ॥ पहिले बिरथ बिधनुकरि प
लहिहौ बधिबेकी बिधिआछे ॥ सरथ सधनुयह बिचरत ज
लों । सकैं न जीति सुरासुर तबलों ॥ यहसुनि करण ध





धिठाटे । प्रथमहितासु शरासनकाटे ॥ भोजभूप अश्वनबधि
रे । उभयपारास्निन गौतममारे ॥ तिमिहि सारथीको बधकी-
हों । बाणतानिकै चोखोचीन्हों ॥ इमिकरि बिरथ बिधनु मुद
न्हे । सिगरेरथी बाण झरिकीन्हे ॥ तब अभिमन्यु चर्म असि
हिकै । बलसों कूदिगगन मधिरहिकै ॥ घनसम गरजत बि-
मअतिसों । भ्रमतभयोअसिबिधिकी गतिसों ॥ तबसबगुणि
पतत ममभूरध । तकितकि तजनलगे शरऊरध ॥ तहांद्रोण
रि सबिधि निरीक्षण । काटो खड्गमारि शरतीक्षण ॥ तबराधेय
रि दृढ़घायक । काटोचर्म मारि बहुशायक ॥ ह्वैबिनु खड्ग
र्मरिसिछायो । फिरि अभिमन्यु भूमिपै आयो ॥ दोहा ॥ गरजि
हसम बीरतब लैरथांग दृढ़चक्र । चलो द्रोणपहँ बेगसोंकरि
रिघ भ्रूबक्र ॥ चक्रपाणि सम लसतभो चक्रगहे सोबीर । देखि
यानक रूपतेहि भेसब सुभट अधीर ॥ आयत चख कुन्तल
शद रुधिर भरो बरगात । अनुपमभट अभिमन्यु तहँ अनु-
मभयो बिभात ॥ सोरठा ॥ लगे अनगिने बाण चूरचूरभो चक्र
ह । तब अभिमन्यु अमान गहत भयो अतिगुरुगदा ॥ चौपाई ॥
हि गुरुगदा पुरुष पञ्चानन । चलो द्रोणसुतको तनमानन ॥
खितेहि गुणि करता बधरुजको । रथतजि कूदिगयो सुतद्विज
को ॥ तब बधिसूत तुरग सबतासू । बध्यो कालिकेयहि हनि
आसू ॥ मरण बन्धुको लखितेहि क्षनमें । शकुनिभयो शोका-
ल मनमें ॥ कालिकेय भटके अनुचारी । सातबधे गुरुगदा
प्रहारी ॥ बहुरि बधे दशरथी बसाती । पार्थतनय अरिसैन
बिघाती ॥ रथी सातबधि केकय थरके । बध्यो द्विरददश दीरघ
रके ॥ कूदिजायकरि शृंगखसानिसी । हनिअचारि गुरुगदा
असानिसी ॥ दुःशासनके सुतके रथके । बधितुरंग सब गरुवे
थके ॥ तब तो तनय तनय भटभारी । दीर्घगदागहि भिर्‌यो
प्रचारी ॥ तेयुग बन्धुबिदितरणकरता । बधिपरदल शोणितनद

भरता ॥ हांकि हांकि सबदिशि चरिचरिकै । बिधिवत गदायु
करिकरिकै ॥ मुरछित ह्वैह्वै महिपै गिरिगिरि । राजत भे
मृतकसम थिरिथिरि ॥ महाअमित बलबुद्धि निकेतन । पार्थ
तनय न प्रथमभो चेतन ॥ चेतिप्रथम उद्भट रण करकश
दुःशासनको सुतअति धरकश ॥ उठोसँभारिभुजनतन देखत
तेहि अचेत लखिबध अवरेखत ॥ दोहा ॥ दीर्घगदागहि व्यो
भरि करिकशीश मनमान । हन्योतासु शिरमधितबहिभोकुमा
गतप्रान ॥ द्विरद यूथसमदलमरदि पार्थतनय जयकाज । स
मधिपरोअप्राण ह्वै यथाबधो मृगराज ॥ निजकरमारेदशसह
योधन सहित अनूप । लसोलसत तारन सहित जिमि सुधां
शुचिरूप ॥ माहेश्वरी ॥ तहँ रुण्डमुण्ड असंख्य मधिइमि लस
सो शोणित भरो । बहु राहु केतु अनेक सँगलै सूरमनु सोव
परो ॥ ढिगजाय निरखनलगे तेहि सब सुभट ह्वै सबादि
खरे । मनु गिरो महिपै इन्द्र धनुषहि लखतजन अचरजभरे
लखि मरोभट अभिमन्यु कहँ तो तनय अति आनँद लह्यो
बहु सुबुधि जन लहि दुसह दुख भो युद्ध अधरम इमिकह्यो
तहँ किते भट अभिमन्युकी बरबीरता बरणत भये । अरुता
शरसों भिदे पीड़ित किते सुख दुख सँगलये ॥ दोहा ॥ जानि
मरण अभिमन्युको पांडव भट समुदाय । मोहित ह्वै जो दुख
लहो सो कासों कहिजाय ॥ इतनेमें सन्ध्या निरखि जय दुन्दु
भि बजवाय । आवतभयो निवासथर कुरुपति सदलसचाय
सोरठा ॥ शोकाकुल भरि मोह पांडव निज डेरन गये । शोच
दुसह बिछोह छोहपात्र अभिमन्यु कर ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिअभिमन्युबधबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ तेहि तीजे दिनकी रजनि मधि अति दुखसोंग्रस्त
धर्म नृपति कहँ घेरिउत बैठे नृपति समस्त ॥ बरणि बरणि
अभिमन्युके गुण बिक्रम अभिराम । नृपति युधिष्ठिर करत





अति बिलाप तेहियाम ॥ रोला ॥ गहे करुणा करतजहँ नृपधर्म
रतमोह । तहांआये व्यासमुनि लखिसमय करिअति छोह ॥
लखि व्यासहि धर्म नृप बैठारि करि सत्कार । कह्योजिमि लरि
गयो बुधिबर बिदित सुभट कुमार ॥ शोक दुखसों भरो भूपहि
जानि बोले व्यास । भूप करुणा त्यागकरि अब करौ धीरज
आस ॥ मृत्युलोक प्रसिद्ध यह जो धरत तन इत आय । मृ-
त्युवश सो होत बिधिवत समय बिरचित पाय ॥ बचन यह
सुनि धीर धरि इमि कह्यो नृपति अचाय । मृत्यु को किमि
भई प्रगटित कहो मुनि समुझाय ॥ धर्म नृपको बचन यहसु-
नि कह्यो मुनिवर व्यास । सुनो भूपति कहत हैं हम पूर्वको
इतिहास ॥ नृप अकम्पन सों कह्यो जो नारदमुनि तपधाम ।
ताप दुख शोकघ्न है इतिहास सो अभिराम ॥ रह्यो सतयुग
में अकम्पन भूप सो रणमाह । युद्धकरि अतिघोर अरिबश
भयो हैनरनाह ॥ तासुसत अति प्रबलहो हरिरहो ताकोनाम ।
भयो सो तेहिठौर करिकै परम दुस्तर काम ॥ पुत्र बिक्रम सों
अकम्पन बिजय तेहिदिनपाय । तदनु शोकाकुल भयो निज
मरणपै मनलाय ॥ जानि भूपहि शोकबश तहँ सुमुनि नारद
आय । भये बैठत यथाबिधि सत्कार बिधिवत पाय ॥ करत
करुणा भूप सुतको बरणि गुण ब्यवसाय । कियो नारद सुमुनि
सों नृप प्रश्न यह सुखदाय ॥ शक्रसम अति बिक्रमी ममपुत्र
बलवधि भौन । मृत्युके बश भयो मुनिको मृत्यु कहिये तौन ॥
सपन यहसुनि कह्यो नारद सुनो नृप मतिमान । कहत हैं हम
जन्म आदिक तासु सब व्याख्यान ॥ प्रथमबिरच्यो जगत जब
बिधि बिरञ्चि भौतिक भूरि । जननके समुदाय सो तब गयो
सब जगपूरि ॥ रही उत्पति होततब नहिं होतहो संहार । भई
पीड़ित भूमि तबलहि जननको अतिभार ॥ जायजाते होत
क्रमसों नाश सो उपचार । रचनको बिधिकियो शोच न लही

तासु निकार ॥ लहेबिनु उपचार बिधिके क्रोधभो त्यहिकाल
भयो प्रगटित चखन सों तब ज्वालजाल कराल ॥ लगो भ
स्मित होन तासों सकल जगत सत्रास । देखि सो करि दया
पशुपति गये बिधिके पास ॥ देखि शिवहि बिरंचि बूझो आ
गमनको काज । कह्यो शिव केहिहेत जारत सकल भूत स
माज ॥ यत्नकरि जेहि रच्यो तेहि मति इबिधि नाशो नाथ
क्षमो क्रोधानलहि सुनि ममबिनय होइ न नाथ ॥ शम्भुके
बचन सुनिकै बारिजासन ईन । करी क्रोधानलहि फिरि निज
आतमामें लीन ॥ लीन बिधिमें भयो क्रोधज अग्नि को रुचि
जाल । ज्वालते तेहितहां प्रगटित भई युवति कराल ॥ अरुण
चखमुख जासु श्यामलगात अनुपम रूप । कुण्डलादिक स
कल भूषण धरे सो वह भूप ॥ भई ठाढ़ी बिश्वपति के जा
दक्षिण ओर । कह्यो तासों बिश्वपति करि कृपायुतचखकोर
मृत्यु अब तुमकरौ क्रमसों प्रजन को संहार । करी तुम कहँ
प्रगट हम यहि हेतु यहि उपचार ॥ बचन यह सुनि मृत्यु
लागी रुदन करन सशोक । तासु आशु लये करता करन
को करिओक ॥ महा दुख सों रुदन करिकै मृत्यु धीरज धा
रि । कह्योइमि चतुरास्यसों सोकर्म निंद्य बिचारि ॥ नाथ कत
मोहिंकरी प्रगटित क्रूर कारजहेत । जाहिअधम अधर्म शंकित
होतहै ममचेत ॥ मातु पितु सुत बन्धु जिनके मराहिंगे तेभूरि
पीठि उर शिर रुदन करिहैं महा दुखसों पूरि ॥ दशासो अब
लोकि ह्वैहै महाकरुणा तात । तहांनिरदै भयेह्वैहै पापअसह
अघात ॥ सदन जनके जाबनाहिं हम सुनो करुणाऐन । धेनु
काश्रम जायकै हमकरब तप गाहिचैन ॥ बचन यह सुनि कह्यो
बेधा प्रजनके क्षयकाज । तोहिं प्रगटित करीहमसों करो तजि
डरलाज ॥ दीनह्वै करि गात कम्पित मृत्यु युग करजोरि
कही प्रभु यहि कर्ममें नाहिंहोति थिरमति मोरि ॥ अम्बुजासन





बचन यहसुनि रहो ताक्षण मौन । बन्दि पगसो धेनुकाश्रम
अर कीन्हींगौन ॥ धेनुकाश्रम जाय इन्द्रिन नियमि सबिधि
हर्ष । रहीठाढ़ी एकपदसों पद्म षोड़शबर्ष ॥ भांति यहिसब
यथरमें प्रेमपूरित जाय । कइक अयुत हजार बरषन कियो
मनलाय ॥ कृपाकरि तब अम्बुजासन जाय ताके पास ।
कह्यो चरि तपउग्र तू कत करति इतक प्रयास ॥ मृत्यु यह
कह्यो प्रभुमैं चहतिहौं चरपर्म । मोहिं करन न परै हिंसा
अदय अधर्म ॥ बारिजासन कह्यो सुनु ममबचन ब्यर्थ
होत । जीव करषण करोतुम तजिशङ्क करुणा सोत ॥ जीव
षण करै कोनाहिं पाप ह्वैहै तोहि । हेतु याके कहतहौं सो
श्रेयद जोहि ॥ बूंद आंशुनके गिरेतो चखन सों ते सर्ब ।
बिधि बिधेके रोगभैहैं हरण बलबुधि गर्ब ॥ जीर्णकरि तेहि
यश लेहैं करषियो तू प्रान । तुम्हैं अयश अधर्म सों नहिं
लगो पहिंचान ॥ बचन यहसुनि कही ताक्षण मृत्युयुग कर
नाथशासन देतहौ सोकरबहम प्रणतोरि ॥ लोभचिंता
हर्षा बिसनरिस अबिचार । देहुमोहिं सहाय कर्त्ता सिद्धि
उपचार ॥ बचन यहसुनि कह्यो बेधा यह तथास्तु सबार ।
तुतब संहार करिबो कियोतहँ स्वीकार ॥ रोगबशकै समर
करि असत व्यवहार । मरत जननाहिं मृत्युमारति करिसु-
प्रहार ॥ देव मानुष आदि जितने जन्तुजग बिधिचारि ।
आयू मृत्युबश सब होतलेहु बिचारि ॥ समरमें मरिगयो
पुर तनय तो सुनुभूप । त्यागिदुख धरिधीर भगवत भजन
अनूप ॥ सुमुनि नारदसों इबिधि सुनि मृत्युको ब्याख्या-
नृप अकम्पन शोक त्यागित कियोकरि अनुमान ॥ मृत्यु
भईऐसे चरितहै मतिमान । धीरधरि अब जीतिबेको गुणो
वाद बिधान ॥ ब्यासमुनि तपधामसों सुनिबचन परम पुनी-
करिप्रशंसा कह्यो फिरिइमि धर्म भूप सनीत ॥ पूर्ब पुरुष

महान जनकेइ बिधिके इतिहास । औरकहिये सुमुनिजाते [illegible]
चित्तसुपास ॥ प्रश्न यहसुनि कहो मुनिसुनुभूप बलबुधिधाम [illegible]
रह्यो संजय भूमिपति निजधर्मयुत अभिराम ॥ सुमुनि ना[illegible]
सुऋषि पर्वतरहे ताकेमित्र । सदा नृपढिग रहत हे ये कथ[illegible]
पूर्वचरित्र ॥ एकदिन ये उभयमुनि नृपरहे बैठेयत्र । चारुक[illegible]
भूमिपतिकी मुदितआई तत्र ॥ सुमुनि पर्वत देखि ताकहँ क[illegible]
भे मुसुकाय । कौनकी ये सुता अनुपम देतिआनँदछाय ॥ [illegible]
बोले सुताममम यह चहतबर गुणखानि । सुनत नारद कहोदी[illegible]
मोहिं यहिगहि पानि ॥ बचन नारदको सुनत यहभरेपर्वतको[illegible]
कह्यो याके बरणको मैं कियो मनमेंचोप ॥ ताहि मांगी प्रथ[illegible]
तुमतौ सुनो ऐसोशाप । स्वर्गअब मतिजाहु तुम यहिकर्म[illegible]
लहिपाप ॥ कह्यो नारद गुणेमनमें नहीं भार्याहोति । होति[illegible]
धिवतकिये पाणिग्रहण अग्निउदोति ॥ शापदीन्हों बिनाका[illegible]
सुनोताते येहु । मोहिं बिनुमति कबहुँ तुमहूँ स्वर्गको पथले[illegible]
परस्पर इमि शापदैदै उभयमुनि तपगेह । बसे संजय नृपति[illegible]
घर गहे सरस सनेह ॥ वेदपारग बिप्रअगणित नृपति सं[illegible]
ल्याय । संगतिनके कियो सेवा पुत्रहित मनलाय ॥ दोहा ॥ [illegible]
दिनमें सबद्विज कह्यो नारदसों यशलेहु । नृपति चहततेहैं [illegible]
नृपहि नृपति सदृश सुतदेहु ॥ सो सुनिकै करिअतिकृपा ता[illegible]
मुनि तपधाम । कहोभूप मांगो चहत जैसोसुत अभिराम [illegible]
जयकरी ॥ नृपसंजय सुनि इच्छितबैन । कहतभये इमिपायसचैन [illegible]
सुवनदेहुमुनि बलबुधिधाम । दातासुयशी शूरललाम ॥ तेजव[illegible]
अरिदमन अनूप । मन्मथसदृश मनोहररूप ॥ मूत्रपुरीषक[illegible]
कफजासु । कनकहोइ तनते कढ़ि आसु ॥ सो सुनिकैनारदमु[illegible]
राय । कह्यो तथास्तु कृपासरसाय ॥ लहिमुनिवरकी कृपा [illegible]
शाल । तैसोसुवनलहेउ क्षितिपाल ॥ भूपभयोतबधनपतिए[illegible]
रचेकनकके धाम अनेक ॥ सरवापीपरिखा प्राकार । औरजि[illegible]





[illegible]साजउदार ॥ रचे कनकके नृपमतिमान । देनलगो बिप्रनक-
[illegible]दान ॥ सुनि यहखबरिचोर समुदाय । निशि निशीथमें नृपघर
[illegible]य ॥ लागे करन मंत्रनिरधार । लेहिं कहासो करौबिचार ॥
[illegible]सब कीन्ह्यो यह सिद्धान्त । लीजै भूपतिको सुत दान्त ॥
[illegible]न कनक को प्रभव अमन्द । लीन्हे ताहि होब निरदुन्द ॥
[illegible]विचारकरि तस्करसर्व । लिये भूमिपतिको सुतसर्व ॥ गये
[illegible]हि लै जहँ बनघोर । तहांजाय अबिचारी चोर ॥ कनकहेत
[illegible] करिकै गौर । फारो तासु उदर तेहि ठौर ॥ दोहा ॥ कनक
[illegible]वे नहिं उदरमधि तबते सब करिशोच । लाइ परस्पर दोष
[illegible]लरे मरे मतिपोच ॥ नाश निरखि प्रियपुत्रको शोकाकुल
[illegible]भूप । लागोकरन बिलाप अति ह्वै ब्याकुल गतरूप ॥
[illegible]हि करत बिलापगुणि नारदमुनि तहँजाय । भे समुझावत
[illegible]कहँ पावनिकथासुनाय ॥ सुनो भूप भो मृत्युबश मरुतभूप
[illegible]भिराम । जाहिकराये यज्ञइत आयजीव तपधाम ॥ जाहि
[illegible]भगवानप्रभु धनअसंख्य परतक्ष । मख असंख्य कीन्हे
[illegible]विधि मरुत वेदविद दक्ष ॥ देव पितर गन्धर्व ऋषि साध्य
[illegible]ट जहँ आय । भये सदस्य सप्रेमरहि लखिनृप तपगाहि
[illegible]य ॥ मणि सुवर्ण अन धेनु धन बसन भूमिमनमान । जेहि
[illegible]हे द्विजवरनकहँ प्रतिदिन सहित बिधान ॥ सोऊ मरो न
[illegible] रहो होत महाबलकाल । कहा आपने सुवनको शोचकरो
[illegible]तिपाल ॥ नृपसुहोत्रभो कालबश नीति निपुण बुधिऐन ।
[illegible]बीर जो जगत में हो बरणो जगजैन ॥ जाके तप बलसों
[illegible]दपति अनुशासन पाय । सुबरण बरषैं प्रतिबरष हरषभरे
[illegible]छाय ॥ नदी हिरण्यमयी बहै जासु नगरके पास । जामें हैं
[illegible]जंतु सब सुवरणके छबिरास ॥ अश्वमेध अगणित किये
[illegible]जांगल में भूप । दिये असंख्यन द्विजन कहँ बांछितबस्तु
[illegible]नूप ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबलकाल । कहा आ-

पने सुवन को शोचकरौ क्षितिपाल ॥ अंग नृपति जगजै
जिहि किये हजारन यज्ञ । दई असंख्यन दक्षिणा बिप्रनक
सरबज्ञ ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबल काल । क
आपने सुवनको शोचकरो क्षितिपाल ॥ भूपउशीनरको सु
शिवि क्षितिपाल अमान । किये असंख्यनयज्ञतेहिदिये अ
ख्यन दान ॥ अगणित गिरि पकवान के गोरसके सर भू
सितायुक्त जो रहतहो सदारचे मुद पूरि ॥ खाहुखाहु पकवा
अरु करौ क्षीर दधिपान । जासु राज्य में शब्द यह सुनिय
हेनहिं आन ॥ अलंकारयुत गाय तेहि जिती दई करियज्ञ
तिनकी गिनती करिसकै कोऐसे सरवज्ञ ॥ अक्षय धन को
रहो लह्यो शम्भुसो तौन । भूपति तासु बिभूतिकी कथास
कहि कौन ॥ सोऊ मरो न थिर रहो होत महाबल काल । क
आपने सुवन को शोच करो क्षितिपाल ॥ भे अदृश्य इत अ
कै दाशरथी प्रभुराम । जासु नाम जपि भक्तियुत जीवलह
परधाम ॥ भयो भगीरथ भूमिपति सार्ब भौम बिख्यात । ग
हिल्यायो भूमिपै जो तपबलसों तात ॥ भूषित सुवरण हेम
सहसनकन्या चारु । बिप्रन कहँ दीन्हीं सरुचि जौन भूमि भ
तारु ॥ प्रतिकन्या रथएक प्रति रथशत गज सँगलाय । प्र
रथ तुरग हजार अरु प्रतिरथ शतशतगाय ॥ मणि सुब
भूषित सबै सहित दक्षिणाभूरि । जिहि दीन्हीं द्विजवरन
महामोदसों पूरि ॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबलकाल
कहा आपने सुवन को शोचकरो क्षितिपाल ॥ इल्विल भूप
को सुवन हो दिलीप नरनाह । सकल भूमिपति गहतहे ज
भजनकी छाह ॥ अश्वमेध मख आदिमख किये असंख्य
जौन । दियो दक्षिणा जितकनहिं कह्योजात सबतौन ॥ सो
मरो न थिररहो होतमहाबल काल । कहा आपने सुवन
शोचकरो क्षितिपाल ॥ जयकरी ॥ होयुवनाश्व भूमिभरतार ।





गो खेलन बिशदाशिकार ॥ बनमें भयो पियासोतौन । देख्यो
ाय यज्ञको भौन ॥ तहां सुपात्र मध्यघृत देखि । कियो पान
ानी अवरेखि ॥ तासों तासु सुउरमें भूप । रह्योगर्भ अतिअ-
लअनूप ॥ जबभोगर्भ पुष्ट लहिमास । तबनासत्य जाइ नृप
ास ॥ कछु उपाय करि ते बुधिधाम । बाहेरकियो पुत्र अ-
राम ॥ नृपहे पुत्रहि लीन्हें गोद । तहँ आये सुर करतबि-
ाद ॥ कहो परस्पर इमिकरि छोह । अबका धारि करिहि
ह द्रोह ॥ तब करि कृपा कहे सुरराज । मांधारे जीवनके
ाज ॥ इमि कहि शक्र मोदसों जाय । अँगुरी दयो बालमुख
ाय ॥ तासों कढ़ी क्षीरकी धार । तृप्तभयो पी भूपकुमार ॥
ाहि पयके प्रभाव क्षितिरौन । द्वादशबार्षिक समभो तौन ॥
ाधारे जो ऐसो बैन । कहेउ शक्र करि कृपा सचैन ॥ ताते
ान्धाता यह नाम । भयो तासुसुनु नृप गुणग्राम ॥ सो मा-
ाता भूप उदार । भयो सर्ब महिको भरतार ॥ एक दिवस
सबदिशि घूमि । बरषि बाण जीती सबभूमि ॥ दोहा ॥ किये
संख्यन यज्ञ अरु दई दक्षिणाभूरि । ग्राम असंख्यन द्विजन
ँ दिये मोदसों पूरि ॥ सोऊमरो न थिररहो होत महाबल
ाल । कहा आपने सुवन को शोच करत क्षितिपाल ॥ नृप
ातिसुत नहुषको जासुकला बिख्यात । अगणितमख बहु
र जिहि किय वेद बिधिज्ञात ॥ प्रतिक्षण प्रतिदिन द्विजन
हँ तृप्त करतहो राय । दान धर्म नृप नीतिसों बिरहत रह्यो
ाय ॥ सोऊमरो न थिररहो होत महाबलकाल । कहा आ-
सुवनको शोचकरत क्षितिपाल ॥ अम्बरीष नाभागको सु-
भूप बलभौन । सहसन भूपनसों लही जीति एक दिन
ान॥किये असंख्यन यज्ञजेहि भूरि दक्षिणादान । रह्यो जाहि
ातीनि निति रणजय अरु मखदान ॥ जीति हजारन नृपन
हँ दये द्विजनको जौन । लहै जासु तुलताभयो ऐसो दूजो

कौन ॥ सोऊ मरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आ
पने सुवनको शोचकरत महिपाल ॥ हो शशिबिन्दु नृपालमणि
सकल कलामें दक्ष । जासुयज्ञमें सुमनसब भये सदस्यप्रदक्ष
लाख युवति ताके रहीं त्रियपति सहसकुमार । तेजवान दात
यशी सबै यज्ञ करतार ॥ अश्वमेध शुभयज्ञ करि नृप शशि
बिन्दु सुजान । तिन सब पुत्रनको दयो बिप्रबरण कहँ दान
शतशत रथ शत शत द्विरद त्रिदश तुरंग सदाय । प्रति तु
गन सँग करिदिये महामोदसों छाय ॥ एकएक श्यामा तरु
प्रति कुमार दे भूप । प्रति तिय शतगज गजनप्रति शतर
दयेअनूप ॥ प्रतिरथ शतशत तुरग अरु प्रतिहय गऊहजा
अजापांच शतप्रतिगऊ दई भूमि भरतार ॥ कोश कोशके
स्तारित भोज्यबस्तुके ढेर । जासु यज्ञके अन्तमें उबरिरहे
फेर ॥ सोऊमरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आप
सुवनको शोच करत क्षितिपाल ॥ होगय भूप सुजान जो पर
प्रेमसों पूरि । करतभयो शतबरषलौं अबिच्छिन्न मखभूरि
लहिशुचि आहुति शतबरष हुतभुकह्वै संतुष्टाह्वै प्रसन्न नृप
कहो नृपमांगो बरपुष्ट ॥ तब जोजो भायो नृपहि लैसोसों
दान । लस्यो भूमिपै प्रबलह्वै प्रतपित तरणिसमान । सो
मरो न थिररहो होत महाबल काल । कहा आपने सुवन
शोचकरत क्षितिपाल ॥ होसंकृत नृपको सुवन रन्तिदेव म
पीन । दोय लाख जाकेरहे करता पाकप्रवीन ॥ भोजन हि
अतिथीनके पशु यकईस हजार । बधेजात हे रोज जहँ सु
भूमि भरतार ॥ निति चर्मनके ढेरसों कढ़ो जुबारि प्रवाह । च
पवती नदीबही सोई अगम अथाह ॥ दान यज्ञको जाहि
नित्य सुइष्ट प्रयोग । द्विज करतलसों जासुकर क्षणनाहिं ल
बियोग ॥ जासुकोष ऐश्वर्य्यको निरखिसमान बिभात । सुरप
अरु धनपाल निति मनमेंरहे सिहात ॥ सोऊमरो न थिर





होत महाबल काल । कहा आपने सुवनको शोचकरत क्षिति-
पाल ॥ सुवनभूप दुष्यन्तको भरतभूप बलभौन । रदगाहिगज
प्रतीक कहँ निजबश कीन्हों जौन ॥ अश्वमेध आदिक स-
कलमख कीन्हों बहुबार । कियो बिश्वजित यज्ञजो प्रबलभूमि
भरतार ॥ मणिसुवरण भूषण बसन भूमि सबत्सागाय । अग-
णित जासों लहतहे नित्यबिप्र समुदाय ॥ सोऊ मरो न थिर
रहो होत महाबलकाल । कहा आपने सुवनको शोच करत
क्षितिपाल ॥ पृथुभूपति क्षितिपालमणि जाके सुगुण अनेक ।
ब्रह्मानिज करसोंकियो जाहि राज्यअभिषेक ॥ महिजाकी पुत्री
भई ताते पृथ्वीनाम । कीन्हें अगणितयज्ञजिहि किये अमानुष
काम ॥ सोऊ मरो न थिररहो होतमहाबल काल । कहाआपने
सुवनको शोचकरत क्षितिपाल ॥ परशुराम अवतारजो जासु
कीर्ति बिख्यात । समयपायकै नहिंरहिहि तिनहूँको यहगात ॥
॥ संजयनृप मतिमान सुनिषोड़श नृपकीकथा । त्यागि
हिअज्ञान बन्देमुनिके कमलपद ॥ तब नारदमुनिराय कहो
पसों करिकृपा । मनबांछित सुखदाय बरमांगो संजयनृपति॥
निसंजय क्षितिपाल पाणिजोरि मुनिसों कहो । मुनिकरिकृपा
शाल तुम्हैंरुचै सो देहुअब ॥जयकरी॥ यहसुनिकै नारदगुणि
त्र । कीन्हों प्रगट तासु वहपुत्र ॥ लहिनिज पुत्रभूप सुखपा-
। मुनिको पूजनकियो सचाय ॥ लहि अपमृत्यु भूपसुततौन ।
न्हेंरहो निरयमधिगौन ॥ तातेमुनिको तपबलपाय । आयो
मोदसोंछाय ॥ धासिपरदल मधिकरि अतियुद्ध । नृपअभि-
यु त्यागितनशुद्ध ॥ सुरसुरनाथ बसतहैयत्र । जायसमुदबल
तेह तत्र ॥ नहिंइत आइहि सोथलत्यागि । तजोशोकधीरज
पागि ॥ इमि कहि व्यास गये निजधाम । भये अशोक भूप
ग्राम ॥ संशप्तकन जीति तेहियाम । निजदिशि चलोपार्थ
भिराम ॥ मगमें कह्यो कृष्णसों बैन । तातहोत मम हृदय

अचैन ॥ कम्पित तपित होत ममगात । बहुबिधिके अपशकु
न लखात ॥ नृपहैं कुशलन धौं सहभाय । ऐसो अनरथ परत
लखाय ॥ यह सुनिकृष्ण कह्यो अनुमानि । नृपको शोच परत
नहिं जानि ॥ और बिघ्नकछु जानोजात । उतलौं चलो धी
धरितात ॥ इमि बतरात उभयरणधीर । आवत भे निज दु
के तीर ॥ सुने न जय दुन्दुभिकोशोर । पारथकीन्ह्यों शोचअ
थोर ॥ दोहा ॥ बजत न दुन्दुभि शंखअरु गायक करतनगान
बन्दीजन नहिं यशपढ़त भो कछु अनरबिधान ॥ है हत श्र
सब सैनअरु नहिंकोऊ साबिधान । मम सम्मुखचख करत
भो कछु अनर महान ॥ रोला ॥ शोक पूरित सकल जन लखि
परतब्याकुल मोहि । गिरतसबके चखनसों जलधार मो क
जोहि ॥ करत इमि अनुमान नृपके शिविरमधिसों जाय । तह
सबकहँ निरखि बैठे भरे शोक अचाय ॥ भरे करुणा कह्यो प
रथ सुनो हे भट सर्ब । परतनाहिं अभिमन्यु लखि जो बिदि
बीर अखर्ब ॥ सुन्योहोहमआजु बिरच्यो द्रोणचक्रब्यूह । ता
मधि तौ नहिंगयो गहि तोरिबे को ऊह ॥ रहे तासों कहे ता
धि जाइबे की डौर । कही नहिंकटिआइबेको घातजौनसगौर
मानि सबको बचन करिकै ब्यूहमध्य प्रवेश । मारि तौ न
गयो अनुपम बीरलरि तेहि देश ॥ सिंहसम अति बिक्रमीश्र
तिरथी अरिदलजैन । प्राणसम मोहिं परमप्रियसुतसकलगु
को ऐन ॥ यशी सुबुधि सुशील सुकृती तेजवान बिभात । ग
हति अभिमन्यु तौ हमतजब अब यहगात ॥ दोहा ॥ जलज
यन कुंचित चिकुर स्मित मुखबाहु बिशाल । आयतउर घ
नादकरि कलभ समान बिशाल ॥ बालवृद्धसम मंत्रबिद प
मनोहररूप । गुरुशासनकृत नमितरहि कहिप्रियबचनअनू
चौपाई ॥ परमपियारो सब गुरुजनको । कृतीकृतज्ञ शुद्धअतिम
को ॥ जो अभिमन्यु मरोरे भाई । तो अब मोकहँ मरे बड़ाई





आदर शालवृक्षसम बाढ़ो । मत्त द्विरदसम भयो उकाढ़ो ॥ सब
गुरुधर सों गुरुता गहिकै । बिलसत भयो प्रशंसा लहिकै ॥
अनुचितकहत करतजेहि कबहूं । लह्यो न काहू तबहूं अबहूं ॥
जो जूझो ऐसोसुत आरय । तौ अब मोहिं मरब बरकारय ॥
वज्रसदश मम हियो अनैसो । जो नहिं कढ़त पायदुख ऐसो ॥
अति प्रिय सुतको मरिबो सुनिकै । मरहि सुभद्रा शिरउर धुनि-
कै ॥ सबतियमम बिक्रमाहिं निदरिहैं । मरिसुत शोकागिनि में
जरिहैं ॥ समुझि तासुगुण रूपबड़ाई । धीर न धरतबनत रे
भाई ॥ मणिमय शय्या पै हो बिलसत । सो मरिभयो भूमि पै
बिलसत ॥ शुचिसुकुमारि युवति जेहितनसों । बिलसत रही
मुदगहि मनसों ॥ तासों जम्बुक काग बिनोदत । यहदुखपरशु
हियो मम खोदत ॥ दूरि खरेरहि शुचिपद गावत । जेहिबन्दी-
जन रहे जगावत ॥ जुरे गीधसो गात बिदीरन । कै हैं करत
परतमन धीरन ॥ हायन अब निजसगुण लखाइहि । तात तात
कहि मोढिग आइहि ॥ दोहा ॥ भीरपरे मम आगमन चाहि
चाहि अनखाय । तनत्यागो ह्वैहै सुवन यहदुख सहोनजाय ॥
बिबिधि भरोसुत शोकसों रोदन करत अचैन । पार्थहि केशव
अंक लै कहत भये ये बैन ॥ चौपाई ॥ मति इमि शोककरहु हे
आरय । है सबकहँ निरमित यह कारय ॥ है बिशेषसों यहग-
तिवाकी । क्षत्रिहि युद्ध जीविका जाकी ॥ परमपुण्य कृत शूर
सोहावन । मरि रणमध्य लहत पदपावन ॥ सब सुबीर इमि
मरिबो चाहत । समर अग्निमधि धसितन दाहत ॥ गो सुरपुर
अभिमन्यु सुबीरा । त्यागिशोक अबधारहुधीरा ॥ तुम्हें बिकल
इमि लखि दुखभारे । भे अधीर सब बन्धु तिहारे ॥ धरहु धीर
तुम परमसयाने । करौ जौन करतब अनुमाने ॥ पारथ बचन
कृष्ण के सुनिकै । बन्धुन सों इमि बोले गुनिकै ॥ करिकै सो
बिक्रम प्रणधारी । किमिजूझो ममसुत रणचारी ॥ कहां रहैं

सब युद्ध बिचक्षण । कत न करो ममसुतको रक्षण ॥ हीनपरा
क्रम हौ तुम सिगरे । आपुहि आपुहि गनत अदिगरे ॥ कव
धनुष आयुध बहुबिधिके । हौधारे सबहित छबिसिधिके ॥ ति
जजीवनकी आशा गहिगहि । सके न रक्षणकरिढिग रहिरहि
इमि सक्रोध अर्जुनहिं निहारी । कोऊसको न बोलि बिचारी
तबउसासलै पूरित दुखसों । कहोधर्म भूपतिरिजुरुखसों ॥ जि
मि रचि ब्यूहद्रोण धनुकरषत । चलो बधतभटशायकबरषत
दोहा ॥ ब्यूहभेदि दलमधि प्रबिशि जिमिअभिमन्युअभर्म । तौ
जैसे जिमि बधिगयो कह्योतौन नृपधर्म ॥ शिवबरके बल सिंधु
पति जिमिआड़ेउ दलसर्ब । पृथक्पृथक्सो सबकह्यो धर्ममही
अखर्ब ॥ सुनि सुतको बिक्रम महत महामोहसोंपूरि । कै अचे
महिपैगिरो पार्थशोक करिभूरि ॥ रोला ॥ निरखि मुरछितपार्थक
सबलोगसबदिशि प्रेरि । महाअनरथसमुझिब्याकुलरहे अति
मिष हेरि ॥ चेतिक्षणमें स्वेदपूरित तजत चखसोंवारि । कँपत
लेत उसास ऐसेकह्यो भटन निहारि ॥ सत्यप्रणकरि कहतहौं
यहसुनो सबभट जूह । काल्हिबधिहौं जयद्रथ कहँ बरषिबाण
समूह ॥ कृष्णको अरु भूपको जो गहैशरणन आय । जीवको
करिलोभजो कहुँदुरै नहिं कढ़िजाय ॥ बधौंगो तौकाल्हि ताकहँ
सुनो यह ममबात । बधौं नहिंतौ जाउँतेहि थर जहँ कृतघ्नी
जात ॥ पिता माता द्विजन दुखदै लहत जनजोलोक । जो न
मारों जयद्रथ कहँ लहौंतौ तहँओक ॥ करिअगम्यागमन अरु
हरिजीविका जेलोग । अरु कृतघ्नी छलीपावत जौन थलको
भोग ॥ करतजो अपकार अरु बिश्वासघाती जौन । जातजहँ
तहँजाउँ मारों काल्हि ताकहँ तौन ॥ चुगुल निन्दक चोरअरु
जे कहत मिथ्याबैन । वृद्धगुरु अरु साधुकहँ जे निदरि करत
अचैन ॥ गऊब्राह्मण अग्निकहँ जे चरणसों छुइलेत । करतमुत्र
पुरीष जलमें जौन अपगतचेत ॥ करत आतमघात जो अरु





जौन वृषली नाथ । करत तासों दगाजो नितरहत जाकेसाथ ॥
तनाहिं बालकनकहँ जे मीठ आपुहि खात । पाय पातकजौन
सब जौनथलमें जात ॥ पायपातक तौन सबतौ जाउँमैं तेहि
श । जौन काल्हि जयद्रथहिबधि करौं कीरतिबेश ॥ एकप्रण
करत औरो सुनो सोभटपूर । जौ न मारों काल्हि ताकहँ रहै
लोसूर ॥ भानुअथये त्यागि शरधनु त्यागिकवच बिभात ।
ठि ज्वलित कृशानुमधि तौ दहौं अपनोगात ॥ शक्र बरुण
बेर यमकेपास जो भगिजाय । तऊमारों तहां ताकहँ शरन
दिशिछाय ॥ दोहा ॥ इमिकहि धनुष चढ़ाइकै करिसबदिशि
कार । सब दिशिमें पूरितकियो दुसह सुशब्द उदार ॥ सुनि
प्रतिज्ञा पार्थकी केशव अतिहरषाय । पूरिदियो दिशिशब्द
अनुपम शङ्खबजाय ॥ शङ्खबजाये सबन्नृपन बजे बाद्यगण
रि । नभमहिलों सब दिशनमें गई घोरधुनि पूरि ॥ चौपाई ॥
निअति घोरशब्द परदलमें । भो सभीत ममदल तेहि पल
॥ कीन्हों जौन प्रतिज्ञा पारथ । चारणगणसों तौन यथा-
थ ॥ सुनिकै सिन्धुनाथ तेहि क्षनमें । कंपित भयो सांच गुणि
नमें । परो शोकसागर मधिडूबत । गो दुर्योधन के ढिगऊब-
॥ पारथ कियो जौन प्रणतीक्षण । सो कहि कह्यो सजल
रिईक्षण ॥ करिहिऔशि जो प्रणकरिभाख्यो । यहगुणिधीर
हत नहिंराख्यो ॥ ताते मोहिं देउ अनुशासन । बसौं जाइ
हि गोपित आसन ॥ कै कृपद्रोण कर्ण दुःशासन । आदिभ-
नसों करिसम्भाषन ॥ राखहुसबै कहैं जो रक्षण । नातरुबेगि
हौ मोहिं गक्षण ॥ दुर्योधन भूपति यह सुनिकै । निजकारज
को साधन गुनिकै ॥ नाम प्रबल योधनके कहिकै । कह्यो जय-
थ सों करगहिकै ॥ ये सब जबलगि जीवत रनमें । तबलगि
लगिहि न शर तोतनमें ॥ अर्जुनसम तुमआपु उजागर । कत
अपतहौ हे भटनागर ॥ इमिकहि सुनिते द्विजढिग आये ।

प्रणपारथको ताहि सुनाये ॥ कहि निजशोच जयद्रथ तासा
कहत भयो इमि पूरिप्रभासों ॥ हमजो करतप्रश्न तुमताको
उत्तर कहो यथाबिधि याको ॥ दोहा ॥ धनुधरके जे सकल गु
तिनमें अधिकीकौन । हमकै पारथ बूझिकैद्रोण बताओतौन
कहोद्रोणधनुबिधिसिखी समतुमपारथबीर । भयो योगअभ्या
सों अधिक पार्थ रणधीर ॥ चौपाई ॥ सुनिप्रण तासु शंक मति
करहू । संशय त्यागहु धीरज धरहू ॥ ऐसोब्यूह रचबतो स्व
रथ । सकैन जासु अन्तलहि पारथ ॥ फिरि दृढ़करि साहस
लरिबेको । तजहु शोक रणमें मरिबेको ॥ परमपुण्य कृत क्षत्रि
आरज । रणमें लहत मृत्युशुभ कारज ॥ मृत्युलोक यहजो तन
धारत । मरत अवशिसो कोतेहि टारत ॥ द्रोणाचारयकी य
बानी । सुनिदुख तजो जयद्रथ ज्ञानी ॥ गह्यो चाव लरिबेक
राजा । मोदितभो सब सुभट समाजा ॥ जाय उतैके चारसे
हाये । पृथक् पृथक् यह खबरि सुनाये ॥ सो सुनिकै सबह्वै दो
चितसे । कहो पार्थसों अतिशोचितसे ॥ पारथ तुम दुस्तरप्र
कीन्हों । साध्य असाध्य शोचि नहिंलीन्हों ॥ रत्नहेत सागरमां
परिबो । हैयहि बिधिको यहप्रण करिबो ॥ रक्षक जासुद्रोण जय
कामी । ये षटरथी जासु अनुगामी ॥ कृपअरु कर्ण शल्य बल
धामा । भूरिश्रवा अरु अश्वत्थामा ॥ अरु वृषसेन अतुलमद
जानो । बधिबो तासुसहज मतिमानो ॥ राखिचतुर बिधि सेन
पचिकै । चहुँदिशि शकटव्यूहबर रचिकै ॥ मधिमें कमलव्यूहक
रचना । करीद्रोण पुनि करिकैसचना ॥ दोहा ॥ पत्रनअरु केशरन
सम राखि भटन प्रणरोपि । बीजसमान जयद्रथहि मधिमें
राख्यो गोपि ॥ महारथी षटभट प्रबल द्रोणअजय प्रसिद्ध
तिन्हैं जीतिताको बधब शतधा सखा असिद्ध ॥ यातेयह प्रण
त्यागकरि करि मंत्रिनसों मंत्र । करौ और अनुमान कछु जो
श्रमसाध्य स्वतंत्र ॥ जयकरी ॥ कृष्णचन्दके सुनियेबैन । पार्थकहो





करिरोते नैन ॥ जिन षटभटन सराहततात । कहत महारथमें
बिख्यात ॥ तिन्हैं अर्द्धरथ समसबठौर । हम जानतहैं कहत
न और ॥ बधिबधि अगणित भटन सँचाय । अगणित भटन
मारि बिचलाय ॥ सबदिशि रचत शरनको सेत । लरिपरदल
भटनीर निकेत ॥ पद्मव्यूह मधिजाब बिभात । जिमिबारिज
मधि मधुकर जात ॥ बधिजयद्रथहि दुखहि दुराय । बिहरब
जयदुन्दुभि बजवाय ॥ प्रभुतुम जासु सहायक संग । होय न
कबहुँ तासु प्रणभंग ॥ अबमति तातबढ़ावहु शोच । कियो न
जात सुप्रणको मोच ॥ शीघ्रसुभद्राके ढिगजाय । कहतबनैसो
तौ बुझाय ॥ यहसुनि कृष्णमौन रहियत्र । गेहीरुदतसुभद्रा
त्र ॥ कहिकहिसुतके शीलसुभाव । गुणिस्वरूप बिक्रम व्यव-
हाव ॥ मोहितरुदन करति भरिशोक । देखि सुभद्रहि करुणा
ओक ॥ लोकवेद बिधिबचन सुनाय । बारबार बहुबिधि समु-
झाय ॥ आदि द्रौपदी तिय समुदाय । रुदन करतही तिन्हैं बु-
झाय ॥ भवभंजन रंजन निजदास । कृष्णगये पारथकेपास ॥
दोहा ॥ तबलहि शासनपार्थको सिगरे भटसमुदाय । निजनिज
थान जातभे भरे बिषाद अचाय ॥ कृष्णचन्द्र पारथ सहित पा-
र्थके गृहजाय । गोमय सों महि शुद्धकरि शुचिशय्या बिछ-
वाय ॥ प्राणायामादिक क्रिया अर्जुनसों करवाय । करितापै
आसीन सब दिशि आयुध धरवाय ॥ निशिमें शम्भुहिउचित
जो सो बिधिवत अरचाय । कहोपार्थसों करहुइत शयनागिरी-
शहिध्याय ॥ सोरठा ॥ इमिपारथसों भाषि राखि सकल दिशि
पारषद । केशव जय अभिलाषि दारुकसह डेरनगये ॥ रोला ॥
शुचिशय्या चारुपै आसीनह्वै यदुराय । कहो दारुकसों कियो
प्रण पार्थजो अनखाय ॥ महादुस्तर तौनसोनहिं होयगो तौ
तात । निरखि संध्या अग्निमें वह दहैगो निजगात ॥ पार्थ
सम कहँ परमप्रिय वहिलखे बिनुक्षण एक । लोकमेंनाहिं सकब

रहि हमसुनो यह ममटेक ॥ जोजयद्रथ कहँ न पारथ सकि
बधिकरियुद्ध । तौबधब हमनाहि करि अतियुद्धगंहिप्रणशु
सुनोतातेसाजि ममरथ सकल आयुधभारि । रहहुतुमसन्न
समतन कवच अतिदृढ़ धारि ॥ सुनहु जबहिं अमर्षयुत म
शंखकी धुनियत्र । शीघ्ररथलै आइयो तब रहबजहँ हमतब
भाषिऐसे पार्थके जय लहनको अनुमान । करनलागे कृ
करुणासिन्धु सत्वनिधान ॥ जानि निजप्रण कठिन चिन्त
पार्थतहँ तेहियाम । स्वप्नमेंसहकृष्ण शिवके पासजायसकाम
बन्दिसरुचि प्रशंसि पशुपति अस्त्रकहँफिरिपाय । पायवरम
मान केशव सहित सुख सरसाय ॥ बहुरिआये शिविर कहँ
इतेमें भोभोर । लगेपारथ कृष्णजागे जगेभट सबओर ॥प्रात
कृत्य सरीति लागे करन पूरितहर्ष । लगी दुन्दुभि बजन अ
गणित गहेभटउत्कर्ष ॥ पढ़नलागे बिरद बिधिवत सूतमाग
भूरि । गानलागेकरन गायक स्वरनसोंथलपूरि ॥ दोहा ॥तृति
दिवसकी निशि भई जोबार्त्ता तेहिपर्ब । संजय इमिधृतराष्ट्र
कहत भयेसो सर्ब ॥

इतिश्रीद्रोणपर्बणितृतीयदिनरात्रौअर्जुनप्रतिज्ञाबर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय

सोरठा ॥ चौथे दिनकेप्रात बाद्यनाद सुनि प्रभुहि गुणि
जागिधर्म बिख्यात नित्यकृत्य कीन्हों साबिधि ॥ रोला ॥ द
आहुति अग्निमें अरु पूजिद्विजन सचाय । दयेबसन सहि
भूषित तरुणवय शतगाय ॥ भूरिकांचन बसन हयदे पहि
भूषणबस्त्र । सभागृहमें जायबैठो धारि अनुपम अस्त्र ॥ ते
आये कृष्णअरु सबबन्धु अरु नृपसर्ब । यथाबिधि सत्क
सबको कियोधर्म अखर्ब ॥ कृष्णसों इमिकहो प्रभु कुरु
उदधिअगाध । तासुतरिबे हेत बोहित हमहिं तुव अवराध
पार्थ कीन्होंकठिन प्रणतेहि समुझि सूखतप्रान । आपुकोस
समुझि हम ध्रुवगुणत निज कल्यान ॥ होइमम कल्याण तै





रल परदल माह । रहत रबिके मारिजाते जायसों नरनाह ॥
चन यहसुनि कहो केशव भूपधारोधीर । जूटिआड़ै पार्थकहँ
कौनऐसोबीर ॥ पार्थजीत्यो शक्रकहँ सोवातहैबिख्यात ।मर्दि
दल जयद्रथकहँ बधिहि पारथतात ॥ इतेमहँ तहँ पार्थआये
वि पार्थहिभूप । धर्मनृपउठि अंकलायो भरेक्षोभ अनूप ॥बैठि
र्जुनतहां नृपसों कहोबिधिवततौन । रजनिमें उतरहेदेखे स्वप्न
वप्रदजौन ॥ स्वप्नसो सुनिमुदित ह्वैसब कियो हरहिप्रणाम ।
माकरिबरखासरथपै पार्थबीर अक्षाम ॥ चढ़े निज निज बा-
हनपै भूप भट समुदाय । बाद्य लागे बजनमंगल पढ़नद्विज
बदाय ॥ पूजि अश्वन चढ़ोरथ पै पार्थबीर अमान । चढ़ेतब
कृष्ण अरु भट सात्वकी बलवान ॥ देखिबहु शुभ सगुन
दक्षिण पार्थ अति हरषाय । कहतभेयुयुधान सों ध्रुव बिजय
ते लखिजाय ॥ भाषिऐसो कह्यो सात्वकि बेगिनृपपहँ जाय ।
थरहि सबठौर रक्षत रहो नृपहिं सचाय ॥ एक रक्षण भूप
है सबहि कारजपर्म । सदासयतन रहेहु जातेरहै मोदितधर्म ॥
पार्थके ये बचन सुनिकै कहितथास्तु सचैन । सात्वकी तहँगयो
हँ हैं धर्मनृपति ससैन ॥ सूत सुतके बचन सुनिकै वृद्धनृपति
शंक । कहो अनरथ समुझि निशिदिन दहतहै मम अंक ॥
र्ममूल अनर्थ के जे किये मोसुतमूढ़ । तासुशाखा प्रगटिबढ़ि
ब भये सेजेरूढ़ ॥ बिदुर भीषमद्रोण हम बहुबार कहिकहि
ति । कह्यो कितक बुझाय सोनहिं सुन्यो सोगहि रीति ॥
ज्यमें जिमि अंशइनको तथा उनको तात । कौन गोपनकरै
की बात जो बिख्यात ॥ पूर्वको अपकार इनको दुरैधर्मनरेश ।
य बनतेसनय मांगत भये आधो देश ॥ परमसुहितसुजान
शव आयभाष्यो तौन । नहीं मान्यो मोहबश मम पुत्र अव-
णभौन ॥ इतेहूपै अनरबारण हेत धर्म्म उदार । बंश रक्षण
त मांगे पांचग्राम बिहार ॥ नहीं सोऊदये ममसुत भरो गर्ब

नदान । कहो संजय तासुकैसे होइ अब कल्यान ॥ शकुनि
शासन कर्णको मानिमतगहिगर्ब । निदरि सबकेबचन शत
कियो कारज खर्ब ॥ धर्मशील नरेशयोधापार्थ सो रणधीर
कृष्णमंत्री जासु तासों लहैजयको बीर ॥ अवशिहोनीहोत
जय कहो सहित बिधान । करि प्रतिज्ञा कियो जैसो युद्ध
अमान ॥ सुभटइत उतके यथाजुटि कियो संगरघोर । कहो
जय सुन्यो सो सब चहतहै मनमोर ॥ बचन ये धृतराष्ट्रकेसु
कह्योसूत सयान । जितो अनरथ भयो करता तासु तुम
आन ॥ आपुजो नहिंचाहते नहिं होनपावततौन । आपुकोन
कह्यो मानै रह्यो ऐसो कौन ॥ जो न मानत कहोतौ तेहि कुरु
सो बँधवाय । डारिबेरीराखते नहिंहोत अनर अचाय ॥
तबतौ राज्य सबलहि पुत्रको ऐश्वर्य । कहत अब इमि
जबदुख देन बाढ़ि बहमर्य ॥ गयोजब जलनिकरि तबका
बांधे होत । चूकतबको मिटतका अब कियेशोच उदोत ॥
तबसो भयोअब जोभयो सुनिये तौन । मोर भूपतिजयद्रथ
कह्यो द्विज बुधिभौन ॥ कर्णभूरिश्रवाकृप वृषसेन शल्यउदा
सहित ममसुत संगलै तुमरथी साठि हजार ॥ लाखहयसा
चतुर्दश सहसमैगल मत्त । सहस इकइस संग लीजै धृतभु
एडीपत्त ॥ रहौ इनके मध्यतुम षटकोश पीछे जाय । कहा
र्जुन शक्रयम नहिं सकहिं तुमकहँ पाय ॥ द्रोणके ये बचनसु
सो भूप शोच दुराय । दश अयुत तुरंग सवारनिज अरु ति
भट समुदाय ॥ द्रोणजिनकहँ कहेतिनषटरथिन सहितसचा
जायपीछे कोशषटभो लखतकोट बनाय ॥ द्रोण बिरचत
नृप तब शकटब्यूह महान । पूर्ब पश्चिम तासु चौबिसकोश
परमान ॥ कोश दशको ब्यामताको तासुमाधि करिऊह । बि
चिपद्म सुब्यूह ताके मध्यसूचीब्यूह ॥ बिरचिराख्योतासु म
में सिन्धुपतिहि सयत्न । यथा राखत बिबिधबिधिसों कृप





पाय सुरत्न ॥ रचे पद्मसुब्यूहके उत गर्वब्यूह अभेद । राखिबि-
खित प्रबल योधा जिन्हैं नहिं श्रमखेद ॥ रह्योसूचीब्यूह के
सब भूप भट कृतबर्म । रहो तबतो तनयनृप जलसन्ध कर्ण
अमर्म ॥ प्रबल प्रबल प्रसिद्ध भटन ससैनक्रमसों भूप । राखि
दिशि द्रोण बिरच्यो ब्यूह परमअनूप ॥ जयद्रथ सों रहो
आगू द्रोण भटषटकोश । सुभटरदनसुब्यूहको सोबदनअगम
दोश ॥ बदनरक्षक सैनसहहोसुवन तो बलवान । जौनदुर्म-
प्रबल भट प्रलयकरन अमान ॥ रहो पीछू तासु दुःशासन
कर्ण ससैन । यथाक्रम इमि रहे सिगरे सुभट बलबुधि ऐन ॥
ऐसो ब्यूह मोदित भयो कुरुकुलराय । यथा निरखिमरी-
काकहँ मृगाहोत सचाय ॥ उतै बिरचे ब्यूह बिधिवतनकुल
रणधीर । शतानीक उदार मति अरु धृष्टद्युम्न सुबीर ॥
भरिबढ़ि सैनसों करि धनुषको टंकार । शंखधुनिभो करत
बिदित बीरउदार ॥ पांचजन्यसुशंखकी धुनिकरीयदुकुल
जलदगणसमभयो गरजतकपिध्वजरथअमन्द ॥ भयो
तिशय दुसह शब्द सशंकभोममसैन । दये मूत्र पुरीखकरि
तुरँग द्विरदअमैन ॥ देखि दुर्मर्षणहिं पारथकह्यो हयदुराय ।
याके निकट रथलै चलो तुरँग चलाय ॥ बज्रसम शरदृष्टि
करि मर्दियह दलसर्ब । ब्यूहमध्य प्रवेश कीजै तोरि सबको
॥ पार्थके ये बचन सुनिकै मोदकेशव आसु । सुरथ रन्ध
वायुसम लैगयेघोरे तासु ॥ भयो बरषत बाण इनपै पार्थधीर
तिन । सुभट इतके भये बरषत पार्थपै शरपीन ॥ करि अ-
सुचक्रसम धनुबरषि शायक भूरि । सैनमधि तोतनयके
हिदये सबथर पूरि ॥ काटि अगणित शक्तितोमर बाणरथ
केत । दयेकाटि असंख्य शिर करचरण रचि शरसेत ॥ एक
रथ सुभटसों बढ़ि सुभट कइक हजार । भिरे तिनकहँ बधत
रथ करै नेकु न बार ॥ तुरँग गज भट काटि अगणित डारि

महिपै तत्र । कियो भीषम रूप धरणिहि पार्थरणकृत सत्र
मचो हाहाकार तेहिसमय सैनमें तेहिठौर । बिकल ह्वैभटभ
अगणित तजि भटनकोतौर ॥ धीर धरिधरि तासुसम्मुख ग
जे बलवान । भयेते सबज्वलनके ढिगजात शलभ समान
दोहा ॥ इमि मर्दित ह्वै भटनसह दुर्मर्षण तजिधीर । भागि
छिलि आयो रह्यो जहँ दुःशासन बीर ॥ यह सुनिकै धृतरा
नृप करिकै मनहिं मलीन । कहो कहौ संजय तदनु भिरेको
भटपीन ॥ चौपाई ॥ संजय सुनि भूपतिकी बानी । कहतभयेसु
नरपति ज्ञानी ॥ दल बिचलाय शरासन करषत । पारथच
बाणबर बरषत ॥ कालानल समान भय छावत । दल मर्द
पार्थहि लखि आवत ॥ योधन सहित क्रोधसों मढ़िकै
भिरतभयो दुःशासन बढ़िकै ॥ क्रोधित सहस द्विरद मतवा
तिनपै चढ़े सुभटप्रणधारे ॥ घण्टनकी धुनिसों नभपूरत । ध
टंकारनसों श्रुति थूरत ॥ शर शक्तिन की बरषा कीन्हें । बा
आगू आड़ प्रणलीन्हें ॥ शुण्ड उठाय करत धुनिघोरा । च
द्विरद पारथकी ओरा ॥ सो गजयूथ निरखि कपिकेतू । र
भयो अबिरल शरसेतू ॥ काटि असंख्यन आयुध इतके । क
टतभो धनु ध्वज करकितके ॥ किते गजनके कुम्भ बिदारे
कितेगजस्थ सुभट बधिडारे ॥ अगणित द्विरदकिये बिनुस्वामी
बहुगजस्थ कीन्हें पदगामी ॥ अगणित द्विरदनके रदकाटे
अगणित शुण्ड काटि महिपाटे ॥ बारिबूंद सम सबके तनमें
लगे पार्थके शर तेहि क्षनमें ॥ यहि बिधिपारथ शर सन्धाने
ह्वै ब्याकुल तहँ शेष पराने ॥ तबहयसादी रथी सुयोधा । बा
ताको कीन्हें अवरोधा ॥ दोहा ॥ मण्डल समकोदण्डकरि श
झर प्रलय अरोपि । क्षणमें मरदनभो तिन्हें पार्थ धनुर्द्धर
पि ॥ मारि असंख्यन तुरँग भट धनुध्वज अगणित काटि । क
रनपगन शिरधरनसों दई मेदिनी पाटि ॥ सोरठा ॥ थिरनस





रिधीर भगो सोऊ हत शेषदल । दुःशासन लहिपीर भगो
सुभि अपराध निज ॥ जयकरी ॥ इमिबिधि जीति तो सुतहि स-
न । पार्थ धनुर्द्धर बलबुधि ऐन ॥ द्रोणाचारयके ढिगजाय ।
त जोरि इमि कह्यो बुझाय ॥ हे प्रभुतौ अनुकम्पा पाय ।
ठि ब्यूहमधि बल दरशाय ॥ मर्दिसैनकरि युद्ध बिनोद । बधि
यद्रथहि चहत सुमोद ॥ तातरहै जाते ममटेक । उचित तु-
हँसो करब बिबेक ॥ पाण्डुसदृश अरु धर्मसमान । केशवसम
म मोहिं न आन ॥ रक्षणीय जिमि तुमकहँ तात । निति अ-
त्थामा गुरुगात ॥ तिमि हमार रक्षण सबठौर । हे तुमकहँ
र्तव्य सडौर ॥ जाते रहै मोरप्रण पर्म । सोई करौ बूझिकै
र्म ॥ सुनि हँसि बोले द्रोण यथार्थ । हमहिं बिनाजीते हे पार्थ ॥
न्धुपतिहि नहिं सकिहौ पाय । ताते करौयुद्ध मनलाय ॥ इमि
हिकैकरि धनु सन्धान । हने पार्थकहँ तीक्षण बान ॥ पारथ
जत भयो शरभूरि । बहु शरतजे द्रोण रिसपूरि ॥ दोऊसुभट
नुर्द्धर ख्यात । कियो घोर रणते दृढ़घात ॥ द्रोणाचार्य्य धनु-
बिधि ठाटि । दीन्हौंतासु प्रत्यञ्चा काटि ॥ दोहा ॥ तबचढ़ाइ
औरज्या पारथ धीर धुरीन । भो मारतषट शत बिशिख अ-
ति अनियारे पीन ॥ फेरि हन्यो शरसातशत फिरि सहस्रशर
रि । दश हजार शर हनतभो गाण्डीवहि टङ्कारि ॥ चौपाई ॥
एक अयुत बाणतजि पलमें । भयो प्रलय पारत ममदलमें ॥
ट द्रोणाचारय के साथी । बधे असंख्यनबधि हयहाथी ॥ दावा
दहशतासु शरगण में । दलबन दहत देखि तेहि क्षणमें ॥ बा-
द सरिस बरषि जल शायक । रक्षण कियो द्रोण दृढ़घायक ॥
टि असंख्यन शायक तासू । हने तासु उरमांधि शरआसू ॥
बिह्वल फिरि धीरज धरिकै । पार्थहने शर अतिरिस क-
कै ॥ द्रोण पांचशर कृष्णहि हनिकै । पार्थहिहने तिहत्तरि
निकै ॥ ध्वज मधिहने तीनिशर ओपित । कीन्हों रथहि शरन

सोंगोपित॥ पार्थ काटि सबशर अनियारे। अगणित बाणद्रो
कहँमारे॥ दोऊदिव्यअस्त्र बहुडारें। दोऊ अस्त्रअस्त्रसों वारें
यहिविधि दोऊधनुधर नायक। कीन्ह्यों घोरयुद्ध रणचायक
लखियुग भटनप्रबल अनुमानी। कृष्ण पार्थसोंकही सुबानी
द्रोणहिजीति चलन जोचैहौ। तौइतही सबद्योस बितैहौ॥ तातें
त्यागि द्रोणसों लरिबो। चलो चहत जो नृपबध करिबो॥ यह
सुनि कहो कृष्णसों पारथ। आपुकहोसो बचनयथारथ॥ बेगि
चलौ रथलै दलमाहीं। जीतन योग द्रोण भटनाहीं॥ दोहा॥
यह बिचारकरि द्रोणकहँ करिप्रदक्षिणानौमि। चलोपार्थगजेत
रचत शायक जालअसौमि॥ द्रोण टेरितब इमिकह्यो कहांजात
तजिमोहिं। बिनुजीतेशत्रुहि अनतजैबो उचितनतोहिं॥ चौपाई
यहजोकह्यो अचार्य्यसो सुनिकैपारथकह्यो। तुममम गुरुहे आर्य
नाहिं ममशत्रु प्रसिद्धयह॥ चौपाई॥ इमिकहिबरषतशरदल म
दत। चलोपार्थ घनसदृश ननरदत॥ युधामन्यु उतमौजा दक्ष
क। हेसँग तासुपीठिके रक्षक॥ पार्थहि यहिबिधि आवतदेखी
कृतबरमा भूपति अतिलेखी॥ अरुकाम्बोज श्रुतायूराजा। आ
ड़तभे भिरिसहित समाजा॥ सूरसेन अभिषाह सुभेशी। शि
वयबसायत केकयदेशी॥ चौवाई तरुवरसोंजैसे। भिरेभिरे पारथ
सोंतैसे॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसमचरिकै। मण्डल सदृशशरासन
करिकै॥ अगणित गुल्मलता तरुबनमें। लपटनदहै दवानल
क्षनमें॥ तिमि असंख्य भटगजहयपलमें। बाणन बधतभयो
ममदलमें॥ राजरोग सम ममदल तनमें। लखिपार्थहि अति
रिसकरि मनमें॥ जाइ भिषज सम द्रोण अमाना। दयोबाण
बिषबटी समाना॥ पार्थहि द्रोण द्रोणकहँ पारथ। हनतभये बहु
शरगुणिस्वारथ॥ बहुबिधि दिव्यअस्त्रकीबर्षा। करीपरस्परगहि
उतकर्षा॥ दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों काटत। सरथ चक्रसमफिरि
फिरि डाटत॥ घोरयुद्ध कीन्हींतेदोऊ। ज़िनदोउनसम तृतिय





न कोऊ॥ बरषत सहतबाणबन कोहे। दोऊगिरि बारिदसम
सोहे॥ दोहा॥ हनि पचीसशर पार्थकहँ कृष्णहि सत्तरिबान्।
हनेद्रोणद्रोणहिहने बहुशरपार्थअमान॥ अतिशय बिक्रमकरि
तहां बरषि बाण समुदाय। द्रोणपार्थके सुरथपै सबदिशिदीन्हें
छाय॥ तबपारथकी ओरलखि कृष्णचन्द्र मुसुकाय। कृतबर-
माकी फौजमधि रथलैगयेबढ़ाय॥ चौपाई॥ कृतबरमा काम्बोज
सुदक्षिण। भिरेधनंजयसो सहदक्षिण॥ बरषि असंख्यन शर
अनियारे। कृतबरमा तेहि दशशर मारे॥ पारथकृतबरमाकेतन
में। शतशर हनतभयो तेहिक्षनमें॥ तब कृतबरमा धनुटंकारे।
पार्थहि बाण पचीस प्रहारे॥ बाणपचीस कृष्णकहँहनिकै। गर-
जत भयो क्रोधसों सानिकै॥ तबपारथ करिकै धनु छेदन। हनेए-
कैस बाण गिरि भेदन॥ नृप कृतबरमा बरधनुगहिकै। दशशर
हने खरोरहु कहिकै॥ नवशर कृतबरमाके धरमें। मारेपार्थपर-
खि तेहिथरमें॥ काटि मारि सहि सहि बहुशायक। घोरयुद्धकी-
न्हों दृढ़घायक॥ तबकेशवपारथसों भाखी। कहासमुझिमृदुता
गहिराखी॥ बेगिजीति यहि आगे चलहू। नृपति श्रुतायुध
कोदल दलहू॥ सुनिपारथअति धनुबिधि कीन्हें। कृतबरमहि
मोहित करिदीन्हें॥ कृतबरमाकहँ मोहित करिकै। चलतभयो
शरसेतु बितरिकै॥ चेति निमिषमें भट कृतबरमा। गहेबीररस
बरकी परमा॥ युधामन्युउतमौजा राजहि। आड़त भयोचिन्ति
जयकाजहि॥ तिनसों मचो युद्ध तेहिथलमें। तीनौ प्रबलगने
अनुबलमें॥ दोहा॥ तौलगिबाढ़ि आये इतै पार्थगहे जयचाह।
तेयुगनृपतहँ गौनकी बहुरि न खाईराह॥ चौपाई॥ दलमर्दतपा-
रथकहँ आवत। निरखिश्रुतायुध भो शरछावत॥ पार्थहिमारि
तीनि शर क्षनमें। सत्तरिहने कृष्णके तनमें॥ सो लखिकैअर्जुन
अतिरोखे। ताहिहने नब्बेशर चोखे॥ हन्यो अर्जुनहि नृपति
श्रुतायुध। शर सतहत्तरि बनमें आयुध॥ पार्थकाटि अतिदृढ़

धनुतासू । मारे ताहि सात शर आसू ॥ तबसो धारिआन धनु
तुरमें । नवशर हने पार्थके उरमें ॥ शततुरंग बधि नृपके रथके ।
पारथाकिये पथिक नभ पथके ॥ तब गहिगदा श्रुतायुध राजा ।
भोगरजत बजवाद्द सुबाजा ॥ भूपप्रभाव गदाको सुनिये । सो
सुनि प्रभुकी महिमा गुनिये ॥ पनसा नामानदी सुहावनि । सो
ही नृपकी जननी पावनि ॥ प्रगटित भयो बरुणसों तासों ।
नृपति श्रुतायुध भरो प्रभासों ॥ पनसा कही बरुणसों येहू । प्र
भु मम तनय अमरकरिदेहू ॥ यह सुनिकह्यो बरुण अनुमानी ।
नरनाहिं होत अमर सुनुमानी ॥ गदा समंत्रदेत यहि ऐसी ।
जौन अरीन बज्रताड़ि तैसी ॥ तासु प्रभाव लहिहि जयसबसों ।
बिनु प्रतिद्वन्दिहि हनिहिन जबसों ॥ जब अयुद्धकरतापहँडारि
हि । तबयह गदापलटियहि मारिहि ॥ दोहा ॥ इमिकहिकैदीन्ही
बरुणगदाअमोघ समंत्र । होनृप जासु प्रभावते राखतसुजय
सुतंत्र ॥ भयो कालबश तेहि समय भूलि बरुणको बैन । गदा
चलायो कृष्णपहँ बिदितबीर बलऐन ॥ लरतरह्यो अर्जुनतजी
गदाकृष्णपहँ भूप । बध्योनृपहिताते पलटिगदाभयानकरूप ॥
तोटक ॥ इमि देखि श्रुतायुधको मरिबो । सबलोग धरे बिस्मय
करिबो ॥ बिचलोदल भूप श्रुतायुधको । तजिशोच सुबाहन
आयुधको ॥ यह देखि सुदक्षिणबीरखरो । रथहांकिभिरो अति
रोषभरो ॥ तिहिपार्थ तहां शर सातहने । तिमि पार्थहिसोदश
बाण बने ॥ हनि कृष्णहि तीनि सुबाणखरे । फिरि पार्थहिसात
हने बड़रे ॥ तहँपार्थ रच्यो शरजाल महा । नृपतासु स्वरूपन
जात कहा ॥ धनुकेतुहि काटि गिराय दये । शर तासुहियेहनि
मोदलये ॥ तब बीर सुदक्षिण शक्तिगहो । तजिपारथपै मति
भागुकहो ॥ दोहा ॥ पार्थकाटि तेहि बीचही फिरि चौदह शर
मारि । तुरँग सकल अरु सारथिहि दीन्हेंमहि पैडारि ॥ फिरि
बज्र समशर हने भूपतिके उरमाह । ह्वै अप्राण महिपै गिरे





बिदितबीर नरनाह ॥ सुवन भूप काम्बोजकोमरो सुदक्षिणबीर ।
भगीतासु सेना करत हाहाकार अधीर ॥ चौपाई ॥ सोलखिकै
अति अमरष पूरे । गर्बि असंख्यन नृप भटरूरे ॥ घेरि लगे
सबआयुध डारन । मारुमारु धरु मारु पुकारन ॥ तेहिक्षण पार्थ
चक्रसमनाचिकै । सबदिशि सेतु शरनको रचिकै ॥ बधिअग-
णित हय गज भट पलमें । प्रलयकाल पूर्‍यो तेहिदलमें ॥ पा-
र्थहि जानिकाल जगजेना । बिचलत भईभूप तोसेना ॥ सोलखि
अच्युतायु नृपयोधा । अरु श्रुतायु कीन्हीं अवरोधा ॥ तेयुग
बन्धुभरे अतिरिसिसों । हनेअसंख्यन शरयुगदिसिसों ॥ ति-
नके काटि असंख्यन शायक । बहुशर हन्योपार्थ दृढ़घायक ॥
तबश्रुतायु तोमरशर चोखो । हनोतासुउरनिरखि अनोखो ॥
अतिदृढ़घाव लगेतहँपारथ । मोहित भयो भूलिनिजस्वारथ ॥
प्रबलबीर तुरतहि सोजागो । सिंह समान क्रोधसों पागो ॥
अच्युतायु नृपताहीक्षनमें । शूलहन्योपारथकेतनमें ॥ लगेशू-
लफिरि मुरछित ह्वैकै । रह्यो ध्वजासोंलगिबलख्वैकै ॥ सोलखि
पारथको बधजानी । हरषेभटगण जयअनुमानी ॥केशव लखि
अतिबिस्मय लहिकै । किये सचेत बचन कछु कहिकै ॥ तौल-
गिते युगभटरिस लीन्हें । रथहि शरन सोंगोपित कीन्हें ॥ चेति
धनंजय भट रणनायक । तजोऐन्द्रअस्त्र जयदायक ॥ दोहा ॥
तिन सों सहसन बाणकढ़ि काटिदये सबबान । तिन्हैंबध्यो तब
दिब्यशरहनि भटपार्थ अमान ॥ मारिश्रुतायुसुबीरकहँअच्युतायु
कहँमारि । मारि पञ्चशत रथिन कहँ दीन्हें महिपैडारि ॥ चौपाई ॥
अगणित हय गजबधि भय त्यागे । मरदत सैन चले फिरि
आगे ॥ निज जन कन कहँ निरखि गतायू । भटदीर्घायु अरुणि
श्रुतायू ॥ बर्षि बाण पारथके रथपै । जाल बिरचिदीन्हों नभ
पथपै ॥ पार्थअसंख्यन शरपरि हरिकै । बाण जालको छेदन करि
कै ॥ हनि हनि दिब्यअस्त्र अरिखेदन । करतभयोतिनको शिर

छेदन ॥ बाधि तिनकहँ कोदण्डहि करषत । अगरो अबिरल
शायक बरषत ॥ जिमिगजयूथमध्य पंचानन । कलमनदपटत
बधत अमानन ॥ तथा भटनपर शायकडारत । चलेगणे सुभ-
टन संहारत ॥ लखि कलिंग आदिक नृप योधा । कैएकसहस
किये अवरोधा ॥ अरु दक्षिण दिशिके बहुराजा । आड़तभेभीरि
सहित समाजा ॥ सहसन मत्त द्विरद मतवारे । तिनपै चढ़ेसु-
भट भयधारे ॥ धनुटंकारि घेरि सब दिसिसों । बरषन लगेबाण
भरिरिसिसों ॥ तहांपार्थ अति बिक्रम कीन्हों । सब दिशि शर-
पंजर रचिदीन्हों ॥ ताजिताजि दिब्यअस्त्र अनियारे । अगणित
द्विरद निमिषमें मारे ॥ बधि अगणितगजरथ धनुधारी । करत
भयो यमपुर पथ चारी ॥ रचि सब दिशि अबिरल शर सेतू ।
काट्योअगणित शर धनु केतू ॥ दोहा ॥ कटेकुम्भकररद चरण
द्विरदनसों तेहि याम । कियो भयानक रूपमहि पार्थबीर अ-
भिराम ॥ सद्विरद द्विरदस्थन भटन बधित अशेषन टारि । च-
लो पार्थभट मनु चलो रबिघनपटल बिदारि ॥ सोरठा ॥ सो ल-
खिकै जय ऊटि सक पारद अरु यवनगण । टेरिटेरिबाढ़ि जूहि
बरषन लागे शक्तिशर ॥ तोमर ॥ तेहि समयपार्थ अमान । तहँ
घूमि चक्र समान ॥ शर जाल सबके काटि । शरसेतुसबपैठाटि ॥
हतशेष भटन भगाय । शरबरषि सब दिशिछाय ॥ फिरिचलत
भो रणधीर । हनि बधत अगणितबीर ॥ तबभिरतभे बढ़िजाय ।
जे म्लेच्छ उन्नत काय ॥ जे दरद अरु अतिसार । अरु दावँ
पुण्डउदार ॥ येभट असंख्यनसर्व । सबओर घेरिसगर्ब ॥ जे
आयुधनके भेद । लेलगे हननअखेद ॥ तहँपार्थ करिसन्धान ।
करि ब्यर्थ सबके बान ॥ शरसेतु अबिरलघोर । साचितंत्र रचि
सबओर ॥ षटसहस योधन मारि । भोदेत महिपैडारि ॥ अरु
बधेएक हजार । जे भटनके सरदार ॥ बहुचरणकरन बिहीन ।
भो करत योधापीन ॥ इमिप्रलय पूरिपसारि । हतशेष भटनबि-





रि ॥ भटपार्थ सुयश बिचारि । फिरचलो धनुटङ्कारि ॥ दोहा ॥
बढ़ि पारथसों भिरो सुभट श्रुतायूतौन । भूपदेश अम्बष्टको
णोयोधाजौन ॥ सो पारथके सुरथपै देतभयो शरपूरि । सब
काटोनिमिषमें पार्थमारि शरभूरि ॥ बाणनसों बधितुरँगसब
टिदियो धनुतासु । तब अँबष्टपति गहिगदाचलो सुरथतजि
तु ॥ सोरठा ॥ शरक्षुरप्रसों पार्थ काटिदेतभो सो गदा । तब
नृपगुणि स्वार्थ और गदागहि चलतभो ॥ पारथ बीर नि-
रि शीघ्र काटि सोऊगदा । बाण अमोघ प्रहारि बध्योताहि
तु भूपमणि ॥ चौपाई ॥ इमिदलमर्दित लखि दुर्योधन । लख्यो
अर्जुनको अवरोधन ॥ अतिब्याकुल तासों मनमेलो । गयो
णकेपास अकेलो ॥ ब्यूहद्वारपै रह्यो अचारय । तासों कहत
यो सुनु आरय ॥ कोप बायुयुत पार्थ दवानल । दहत जात
सु समादल ॥ बड़ेबड़े सुभटनकहँ जिमिजिमि । बधत जात
पारथ तिमितिमि ॥ शंकितहोत भूपमम पक्षक । नृपतिजय-
के जे रक्षक ॥ इमिसब जानतरहे यथारथ । द्विजसों बढ़न
पैहै पारथ ॥ बिनु तुमकहँ जीते दल जीतत । जात चलो
नृप बध चीतत ॥ हम सबबिधि तुम्हारि सेवकाई । करत
नि गुरुदेव सहाई ॥ तुम नित उनहींकी जयचाहत । उन्हैं
तदल नाहिं तुम पाहत ॥ प्रथमहि आपु न रक्षण भाखित ।
न जयद्रथकहँ हम राखित ॥ ताते तात करहु सो काजा ।
ते बचै जयद्रथ राजा ॥ यमके डाटतरे परिकोई । बचै न
हि पार्थसों सोई ॥ जौपारथ वहि देखन पाइहि । तौ तुरतै
लोक पठाइहि ॥ जौ नहिं आड़े तुम दृढ़ घायक । तौ को
हि आड़न लायक ॥ सुनि ममबचन रोष मति आनो ।
बचै सो बिधि अनुमानो ॥ दोहा ॥ भूपतिके ये बचन सुनि
यो द्रोण सुनु भूप । हय तुणीर धनु सारथी अर्जुन के अनु-
प ॥ तजतबाण जौलगि गिरत तौन बाण हेतात । तौ लगि

सो तेहि बाणते अगारि कोशभरि जात ॥ तरुण पुरुष वह
हम कैसे आड़ो जाय । छपो न बिक्रम पार्थको जानतहौ कु
राय ॥ जयकरी ॥ नृपतियुधिष्ठिर सेन बढ़ाय । लरत ब्यूहके मु
पै आय ॥ जौ हम त्यागि ब्यूहको द्वार । जाब उतै सुनु भू
तार ॥ तौ इत ऐसो योधा कौन । आड़िहि भीम आदि
जौन ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटचण्ड । दलमधि धसिहैं धुनि
दण्ड ॥ तब नहिं करतबनी कछुकाज । लहिहि जीति पाण्ड
महराज ॥ ताते जायलरो तुमभूप । दोऊबन्धु बली अनुरू
हैअसहाय रथी वहएक । तुम्हैंसहायक रथीअनेक ॥ तुम
लरत देखि सबबीर । नहिं टरिहैं लरिहैंधरिधीर ॥ यहसुनि
कुरुनाथ नरेश । कह्योसुनो आचार्य सुमेश ॥ तुम्हैंआदियो
कहँ जौन । जीतिगयोपारथबलमौन ॥ हमकिमितासोंलरियेत
त । कहियेआपुसमुझि यहबात ॥ यहसुनिकह्यो द्रोणमतिमा
नृप तुम कह्यो सांच नहिं आन ॥ देततुम्हैं हम कवचअभे
ताहि धारिकै लरो अखेद ॥ जौन वृत्तसों लरिबेअर्थ । शि
हि दीन्हेशम्भु समर्थ ॥ शक्र अंगिरहि दयो स्वतंत्र । अंगि
जीवहि दयो समंत्र ॥ दयो अग्निवेश्यहि गुरुताहि । हम
दयो तिन धनुधर चाहि ॥ दोहा ॥ देततुम्हैं हम कवचवह
रण करियेतात । अस्त्रअमोघौ अरिनके नहिं परशैं तो गात
इमि कहि द्रोण समंत्र वह कवच तासु अँगबांधि । कह्यो
आशिषदै लरो निरभय हरहि अराधि ॥ महिखरी ॥ लहिकव
चारु अभेद उग्र प्रभाव अति आनँदभरो । भट पार्थसों भि
लरनको तो तनय नृप साहसधरो ॥ रथसहस अरु गजसह
प्रबल प्रमत्त भट जिनपै चढ़ै । दशलाख तुरँग सवार जे
बीर कवचनसों मढ़ै ॥ लैसंग बहु बजवाय दुन्दुभि चलो अ
आनँदगहे । जहँरहो पारथ लरत दलमधि प्रलय अति पू
तहे ॥ खुरधार छार अपार सों नभ भू धुरित सबदिशि भयो





नमध्यके शशि सम समय तेहि देव दिनमणि लखिगयो ॥
॥ तौ सुत नृप जब चलो गहि जय लहिबेकी हौंस । दोय
म दिन तेहि समय भो ब्यतीत तेहि द्यौस ॥ राम राम श्री
सिय जपिश्री सीताराम । द्रोणपर्व भाषा कियो चौथेदिन
याम ॥

इतिश्रीद्रोणपर्वणिकौरवदलेअर्जुनप्रवेशोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा ॥ कवचधारि कुरुनाथनृप चलोपार्थकी ओर । इतमम
अरु पांडवन सों रण माचो घोर ॥ चौपाई ॥ द्विजभट
द्युम्न बरपनके । शोभितभये खम्भ समरनके ॥ दोऊ
बानल समदरशे । दोऊ शरबन घनसम बरशे ॥ दोऊ
गणित भट बधिडारे । दोऊ दुहुंदिशि प्रलय पसारे ॥ इहि
धि दुहुँदिशिके भटरूरे । कियेयुद्ध भिरि भिरि रिसपूरे ॥ तो
भट बिकर्ण धनुधारी । चित्रसेन अनपम रणचारी ॥ स-
बिबिंशति दोनौं भाई । भिरे भीमसों ओज बढ़ाई ॥ भिरो
देयनसों राजा । बढ़ि नृपभट बाह्लीक समाजा ॥ दुःशा-
सात्वकिसों भिरिकै । कीन्ह्यो घोरयुद्ध तहँ थिरिकै ॥ माद्री
सों भिरे सक्रोधा । बिन्द और अनुबिन्द सुयोधा ॥ सुभट
कचसों गहि आयुध । अभिरो राक्षसबीर अलायुध ॥
तिभोजसोंभिरो अलम्बुख । काल करालसदृश भयदमुख ॥
बिधि द्वन्द हजारन भिरिभिरि । घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरि
रि ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणाचारय । कियेतहां अतिअद्भुतकारय ॥
गणित बाण परस्पर डारैं । अगणित बाण शरनसों बारैं ॥
गणित भटन बेधि बधि डारैं । फेरि परस्पर बाण प्रहारैं ॥
॥ त्यागि धनुष असिचर्मगहि धृष्टद्युम्न अनखाय । द्रोण
के सुरथपै जान चह्यो रिसछाय ॥ तिमि तेहि लखि आ-
र्य तहँ यों मारतभो बान । निकट जाइबेको न क्षण लह्यो
बलवान ॥ चपल रह्यो इमिसुरथपै धृष्टद्युम्नरणधीर । ताके

तनशर हनतभो क्षण न लह्यो द्विजबीर ॥ चौपाई ॥ तुरँग
ईर्षापर इतउत । चरत रह्यो पक्षीसम बलयुत ॥ तहँतहँ
बल बुद्धि निकेतू । अबिरलरचैं शरनके सेतू । खड्ग चर्म
तुरतागतिसों । तिनकहँ ब्यर्थकरै सो जतिसों ॥ तहां द्रोणक
लाघव करिकै । साठि बाण तुरँगन पहँ धरिकै ॥ काट्यो
मारि शतबाणा । दशशायक हनि काटि कृपाणा ॥ युग श
काट्यो ध्वजकेतू । सूतहि बधत भयो जयहेतू ॥ तब
शर योजित करिकै । तापहँ तज्यो मंत्र बिधि भरिकै ॥
चौदह तोमर शर ताही । काटि दयो सात्वकि जयचाही
यमके मुखमधिसों अभिमानिहि । सात्वकि काट्यो भटसेन
निहि ॥ लखि उतके भट अनरथ चीन्हें । सेनानिहि गो
करिलीन्हें ॥ इन सेनानिहि रक्षित देखी । द्रोण सात्वकी
अति तेखी ॥ तुरतहि छब्बिस बाण प्रहारे । फिरि छब्बिस
उरमधिमारे ॥ अमरष गह्यो द्रोण यह सुनिकै । वृद्धभूप
जय गुनिकै ॥ सोअब बेगि भाषु हे आरय । सात्वकि
कियो अचारय ॥ सोसुनिकै हँसि संजय भाषो । तबद्विजत
बध अभिलाषो ॥ कीन्ह्यो अति बिक्रम मनभायो । नेकु
ताहि सुबश करिपायो ॥ दोहा ॥ नागराज सम श्वसत
रिसकरि रातेनैन । अधर दाबिकै रदनसों द्रोण बीरबलऐ
तुरँग तुरंगन चपलकरि चलिसात्वकिकी ओर । अबरहु
न भागु कहि बरषो बाण अथोर ॥ सात्वकि तिमि वर्षत
शिख कह्यो सूतसों बैन । शीघ्रसुरथ मम द्रोणके ढिगलै
सचैन ॥ सोरठा ॥ जौन त्यागि निज धर्म भो आश्रित नृप
वनको । गहि क्षत्रिनको कर्म चरततासु बिक्रमलखौ ॥ चौ
द्विमिकहि रचत शरनकोसेतू । भिरो द्रोणसों बुद्धि निके
द्रोणताहि सहसन शरमारे । सो सहसनशर द्विजपहँ डा
दोउनके दोऊ सहसन शर । काटि काटि मारे बहुशरब





दोऊअद्भुत बिधिसों चरहीं । दोऊ दिशि शरपंजर करहीं ॥
दोऊ भट शरपंजर काटैं । दोऊ दोउन हनि हनिडाटैं ॥ दोऊ
छत्र दुहुँन के भेदे । दोऊ दोउनके ध्वजछेदे ॥ दोउनके शर
मढ़ि सब दिशिमें । अन्धकार कीन्ह्यों जिमि निशिमें ॥ दोऊ
अनुपम भट बिधि साजे । दोऊ भिरे रुधिरसों राजे ॥ दोऊ
मण्डल सम धनुलीन्हें । चक्रसरिस चरि अतिरणकीन्हें ॥ दुहुँ
दिशिके योधा तेहि क्षनमें । लखि दोउन कहँ बिस्मित मनमें ॥
त्यागि त्यागि संगरको करिबो । लखिलखि रहे दुहुँनको लरि-
बो ॥ सुरगण तहां आइरणचाहे । दोउनकहँ बहुभांतिसराहे ॥
दोऊ गहिगहि अति उतकरषा । कीन्हों दिब्य शरनकी बर-
षा ॥ दिब्य दिब्य अस्त्रनसों दोऊ । बारतभये लखैं सबकोऊ ॥
लरि सात्वकि लाघव बरसों । धनुष द्रोणको काट्यो शर
सों ॥ तुरित द्रोणधनुऔरउठायो । सात्वकि सोऊकाटिगिरायो ॥
॥ फेरि द्रोण धनु और गहि बरषन लागो बान । सोऊ
काटतभो तुरित सात्वकिबीर अमान ॥ यहि प्रकार षोड़श
धनुष काटे सात्वकिबीर । करी प्रशंसा सुमन कहि सात्वकि
अनुपमबीर ॥ साचार्य्यितकै द्रोणतहँ करतभये अनुमान । भी-
षम अर्जुनसम करत सात्वकि धनुष बिधान ॥ चौपाई ॥ तबगहि
और धनुष रिस लीन्हें । दिब्य अस्त्रकी बरषा कीन्हें ॥ जितने
अस्त्रतजे रणबारण । सात्वकि तिनको कीन्हों बारण ॥ जेजे अ-
स्त्र द्रोणतहँडारे । सात्वकि तेई अस्त्रप्रहारे ॥ तबअनुमानि द्रोण
अभिमानी । डारो अग्निबाण सन्धानी ॥ बारुणअस्त्रसात्वकी
मारो । अभिरो युग शरबर्च सँभारो ॥ प्रलयकरन दोऊ भय
कारे । भिरि निजनिज प्रभाव बिस्तारे ॥ अन्धकार सबदिशि
महँ छायो । भरिगो घोरशब्द अनभायो ॥ तेहिक्षण धर्म नृप-
ति सबभाई । भये तासु रक्षक ढिगआई ॥ धृष्टद्युम्न केकय
प्रतिपालक । सदल बिराट शत्रुकुल घालक ॥ बर्षतबाण

मंत्र पढ़ि पढ़िकै। भिरे द्रोण भटसों बढ़िबढ़िकै॥ दुःशासनहि
आदि भटरूरे। राजकुमार क्रोधसों पूरे॥ द्रोणहिं रक्षित तिन
सों भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै॥ इतउतकेभट सहि-
तसमाजा। अति बिक्रम कीन्हों तहँ राजा॥ भो अतितुमुल
युद्ध तहँ सबसों। पृथक् पृथक् सब कहिये कबसों॥ हय गज
सुभट असंख्यन जूझे। निज परसैन न कोऊ बूझे॥ बहीरु-
धिरकी सरिता भारी। तहँकर रुण्ड मुण्ड जलचारी॥ दोहा॥
काटे धनुरथ छत्रध्वज भूषण बसन अनेक। याद जलज सम
तासुमधि निरखे सहित बिबेक॥ शैल शिखर समलखिपरेमरे
डरे गजराज। समुनि गुफासम बधितभट सहित अँबारी सा-
ज॥ सोरठा॥ सुनोभूप तेहिकाल हांकि सुरथ अतिबेगसों। भट
अवन्ति क्षितिपाल गये पार्थसों लरनकहँ॥ चौपाई॥ ते ढिग
जाइ प्रचारि प्रचारी। बरषे बिशिख सिहारि सिहारी॥ साठि
बाण अर्जुन कहँ मारे। कृष्णहि सत्तरिबाण प्रहारे॥ तुरगन
हने बाणशत क्षनमें। तब अर्जुन कोपित ह्वै मनमें॥ बिन्द
और अनुबिन्द नृपतिके। धनुकाटे हनिशर अय अतिके॥
तबते शीघ्र और धनु गहिगहि। मारे बाण खड़ोरहु कहिक-
हि॥ पारथ तेऊ काटि शरासन। हति युग सूतन अरुहयशा-
सन॥ मारि बज्रसम शर गिरिभेदन। कियो बिन्द नृपको शिर
छेदन॥ निज गुरु बन्धुहि मृतकनिहारी। नृप अनुबिन्द बि-
दित रणचारी॥ तब तजिसुरथ गदाकरगहिकै। चलोपार्थपहँ
थिरु थिरु कहिकै॥ अर्जुनमारि पांचशरआसू। काटो शीश
चरणभुजतासू॥ तिनको मरण देखितेहि पलमें। हाहाकारम-
चोममदलमें॥ तेहिक्षण तासु अनुगभट रूरे। भिरे पार्थ सों
अतिरिसपूरे॥ तोमरशक्तिभल्ल अनियारे। पट्टिशगदा परश्वध
भारे॥ भिन्दिपाल आदिक सब चोखे। आयुधबरषतभे अति
रोखे॥ पार्थ काटि सब आयुध तिनके। काटे शिरपग सुभटअ-





गिनके॥ अगणित भटन पराजित करिकै। मर्दतसैन चलो
प्रण धरिकै॥ दोहा॥ तब अगणित भूपतिसदल भिर प्रचारि
प्रचारि। तिन्हैं बधत टारतचलो पार्थ बिचारि बिचारि॥ कर-
त पराजित जंगमन दहत थावरन भूप। चलत दवातिमिसैन
माधि चलोपार्थ रबिरूप॥ रोला॥ बरषि शायक बधत बिच-
लित करत दलचतुरंग। करत रथतिमि सुपथपारथ चले
जात सुढंग॥ मनहुँ फारत गिरिहि माधिकै जातकोऊ देव।
बहति शोणित धारतेहिमग लसति सँग यहिभेव॥ मनु भगी-
रथ सरिस कोऊ भूप बीर उदार। जात बेधत भूमि लीन्हें
भारतीकी धार॥ करत जिमि बाणैतप्रण तहँ पार्थ भट अव-
दात। करत सारथिपनो तैसो कृष्ण रथ लैजात॥ कह्यो धीरे
कृष्णसों तहँ पार्थ सुनु हे तात। अश्वभे अतिश्रमित बेधित
शायकनसों गात॥ सदातुव मतपाय पाण्डव लहत जय सब
ठौर। यत्न जो करतव्य अब सो कहौ प्रभुकरि गौर॥ खरो
करिरथ खोलि अश्वन काढ़िबाणसमस्त। बिगतश्रम करिलेहु
तुम हम करत युद्ध प्रशस्त॥ पार्थके ये बचन सुनिकै कहौ के-
शव हौशि। चहतहैं यह कहन हमकरतव्य है यह औशि॥
बचन यह सुनि उतरि रथते पार्थबीर अमान। लगो बरषन
भटनपहँ सब ओर अबिरल बान॥ देखि महि पै पार्थ कहँ
लखि समय भूपतिभूरि। सदल बढ़ि बढ़ि घेरि सबदिशि दये
शायक पूरि॥ पार्थ रचि शरसेतु सब दिशि बाणसबकेकाटि।
हने सबके गातमधि बहुबाण धनुबिधिठाटि॥ एकपारथ भूमि
गत तेहि सुभट अगणित घेरि। भये बर्षत शस्त्र सब दिशि
तुरँगरथ हयफेरि॥ नेकशंकित भयो नहिंतहँ पार्थभट रणधीर।
नहींपाये छुवन एकौबाण तासुशरीर॥ कृष्णहयन बिशल्यकरिकै
कहो सुनि हेपार्थ। बिगत श्रमनहिं होत हैं सब अश्व बिकल
जलार्थ॥ बचनयहसुनि पार्थमंत्रित बाणमहिमधिमारि। कियो

अगटित तहांसरवर पूर्णअनुपम बारि ॥ मत्स्यकूर्म सुबारि जन
युत परमपावन रूप । अश्वपान सुनामसरसो लसो परम अ
नूप ॥ तासु दरशन हेतु तेहिक्षण आयनारदतत्र । देखिताकहँ
कह्यो पारथ लहोशुभ जयपत्र ॥ कृष्णलखि हरषाय सरमाधि
तुरँग सबलैजाय । बारिपानकराय धोवन लगे तहँ पयराय॥
पार्थसरके सकल दिशि अतिघनेशायक छाय । अमल अनव
अभेद अनुपमदयो गेहबनाय ॥ जलदगण समसुभट अग
पितघेरि झुकि सबओर । गरजि गरजि प्रचारि बरषे शस्त्र
बारि अथोर ॥ पार्थहरिसम शैलसम शरगेह रचनाधारि। दये
परन न कृष्ण ब्रज पहँ नेकु आयुध बारि ॥ कियो तेहिक्षण पार्थ
जैसो धनुषधरको काज । आजुलों नहिं और कोऊकियो ऐसो
साज ॥ सुचित रहि तहँ कृष्ण अश्वन धोइबाहर आइ। जोरि
रथमें चढ़ पार्थहि लखि सराहि सचाइ ॥ सुरथपै चढ़िपार्थफिरि
सब ओर बर्षत बान । चलो सिन्धु महीपकी दिशि दलहिं द
लत अमान ॥ गहे सब नृपग्लानि ताको लखि अमानुषकर्म
गुणो सिन्धु महीपको बधिजाब औशिअभर्म ॥ मृगनमधिमृग
राज सम भट पार्थ क्रीड़त जात । एक भटहिअनेक भटनहिं
सकत जीतिलजात ॥ भाषिऐसे परस्पर नृपभटनके समुदाय
दोहिं पारथबरि पहँ शर शक्ति तोमर छाय ॥ काटि आयुध सकुल
तिनकहँ बेधि बधि बिचलाय । पार्थ बरषत बाण सब दिशिचलो
जाय सचाय ॥ पार्थ अगणित शस्त्रहानि फल करत लसत स
चेत । एकलोभ अनेक गुणकहँ व्यर्थजिमि करिदेत ॥ सुभट
अगणित भिरें तेहि बिधि पार्थसों तेहि ठौर । जात पुष्पितवि
पिन मधि गजमत्तसो जिमि भौर ॥ गर्ब गहिगहि भिरत बढ़ि
बढ़ि शूर भूपति जौन । उदधि गतजिमि सरितजलतिमि नहीं
बहुरे तौन ॥ लखतही डरिभगेकेते बीरतजि भटलीक । बेद
पथसों होत जैसे बिमुखजे नास्तीक ॥ दोहा ॥ इमि मर्दत





तुरङ्गिणी जात पार्थकहँदेखि । कितनेन्नृपगणन्नृपनसों कहत
य अवरेखि ॥ सिन्धुन्नृपति केबधनकी करी प्रतिज्ञा पार्थ ।
मुनि जान्यो अवशिवह निजप्रण करिहि यथार्थ ॥ ताके
विवेकी रही इती आश बलवान । छुटन न पैहैद्रोणसों यद्यपि
र्थ अमान ॥ फारि द्रोणदल जाल जब कढ़ोपीन भटमीन ।
मोहियते कढ़िगई वहआशा ह्वैक्षीन ॥ जीतिद्रोण कहँ
त तेहि आड़ैको बलऐन । गिरिहि उड़ावत पौनतेहि तरु
रोकि सकैन ॥ सोरठा ॥ भुजबलसों भोपार उदधि पराक्रम
णके । तेहि करि बाहु बिहार भट बहु शरतरिबो कहा ॥ झ-
यो सिंह सचाय कोपि गराजि जेहिबधनकहँ । तेहि द्विरदहि
बचाय सकत द्विरद समुदाय जुरि ॥ चौपाई ॥ जेहि दलमध्य
यद्रथ भूप । सो दल निरखिभयो तेहिरूप ॥ मृगके निकट
य मृगराज । होत यथा गहिबेके काज ॥ जबलगि इनहिं
परतलखाय । तबलगि जियत जयद्रथराय ॥ लखितहि
हलेहै वहिमारि । लेतबाज जिमि पक्षिहि धारि ॥ इतनेमें
प तोसुत बीर । पहुंचो जाय पार्थके तीर ॥ अति सुबेग
सुरथ बढ़ाय । सम्मुख भयोपार्थ के जाय ॥ ताक्षणतो दलमें
तिपाल । बाजे दुन्दुभि शंख बिशाल ॥ सिन्धुराजके रक्षक
र्व । हर्षित भयो गहेगुरुगर्ब ॥ भयो सैनमें शोर अमन्द ।भिरो
र्थसों कुरुकुलचन्द ॥ कितने अति धीरज अनुमानि । चितै
हैं अति अचरज जानि ॥ कितने सुभट कहैं इमिआम । भूप-
हैं पार्थबधत यहि याम ॥ कृष्ण भूप कहँ सम्मुखदेखि । कहो
नंजयसों अवरेखि ॥ आजु दैव बश सुनु कुलदीप । दुर्योधन
हँ लहो समीप ॥ इनकीन्हें जितनेअपकार । सोसबसमुझिर
हिबार ॥ दुसह क्रोध प्रगटित करिअत्र । भेजहुइन्हैं रहतयम
त्र ॥ है यह सब अनरथको मूल । बैरबारिसरिताको कूल ॥
॥ द्रुपदसुताकेकच ग्रहण समुझि समुझि बनवास । अवशि

बधौ यहि दैवबश लहे आजु तुम पास ॥ पार्थबचन यह सु
कहो सांचकहे तुम जौन। हांकि तुरंगन तासु ढिग शीघ्र च
बलभौन ॥ सोरठा ॥ यह सुनि कृष्ण सडौर चले सुरथ लैता
दिशि। दुर्योधन करि गौर कहत भयो इमि पार्थ सों ॥ पा
क्षिति पै आय दिव्य अस्त्र जितने लहे। सो बिक्रम व्य
साय प्रगट करहु जो शुद्ध भट ॥ तुव बिक्रम अधिकार सु
बहुत देखे नकछु। होहु पांडुके बार जो तौ दरशावहु हमैं
चौपाई ॥ इमिकहि तीनिबाण अनियारे। ताकि पारथके उरमा
मारे ॥ चारिबाण घोरनकहँ हनिकै। कृष्णहिं मारे दशशर
निकै ॥ पार्थहने तेहि चौदह शायक। जेतरुपाहन बेधन ल
यक ॥ ते सबबाण कवचमें भिरि भिरि। धसे न परे सुरथ
गिरि गिरि ॥ तिन बाणनकहँ निष्फल देखी। फिरिमारे चौद
शर लेखी ॥ तेऊ गिरे कवच छ्वै कैसे। पाहन पाहनसों ल
जैसे ॥ इते पार्थके बाण अमोले। निष्फलदेखि जनार्दनबोले
बज्रसदृश तोशर यहि क्षनमें। कतनाहिं धसत शत्रुके तनमें
कै ऋटजुभो गांडीव शरासन। कै घटिगो तोबलअरिनाशन
जातेबाण गिरततन छ्वैकै। मोहिं होत बिस्मय यह ज्वैकै
यहसुनि पार्थकह्यो यदुबरसों। बांध्योआपु द्रोण निजकरसों
कवच अभेद तासु तनमाहीं। ताते ममशर प्रविशत नाहीं
सोवह कवच छिदित नहिंकबहूं। लखो याहि जीतत हमतबहूं
इमिकहि शायकमंत्रितकरिकै। धनुतकितज्योपार्थरिसभरिकै
लखिदूरहिते अश्वत्थामा। काटिदियो सोशरअभिरामा ॥ त
पारथअतिबिस्मितह्वैकै। बरष्योबाण सकलदिशिज्वैकै ॥ दोहा
बरषि असंख्यन बाणतहँ काटि असंख्यन बान। घोरयु
कीन्होंतहां दोऊ बीर अमान ॥ नवनव शर तो सुतहने कृष्
पार्थकेगात। सोलखि इतके सुभटसब सुख लहिभये बिभात
सोरठा ॥ काल कराल समान ह्वै तेहिक्षण पारथतहां। बधेमा





हुवान नृपकेरथते तुरँगसब ॥ चौपाई ॥ हनि अमोघशर सूतहि
रे। पार्श्व रक्षकन बधि महिडारे। धनुषहि काटि बिधनुकरि
न्हे। करतलमाधि शरहनि मुदलीन्हे ॥ मारिमारि बहुशायक
न्हे। रथके सब अँग चूरणकीन्हे ॥ शर झरि मधि तहँ भो
तैसे। बायु भौंर मधि लघुतरु जैसे ॥ इमि आपदा भूपपहँ
वी। बढ़िबढ़ि अगणित भट अवरेखी ॥ पार्थहि घेरिलेत
चाड़े। सादर नृपहिं करतभे आड़े ॥ अगणित हयरथ सु-
ट पदाती। जेप्रसिद्ध अरिसेन निपाती ॥ सबदिशि घेरिगहे
तकरषा। करीघने आयुधकी बरषा ॥ कोश भरेलों अबिरल
धा। जिमि ह्वैपरे किये अवरोधा ॥ स्तम्भितकरि दीन्हेंरथ
सु। दुसह द्वासम शरझर जासु ॥ सो लखि केशव अति
मरषिकै। कहो धनंजयकी दिशि लखिकै ॥ कत ऋटजु भये
नुष बिसफारत। नहिं बाणनसों अरिदलटारत ॥ सुनिपारथ
ति बिक्रम करिकै। मण्डल सरिस शरासन करिकै ॥ रबिक-
सम बाणनके झारन। कियेनिहार सदृशदल बारन ॥ अग-
त हयगजभट बधिडारत। पारत प्रलय सुराह सिधारत ॥
न्धु नृपतिके बध कीरतिसों। चलो बेगि बुधि बिक्रम अति
सों ॥ दोहा ॥ सिन्धु नृपतिके निकट तेहि आवत जानिसवेग।
अतिजवसों बढ़ि बढ़ि भिरे भटषट रथी सशेग ॥ पांचजन्यशं
खहि तबहिं कृष्ण बजायो चाहि। देवदत्त शुभ शंखजो पार्थ
बजायोताहि ॥ दुशह शब्द तिनको मचो जिमि घनगरजनि
घोर। शंकित भे ममसैनमधि भटलखि प्रलय अथोर ॥ सोरठा ॥
तेहिक्षण घने निशान बाजत भये ममसैनमधि। मचो घोरघ-
मसान पारथसों षटरथिन सों ॥ शंख बजाय बजाय अगणित
नृपति ससैनबढ़ि। मण्डल घने बनाय घेरिलेत भे पार्थकहँ ॥
चौपाई ॥ बाणतिहत्तरि अतिअभिरामा। हनेकृष्णकहँअश्वत्था-
मा ॥ तीनिभल्ल अर्जुनकहँ मारे। अश्वनपहँ शरपांचप्रहारे ॥

तब अर्जुन अतिरिसबिस्तारे । शतषटशर तेहिमारि प्रचारे
दशशर हने कर्णके तनमें । तीनि कर्णके सुतकहँ क्षनमें ॥ मा
क्षुरप्रबाण बरगति को । काट्यो धनुषशल्य नरपति को
गहिधनु और शल्य भटनोखो । मास्यो ताहिबाण अतिचो
खो ॥ धनुटंकारि कर्णभट नायक । मारतभो बरबात्तिस शायक
शल्यहने दशशायक गनिकै । गरज्यो कृपदश शायक हनि
कै ॥ भूरिश्रवा तीनिशर मारे । सातबाण द्विजको सुतडारे
तिनसबकहँ पारथभयधारे । हने असंख्यनशर अनियारे
भरेक्रोध गहिगहि उतकरषा । कियोपरस्पर शरकी बरषा॥त
तकि शायक हनिहनिडाटैं । अगणित बाण परस्परकाटैं ॥ अ
गणितबाण रथनकी गतिसों । ब्यर्थ कियो सारथी सुजतिसों
अगणित बाणहने तनमाहीं । अगणितकटत देखि पछिताहीं
यहिबिधिबाणनकी झरिशरसे । रबिकीकिरणिन रथतनपरसे
दोहा ॥ बाणजालसों सुभटषट देहिं पार्थकहँ तोपि । काटिजा
पारथतिन्हैं देइ शरणसों गोपि ॥ इहिबिधि परस्पर शरन
बरषाकरितेसर्व । घोरयुद्ध कीन्होंतहां भरेक्रोध गहिगर्व॥सोरठा
यहसुनि वृद्ध महीप कह्यो सूतके सुवनसों । अबकहु हे कुल
दीप युद्ध ब्यूहके द्वारको ॥ चौपाई ॥ संजय कह्योसुनो नरनायक
हैवह संगरसुनिबे लायक ॥ जबसों धसो ब्यूहमधि पारथ । त
सों धर्मनृपति गुणि स्वारथ ॥ सदल ब्यूहमधि जैबो गुनिकै
सदलकियो अतिरण धनुधुनिकै ॥ द्रोणआदि इतकेभट रूरे
अतिबिक्रम कीन्हें बलपूरे ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटभाये । लरि
शोणितकी नदीबहाये ॥ कीन्हें कितक यत्न मनभाये । ब्यूहमध्य
नहिं पैठनपाये ॥ तीजे पहर युधिष्ठिर राजा । ह्वै अति क्रोधित
सहित समाजा ॥ अतिगह्वर बजवाइ नगारे । द्रोणहिं जीतन
हेत पधारे ॥ तिनकहँ झुकत द्रोणपहँ देखी । ममदलके योधा
अति तेखी ॥ है जितजित तिततितसों सादर । चलिचलि





तिनसों भिरे उजागर ॥ वृहत्क्षत्र नृपकेकयपतिसों । अभिरो
भूर्तिबल अतिसों ॥ धृष्टकेतु शिशुपाल तनय सों । भिरो
धन्वा रणनयसों ॥ कियो नकुल भटको अवरोधा । तोसुत
बिकर्ण सुयोधा ॥ भिरतभयो सहदेव सुभटसों । दुर्मुख
आउ यहि रटसों ॥ सात्वकि सो मोभिरत प्रचारी । ब्या-
दत्त दुर्मद रणचारी ॥ भिरो वृकोदर भटसों चावन । आ-
र्ष्यशृङ्ग रणदुन्द मचावन ॥ दोहा ॥ बरषत शर जे द्रोण पहँ
आतरहे जयरुटि । घोरयुद्ध तिनसों कियो इमि इतके भट
टि ॥ भूप युधिष्ठिर द्रोणकहँ मारे नब्बे बान । तेहि पचीस
हनतभो द्रोण बिदित बलवान ॥ फिरि सब हयध्वज सूत
तजे पचीस सुबान । करि करलाघव नृप तिन्हैं काटिदये
बिधान ॥ सोरठा ॥ तब तीक्षणशर मारिकाटि युधिष्ठिरकोधनुष।
शरवृष्टि बिचारि क्षणमें दिये अदृश्य करि ॥ बसुकला ॥ नृप
अदेष । लखि भट अशेष ॥ जाने बिचारि । नृपगयोमारि ॥
नृपति धर्म । गहि धनुष पर्म ॥ शरसेत ठाटि । सबबाण
काटि ॥ करि रिस अथोर । गहिशक्तिघोर ॥ जेहि लगे आट ।
सुपाट ॥ सोकरि कशीश । मास्यो क्षितीश ॥ तेहि द्रोण
देखि । अनुमानितेखि ॥ डास्यो अमान । ब्रह्मास्त्रबान ॥ सोशर
मतीच । लगि शक्तिबीच ॥ तेहि तुरित जारि । निज रुचि प-
सारि ॥ फिरि चलो ताहि । नृपधर्म चाहि ॥ ब्रह्मास्त्र मारि ।
तेहि दये बारि ॥ द्रोणहि नराच । भो हनत पांच ॥ फिरिबाण
एक । हनिकै सटेक ॥ बरधनुष तासु । काट्यो जु आसु ॥ दोहा ॥
द्रोणाचारय बिधनु ह्वै गदा चलाई चाहि । धर्म निरखि हनि
निज गदा मगहि गिराई ताहि ॥ क्रोधिद्रोण बरधनुषगहि हनि
तीक्षण शर चारि । बधि नृपके रथके तुरँग दीन्हें महिपैडारि॥
अति तीक्षण शर एकसों काटि दये धनुतासु । केतु काटि पुनि
तीनिशर भूपहि मास्यो आसु ॥ सोरठा ॥ बिरथ बिधनुह्वै भूप

खरोभयो रथसों उतरि । तब द्विजह्वै रबिरूप गहन चलो ब-
रषत बिशिख ॥ तब करिकै अनुमान चढ़ि रथपै सहदेवके
भागो नृपति सयान हांकि चपल तुरकीहयन ॥ चौपाई ॥ क्षेम-
धूर्ति नृप धनुबिधि ठाटे । वृहतक्षत्र नृपको धनु काटे ॥ धनु
काटि बहुशर अनियारे। वृहतक्षत्रके तनमधि मारे ॥ वृहतक्ष
नृपबर धनुधारी । बध्यो तासु सूतहि शरमारी ॥ फिरि रिस
गहिकरि राते ईक्षण। बध्यो नृपहि हनि शायकतीक्षण ॥ क्षेम-
धूर्ति कहँ बधि सो राजा। दल मर्दतभो सहितसमाजा ॥ धृष्ट-
केतुसों भिरि जयकारण । नृपति बीरधन्वा भयभारण ॥ घोर
युद्ध कीन्हों तेहि क्षनमें । जे लखि भटभे मोहित मनमें ॥ लरै
यथा युगमैगल भिरिकै । ते तिमि तहां लरतभे थिरिकै ॥ नृ-
पति बीरधन्वा दृढ़ घायक । काट्यो तासु धनुष हनि शायक ॥
धृष्टकेतु तब अति रिस गहिकै । मार्‍यो शक्ति खरोरहुकहिकै ॥
लखि सोशक्ति बेधि उरतासू। कीन्हों तेहि यमपुर गतआसू ॥
गिरो बीरधन्वा अरिजेना । भगी त्रिगर्त देशकी सेना ॥ सह-
देव दुर्मर्षण रणजेता । अतिशय युद्ध किये अरिनेता ॥ चाहि
चाहि बधगहि उत्कर्षा । करत भये बाणनकी बर्षा ॥ अगणित
शायक हनि हनि डाटैं । अगणित बाण बाणसों काटैं ॥ दोऊ
अति अमरषसों पूरे । हनैंपरस्पर शायकरूरे ॥ दोहा ॥ अति
कर लाघव करितहां माद्रीसुतबलवान । काट्यो तौ सुतको ध-
नुष केतुमारि युगवान ॥ करिसूतहि बधि बधतभो चारों तुरँग
चलांक । दुर्मर्षणके हिय हन्यो शायक पांच निशांक ॥ तब
दुर्मर्षण बिकलह्वै तजि निज रथहि सवार । चढ्योजाय निर-
मित्रके रथपै गह भयभार ॥ सोरठा ॥ लखिप्रकोपि सहदेवबर्षि
बाण टंकारिधनु। मारिभल्लबर भेव बेधि बध्यो निरमित्र कहँ ॥
रथसों भिरो उदार नृपत्रिगर्तपतिको सुवन। तेहिक्षण हाहाकार
भयो तास दलमें महा ॥ चौपाई ॥ ब्याघ्रदत्त सात्वकिसों भिरि-





कै। घोरयुद्ध कीन्हो तहँ थिरिकै ॥ बलसों बर्षि असंख्यन बा-
णहि। कियो अदृश्य बीर युयुधानहि ॥ करि मण्डलसम धनुष
कशालहि । सात्वकि काटि तासु शरजालहि ॥ ध्वज काट्यो
सारथिहि निपात्यो । अश्वन बधि आनँदसों रात्यो ॥ हनि मं-
त्रित शर बज्रसमाना । बध्यो ब्याघ्रदत्तहि बलवाना ॥ गिर्‍यो
मागधपतिको सुत मरिकै । लखि मागधभट अतिरिसधरिकै ॥
हाथी गजी पैदर हयसादी । भिरे प्रचारिप्रचारि प्रमादी ॥ सा-
त्वकि को बध करिबो परखे । बिबिध भांतिके आयुधबरखे ॥
तहँ सात्वकि अतिधनु बिधिधारे । अगणित भटन निमिषमें
मारे ॥ अगणित भटन पराजित करिकै । दल मर्दतभो सब
दिशि चरिकै ॥ तेहिक्षणमें सात्वकिके सम्मुख । कोऊ भट न
सकतहै करिरुख ॥ तब सात्वकिसों भिरो अचारय । किये उ-
पजते अद्भुत कारय ॥ भिरे द्रौपदेयनसों राजा । सोमदत्तको
सुवन समाजा ॥ पांचपांचशर सबकहँ हनिकै । मारे सातसात
ताननिकै ॥ द्रौपदेयशरअति बलधारे । तीनि तीनिशर ताकहँ
मारे॥ सोमदत्त तबतिन्हैंप्रहारे । पांचपांच शायकअनियारे ॥
दोहा ॥ मारि मारि अगणित बिशिख काटिकाटि बहुबान । घोर
युद्ध कीन्ह्योतहां तेसिगरेबलवान ॥ तासु तुरँगसबपार्थसुतबधे
मारि शरचारि । धनुकाटतभो भीमकोतनयधनुष टंकारि ॥ शर
प्रसें धर्मको सुत काटतभो केतु । तनय नकुलको सूतकहँ
बध्योबिरचि शरसेतु ॥ सोरठा ॥ अर्द्धचन्द्रसमबाणमारि सुवन
सहदेवको । कीन्हों ताहि अप्राण काटि शीश शिर त्राणसह ॥
सोमदत्तको पूतभाई भूरिश्रवाको । मरोबीर मजबूतभो हाहाध्व-
निसैनमधि ॥ तोमर ॥ भिरि भीमसों तेहि काल । भट आर्षशृंग
कराल ॥ करि बिषद धनुष बिधान । मोहनत अगणित बान ॥
तटभीम सब शर काटि । तेहि हन्यो नवशर डाटि ॥ तबगरजि
राक्षस चण्ड । टंकारिकै कोदण्ड ॥ बहु काटि शायक तासु ।

शर पांच मार्यो आसु ॥ तब भयो भीम अचैन । फिरि बीरि
तेहि बलऐन ॥ करिघने आयुध पात । भोवधतभट शतसात
फिरि चेतलखि क्षण मांह । भटभीम दीरघ बांह ॥ तेहि अ
सुर पै शरसेतु । भो रचतजय यश हेतु ॥ भिरि लख्यो असु
अमान । प्रफुलित पलाश समान ॥ इमि कहत भो करिटेर
नहिं बचत तू यहि बेर ॥ इमि भाषि मायावान । ह्वैगयो अ
न्तर्द्धान ॥ तहँ बरषि शायक भूरि । भोदेत सब दिशि पूरि
बिनु लखे भीम सचाय । शर दियो नभ पै छाय ॥ भिदि शरन
सों असुरेश । भोभ्रमत महि नभ देश ॥ बहु बिरचिमायाघोर
भो करत प्रलय अथोर ॥ दोहा ॥ गरजि गरजि घनसम घुमडि
बरषि अस्त्रसमुदाय। अगणित हय गज भटन बधि यमपुर द
पठाय ॥ भीमतजे ब्रह्मास्त्र तब तासों शर समुदाय। प्रगटित
ह्वैकै आसुरी माया दई नशाय ॥ लागि असुरके गातमधि
अगणित शायकघोर । दये बिकल करि तब गयो भागि द्रो
कीओर ॥ सोरठा ॥ इमिअलम्बुषहि जीति भीमसेन अतिप्रबल
भट । सादर जययश चीतिभो मरदत दलकौरवी ॥ चौपाई
तहँ अलम्बुषहि जात निरेखी । भिरोघटोत्कचबध अवरेखी
ते युग राक्षसबीर अमाना । कीन्हे तहांघोर घमसाना ॥ बिबि
ध भांतिकी माया करि करि । लरे शक्र सम्बरसम चरिचरि
माया कुशल कराल कठोरा । दोऊ घनसमान बरजोरा ॥ मारि
मारि सहि सहि बहु त्राना । किये युद्ध अभिशेष महाना ॥ ति
न्हें लरत लखिकै तेहि क्षनमें । पाण्डव भट अतिरिसगहिमन
में ॥ झुके अलम्बुष भट पै तैसे । बहु हरि मत्तद्विरदपै जैसे
तहँ सबके अगणित शर काटत । सब कहँ अगणितशर हनि
डाटत ॥ ह्वैमण्डलकेबाहेरगरजो । बीरअलम्बुष रहोनबरजो
तिमि तहँ लरयो लसै जिमि बढ़िकै । मैगल दावा मधिसोंक
ढ़िकै ॥ गरजि भीमकेतन मधिमारे । शर पचीसअतिशयअनि





रे ॥ धर्महि हन्यो तीनि शर चीन्हें । पांच घटोत्कच के तन
न्हें ॥ सहदेवहि शरसातप्रहारे । बाण तिहत्तरिनकुलहिमारे ॥
यो द्रौपदेयन के तनमें । पांचपांचशायक तेहि क्षनमें ॥ यहि
कार बाणनकी झरिकै । लरत भयो राक्षस रिस भरिकै ॥ दोहा ॥
भीमसेन तब हनतभो नव शर ताके काय । भूपयुधिष्ठिर हनत
शतशरको समुदाय ॥ चौंसठि शरमारे नकुल पांच बाण
सहदेव । तीनि तीनि शर हनतभो द्रौपदेय बरमेव ॥ बीरघटो-
च हनतभो शर पचास अति चण्ड । फिरि सत्तरि शर हानि
यो टंकारत कोदण्ड ॥ सोरठा ॥ पांचपांच शर चण्ड सबकहँ
यों अलम्बुषौं । तेसब भट उद्दण्ड ताहि हने अगणित बि-
शेष ॥ चौपाई ॥ भीमहि आदि सुभट रिस पूरे । हनेबज्र सम
शायक रूरे ॥ तिनबाणन सों बेधित ह्वैकै । भयो अचेत सु-
बिक्रमग्वैकै ॥ भट अलम्बुषहि मूर्च्छित देखी । भीमसुवनराक्षस
अवरेखी ॥ सादर कूदि गर्बि मनमाहीं । गयो अलंबुष के रथ
माहीं ॥ रथसों ताहि गिराइ मरदिकै । फिरि उठाय तजिगहि
नरदिकै ॥ जिमि बरब्यालहि गरुड़ पकरिकै । झटकिपटकि
गहि तजि फिरि धरिकै ॥ पटकि अप्राण करै तेहि जैसे । बध्यो
अलंबुष कहँ सो तैसे ॥ मम दल तासु नाश अवलोकी । भो
जिमि रवि अथये चककोकी ॥ परको सैन भयो तेहि भेशा ।
जिमि घन मण्डल नशे दिनेशा ॥ दुख लहि वृद्धनृपति यह
सुनिकै । बूझतभये हरष कृतगुनिकै ॥ ब्याघ्रदत्त मगधेशहि
धिकै । जब सात्वकि बिक्रम करि अधिकै ॥ मरदतहो मम
दलतब तासों । भिरि द्विजकहाकिये कहु म्हासों ॥ संजयकहत
योसुनु राजा । तेहि लखि मरदत सैन समाजा ॥ द्रोणाचारय
धनुटंकारी । ताके सम्मुख चलोप्रचारी ॥ लखि द्रोणहिसात्वकि
भटनायक । मारतभयो पचीससुशायक ॥ तबअति कोपिद्रोण
जयचाही । पांचबाण हनि बेधे ताही ॥ दोहा ॥ तबसात्वकि शर

अर्द्धशत हन्यो द्रोणकेगात । सात्वकिके तनपैकियो द्विजअग-
णित शरपात ॥ दोउनपै दोऊतहांतजैं शरनकेजाल । काटिजा-
लबेधैं दुहुँन दोऊबीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ मास्यो द्रोणअमानबाण
बज्रसम सात्वकिहि । तासों भिदि बलवानमुरछिरह्यो ध्वजसों
अभिरि ॥ मणिबाह ॥ भट सात्वकिको मुरछायुत देखि । तहँ धर्म
महीपहिये अवरेखि ॥ भट भीमहि आदिक जे बलऐन । तिन्हैं
तहँ भेजिदिये सहसैन ॥ तहँआइ अचारयसों सबजूटि । शरकी
बरषा बिरचे जयऊटि ॥ तजिकै तिनपै शरजाल नवीन । रण
सागर को द्विजधीवरपीन ॥ करिकै जिमिजालन में गतमीन ।
बधि योधन सो दलकीन्हेंउ क्षीन ॥ बनको जिमि दाहतिभूरि
दवागि । तिमिभो दलमर्दत तोहितलागि ॥ सबके शरजालन
काटतजात । सबपै करिकै बहु आयुधपात ॥ परके दलमाहँ
प्रलय परवाह । द्विजपूरत भो नहिंजो अवगाह ॥ दोहा ॥ धृष्ट-
द्युम्न के अनुग प्रिय महारथी रणबीर । समबल बुद्धि यशी
सुभट तिहि क्षण बधे सुबीर ॥ कैकेयनमें बधत भो शतयोधा
सरदार । इबिधि हजारन भट बध्यो तेहिक्षण द्रोण उदार ॥
तेहिक्षण भो वहिसेन मधि हाहाकार महान । कोपोकाल क-
रालसम द्रोणाचार्य अमान ॥ सोरठा ॥ सुरगण चढ़े बिमान नि-
रखिपराक्रम द्रोणको । बहुबिधि किये बखान जानिअमानुष
कर्मकर ॥ घोरयुद्ध तेहियामहोतभयो तेहिकाल तहँ । दिनको
तीजोयाम भो ब्यतीत सियराम जपि ॥

इतिद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धतृतीयप्रहर समाप्तिर्नामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दोहा ॥ सुनोभूप तीजोपहर बीततत‍हँ नृपधर्म । सुने नधुनि
गाण्डीव की बिकल भयेगहि भर्म ॥ रोला ॥ सुने बिनुगाण्डीव
धनुकी दीह धुनिनृप धर्म । सात्वकी शुचिशूरसों इमि कहोक-
रतब कर्म ॥ सात्वकी तुम दक्षबहुबिधि सुनेशास्त्र अशेष । कार्य
जे सत असत हैं सामान्य और बिशेष ॥ जानि तिनको भेद





म सतकाज करन प्रसिद्ध । जौन चाहत करन तुमसों होत
ादर सिद्ध ॥ वृष्णिकुलमें परमयोधा दोयभाषत सर्ब । कृष्ण
वन प्रद्युम्नकै तुम करनकाज अखर्ब ॥ द्वैतबनमें पार्थहमसों
हत हे बहुबार । परमहित मम सात्वकीहै कृष्णसदृशउदार ॥
क धनुधर दलन अरिदल पुरुषसिंह प्रवीन । परे मोपै भीर
महित करिहि संगरपीन ॥ शिष्य अतिप्रिय सखाहमजिमि
णके तिमि तौन । सखा अतिप्रिय शिष्य ममबल बुद्धि बि-
मभौन ॥ रोज तुमहिं प्रशंसि बहुबिधि कहैपार्थ सप्रेम । परे
कट युद्धमें मम करिहि सात्वकिक्षेम ॥ कहत है जो पार्थसो
हिं असत सत्य प्रयोग । सात्वकी तुम सकलभांति सराहिबे
योग ॥ शुद्ध सुहित सुबीर शुचि सरबज्ञ सुखद सरूप । क-
त कुलके कमल कोमल कठिन अनख अनूप ॥ कृष्णपा-
थ मोहिं जिमि प्रिय तथा तुमको मोहिं । परम आनँदलहत
मैं सात्वकी लहि तोहिं ॥ बहुत भांति प्रशंसि इमितेहि कहो
ा सुजान । सखा अरु अति परमप्रिय तो गुरूपासअमान ॥
ापरदल मध्य जबसो पार्थ तबसों तात । लह्यो तासुन ख-
रि कछुअब शोच बाढ़तजात ॥ सुनतहे गाण्डीवकी धुनिरहो
बलों धीर । सोन अब सुनिपरत ताते बढ़त शोच गँभीर ॥
तो ताते करो अपने योगकर्म उदण्ड । जाहु पारथ कृष्ण के
ग बेधि ब्यूह प्रचण्ड ॥ भीमआदिक भटन सहहैं लरतद्विज
ां जूटि । जाहु तुमढिगपार्थके मम सुजय करिबो ऊटि ॥ दोहा ॥
त्र हेत जीतहु मरेहु मिलत तौनफलतात । दिये सकल पृ-
वी मिलै जौन सुफल अवदात ॥ जिहि तो बिक्रम बिशद
ो जो दिन आये पार्थ । आश गहे हे सोइहै सो अबकरहु
पार्थ ॥ प्रीतियुक्त अति मधुर प्रिय उचितधर्मके बैन । सुनि
सन्त ह्वै कहत भो सात्वकि बलबुधि ऐन ॥ चौपाई ॥ भूप शि-
माणि ज्ञातापर्म । आपुकहे करतब्य सुकर्म ॥ पारथके हित

लागि यह देह । तजब मोहिं तृण सरिस अनेह ॥ पारथके हि
लरौं अभर्म । शक्र बरुण यमसों सुनुधर्म ॥ ब्यूह बिदारि मा
परसैन । जाव पार्थ के पास सचैन ॥ यामेंमोहिं न संशयनेक
है मम मनमें संशयएक ॥ सो हमकहतताहिसुनु जौन । उचि
होइ नृप कहिये तौन ॥ रथपै चढ़ि अर्जुन रणधीर । अरिद
मुखजब चलो सुबीर ॥ सुनत कृष्णके हमसों तत्र । कह्योरहे
तुम सात्वकिअत्र ॥ धर्महिं पकरनको प्रण पूर्ब । कियो भूपसं
द्विजभट गूर्ब ॥ जब हम उतै जाव तवबिप्र । लरि भूपहि ग
लेइहि क्षिप्र ॥ ताते इत रहि हे भटरत्न । बिधिवत किहेहु सु
करयत्न ॥ यहिप्रकार कहि कहि बहुबार । नृपतो रक्षणके उ
चार ॥ अर्जुन हमैं गये इतराखि । द्विजकेप्रणको संशयनाखि
ताते तजि तो ढिगको बास । किमि हम जाहिं पार्थके पास
तुम्हैं पकरि जो पाइहि दुष्ट । बहुरिकरिहि निज कारजपुष्ट
जीति पार्थ फिरि लहिहै हारि । कहा कहैंगे हमैं निहारि
दोहा ॥ कृष्ण सहित अर्जुन सुभट तीनिलोक कोजैन । ताप
संकट परन कीसंशय हमकोहैन ॥ ममगुरुके गुरुपति तुमबू
कहो अबजौन । उचित जानिसो शीशधरि शीघ्रकरैं हमतौन
रोला ॥ सात्वकीके बचन सुनिकै धर्मनृप गुणिमर्म । कह्योसा
कि कहत तुमसो सांचपै ममभर्म ॥ तासुसुधि बिनुलहे मिटि
न सुनोताते तात । शीघ्रतुम उतजाहु जेहिथर पार्थ बीर
भात ॥ भीम नकुलबिराट द्रुपद शिखण्डि अरु सहदेव । द्रौ
पदीके सुवन अरु कैकेय सबशरभेव ॥ भट घटोत्कच धृष्ट
सुकुन्तिभोज अमान । करेंगेममसदा रक्षण सदल सब ब
वान ॥ भूपके ये बचनसुनिकै गुण्यो सात्वकि बीर । जावनौ
तौ सुभट कहिहैं मोहिं सडर अधीर ॥ चिन्तिऐसो कह्यो सा
त्वकि एवमस्तु नरेश । जावहम ढिगपार्थके दलिशत्रु सौं
कुभेश ॥ पार्थहैषटकोश कोहैकोशषटकोफेर । तीनियोजन प





मिलिहैं पार्थअरि मृगशेर ॥ बाजि गज अरु रथनके असवार
पैदरभूरि । ब्यूहमुख अरुउतै लौहैं खरे अबिरलपूरि ॥ युद्धकी
बिधि जीति तिनमें दक्षसिगरे भूप । सदलरोके राहठाढ़े लसैं
कालस्वरूप ॥ जीति सबकहँ पार्थके ढिग जाव हम क्षणमाह ।
आयुधन सों सुरथ मम भरवाइये नरनाह ॥ बचन यह सुनि
मोदिपारथ सकल आयुधभेद । पृथक् पृथक् असंख्य रथपैदये
राखि अखेद ॥ चपल नूतन पुष्टप्रबल सुजाति हय समुदाय ।
सुरथपै लगवाइदीन्हे मद्यपानकराय ॥ चारुकवच अभेदसोंकरि
तिन्हैं छादित चाहि । अनुज दारुकको परमपटु कियो सारथि
ताहि ॥ स्नानकरिकै दानदै सन्नाहधारि अमान । सुमधूकला-
तक अमल तेहि सुपान करि मन मान ॥ बन्दिपग नृपधर्म
के चढ़ि सुरथपै बलऐन । जानुपै धरि धनुष मम दिशिचलोसुनि
स्वरतैन ॥ भीमभट सँगचलो ताकहँ बहुतभांति बुझाय । नृप-
हि रक्षण हेत सात्वकि दयो फेरि सचाय ॥ दोहा ॥ इतके भट
सब सात्वकिहि जात द्रोणपहँ जानि । चले कोलाहल करत
नहिं जान देत अनुमानि ॥ तब उतके भीमादि भट बरषतशर
समुदाय । बढ़िबढ़ि तिनसों भिरिकरे घोरयुद्ध दढ़धाय ॥ सोरठा ॥
अगणितभट रणधीरभिरे सात्वकी सुभटसों । तिनमधि सात्वकि
बीर लसो मृगनमधि सिंह सम ॥ चौपाई ॥ शिष्य पार्थको धीर
धुरीन । रचि अद्भुत शरसेतु नवीन ॥ बधि अगणित योधन
प्रणधरिकै । अगणित भटन पराजित करिकै ॥ ब्यूहभेदि जेहि
मग गोपारथ । तेहि मग चलतभयो गुणि स्वारथ ॥ तबआड़त
भो द्रोणाचारय । धनु बिधि करत अमानुष कारय ॥ काटि अ-
संख्यन शायक नोखे । मारेताहि पांचशर चोखे ॥ काटि द्रोणके
अगणित शायक । हन्यो सातशर सात्वकिचायक ॥ बहुरिद्रोण
तेहि षटशर मारे । सात्वकि तेहि दश बाणप्रहारे ॥ फिरि सो
द्रोणहि षटशरहनिकै । हनत भयो बसुशायक गनिकै ॥ सूत

ध्वजा घोरनके तनमें । हनेपरम परशर तेहिक्षन में ॥ दोउबीर
बीर प्रणलीन्हें । अतिशय तुमुल युद्ध तहँकीन्हें ॥ करिसात्व
किहि शरनसों गोपित । बिप्रकह्यो करिप्रलय अरोपित ॥ तो
आचार्य पार्थहमसों भिरि । करिनहिं सक्यो युद्ध सम्मुखथिरि
जिमि कापुरुषजातरणताजिकै । हियेहारितिमि काढ़िगो लजिकै
तू जीयत फिरि जाय न पैहै । जौनपार्थ जिसिगो तिमिजैहै
ऐसे बचन द्रोणके सुनिकै । सात्वकि कहतभयो इमि गुनिकै
मम आचार्यके आपु अचारय । सबबिधि हमहिं पूज्य हेआरय
दोहा ॥ लहि आज्ञा नृपधर्मकी हम पारथपहँ जात । करि अनु
कम्पा शीघ्र उत जान दीजियेतात ॥ इमिकहिकै निजसूत सन
कहत भयो मतिमान । तजिद्रोणहि रथहांकि अब शीघ्र चलो
सबिधान ॥ सोरठा ॥ यह सुनि सूतसुजान रथहि बढ़ायोयुक्तिसों
सब दिशि बरषत बान भटन बधत सात्वकि चलो ॥ चौपाई
इमि सात्वकि कहँ जातनिरखी । बरषो बाण द्रोण अति तेखी
नहिंपलटो सोबीर बिचारी । मरदत सैन चलो रणचारी ॥ तहँ
हीं परी कर्णकी सेना । तामधि प्रविशतभो जगजेना ॥ लहि
अजयूथ अरक्षक जैसे । निरभय बिक मरदै निजलैसे ॥ यथ
सूत सुतको दलमरदत । भोजसैन दिशिचलो ननरदत ॥ इमि
निज दलमुख आवत चाही । कृतबर्मा रोकतभो ताही ॥ चारि
बाण अश्वनकहँ हनिकै । हन्यो सात्वकिहि षटशर गनिकै
काटि तासु बहुशर अनियारे । सात्वकि तेहि षोड़शशरमारे
तब कृतबर्मा अतिशय रोखो । तासु हिये माख्यो शर चोखो
बेधिकवच गातहि सो काढ़िकै । धरणीमधि प्रविशतभो बढ़िकै
फिरि कृतबर्मा हनि बरशायक । काट्यो तासुधनुष दृढ़घायक
सात्वकि तुरत और धनुगहिकै । बरषोबिशिख खरोरहुकहिकै
हनिक्षुरप्रशायक मजबूतहि । बध्यो भोज कुलपति के सूतहि
बिना नियामक सबहय रथके । भागिभे गामी इतउत पथके





तब निज करसों भट कृतबर्मा । रोकिहयनभो लखत अभर्मा ॥
तोलगि सात्वकि भट तेहि पलमें । गो काम्बोज भूपकेदलमें ॥
दोहा ॥ सोलखिकै बढ़ि सात्वकिहि रोकनचह्यो अचार्य । भीमा-
दिक बरभटनसों जान न पायो आर्य ॥ और सूतकहँ सुरथपै
कै कृतबर्माबीर । शीघ्रजाय भीमादिसों भिरत भयो रणधीर ॥
अद्भुत बिक्रम करतभो कृतबर्मा तहँजाय । पाण्डुनृपतिके सु-
तनपै देतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ भीमसेन शरतीनि कृतबर्मा
तनहने । बीससुबाण नवीन हनतभयो सहदेवभट ॥ नकुल
ते शतबान द्रौपदेय सत्तरि बिशिख । राक्षसबीर अमान ग-
जो सात सुबाण हनि ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्न शरतीनि प्रहारे ।
द्रुपद बिराट बाणदश मारे ॥ पांच सुबाण शिखण्डी हनिकै ।
भयो फेरि बीसशर गनिकै ॥ अगणितबाण काटि सबहीके ।
सबकहँ मारि बाण बहुनीके ॥ कृतबर्मा हनु मारु पुकारत ।
भीमहिभयो सातशरमारत ॥ काट्यो तासु शरासनकेतू । रचि
सबदिशि अबिरल शरसेतू ॥ ऐसे बिधनु भीमकहँ करिकै ।
हनत भयो बहुशर प्रणधरिकै ॥ सोलखि उतकेभट रिसपूरे ।
मारि हनतभे शायकरूरे ॥ करि अतिक्रोध भीम रणचारी । मा-
रतभयो शक्ति अतिभारी ॥ मारि दोयशर पूरित पर्मा । काट्यो
ताहिबीर कृतबर्मा ॥ सो लखि भीम औरधनुधारी । हन्योपांच
शर ताहि निहारी ॥ बेधि नृपहि हनि शायक चीन्हें । अरुण
प्रयुत तरुसम कीन्हें ॥ कृतबर्मा नृप सबकहँ डाटत । सबके
अगणित शायक काटत ॥ अद्भुत बिक्रम करिभटनायक । सब
तनमाख्यो बहुशायक ॥ काटि शिखण्डीकोधनु नोखो । मारत
भो बाणतजि चोखो ॥ बिधनु शिखण्डी भट असिगहिकै ।
धावत भयो भागुमति कहिकै ॥ काटितासु धनुअसि छबिरासी ।
गिरी भूमिपै थिरि तड़ितासी ॥ दोहा ॥ तेहि अन्तरमें धनुष
गहि द्रुपदतनय रणधीर । कृतबर्माहि बेधतभयो हनिबहुचोखो

तीर ॥ तुरित और धनुगहि नृपति करि बिधिवत सन्धान ॥
सबके तनमधि हनतभो तीनि तीनि बरबान ॥ बीर शिखण्डी
को हियो बेध्यो अतिरिस पागि। मुरछित ह्वै रथपै गिरो द्रुपद
तनय धनुत्यागि ॥ निरखि शिखण्डिहि मूर्च्छित पाण्डव भट
समुदाय। कृतबर्मा कहँ घेरिकै देतभये शरछाय ॥ सोरठा ॥ कृ
तबर्मा जयहेतु अद्भुत बिक्रम तहँकियो। बिरचि शरनको सेतु
सब कहँ मोहित करतभो ॥ बधतभयो तेहिकाल अगणिततन
गज तुरँगतहँ। प्रलयकाल बिकराल रोप्यो परदल मध्यनृप
तोमर ॥ निज सेनमध्य अपार। सुनि घोर हाहाकार ॥ भट सा
त्वकी अनखाय। निज रथहि शीघ्र फेराय ॥ नृप भोजपतिसों
जूटि। भोलरत जययश ऊटि ॥ नृप भोजनाथ अमान। तेहि
हनत अगणित बान ॥ सो भोजपतिके गात। भोकरतबहुश
पात ॥ हनि चारिशर अरतश्व। भो बधत चारों अश्व ॥ फिरि
बाणतीक्षण मारि। बधिदयो सूतहि डारि ॥ फिरि मारि बहुश
चाहि। करिदयो मुरछित ताहि ॥ सो तासु सुभट निहारि। ते
भगो रथपै डारि ॥ कृतबर्मकहँ इमिजीति। परदेश दलको ईति
फिरि बध्यो गज समुदाय। दिशि सब्यद्विजके जाय ॥ तहँ बि
कल लखिगजसैन। जलसन्ध नृप बलऐन ॥ निजमत्तगजहि
बढ़ाय। शरजाल दीन्हों छाय ॥ फिरि मारि शायक एक। धनु
दयो काटि सटेक ॥ धनु काटि मागधबीर। भोहनत पांच सु
तीर ॥ तब सात्वकी धनु आन। गहिहने साठिसुबान ॥ दोहा
शरक्षुरप्र हनि मूठि ढिग काटि दियो धनु तासु। फिरि प्रचा
कै तीनिशर हन्योतासुतन आसु ॥ तब जलसन्ध सुखड्गगहि
फेरि मारि ह्वै चण्ड। चारु धनुष सैनेयको काटि कियो द्वैख
ण्ड ॥ तुरित और कोदण्डगहि सात्वकिबीर अमान। काटिदियो
नृपके भुजन हनिक्षुरप्रयुगबान ॥ सोरठा ॥ फिरि क्षुरप्रशरमा
काटिभूपको चारुशिर। दीन्हों महिपै डारि तालवृक्षछे सुफल





॥ चौपाई ॥ अतिशय हाहाधुनि ममदलमें। तेहि क्षणहोत
यो सबथलमें ॥ मागधपति नृपको बधदेखी। द्रोणाचार्य ध-
नुर्धर तेखी ॥ सादर जाय तहां रणचारी। सुनि पुंगवसों भिरो
चारी ॥ अतिरिसगहि दुर्योधन राजा। आवतभो तहँ सहित
समाजा ॥ घेरि सात्वकिहि शरकी बर्षा। करत भयेगहि अति
कर्षा ॥ द्रोण सात्वकी के तनमारे। सतहत्तरि शायक अनि-
रे ॥ दुर्मर्षण मार्यो द्वादशशर। दुःसह हन्यो बाणदश अ-
बर ॥ हन्यो बिकर्ण तीसशरचोखे। दुर्मुख हने बाणदश
खे ॥ दुःशासन मारे बसुबाना। द्वैशर चित्रसेन बलवाना ॥
र्योधन बहुबाण प्रहारे। अगणित बाण रथी सबडारे ॥ तेहि
ण सात्वकि भट बर धानुष। भूपति कीन्हों काजअमानुष ॥
रि सबके बहुशायक भगनित। मारत सब कहँ शायक
गनित ॥ दुर्योधन भूपतिके तनमें। हन्यो अनगिने शर
णि मनमें ॥ ते युगबीर क्रोधसों भरिकै। कीन्हों घोरयुद्ध
भरिकै ॥ सात्वकिमारि बाण बरभाको। दीन्होंकाटि शरा-
सनताको ॥ जौलगिभूप और धनुलीन्हें। तौं लागिहने बाण
चीन्हें ॥ दोहा ॥ हन्यो सात्वकिहि बहुविशिख भूपति गहि
आन। भूपहि पीड़ित करतभो सात्वकिहनि बहुबान ॥ भू-
हि पीड़ित देखिकै सब तोसुत अनखाय। भटसात्वकि रण-
र पै देतभये शरछाय ॥ रचि सब पै शरसेत तहँ अगणित
यक काटि। सात्वकि सबकहँ हनतभो पांचपांच शरडाटि ॥
ति तुरंताकरि नृपतिको धनुध्वज काटि सुबीर। बधिघोरन
ताहि बध्यो हनिक्षुरप्र बहुतीर ॥ सोरठा ॥ बिरथ बिधनु करि
हि हनत भयो अगणित बिशिख। इमि भूपतिकहँ चाहि
हा धुनिभो सैनमधि ॥ तब अति भयसों पागि दुर्योधन तो
ननृप। गो तुरिताकरिभागि चित्रसेनके सुरथ पै ॥ चौपाई ॥
हाहाधुनि सुनिसुनु आरज। कृतबरमा नृप गुणिजयका-

रज ॥ रथ हकवाइ सुधनु टंकारी । भिरोसात्वकीसोंरणचारी
बार्षिअसंख्यन शर अनियारे । छब्बिसबाण सात्वकिहिमारे
सात्वकि अगणित बाण बरषिकै । अगणित शायक काटिहर
शिकै ॥ दीरघ कठिनबाण अति तुरमें । माऱ्यो कृतबरमाकेउ
में ॥ ताके लगे भूपभो तैसो । क्षितिके कँप होत गिरिजैसो
साठिबाण घोरन कहँ हनिकै । सूतहिं हन्योसातशर गनिकै
फिरियमदण्ड सरिसशरमारी । कृतबरमा कहँहन्यो बिचारी
बेधि हियो सो शायक कढ़िगो । दश ब्यामहुँ के आगेबढ़िगो
इमि बेधित ह्वै भटकृतबर्मा । भो मुरछित धनु रहो न कर्मा
रथपर परो मृतक समह्वैकै । सात्वकि तब तेहिहन्योनज्वैकै
काटत गदा शक्तिअसि शायक । बेधतबधतभटनभटनायक
मर्दत सैन चलो जहँ पारथ । सोलखिद्रोण बूझि तोस्वारथ
जानि सात्वकिहि अति रणकरकश । भिरोकरत धनुबिधि क
रिसरकश ॥ चेतिजाय भूपति कृतबरमा । भिरो पांडवन सो
गहि मरमा ॥ भिरि सात्वकिसों द्विजरिस लीन्हें । बाणनकोदु
रदिन करिदीन्हें ॥ दोहा ॥ द्रोण सात्वकी करत भे घोरयुद्धतेहि
काल । बिरचिकाटि रचि काटिरचि काटि शरनके जाल ॥ द्रो
णहिं सात्वकि सात्वकिहि द्रोण हने शरभूरि । तुरँग सूत के
तनदये अगणित शायक पूरि ॥ सोरठा ॥ द्रोण मारि बरबान
काट्यो सात्वकि को धनुष । तब सात्वकिबलवान त्यागि धनुष
झेल्यो गदा ॥ तोमर ॥ द्विज ताहि शरसों काटिकै । तेहि हन्यो
शायक डाटिकै ॥ तब सात्वकी अनुमानिकै । गहि और धनु
सन्धानिकै ॥ बहुबाण द्विजके गातमें । हनि हन्यो ध्वज अव
दातमें ॥ भटद्रोणशक्ति सुधारिकै । परसारथी पै डारिकै ॥ क
रि दिये मोहित तेखिकै । भट सात्वकी सों देखिकै ॥ कारिआ
कारज सूतको । हनि बाणसार अकूतको ॥ हो द्रोणको जो सा
रथी । तेहि बध्यो गहि गति पारथी ॥ तबसूतबिनु हयबिप्रके





भ्रमत अति गति क्षिप्रके ॥ जहँ भ्रमे हयभय पागिकै । तहँ
पै भट सँग लागिकै ॥ यहदशा द्विजकी पेखिकै । तेहिकाल
म अवरेखिकै ॥ बहुबीर साहस त्यागिकै । कढ़िगये इतउत
भागिकै ॥ हयब्यूह द्वारे जायकै । भे रुकत साहसपायकै ॥ तहँ
और सूत चढ़ायकै । द्विज फिरो ओज बढ़ायकै ॥ तबसात्वकी
ठानसों । इमि कह्यो सूत सुजानसों ॥ अब चलो रथ लै
पासों । चलि मिलैं पार्थ असेगसों ॥ सुनि सूतबीर बिशाल
सों । तहँ चलो अद्भुत चालसों ॥ दोहा ॥ ग्रीषमकेदिन मध्यगत
मार्तण्डसम चण्ड । शरकर पूरित करततहँ चलोबीरउद्दण्ड ॥
बरषत मरदत भटन सो सात्वकिहि देखि । बीर सुदर्शन
भूमिपति भिरतभयो अवरेखि ॥ अरिदलगरसम सात्वकी भट
लपन अरिप्राण । ताहि सुदर्शन हनत भो अतिदुख दरशन
बाण ॥ तेहि सात्वकिसों सात्वकिहि शरजालनसों गोपि । बा-
णमारि शरमारिशर दीन्हों प्रलय अरोपि ॥ सोरठा ॥ नृपकेअनुग
अनेक हैं मारत अगणित बिशिख । तिन्हैं काटिगहिटेक सा-
त्वकि बहुयोधन बध्यो ॥ चौपाई ॥ नृपबहुशर सात्वकिकहँमारे ।
सात्वकि तेहि बहुबाण प्रहारे ॥ भूपतिकोपि अरुणकरिईक्षण ।
हन्योताहि तीनिशर तीक्षण ॥ कवच छेदिते तनमधिधसिकै ।
अतिदुख देत भये तहँ बसिकै ॥ तब सात्वकि अतिशय रिस
करिकै । बध्योतासु तुरगन प्रणधरिकै ॥ हनिबरभल्ल सूतकहँ
बधिकै । बाणक्षुरप्र शरासन मधिकै ॥ करिकसीश तजिध्यावत
ताहि । काटतभयो भूपके शीशहि ॥ बधिभूपति तजि सुभट
घनेरे । चलो बीर पारथके नेरे ॥ पुरुषसिंह अनुपम रणचारी ।
सारथि सों तहँकह्यो बिचारी ॥ द्विजदल अरणव अगम अ-
गाधा । नांघो ताहि न अब कछुबाधा ॥ अब सब सैनलगत
मोहिं तैसो । पक्षिहि लगै अल्पशर जैसो ॥ म्लेच्छनकीयह
सेना गाढ़ी । मोहिं दहनकहँ सम्मुख ठाढ़ी ॥ सादरतासुमध्य

चलि आरज । देखहु ममअद्भुत रणकारज ॥ सादरसु
सुवचन अतिबलके। सादर निकट गयो तेहि दलके॥ ली
सात्वकिहि निकट सब योधा । बरषत बाण किये अवरोधा
सात्वकि काटत शायक तिनके। काट्यो शिरभुज सुभट अ
नके॥ बरषि सुमंत्रित शायक चीन्हें। प्रलयकाल आरोपि
कीन्हें ॥ दोहा ॥ मण्डलसम कोदण्डकरि सात्वकिबीरअमान
अगणित योधन बधतभो भूपतिप्रति सन्धान ॥ बर्बरसक
म्बोज अरु दस्युसबर किरात । म्लेच्छ असंख्यन निमिष
बधेबीर अवदात ॥ रचि शर पंजर सकलदिशि सबके आयु
बारि। रुण्ड मुण्डमय मेदिनी कियो भटन संहारि ॥ सोरठा
अनुपम रणविधि ठाटि निरमित करिसर रुधिरको । रथ ह
भट गज काटि पूरिदयो जलयादसम ॥ चौपाई ॥ दावानलस
दलबन जारत। लखि हतशेष सुभट ह्वै आरत ॥ भये प
जित साहस तजिकै। तब सात्वकि भटचलो गरजिकै॥
सो सैन जातजगजेना। चलोबीर मरदत ममसेना ॥ अगणि
त भटन बेधिबांधि डारत। बेधिबेधि बहुभटन बिडारत॥जा
बिभात सात्वकी तैसे। मृगगण मध्यकेशरी जैसे ॥ नृप ते
क्षण दुर्योधन राजा। जाय बेगसों सहित समाजा॥ तेहिपी
सो भयपुकारत। सुनि फिरिभिरो बीरशर डारत ॥ तिमि अ
ड़ेउ सुभटनकी रेला। जिमि आड़त अरणवकहँ बेला ॥
तिशय अद्भुत बिक्रम सचिकै। सात्वकि सेतु शरनकोरचिकै
बध्यो तीनिशत घोरे क्षनमें। हन्योचारिशत गजगुणि मनमें
सबकेबाण असंख्यनकाटत। सबकहँ शायक हनिहनिडाटत
रथ गज तुरंग सवार अनेगण । बध्तभयो सैनेय गहेप्रण
भूपति तहँ बिचित्रगति देखे । ईश्वरकी महिमा अवरेखे
ब्यर्थ होहिं सब शायक इतके। अति अमोघजे जाने नितके
जितेतज्यो सात्वकि दृढ़घायक। ब्यर्थ न भे ते एकौ शायक





हांतासु बिक्रम अनुमाने। पारथसों अधिकीकरिजाने ॥ दोहा ॥
तासु सूत अरु हयनकहँ पांचबाण हनि भूप। सात्वकि केतन
तभो ग्यारहबाण अनूप ॥ दुःशासन षोड़श बिशिख चित्र-
न शरपांच। शकुनिभूप मारतभयो तकि पचीस नाराच ॥
सहि मारे सात्वकिहि पांच बाण अवदात। तीनि तीनिशा-
क हन्यो सात्वकि सबके गात ॥ सोरठा ॥ सौबलको धनुकाटि
पहि मार्‍यो तीनि शर । चित्रसेन कहँडाटि तीक्षण शतशर
तभो ॥ चौपाई ॥ दशशर दुःसहके तनमारे। दुःशासनकहँबीस
हारे ॥ गहि धनु आन शकुनि क्षितिपाला। मार्‍यो तेरहबाण
शाला ॥ दशशर मारतभो दुःशासन। तीनि बाण दुस्सहदृढ़
आसन ॥ तीस बाण हनि भूपति गरजो । दुर्मुख द्वादश शर
नि तरजो ॥ बरषि असंख्यनशरबर फबके। काटि असंख्यन
ायक सबके ॥ पांच पांच शायक अनियारे । सात्वकि सब
हँ मारि प्रचारे ॥ फिरि हनि एक बाण मजबूतहि । बधिडा-
भूपहि के सूतहि ॥ बिना सूत हय ह्वै निज सबके। सा-
कि के सम्मुख सों खसके ॥ गये दूरि निज मन के पथलै।
तउत भ्रमत भये सो रथलै ॥ दुःशासन आदिकभटरूरे। गये
पके सँग भयपूरे ॥ सौबल जीति धनुष टंकारत । सात्वकि
लो भटन संहारत ॥ सात्वकि को इमि बिक्रम सुनिकै। नृप
तराष्ट्र कहतभे गुनिकै ॥ द्रोण आदि सुभटन कहँ जीतत।
त्वकि जात सैनमम रीतत ॥ पाण्डवके भाग्यनकी गुरता।
ह श्री कृष्ण दयाकी पुरता ॥ मन्दभाग्य सब सुवन हमारे।
जीति लहैं अघभारे ॥ अब कहु सूत भयो फिरि जैसो।
ख दुख दायक नीक अनैसो ॥ दोहा ॥ यह सुनि संजयकहत
मन दै सुनु नृपतौन । तो सम्मत कृतकर्मको मिलत भयो
ल जौन ॥ दुर्योधन क्षितिपालको लहि अनुशासनफेरि ।
शासन भट सुदल फिरिलिये सात्वकिहिघेरि ॥ पारथसकबा-

ह्लीक गण अरु कुनिन्द अम्बष्ट । पार्बतीय पैशाचजे सीखे
युद्धसपष्ट ॥ महारथी शतरथ सहस सहसतुरंग सवार । रण
कोबिद अति प्रबलभट द्विरद सवार हजार ॥ सोरठा ॥ दुःशास
न रणधीर तिनकहँ शासन देतभो । तुम सब अनुपमबीर बेगि
सात्यकिहि बधहु अब ॥ चौपाई ॥ बहुबिधि के आयुध समुदाय ।
दीन्हें सब सात्यकिपै छाय ॥ धनुटंकारि प्रचारि प्रचारि । बरषे
बाण सिहारि सिहारि ॥ तेहिक्षण तहँ सात्यकि रणधीर । कियो
अमानुष कर्मगँभीर ॥ इमि बिरच्यो शरपंजर आसु । लहे न
एकौ शर तन तासु ॥ सब सुभटनके आयुध सर्ब । काटिबाणि
करि ब्यर्थ सगर्ब ॥ सब सुभटनपै रचि शरसेत । बेध्यो बध्यो
कियोगतचेत ॥ हय गजसूत सुभट सरदार । बध्यो निमिषमें
कइकहजार ॥ रथके अंगधनुषध्वजछत्र । अगणितकाटिगिराये
तत्र ॥ यथाहोत अबिरलजलघात । भयेप्रचण्ड बातउतपात ॥
होतअजनको यूथअचैन । नृपतिमिबिकल भईतोसैन ॥ दुःशा
सन सोदशा निहारि । पार्बतिनसों कह्योबिचारि ॥ तुम सबशू
सुभटममपक्ष । उपलयुद्धमें हौअतिदक्ष ॥ सात्यकि नहिंजानत
सोयुद्ध । ताहि बधौ तुम सबभटउद्ध ॥ सुनि शतपांचबीर बल-
वाना । गजशिरके समभूरि पषाना ॥ डारनलगे सात्वकीपाह ।
तब सात्वकी धनुर्द्धर पाह ॥ करत भयो तिमि युद्ध ललाम ।
खरदल मध्य कियो जिमि राम ॥ दोहा ॥ प्रति पषाणमें कइक
शर हनि हनिबीर अचूक । दियो फेरि ममसैन मुख करि करि
अगणित टूक ॥ तासु शरन के घातसों टूटिटूटि पाषाण । पलटि
पलटि लगि लागि करे अगणित भटन अप्राण ॥ तेहिक्षण बाण
पषाणसों कै मरदित तो सैन । ह्वै आरत हाहाकरतबिचलत
भई अचैन ॥ सोरठा ॥ फिरि दशशत रणधीर जूटि उपलबरषन
लगे । सात्वकि अनुपमबीर फिरि कीन्होसो दक्षता ॥ चौपाई ॥
तोरितोरि सब शिला सोहाये । प्रति योधनके शीशगिराये ॥





मारैं शिला सुभटरिस पागिपागि । तिनमें अगणित शायक ल-
गिलगि ॥ फेरि फेरि सुभटनपै झेलैं । महि अहिदानव कन्दुक
खेलैं ॥ अबिरल शिलापात के घातन । भई सैन नृपसों कहि
जातन ॥ अगणित मरेपरे बहु घायल । चले भागि अगणित
भट चायल ॥ तासु शरनसों इतके पाहन । लगिलगितथाकिये
दलदाहन ॥ जिमि नदान निज सुहित अमेइ । मिलिसुजान
अरिसों दुख देइ ॥ हाहाकार भूप तेहि पलमें । होतभयो तेहि
पल मम दलमें ॥ घोरशोर तेहि थलको सुनिकै । द्रोणकह्यो
सारथिसों गुनिकै ॥ दावानल सम ह्वै यहिक्षण में । सात्वकि
बिहरतकुरुदल बनमें ॥ हाहाकार होत जहँभारी । तहँ ममरथ
लै चलु रथचारी ॥ द्रोणाचारय सो सुनि येहु । सूत कहतभो
सहित सनेहु ॥ इतपाण्डवपांचाल सोहाये । बलसों चहतब्यूह
मधि आये ॥ जबतुम उतहि चलहुगे स्वामी । आड़िहि उन्हें
कौन जयकामी ॥ भटन मरदि दलमाधि धसिऐहैं । नृपसात्वकि
सम प्रलय मचै हैं ॥ यहबिचारि मम संशय खोई । शासनकरौ
करैं हम सोई ॥ दोहा ॥ नृप इतनेमें तो तनय दुःशासन भयपा-
गि । रणतजि मर्दित भटनसह गो द्विजके ढिग भागि ॥ अति
ब्याकुल तेहि तो सुतहि लखि भय पूरित क्षीण । उचितबचन
इमि कहतभो द्रोणाचार्य्य प्रबीण ॥ रोला ॥ कहो नृपहैं कुशल
अरहैं कुशल सब तो भाय । सिन्धुपति है कुशल अरुहै कु-
शल भटसमुदाय ॥ महारथ युवराज नृपके बन्धु तुम मतिमान ।
युद्ध तजि कतभगे डरिकै त्यागि बल अभिमान ॥ द्रौपदी को
बसनगहिकै सभामधि तुमल्याय । पाण्डवनके सुनत तुम जो
कहे ओज बढ़ाय ॥ जुवामें तूगई जीतीभई अब मम चेरि ।
कर्मदासिनिको करहुसो कर्म अपनो हेरि ॥ संगये सब सुपति
तेरे त्यागि इनको गर्ब । उदर पालन करहु करिकै काज खर्ब
अखर्ब ॥ पूर्ब ऐसो कहो तुमहीं आजु तौन भुलाय । सात्वकी

सों सकतनाहिं लरिभजतगर्ब गँवाय ॥ भीमसों अरु पार्थ सों
जब मचिहि संगर घोर । करोगे तब कहा भगिकाढ़ि जाहुगेके
हि ओर ॥ जीवलै जो भजत रणसों सकत नहिं मरि जीति
करौ जैसो कहत हम जो जौनि नृपकी नीति ॥ जानि आपुहि
निबल उनसों मानि आपनि खोरि । चहैं वे महि जिती तितनौ
देहु मिलि करजोरि ॥ मारि नृपहि सबन्धु जौलगिलेहिं नहिं
वेभूमि । देहु तौ लगि आपुसों मिलि चरण मुखसों चूमि ॥ न
तरु शंक बिहाय उनसों लरो थिरि धरिधीर । युद्धमें मरिलहत
उत्तमठौर क्षत्रीबीर ॥ बचन सुनि तो तनय नहिं कछु दयोउत्तर
ताहि । सदल चलिगो सात्वकी सों लरन जययशचाहि ॥ द्रो
ण धसि पांचाल के दलमध्य बर्षत बाण । तुरंग गजबधि धनुष
ध्वजरथ छत्र शर तनु त्राण ॥ गदा पट्टिश शक्ति आदिककाटि
आयुध भूरि । मारि अगणित भटन क्षणमें दियो परलै पूरि ॥
देखिइमि निज सैन बरदत बीरकेतु कुमार । भिरो सादर द्रोण
सों करि धनुषको टंकार ॥ काटि अगणित बाण द्विजके बीरकेतु
अमान । द्रोणके तनहने दीरघ पांच तीक्षणबान ॥ दोहा ॥ अग
णितशायक द्रोणके काटिकाटि गहिटेक । सातबाणसूतहि हन्यो
ध्वजमाधि मारो एक ॥ बीरकेतु रणधीरके काटि अनगिने बान
द्रोणतासु हिय मधिहन्यो शायक बज्रसमान ॥ फोरिशिला सम
तासुउरकाढ़िगो शायकचंड । ह्वैअप्राण रथसों गिरो नृप सुत
बीर उदंड ॥ सोरठा ॥ मरि निपततलखिताहि तासु सहोदरचारि
भट । द्रोणहि मारण चाहि भिरेशरनको जाल रचि ॥ चित्रकेतु
रणधीर सुभट सुधन्वा चित्ररथ । बरषत बिशिख गँभीर भिरो
चित्रबर्मा बली ॥ चौपाई ॥ तेसब सुभट बिदित भटनायक । तजे
द्रोण पहँ अगणित शायक ॥ कछुक्षण तिनसों लरिरिस लीन्
न्हें । द्विज तिनको शिर छेदनकीन्हें ॥ निजबंधुन कोमरण निरे
खी ॥ धृष्टद्युम्न सेनापति लेखी ॥ शोचतबारि चखनसों मोचत





ो अचारयसों बधरोचत ॥ रचिशरजाल हन्यो तेहिक्षनमें ।
बाण द्रोणके तनमें ॥ अति दृढ़बान लगे सुनि आरय ।
छित भोभट द्रोणाचारय ॥ द्रोणहि मुरछित लखि अनुमानी ।
तजि धृष्टद्युम्न अभिमानी ॥ गहिअसि चर्मकूदि चरिपथपै ।
द्रोणाचारय केरथपै ॥ इतनेमें द्विजचेतित ह्वैकै । धृष्टद्युम्न
निजढिगज्वैकै ॥ अतिलघु लघुशायक अनियारे । अबिर-
तु बिरचि तेहि मारे ॥ नहिंबढ़िसको पाय अवरोधा । पल-
पो निजरथपै योधा ॥ धनुटंकारिगहो उतकरषा । करतभयो
नकी बरषा ॥ ताहिप्रचारि द्रोणलरि तेहिक्षिन । करत
ो बाणनको दुरदिन ॥ दोऊ अतुलबिक्रमीगाये । अद्भुत
कियो मनभाये ॥ अद्भुतभांति शरासन करषे । अद्भुत बिधि
आयुध बरषे ॥ अद्भुत बिधिसों आयुधकाटो । अद्भुतबिधि
हनिहनि डाटो ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नके सूतकहँ मारि बज्रसम
। बधिगिराय गरजतभयो द्रोणाचार्य्य अमान ॥ बिना
मक तुरँगसब रथलैगये पराय । अगणित भट तेहिक्षण
ा द्रोणबीर दृढ़घाय ॥ इबिधिजीति पांचाल दल फिरि निज
माधि आय । ब्यूहद्वारपै लसतभो द्रोणाचार्य्य सचाय ॥
॥ दुःशासन तो पुत्र सदलजाइ उतबेगसों । गहे जीति
पुत्र भयो प्रचारत सात्वकिहि ॥ चौपाई ॥ सुनि प्रचारि सा-
कि रणचारी । फिरो सिंहसम धनुटंकारी ॥ तो सुत साठि
तेहिक्षनमें । मारतभो सात्वकिके तनमें ॥ भटसबतो सुत
अनुगामी । बरषेभूरि बिशिख जयकामी ॥ नृप तेहिक्षण सा-
कि धनुधारी । करतभयो बिक्रम अतिभारी ॥ बरषि असं-
शरवर फबके । काटि असंख्यन शायक सबके ॥ प्रति
जालशरनको रचिकै । सिगरे दलमधि शायक खचिकै ॥
गणित हय गज भटबधि पलमें । प्रलय पसारतभो तेहि
में ॥ क्षणमें काहुहि बचत न जाने । आरतह्वै हतशेष

पराने ॥ तोसुत भगत देखि निजसेना । ईर्षाबश न टरो ज
ज़ेना ॥ शत शर सात्वकिके तनमारे । तुरँगन कहँशर चा
प्रहारे ॥ तब सात्वकि अति तुरतालीन्हें । ताहि शरनसों गो
पित कीन्हें ॥ दुःशासन कहँगोपित देखी । दुर्योधनभूपति अ
रेखी ॥ दल त्रिगर्त्तको तुरित पठाये । तीनि हजार रथी म
भाये ॥ चाहि सात्वकी को अवरोधा । पहुँचे निकट प्रबल
योधा ॥ सात्वकि बीरतिन्हें लखि आवत । बढ़ि तिनसों अभि
शर छावत ॥ ह्वैसब सुभट कालमुख गतसे । भये अधीर
बिक्रम हतसे ॥ दोहा ॥ तिनमें योधा पांचशत हेअगरे गहिप
क्षणमहँ तिनकहँ बधत भो सात्वकि सुभट अखर्ब ॥ ती
तिनको बधबिकल ह्वै भगिगे भट तजिदर्प । दुखमुख उ
द्विजपतिहि लखिजिमि बिलमुखसर्प ॥ सोदल बिचलितक
गरजि चलोपार्थकी ओर । तबप्रचारि नवशरहने दुःशास
करिजोर ॥ सोरठा ॥ सात्वकि बीरउदण्ड पलटि खिस्याये अ
सम । पांच बाणअतिचण्ड दुःशासन के तनहन्यो ॥ चौपा
फिरि तोतनय तीनि शर मारे । सात्वकि तेहिशर पांच प्रहारे
फिरिहनि शरक्षुरप्र अतिचोखो । काट्यो तोसुतको धनु नोखे
काटि तासुधनु निजधनु करषत । चलो पार्थकीदिशि शरब
षत ॥ तबतोसुत करिक्रोध अथोरा । मारतभयो शक्ति अति
घोरा ॥ हनिअनेक शायक मनभाये । सात्वकि ताकहँकाटि गि
राये ॥ तबतो तनय और धनुगहिकै । शतशर हन्यो खरो
कहिकै ॥ तो सुतके उरसों धनुधारी । हन्यो तीनि शायक अ
भारी ॥ तबमुरछित ह्वै तोसुत सोई । परोसुरथपै बिक्रम गो
तदनु सात्वकी हनिशर चारी । बधतभयो सबहय रथचारी
बधि सारथिहि मारि वर शायक । धनुध्वज काटिचलो भट
यक ॥ भीमसेनकोप्रण अनुमानी । बध्योन दुःशासनहि सुज
नी ॥ लखि त्रिगर्त्तपति मन निरभैकै । भगोताहि निजरथपै





॥ दुःशासनहि जीतियहि बिधिसों । चलो पार्थपहँ भरिजय
धिसों ॥ नृप तेहिसमय न कोऊबीरा । भयोतासु सम्मुख धरि
रा ॥ जेधरिधीर गयेढिगतासू । तेमहितजि यमपुरगे आसू ॥
पतंग ज्योतिढिग जाई । होत भये तितभट समुदाई ॥ दोहा ॥
जयसों यहसुनि कह्योवृद्धभूप दुखपाय । संजय चाहत दैवसो
त न रोकोजाय ॥ शक्रबरुण ममसैन मधिधसि जिमि सकतन
य । तथा अकेलो सात्वकी गोबाधिभट समुदाय ॥ तदनन्तर
सियुद्धभो सोकहु सूतसुजान । यहसुनि नृपसों कहतभो संजय
तिमति मान ॥ सोरठा ॥ महाराज तेहिकाल करिसम्मत पांडव
ल । रचत शरनको जालपैठन चाहे व्यूहमधि ॥ तेहिक्षणतो
भूप भिरि तिनसों बरषत बिशिख । बिक्रम कियो अनूप जो
वि बिस्मितभे सुमन ॥ निशाकर ॥ दल नलिन बनमाह । द्विरद
नरनाह ॥ धसि गहे उत्कर्ष । भयोदलत सहर्ष ॥ भटनको
दाय । बधतभो दृढ़घाय ॥ बाधिद्विरद हयभूरि । रुधिरकोसर
॥ सकल थरनि सचाय । शक्तिशर सरसाय ॥ चक्रके सम-
। कियो भीषम भूमि ॥ बिरचि शरके सेतु । काटि बहु धनु
॥ कियोअद्भुत युद्ध । भूमिपति भटशुद्ध ॥ दोहा ॥ ओजअख-
ल सरिसकरि मंडलसम कोदंड । परदलमधि पार्थ्योप्रलय
सुतबीर उदंड ॥ इमि दलमर्दत निरखितेहि भीमादिकभट
। भिरत भये अति बेगसों बरषत बाण सगर्ब ॥ भीमसेन
बाणदश धर्म नृपतिकहँ सात । द्रुपद बिराटहि बाणषट
तोसुत तात ॥ शतशर हन्यो शिखण्डिकहँ धृष्टद्युम्नकहँ
। सहदेवहि नकुलहि हन्यो षट शायक अवनीश ॥ हन्यो
दीके सुतन तीनि तीनि नाराच । सकल भटनकहँ हनतभे
दश बसुषट पांच ॥ सोरठा ॥ तहां युधिष्ठिरभूप हनि तीक्षण
भल्लबर । नृपको धनुष अनूप काटि हनतभे बाणदश ॥
गि लागिते बान धसे न बर्म अभेदमें । तब नृपगहि धनु

आन भिरो युधिष्ठिर भूपसों ॥ चौपाई ॥ सोलखि सब पाण्ड
भयपूरे । धर्महिं घेरि लये भटरूरे ॥ दुर्योधनपहँ चले प्रचारी
भट पाञ्चाल रथी धनुधारी ॥ सोलखि द्रोण धनुर्द्धर योधा
बढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधा ॥ तेहिक्षण घोरयुद्धभो राजा
मरे असंख्यन सुभट समाजा ॥ भीषमशब्द भयो दुहुँदलमें
कटे असंख्यन हयगज पलमें ॥ जहँअर्जुन जहँ सात्वकिबीरा
तहां मचो अति शब्द गँभीरा ॥ द्रोण पार्थ सात्वकि तेहिदि
नमें । किये लोकक्षय बाणागिनमें ॥ द्रोणक्षात्रिआतंक ती
क्षणमें । तोसुत नृपको हित गुणि मनमें ॥ कोपित कालकरा
समाना । परदलमधि बिहरो बलवाना ॥ काटत अगणितश
सबहीके । बध्यो असंख्यनभट उनहीके ॥ इमिदल मर्दत ता
निहारी । वृहच्छत्र नृपभिरो प्रचारी ॥ सबकेकयन मध्य गु
भरता । महारथी अरिदलदर दरता ॥ तुरगनकरिअति चं
ल भूपर । बरष्यो बिशिख द्रोणके ऊपर ॥ द्रोण कोपकरिती
प्रहारे । बाण पंचदश अति अनियारे ॥ तिनमें पांच पांचश
हनि हनि । वृहच्छत्र काटतभो गनि गनि ॥ द्विजबर बहु
आठशर डारे । बसुशर मारि तिन्हैंनृपबारे ॥ दोहा ॥ ब्रह्मत्र
तब तजतभो कोपिबिप्र रणधीर । बृह्मअस्त्र तजितेहि समि
कीन्हों क्षितिप सुबीर ॥ अस्त्र अस्त्रसों वारि नृप हन्यो सा
शँर क्षिप्र । अति अनियारे बाणबहु भूपहि मार्यो बिप्र ॥ फि
नृप सत्तरि शरहन्यो तबभट द्रोण अमान । भूपहि व्याकु
करतभो बरषि बज्रसम बान ॥ बधिअश्वन अरु सूतकहँका
छत्र कोदण्ड । भूपतिको बध करतभो मारिबाण अतिचण्ड
सोरठा ॥ वृहच्छत्रको नास लखि परभट हाहाकरे । तबकरिक्रो
सहास वृद्धकेतु बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ अगणितकाटि बि
के शायक । हन्योसाठिशरसो भटनायक ॥ मारिक्षुरप्रबाण अ
तिचोखो । काट्योद्रोण तासुधनु नोखो ॥ धृष्टकेतु तब बर ध





हिकै । बरष्यो बिशिख खरोरहु काहिकै ॥ तबद्विज अति कर-
घव कीन्हें । सब हयसूत तासुबधि दीन्हें ॥ तब शिशुपाल
नयरथ तजिकै । डारतभो बरगदा गरजिकै ॥ मारि कइकै
ायक अनियारे । द्रोणकाटि तेहि महिपै डारे ॥ तबसो हन्यो
ाक्ति अतिभारी । काट्यो ताहि द्रोण धनुधारी ॥ शक्तिकाटि
जशर अतितीक्षण । मारतभयो अरुणकरि ईक्षण ॥ लखिसो
ण बेधि उरतासू । धसोजाइ धरणीमधि आसू ॥ भयो बि-
रण हियबलवाना । गिरो भूमिपै ह्वै गतप्राना ॥ तबसुत
ासु भिरो द्विजबरसों । बध्योताहि द्विजचरबरशरसों ॥ चेदि-
ज सुतको बध देखी । जरासन्धको सुत अतिलेखी ॥ बर्षि
संख्यन शर ह्वै कोपित । द्रोणहिं कियो निमिषमें गोपित ॥
णकाटि सिगरेशरताके । बध्योताहि हनिशर बरमाके ॥ क्षत्री
र्दन बीर अचारय । नृपतहँ कियो अमानुष कारय ॥ बधि
गणित हय गज भटरूरे । हाहाधुनि परदलमधि पूरे ॥ दोहा ॥
जय अरु पांचाल अरु पांडवके दलमाह । सुनि हाहाधुनि
रतभो क्षत्रधर्म भटनाह ॥ शर क्षुरप्रसों द्रोणको धनुषकाटि
धीर । हनि बहुशर बेधित कियो द्विजको चारु शरीर ॥ तु-
त और को दण्डगहि द्रोणाचार्य अमान । क्षत्रधर्मको बध
यो मारि बज्रसमबान ॥ धृष्टद्युम्नके सुवनको बधन निरखि
नखाय । चेकितान नृपबिप्रसों आभिरो ओज बढ़ाय ॥ सोरठा ॥
शर द्रोणहिंमारि चारिबाणसूतहिहन्यो । तबद्विजधनुटंकारि
ड़शशरभूपहिहन्यो ॥ फिरिहनिशायकएक बध्योभूपकेसारथि-
। बिनासूतगहिटेक तुरँगसुरथलैदूरिगे ॥ भुजंगप्रयात ॥ महावीर
ानको यूथदर्त्ता । अबीरानहू को बलीबीर कर्त्ता ॥ भरो गर्ब
ारको नाशचोप्यो । भलै कालसों ह्वैप्रलयकाल रोप्यो ॥
ी शुण्डसे चण्ड दोर्दंडचारी । करे मंडलाकार कोदण्डभा-
॥ करी बाजियोधा घने काटिडार्‍यो । मही रुण्ड औ मुण्ड

सों पाटिडाख्यो ॥ घने हांक दैकै घनेबाण ठाटे । घनेपाणि उ
घने शीशकाटे ॥ घनेभल्ल नाराचके जालपूरे । घनेघातलीन्हें
घने गातथूरे ॥ नता ठौर कोऊ सकोयूथ तासों । भगे भूरि
योधौ भरे भीति भासों ॥ भिरे बीर जे बीर तासों रँगेसे । भये
हालते काल केते गालगेसे ॥ दोहा ॥ ह्वै आरत जिमि शीत
लहि कम्पत गउनको जूह । द्रोणभीतिसों तिमिकँपो अरिदल
सुभट समूह ॥ द्रुपद बिराटादिक तहां कर्ण द्रोणको देखि । अ
ति बिस्मित ह्वै शोचि इमि कहतभये अवरेखि ॥ वृद्धपचासी
बर्षको करत युवा समयुद्ध । अतिगुरु तपकरि बिप्रयह लह्यो
बीरताशुद्ध ॥ सोरठा ॥ इमिकहि द्रुपद बिराट देसाहस लैभटन
सँग । द्विजहिजानि भटराट लरतभये रहि यतनसों ॥ महिबरी
यहिभांति उत्तम सैन जलनिधि मध्य अतिअनुपम बनो । भट
सुवन सिनिके सुवनको रणधीर अतिधनुधरगनो ॥ तहँरचत
अबिरल सेतुचारु सुशायकनके गरजिकै । रथतुरँग गज भट
दुसह लहरिन सबिधि मरदत बरजिकै ॥ जलजाद समजेभ
येसंमुख तिन्हैं मरदत मदमयो । भटपार्थ अकथिक कूलपर
तेहि पथिकसम निअरत भयो ॥ जिमि नाग हितनागान्त उ
दधिहि परनसों अरदत भयो । तिमि सिन्धुपति लगिपार्थमम
दल शरणसों अरदत भयो ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार जननाशहित
नृप तो सम्मतपाय । पाण्डवसों तोसुतलरे नाहक बैरबढ़ाय ॥
इतिद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनयुद्धचतुर्थयामारम्भेसात्वकिप्रवेशोसप्तमोध्यायः

दोहा ॥ सात्वकि कहँ ढिग पार्थके गयेदेर गुणिशोचि । धर्म
भूमिपति भीमकहँ उतै पठैबोरोचि ॥ कह्यो सूतसों सुरथ लै
चलो भीम है यत्र । सो सुनि सारथि सुरथलै शीघ्रजात भो
तत्र ॥ रोला ॥ भीमके ढिग जाय मोहित भयो धर्मनरेश । देखि
मोहित भूपको इमि कह्यो भीम सुभेश ॥ भूमिपतिसों कहो
मोहित भये हौ जेहि हेत । मोहिंआछत आपुप्रभुकत शोचि





हतअचेत ॥ करौंशासन शीशधरिसों करौं मैं यहिकाल । भी-
के ये बचन सुनिकै कहत भो क्षितिपाल ॥ पाञ्चजन्यसुशं-
खकी धुनि परतसुनिबहुबार । सुनो परत न मोहिं अबगांडिव
की टंकार ॥ जानि ताते परतनहिं है कुशल पार्थअमान । ल-
तकेशव करत ताते शंखको आह्वान ॥ बूझि यह उत प्रथम
ठ्यो सात्वकी कहँतात । गयो सोऊ भया कैसो शोचबाढ़त
जात ॥ जाहु ताते शीघ्रउत तुम बिदित भट शिरताज । कृष्ण
पारथ सात्वकी के कुशल रक्षण काज ॥ भूपके ये बचन सुनि
के कहो भीम सचाय । पार्थ को नहिं कछू संशय कृष्णजासुस-
हाय ॥ आपुआज्ञा करत हमउत अवशिजैहैं भूप । भाषिइमि
गो भीम जहँहो धृष्टद्युम्न अनूप ॥ कह्यो तासों मोहिं भेजत
भूप है जितपार्थ । भूपको तुम किहेहुरक्षण सदा सबिधि सदा-
र्थ ॥ भाषिइमि मधुपान करि सन्नाहधारि नवीन । देत बिधि-
वत दानअरुस्वस्त्ययन सुनतप्रवीन ॥ करिप्रदक्षिण भूपतिहि
टंकारि बर कोदण्ड । चलत भो ममब्यूह मुखदिशि पुरुषसिंह
उदण्ड ॥ दुन्दुभी बजवाइ सहदेव आदिसबभटजूह । चलेपीछू
तासु मम दिशि तजतबाण समूह ॥ ताहि आवत देखि यहि
बिधि इतैके भटसर्ब । भिरेबढ़िकै गरजि बरषतभूरिबाणसगर्ब ॥
भीम तिनपै बरषि शररथ बेगसों हँकवाय । ब्यूहमुख पै द्रोण
हो तहँ चलो शायकछाय ॥ द्विरददल तबभयो आड़त भीम
तहिं बिचलाय । द्रोणके ढिग गयो बरषत बाणभट दृढ़घाय ॥
भीमसों द्विज कह्यो अब इत बिनाजीते मोहि । ब्यूहमधिनहिं
पसन पैहौ फिरो मोकहँ जोहि ॥ ब्यूहमधिगो पार्थसो कछुकृपा
मेरीपाय । सुनौ ताते ब्यूहमधि तुमनहीं सकिहौजाय ॥ द्रोणके
ये बचन सुनिकै कह्यो भीमबुझाय । मान्य सब बिधि हमैं तुम
हौ पिता ममसुखदाय ॥ लागिअरिसँग करत हौ जो अरिन
के समकाज । सुनो तौ अरिसरिस ह्वैहम कहत हैं द्विजराज ॥

सुनो अर्जुन हैंन हम हम भीमसेन प्रसिद्ध। जाबदलमधि शो
ध्रू तुमकहँ जीति है द्विजवृद्ध ॥ भाषि इबिधि अमोघ गरुड़े
दामास्योभीम । देखितेहि गोकूदि रथसों द्रोणवीर अधीम
गदासों लगि तुरँगसूतहि मारिकरिरथ चूर्ण । धुन्यो अगणि
त भटनधुनिया धुनत जैसे ऊर्ण ॥ देखि द्विजकी दशा यह ते
सुवन कहि हाहाय । घेरिद्रोणहि और रथपै लये तुरितचढ़ाय
बीरदुःशासन तजत भो शक्तितापहँ डारि । भीमाफिरि हनिबा
तीक्षण कुंड भेदिहिमारि ॥हतिसुखेनाहिबधि सुनेत्रहिदियेमहि
डारि । मारिबाणनप्रलय रोप्यो लग्योनाहिं अबारि॥रौद्रकर्महि
मारिफिरि वृन्तारकहि बधिबीर । दुर्बिमोचन कहँबध्यो बधि
अभयकहँ रणधीर ॥ बध्योफेरिसुबर्मणहि तहँ बरषि अगणित
बाण । बाणमारिसुदर्शनहिं फिरिभयोकरत अप्राण ॥ बरवि
अबिरल बाण अगणित विविध आयुध काटि । बेधि बधि
बिचलाय अगणित भटनधनुबिधि ठाटि ॥ गरजि गरजि प्र
च्चारि यहि बिधि भीमसेन अमान । बधोबालिके पशुनसम ते
सुवन नव बलवान ॥ रहे जे हतशेष ते इमिबधत बन्धुनदेखि
बेगसों हँकवाइ रथगे दूरि कढ़ि अवरेखि ॥ सिंहके भयभगत
जैसे द्विरदको समुदाय । भगेतिमि तो तनय सिगरे देवपत
मनाय ॥ दोहा ॥ इबिधि जीति तो सुतन कहँ पांडव धनुटंकारि
द्रोणाचारयसों भिरो बरषत बाण प्रचारि ॥ तहांद्रोण अ
भीमसों भयोयुद्ध बिकराल । दोऊ दोऊ दिशिदये बिरचि शरन
के जाल ॥ चौपाई ॥ तेहिरथ भीमसेन बलवाना । करिनिज का
रजको अनुमाना ॥ रथ सोंकूदि द्रोणके सम्मुख । चलो सहत
शायक दायकदुख ॥ मैगल मत्त चलैसहि जैसे । जलके बूं
पवनमुख तैसे ॥ जायबेगसों गहिरथ भारी । फेंकत भयो बी
रणचारी ॥ तेहिसुजान सों कूदि अचारय । चढ़ो और रथपै
भट आरय ॥ फिरि न भीमसों भिरो बिचारी । थिरोब्यूह मुख





धनुधारी ॥ घनसम गरजि भीमभट नागर । चढ़ोसुरथपै बि-
म सागर ॥ योधन बेधत बधत ननरदत । चलोतुरँग रज
ज भटमरदत ॥ जीति भोजदल अरु काम्बोजहि । जीति
लेच्छ सेनाबर ओजहि ॥ जीतत सदल और बहुभूपन ।
रत पराजिन भीषम रूपन ॥ लरतरह्यो सात्वकि जेहिं थल
। तेहिथल जातभयो ममदल में ॥ तहँसो बढ़िमरदत मम
ना । लखो अर्जुनहिं अरिदल जेना ॥ तहँगरजतभो मेघ
माना । आयोभीम पार्थ सुनिजाना ॥ अति हर्षित कै केशव
रथ । गरजतभये पुष्टगुणि स्वारथ ॥ बार बारते गरजि गर-
कै । लरेमेघसम तरजि तरजिकै ॥ धर्मभूपसों गरजनि सुनि
। मोदित भये कुशल सब गुनिकै ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै धृत-
राष्ट्र नृप ह्वै अतिबिकल बिहाल । संजयसों बूझै सुनो जन्मे-
य क्षितिपाल ॥ इबिधि मर्दिदल जाइ तहँ गरजो भीम सुबीर।
बवासों तेहिथरभिरो को योधा धरिधीर ॥ हयसों हय गजसों
रद रथरि प्रहारि प्रहारि । बधेभीम तासों भिरो को कहुसो
धारि ॥ सोरठा ॥ सुनि भूपतिके बैन संजय ऐसो कहतभो ।
खि भीमहि बलऐन कर्णडाटि बढ़ि भिरतभो ॥ चौपाई ॥ बढ़ि
हि उभय बीरबलपागे । अबिरल बाण प्रहारन लागे ॥ मारि
टि अगणित शररूरे । अगणित बाण दुहूंदिशिपूरे ॥ धनुटं-
रि प्रहारनि गरजनि । कोअति शब्द सुभटहिय दरजनि ॥
ति करिकरि गौरवलीन्हें । भटहय द्विरदन शंकित कीन्हें ॥
गुणो सुनिशब्द गँभीरा । भिरो भीमसों कर्णसुबीरा ॥ भी-
हि कर्ण बीस शर हनिकै । सूतहि हन्यो पांचशर गनिकै ॥
साठि बाण भीम तेहि मारे । तापहँ कर्ण चारिशर डारे ॥ तिन
हँ काटि भीम शरछाये । अतिशय करलाघव दरशाये ॥ अ-
पित काटिभीमके बाना । छाइदियोशरकर्ण अमाना ॥ भीम
को काटि शरासन । मार्यो दशशर अरिकुल नाशन ॥

रिस कारिकर्ण और धनु धरिकै । बेध्यो भीमहि शरपरिहरिकै
शायक तीनि कर्णके उरमें । मार्यो भीमसेन अतितुरमें ॥ बि
माधि अधप्रविशे अहिगनसे । तिन्हैं अधधसेलखि जन म
से ॥ इमि भिदिकैरहिक्षणक अचायक । कर्णभयो बर्षत ब
शायक ॥ भीमफेरि काट्यो धनुतासू । सूतहि बेधि बधत भ
आसू ॥ बाजिन मारिभेजि यमलोकहि । बहुशरहन्यो कर्णब
ओकहि ॥ दोहा ॥ तुरित कूदि तेहि सुरथसों कर्णबीर अनुमानि
जाय सुरथ वृषसेन के बैठो आनि गलानि ॥ इबिधि जीति
कर्ण कहँ गरजो भीम अमान । कर्णहि जीत्यो भीमसुनि ध
किये अनुमान ॥ अर्जुन सात्वकि भीमकहँ निजदल मर्दत है
खि । जाय द्रोणपहँ तो तनय कहत भयो अवरेखि ॥ सोरठा
तुम्हैं जीति हेतात सात्वकि अर्जुन भीमभट । मर्दिसैन अ
दात गये सिन्धुपतिके निकट ॥ तो जीतब बलभौन भयो सि
शोषण सरिस । अबहै करतब जौन तासु बचन कासों कहौं
जयकरी ॥ दुर्योधन नृपके सुनिबैन । कहो द्रोण यह मिथ्याहैन
हमैं जीति तेसुभट अमान । गेतो दलमाधि बरषत बान ॥ तु
कीन्हेंहौ अनरथ कर्म । जानो यह ताको फलपर्म ॥ कुलि
मंत्र शकुनिको मानि । तब जीते जूवाहित जानि ॥ सो जीत
नहिं जीतिललाम । युद्धजुवा जीतब अभिराम ॥ जामी
पाँसा आयुध सर्व । क्षेत्र चारु गृह निशिदिन पर्ब ॥ नर
चारि रँगकी सब सैन । दाव द्रब्य महिदायक चैन ॥ तु
अरु धर्म महीप खेलार । सोदर बन्धु मंत्रदातार ॥ यह जु
जो जीतै तात । सोई जीति जीति बिख्यात ॥ आजुखेलारध
नंजय बीर । दाव जयद्रथ भूपति धीर ॥ सात्वकि भीम सह
यी तासु । खेलि चहतहैं जीतनआसु ॥ तातेजायभटनलैसंग
खेलौ युद्ध जुवा बदरंग ॥ युद्ध जुवा यह भीषम रूप । हैन श
कुनि के बश हे भूप ॥ जीति हारि ईश्वरके हाथ । लरोजाय





भटन साथ ॥ हम इत आड़ि सुभट समुदाय । करबयुद्ध अ-
रल शर छाय ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल । चलो पार्थ
हँ लै भटमाल ॥ दोहा ॥ उतमौजा क्षितिपाल अरु युधामन्यु
रनाह । पृष्ठ रक्ष जे पार्थके हे आये दलमाह ॥ तिन्हैं लरत
ज भटनसों मगमें भूपति देखि । भिरतभयो अति कोपकरि
तनको बध अवरेखि ॥ सोरठा ॥ नृपहि निरखि तेबीर भिरे प्र-
चारि प्रचारि कै । तीक्षण तीस सुतीर युधामन्यु मारत भयो ॥
नि सूतहि शर बीश तुरगन मारे चारिशर । युगशर हनि अ-
तीश काट्यो तासु ध्वजा धनुष ॥ चौपाई ॥ उतमौजा हनि शर
जबूतहि । बधत भयो भूपति के सूतहि ॥ बधिताके सूतहि
र्योधन । बध्यो हयन हनि शर तन शोधन ॥ उतमौजा तेहि
सों काढ़िकै । युधामन्यु के रथपै चढ़िकै ॥ भूपतिके रथके सब
रे । बधत भयो हनि बाण अथोरे ॥ युधामन्यु हनि शायक
खो । काट्यो भूपतिको धनु नोखो ॥ तब हनि गदा भूपदृढ़
यक । बधि तिनके धोरन क्षितिनायक ॥ फिरि नृप मद्रनाथ
रथमें । चढ़िभो चलत पार्थ दिशि पथमें ॥ और रथनपैचढ़ि
अगरे । तेयुगभूप पार्थमुख डगरे ॥ तहँ धृतराष्ट्र भूपसुनि
सो । बूझे कियो कर्ण फिरि कैसो ॥ जब तेहि जीतिभीमरण
री । चलो पार्थपहँ धनुटंकारी ॥ भीषम द्रोण पार्थसमयोधा ।
कियो तब किमि अवरोधा ॥ सो सबिधानसूत सुतभाषो ।
निबे को ममसन अभिलाषो ॥ वृद्धभूप की सुनि यहबानी ।
त भयो संजय शुचिज्ञानी ॥ कर्णहि जीति भीमजबराजा ।
तो बधततो सुभट समाजा ॥ तब राधेय और रथ बरपे ।
हि टंकारि धनुष तेहि थरपै ॥ कहतभयो अतिरिससोंपागो ।
कितजात वृकोदर भागो ॥ दोहा ॥ कुन्ती पुत्रन उचित
अरिहि देखावब पीठि । फिरि मम सम्मुख युद्धकरुजोरि
ठिसोंडीठि ॥ ऐसोकरकशबचनसुनि भीमसेनबलवान । सादर

फिरिराधेयपै बरषो अबिरल बान ॥ सोरठा ॥ तासु शरनके जाल
काटि कर्णबरसों बिशिख। दोऊबीरबिशाल कियेभयानकयुद्धत
हँ ॥ चौपाई ॥ यथा अचारय शिष्यहिशीक्षत। कर्ण लरतहो तिमि
जय ईक्षत ॥ भीम सकल निज पौरुष करिकै। रह्यो लरत बध
को प्रण धरिकै ॥ करै बाण बिधि भीम सुबीरा । लखिसोहँसे
कर्ण रणधीरा ॥ देखि तासु हँसिबो अति रिसिकै। बाण जाल
मधि भीम प्रविसिकै ॥ बाण पचीस कर्ण के तनमें। मार्योबध
को प्रणकरिमनमें ॥ दोऊबीर शरनकी बरषा । कियो परस्प
गहि उतकर्षा ॥ दोऊ सेतु शरन के रचिरचि । काटि काटिब
शायक नचिनाचि ॥ दोउन कहँ अगणित शर दोऊ। मारतभ
लखै सब कोऊ ॥ हनि चौंसाठि शर कर्ण सुप्रनको । काट्योक
वच भीमके तनको ॥ काटि कवच करि करि शरपातहि। बेधत
भयो भीमके गातहि ॥ पुष्पित किंशुकसुतरु समाना । लस
भयोतहँ भीम अमाना ॥ भीमसहेताके शरतैसे। कामीबचनन
तियकेजैसे ॥ तिमिसहिबाण काजानिजगुनिकै। भीमबरषि शाय
क धनु धुनिकै ॥ काटि कर्णको धनु भटनायक । तुरगन बध्यो
मारि बहुशायक ॥ बधि सूतहि हनि शायक भारी । बेध्योसू
सुतहि रणचारी ॥ बिरथ बिधनुह्वै सो रथतजिकै । कर्ण औ
रथपै गो लजिकै ॥ दोहा ॥ इबिधि पराजय कर्णको सुनि धृत
राष्ट्र महीप। कहे कर्ण लहिहारिका कियो भाषु कुलदीप॥ य
सुनि संजय कहतभो चढ़ि रथबरपै फेरि। कर्ण भीमपै चल
भो धनुटंकारत टेरि ॥ सोरठा ॥ दोऊबीर अमान मत्त द्विरदस
जूटितहँ । करतभये घमसान करकोदण्डन चपल करि ॥ मं
कर्णकोपाय कियेकर्म तौ तनयके। समुझि भीम अनखाय ब
षो शायक कर्णपहँ ॥ चौपाई ॥ सूतज तासु धनुष बिधि देखी
हँसि अगणित शरताजि अवरेखी ॥ काटि अनगिने शाय
ताके। हनतभयो नवशर बरभाके ॥ तब अतिकोपि शरास





करषत। भीमसेन अबिरल शर बरषत ॥ काल कराल समान
करुख। गरजत चलो कर्णके सन्मुख ॥ सो लखिबरषतअग-
णित शायक । तापहँचलो कर्णभट नायक ॥ ऋक्षसमान कर्ण
के घोरे। हंससमान भीमकेघोरे ॥ श्यामसेत बारणसे भिरिकै।
शोभित होत भये तहँ थिरिकै ॥ दोऊ भट कोपित ह्वै मन
में। अद्भुत कर्म कियो तेहि क्षनमें ॥ मण्डलसम धनु करिकरि
शरसे। दुहुँ दिशि अबिरल शायक बरसे ॥ अगणित शायक
काटि गिराये । अगणितबाण दूरिलों छाये ॥ अहि सपक्षसे
शायक रूरे। अबिरल दोऊ दुहुँ दिशि पूरे ॥ अगणितशर
गातनमधि हनि हनि। गरजत भये खरोरहु भनि भनि ॥ टेरि
टेरि करि करि चषराते। बरषे बाण गर्बमदमाते ॥ दोऊ महा-
मोदसों चरि चरि। लरे शरनको दुरदिन करि करि ॥ शायक
तीस परम अनियारे । कर्ण भीमके तनमें मारे ॥ धनुष कर्ण
को हनिशर तीक्षण । काट्यो भीम अरुणकरिईक्षण ॥ दोहा ॥
बधि सूतहि हनिबाण बर दीन्हों महिपै डारि । तब सूतजबर
शक्तिगहि मारत भयो प्रचारि ॥ जौ लगि धाय्यो औरधनु तौ
लगि कैयकबान । हन्यो कर्णके गातमें भीमसेन बलवान ॥
तुरित कर्ण धनु और गहि बरष्योबाण अनेग । सोसबकाट्यो
शरनसों भीमसुबीर असेग ॥ फिरिक्षुरप्रशर मारिकै काटि
कर्णको चाप। बधि घोरन अरुवन बध्यो भीमभूरि परताप ॥
सोरठा ॥ बिरथ बिधनु करिताहि बेध्यो अगणित शरनसों।
सूतज इत उत चाहि रह्यो न तबकछु करिसको ॥ कर्णहि
पीड़ित देखि दुर्योधन भेज्यो तहां। दुर्जय कहँ अवरेखि जाय
भिरोसो भीमसों ॥ बहुकला ॥ भीमहि प्रचारि। नवबाण मारि ॥
हनिषट सुबान। सूतहि अमान ॥ ध्वजमधि नवीन। हनिबाण
तीन ॥ बहुबाणकाटि। पाण्डवहिडाटि ॥ फिरि तासुगात। शर
हने सात ॥ तबभीम कोपि। परलै अरोपि ॥ बधि सूततासु।

हतिहयनआसु ॥ दुर्जयहि मारि । भोदेतडारि ॥ बलबुधि नि-
धान्न । तोसुत अमान ॥ करितासुनास । पाण्डव सहास ॥ रथ
पर निहारि । कर्णहि प्रचारि ॥ तुरता बढ़ाय । शर दिये छाय ॥
बहुबार हारि । तोहित बिचारि ॥ नहिं टरो नेक । सूतज सटेक ॥
भोरचत हाल । शरसेतु जाल ॥ इमि उभयबीर । बरषे सुतीर ॥
दोहा ॥ भीमकर्णके तनहने शायक दशअरुबीश । कर्ण ताहि
नवशर हने बल करि हे अवनीश ॥ फेरि भीम तिरसठिबिशि-
ख हने कर्णके गात । कर्ण तासु तनमधि कियो अति तीक्षण
शरपात ॥ बेधिभीमकहँ सो बिशिख गयोपार काढ़ि भूप । भीम
कोपि तब हनतभो गदा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ हनि सो गदा
उदण्ड बध्यो कर्णके हयनकहँ । फिरिहनि शायक चण्ड बधि
सूतहि काट्यो ध्वजा ॥ तबतेहि सुरथहि त्यागि कर्ण भूमिमें ह्वै
खरो । महाक्रोधसों पागि बरषतभो अबिरल बिशिख ॥ चौपाई ॥
तेहिक्षण कर्ण महारिस लीन्हें । भूपति अति बिक्रम तहँकीन्हें ॥
बिरथी भीमसरथिसों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै ॥
दुर्योधन सो लखि दुखपायो । दुर्मुख कहँतहँ तुरित पठायो ॥
लखि दुर्मुखहि भीमलहि आनँद । बरषि कर्णपै शरसरदानद ॥
भिरि दुर्मुखसों हनिनवशायक । बधिभेज्योयमपुर भटनायक ॥
सूतज तोसुतको बध देखी । चषजल तजत अनर अवरेखी ॥
मोहक्रोध गहिरथपर चढ़िकै । भिरो बृकोदर भटसों बढ़िकै ॥
तेहि अन्तरमें चौदह बाना । हन्यो कर्णकहँ भीमअमाना ॥ ते
शर तासुगात मधिधसिकै । शोणित पिये उरग सम बसिकै ॥
चौदहबाण भीमके तनमें । मारतभयो कर्ण तेहि क्षनमें ॥ तब
करिकोप भीम रणचारी । कर्णहि हने तीनिशर भारी ॥ सूतज
तिनसों बेधित ह्वैकै । ह्वै अतिपीड़ित इतउत ज्वैकै ॥ चढ़ि तुर-
की घोरेपर सादर । रणतजि भगो भगतजिमि कादर ॥ कर्णहि
जीति धनुषटंकारत । गरजत खरोरहो तहँभारत ॥ यह सुनि





वृद्धभूप दुखलहिकै । बूझत भयो शोचसों नहिकै ॥ संजय ई-
श्वर चाहतजोई । मिटत न कबहुँ होतहै सोई ॥ दोहा ॥ भीष्म
कर्ण समानजो सबजगको जेतार । कर्ण लहतसो भीमसों इ-
विधि हारिबहुबार ॥ अयुतनागको जासुतन बलतेहि भटसों
जूटि । हार्‍यो सूतज तबभिरो कौनबीर जयऊटि ॥ यह सुनिकै
संजय कह्यो तोमतको फलएहु । सहौताहि धरिधीरमति दोष
ईश्वरहि देहु ॥ निरखिपराजित कर्णकहँ तेहि गरजत लखि
तत्र । सहि न सके तौ पांचसुत गये भीमहोयत्र ॥ दुर्मुद दुर्धर
दुसहअरु दुर्मर्षण रणधीर । अरुदुर्जयये भिरतभे रचि शर
जाल गँभीर ॥ सोरठा ॥ भिरत भीमसों देखि तिनकहँ रथचढ़ि
कर्ण फिरि । हियोक्रोधसों भेखि भिरो भीम भटसोंगरजि ॥ तेहि
क्षण भीम अमान भूपति अति बिक्रम कियो । सबपर बरषत
बान काटे सबके सब बिशिख ॥ चौपाई ॥ कर्णहि आड़ि शरनके
जोरण । हनिपचीस शायक तन तोरण ॥ बधि सारथी तुरँगसब
तिनके । बधेतिन्हें जेमणिकुल दिनके ॥ बधि तो पांच सुतन रण-
चारी । गरजो भीम धनुषटंकारी ॥ आड़ि कर्णकहँ तिनकोबधि-
बो । लखिसब गुणे असधको सधिबो ॥ लखि राधेयग्लानिउर
आनो । कहो भीष्मको सतिकरिमानो ॥ गरजि पांचशर भीमहिं
हनिकै । फिरि मारे सत्तरि शर गनिकै ॥ कर्णहि मारि बाणषट
सोऊ । काट्यो धनुपलख्यो सब कोऊ ॥ तब राधेय और धनुग-
हिकै । बरषो बाणखरो रहुकाहिकै ॥ भीमकाटि सबशायक तासू ।
बध्योहयन अरु सूतहि आसू ॥ फेरि काटि धनुषहि दृढ़घायक ।
कर्णहि हनतभयो बहुशायक ॥ तब चढ़ि कर्ण और रथपाहीं ।
हन्यो गदाकहि बाचत नाहीं ॥ हनि बहुबाण काटि तेहिमगमें ।
गरजो भीम बिदित भट जगमें ॥ गदहि काटि परव्यूह बि-
दारण । भीमतजतभो बाण हजारण ॥ काटि सकल शर हनि
शर अगणित । हन्यो बीसशर सूतज भगणित ॥ हनि नव

बाण भीम भट दक्षिण । बेध्यो सूतज को भुजदक्षिण ॥ फेरि
गरजि अतिरिस सों शरसो । अगणित बाण कर्णपै बरसो ॥
दोहा ॥ तब सूतज अति बिकल ह्वै रहि न सकतभो तत्र । रण
तजि सादर जातभो शरन जातहो यत्र ॥ सुनि दुर्योधन भूप
को अनुशासन तब भूप । तुरित भीमसों भिरतभे तोसुतबीर
अनूप ॥ चित्रायुध उपचित्र अरु चित्रशरासनधीर । चारुचित्र
चित्राक्ष अरु चित्रबर्म रणधीर ॥ लरिसब तिनसों निमिषमें
एक एक शर मारि । बधि तिन सबकहँ भीमभट दीन्हों महिपै
डारि ॥ गिरत बायु बश अरुणसम निरखि तजत चषबारि ।
कर्ण भीमसों फिरि भिरो बरषत बाण प्रचारि ॥ सोरठा ॥ दोउ
बीर प्रचण्ड गरजि गरजि बरषे बिशिख । दोऊ धुनि कोदण्ड
काटि दिये अगणित बिशिख ॥ छत्तिस बाणकराल भीमहने
तन कर्णके । बाण पचास बिशाल कर्णभीमके तनहने ॥ तोमर ॥
भिदि उभय भट अवदात । ह्वै रुधिर पूरित गात ॥ अति
बीर दोऊ शुद्ध । तहँ कियो अद्भुत युद्ध ॥ भिरिमत्तद्विरदसमा-
न । करि परस्पर आह्वान ॥ ते उभयबीर बिशाल । रचिउभय
दिशि शर जाल ॥ फिरि गरजि गरजि प्रचारि । बहुबाणबाण-
नवारि ॥ अति कठिन धनुटंकारि । बहुबाण गातन मारि ॥ त-
जि दुहूंदिशि शरधार । करि दये अन्धाकार ॥ तहँ भीमअति-
शय कोपि । भेदेत कर्णहि गोपि ॥ तब बिकल कर्णहि देखि ।
तो तनय नृप अवरेखि ॥ तहँ दिये तुरित पठाय । भट पांच
सोदर भाय ॥ तेबीर सादर जाय । भेतजतशर समुदाय ॥ ल-
खि भीम तिनसों जूटि । निजदशा मनमें ऊटि ॥ हनिसातशर
दुखदाय । बधिदिये तिनहिं गिराय ॥ सो निरखिसबसरदार
इत किये हाहाकार ॥ तकि हनत कर्णहि बान । भोबधत तिन-
हिं अमान ॥ यह देखि सबनरनाह । जाकि रहेगुणि मनमाह ॥
दोहा ॥ शत्रुंजय अरु शत्रुसह दृढ़विचित्र रणधीर । चित्रसेन





[चित्र]ायुधौ अरु बिकर्ण बर बीर ॥ यकतिस भ्रातन को मरण
[दे]खि तेहि दिन दुखपाय । दुर्योधन गुणि बिदुरको बचनरह्यो
[पछ]ताय ॥ समुझि समुझि अपराध निज शोकाकुलह्वै भूप ।
[अश्रु]धार चषसों तजत मोहिं भयो गतरूप ॥ सोरठा ॥ कर्णबीर
[बि]काल बरषो शायक भीमपहँ । भीम सुबीर कराल बरषो
[शा]यक कर्णपहँ ॥ चौपाई ॥ हे क्षितिपालकछू कहिजातन । भीम
[कर्ण]के शरके घातन ॥ अगणित हय गजभट समदलमें । घा-
[यल] भये मरेतेहि पलमें ॥ सोलखि अगणित योधा डरिकै । गये
[भा]जि हाहाकरिकै ॥ दोऊ बिदित बीर बलवाना । दोउधनुर्द्धर
[बीर] अमाना ॥ गरजि गरजि बढ़ि बढ़ि थिरि थिरिकै । दपटि
[दप]टि दड़िदड़ि फिरि थिरिकै ॥ अबनहिं बचत भागुमतिभनि
[हनि]ते । अगणित बाण परस्पर हनिहनि ॥ भिदिभिदि भरे रुधिर
[सु]शोभित । भये उभयभट अनघ अक्षोभित ॥ सबदिशिजाल
[बा]नके पूरे । अगणित छत्र धनुष ध्वजतूरे ॥ काटि असंख्यन
[श]रगण सों । अगणित बाणहने भरि प्रणसों ॥ कुण्डल
[युत] कर्णकी श्रुतिको । काट्योभीमसेन अति द्युतिको ॥ कुण्डल
[बि]दिं भीमभट हँसिकैं । तजतभयो दश शायक कसिकैं ॥ ते
[शर] बाण भाल मधि लगिलागि । धसि धसि लसे रुधिर सों
[पा]गि ॥ तेहिक्षण सूतज मुर्छित ह्वैकै । ध्वजसों लागिरहो
[सो]ग्वैकै ॥ तुरितहि चेति क्रोधसों पागो । कर्ण कराल काल
[सम] जागो ॥ घनसम गरजि बाण बन बरसो । चहिअरिरबि-
[रा]हुसम गरसो ॥ तेहिक्षण भीमकाटि धनु ताको । गरजि
[शर]रस बरसों छाको ॥ दोहा ॥ तुरित कर्णधनु औरगहि करि
[अद्भ]ुत सन्धान । भीमसेन के सकल दिशि छाय देतभो बान ॥
[भी]म कर्ण तेहिक्षण किये अद्भुत बिक्रम भूप । पूरिदेतभोगगन
[ब]ाण भयानक रूप ॥ शरन शरनके भिरनसों नभमें कढ़त
[कृ]शान । जानिपरै मणिमय मनोतनो बिचित्र बितान ॥ सोरठा ॥

धनुटंकार कराल चलनि भिरानिसों शरनकी । अतिशय श
कराल मढ़त भयो तेहिक्षण तहां ॥ अति बरषनि शरजूह नि
खिभीमअरुकर्णकी।सुमनससुमनसमूह बरषे तिन्हैंप्रशंसित
चौपाई ॥ इमिमाचे भीषम संग्रामा । कर्णकियो तहँ अद्भुतकाम
हनि क्षुरप्र शायक रणचारी । काट्योतासु धनुष अतिभारी
फिरि बधि सब अश्वन हनि शायक । छत्रकेतु काट्योभटन
यक ॥ मारे पांच बाण तेहिक्षन में । बिदित बिशोक सूतके
में ॥ तजिअबाजि रथसों चलिपथपै । गोनृप युधामन्युके
पै ॥ तब अतिकोपि भीम अरिनासी । फेंकत भयोशक्तिति
तासी ॥ तेहि आवत लखिकर्ण अमाना । काटत भयोमारि
शबाना ॥ तब भटभीम चर्म असिलीन्हों । कर्ण काटि चर्म
युग कीन्हों ॥ तब असिफेंकिमारिसो सरुषा । काट्योसूतज
धनु परुषा ॥ तुरितहि करषि और धनु गहिकै । अब मतिभा
खरो रहुकहिकै ॥ अगणित शायक अति अनियारे । भीमसे
के तनमांधि मारे ॥ तब करि भीम क्रोधकी गुरुता । प्रगटक
बिक्रम की पुरुता ॥ हय गजरथ अर्जुन के काटे । परेरहे भी
मता ठाटे ॥ तहँ चलि रथ हय गज लैलै कै । डारतभयो
मन निरभय कै ॥ सोलखि कर्ण धनुर्द्धर आरज । करतभयोत
अद्भुत कारज ॥ मारिमारिअगणित शरमगमें । काटे सब की
बिक्रम अगमें ॥ दोहा ॥ तहां भीम अति क्रोधगहि करिमुष्टि
का प्रहार । बधन चाहि तेहि नहिं बध्यो करिकै पूर्ब बिचार
कर्णहिं बधिबेकी किये रहे प्रतिज्ञा पार्थ । तेहि पारथके बच
कहँ करिबो गुन्यो यथार्थ ॥ सोरठा ॥ अगणित तीक्षण बा
हन्यो भीमकहँ कर्णतहँ । ह्वै मुर्छित बलवान गिरो भूमिपै भी
तब ॥ चौपाई ॥ लखि भीमहिमुर्छित रणधीर । कूदि सुरथसे
कर्ण सुबीर ॥ मोहित परो निरायुध यत्र । होभट भीम जातभ
तत्र ॥ कुन्ती मांगेही बरपूर्ब । बधेहु न ममपुत्रन भटगूर्ब ॥ सो





समुझि पालनिज धर्म । बध्यो न ताहि धर्मबिदपर्म ॥ तासु
र्मं धनुष लगाय । खोदतभो अतिगर्ब बढ़ाय ॥ लागत
भीमअनखाय । कुपित सिंहसम उठो रिसाय ॥ बामपा-
धनुगहि तासु । मुष्टिक हन्यो शीशमें आसु ॥ हँसिकै कर्ण
तेहिकाल । नहिं तू युद्ध योगहे बाल ॥ भयोवृकोदर खाय
य । नहिंकर्त्तारणमें व्यवसाय॥ सादरबसौ बिपिनमेंजाय।
व्रत गहौ कन्दफलखाय ॥ नहिंममसम सुभटन के संग । हौ
लायक रणरंग ॥ सूत सुवनके सुनिये बैन । हँसिकै कह्यो
बलऐन ॥ कैयकबार आजुलहि हारि । निलजकहत इमि
बिसारि ॥ जोआपुहि जानत बलवान । तोकरु मल्ल युद्ध
ान ॥ यथाकीचकहि डार्यो मारि । तेहि बिधिबधिहौंतोहिं
रि॥ यहसुनि बूझि भीमकोभाव । रथचढ़ि तुरितकर्ण गहि
॥ रथहँकवाइ बेगसों जाय । भिरो धनंजयसो शर छाय॥
सेन तबगुणि मनमाहँ । चढ़ो सात्वकीके रथपाहँ ॥ सात्व-
भीम सुबीर अनूप । युधामन्यु उतमौजा भूप ॥ शर बरषत
त ममसैन । गये पार्थके पास सचैन ॥ दोहा ॥ कर्ण आरजुन
तहां कीन्ह्यो अद्भुत युद्ध । दोऊ धनुर्द्धर बिदितभट दोऊ
बिशुद्ध ॥ गरजि गरजि दुहुंदिशन सों दोऊ भयेकराल ।
दिशि दीन्हें छायशर दोऊबीर बिशाल ॥

तिश्रीद्रोणपर्बणिचतुर्थयामेभीमप्रवेशोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दोहा ॥ कर्ण भीमको युद्धसुनि यहिबिधि चौथेयाम । संजय
मृत भयो वृद्ध नृपति ह्वै क्षाम ॥ क्षणक्षणछीजत सैनमम
दाममहारि । दैवचहतजो सोकरत पुरुष पराक्रमटारि ॥
॥ तदनंतर भो जौन सो अब संजय शीघ्रकहु। सुनि संजय
मौन कहत भयो इमि भूपसों॥ चौपाई ॥ अर्जुनकर्ण बिदित
ारी । कीन्हो तहां युद्ध अतिभारी ॥ बहुबिधि सेतु शरन
टे। क्षणमेंबाण असंख्यन काटे ॥ बढ़ि बढ़िअगणितबाण

प्रचारे । अगणितबाण परस्पर मारे ॥ बज्रसमान बाण
भायो । पारथ कर्णहिं टेरिचलायो ॥ ताहि चलत लखि अ
त्थामा । काटिदियो हनिशर अभिरामा ॥ पार्थहि प्रबलजा
तेहि क्षनमें । टेरिगो अनत कर्णदुरि मनमें ॥ चौंसठि शा
अति अनियारे । अश्वत्थामहि पार्थ प्रहारे ॥ तब द्विज
सुत पीड़ित ह्वैकै । गजनमध्य दुरिगो भय ग्वैकै ॥ महार
पारथ तेहि पलमें । प्रलयकाल रोप्यो ममदलमें ॥ हय
भटन बधत रणधीरा । चलो कर्णपहँ सात्वकिबीरा ॥ सोल
निजसेनासों कढ़िकै । भिरो अलम्बुष भूपति बढ़िकै ॥ ते
बीर बिदित धनुधारी । अतिरण कियो प्रचारि प्रचारी ॥ म
बज्रसम शर अतिभारी । बध्योताहि सात्वकि रथचारी ॥ ब
अलम्बुषहि मारतसेना । चलोपार्थपहँ अरिदलजेना ॥ सोल
भूरिश्रवा रणरंगी । भिरो सात्वकीसों सहसंगी ॥ ते युग
कठिनरण करकश । किये अबाण अनेकन तरकश ॥ दोहा
दोऊमारे दुहुँनकहँ क्षणमहँ अगणित बान । दोऊकाटे दुहुँन
अगणित शर सबिधान ॥ फेरि फेरिरथ सकलदिशि टेरि
सहगर्ब । हेरि हेरि बर्षे बिशिख घेरि घेरि दिशि सर्ब ॥ का
काटि गहि गहि धनुष कहि कहि जियत न जात । दोऊ दो
नपै किये अबिरल शायक पात ॥ चौपाई ॥ दोऊबधि दोउन
घोरे । बधि सूतन रथके अँगतोरे ॥ दोऊ दुहुँन बिधनु
करिकै । तीक्षण खड्ग चर्मधरि धरिकै ॥ करत पैतरबढ़ि भि
भिरिकै । लरतभये थिरि थिरि फिरि फिरिकै ॥ दोऊ खड
युद्धबिधि सीखे । सब सुभटनके पहिले लीखे ॥ अद्भुत खड
युद्ध तहँकीन्हें । जो लखि सबभट बिस्मय लीन्हें ॥ असिश्र
चर्म दुहुँनके क्षणमें । भंगभये तेहिबिधिके रणमें ॥ तबतें उ
बीर बलभारे । भिरि भिरि मल्लयुद्ध बिस्तारे ॥ कर अरुच
शीशके घातन । भेतहँ शब्द तौन कहिजातन ॥ मत्त द्विरद





धा दोऊ । कीन्होयुद्ध लखो सबकोऊ ॥ जूटैं छुटैं जुटैंफिरि
टैं । दैदै ताल सिंहसम टूटैं ॥ झपटि लपटि गिरि उलटि
लटिकै । उठि उठि लरैं न टरु रटि रटिकै ॥ अतिशय समित
त्वकी ताही । भयो पछारत नृप जयचाही ॥ बलसों सिनि
वहि पछारी । उरमें हन्यो लात अबिचारी ॥ बामपाणिसों
हिकच तासू । दक्षिण करमें गहि असिआसू ॥ चह्यो सात्वकी
शिरकाटन । सो लखिकहो कृष्ण जय आटन ॥ पारथ सु-
सात्वकिहि करिकै । भूरिश्रवा बधत कच धरिकै ॥ दोहा ॥
रिग्रीव इतउत घुमरि अबलों बाचोजात । बेगितासु रक्षण
हु करि तीक्षणशरपात ॥ सो सुनि पारथ बिनुलखे तजिक्षु-
शरचण्ड । काटो भूरिश्रवाको दक्षिणभुजा उदण्ड ॥ रोला ॥
दक्षिण पाणि भूरिश्रवा कुरुकुलराय । सात्वकिहि तजि
र्थसों इमि कहतभो अनखाय ॥ अरे पांडव बिदित भटह्वै
ये कुत्सित कर्म । करब ऐसो क्षत्रियन कहँ सदा अनुचित
॥ कबहुँ ऐसो कर्मकुत्सितकियो नहिं कुरुबंश । रह्योऐसो
कुत्सित वृष्णिकुलके अंश ॥ करै किमि नहिं कर्मकुत्सित
पमंत्री जासु । करत सँग असतीनको निजुबुद्धि बिगरति
सु ॥ लरतहे हम औरसों तुमकियो ममभुज भंग । कियोतुम
कर्म लहि बसुदेव सुतको संग ॥ बचनयहसुनि कह्योपारथ
नो कुरुकुल चन्द । सात्वकी ममशिष्य अतिप्रिय सखा दा-
नन्द ॥ करत दुस्तर कर्म ममहित निकट पहुँचो आय ।
नगति लहितासु मरिबो कहोकिमि सहिजाय ॥ एक भटसों
त अगणित बीरधीर अमान । कहो इतअब रह्यो केहिथल
युद्ध बिधान ॥ युद्धमें ममसबल दक्षिणबाहु सात्वकिबीर ।
सु रक्षण कियोहम सो अनयनहिं ममतीर ॥ गुणेतुम जोभई
बिधिब्यर्थ तुमतेहि हेत । रुचतसो हौ कहत रिसबश भये
गत चेत ॥ पार्थके ये बचन सुनिकै भूपकरि अनुमान ।

बाम करसों भूमिपै तहँडासि अबिरल बान ॥ बैठितापै योग
बिधिसों ब्रह्ममो मनलाय । मूंदि नयनन ग्रीव नतकरि रह्यो
अचल सचाय ॥ देखिसो सब नृपति इतके महादुखसों पूरि
लगे निन्दय पार्थकहँ कहिकियो अनुचितभूरि ॥ कहो पारथ
कहततुम सब भूलि अपनो कर्म । बधोतुम अभिमन्यु कहँत
कियेकौन सधर्म ॥ भाषिइमि करिनृपन लज्जित कृष्ण पा
सचैन । भूप भूरिश्रवासों भेकहत ऐसेबैन ॥ धर्मके अरु भी
के समभूप तुमप्रिय मोहि । जाहु तनतजि स्वर्गकहँ पदपर
उत्तम जाहि ॥ दोहा ॥ इतनेमें उठि क्रोधबश सात्वकि गहि त
वारि । बधन चलोतेहि भूपकहँ संशय हियसों टारि ॥ तब उत
मौजा भीमअरु युधामन्यु अरु पार्थ । अरु नृप इतके ता
भे बरजत गुणि अयथार्थ ॥ सुन्यो न काहू को बचन भय
क्रोधबश बीर । काट्यो भूरिश्रवाको शिर सात्वकि रणधीर
सोरठा ॥ तेहिक्षण इतके सर्ब सुभटताहि निन्दत भये । सुम
यक्ष गन्धर्ब भये प्रशंसत भूपतिहि ॥ चौपाई ॥ बधितेहि नृप
सकलदिशि देखी । कहत भयो सात्वकि अतितेखी ॥ मतिब
मतिबधु मतिबधु याही । कहतभये जोतुमसबचाही ॥ धर्मशी
तुमनहिं यहलीन्हें । बधत बालकहि धर्मनचीन्हें ॥ अबतुम स
निजहानि निहारी । बरजत यथा धर्मपथ चारी ॥ हमकीन्हें
यहप्रण भाई । ममतन हनिहि चरण जो आई ॥ बधब ता
हम संशय टारी । होइजऊ वहमुनि ब्रतधारी ॥ इन मार्यो प
ममउर माहीं । याहिबधे मोहिंपातक नाहीं ॥ जेहिबिधि जा
मरण जेहि जनसों । देत बिरचि बिधिजेहि सुयतनसों ॥ हो
अवशिसो यह गुणिलेई । अबमति हमहिं दोषकछु देई ॥ य
सुनि भये मौन सबयोधा । फिरि बढ़िबढ़ि कीन्हों अवरोधा
माच्यो घोरयुद्ध तेहिपलमें । कटे असंख्यन भट ममदलमें
यहसुनि वृद्धभूप अनुमानी । कहत भये सुनुसंजय ज्ञानी





ोण कर्ण आदिक भट जनसों । गो न जीति जो ममसुत गन
ो ॥ सो किमिह्वै बिक्रमसों रीतो । गो इमि भूरिश्रवासों जी-
ो ॥ यहसुनि संजय नृपसों भाषो । सुनो जौन सुनिबो अभि-
ाषो ॥ यामें कछू पूर्बको कारण । है कहियतुसो संशयवारण ॥
हा ॥ रच्यो स्वयम्बर देवकी को देवक क्षितिपाल । जायतहां
हि सभामधि रथचढ़ि सिनि तेहिकाल ॥ करि साहस हरि
वकिहि निजरथपै बैठाय । हेत भूप बसुदेवके लै तेहि चले
ाय ॥ सोरठा ॥ सोमदत्त कै चण्ड तब ताकहँ आइतभयो ।
ऊ भट उद्दण्ड बाहु युद्ध कीन्हों तहां ॥ चौपाई ॥ दोय पहर
रि युद्ध बिशाल । ताहि पछार्‌यो सिनि क्षितिपाल ॥ चरण
बसम उरमांधि मारि । गह्यो केश करगहि तरवारि ॥ लखत
नेक नृपनके भूप । कियो न बोधकरि कृपाअनूप ॥ तेहि अ-
प बश आनि गलानि । सोमदत्त भूपति अनुमानि ॥ शङ्कर
ो कीन्हों अवराध । ह्वै प्रसन्न शिव सत्य अगाध ॥ कह्यो
ागु भूपति बरदान । तब इमि कह्यो भूप मतिमान ॥ मोहिं
ेउ सुत बलबुधि भौन । सिनिके सुतहि पछारै जौन ॥ लखत
ानके लहि अवकासु । मारै चरण हिये में तासु ॥ यह सुनि
हि तथास्तु त्रिपुरारि । भे अदृश्य दायक फलचारि ॥ तेहि
ाके प्रभाव यहि याम । सोमदत्तको सुत अभिराम ॥ जीत्यो
हि सुनो क्षितिरौन । नहिं तेहि जीतन लायक कौन ॥ यह
नि सो संशय बिलगाय । बूझतभयो वृद्ध क्षितिराय ॥ फिरि
मि भयो युद्ध सो सर्ब । पृथक् पृथक् कहु सुमति अखर्ब ॥
पतिसों सुनिकै ये बैन । कहतभयो संजय मतिऐन ॥ भूरि-
वा को नाश निहारि । बीर धनंजय धनुटंकारि ॥ बर्षतशर
दंत ममसैन । चलो जयद्रथ पहँ जगजैन ॥ दोहा ॥ बधि अ-
ोणित हय गज तुरँग सुभटनको समुदाय । पारथ सारिता रु-
रकी दई तहां उमँगाय ॥ इमि निजदल मर्दत निरखि तो

सुत भूभरतार । कर्ण शल्य कृप द्विजतनय अरुवृषसेन उदार ॥
सोरठा ॥ बर्षत बिशिख सगर्ब भिरतभये सब पार्थसों । घोरयु
तेहि पर्व होतभयो तेहिक्षण तहां ॥ चौपाई कर्णादिक करि क्रोध
अपारा । तजतभये अस्त्रनकी धारा ॥ काटि सकल आयुध
तेहि क्षनमें । पार्थ हने शर सबके तनमें ॥ कृप दशबाण पार्थ
कहँ हनिकै । कृष्णहि हन्यो सातशर गनिकै ॥ करि अतिबे
पार्थ भटनायक । सबके काटि असंख्यन शायक ॥ नव नवश
सबके तनमारे । अगणित भटन मारि महिडारे ॥ शरपचीस
अतिशय अभिरामा । हन्यो पार्थ कहँ अश्वत्थामा ॥ सातबा
वृषसेन प्रहारे । शल्य तीनिशर मारि प्रचारे ॥ घेरि सकल
दिशि सहित समाजा । हन्यो बीसशर तो सुतराजा ॥ सिंधु
सुभट रोषसों पूरे । धनु धुनिधुनि बरषे शररूरे ॥ अगणित
दिव्य अस्त्र सबडारे । दिव्य अस्त्रसों पार्थ निवारे ॥ व्यर्थ क
रत आयुध भटगनके । रुधिर बहावत सबके तनके ॥ सबके
व्यथित करत अरु डारत । चलो सिन्धुपतिपै भयभारत ॥
लखि कर्ण शरासन करषत । भिरो पार्थसों शायक बरषत
दशशर हन्यो पार्थ तेहि देखी । हन्यो तीनि शर सात्वकि ते
खी ॥ मारयो भीम तीनिशर चोखे । पार्थहने शरसात अनोखे
साठि साठि शायक अनियारे । कर्ण तिन्हैं हनि धनुटंकारे
दोहा ॥ अति बिक्रमकरि कर्णतहँ तीनि भटनसों तत्र । लरत
भयो घनसम गरजि बर्षि बारिसम पत्र ॥ कैयकशत शायक
हन्यो पार्थ कर्णके गात । भरो रुधिरसों कर्ण तहँ अनुपम भय
बिभात ॥ सोरठा ॥ कर्ण पचास सुबान अर्जुनके तन हनतभो
पारथबीर अमान काटिदियो धनुकर्णको ॥ चौपाई ॥ काटि क
को धनु भटपारथ । हनतभयो नवशर गुणि स्वारथ ॥ तौलि
कर्ण और धनु गहिकै । बरषो बिशिख खरोरहु कहिकै ॥ ति
कहँ पार्थ बर्षिबहुबाना । कियो वायुबश शलभसमाना ॥ सूत





के बधको प्रण धरिकै । पार्थ तज्यो शर योजित करिकै ॥ हनि
प्रशर अश्वत्थामा । काटिदयो सोशर अभिरामा ॥ सूतज
तिकर लाघव लीन्हे । ताहि शरनसों गोपित कीन्हे ॥ अर्जुन
नुधरके धुरनादित । कर्णहिं कियो शरन सों छादित ॥ दोऊ
चि शरपंजर ओपित । कीन्हे दुहुँन शरनसों गोपित ॥ दोऊ
हाक्रोधसों नहि नहि । अब मतिभागु खरोरहु कहि कहि ॥
अगणित दिव्यअस्त्र परिहरि हरि । कियो युद्ध अति बिक्रम
रि करि ॥ दोऊ दिव्यअस्त्र बहुडारे । दिव्य दिव्य अस्त्रनसों
रे ॥ मैं अर्जुन तू बचत न मोसों । मैंहौं कर्ण लेत जय तोसों ॥
मि कहिकहि दोऊधनुधारी । कीन्हो युद्धभयानक भारी ॥ सो
खिसुरगण दुहुँन सराहे । कहे न ऐसे धनुधरचाहे ॥ इबिधि
र्णकहँलरत निरेखी । कह्यो भटनसों नृपअवरेखी ॥ बढ़िबढ़ि
मसब युद्ध बिचक्षण । सादरकरहु कर्णकोरक्षण ॥ दोहा ॥ आजु
चे बिनु अर्जुनहिं फिरहि न कर्ण सुबीर । यह हमसों है कहि
यो सूततनय रणधीर ॥ इतने में पारथ सुभट पांचबाण बर
रि । बधि तुरँगन अरु सारथिहि दीन्हों महिपैडारि ॥ इबिधि
रथकरि कर्णकहँ हन्यो अनगिने बान । मोहितह्वै नहिं करि
क्यो सूतज युद्धबिधान ॥ सोरठा ॥ सोलखि द्विजसुत बीर लै
र्णहि निज सुरथपै । बर्षत अबिरल तीर भिरो पार्थ रणधीर
॥ चौपाई ॥ कृप वृषसेन शल्य तेहिक्षनमें । बहुशरहने पार्थ
के तनमें ॥ तिन्हैं पार्थ अगणित शरमारे । तेबहुबाण पार्थपहँ
रे ॥ बढ़ि बढ़ि इतके सुभट समूहा । घेरि अर्जुनहिकरि अ-
तिहूहा ॥ अस्तहोब सूरयको चाहत । गर्बित मोदसिन्धु अव-
गाहत ॥ शक्ति शरनकी बर्षाकीन्हे । सरथ ताहि गोपित करि
लीन्हे ॥ तेहिक्षण पार्थ सुभटह्वै दारुण । प्रगटित कियो अस्त्र
रबारुण ॥ सबके शस्त्र व्यर्थकरि तासों । पूरिसबहि भयभूरि
हासों ॥ सबके गातकियो हनिबाना । बरझिझ्झियाके कुम्भ

समाना ॥ अगणितमरैं गिरैं बहुघायल । भगैंअनेक हयनकी
चायल ॥ अगणित योधा धीरज धरिधरि । भिरैंजाय शरकी
झरि करिकरि ॥ बननिवासको दुख गुणिमनमें । चलोसिन्धु
पतिपै तेहिक्षनमें ॥ रथी गजी हयसादीरूरे । बढ़ि बढ़ि भिरैं
रोषसोंपूरे ॥ तोमरशक्ति शरनकीबर्षा । करैंगहे अतिशय उत
कर्षा ॥ तिनमधि लसो पार्थ तहँकैसे । केशरि द्विरद यूथमधि
जैसे ॥ दोहा ॥ बिबिधभांतिके दिब्यशर तजितजि पारथबीर
लसो दवानल सम दहत मम दलबन गम्भीर ॥ हयगजभट
रथध्वज धनुष रुण्डमुण्ड पग पानि । काटिअसंख्यन देतभो
रुधिर.धार मधिसानि ॥ सोरठा ॥ मारतण्ड समचण्ड भयोपार्थ
तेहिक्षण तहां । दलघन घेरि घमण्ड बेधत नृप गिरिपैचलो
चौपाई ॥ कृप वृषसेन कर्णधनुधारी । अरुअश्वत्थामा रणचारी
दुर्योधन नृप सहित समाजा । मातुल मद्रदशको राजा ॥सहि
सहि पारथके शररूरे । आड़त भये क्रोधसोंपूरे ॥ रहि तिनके
आड़े तेहिक्षनमें । सिन्धु अधीश नृपति गुणि मनमें ॥ आठ
बाण घोरन कहँ हनिकै । कृष्णहिहन्यो तीनिशर गनिकै ॥ सो
लखि पार्थमारि शरआसू । दीन्हेंकाटि केतु रथतासू ॥ बधि
सूतहि यमलोक पठाये । अबिरल बाण भूपपहँ छाये ॥ लखि
षटरथी अनर पहिंचाने । कीन्हों अतिबिक्रम मनमाने ॥ अ
बिरल सेतु शरनके ठाटे । अगणित बाण पार्थकेकाटे ॥ सोल
खि कृष्णचन्द्र अनुमानी । पारथसों बोले हितबानी ॥ ये षट
रथी जियत हैं जौलौं । भूपहि बधन न पैहौतौलौं ॥ थोरोरहो
द्योस अबयाते । सोगुणिकरौ लहौ जयजाते ॥ रबिहि करतहम
तमसों छादित । निशिगुणिह्वैहैं शत्रुप्रमादित ॥ तबलहि घात
बधेहु तेहि भूपहि । निशिलखि गुणेहु न सुपन अनूपहि ॥इमि
कहि कृष्ण योगबिधिकीन्हें । तममधि रबि गोपित करिदीन्हें
सो लखिके इतके सबयोधा । ह्वैमोदिततत्यागे अवरोधा ॥दोहा





बिअथयो अब पार्थनिज जरिहै चिताबनाय । यहगुणि सब
भट सुचितह्वै निरखन लगेसचाय ॥ नृपति जयद्रथ ब्यूहके
बाहर कढ़िभय त्यागि । लखिसंध्या पार्थहि लखन लगो मोद
सों पागि ॥ सोरठा ॥ सोलखि कृष्ण सचैन पारथसों फिरिकहत
भो । अब न चूकु जग जैन शीघ्र मारु यहिभूपतिहि ॥जयकरी॥
यहि नृपके बधिबेको डौर । सुनु हमसों हेभट शिरमौर ॥ याको
भयो जन्म जेहिकाल । भो तेहिक्षण नभ शब्द रसाल ॥ हेनृप
वृद्धक्षेत्र तोपुत्र । ह्वैहै तो अन्वयके सुत्र ॥ दातायशी शूरमति-
मान । अतिधनुधर ह्वैहै बलवान ॥ पै याको कोऊ रणमाहँ ।
काटिशीश डारिहि महिपाहँ ॥ वृद्धक्षेत्र सुनि यह नभबैन । पुत्र
मरण गुणिभयो अचैन ॥ तबतप बलसों धीरजआनि । कह्यो
बन्धुनसों अनुमानि ॥ यह ममसुतको शिर अभिराम । जो
डारिहि महिपै जेहियाम ॥ ताहीठौर कठिनशिरतासु । शतधा
फटिहि मरहि सोआसु ॥ ऐसोबचन भाषि वहभूप । लगोतप-
आकरन अनूप ॥ अब स्यमन्तपंचकके पार । हैतप चरतभूमि
भरतार ॥ शीघ्रकाटि याको उतमंग । डारिदेहु वाकेउतसंग ॥
बचिहौ तुम हे मुदभौन । मरिहिडारि महिपै शिरतौन ॥ यह
गुनि दिब्यअस्त्र सन्धानि । मार्‍योपार्थ तासुबधजानि ॥ बज्र
सदृश सो शरछबि ठाटि । शीशजयद्रथ नृपकोकाटि ॥ तिमि
लै चलो बाज अवदात । जिमितरुसों पक्षिहि लैजात ॥ दोहा॥
बिक्रमसों अगणित बिशिख तेहि सुशीशमेंमारि । वृद्धक्षेत्रके
गोदमें देत भयो सोडारि ॥ वृद्धक्षेत्र संध्याकरत रहो ताहिक्षण
ईश । गिरो गोदमें तब झझकि उठत भयो अवनीश ॥ तासु
गोदसों भूमिपै गिरो शीश तेहिहेत । फटो शीशनृपको मरो नृप
तप तेज निकेत ॥ बधि जयद्रथहि पार्थ लहि प्रण सागर को
पार । शंख बजावतभो तदनु गरजो भीम उदार ॥ सो सुनि
जान्यो धर्मनृप बध्यो सैन्य वहि पार्थ । बजवायो जय दुन्दुभी

सिद्धि जानिकै स्वार्थ ॥ सोरठा ॥ आठ क्षौहिणी सैन तेहि दिन
लों तहँ बधिगयो । तो मतिअवगुण ऐन को यहफल प्रगटित
भयो ॥ महिखरी ॥ सुनिबध जयद्रथ नृपतिको धृतराष्ट्रनृप अति
दुखमये । इमि कहे नृप बधिगयो जब ममसुभट कैसे तबभये॥
सुनि कहे संजय मरो नृप तब द्रोणसुत कृप रिसभरे । भिरि
पार्थसों करि हस्तलाघव घने शरपंजर करे ॥ तहँ पार्थरचि
शरसेतु क्षणमें काटि तिनके शरघने । भो हनत सबके गातबहु
नाराच अति तीक्षण बने ॥ शर बज्रसम अतिघोर कृपकेहिये
मधि मारत भयो । कृप गिरे रथपै मृतकसम तबसूत रथलै
कढ़िगयो ॥ दोहा ॥ मृतक सदृश कृपकहँ निरखि पारथ आनि
गलानि । क्षात्रधर्म कहँ धिक्कहो अति दुरयश अनुमानि॥
अतिखेदित पार्थहि निरखि सूतजधनुटंकारि । रथ बढ़ाइकै
चलतभो शरपंजर बिस्तारि ॥ लखि सात्वकि टेरतभयो इतै
आउ कितजात । सुनि सात्यकिपहँ चलतभो कर्णबीरअवदा-
त ॥ सोरठा ॥ यहसुनि वृद्धमहीप कह्यो बिरथ ह्वै सात्वकी
कहँ रथलह्यो समीप जापै चढ़ि फिरि लरतभो ॥ चौपाई ॥ यह
सुनि संजय नृपसों भाखो । पहिले कृष्ण यतनकरिराखो ॥ जब
सात्वकिहि बिरथ लखि पाये । तब अमरष युतशंख बजाये ॥
दारुकसूत शब्दसो सुनिकै । कृष्णचन्द्रको शासन गुनिकै॥
गरुड़ केतुरथ सादर ल्यायो । सोरथलखि सात्वकि छबिछायो॥
चढ़ोपाइ प्रभुको अनुशासन । लगो शरनसों ममदल नाशा-
न ॥ नृपति जयद्रथके बधऊपर । भिरे कर्ण सात्वकि रण भूप-
र ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा । हैं सात्वकि सँग रक्षणकाजा॥
सात्वकि कर्ण बिक्रमी चीन्हों । अद्भुत युद्धभूपतहँ कीन्हों॥ अ-
बिरल सेतु शरनके ठाटे । अगणित अस्त्र अस्त्रसों काटे॥ अ-
गणितशर गातनमें हनि हनि । अब मतिभागु खरोरहु भनि
भनि ॥ सब दिशि चक्रसदृश फिरिफिरिकै । तजे दिव्यआयुध





थिरिथिरिकै ॥ दिव्यअस्त्र दोउनके दोऊ । दूयेवारि निरखेसब
ोऊ ॥ सिंह सिंह गजगज भिरि जैसे । लरैं लरेतहँ युगभट
से ॥ तहँ दोऊकहँ लरिबो देखी । किये प्रशंसा सुमनबरेखी॥
हँ सात्वकि बिक्रम बिस्तारे । अगणितबाण कर्णकहँ मारे ॥
ति क्षुरप्र शायक अतिचोखो । काटतभयो शरासन नोखो ॥
हा ॥ हति सूतहि घोरन बध्यो केतुकाटि हनिबान । बहु शा-
क कर्णहिं हन्यो सात्वकि बीरअमान ॥ कर्णहिं बधिबेकीरह्यो
िये प्रतिज्ञापार्थ । सोगुणि कर्णहिं नहिं बध्यो सात्वकि गुणो
पार्थ ॥ तेहिक्षण हाहाकारभो ममदलमें सो देखि । दुर्योधन
सुरथपै गयो कर्ण अवरेखि ॥ सोरठा ॥ तब दुःशासनआदि
ासुत सात्वकि सों अभिरि । सब दिशि घेरिप्रमादि बर्षतभो
अविरल बिशिख ॥ चौपाई ॥ लरितिनसों अति रिसगहि मन
। सात्वकि बिरथ बिधनुकरि क्षनमें ॥ समुझि वृकोदर को
ण पूरे । बध्यो नहीं तजि दयो अधूरे ॥ सुनि धृतराष्ट्र शो-
सों नहिकै । फिरि बूझतभे धीरज गहिकै ॥ कृष्णचन्द्रके
ही रथपै । रहि सात्वकि बिचरो रणपथपै ॥ कै फिरि चढ़ो
और रथ गहिकै । सो समुझाउ सूतसुत कहिकै॥ संजयकह्यो
नो महित्राता । अति प्रवीण दारुकको भ्राता ॥ सुरथ सकल
आयुधसों भारो । सिंहकेतु युत सरस सवारो ॥ परम बेगसों
हँ लैआयो । चढ़ि तापै सात्वकि भट गायो ॥ अगणित हय
ज भट बधिडार्यो । प्रलयकाल ममदलमधि पार्यो ॥ तिमि
तजको सूत प्रवीना । आयो तहँले सुरथ नवीना ॥ चढ़ितापै
टकर्ण बिचक्षण । करतभयो निजदलको रक्षण ॥ भीमसेन
ति अमरष लीन्हे । पारथसों सम्भाषण कीन्हे ॥ कइकबार
म हनि शर चीन्हें । कर्णहिं बिरथ बिधनु करिदीन्हें ॥ भावी
राजब सूतज हमकहँ । बिरथ कियो तब गर्वितह्वै तहँ ॥ बहु
वचन कहतभोजाते । दहतहृदय ममशोच महाते ॥ जातहोय

हियो मम शीतल । सोकरि यशसों भरहु महीतल ॥ दोहा ॥ यह
सुनि भाष्यो कर्णसों पारथबीर उदार । देखत सबकेभीम तोहि
बिरथकियो बहुबार ॥ भीम न अनुचित कछुकह्यो जबतू जीत्यो
मूढ़ । तबभीमाहिं बहु दुर्बचनभाषे गर्बारूढ़ ॥ सोरठा ॥ तू अधर्म
करतार तोहिंनडरपरलोकको । करिअधर्म उपचार बधवायो अ-
भिमन्युकहँ ॥ बसुकला ॥ बिनुरहेमोहि । तुवदावजोहि ॥ ममसुतहि
पाय । दीन्हों बधाय ॥ मैंकहतटेरि । तुव लखतघेरि ॥ बलबुद्धि
भौन । तौतनयजौन ॥ तेहिबाणमारि । बधिहौं प्रचारि ॥ अति
भयोघोर । सुनि प्रण कठोर ॥ लहि दशापोच । इतबढ़ोशोच ॥
तब भयो अस्त । दिनकर प्रशस्त ॥ दोहा ॥ पारथसों केशवक
हो इमि यहि दलमें आय । जिमिपाये तुम सुजय तिमि सकै
और को पाय ॥ सुनि पारथ प्रभुसोंकह्यो तुव अनुकम्पापाय ।
हम पायो इमि सुजय नहिं ममबल बुद्धिउपाय ॥ सोरठा ॥ सुनि
केशव मुसकाय समुद हांकिरथ बेगसों । लखत मृतकसमुदाय
आये धर्म महीपपहँ ॥ लखि धर्महियहुराय कहोपाय तोभाग्य
बल । परसेनामधिजाय पार्थ जयद्रथ कहँ बध्यो ॥ तोमर ॥ सुनि
कृष्णके ये बैन । नृप धर्म लहि अतिचैन ॥ तकि उतरि रथसों
धाय । मिलि कृष्णसों लपटाय ॥ भरि मोद जलसों नैन ।
इमि कहे हे मुदऐन ॥ सो होत बिस्वेबीश । जो चहत तुमज-
गदीश ॥ तुम रचत जग बहुरंग । तुम करतपालनभंग ॥ सब
अचरचर सबलोक । जे चरतश्रुति चषओक ॥ तो बिशदमा-
यासर्ब । इमि कहत सुमति अखर्ब ॥ महि सरित सागरशैल ।
शशि सूर नभ दिशि गैल ॥ ते सकल तो प्रति अंग । नितर-
हत हैं तो संग ॥ हैं जिते खिन्न अखिन्न । नहिं एक तुम सों
भिन्न ॥ नहिं बारिसों कछुऔर । जिमि लहरिसों तेहि तौर ॥
जिमि कनक भूषण भेद । तिमि कहत सब श्रुतिवेद ॥ तिहिस-
मुझि योगी जौन । तकिरहत तुमकहँ तौन ॥ मिलिजात तुम





हँ क्षिप्र । यह कहत ज्ञानीविप्र ॥ जिमि बिनाबायु बिकार ।
हिं लहरिको अधिकार ॥ जिमिनशै भूषण साखि । मिरिजाल
नकै भाखि ॥ दोहा ॥ इमि अस्तुतिकरि कृष्णसों कह्यो युधि-
रभूप । तुव अनुकम्पासोंलह्यो पारथ सुजयअनूप ॥ जाहि
तावन हेतु इमि बसत संगतुम तात । सोजीतै सबलोककहँ
हाकुरुनकी बात ॥ इमिप्रभुसों कहि पार्थ सों मिले पुलकसों
रि । सात्वकिसों अरु भीमसों मिले मोदलहि भूरि ॥ सोरठा ॥
मन्यु क्षितिपाल सों मिलि उतमौजाहि मिले । कहि कहि
न रसाल दूरि कियेश्रम खेदसब ॥ चौपाई ॥ नृपति जयद्रथ
बधदेखी । नृप दुर्योधन अनरथ लेखी ॥ तजत चषनसों
तकी धारा । भरो शोच दुखगहे अपारा ॥ बिना दृशन के
हिसमदीना । मरेजयद्रथकेह्वैक्षीना ॥ ऊबिउसांसलेतअति
तुर । गयो द्रोणके ढिगनृपचातुर ॥ तहां शोचसों हीरोदहि
हि । पार्थ भीमके बिक्रम कहिकहि ॥ अरु सात्वकिको बिक्रम
रो । कहतभयो अमरष सों पूरो ॥ तुमहिंजीति ये सब दृढ़
यक । बधत असंख्यन भट नरनायक ॥ षटयोजन ममदल
धि धसिकै । द्विरदयूथ मधि हरिसम लसिकै ॥ व्यूहभेदिप्रण
यो यथारथ । बधि जयद्रथहि योधा पारथ ॥ रक्षण करि न
के भट तेऊ । गणेरहे अतिरथमें जेऊ ॥ हम अति आशा
की राखत । रहे रहे सो सब थरभाखत ॥ कर्ण भीम कहँ
नुचित भाख्यो । तहँ हम मान कर्णको राख्यो ॥ जीत्योता-
सात्वकी क्षनमें । लखि गलानि उपजी मममनमें ॥ सहित
सुत सहित समाजा । मम हित बधिगे अगणित राजा ॥
कर्म कीन्हों हम जैसो । लहो पापको सागर तैसो ॥ दोहा ॥
म भरोसो आपको मोकहँ सदा अचार्य । सो तुम अर्जुन
कृपा करि न करत ममकार्य ॥ भूपतिके ये बचनसुनिकह्यो
अनखाय । बाक शरनसों भूपकत घालत ममउरघाय ॥

शकुनि कर्णको मंत्रसुनि कीन्हें अनुचितकर्म । द्रुपदसुता सों
निजसभा मधिजो किये अधर्म ॥ सोरठा ॥ बिदुर कहे जे बैन
नीति रीति हित धर्ममय । तुम प्रमादके ऐन सुनेन तहिदीन्हें
निदरि ॥ अब ताको फल जौन सो सबप्रगटित होतहै । शोच
करत हौ कौन दैवचहत जो सो करत ॥ रोला ॥ लरो एकइस
दिवस जो भृगुरामसों प्रणधारि । लखत सबके पार्थता कहँ
दियो महिपै डारि ॥ मारि द्विरदहि बधत भो भगदत्तकहँ जो
बीर । बधे अगणित नृपनकहँ जे गणे भट रणधीर ॥ पार्थ पै
करिकृपा इतहम दयोदलमधिजान । रहे अगणित बीरमधिमें
गणे बीर अमान ॥ कर्णकृप वृषसेन ममसुत शल्य सुभट अ
नेक । आपु हेतहँ मर्दि सबदल गयोपारथ एक ॥ बधे कतनहिं
ताहि कतनहिं लये गहि सहचेत । बधन दीन्हें सिंधुपति कहँ
कहो सो केहि हेत ॥ जानि बिक्रम पार्थको नृप हमाहिं लावत
दोस । शोचिलीन्हों पूर्व नाहिं अब करत हौ अफसोस ॥ बिप्र
को नहिं कर्म लरिबो लरत को द्विजऔर । गह्यो हमपर धर्म
ताको लहतफल यहिठौर ॥ भूमिपति तौ बाकशरसों बिदित
हम यहिकाल । पैठि परदल मध्यबल मितकरब रणबिकरा
ल ॥ आजु रातिहु युद्ध करिबो चहतहम हे भूप । किहेहु तुम
निज सैन रक्षण सबहुकरि जेहिरूप ॥ द्रोणके सुनि बचन
भूपति कर्णके ढिगजाय । गरोगद्‌गद करें ऐसेकहे शोचबढ़ाय ॥
आजुलौं बसुदेव सुतकी पार्थपाय सहाय । कियो अद्भुत कर्म
जैसो तौन नाहिं कहिजाय ॥ द्रोण आदिक उद्भटन कहँ जीति
रचिशरसेत । लखत सबके सिन्धुपति कहँ बध्यो जय यश
हेत ॥ लखे अगणित द्विरद हय भट द्विरदके समुदाय । बधे
पारथ बीरके महिपरे लसत अचाय ॥ पार्थ पै करिकृपा दीन्ही
राह द्रोणाचार्य्य । नतरु किमि इतआइ पारथ करतऐसो का
र्य्य ॥ भूपके ये बचन सुनिकै कह्यो कर्ण बिचारि । द्रोणकोमति





ोष दीजै भूप हानि निहारि ॥ तरुण पारथ कृष्णसारथिदिव्य
य तूणीर । दिव्य धनुगाण्डीव किमि जयलहै नाहिं वहबीर ॥
हा ॥ यथा पराक्रम लरत द्विज तो जयहेत बिचारि । अवशि
ति होनी नृपति सकै न कोऊ टारि ॥ करोयुद्ध प्रारब्ध गुणि
रि सबसंशयदूरि । यहसुनि नृपपर सैनपहँ चलोक्रोधसोंपूरि ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिजयद्रथबधोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥
दोहा ॥ द्रोणपर्व चौथे दिवस लहि संध्या प्रणरोपि । सिन्धु
तिहि पारथबध्योसो लखि अतिशयकोपि ॥ दुर्योधननृपकर्ण
रु सूतज सों बतिआय । सदल पाण्डु दलपहँ चलो बहु
दुभि बजवाय ॥ चौपाई ॥ दुहूंओर के योधाक्रूरे । बढ़ि बढ़ि
हाक्रोध सों पूरे ॥ कहि कहि नाम प्रचारि प्रचारी । लागेक-
न युद्ध अतिभारी ॥ तोमर शक्ति भल्ल अनियारे । बाणपर-
रपट्टिशमारे ॥ लगेदुहूंदिशिसों शर डारन । मारु मारु धरु
ारु पुकारन ॥ दुर्योधन भूपति तेहि क्षनमें । धसि पाण्डव दल
गुणि मनमें ॥ अति बिक्रम कीन्हों हेराजा । बध्यो असंख्यन
न समाजा ॥ निशिमें घोरयुद्ध तहँमाच्यो । मानहु कालकोप
रिनाच्यो ॥ तोसुत मरद्यो परदलतैसे । मत्तद्विरद नलिनीवन
से ॥ दुर्योधनसों मर्दित ह्वैकै । परदलभगो भीतिसों ग्वैकै ॥
लखिकै भीमादिकयोधा । बढ़िताको कीन्हों अबरोधा ॥ भीमहि
प्रबाणदशमारयो । षटशर माद्रीसुतनप्रहारयो ॥ द्रुपदबिराट-
हि षटशर हनिकै । हन्यो शिखण्डिहि शतशरगनिकै ॥ धृष्टद्युम्न
हँ सत्तरि शायक । हन्यो क्रोधकरि कुरुकुलनायक । पांच पांच
ायक अनियारे । सिगरे द्रौपदेय पहँडारे ॥ पांचबाण सात्वत
हँ दीन्हों । बेधिघटोत्कच कहँ मुदलीन्हों ॥ धर्महि हन्यो
ात शर चोखे । औरन बहुशर हन्यो अनोखे ॥ दोहा ॥ नृपति
ुधिष्ठिर कोपितब दीन्हधनुष टंकारि । दुर्योधन नृपसों भिरो
ढिग आउप्रचारि ॥ दोऊभ्राता भिरितहां कीन्होंयुद्धउदण्ड ।

भुजदण्डन करिचपल धरि मण्डल सम कोदण्ड ॥ सोरठा ॥
निजजय यशके हेत महित्राता आताउभय। रचे घने शरसेत
काटि दये अगणित बिशिख ॥ चौपाई ॥ दुर्योधन क्षितिपति धनु
धारी। दशशर धर्महि हने प्रचारी॥ काटि भूपके धनुमजबूतहि
हन्यो प्रचारि तीनि शर सूतहि ॥ चारिबाण तुरगनके तनमें
हनिध्वज काटि दयो तेहि क्षनमें ॥ धर्मभूप अति रिससों न
हिकै। तुरतहि और शरासन गहिकै ॥ अब थिररहुइमि कहि
अति तुरमें। मार्यो दुर्योधन के उरमें॥ लगे बाण अतिदुखसों
ग्वैकै। परो भूमिपति मुर्छित ह्वैकै ॥ हाहामरो भूप दुर्योधन।
कहि कहिभट कीन्हों अवरोधन ॥ दुर्योधन कहँ मुर्छित देखी।
द्रोण महाअनरथ अवरेखी ॥ शोणितकी सरिता अतिबलसों
प्रगटकियो पाण्डवके दलसों ॥ चेति भूप धनुगहि उठि हेर्यो।
अबमति भागु खरोरहु टेर्यो। इतउतके योधा रणचारी। त्यागि
शङ्क निजमरण बिचारी ॥ भिरि भिरि जययशको प्रण लीन्हें
अतिशय घोरयुद्ध तहँ कीन्हें ॥ मुद्गरगदा शक्ति असिबाना।
भल्ल परस्वध आयुधनाना ॥ नभ समपूरिदये सबथलमें। मा-
च्यो घोरशब्द दुहुंदलमें ॥ भो अति तुमुल युद्धतेहि निशिमें।
मरे असंख्यन भटदुहुंदिशिमें ॥ मार्यो मारु मारु धुनि छाई।
बहीरुधिरकी नदी सोहाई ॥ दोहा ॥ तारागण सहलसत भो यथा
गगन अभिराम। तिमिभूषण मणिशरन सों लसी भूमि तेहि
याम॥ तेहिक्षण परदल मधिलसोद्रोणाचारयबीर। जैसे नीरस
तरुन मधि बिचरत ज्वलन अधीर ॥ हयगज रथपैदर सुभट
जे भेसम्मुख तासु॥ तेसब बेधित गाततजिगये कालपुरआसु॥
सोरठा ॥ बध्यो द्रोण तेहि काल कैकेयन के सुवनबहु। धृष्टद्युम्न
को बाल बध्योमारि शर बज्रसम ॥ चौपाई ॥ इमिदलमर्दतद्रोण
हि देखी। भिरत भयो शिविभूपति तेखी ॥ शिविहि द्रोणदश
शायक मारे। द्रोणहि शिविशर तीसप्रहारे॥ मारिबज्रसम शर





जबूतहि। नृपभो बधत द्रोणकेसूतहि ॥ तबहिं द्रोणकरला-
व अतिकै। नृपके सूत तुरँग सब हतिकै ॥ अर्द्धचन्द्र समशर
हिडार्यो। मारिशीश शिविनृपको कार्यो ॥ तौलगि सूतसु
ीर अकादर। चढ़ो द्रोणके रथपर सादर ॥ इमिजेगे द्विजके
म्मुखमें। ते मनुपरे कालके मुखमें॥ नृपकलिंगपति को सुत
ोधा। भीमसेन कहँ लखि अतिक्रोधा॥ शायक पांचभीमकहँ
निकै। मारे फेरिसातशर गनिकै ॥ पितुको मरण समुझिअ-
ोखो। सूतहि हन्यो तीनिशर चोखो ॥ रथसों कूदि भीम
गरजो। रुको न भूप तनय को बरजो॥ मारतभयो बज्र
समूका। मरोभूपसुत लखि ह्वै मूका ॥ तबध्रुवबीर कर्ण को
ाई। भिरो भीमसों अतिअनखाई॥ भीमसेन तेहिदेखिदपटि
तासु सुरथपै जाइझपटिकै॥ मूकामारिबधतभोताही। भगे
कटकेभटतेहिचाही ॥ तब जयरात भूपकेरथपै। गयोसिंहसम
सिकेपथपै ॥ दोहा ॥ गरजिमारि करतलदुसह बधतभयोफिरि
हि। कर्णकोपि तबभीमपहँ शक्तिचलायोचाहि॥ तुरितभीमसो
क्तिगहि तज्योकर्णपै फेरि। बाणमारि तेहि बीचही कार्योसौं-
त हेरि ॥ ऐसे दुस्तर कर्मकरि पाण्डवभीम अमान। बहुरि
य निज सुरथपै बरषनलागो बान ॥ सोरठा ॥ सो लखिकै
धामतो सुत दुर्मदनामजो। तजत शरनकेदाम भिरो भीम
गरजिकै ॥ पज्झटी ॥ करिपाणि लाघव रथबढ़ाय। सोभीम
शर दयोछाय ॥ हँसि भीमताकेहयन मारि। अरु सारथिहि
दयोडारि ॥ तोतनय तब निजसुरथत्यागि। दुष्कर्मकेढिग
भागि ॥ युगबन्धुतेहै एकठौर। बहुबाण बरषतभेसडौर ॥
कूदिरथते भीमधाय। दुष्कर्मके रथपाहँजाय ॥ करिपाद
सों रथहि चूर्ण। हनिमूक तिनकहँ बध्योतूर्ण ॥ तेहिकाल
धुनि महान। ममओरभो अनरथ बिधान ॥ गहिभीति
भटसमस्त। कर्णादिकी द्युतिभई अस्त ॥ दोहा ॥ नृपति

युधिष्ठिर आदिउत सिगरेभट समुदाय। कियो प्रशंसाभीमकी
महा मोदसोंछाय॥ सोमदत्त भूपाल तहँ लहि सात्वकिहि स
मीप। पुत्रबधनके क्रोधबश कहतभयो कुलदीप॥ सोरठा ॥रेशठ
सात्वकि मूढ़तजि सुधर्म क्षत्रियनको। तस्करकर्म अगूढ़ किये
गर्बगहिनाचतू॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनुबिनु भुजरण तजिकै
नतकरि ग्रीव योगबिधि सजिकै॥ बैठिरहोममसुततेहिनाहक
बध्यो मूढ़ तू अघको गाहक॥ ताते तोहिंमारि यहि निशिमें
करिहौं प्रकट कीर्ति सबदिशिमें॥ कृष्ण पार्थके बिना बचाये
जो न बधौं बिनु बचिकै आये॥ तौ मैं परौं कुरौरौ माहीं। पार्थ
बचावै तोबशनाहीं॥ यह सुनिकै सात्वकि रणचारी। सोमदत्त
सों कह्यो प्रचारी॥ नहिं कौरव दलमें असकोई। मोहिं लगै
डर जाकहँ जोई॥ शपथकृष्णके पदकी करिकै। सबहि सुना
कहत प्रण धरिकै॥ जो न भागिजैहै रण तजिकै। तौ बधिहौं
मैं तोहिं गरजिकै॥ उभय बीरते तहँ इमि कहिकहि। बर्षन
लगे बाण रिस गहिगहि॥ दुर्योधन भूपति तेहिक्षनमें। सह
सन रथिन सहितगुणि मनमें॥ घेरिसोम दत्तहि ह्वै ठाढ़ो।
रक्षतभयो यतनकरि गाढ़ो॥ लै अगणित हयसादी योधा।
कीन्हों शकुनिबीर अवरोधा॥ सो लखि धृष्टद्युम्न अनखाई।
तिनसों भिरो सैनसह जाई। तहां उभय दिशिके भट गण
सों। माचो घोरयुद्ध अतिप्रण सों॥ मथतासिन्धु प्रगटी धुनि
जैसी। तेहिथर मढ़तभई धुनितैसी॥ दोहा॥ सोमदत्त नृपहनत
भो सात्वकिकहँ नवबान। भूपहि नवशर हनतभो सात्वकिबीर
अमान॥ तिनसोंबेधित ह्वै नृपति रथपैचलो अचेत। रथचला
तबदूरिगो सूत सुबुद्धिनिकेत॥ सोरठा॥ भूपहिमुर्च्छित देखिद्रोण
सात्वकी पहँचलो। लखि पांडव अवरेखि बाढ़िसरोष आड़त
भये॥ चौपाई ॥ सुनौ भूमिनायक तेहिपलमें। द्रोणाचार्य्य पांड
वीदलमें॥ मण्डल सदृश शरासन करिकै। अनरथ करतभये





णाधरिकै॥ जे भटभये तासु चखचारी। तिन्हैं किये यमलोक
हारी॥ अति तीक्षणशर धर्महिं हनिकै। हन्यो सात्वकिहि
शशर गनिकै॥ भीमसेनकहँ नवशर मारे। धृष्टद्युम्न कहँ
लप्रहारे॥ हति तीक्षणशर धर्महिं गरज्यो। सहदेवहि बसु
रहनि तरज्यो॥ द्रुपदहि दशशर हनि दृढ़घायक। हन्योशि-
ण्डी कहँ शतशायक॥ सिगरे द्रौपदेयके तनमें। मारयोपांच
वशर क्षनमें॥ उतमौजहि हनि षटशर नोखे। हन्यो बिरा-
हि बसुशर चोखे॥ सबके हनेबाण बहुकाटत। सबपहँ बाण
लरचि डाटत॥ अगणित हयगज रथ बधिडारयो। शत्रु
नमें प्रलय पसारयो॥ मर्दित ह्वैभट पांडव दलके। भगे गने
ऊ बरबलके॥ अर्जुन लखि बिचलित निजसेना। चलोद्रोण
दिशिजग जेना॥ द्रोणपार्थ कहँ निजदिशि आवत। लखि
ढ़िचलो बर्षिशर छावत॥ पार्थहिजात द्रोणपहँ देखी। पलटे
तके भट अवरेखी॥ निरखि द्रोणगहि अति उतकर्षा। तिनपै
यो शरनकी बर्षा॥ दोहा ॥ जेजे भटभे द्रोणके सम्मुख ति-
के गात। भिन्नभिन्नह्वै प्राणबिनु महिपैभये बिभात॥ सहसन
र अरिसैन मधि डारत प्रति सन्धान। बधत असंख्यनभट
यो बिरचत द्रोण अमान॥ सोरठा ॥ कोपित कालकराल गुणि
णाहिं उतके सुभट। बहुरि भगे तेहिकाल तजिसाहस संगिहि
कल॥ बसुकला ॥ सोगति निहारि। पारथ बिचारि॥ भोकहत
व। हैं बासुदेव॥ जहँ द्रोण बिप्र। तहँ चलो क्षिप्र॥ सुनि
णचन्द। तुरगन अमन्द॥ करिगयेतत्र। होद्रोणयत्र॥ लखि
मसेन। अरि बिहँग सेन॥ निजसूत जौन। बलबुद्धिभौन॥
सों सुधीर। इमि कहे बीर॥ दोहा ॥ जात धनंजय द्रोणपहँ
लो सुरथलै तत्र। सुनिसो आयो बेगसों रहो किरीटीयत्र॥
र्जुन भीमहि द्रोणसों भिरत देखि गहिगर्ब। पलटि फेरि
ये उतै उतके योधा सर्ब॥ सोरठा ॥ अर्जुन दक्षिण ओर उ-

सर दिशिरहि भीमभट । सदल जूटि तेहि ठौर सदल द्रोण
सों लरत भे ॥ चौपाई ॥ इतके सुभट बेगसों टूटे । जाइ तहांति-
न सब सों जूटे ॥ भो अति घोरयुद्ध तहँ राजा । मरेअसंख्यन
सैन समाजा ॥ धृष्टद्युम्न तहँ सादरआयो । चलो तितैसात्यकि
भटगायो ॥ द्रोण तनय सात्यकिहि निहारी । भूरिश्रवाको बधन
बिचारी ॥ बर्षत शायक धनुटंकारी । चलो बेगसों ताहि प्र-
चारी ॥ लखि असुरेश घटोत्कच योधा । बढ़िताको कीन्हों अ-
बरोधा ॥ सैन राक्षसी महा भयानक । बिबिध भांतिके बाहन
बानक ॥ गरजि गरजि अतिरिससों पूरे । बर्षन लागेआयुध
रूरे ॥ चारिहाथको निष्कप्रमाना । चारिनिष्कको नल्वमहाना ॥
तीस नल्वको रथबिस्तारो । रचो बिचित्र आयुधनभारो ॥ ता-
परचढ़ो धनुष टंकारत । बर्षत बिशिखभूरिभय भारत ॥ भूधर
सम असुरेशहिज्वैकै । खसके सुभट भीतिसों ज्वैकै ॥ बिबिध
भांतिके आयुधभेदा । अरु पषाणदायक अतिखेदा ॥ नभसों
गिरनलगे दलमाहीं । जानिपरो कोउबाचत नाहीं ॥ तेहिक्षण
कर्णादिक भट डरिकै । खरेहोत भे इत उत टरिकै ॥ तहँ थिरि
द्रोणतनय रणचारी । अति बिक्रमकीन्हों प्रणधारी ॥ दोहा ॥
दिब्य शरनसों आसुरी माया सकलबिदारि । बधतभयो अग-
णित असुर असुराधिपहि प्रचारि ॥ कोपि घटोत्कच तबहन्यो
द्रोण सुतहि बहुबान । ते तनमांधि धसिपियतभे शोणितउरग
समान ॥ सोरठा ॥ द्रोणतनय दशबान टेरि असुरपतिकहँन्यो ।
तब असुरेश अमान तज्योचक्र हरिचक्र सम ॥ चौपाई ॥ हनि
बीचहि बहु शर अभिरामा । काटिदियो तेहि अश्वत्थामा ॥
सोलखि अंजन पर्बन नामा । सुवन घटोत्कचको बलधामा ॥
भिरो द्रोण सुतसों भटनायक । गर्जत घनसम बर्षत शायक ॥
दोऊ बलि बासवसम भिरिकै । घोरयुद्धकीन्ह्यों तहँ थिरिकै ॥
तहँ अश्वत्थामा प्रण धरिकै । धनुष कराषिकरलाघव करिकै ॥





काटि तासुधनुध्वज बाधि सूतहि । बध्यो हयन करिबेग अकूत-
हि ॥ तब अंजन पर्बन असि गहिकै । भयोचलावत थिरु थिरु
कहिकै ॥ असुर तनय तब रिससों सनिकै । मार्‍यो गदा न
बाचत भनिकै ॥ द्रोण तनय तब शरसों काट्यो । हनि बहुशा-
यक असुरहि डाट्यो ॥ तबसो कूदिघूमि नभमाहीं । बरषा वृक्ष
द्रोणसुत पाहीं ॥ तेहिक्षण द्रोणतनय बलवाना । धनुषहिकरि
जलयंत्र समाना ॥ तज्यो उर्द्ध बाणनकी धारा । तब ह्वै
ब्याकुल असुर कुमारा ॥ आइभूमिपै रथपहँ राज्यो । धनुगहि
सेतु शरनको साज्यो ॥ असुरहि हनि बहुबाण प्रचारी । बधत
भयो द्विजसुत धनुधारी ॥ पुत्र मरण लखिकै अति कोप्यो ।
बीर घटोत्कच प्रलय अरोप्यो ॥ अबिरल शरपंजर रचिदीन्हों ।
तिन्हैं द्रोणसुत निष्फल कीन्हों ॥ दोहा ॥ निज निज बिक्रम बे-
गकी गरिमा कहि कहि धीर । लरे शिष्य गुरु के सुवन बिप्र
रजनिचर बीर ॥ मायावी राक्षसकियो बहुमाया बहुबार । दिब्य
शरन सों द्रोण सुत तासु कियो संहार ॥ महा भयानक अति
प्रबल राक्षस भट समुदाय । करत कोलाहल बाढ़ दय अबि-
रल आयुध छाय ॥ सोरठा ॥ तिन्हैं निरखि अति चण्ड त्रसित
निरखि दुर्योधनहिं । द्विजसुत सुभट उदण्ड कहतभयो कुरुनाथ
सों ॥ चौपाई ॥ नृप मति आनु शोच कछु मनमें । ये सबलहत
कालपुर क्षनमें ॥ बन्धुन सहित धीर धरि देखौ । निजजयश-
त्रुपराजयलेखौ ॥ इमिकहि शर परदल मधिछाये । अगणित
राक्षसमारि गिराये ॥ सबके बाणशरनसोंवारत । सबकेतनमाधि
शायक मारत ॥ द्रोण समान द्रोण सुत राज्यो । कालकराल
सदृश ह्वै गाज्यो ॥ तेहि क्षणकरि निजजयबिधि शोधन । कह्यो
शकुनिसों नृप दुर्योधन ॥ साठिहजार रथी सँगलैकै । जाहुपार्थ
पहँ मन निर्भयकै ॥ कृपवृषसेन कर्ण कृतबर्मा । बिजय सुतापन
अरु जयधर्मा ॥ शल्य पुरंजय जय दुःशासन । इन्द्रसेन दृढ़रथ

अरिनाशन ॥ नृपकमलाक्षनिकुम्भ पताकी । नीलसुदर्शन क्राथ
सुसाकी ॥ नृप पुरुमित्र सुतापन राजा । कुम्भभेदि सहसैन स-
मीजा ॥ धर्म भीमआदिकपहँ जाई । ममहित दुस्तरकरैंलराई ॥
बधि राक्षसन बिप्रजय लेइहि । सबपाण्डवनभूरि दुख देइहि ॥
तोसुत नृपको लहि अनुशासन । ते सिगरेभट करिसंभाषन ॥
हय गज रथी शत्रुदलघाती । अरुषट अयुत प्रमत्त पदाती ॥
बर्षत बिशिख मारु यहि रटसों । भिरेजाय भीमादिक भटसों ॥
दोहा ॥ महाभयानक युद्धअति होत भयो सबठौर । भई रजनि
कल्पान्तके प्रलयकालके डौर ॥ अश्वत्थामा द्रोणसुत अरु
राक्षस भटउद्ध । कोपि शक्र प्रह्लादसम कीन्हों अद्भुत युद्ध ॥
सोरठा ॥ हन्यो भीम सुतरक्ष अश्वत्थामहि बाणदश । भिदितन
सों द्विजदक्ष होतभयोकछु कस्मलित ॥ तोमर ॥ फिरि भीम सु-
वन प्रचारि । अति कठिन धनु टङ्कारि ॥ हनि अंजलिक शर
डारि । धनु दियो द्विजको काटि ॥ तब बिप्रगहि धनु आन ।
तकि भयो बर्षत बान ॥ असुराधिपातिहि अनेक । शर भयो
हनत सटेक ॥ बधिअसुर योधा भूरि । महिरुण्ड मुण्डनपूरि ॥
गज तुरँग अगणित मारि । भोदेत महिपै डारि ॥ जिमिशम्भु
महिमा ऐन । बधि त्रिपुरकी सबसैन ॥ भेलसत तिमि तेहि
ठौर । द्विजतनयभट शिरमौर ॥ दल आसुरी बलवान । अक्षौ-
हिणीपरमान ॥ तहँ मर्दिगहि अवदात । असुरेश बधकोघात ॥
भो लसत भट उद्दण्ड । करि चक्रसम कोदण्ड ॥ तबभट घटो-
त्कच हेरि । सब राक्षसनसोंटेरि ॥ इमि भयोकरत पुकार । यहि
बधोरे यहिबार ॥ सुनि सकल राक्षस बीर । करि घोरधुनि ग-
म्भीर ॥ तकि तजत आयुध सर्ब । बढ़ि भये भिरत सगर्ब ॥
लहि रजनि निशिचर जाल । अति लसतभे बिकराल ॥ दोहा ॥
द्रोणतनय तेहिकाल तजि दिब्यशरनके सेत । काटि काटि ति-
नके सकल आयुध बुद्धि निकेत ॥ बधिडारे अगणित असुर





यल कियो अनेक । लखि लखि कोपितह्वै असुर बढ़िबाढ़ि
रिसटेक ॥ सोरठा ॥ तहँद्विजतनय सुबीर नृपअद्भुत बिक्रमकियो ।
क सुभट रणधीर लरो असंख्यन असुरसों ॥ चौपाई ॥ बिप्रहि
जदल मर्दतदेखी । असुरघटोत्कच अतिशय तेखी ॥ मलि
तल दसि रदछद रदसों । घनसम गरजि पूरिबल मदसों ॥
क्रि आठ घण्टायुत भारी । द्रोणतनय पहँ तज्यो प्रचारी ॥
हि आवतलखि कूदियतनसों । अश्वत्थामाभट गहिपदसों ॥
ज्यो फेरि घटोत्कचपाहीं । देखि घटोत्कच गुणि मनमाहीं ॥
सों कूदि गयो बलवाना । परी सुरथपै शक्ति महाना ॥ श-
प्रभाव दिब्यसों राजा । रथ भस्मितभो सहित समाजा ॥
द्युम्नके रथपर जाई । गरजो राक्षस धनुष चढ़ाई ॥ अश्व-
मामहि अरिहि निहारी । लागोबर्षनबाण प्रचारी ॥ धृष्टद्युम्न
ण्डव दलनायक । द्रोणतनयपहँ बरष्यो शायक ॥ द्रोण तनय
हिबहुशरमाख्यो । बहु नराच राक्षसहि प्रहाख्यो ॥ तेहिक्षण
हां वृकोदर आयो । रथहजार सहओज बढ़ायो ॥ पटहजार
धा हयसादी । भट गजस्थ त्रयशत उनमादी ॥ लैसँग आ-
हे उतकर्षा । करत भयो अस्त्रनकी बर्षा ॥ तेहि क्षण द्रोण
नय भट आरज । करत भयोतहँ अद्भुत कारज ॥ मारुतसम
हीसों भिरिकै । कीन्ह्योंयुद्ध चक्र सम फिरिकै ॥ दोहा ॥ भीम
टोत्कच सैनपति सों लरिआड़ि सडौर । बध्यो असंख्यन
भट गज हय तेहिक्षण तेहिठौर ॥ सरिता शोणितकी सरस
गिचली नृपतत्र । अश्वत्थामा कालसम लस्योकालजेहि
र ॥ बहुशर मारिघटोत्कचहि हनि भीमहि बहुबाण । द्रुपद
प भट सुरथकहँ करतभयो गतप्राण ॥ सोरठा ॥ भट शत्रुं-
नाम द्रुपदतनय तेहि बाधि बहुरि । द्रोणतनय बलधाम
नीकको बधकियो ॥ गुरुतोमर ॥ फिरि जयानीकहि मारिकै ।
जयहि महिपै डारिकै ॥ भटश्रुतायुषको नासिकै । लखि

गार्जि बदन सहासिकै ॥ यमदण्ड सम शर तानिकै । तकि मर्म
थल अनुमानिकै ॥ असुरेशकेहिय देतभो । भिदि असुरपति
गत चेतभो ॥ दोहा ॥ मूर्च्छित देखि घटोत्कचहि धृष्टद्युम्न अनु
मानि । रथ चलाय काढ़ि दूरिगो अतिशय अनरथ जानि ॥
महिखरी ॥ इमि द्रोणसुत लहि परमजय अति मोद गहि गर
जत भयो । सुनि पांडवन को हियोतजि दुखदुसहसों दरजत
भयो ॥ लखि आपुके सब सुवन नृप निज बिजय की गौरव
गहे । सब सुभट इतके देखि अद्भुत कर्म्म बिप्रहि धनिकहे ॥
सुर पितर ऋषि गन्धर्व गण लखि तासु बिक्रममुदभरे । द्विज
द्रोण सुवन उदग्र भटकी अति प्रशंसा सबकरे ॥ जयदुंदुभी
बजवाइ नौसुत भूप गर्बित मुदमयो । इमि सुभट सबलरिपां
डवन सों लेहु जय शासनदयो ॥ दोहा ॥ घोरयुद्ध तेहिक्षण
मचो कहँ कहांलोंभूप । रुण्डमुण्डसों मेदिनीभई भयानकरूप ॥
सोरठा ॥ रहे अभय तेहि याम अभय किये घनश्याम ज्यहि
प्रभुमूरतिको धाम जासु हियो अभिराम अति ॥

इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिरात्रियुद्धवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

दोहा ॥ चौथेदिनके रजनिमधि तदनु भयो जिमियुद्ध । सो
सुनु हे भूपालमणि मनकरि अचपल शुद्ध ॥ द्रोणतनयको ज
अजय भीमतनयको देखि । कुन्तिभोज अरु द्रुपदके पुत्रनक
बध पेखि ॥ सोरठा ॥ भीम सात्वकिहि आदि सुभट उतैके क्रो
धअति । गहिगाहेगर्ब प्रमादि भिरे इतैके भटन सों ॥ चौपाई
भो अति घोरयुद्ध तेहिपलमें । गिरे असंख्यन भट दुहुंदलमें
सोमदत्त सात्वकि कहँ देखी । शर बरष्यो निजप्रण अवरेखी
भीम सात्वकी के जयकारण । नृपहि हन्योदश शरप्रणबारण
सोमदत्ततेहि शतशर मार्यो । अगणित शर सात्वकि पहँ ड
र्यो ॥ सात्वकि तेहि सत्रह शर हनिकै । मार्यो शक्तिभागुम
मानिकै ॥ मार्यो परिघ भीमरिस पागो । सोनृपके मूरध म





लागो ॥ सात्वकि हन्यो बाण बरज्वैकै । भूप गिरो तब मूर्च्छित
ह्वैकै ॥ सोमदत्तकहँ मूर्च्छितलखिकै । भिरो भूप बाह्लीक बि-
लखिकै ॥ भीम सात्वकिपहँ सो राजा । बर्षो अबिरल बिशिख
समाजा ॥ काटि असंख्यन शर रणपतिके । भीमहन्यो नवशार
पथ्यअतिके ॥ तब बाह्लीक शक्तिवर गहिकै । मारतभयोभागु
तिकहिकै ॥ तासों भिदि ह्वै क्षणक अचेतन । चेति भीमबल
बुद्धि निकेतन ॥ गर्जि भूप बाह्लिकहि प्रचारी । मारत भयो
गदा अतिभारी ॥ लागि बज्रसम सोअरि खेदन । करतभयो
नृपको शिर छेदन ॥ नृप बाह्लीक गिरो महिपाहीं । भो हाहा
ध्वनि ममदलमाहीं ॥ सो लखि तो दशसुत भटनायक । भिरे
भीम सों बर्षत शायक ॥ दोहा ॥ नागदत्त दृढ़रथ बिरज दृढ़
हस्तरणधीर । बीरबाहु उग्रज अजय अयभुज प्रमथसुबीर ॥
सिगरे भिरि भीमसों कियो घोर संग्राम । क्रमसोंक्षणमें बधि
तिन्हैं भीम दयो यमधाम ॥ सोरठा ॥ तब वृकरथ रणधीरसूतज
भ्राता कर्णको । हन्यो भीमकहँ तीर भीम तुरित तेहि बधतभो ॥
चौपाई ॥ सोलखि शकुनि भूप के योधा । रथीसाथ कीन्हों अव-
रोधा ॥ भीमसेन अति रिसगहि मनमें । तिनकहँ बधत भयो
तेहि क्षनमें ॥ सोलखिपांच शकुनि के भ्राता । बिभुगवाक्षशात
चन्द्र बिख्याता ॥ शरभ महारथ भटनरनायक । भिरे भीमसों
बर्षत शायक ॥ भीमवर्षि शर करि चखराते । पांच शरन सों
तिन्हैं निपाते ॥ यहि बिधि भीम बिरचितेहि पलमें । प्रलय
काल रोप्यो मम दलमें ॥ तेहि बिधि कोपि युधिष्ठिर राजा ।
हन्यो असंख्यन सैन समाजा ॥ धर्महि निजदल मर्दतदेखी ।
द्रोणाचारय अतिशय तेखी ॥ शर बायव्य भूपपहँ डार्यो । दि-
व्य अस्त्रसों तेहिनृप वार्यो ॥ बारुण याम्य त्वाष्ट्र आग्नेया ।
अरु सावित्रि सुअस्त्र अमेया ॥ क्रमसों नृपपहँ तज्यो अचा-
र्या । तहँ नृप कीन्हों अद्भुत कारय ॥ तजितजि दिब्य बाण

नरनायक । व्यर्थ किये सब द्विजके शायक ॥ तब आचारयत
ज्यो प्रचारी । प्राजापत्य अस्त्र अतिभारी ॥ तब माहेन्द्रअस्त्र
तजि भूपा । व्यर्थ कियो सो अस्त्र अनूपा ॥ निज सब दिव्य
अस्त्रलखि निष्फल । करि अतिकोप अचारय अतिबल ॥ धर्म
भूपको बध अनुमानी । डाख्यो ब्रह्म अस्त्र अतिआनी ॥ दोहा ॥
ब्रह्मअस्त्रसों धर्मनृप व्यर्थ कियो तेहि तत्र । तब बिचारितजि
नृपहि द्विज चलो द्रुपदहेयत्र ॥ पाञ्चालन मर्दत द्विजहि जात
द्रुपद पहँ देखि । बर्षत शर आड़त भये भीम पार्थ अवरेखि ॥
सोरठा ॥ किये घोर संग्राम तेहिक्षण युगदिशिके सुभट । उमगत
भई अक्षाम शोणितकी सरिताभयद ॥ रोला ॥ पांडवनसों देखि
मर्दित सैन निज अनखाय । कर्णसों इमि कहतभो तो तनय
कुरुकुलराय ॥ मित्रबत्सल मित्रउद्भट मित्रका उपकार । करत
जेहि दिन आजुहै यह समय तौन अपार ॥ प्रबल पांडवदलत
ममदल करौं रक्षण तासु । लहैं जाते बिजय हम तिमिकरौ
बिक्रमआसु ॥ भूप के सुनि बचन बोलो कर्ण सगरब बैन ।
भूप चिन्ता करहुमति हम बधब सब अरिसैन ॥ बधब हमअ-
र्जुनहि ताते हारि पांडवसर्ब । भागि बसिहैं जाय बनमें दीनह्वै
तजिगर्ब ॥ जीति सब पांचाल केकय भटनके समुदाय । देउँगो
तो सुवश करि सब भूमि अरिन नशाय ॥ कर्णके सुनि बचन
बोले कृपाचार्य रिसाय । सत्यसत्य सुबचन जो तुम कहत कर्ण
बनाय ॥ भरे बिक्रम बचन तो सुनि परत नृपके पास । पार्थ के
ढिग परतनहिं लखि कछू बिक्रम आस ॥ लयेगहि गन्धर्बगण
कुरुपतिहि तब तेहि ठौर । गउन हेतु बिराट पुरमें भयो संगम
और ॥ तहां तुम जिमि पार्थसों जयलह्यो तौन बिख्यात । तउ
तुम तजि लाज फिरि फिरि कहत ऐसी बात ॥ शरद के घन
यथा गर्जत बहुत बर्षत थोर । तथा थोरो कर्ण तुम बहुकहत
मनके जोर ॥ तुम्हैं गर्जब होत दुर्लभ निकट पार्थहि जोहि ।





हव मिथ्याभूपके ढिग कर्ण उचित न तोहि ॥ कर्ण सुनिये
वन कृप के कह्यो गर्जब मोर । घोर बर्षा समयके घन गर्ज
म नहिं और ॥ कहतहौं फिरि जीति परदल फाल्गुण कहँ
ारि । भूप के बश करोंगो महि सकल सम्पति भारि ॥ कर्ण
ये बचन सुनिकै कह्यो कृप द्विजराज । मोहिं होति प्रतीति
हिंगुणि सधिहि नहिं यह काज ॥ सर्बगुणसों पूर्ण अतिशय
र्मशील सुजान । बिगत दूषण नीति युत सर्बज्ञ नम्रमहान ॥
बलउद्भट सहित बन्धुन धर्मनृप जगजैन । तासु संग सहाय
र्ता कृष्ण महिमा ऐन ॥ भूप द्रुपद बिराट केकय अधिप
ह परिवार । परम धनुधर जासु सँग रहि करतयुद्ध बिहार ॥
ट घटोत्कच आदि अगणित सुभट बिदित अमान । जासु
नुचर सकै ताकहँ जीतको बलवान ॥ नृप युधिष्ठिर धर्म में
भीम बलमें श्रेष्ठ । पार्थ धनुमें तथा तुम बहुबचन कहत
श्रेष्ठ ॥ शम्भु शक्रादिक सुरनसों लहेअस्त्र अशीस । पार्थ
हि तुम बधन भाषत झूठ बिस्वेबीस ॥ बचन यहसुनि अ-
ण चखकरि कर्णबोलो क्षिप्र । पाण्डुसुत सबप्रबल हैं तुम स-
भाषत बिप्र ॥ शक्रदीन्हीं मोहिं शक्ति अमोघताहि प्रहारि ।
क्त सबकेपार्थ कहँ बधि तुरित देहौं डारि । पार्थबिनु ह्वै
कल पाण्डव सकलसाहस त्यागि । जाय बसिहैं बिपिनमें
हसेन रणतजि भागि ॥ लहि अकण्टक भूमि करिहैं भोग
कुलचन्द । कहत हैं हमसत्य यह हे वृद्ध द्विज मतिमन्द ॥
ाण्डवनके नेहबश तुम कहत ऐसेबैन । शत्रु बिक्रम बरणिभय
तकरत नृपकीसैन ॥ अरेदुर्मति बचन ऐसे कहैगो जो फेरि ।
टिहौं तो जीभतेरी कहतहौं यहटेरि ॥ कर्णके ये बचन सुनिकै
णसुत अनखाय । काढ़िकै तरवारि तापैचलो कहत अबाय ॥
कमानी मान्यसबको धनुष बरबिख्यात । सुने बचन प्रलाप
ो कह्योसत्य सुबात ॥ तौन सुनितू बचन अतिकटुकहेजौरिस

धारि।खड्गसों तौशीशतेरो काटिदेहौंडारि ॥ कहतऐसे सूतसुत
पहँ द्विजहिजात निरेखि । भयोवारत बिनय करितो तनय नृप
अवरेखि॥द्रोणसुत इमिकह्यो नृपके कहेछांड़त तोहि । फाल्गुण
यहिबचनको फल अवशि देहैंजोहि ॥दोहा॥ यहप्रपंच लखिस-
न्धिगुणि पाण्डव उतसोंटूटि । आइ तहां लागे लरन प्रतिसु-
भटनसों जूटि ॥ तिन सब सों भिरिकै तहां सूतज बीरअमान।
करषि धनुष शायक बरषि कियो घोर घमसान ॥ सोरठा ॥ तहँ
सूनजहि निहारि पाण्डव अरु पांचाल गण । बध बिचारिप्रण
धारि घनेबाण बरषतभये ॥ चौपाई ॥ यह अनरथको मूलमहा-
ना । बधौ याहिहनि शक्तिकृपाना ॥ इमि कहिकहि उतके भट
नायक । भिरे कर्णसों बर्षत शायक ॥ तिनसों भिरो सूतसुत
तैसे । तेज बायु वृक्षनसों जैसे ॥ एक कर्ण अगणित भट गण
सों । अद्भुत युद्ध कियो अति प्रणसों ॥ दुर्योधन नृपको हित-
कारी । कर्णप्रसिद्ध दुसह रणचारी ॥ असुर **सैन मधि शक्र**
समाना । परदल माधिभो लसत अमाना ॥ **काटि** असंख्यन
शर सबहीके । बरष्यो शायक शोषक जीके ॥ अगणित पैदर
रथी सँहारे । अगणित हयसादिन बधि डारे ॥ अगणितकेशिर
छेदनकीन्हें । काटि असंख्यन कर पग दीन्हें ॥ अगणितधनुष
केतु रथ छेदे । अगणित योधनके हियभेदे ॥ अगणितहयगज
मारि गिराये । शोणितकी सरिता उमगाये॥इमि मर्दितहवैयो-
धा उतके । भगे छोड़ि सँग हितपितु सुतके ॥ पारथ निजदल
बिचलत देखी । चलो कर्णपै अतिशय तेखी ॥ धनु कर्षतघन
सदृश ननर्दत । शर बर्षत ममसेना मर्दत ॥ पार्थहि जातकर्ण
पहँ पेखी । दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ कह्यो द्रोणसुतसों यहि
भावै । पार्थकर्णकहँ बधन न पावै ॥ दोहा ॥ सो सुनिकै सुतद्रोण
को कृप अरु शल्य नरेश । अरु हार्दिक्य ससैनये चलतभये
तेहि देश ॥ पाचालन सह फाल्गुण महाबेगसों जाय । धीर





नुर्द्धर कर्णपहँ देतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ कर्ण बिदित बानैत
ारथपै बरषो बिशिख । दोऊ भट अमनैत घोरयुद्ध कीन्हों
तहां ॥ चौपाई ॥ दोऊभट धनुबिधिमें पूरे । काटे अगणित शाय-
क रूरे ॥ दोऊअगणित शरकेसैरी । अरुप्रसिद्ध नितिकेअति
री ॥ अगणितबाण शरासनकरषे । अबिरल बाण परस्परबर-
॥काटि पार्थके बहुशर नोखे । मारेकर्ण तीनिशर चोखे ॥ जौ
गि तीनि बाणसों मारो । तौलगि पारथ तीस प्रहारो ॥ बहु
र काटि **अरुण**करि ईक्षण । हन्यो बाम करमें शर तीक्षण ॥
ागत बाण कर्णके करसों । गिरो धनुष सबपूरे डरसों ॥ तुरत-
हिकर्ण धनुषसों गहिकै । बर्षोबिशिख खरोरहु कहिकै ॥ दोऊ
अद्भुत धनुबिधि लीन्हें । भूपति घोरयुद्ध तहँ कीन्हें ॥ पार्थ अ-
ूरब धनुबिधि ठाट्यो । शरसों धनुष कर्णको काट्यो ॥ घोरन
धे मारिशर चारी । सूतहि हन्यो सुबाण प्रहारी ॥ बिधनु बि-
थ करि गरजि प्रचारो । शायकचारि तासुतन मारो ॥ तब
सूतज डरि निजरथ तजिकै । गोकृपके रथपै अतिलजिकै ॥
सूत सुवनकी दशा निहारी । ममभट बिचले गर्ब बिसारी ॥
निजदल बिचलत लखि दुर्योधन । इमि कहि कहि कीन्हों अव-
ाधन ॥ फिरहु फिरहु सबभीति बिहाई । क्षत्रिहि नहिंचाहत
दराई ॥ दोहा ॥ देखो ममबिक्रम बिशद सबसों कहत पुकारि ।
र्पिबाण बधिपार्थकहँ देहौंमाहिपैडारि ॥ इमिकहि भूपतिक्रोध
श दीहधनुष टंकारि । सदल पार्थपहँ चलतभो शरबर्षत
णधारि ॥ महाक्रोध बश पार्थपहँ भूपति जात निरेखि । अ-
श्वत्थामासों कह्यो कृपाचार्य अवरेखि ॥ सोरठा ॥ अमरष बश
भूपाल जात धनंजयसों लरन । अब न बाचिहि यहिकाल ताते
जान न देउयाहि ॥ चौपाई ॥ कृपाचार्य के सुनि ये बैन । अश्व-
त्थामा बलबुधिऐन ॥ जायभूपसों कह्योबुझाय । जीवतहमैं
सुनो कुरुराय ॥ तुमकहँ उचित न करिबोयुद्ध । हमलारि तुम्हैं

देब जयशुद्ध ॥ तुम रहिखरे लखौरणरंग । मैं लरिकरत पार्थ
बलभंग ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षितिपाल । कह्यो बिप्रसों बचन
रसाल ॥ ममशत्रुनकहँ द्रोणाचार्य्य । पुत्र सदृश रक्षतहे आर्य्य ॥
तुमहूँ तिन्हैं बंधुप्रिय जानि । करतसदारक्षण अनुमानि ॥ यह
मम मन्दभाग्यकोकर्म । कैलघुभो तो बिक्रमपर्म ॥ मोहिं युद्ध
कहँ धिक्जेहि काज । मरत असंख्यन सैन समाज ॥ को ऐसी
सिखै धनुरीति । जेहि न सकौ पितुसह तुमजीति ॥ जो मोहिं
लरन जाननहिं देत । तौ करिकृपा सुजयके हेत ॥ करिबर बि-
क्रम निज अनुरूप । मोहिं देहु तुमबिजय अनूप ॥ यह सुनि
द्रोणतनय बलधाम । कह्यो भूपसों बचन ललाम ॥ नृप तुम
कह्यो सत्य यहबात । वै मम कृपापात्र अवदात ॥ तबहूँ यथा
शक्ति व्यवसाय । करत युद्ध सबनेह भुलाय ॥ रणमेंकरतकृपा
नहिंनेक । चाहत उन्हैं बधन गहिटेक ॥ दोहा ॥ शक्र असुर
गन्धर्ब सों पाण्डव बधन न योग । अतिबिक्रमी प्रसिद्धवै शी-
क्षक शस्त्र प्रयोग ॥ अगणित योधा बधब हम बाण बरषि यहि
याम । बिकल कुरब सब पाण्डवन लखो भूप बलधाम ॥ सोरठा ॥
द्रोणतनय बलधाम इमि कहितोसुत भूपसों । बरषत शर अ-
भिराम चलोपाण्डवी सैनपर ॥ चौपाई ॥ जे कैकय पांचाल सु-
बीरा । तिनसों टेरिकह्यो रणधीरा ॥ लरो आय मोसों सबयोधा ।
सोसुनि सब कीन्हों अवरोधा ॥ बारिद बारिधार जिमि बर्षत ।
तिमि सबबर्षत भेधनुकर्षत ॥ तहांबिप्र बिक्रम बिस्तार्‍यो ।
दश पांचाल रथी बधिडार्‍यो ॥ बधि अगणित पैदर हयसादी ।
गर्जो ब्राह्मण प्रबल प्रमादी ॥ तेहिक्षण धृष्टद्युम्न रणचारी ।
चलो बिप्रपहँ धनुटंकारी ॥ शतसह शूर सुभट सँगलीन्हें ।
द्रुपदतनय अतिगौरव कीन्हें ॥ द्रोणतनय सों कह्यो प्रचारी ।
मति इत नरबधु द्विज अबिचारी ॥ शूरहोसि तौ मोसों भिरिकै ।
धीरयुद्ध करु ईक्षण थिरिकै ॥ इमिकहि कोपिअरुण करिईक्षण





यो बिप्रकहँ बहुशर तीक्षण ॥ तिनसों भिदि द्विजसुवन सो-
यो । कह्यो भूपसुतसों मनभायो ॥ धृष्टद्युम्न सम्मुख थिरु
तों । भेजों तोहिंकालपुर जौलों ॥ इमि कहि कठिन शरासन
ष्यो । धृष्टद्युम्नपहँ शायक बरष्यो ॥ काटि असंख्यन शायक
सू । धृष्टद्युम्न बोलत भो आसू ॥ हे द्विज सुनु यह मम प्रण भा-
। बधौंसपितु तोहिं तौ धनुधारी ॥ तजि द्विजधर्म क्षत्रगुण
र । तेहि गुण आजु जाततुम मारे ॥ दोहा ॥ दुर्योधनमें अ-
क अरु पाण्डवमें कमप्रीति । करतसपितु तुमतासुफल ल-
हौ आजुसनीति ॥ यह सुनिकै अति क्रोधकरि थिररहु थिररहु
षि । धृष्टद्युम्नपहँ द्रोणसुत छायदयो शरनाषि ॥ सोरठा ॥
द्युम्न रणधीर करलाघवकरि क्रोधगहि । बर्षोबिशिख गँ-
र अश्वत्थामा बीरपहँ ॥ चौपाई ॥ दोऊकरि बिक्रमबहुताई ।
त भयेतहँ तुमुल लराई ॥ बिबिध भांति बाणनकी बर्षा ।
तभये गहि गहि उत्कर्षा ॥ अगणित बाण बाणसों दोऊ ।
हौं काटि लखे सबकोऊ ॥ दोऊ भटबर दोउन पाहीं । छाय
शर सबदिशि माहीं ॥ लखि तिनको बिक्रम तेहिक्षनमें ।
प्रशंसित सुरगणमनमें ॥ दोऊचढ़े बीररस चावन । लहे
र्ते एक समभावन ॥ तदनु द्रोणसुत थिरु थिरु भनिकै ।
ब्योतासु धनुष शरहनिकै ॥ ध्वजअरु छत्रहि काटिगिरायो ।
तहिबधि यमलोक पठायो ॥ बधि तुरंग यमपुरगत कीन्हों ।
गणित भटन कालपुर दीन्हो ॥ धृष्टद्युम्न सों जयलहिऐसो ।
लसो तहां बिप्र सुत तैसो ॥ मत्तमतंगहि बधि मृगराजा ।
हि बिधि मर्दै द्विरद समाजा ॥ द्रोण तनय सों मर्दितह्वैकै ।
गो तासुदल भयसों ग्वैकै ॥ धृष्टद्युम्नकी दशानिरेखी । पांचा-
नकहँ बिचलत देखी ॥ धर्म भूप भीमादिक योधा । कियेद्रो-
सुतको अवरोधा ॥ सो लखि दुर्योधन कुलनायक । सदल
तभो बर्षत शायक ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें । घोर

युद्धमाचो वहि थलमें ॥ दोहा ॥ भीम आरजुन तेहिसमय अ
रल शायक छाय । बधि हय गजभट रुधिरकी नदीदई उ
गाय ॥ तथाद्रोण उतशरनको दुरदिन करि है भूप । बधिअ
णितभट मेदिनिहि कियो भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ महाघो
संग्राम मध्य सोमदत्तहि निरखि । सात्वकि भट बलधाम भिर
भयो अति बेगसों ॥ तोमर ॥ लखि सात्वकिहि कुलदीप । भ
सोमदत्त महीप ॥ ह्वै चपलदर्प बढ़ाय । भोदेत शायकछाय
भट सात्वकिहु रणधीर । भोतजत अबिरलतीर ॥ नृपसोमद
अमान । तेहि हन्यो साठि सुबान ॥ भट सात्वकी औ ताहि
बहुबाण मारे चाहि ॥ भरि रुधिर सों सबगात । भे उभयवी
बिभात ॥ रथफेरि सब दिशिघूमि । शरवृष्टि कीन्हींभूमि ॥त
सोमदत्तनरेश । हनिशर क्षुरप्र सुमेश ॥ धनुकाटि दीन्होतासु
तब आन धनुगहि आसु ॥ भट सात्वकी अनखाय । तकिब
षि बाण सचाय ॥ नृप सोमदत्तहि डाटि । शर मारिकै धनुकाटि
फिरि मारि तीक्षण पत्र । तकिकाटि दीन्हीं छत्र ॥ फिरि धनु
गहि अवनीश । तेहि हने बाण पचीश ॥ तब नृपहि भीमउद
एड । भो हनत दशशर चण्ड ॥ नृप सोमदत्त सटेक । तेहिहे
बाण अनेक ॥ तब सात्वकी सहजोर । भो तजत परिघ कठोर
दोहा ॥ सोमदत्त नृप सो परिघ काट्यो हनि शर चण्ड । फि
सात्वकि काटत भयो भूपति को कोदण्ड ॥ नृपके रथके तुरँग
सब बधेचारिहनि बान । फेरि बधत भो सारथिहि सात्वकिवी
अमान ॥ पुरुषसिंह सात्वकि बहुरिबाण बज्रसम मारि । सोम
दत्त भूपतिहि बधि दीन्हों महिपै डारि ॥ सोमदत्त बाह्लीक
सुत काबध लखि तेहिकाल । चले सात्वकी पहँ गरजि इतके
सुभट कराल ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षणधर्मनरेश द्रोण चमू मर्दतभये
सो लखि द्रोण सुभेश भिरो युधिष्ठिर भूप सों ॥ चौपाई ॥ पांच
बाण अतिशय अनियारे । द्रोण युधिष्ठिर नृपकहँ मारे ॥ धर्म





शर द्विजहि प्रहार्यो । तब द्विज अति बिक्रम बिस्तार्यो ॥
मारि युग शायक चोखे । काट्यो नृपके ध्वजधनुनोखे ॥ तु-
और धनुगहि नरनायक । हन्यो द्रोण कहँ अगणित शा-
॥ तिन बाणनसों बेधित ह्वैकै । मूर्च्छिचेति फिरि इत उत
कै ॥ द्रोणअस्त्र बायब्य सँचार्यो । दिब्य अस्त्रसों नृप तेहि
यो ॥ बहुरिभूप हनिबाण उदण्डहि । काट्यो द्विजबरके को-
डहि ॥ तब द्विजराज और धनुगहिकै । बरषो बिशिखभागु
तकहिकै ॥ तेहिक्षण बासुदेव हितकारी । धर्म नृपतिसों क-
बिचारी ॥ तुम मतिलरहु द्रोण सों राजा । दुर्योधन पहँ
हु समाजा ॥ भूपहि उचित भूप सों लरिबो । लरब और
अनुचित करिबो ॥ चाहत तुमकहँ गहन अचारय । ताते
सौं भिरो न आरय ॥ सुनि बिचारिपांडवक्षितिपालक । गो
रहो भीम अरिघालक ॥ द्रोणाचार्य्य बीररस पागो । पां-
लन कहँ मर्दन लागो ॥ तथा भीम अर्जुन धनुधारी । बहु
किये गगनपथ चारी ॥ तिमि इत उतके योधा भिरिकै ।
युद्ध कीन्हीं तहँ थिरिकै ॥ दोहा ॥ इबिधि घोरसंगर मचो
तभयो शशिनाथ । पूरिगयो तम नहिं परै निरखि पसारे
॥ तब निजनिज दिशिदेत भे शासन उभय नरेश । पैदर
प्रदीप गहि खरेहोहिं सबदेश ॥ सुनि शासन रणपतिनके
पैदर समुदाय । गहिगहि चारुप्रदीप भे खरेचारुताछाय ॥
प्रति पांचप्रदीप अरु गजप्रति तीनि मशाल । मम दिशि
ति हय भे ज्वलित एक मशाल बिशाल ॥ दश प्रदीप प्रति
इतै गजन गजनप्रति सात । दोय दोय प्रति हयउतै भये
दीप बिभात ॥ महिखरी ॥ अति शुचि सुगन्धित तैल भाजन
कर लीन्हें भरे । मणिमये मंजु मशाल प्रज्वलित एककर
हैं खरे ॥ प्रति तुरँग रथगजसकल दिशिरहिचपल थिर
गति धरे । दुहुंओरपैदर सुभट अगणित लसे छबिअनुपम

करे ॥ मणिमुकुट भूषण आयुधन मधिदीप अगणित लखिपरे
प्रतिबिम्बप्रति प्रतिबिम्बतिनमें बिबिध बिधि अगणितअरे ॥
तहँ भई प्रगटितदुहूंदल मधिपरमअनुपम छबिनई । रहिचपल
कइक हजार चपला नचति मनु सबदिशिभई ॥ दोहा ॥ तिमि
नभपै गन्धर्बसुर किन्नर यक्षसमस्त । पूरि सनेह सुसौरभित
गहे प्रदीप प्रशस्त ॥ बेधित ह्वै ह्वै शूरतन तजि चढ़ि दिव्य
प्रमान । महि तजिऊरध जात बहु पूरत प्रभामहान ॥ नभते
सुर गन्धर्बगण तहँ आवत हित मानि । नृपताते महिदिव परे
एक नगर समजानि ॥ सोरठा ॥ महि नभ भरो प्रदीप लसत
भयो तेहि निशि तहां । मनुमधि जम्बूद्वीप लगी अग्नि कल
पान्तकी ॥ तामधि कृष्ण कृपाल उतपति पालन प्रलय कृत
कौतुक करत बिशाल निज भक्तनके तरणहित ॥

इतिद्रोणपर्वणिचतुर्थदिनगतेरात्रियुद्धेप्रदीपप्रकल्पनोनामएकादशोऽध्यायः

दोहा ॥ उभय भूप निजनिज दलन बहु प्रदीप बरवाय ।
बहुरि जूटि लागे लरन जय दुन्दुभि बजवाय ॥ चौपाई ॥ अति
शय घोर युद्ध तेहि निशिमें । मचो मढ़ी अति धुनि दुहुँदिशि
में ॥ तेहि क्षण पारथ धनुटंकारत । अगणित हय गज भट
बधिडारत ॥ ह्वै अतिप्रबल धसो ममदलमें । प्रलयकाल पूरत
सब थलमें ॥ सो लखि इतके भट दृढ़घायक । कर्ण बिकर्ण
शल्य नरनायक ॥ द्रोणाचार्यहिं रक्षत बिधि सों । तासों भिरे
भटनकी ऋधिसों ॥ जुटि इतउतके भट बलधामा । कीन्हों
तहां घोर संग्रामा ॥ मचो रउद्रयुद्ध तेहि पलमें । मरे असं
ख्यनभट दुहुँदलमें ॥ धर्म महीपालकतेहि क्षनमें । कह्योभटन
सों इमि गुणिमनमें ॥ द्रोणहि जायबधौ तेहि लरिकै । सोसुनि
सुभटचले प्रणधरिकै ॥ सो लखिकै इतके सबयोधा । बढ़ितिन
को कीन्हों अवरोधा ॥ भिरो युधिष्ठिर सों कृतबर्म्मा । सात्यकि
सों भट भूरि अभर्म्मा ॥ आड़्यो कर्णबीर सहदेवहि । तोसुत





भीम बर भेवहि ॥ भिरो नकुलसों शकुनि सुधीरा । भिरो
खंडी सों कृत बीरा ॥ भट प्रतिबिंध्यहि करषि शरासन । आ-
तभयोबीर दुःशासन ॥ असुरघटोत्कच अतिबलधामा । तेहि
ड़तभो अश्वत्थामा ॥ जातद्रोणपहँ द्रुपदससेना । तेहिआ-
तभोभट वृषसेना ॥ दोहा ॥ नृप बिराटसों भिरतभो शल्यभूप
हसैन । शतानीकसोंभिरतभो चित्रसेनअरिजैन ॥ भिरोफाल्गुन
रसोंआलम्बुष असुरेश । धृष्टद्युम्नसोंभिरतभो द्रोणभयानक
श ॥ सोरठा ॥ इमिइत उतके बीरवृन्द हजारन जुटतभे । मचो
दगम्भीर महाराजतेहिक्षण तहां ॥ चौपाई ॥ बाणपचीस परम
नियारे । धर्म भूप कृतबर्महि मारे ॥ काटि भूपको धनुयुत
र्मा । मारो सात बाण कृतबर्मा ॥ धर्म भूप तब बर धनु गहि-
। दशशर हने भागु मति कहिकै ॥ फिरिशर मारि काटि
नुतासू । मारे ताहि पांचशर आसू ॥ तब सो भूप और धनु
रो । सत्तरि शर नृपधर्महि मारो ॥ धर्म कोपि मारो शर ती-
ण । सो कढ़िगयो बेधि भुज दक्षिण ॥ तेहि अन्तरमें धर्म
माना । मारोकृतबर्महि बहुबाना ॥ तेहिक्षण कृतबर्मा बर
नुष । भूप करतभो काज अमानुष ॥ बर्षि असंख्यन शरबर
के । काटि असंख्यन शरनर बरके ॥ बिरथ बिधनु धर्महि
रि दीन्हों । तब नृपधर्म चर्म असिलीन्हों ॥ तब बहुभल्ल
ण हनि राजा । काटि दयोअसि चर्म ससाजा ॥ तब नृपधर्म्म
क्ति तजि डाट्यो । तेहिकृतबर्म्मा बीचहि काट्यो ॥ अगणित
ण भूपके तनमें । मारे कृतबर्म्मा तेहि क्षनमें ॥ तिन बाणन
मर्दित ह्वैकै । भगो धर्मनृप धीरज ग्वैकै ॥ धर्महि जीति
दितकरिपक्षण । लगो भूपभट द्रोणहिरक्षण ॥ भिरि सात्वकि
कुरुकुल भूषण । भूरि करतभोयुद्ध अदूषण ॥ दोहा ॥ बरषि
षि अगणित बिशिख काटि मारिशर भूरि । भूरि भूप सात्व
कियै घोरयुद्ध रिसपूरि ॥ शर क्षुरप्रसों भूरिको धनुषकाटि

सो बीर । गरजि सिंह सम हनतभो अतितीक्षण नवतीर ॥
कोपि तुरित गहि आन धनु भूरि भूपबलवान । मारिसात्वकि-
हि तीनि शर धनुकाट्यो हनिबान ॥ सोरठा ॥ बिधनुसात्वकीबीर
शक्तिहनतभो बज्रसम । लगे ताहि रणधीर भूरि गिरोगतप्राण
ह्वै ॥ चौपाई ॥ भूरि नृपतिकहँ मरत निरेखी । अश्वत्थामाअति-
शय तेखी ॥ गुणि भट सात्वकिको बध करिबो । चलोघटोत्क-
चसों तजि लरिबो ॥ कह्यो घटोत्कच रिससों पगिकै । तजि
मम निकट जात कित भगिकै ॥ आजुकालतो शिर चढ़िनाच-
त । मोसों बिना बधो नाहिं बाचत ॥ जियको लोभत्यागिलरु
फिरिकै । कारमन भरि बिक्रम मरु थिरिकै ॥ यहसुनिबिप्रफिर-
तभो तैसे । सुनिगज गरज केशरी जैसे ॥ बीरअसुरगहिअति
उतकर्षा । कियो द्रोण सुतपै शरबर्षा ॥ द्रोणतनयअतिगौरव
लीन्हों । दुसहशरनको दुर्दिनकीन्हों ॥ दोऊअद्भुतबिधिधनुक-
रषे । अगणित दिव्यअस्त्र बरबरषे ॥ दिव्यअस्त्र अस्त्रन सों
लागैं । तिनसों कटि फुलिंग बढ़ि जागैं ॥ दोऊबरषि दिव्यशर
छाटे । दोऊ दिव्य शरन सों काटे ॥ दोऊ दुहुँन बाण बहुहनि
हनि । अबमति भागुखरोरहु भनि भनि ॥ कीन्हें घोरयुद्ध तहँ
राजा । लखिबिस्मित भे सुमनसमाजा ॥ तेहिक्षण असुरभीम
सुत तुरमें । दशशरहन्यो बिप्र केउरमें ॥ भिदितिनसों द्विज
मूर्च्छितह्वैकै । क्षणक अचलरहिगो ध्वजज्वैकै ॥ बहुरिचेतिबर
धनु टङ्कारो । बज्रसमान बाण तेहि मारो ॥ दोहा ॥ लागिघटो-
त्कचके हिये बेधिगयो वह बान । मूर्च्छित ह्वै रथपैपरो भीम
तनय बलवान ॥ सो लखि असुर सुसारथी रथलै भागोक्षिप्र ।
बिजय पायगर्जत भयो पुरुषसिंह भट बिप्र ॥ सोरठा ॥ भीमसेन
कहँदेखि जात द्रोण पहँ सैनसब । दुर्योधन नृप तेखि भिरोस-
दल बर्षत बिशिख ॥ तोमर ॥ भट भीमसेन अमान । तेहिहन-
तभो नवबान ॥ तो तनय भट अवनीश । तेहि हनतभो शर





श ॥ तेउभय सुभट सचाय । नभदिये शर सों छाय ॥ रचि
ण जाल गँभीर । लखिपरे ते युग बीर ॥ जिमिघने घनमाधि
प । शशिसूरलसत अनूप ॥ तौ तनय बीर उदण्ड । तेहि
न्यो शर शर चण्ड ॥ तब भीम धनु बिधि ठाटि । ध्वज धनुष
पको काटि ॥ फिरि बाण नब्बेमारि । भो नदत धनु टंकारि ॥
हि धनुष नृप रिसपूरि । भो बाण बर्षत भूरि ॥ तहँभीम नृप-
हि प्रचारि । बरबाण बाणन वारि ॥ करि साबिधि धनुषकशीस ।
ो हनत बाण पचीस ॥ तब भूमिपति बलवान । हनि शर
ुरप्र महान ॥ भट भीमकोधनु काटि । दशबाणमारयोडाटि ॥
व भीमगहि धनु और । शर हन्यो सात सडौर ॥ तब भूप
ोऊ चाप । भो काटि देत सदाप ॥ तबभीम गहिधनु आन ।
ो करत अति घमसान ॥ दोहा ॥ दुर्योधन काटतभयो सोऊ
नुष कठोर । इबिधि पांचधनुभीमके काट्यो करि शरजोर ॥
बधनु भीम अति कोपकरि शक्तिचलायोटेरि । बाण मारितेहि
ीचहीभूपति काट्योहेरि ॥ तब अतिगरुईगदा गहि मार्यो
ीम अमान । ताहि लगे हय सारथी होतभये गतप्रान ॥
ोरठा ॥ तब तो तनयनरेश गोनन्दक के सुरथ पै । नृपहिजात
ाहि देश लख्यो न भीमादिक सुभट ॥ मरोभूप अनुमानि प्र-
ल भये उत सुभट सब । इतसब अनरथ जानि जीवनाशत-
जि तजि लरे ॥ चौपाई ॥ भिरि सहदेव कर्ण रणचारी । कीन्ह्यो
ोरयुद्ध धनुधारी ॥ बाण अठारह अति अनियारे । सहदेव
कोपि कर्ण कहँ मारे ॥ कर्णमारि शतशर सहदेवहि । धनु का-
्यो हनि शर वरभेवहि ॥ तब सहदेव और धनुधारो । शायक
ीस कर्णकहँ मारो ॥ कर्ण तासु शर हय बधिडारो । सूतहिब-
धिनाहिंवचनपुकारो ॥ माद्रीसुवनचर्म असिलीन्हों । कर्णतिन्हैं
दशधाकरि दीन्हों ॥ तबमाद्रीसुत गदाचलायो । ताहिसूतसुत
काटि गिरायो ॥ पांडवतदनु शक्तितजिडाट्यो । तेहिराधेयबाण

हनिकाढ्यो।।तबसहदेवचक्रगहिभारी।मारतभोसूतजहिंप्रचारी।।
सूतसुवन तेहि शतधाकीन्हों । लखिमाद्रीसुत अनरथचीन्हों ।।
ईर्षादंड युवा ध्वजरूरे । कटेगजनके अंग अधूरे ।। मरेपरे हय
मानुष गाहिगहि । मारतभयो भागुमति कहिकहि ।। मारि मारि
अगणित शर तिनमें । कर्ण गिराइ दयो तेहिक्षनमें ।। तबमा-
द्रीसुत विस्मित ह्वैके । त्यागो युद्ध प्रबल तेहि ज्वैके ।। तब
हँसिकर्ण कहत भो थिरिकै। लरुनिज सदृशभटनसों भिरिकै ।।
मोसों आइ भिरो तू भोरे । अबजाभागि पार्थके धोरे ।। दोहा ।।
गुणि कुन्तीको बचन नहिं बधत तोहिं यहि याम । इमिकहिकै
पांचाल दल बधन लगो बलधाम ।। कर्ण बलीके बाकशर सों
पीड़ित सहदेव । जनमेजय पांचालकेरथपै गयोसुभेव ।।सोरठा।।
कियो घोर घमसान शल्य बिराट नरेशतिमि । दोऊ प्रबलअ-
मान दोऊ भूपति बिदितभट ।। चौपाई ।। बलिबासव सम दोऊ
राजा । लरत भये भिरि सहित समाजा ।। तहांशल्य अतिबि-
क्रम करिकै । क्षणमें अगणित शर परिहरिकै ।। बधि बिराटके
सूत सुघोरन । काढ्यो केतुछत्र शर जोरन ।। ह्वैहत हयबिराट
नरनायक । जाय भूमिपै बर्षो शायक।। सो लखि नृपबिराटको
भ्राता । शतानीक धनुधर बिख्याता ।। सुरथ बढ़ायधनुषटंका-
रत । शल्य नृपति सों भिरो प्रचारत ।। शर बर्षत भिरि ओज
बढ़ाई । करत भयो सो तुमुल लराई ।। शल्य भूपकर लाघव
कीन्हों । शतानीककहँ यमपुरदीन्हों ।।सो लखिनृप बिराटचलि
पथपै । जातभयो भ्राताकेरथपै ।। अतिशय क्रोध शोकगहिमन
में । बर्षतभयो बिशिख तेहिक्षनमें ।। लखिनृपशल्यक्रोधबिस्ता-
रो । ताहिय बाण बज्रसममारो ।। तासों भिदिनृपमूर्च्छितह्वैकै।
परो सुरथपै बिक्रमग्वैकै ।। सो लखिसूतसुरथलै भागो । शल्य
तासुदल मर्दनलागो ।। भगीफौजसो भयसोंभरिकै । बिनालरे
कोउ कोउकछुलरिकै ।। सोदलबिचलतलखि तेहिपलमें । चले





णपारथ तेहिथलमें ।। लखिप्रचारि आलम्बुषयोधा । करत
ो तिनको अवरोधा ।। दोहा ।। क्षणमहँ ताकहँकरि बिधनु बि-
बिमुख तेहिठौर । चलो द्रोणपहँ पार्थभट बर्षत बिशिख
ौर ।। शतानीक सुत नकुलको बढ़ि मर्दत सबसैन । चलो
ो तासों गरजि चित्रसेन बलऐन ।। दोऊ बर्षें दुहुँनपै शा-
क कइक हजार । दोऊ काटे दुहुँनके शरसमूह बहुबार ।।
।। दोऊ बीर अमान बाणहने तन दुहुँनके । दोऊ शर
धान करि काटे धनु दुहुँनके ।। चौपाई ।। दोऊबीर धनुषधरि
रिकै । बाणनकी बर्षा करि करिकै ।। कीन्होंघोरयुद्ध तेहिक्षन
जो लखि जन बिस्मित भे मनमें ।। शतानीक अति बिक्रम
न्हों । नृपतौ सुतहि बिरथकरि दीन्हों ।। तो सुत थिरि न
को तेहि थरपै । गोकृतबर्मा के रथबर पै ।। शतानीक यहि
धि जय लहिकै । लगो दलनदल गौरव गहिकै ।। द्रुपदहि
त निरखि जगजेना । आड़तभयो बीर वृषसेना ।। दोऊ भरे
र रस हरषे । अबिरल बाण परस्पर बरषे ।। शायक साठि
म अनियारे । द्रुपद कोपि वृषसेनहि मारे ।। सूततनयको
त दृढ़घायक । द्रुपदहि हन्यो अनगिने शायक ।। भिदे शरन
अतिशय कोहे । सुभट शल्यकी समतेसोहे ।। कर्ण तनय
भटनको शासी । द्रुपदहि मारोबाणनवासी ।। द्रुपद कोपि
सेनहिं डाट्यो । शरसों तासु शरासन काट्यो ।। तब धनु
हि वृषसेन अमाना । द्रुपदहि हन्यो बज्रसम बाना ।। सोशर
ागि बेधि हियतासू । धस्योजाय धरणी मधि आसू ।। अति
थित ह्वै द्रुपद महीपा । मूर्च्छितपरो रथपै कुलदीपा ।। सूत भूप-
हि मूर्च्छित ह्वैके । भयो सुरथलै चिन्तितज्वैके ।। दोहा ।।
मिपांचाल महीपतिहि जीतिसूतसुतपुत्र । भो मर्दत पांचाल
ल चाहि सुजय शुचि सुत्र ।। भिरि प्रतिबिंध्य महीप अरु
शासन तेहि राति । घोरयुद्ध कीन्हों तहां अगणित भटन

निपाति ॥ सोरठा ॥ भूप शकुनि तोसार नकुल बीरसों भिरितहाँ
कीन्हों युद्ध अपार बर्षि बिशिख बहुभांतिके ॥ चौपाई ॥ नकुल
सुबीर अरुण करिईक्षण । नृपतिहि हन्यो साठिशर तीक्षण
धनुध्वज काटि सारथिहि हतिकै । शकुनिहि हन्यो बाणरि
अतिकै ॥ लागि बेधिभूपति को हीया । धसो धरणि मधिश
कमनीया ॥ मूर्च्छि गिरत भो शकुनि सुराजा । भे हर्षित पर
सुभट समाजा ॥ शकुनि भूपतिहि मूर्च्छित देखी । रथलै भगे
सूत अवरेखी ॥ जीतिशकुनि कहँ नकुलननर्दत । चलो द्रोण
पहँ ममदल मर्दत ॥ भिरो शिखण्डीसों अरिदरता । कृपाचा
र्य अद्भुत रणकरता ॥ शम्बरशक्र सदृशते भिरिकै । कीन्ह्यो
घोर युद्ध तहँ थिरिकै ॥ दोऊ बिदित पुरुष पंचानन । गगन
पूरि दीन्ह्यों बर बानन ॥ बाणन करि अगणित शर भगणित
दोऊ दुहुँन हनेशरअगणित ॥ कोपिशिखण्डी हनिशरचोखो
काटि दयो द्विजकोधनुनोखो ॥ तबकृपतज्यो शक्तिअतिचण्डी
काटिदियोतेहिबीर शिखण्डी ॥ गहिधनुआन बिप्रभटनायक
हन्यो शिखण्डिहि तीक्षण शायक ॥ भिदि तासों मूर्च्छित ह्वै
सोई । परो सुरथपै बिक्रम गोई ॥ सुभट शिखण्डिहि मूर्च्छित
लखिकै । सब पांचाल सुबीर बिलखिकै ॥ घेरि शिखण्डिहि
रिससोंपागे । कृपपहँशायकबर्षणलागे ॥ दोहा ॥ सोलखिकैइतके
सुभट कृपहि घेरि अनखाय । उतके सुभटन पहँलगे बर्षणशर
समुदाय ॥ लहि निशीथ बेला बिकट मचोघोर संग्राम । उमँगि
बहो सर रुधिर को सागर सरिस अक्षाम ॥ सोरठा ॥ मचोघोर
संग्राम कर्षत धनु बर्षत बिशिख । धृष्टद्युम्न बलधाम चलो
द्रोणपहँ गरजिकै ॥ गुरुतोमर ॥ सो मर्दि सुभटन जायकै । द्विज
द्रोणपै शर छायकै ॥ शरपांच द्विजके गातमें । मोहनत चरि
धनु घातमें ॥ तब द्रोणधनुष कशीसकै । तेहिहने बाण पची
सकै ॥ फिरि भल्ल तीक्षण मारिकै । धनुदयो काटि प्रचारिकै





धीर बरधनु धारिकै । बध बिप्रके सो बिचारिकै ॥ शरपरम
सम लायकै । भो तजत अति अनखायकै ॥ तहि कर्णबारह
तासों । भो काटिदेत सुठान सों ॥ शर चारि सूतज टेरिकै ।
बाण माख्यो हेरिकै ॥ दोहा ॥ अश्वत्थामा पांचशर हन्यो द्रोण
पांच । शल्यहन्योनवबाणअरुशकुनिपांचनाराच ॥ दुर्योधन
बीसअरु दुःशासनषटबान । धृष्टद्युम्नके तनहने भिरिभट
तअमान ॥ इनसबकेअगणित बिशिख काटिद्रुपदसुतबीर ।
के तनमें हनत भो तीनि तीनि बरतीर ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण
टङ्कारि भिरतभयो द्रुमसेनभट । धृष्टद्युम्न शर मारि बध्यो
हिसबकेलखत ॥ चौपाई ॥ कर्णहिटेरि शत्रुदलनायक । काट्यो
ष मारि बर शायक ॥ तुरित और धनुगहि राधेया । बर्ष्यो
बाण अमेया ॥ तिमि षटरथी क्रोधसों पूरे । बर्षे तापहँ
यकरूरे ॥ धृष्टद्युम्न अतिबिक्रमकीन्हों । सबपैबाणजालरचि
हीं ॥ सुनोभूमिपति तेहिथल माहीं । परीभीर अतिदलपति
हीं ॥ सो लखिकै सात्वकि भटगायो । वर्षतबिशिख तुरिततहँ
यो ॥ ताहिप्रचारिकर्ण बढ़ितुरमें । मारतभयोबाणदशउरमें ॥
त्वकि त्यहि दशशरहनि हेख्यो । अबमति कर्ण भागु इमि
यो ॥ सात्वकि कर्ण बिदित धनुधारी । कीन्ह्यों तहांयुद्ध अति
री ॥ धनु टङ्कारनसों दिशिभारी । बाणन नभ छादितकरि
री ॥ काटि कर्णके बहु शर बानन । सात्वकि बिदित पुरुष
बानन ॥ बज्रसमान बाणजय देनहिं । मारतभयो बीर वृष-
नहिं ॥ भिदि तासों वृषसेन अमाना । मूर्च्छित भयो बिदित
लवाना ॥ तेहिगत प्राण सूतसुत जानी । हने अनागिने शर
सुमानी ॥ चेति सूतसुत को सुत क्षनमें । हन्यो बाण सात्व-
के तनमें ॥ सात्वकि तिन्हें बाण बहु हनिहनि । काट्यो बि-
ख भागुमति भनि भनि ॥ दोहा ॥ पितापुत्र अति चपलते
हि गहि बरकोदण्ड । सात्वकि सुभट अमान पहँ बर्षे बाण

उदण्ड ॥ सात्वकि तिनपहँ करतभो शर दुर्दिन त्यहि काल
तुमुलयुद्ध कीन्हों तहां ते सबबीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ यहि प्र
कार भट सर्ब रथी गजी पैदर सुभट । हयसादी गहिगर्ब घोर
युद्ध कीन्हों तहां ॥ रोला ॥ पार्थ तिमि गांडीवकी धुनि सकल
दिशिमें पूरि । बर्षि शायक बधतहो सन्धान प्रतिभट भूरि ॥
घोरधुनि गाण्डीवकी सुनिकर्ण बीर बिचारि । कहतभो तो त
नय नृपसों कुशल हेतु निहारि ॥ मोहिंजानोपरतसुनि गांडीव
को टङ्कार । आजु पारथ करत सब तो सैनको संहार ॥ रुद्रसम
सो करत जेहिथल घोरयुद्ध बिहार । होतहै तेहि ठौर ममदल
मध्यहाहाकार ॥ सकलपाण्डव प्रबल योधा गर्जिगर्जि सगर्ब
शरन ममदल मर्दि चाहत लेन बिजय अखर्ब ॥ गर्बगहि मम
निकट आयो सात्वकी भट एक । घेरि यहि अभिमन्यु सम
हम बधब आजु सटेक ॥ द्रोणके ढिग गयोतेहिबिधि धृष्टद्युम्न
ससैन । जाहि बधिये उभयभट तौमिलै सुजय सचैन ॥ प्रबल
प्रबलसुभटन भेजौ लरत पारथ यत्र । पार्थसों भिरि लरैं ते
सब जाय सादर तत्र ॥ पार्थ जौलागि सुनै नाहिं इनयुग भटन
को घेरि । भेजिकै यमपुरहि जययश लेहिं सबदिशिटेरि ॥ कर्ण
को मत समुझि तोसुत शकुनिसों तेहि याम । कह्यो प्रबल
सुसैन सह तहँ जाहुतुम बलधाम ॥ दश सहस सुरथी संगलै
लैतितेद्विरद सवार । दुःप्रधर्षण दुर्बिषह्यसुबाहुवीरअपार ॥ सु
भट दुःशासन सहित तहँ जाहु जहँहै पार्थ । बचन यहसुनि
शकुनिगो तहँ जानि बिजय यथार्थ ॥ सूतसुत तब सैन सह
बाढ़ि सात्वकी कहँघेरि । लगे बर्षण बाण सात्वकि भागुमति
झमिटेरि ॥ तुरँग सादी रथी इतके गजी भटसमुदाय । सात्वकी
कहँ घेरि लागे देन शायक छाय ॥ घूमिसात्वकि चक्रसमकरि
चक्रसमकोदण्ड । बर्षि शरभो बधत हय गज सुभटबीर उद
ण्ड ॥ शीश करपग शुण्ड धनुध्वज बाणशक्ति समूह । भयो





टत सात्वकी तहँ बर्षि शायकजूह ॥ दोहा ॥ प्रतिरथ हयगज
तिभटन रचि अबिरल शरसेतु । प्रलयकाल समपरत भो
त्वाकि जययश हेतु ॥ त्यहिक्षण हाहाकार भो ममदल मधि
हि ठौर । पीड़ित ह्वै ह्वै टरतभे सुभट त्यागि भटतौर ॥ सोरठा ॥
जदलमर्दितदेखि दुर्योधन भूपालमणि । कह्यो सूतसोंतेखि
लु सात्वकि ढिग सुरथलै ॥ चौपाई ॥ सोसुनि सूत चपलकरि
रि । गोरथलै सात्वकिके घेरे ॥ सात्वकि नृपहि देखि रिस
रो । अति तीक्षण द्वादश शरमारो ॥ भूपति कोपि अरुण
रि ईक्षण । हन्यो सात्वकिहि दशशर तीक्षण ॥ तेहि थर इत
तकेभट गणसों । भूपति मचो युद्ध अतिपणसों ॥ भट सा-
कि अरु नृप दुर्योधन । भिरि करिकरिबरधनुबिधिशोधन ॥
य छाय शायक दुहुंदिशिमें । घोरयुद्ध कीन्होंत्यहि निशिमें ॥
त्वाकि करलाघव बिस्तारो । असीबाण भूपतिकहँ मारो ॥
ुगन बध्यो मारि बहुशायक । बधि सूतहि गर्ज्योहदृघायक ॥
ऊभूप तेहि रथपै रहिकै । बर्षोबिशिख क्रोधसों नहिकै ॥ नृप
तजे पांचशत बाना । काटि सात्वकी सुभट अमाना ॥ अर्द्ध
न्द्रसम शायक मारी । काट्यो नृपकोधनुष प्रचारी ॥ तबसो
रथ त्यागि चलिरथपै । करतभयो अति युद्ध अकथपै ॥ सो
मि नृपहि पराजितकरिकै । मर्दत भयो सैनशरझरिकै ॥ जाइ
र्थ पहँ सहितसमाजा । युद्धकरतभो सौबलराजा ॥ रथीगजी
यसादी योधा । सुभटपार्थको करि अवरोधा ॥ गर्जि गर्जि
अमरषसोंपूरे । लगेप्रहारण आयुधरूरे ॥ दोहा ॥ पारथधनुधर
कोपितहँ अद्भुत धनु विधिठाटि । अगणितकरशर शीश पग
रिदेतभोकाटि ॥ सबआयुध प्रति भटनके काटि काटि हानि
ाण ।अगणितहयगजभटनकहँ करतभयोगतप्राण ॥ सोरठा ॥
सौबलबीर अमान अरिदल मर्दन पार्थतेहि । मारिबीस बर
ान रथ आरोहणि बाणशत ॥ चौपाई ॥ पार्थबीर अति रिस

गहि मनमें । हनिशर बीस शकुनिके तनमें ॥ बधि अगणित हय गज भटपलमें । प्रलयकाल रोप्यो तेहि थलमें ॥ कुण्डल कवच किरीट बिभाते । भूरिहार अंगद करिराते॥महिगतकिये पार्थ धनुधारी । बधि बहुभूपन बाणप्रहारी ॥ इमिबिक्रम करि रिसबिस्तारो । फेरि पांचशर शकुनिहि मारो ॥ सुवन उलूक शकुनिको ताही । पारथ हन्यो तीनिशर चाही ॥ भट उलूक तब अतिशय रोखो । हन्यो केशवहि शर अतिचोखो ॥ काटि शकुनिको धनुभट पारथ । बध्यो तुरँग सबगुणि निजस्वारथ॥ तब सौबलनृप निजरथ तजिकै । गोउलूकके रथपै लजिकै॥ कै अतिप्रबल पार्थ रणचारी । मम दल मर्दत भयो प्रचारी॥ मर्दितह्वै अति भयसों पागे । त्यागि सुधीर बीर सब भागे॥ धृष्टद्युम्न द्विजबरसों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै॥ शायक तीनि द्रोणकहँ हनिकै । काट्यो धनुषभागुमति भनिकै॥ सादर द्रोण और धनु गहिकै । बर्षेबिशिख भागुमति कहिकै॥ द्रोणहि आड़ि बर्षि बहुशायक। बध्यो असंख्यन भट दलनायक ॥ धृष्टद्युम्न सों मर्दित ह्वैकै । ममदल भगो भीतिसों ग्वैकै ॥ दोहा ॥ इमि भीमादिक सुभट मम भटन भगाय भगाय। भेबिलसत रणभूमि मधि शङ्ख बजाय बजाय ॥ इबिधि घोर संगरभयो तेहि रजनी मधिभूप । शोणित की सरिताबही महा भयानक रूप ॥ सोरठा ॥ उभय सैनकेबीच बैतरणी समसो लसी । मेद गूद तहँ कीच हय गज रथभट याद सम ॥ केशव जासु सहाय तासु पार सोई लहै । बिनुप्रभु कृपा सचाय कौन तरै सागर अगम ॥

इतिद्रोणपर्बणिचतुर्थदिनगतेरात्रियुद्धेद्वन्दयुद्धबर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः॥

दोहा ॥ प्रलय कराणि तेहि रजनिमधि बिचलत लखिनिज सैन । द्रोणकर्णसोंकहतभो दुर्योधन तजिचैन ॥ जयकरी ॥ तोबिक्रम केवलगहिमैर । हम कीन्हों पांडव सों बैर ॥ सोतुम बि-





क्रम निजअनुरूप । करत न ममहित हेतुअनूप ॥ जोहमतुम्हैं राज्य यहिठौर । तौ तिमिलरौ रुचै जेहिडौर ॥ जोहम तुम्हैं राज्य नहिंतात । तौ करिये बिक्रम बिख्यात ॥ दोहा ॥ यहि बिधि वाकप्रतोदसों ह्वै ताड़ित तेहियाम । द्रोण कर्ण परसैन मधि किये अमानुषकाम ॥ करिअति अद्भुत धनुष बिधि रचि अबिरल शरसेत । अगणित हय गज भटनबधि दीन्हों काल निकेत ॥ सोरठा ॥ पीड़ित ह्वै तेहिकाल भगतभयोपांचालदल। सो लखि बीरबिशाल भीमगयो तहँ सैनसह ॥ चौपाई ॥ अर्जुन निरखि प्रलय निज दलमें । सादर सदल गयो तेहि थलमें ॥ भीमार्जुनहिं जाततहँ देखी । फिरे सुभट सब जय अवरेखी ॥ पूर्ण शशिहि लखि सागर जैसे । उमँगत फिरोशत्रुदल तैसे ॥ भो अतिघोर युद्ध तेहि क्षनमें । जो लखि सुमन मुदितभे मनमें ॥ तहँलखि धृष्टद्युम्नके उरमें । मार्यो कर्णबाण दशतुरमें ॥ धृष्टद्युम्न अधरथिहि प्रचारी । मारतभयो पांचशर भारी ॥ ते युगबीर बिदित रणचारी । कीन्हों घोरयुद्ध हठधारी ॥ अगणित बाण परस्पर मारे । अगणित बाण शरनसों वारे ॥ तहां कर्ण बिक्रम बिस्तारो । तासु तुरँग सूतहि बधिडारो ॥ तौनहुँ बधि तुरगन चलि रथपै । गोसहदेव बीरके रथपै ॥ चह्योफेरि सूतज पहँ आवन । आवन दयो न नृपमनभावन ॥ कर्णमुदित ह्वै शङ्ख बजायो । सूत और हय रथमें लायो ॥ धृष्टद्युम्नकी हारि निरेखी । सब पांचाल सुभट अतितेखी ॥ कर्णबीर बरको बध गुनि गुनि । बर्षत भये बिशिख धनु धुनिधुनि ॥ तहांकर्ण अति बिक्रम कीन्हों । क्षणमें तिन्हैं बिकलकरिदीन्हों ॥ दोहा ॥ तोमर भल्ल सुअर्द्ध शशि बाणबर्षि पणधारि । अगणित हय गज भटन बधि दीन्हों महिपैडारि ॥ मर्दित ह्वै भट कर्ण सों भगे सकल पांचाल । सोलखि अर्जुन बीरसों कह्यो धर्मक्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ यहि निशीथ मधिचण्ड भीषमके मार्त्तण्डसम ।

सूतजबीर उदण्ड नाशत ममदलतमानिकर ॥ चौपाई ॥ अबतैसो
बिक्रम करुभाई । जाते ममदल मारि न जाई ॥ सोसुनिपारथ
जय अभिलाषो । सादर श्रीयदुपति सों भाषो ॥ सूतसुवनको
बिक्रम देखी । भयेसभीत धर्मअवरेखी ॥ ताते शीघ्रचपलकरि
घोरे । रथलै चलो कर्णकेधोरे ॥ सोसुनिकृष्णकहो सुनुपारथ ।
यहिक्षणसो कुरुपतिके स्वारथ ॥ बिहरतकाल करालसमाना ।
आड़िसकै तेहि को बलवाना ॥ तुमका असुर घटोत्कचयोधा ।
करिबेयोगतासु अवरोधा ॥ पै यह एक सुनहु भटनायक । यहि
क्षण तुम्हैं न भिरिबे लायक ॥ शक्ति अमोघ शक्रकी दीन्ही ।
लीन्हे वहतो बधहितचीन्ही ॥ ताते यहिक्षण असुर अमाना ।
भिरैं कर्णसों बर्षतबाना ॥ इमि पारथसोंकहि यदुस्वामी । कहो
घटोत्कचसों जयकामी ॥ तुम बल बिक्रम बुद्धि निधाना ।
मायाबिद धनुधर बलवाना ॥ धीरबीर साहसी महाना । शूर
असुरपति सरससुजाना ॥ इतै न तुमसम और बिचक्षण । जौं
न करै यहि क्षण दल रक्षण ॥ कर्णबाण बर्षतसब दिशिमें । रुद्र
सदृश बिहरत यहि निशिमें ॥ उभय बंशको गुण अनुसरिकै ।
तुम तेहि समिति करौपणधरिकै ॥ दोहा ॥ पार्थकह्यो मम सुजन
हित भिरो कर्णसों तात । करिहहि तिहारो अनुगवन सात्वकि
भट बिख्यात ॥ कृष्ण पार्थके बचनसुनि असुरकह्यो गहिटेक ।
कर्णहि जीतन हेतुहौं सदा प्रबल मैं एक ॥ सोरठा ॥ इमि कहि
असुर अमान गर्जि धनुष टङ्कारिकै । बर्षत अबिरलबान चलो
कर्ण रणधीरपै ॥ चौपाई ॥ असुरहि निजपहँ आवत देखी । हँसि
बढ़ि भिरो कर्ण अति तेखी ॥ बलि बासव सम भिरि रिसप्रा-
गे । ते युगबीर लरन तहँलागे ॥ तिन्हैंलरत तो तनयनिहारी ।
दुःशासनसों कह्यो बिचारी ॥ भिरो कर्णसों असुर अमाना ।
मायावी सो अति बलवाना ॥ तुम सँग लै बहु युद्धबिचक्षण ।
जाय करहु सूतजको रक्षण ॥ इतने में नृपके ढिगजाई । सुवन





सुरको बलदाई ॥ कहत भयो नृप तो अरिजेते । आजु
हैं हम नाशब हेते ॥ अर्जुन मम पितु को बधकीन्हो ।
वह बैर चहत अब लीन्हो ॥ यहसुनि दुर्योधन लहि आ-
। कह्यो असुरसों ह्वै अतिमानद ॥ द्रोण कर्ण अरु हम
सेना । बधव पाण्डवन हे जगजेना ॥ भीमतनय यह
सुर अमाना । है अति प्रबल बिदित बलवाना ॥ ममहित
बधौ तुम ताही । बिकल होहिं सब पाण्डव चाही ॥ यह
नि असुर गर्वसों रजिकै । भीमतनय पहँ चलो गरजिकै ॥
हे लखि भीमतनय असुरेशा । त्यागि कर्णसोंयुद्ध सुभेशा ॥
तो जटासुरके सुतपाहीं । टेरत आजु बचत तू नाहीं ॥ सुनि
ज बिक्रम भाष्यो सोऊ । इमि कहि सुनि गर्जे भट दोऊ ॥
॥ घोर युद्ध कीन्हों तहां युग रजनीचरबीर । दोऊ प्रबल
मत्तभट दोऊ अति रणधीर ॥ माया कीन्हीं बिबिध बिधि
मतनय बलवान । दिब्य शरनसों वारितेहि राक्षस सुवन
मान ॥ सोरठा ॥ बर्षि असंख्यन बाण ब्याकुल करि असुरा-
पहि । करतभयो गत प्राण अगणितभटपाण्डवनके ॥ तथा
त्कचबीर गर्जि गर्जि करि बाण झरि । असुरहि हनि बहु
र बधत भयो अगणित भटन ॥ तोमर ॥ बधि असुरके हय
र्ब । हति सारथिहि गहि गर्ब ॥ बहुबाण असुरहि मारि । भट
म सुवन प्रचारि ॥ फिरि सूतसुतहि सटेक । भो हनतबाण
नेक ॥ तब असुर रिससों छाय । तजि सुरथ सादर जाय ॥
ट भीम सुतके गात । मोहनत मूक बिभात ॥ तब घटोत्कच
मत्यागि । तेहि लपटिगो रिस पागि ॥ तेउभयजोधा शुद्ध ।
हँ कियो मल्लसुयुद्ध ॥ जुटि छूटि फिरि जुटिछूटि । बहु पेंच
रिकरि ऊटि ॥ करि मुष्टिकनकोघात । तहँ लरे भटअवदात ॥
हा ॥ निजबश करि तेहि भीमसुत भयो पछारत भूप । उलटि
हि ऊपर भयो असुर सुबीर अनूप ॥ बहुरिछूटि आयुधघने

बर्षि प्रचारिप्रचारि । घोरयुद्ध कीन्हो तहां बर बिक्रम बिस्ता
रि ॥ भीमतनय अतिबिक्रमी गहि तीक्षण तरवारि । काटि
शीश तेहि असुरको केश पाणिसों धारि ॥ दुर्योधनके सुरथ
डारि शीशभटचण्ड । फेरिकर्णसों भिरतभो टंकारंत कोदण्ड
सोरठा ॥ मत्तमतंग समान भिरि राक्षस अरु कर्ण तहँ । कीन्हों
युद्ध महान बरषि परस्पर बिशिखबर ॥ चौपाई ॥ दोऊ बिक्रम
मदमाते । गर्जिगर्जि करिकरि चपराते ॥ सुजय चाहि अति
गर्बहि धरिधरि । मण्डल सदृश शरासन करिकरि ॥ रहुरहु
खरो न बाचत भनिभनि । अगणित बाण शरासन हनिहनि
दोऊ तुमुल युद्ध तहँ कीन्हों । युगदिशि बाणजाल रचिदीन्हों
भये भयददोऊ अति कोहे । दोऊभरे रुधिरसों सोहे ॥ कर्णबी
गहि अति उत्कर्षा । कीन्हो दिव्य शरनकी बर्षा ॥ दिव्यअ
छांड़त लखि ताही । माया कियो असुर जयचाही ॥ अगणि
असुर भूरिभय मांड़त । भांति भांतिके आयुधछांड़त ॥ च
सूतसुतपहँ करिहूहा । लखिडरपेइतकेभटजूहा ॥ तहांकर्णअ
बिक्रम करिकै । अबिरलदिव्यअस्त्र परिहरिकै ॥ नाश्यो ति
व्यर्थकरिमाया । नशे बिकार नशाति जिमिछाया ॥ सोनिजमा
निष्फल देखी । बर्षो बिशिख घटोत्कचतेखी ॥ कैयक बा
सूतके तनमें । धसिकढ़िगे महिमाधि तेहिक्षनमें ॥ सूतसुव
अति रिस सों ग्वैकै । असुरहि हन्यो बाणदश ज्वैकै ॥ अ
बेधित ह्वै असुर रिसाई । तज्यो चक्र भरि ब्योम उड़ाई
देखि ताहि सूतज भट गायो । बाणजालसों काटि गिरायो
दोहा ॥ निजचक्रहि निष्फल निरखिगर्जि घटोत्कचबीर । ब
भोभटकर्णपहँ अबिरल तीक्षण तीर ॥ अगणित शायक
सुरके काटि घने शर छाय । असुरहि मार्‌यो बाणबहु कर्णबी
दृढ़घाय ॥ सोरठा ॥ मार्‌यो गदा बिशाल असुरताहिं का
करण । तब असुरेश कराल कूदि गगनमाधि जातभो ॥ मा





रीमहान रथपहँ राजितह्वै तहां । आयुध वृक्ष पषान बर्षो
र्णसुबीर पहँ ॥ चौपाई ॥ तहांकर्ण अति धनुबिधिठाटो । शा-
कहनि हनि सोसब काटो ॥ बिरचि बिरचि अबिरल शर
तू । दीन्हों काटि धनुष रथकेतू ॥ मायावी राक्षस धनुधारी ।
न्हों तहां युद्धअति भारी ॥ सूतज दिव्य अस्त्रबिद चीन्हों ।
सों तासुसदृश रण कीन्हों ॥ दोऊ बधिबे को प्रण लीन्हें ।
हुँदिशि शरपंजर करि दीन्हें ॥ नभगत मायाकी असुरेशा ।
र बहुबदन भयानक भेशा ॥ सिगरे बाण कर्णके मार । करि
र ग्रास ब्यर्थकरि डारे ॥ फिरिहत समह्वै कौतुक करिकै ।
रि भो लसत भूमिपर परिकै ॥ सोलखि इत सब भट हर्षाने ।
रा घटोत्कच निश्चय जाने ॥ निमिषमात्र तिमिरहि प्रण
स्त्रकै । उठो भयानक रूप बितरिकै ॥ सहसन शिरशत उदर
तमाला । अगणित पग धनु बाहु बिशाला ॥ मन्दर सम बपु
लो भट नागर । मथन लगो मम सेना सागर ॥ सूतसुवन पहँ
ति शायक । कहत भयो रजनीचर नायक ॥ सूतज आजु
न्हैंबिनु धरणी । करिहौं हानि शायक बरबरणी ॥ इमि कहि
याहासकरि बलसों । बर्षो बिशिख राक्षसी कलसों ॥ कर्ण
णर पुरुष पंचानन । सब शर काटि देत भो बानन ॥ दोहा ॥
नदेखि निज बिशिख सब रजनीचर अति तेखि । अति
ग गिरि होतभो मायाकरि अवरेखि ॥ तासों मुद्गर मुशल
कपट्टिश शायक शूल । बर्षतभो भट कर्णपहँ राक्षसबीर
शूल ॥ सोरठा ॥ बर्षि दिव्यशर भूरि कर्ण सुयोधा धनुषधर ।
र्षो निमिष में दूरि भयद शैल माया बिशद ॥ चौपाई ॥ तब
असुर नील घन ह्वैकै । घुमरि घेरिमाढ़ि महिनभ छ्वैकै ॥
र गर्जि पाहनझरि कीन्हों । सूत सुतहि गोपित करिदीन्हों ॥
टिकर्ण अतिधीरज धरिकै । दिव्यशरनकी बर्षा करिकै ॥ तजि
रुण्य अस्त्र अनुमानी । ब्यथकियो मायाजल दानी ॥ अति

अमरषगहि असुर अदाया । कीन्हों प्रगट आसुरी माया ॥
अगणितभेद असुर बलवाना । गजरथ तुरगन चढ़े अमाना ॥
सबदिशि घेरि घटोत्कच बीरा । चले बधन सूतज रणधीरा ॥
कर्णतहां अतिरिस गहि मनमें । तज्यो असंख्यन शायकक्षन
में ॥ काटि कर्णके अगणित शायक । हने पांचशर निशिचर
नायक ॥ फिरिहनि अर्द्धचन्द्रशर चोखो । काट्यो सूतजको धन
नोखो ॥ सूतज तुरित और धनु गहिकै । बरषो बिशिख भाग
मति कहिकै ॥ बिलसेरुद्र त्रिपुरके दलमें । तिमि राक्षस दल
मधि तेहि पलमें ॥ बिहरो कर्ण प्रबल भट गायो । अगणित
अरियमलोक पठायो ॥ प्रलय कालके अग्नि समाना । लस्यो
असुर दल मधि बलवाना ॥ अबिरल सेतु शरनके ठाटत
बहु हयगज भटरथधनु काटत ॥ कार्त्तिकेय सम निशिचर गण
में । लसोकर्ण मनदै जयपणमें ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण उतके सुभट
नहिं सकेसूतजहि देखि । बचिबेकी आशा तजे अन्तक सम
अवरेखि ॥ मायामें दीरघसुरथ बिरचि घटोत्कच बीर । गरजत
तापहँ चढ़ि तज्यो घोर अशनि रणधीर ॥ सोरठा ॥ आठ चक्र
युत जौनि दुइयोजन दीरघ बनी । योजन आयत तौनि अशनि
बज्रसम तजत भो ॥ चौपाई ॥ अग्नि बमत तक्षकसम आवत
देखि ताहि सूतज भट भावत ॥ तुरित कूदि तेहि पकरि तर
जिकै । फेरि असुरपहँ तज्यो गरजिकै ॥ सोलखि निशिच
अनरथ गुनिकै । कूदि भूमिपर गो शिर धुनिकै ॥ देव रचित
सो रथपर परिकै । सहय सूतरथ भस्मित करिकै ॥ गई धरणि
माधि अशनि महाना । रथपर चढ़ो कर्ण बलवाना ॥ बरषोदिव्य
अस्त्र सविधाना । असुर भयो तब अन्तर्द्धाना ॥ फेरिप्रग
परलय करि दीन्ह्यों । दिव्य शरनकी बर्षा कीन्ह्यों ॥ बर्षि दिव्य
शर कर्ण प्रचार्‍यो । ताके दिव्य अस्त्र सब वार्‍यो ॥ तब माया
भट असुरेशा । कीन्ह्यो प्रगट भयानक भेशा ॥ वृक पिशा





च्यानन घोरा । यातुधान अति प्रबल अथोरा ॥ लेसबदुखद
रधुनि करिकरि । चले कर्णपहँ अति रिस धरि धरि ॥ बर्षि
व्यशर चषकरि राते । क्षण महँ सूतज तिन्हें निपाते ॥
लखिअसुर महारिस गहि कै । बरषो बिशिख भागु मति
हिकै ॥ यहि बिधि कर्ण भीमसुत भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों
हँ थिरिकै ॥ दोऊ प्रबल प्रसिद्ध अमाना । दोऊ शिक्षक
नृप बिधाना ॥ बर्षि बर्षि शर दोऊ योधा । किये बायु की
ति अवरोधा ॥ दोहा ॥ मायावी असुरेशको लखि बिक्रमतेहि
ल । मनमें अति शंकित भयो दुर्योधन क्षितिपाल ॥ इतने
राक्षस प्रबलाबिदित अलायुधधीर । सैन सहित आवतभयो
र्योधनकेतीर ॥ रोला ॥ आइ नृपके पास सो इमि कह्यो गर्वित
न । किये बहु अपराध मेरे भीमभट बलऐन ॥ बक हिडम्बहि
यो ताके बैर यहि निशि लेन । समयलहि हम आजु आये
हैं आनँद देन ॥ सखा सम्बन्धिन सहित सब पाण्डवनकहँ
रि । खाइ हैं सब सखा मेरे महा आनँद धारि ॥ युद्ध तजितो
भट सिगरे लखैं मम ब्यवसाय । बधब हम सब पाण्डवनक-
घने आयुध छाय ॥ कह्यो नृप रिस भरे मम भट तजहिंगे
हिं युद्ध । लरहिंगेतो संगरहि अनुगमन करि भट उद्ध ॥ प्र-
लमायाबली धनुधर घटोत्कच असुरेश । कर्णसों भिरि प्रल-
पूरित किये ममदल देश ॥ प्रथम तासों युद्धकरि यम लोक
तकरि ताहि । फेरि सब पाण्डवनको तुम नाशकी जो चाहि ॥
पन यहसुनि गार्जि निशिचर नाथ धनुटंकारि । असुरदलसह
म सुतपहँ चलो बल बिस्तारि ॥ दोहा ॥ सदलअलायुधनि-
चरहि निजपहँ आवत देखि । कर्णहिं तजितासों भिरो भीम
नय अति तेखि ॥ दोऊ राक्षस अति प्रबल मायावीभटउद्ध ।
हाराज तहँ भिरि कियो अतिशय अद्भुत युद्ध ॥ सोरठा ॥ प्र-
ल असुर सोंमुक्त कर्ण मोदि बर्षत बिशिख । गर्जत सुगरब-

सुक्कचलो वृकोदर बीरपहँ ॥ चौपाई ॥ अति प्रियपुत्र असुररण
चारी । प्रबल असुर बरातहि निहारी ॥ कर्णहिं निदरिभीम
धनुकर्षत । चलो अलायुधपै शर बर्षत ॥ भीम सुतहि तजि
असुर अमाना । भिरेभीम सों बर्षत बाना ॥ फेरि घटोत्कच
सूतजभिरिकै । लगेकरन अति बिक्रम थिरिकै ॥ सिगरेअसुर
घोरधुनि करि करि । चले भीमपहँ अति रिस धरि धरि ॥ तहां
भीमकर लाघव धारो । पांचपांच शरसब कहँमारो ॥ तासुश-
रन सों बेधित ह्वैकै । भगेअसुरअति भयसों ग्वैकै ॥ दलबि-
चलत लखि निशिचर नायक । भीमसेन पहँ बरषो शायक ॥
भीम तहां अति गौरव लीन्हें । असुर नाथ पहँ शर झरि की-
न्हें ॥ जितने शायक तज्यो वृकोदर । सो सबकाट्योबकके सो-
दर ॥ सो लखि भीम गदागहि भारी । निशिचर पति पहँतज्यो
प्रचारी ॥ उल्कासम तेहि निरखिनिशामें । निशिचर गरूगदा
हनितामें ॥ फेरि दियो करिकै अवरोधा । नवशर बरषो भीम
सुयोधा ॥ तिमि सो असुर शरनकी वर्षा । कियो भीमपहँगहि
उतकर्षा ॥ पाय अलायुधको अनुशासन । बढ़ि बढ़िलाहि सि-
गरे मनुजाशन ॥ बधिबधि हय गज मानुष रूरे । प्रलय काल
परदल मधिपूरे ॥ दोहा ॥ सो लखि सहदेव नकुल अरु सात्य-
कि बीर अमान । भिरे आसुरी सैन सों बर्षत अबिरलबान ॥
महाराज सुनु असुरपति अति बिक्रम करितत्र । काटि धनुष
भट भीमको हयन बध्यो हनि यत्र ॥ भीमकूदिकै सुरथ सों त-
ज्यो गदा अति चण्ड । ब्यर्थ कियो तेहिकी गदा राक्षसबीर
उदण्ड ॥ सोरठा ॥ कोपि भीमरण धीर तज्यो दुसह अगणित
गदा । हनिबहु गदासुबीर असुरब्यर्थ कीन्ह्यो सकल ॥ चौपाई ॥
तेयुगबीर महारिस लीन्हें । बढ़ि बढ़ि मुष्टि युद्ध अति कीन्हें ॥
फिरि दुरि दुरिअति रिसि सों नहि नहि । मरे तुरँग गजमानुष
गहिगहि ॥ दोऊलगे दुहुनपै डारण । जिमि तरु शाखहिरद





हँ वारण ॥ सो लखि कृष्ण बिजय अभिलाषे । टेरिघटोत्कच
सों इमिभाषे ॥ तुम सूतजसों रण परि हरिकै । शीघ्रबधौ यहि
असुरहि लरिकै ॥ सो सुनि भीमतनय धनुधारी । असुरनाथ
सों भिरो प्रचारी ॥ मत्ताद्विरद सम दोऊ भिरिकै । घोरयुद्धकी-
न्हों तहँ थिरिकै ॥ भीम और रथबर पहँ चढ़िकै । भिरो कर्ण
योधा सों बढ़िकै ॥ बधि असुरन सात्यकि रणचारी । अरुसह
देव नकुल भटभारी ॥ मर्दत भटन शरासन कर्षत । सूतसुवन
पहँगो शर बर्षत ॥ मम भटमाल शरन सों पोहे । पारथरहांको
के सोहे ॥ यहि प्रकार योधादुहुं दलके । भिरि भिरि रहे लरत
अति बलके ॥ भिरियुग असुर प्रबल छल बलमें । कीन्ह्योंघोर
युद्धतेहिपलमें ॥ गर्जिअलायुधबलबिस्तारो । परिघतासुमूरध
मधि मारो ॥ लगेपरिघ कछुमूर्छितह्वैकै । भीमतनय तेहि अ-
सुरहि ज्वैकै ॥ शतघण्टा युतगदा बिशाला । तजतभयो ह्वै
अति बिकराला ॥ दोहा ॥ लगे गदाचूरण भये तुरँगसुरथ अरु
सूत । तबरथ तजि ऊरधगयो असुरबीर मजबूत ॥ गर्जिघूमिर-
हि गगनमधि वर्षो रुधिर पषान । सो माया कीन्ह्यो ब्यरथ भीम
तनय बलवान ॥ पज्झटिका ॥ लखि ब्यर्थ निज माया महान ।
भट अलायुध निशिचर अमान ॥ धरिपरिघ मुद्गरगदाशूल ।
शर शक्तिभल्ल आयुध अतूल ॥ गो शीर्ष अयगुड़ भिण्डि-
पाल । अरु बिबिध बिधिके तरु बिशाल ॥ भट भीम सुतपहँ
दयोपूरि । तब भीमसुत तजिबाणभूरि ॥ करि ब्यर्थ तासु माया
समस्त । तेहि हन्यो बहुत शायक प्रशस्त ॥ तब अलायुधशा-
यक अनेक । भट घटोत्कचहि हन्यो सटेक ॥ बधिघूमि करि
करि धनु बिशाल । रचिदये दुहुंदिशि बाण जाल ॥ यहिभांति
ते युगसुभट उद्ध । नृप कियो तहँ अति घोर युद्ध ॥ दोहा ॥मा-
यावीदोऊ कियो माया बिबिध प्रकार । मायाकरि मायाब्यरथ
कीन्हीं अगणित बार ॥ तब दोऊ अति क्रोध करिगहिगहि

करतल चर्म । तुमुल युद्ध कीन्ह्यों सबिधि ज्ञाता अरिरणमर्म॥
भरे रुधिर श्रमस्वेद सों दोऊ असुर अमान । लसे सुवारिप्र-
बाहयुत युग गिरि शृंग समान ॥ सोरठा ॥ अति बिक्रम तेहि
कालकरि हैडम्ब उदग्रभट । काट्योशीशबिशालबीर अलायुध
असुरको ॥ चौपाई ॥ शीश काटिगहि चिकुरअजोरे । झेलिदि-
यो कुरुपति के धोरे ॥ सो लखि दुर्योधन युत योधन । जरत
बिपिन मधिगोप सगोधन ॥ होत बिकल जिमि तिमि ह्वैपी-
ड़ित । गुणिनिज कर्म भयो अति बीड़ित ॥ सबपांडव पाञ्चा-
ल सोहाये । मोदि बिजय दुन्दुभि बजवाये ॥ जयलहि भीम
तनय भटगाढ़ो । ममदलके सन्मुख ह्वै ठाढ़ो ॥ गर्जिगर्जिमृ-
गराज समाना । भटन सभीत कियो बलवाना ॥ प्रलयकाल
पूर्यो परदलमें । करि अति कोपकर्ण तेहि पलमें ॥ धृष्टद्युम्न
उत मौजाराजहि । अरु शिखण्डि सात्यकिभट साजहि ॥ बेधि
शरन व्याकुलकरि दीन्हों । अगणित भट यमपुरगत कीन्हों ॥
निजदल मर्दत कर्णहि देखी । दीह सुरथपहँ चढ़ि अति तेखी॥
भीम तनयघन सद्दशननर्दत । भिरो कर्णसों सुभटन मर्दत ॥ ते
युगबीर प्रबल रणचारी । घोरयुद्ध कीन्ह्यों पणधारी ॥ अगणित
भांति शरासनकर्षे । बिबिध भांतिके शायक बर्षे ॥ दोऊ दोउन
के शर रूरे । काटि भूमि बाणनसों पूरे ॥ बाढ़ि बाढ़ि दोऊ दुहुन
प्रचारे । दोऊ दुहुन बाण बहुमारे ॥ करि मण्डल समधनुमन
भाये । दोऊदुहुं दिशि शायक छाये ॥ दोहा ॥ निजसम बिक्रम
करत तेहि देखि कर्णगहि गर्ब । दिव्य अस्त्रसों बधतभो तासु
सूतहय सर्ब ॥ बिरथ भीमसुत गगनगत ह्वै कै अन्तरधान ।
बर्षो पट्टिश शक्तिशर उलका गदा पषान ॥ खड्ग भल्लमूशल
परिघ तोमर परशुअनेक । अशनि बज्रआयुधघने बर्षत भयो
सटेक ॥ सोरठा ॥ तहां कर्ण दृढ़घाय निज रक्षणमें बिकलभो ।
बर्षिबाण समुदाय राखिसको नहिं सकलदल ॥ भुजंगप्रयात ॥रथी





गली मैगलै बाजिसादी । तुरी औरथीपैदरै बीरबादी ॥ अ-
कै मरेऔ डरे अंगभंगै । घने भीतपूरे भगेत्यागि संगै ॥ अ-
कै परे पाहिरे पाहिबोलैं । घने नैनमूंदे धरे धीर डोलैं ॥ घने
रुरेमारुरे भाषि घूमैं । अनेकै जरे लोहकेझार झूमैं ॥ दोहा ॥
हि प्रकार पार्‍यो प्रलय ममदल मध्यसटेक । मायावीराक्षस
बल बरणो जाकहँ एक ॥ प्रगटितह्वै अगणित असुर बरषे
आयुध सर्ब । हाहाधुनि कीन्हें बिकल सिगरे भटतजि गर्ब ॥
ठा ॥ क्षणमें योद्धा भूरि मरे परे घायल बहुत । गयो महाभय
रि सबके मन निज मरण गुणि ॥ चौपाई ॥ जिमि पषाण बर्षत
यूती । पाय अटक्ष देश गब्यूती ॥ बिकल होत तेहि बिधि
नुत्राता । बिकलभयो ममदलबिख्याता ॥ नभतेआयुधबर्षत
खी । कहतभयेसबभटअवरेखी ॥ पांडवकेजयहितगुणिमनमें ।
पतअस्त्रसुमन यहिक्षनमें ॥ अब जयजीवन की नहिंआसा ।
असुरसों भागि बचैं केहिपासा ॥ इतनेमें राक्षस रणचारी । दु-
तर दिव्य सुअस्त्र प्रहारी ॥ बधि सूतजके रथके बाजी । बर्षे
दा शक्तिकी राजी ॥ रथतजि सूततनय भट नायक । बर्षि
असंख्यन मंत्रित शायक ॥ काटि काटि सब आयुध फरमो ।
हो सधीर नेक नहिं भरमो ॥ तेहिक्षण इतसब नृपतिसकाने ।
र्णहिं तासों बचन न जाने ॥ टेरि टेरिसूतजसों भाखे । शक्ति
सवी केहिहित राखे ॥ यहि क्षण अब न बचत तुम यासों ।
र्थहि कौन बधिहि फिरि तासों ॥ पहिले निज रक्षण करिली-
। तदनु शत्रु बधको प्रणकीजै ॥ ताते मारि शक्तिवहभारी ॥
यो यहि निज बिजय बिचारी ॥ सुनि सूतज करतब्य बिचा
यो । शक्ति अमोघ असुर पहँ डार्‍यो ॥ बज्र समान लागि
ो आसू । नभगति भई बधि हिय तासू ॥ दोहा ॥ घूमि गर्जि
त प्राण ह्वै महिगत भोअसुरेश । शतसहभट दबि मरत भे
ह गिरो जेहि देश ॥ मोदित ह्वै कौरव नृपति जय दुन्दुभि

बजवाय । भयो प्रशंसत सूतजहि रथपहँ शीघ्रचढ़ाय ॥ सोरठा ॥
असुरहि मरत निरेखि ब्यथित भये पांडवसकल । कृष्णचन्द्र
अवरेखि कुशल जानि मोदित भये ॥ महिखरी ॥ सुरनाथ दीन्ही
शक्तितासों मरत असुरहि देखिकै । उठि कृष्ण हँसिहँसि लगे
नित्तन क्षेम बिधि अवरेखिकै ॥ तहँमुदित कृष्णहि देखिअर्ज
रज जानि इमि अर्जुन कहो । यह महत दुखको समयतहँ केहि
हेत तुम आनँदगहो ॥ सोकहोजाते मिटै संशयकृष्ण यह सुनि
कहतभे । नृपधर्मअब यहिसमयतुम कहँकुशललहि जयलहतले
भे ॥ यह शक्ति परम अमोघतो बध हेतहो अर्जुन करे । सोगई
अब तुम बचे काभो रजनिचर पतिके मरे ॥ तो अजयकी मन
हिये संशयरही सो यहि क्षणगई । यहिहेत मोदितभये हम जो
चहतहै सोबिधिभई ॥ वहिकवच कुण्डलशक्ति यहिबिनु सूत
सुतक्रमसोंभयो । सोधर्मनृपको भाग्यतो चिरकाल जीवन क्रम
जयो ॥ तिन सहित रहतो कर्णतो यमबरुण सुरपतिआदिकै
नहिं पावते जय कबहुं लरिबहु द्यौस सरस अमादिकै ॥ अब
सूतजहि बधि युद्धमें तुम अवशिजय कीरति लहौ । सबभूमि
भोगत धर्म नृपतिहि देखि अति आनँद गहौ ॥ दोहा ॥ जो न
जात यहि भांति इत बधि यह असुर अधर्म । तौहमकहँ बधि
बो परत करि दुस्तर रण कर्म ॥ दुःशासन अरु शकुनि अरु
दुर्योधन क्षितिपाल । सब निशिमें राधेयसों कहत रहे लहिना
ल ॥ दीन्ही शक्ति अमोघ जो शक्रताहि तुम वाहि । बधौ कृ
ष्णके अर्जुनहिं सादर मम जयचाहि ॥ सोरठा ॥ पै वह तुमकहँ
जोहि भूलिजातहो बचनवह । मम मायासों मोहि सुनोभूप सि
द्धान्त यह ॥

द्रोणपर्ब्बणिचतुर्थदिवसेरात्रियुद्धेघटोत्कचबधोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३

दोहा ॥ भीमतनयको मरणसुनिशक्तिब्यर्थअनुमानि । कहत
भये धृतराष्ट्र नृप सुख बिषाद उरआनि ॥ रोला ॥ सिंधुपति के





रण सौं रिसि भरे मामकबीर । असुरपतिके मरण सों भीमा-
भट रणधीर ॥ लरेकिमि सो कहो संजयबचन यहसुनिभूप।
यो संजय तदनु जैसो भयो युद्ध अनूप ॥ घटोत्कच को बध
रखि अरु बिकल लखि निज सैन । कह्यो भीमसुबीर सों
मिधर्म नृपति अचैन ॥ प्रबलह्वै पर सुभट मर्दत सैन मम
बदात । शीघ्र आड़हु तिन्हैं तुम करि बिशद बिक्रम तात॥
टोत्कच को मरण लखि भो मोहबशमम चेत । भाषि इमि
ल तज्यो चषतेधर्मधर्मनिकेत ॥ कृष्ण नृपतिहि देखिबिकल
यो इमि समुझाय । भूप ब्याकुल होहु मति धरि धीर लरहु
चाय ॥ तुम्हैं बिकलभये जयबिधि नशिहि यह अनुमानि ॥
रि कीजै शोक ताको मरब मंगल जानि ॥ कृष्ण के सुनि ब-
न भूपति पोंछि नयनजनीर । कहो हो मोहिं परम प्रिय यह
मिसुत रण धीर ॥ काम्य बनमें जाय यह बहु कियोमम प्रि-
काम । गन्धमादन अचल बरपहँ चढ़तयहबल धाम ॥ द्रौ-
दिहिलै कन्धपै तहँ देतहो पहुंचाय । कियोममउपकार कित-
युद्धमें इत आय ॥ बालपनसों मोहिं याको लगतहो अति
ह । रहोहो ममभक्ततातेभयो अतिशयमोह ॥ द्रोण दुर्योधन
रणये बर्षि बाणबिभात। बरधिमर्दतसैन मम नहिंसहो मोसों
ात ॥ पाइअभिमन्युहि अकेलो द्रोण कर्ण अशर्म । काटिध-
बधि तुरगसूतहि काटिखङ्गसुचर्म॥ दयेतहँ बधवाइतेनाहिंगये
धि अफसोश । सिंधुपति बधिगयो जाको रहो सूक्षम दोश॥
ोण सूतज जाहि बधि सो करौ यह मम मंत्र । द्रोण सों भिरि
रत यहिक्षण जाइ भीमस्वतंत्र ॥ जातहैं हम कर्ण सों अब
रन यहि बिधि भाखि । धर्म भूपति सूतसुत पहँ चलो अति
सराखि ॥ दोहा ॥ पांचसहसहय सहसरथ त्रयशतमत्तमतंग।
हितशिखण्डी तहँ चलो धर्म नृपतिके संग ॥ अति अमरष
शकर्ण पहँ धर्महिं जात निहारि। आइतहां नृपसों कह्योऽव्यास

मुनीश बिचारि ॥ मरो शक्तिसों असुर सो बचो फाल्गुणबीर ।
यह बिचारिनृपशोक तजिमन में आनहुधीर ॥ सोरठा ॥ तुम
न कर्णपहँ जाहु पार्थ लरिहि अब कर्ण सों । तुम्हैं बिजयमहि
लाहु होइहि बीते पांचदिन ॥ चौपाई ॥ इमिकहि ब्यास मुनीश
महाना । भूप भये तहँ अन्तरध्याना ॥ सोसुनि धर्म नृपति अ-
नुमानी । धृष्टद्युम्नसों कह्यो सुबानी ॥ कुम्भयोनि द्विजके बध
हेतू । द्रुपदहि तुम्हैं दियो वृष केतू ॥ तुम्हैं न नेकु द्रोणसों डर
है । तासुनाश निर्मितसो करहै ॥ ताते सदल जाययहि क्षनमें ।
लरो द्रोणसोंबध गुणि मनमें ॥ सात्यकि सहदेव नकुल ससा-
जा । द्रुपद बिराट आदि सब राजा ॥ सादर जाहु द्रोण सों
लरहू । होइ तासुबध जिमिसो करहू ॥ सुनि नृपबचन सकल
भट नायक । चले द्रोणपहँ बर्षत शायक ॥ तिन कहँ देखिद्रोण
धनु करषो । सबपहँ अबिरल शायक बरषो ॥ ससयन दुर्यो-
धन बढ़ि तत्क्षण । लागे करन द्रोणको रक्षण ॥ इतने में युग
याम त्रियामा । भई ब्यतीत काल निशि नामा ॥ अति निद्रित
ह्वै नर हय हाथी । सकैं न देखि शत्रुअरु साथी ॥ श्रम निद्रा
बश ह्वै दुहुँ दलके । हयगज सुभट गणे बरबलके ॥ चेति न
सकैं युद्धकरि नेकौ । बाहिन सकैं सुआयुध एकौ ॥ झुकैं चेति
उझकैं झुकि उझकैं । परि निद्राबश भये असुझकैं ॥ अति
निद्राबश परि परि गाढ़े । गुणि कुलरीति रहे तहँ ठाढ़े ॥ दोहा ॥
अति निद्रित दुहुसैन के हय गज सुभटन हेरि । समय जानि
अति दयागहि कह्यो धनंजय टेरि ॥ अति निद्रितह्वै सुभट
सब करि न सकत रणकर्म । लखि ज्यों कुरुपति सहितसब नृप
मानहुँ गुणि मर्म ॥ सोरठा ॥ तौसबभट समुदाय ऐसेही थिर
रहि इतै । निद्रालेहिं गँवाय फिरिलरिहैं शशिउदय लखि ॥
जयकरी ॥ तेहिक्षण अर्जुनके येबैन । सुनि सब सुभट लहेअति
चैन ॥ सबकोउ कीन्हों यह सिद्धांत । पार्थहि लगेप्रशंसन दांत ॥





सगरे योधा युद्ध बिहाइ । शयन करन लागे क्षण पाइ ॥ हयपहँ
प्रसादी रणधीर । रथपहँ रथी सारथी बीर ॥ गजपहँ भट ग-
रथ समुदाय । निद्राबश ह्वै रहे सचाय ॥ झुकि कुम्भनमधि
उर भार । सोयरहे गजवान उदार ॥ जिमि उतंग उरजन उर
ाय । कामी सोयरहैं लपटाय ॥ महिपहँ परे पदाती जूह ।
पत भये तहँसुभट समूह ॥ धरे सकल आयुध सन्नाह । सोय
हे सबरण महिमाह ॥ इतनेमें पूरबदिशि भूप । उदयभयो नि-
शनाथ अनूप ॥ अंशु नखनयुत अमल अमान । नभबनचारी
हसमान ॥ गजगण सम तमतुंग बिनाशि । चलो प्रतीची
दिशि छबिराशि ॥ लखि प्रकाश जागि सुभटसमस्त । करन
गे फिरि युद्ध प्रशस्त ॥ जेहिबिधि पथिक यूथलखि भोर ।
हिगहि सुपथचलत सबओर ॥ जाय द्रोणकेढिग तहिकाल ।
कहत भयो तोसुत क्षितिपाल ॥ क्षणक्षण घटतजात मम सैन ।
बलहोत पाण्डवबलऐन ॥ दोहा ॥ जोहैयाको हेत सोहमअब
कहतपुकारि । बिक्रम निज अनुरूप नाहिं आपुकरतप्रणधारि ॥
ो ऐसो धनुधर लरै जो तो सम्मुख आय । आपु चहैंबध
तासुसो लरि कैसे बाचिजाय ॥ सोरठा ॥ दिब्य अस्त्र समुदाय
के ज्ञाता परसिद्ध तुम । कर्णहिं लरि मनलाय लेत बिजय बधि
त्रुदल ॥ चौपाई ॥ यह सुनि द्रोण क्रोधगहि मनमें । कह्यो भू-
पपातिसों तेहि क्षनमें ॥ नृपहम बिप्रवृन्द धनुधारी । यथापरा-
क्रम लरत बिचारी ॥ बिजय न काहूके आधीना । बिधिकृत
होत कहत कालीना ॥ तिहुँपुर में असको दृढ़ घायक । जौन
पार्थकहँ जीतनलायक ॥ जब जाख्यो खाण्डवबन पारथ । सके
आड़िशक्र गुणि स्वारथ ॥ चित्रसेन आदिक गन्धर्बन ।
जीत्यो सुभट धनंजय शर्मन ॥ जे निबात कवची रण चायक ।
जिन्हैं न जीति सको सुरनायक ॥ तिन कहँ बध्यो धनंजय रन
में । हैयह बात बिदित सब जनमें ॥ दानव दल हिरण्यपुर

बासी । तिन्हैं बध्यो सोयुद्ध बिलासी ॥ लह्यो असुर सुरसों
जय ऐसे । नृप तेहि जीतै मानुष कैसे ॥ इमि पूरितगरिमा
धनु गुनकी । सुनि द्विज सों अस्तुति अर्जुन की ॥ क्रोधि
कह्यो दुर्योधन राजा । हम अरु कर्ण शकुनि सह साजा ॥ अ-
बिरल बाण बरषि सब दिशि में । पार्थहि आजु बधब यहि
निशि में ॥ सुनि नृप बचन द्रोण हँसि भाषे । यहै उचित
जो तुम अभिलाषे ॥ तुम तीनौं अनर्थ के कारण । करो
पार्थ बधको पण धारण ॥ पैनाहिं अस भट रच्यो बिधाता ।
बधै ताहि जो धनुबिधि ज्ञाता ॥ दोहा ॥ निज जयहित तुमसैन
सह लरो पार्थसों जाय । हम नाशब पांचालदल करिअति
शयव्यवसाय ॥ इमि कहि सुनि द्वै यूथकरि दुर्योधनअरुबिप्र-
चले पार्थ पाञ्चालपहँ आयुध बर्षत क्षिप्र ॥ सोरठा ॥ बाढ़िपांडव
पाञ्चाल भिरितिनसों बर्षै बिशिख । अनुपम शायक जाल
बिरचतभे तेहि क्षण तहां ॥ चौपाई ॥ तब रहिशेष रजनि छबि
छाई । पूरबदिशि पसरी अरुणाई ॥ अद्भुत युद्धभयो तेहि प-
लमें । घोरशब्द माचो दुहुं दलमें ॥ तेहिक्षण कृष्णचन्द्र रण
चारी । मम दक्षिणदिशि गये बिचारी ॥ तहँ पारथ बिक्रम बि-
स्तारो । प्रलयकाल ममदल मधि पारो ॥ सो लखि कर्ण शकु-
नि दुर्योधन । शरबर्षै करि धनु बिधि शोधन ॥ काटि सकल
शर तिनके डारे । पार्थ तिन्हैं दशदश शरमारे ॥ ते पारथपहँ
तिनपहँ पारथ । अबिरल शर बर्षै गुणि स्वारथ ॥ तेहि प्रकार
सब योधा भिरिभिरि । घोरयुद्ध कीन्ह्योतहँ थिरिथिरि ॥ तेज
बायु महँ रजकन जैसे । उड़त सुभट शर बर्षै तैसे ॥ मारेकितैं
मरेभट केते । बहुह्वै बिरथमल्ल रणहेते ॥ बहु बिनुरथ धनु
ह्वै रिस पागे । गहि असि चर्म लरन तहँ लागे ॥ ह्वै बिनु
बाहन कितने योधा । किये सबाहन को अवरोधा ॥ साथहि
शर हनि हनि मरिमरिकै । कितलसे महिपैपरिपरिकै ॥ गर्जत





कितै धनुष टङ्कारत । बिलसत भये भटन संहारत ॥ बिनु हय
गज ह्वै ह्वै तजिबाहस । कितने सुभट भये बिनु साहस ॥
धनुष कराषि शर तजन न पाये । भिरिमरि किते भूमिपैआये ॥
दोहा ॥ मारौमारु बचाय यह शब्द रह्यो तहँपूरि । बिनुकरशिर
पग होतभे हय गज योधाभूरि ॥ उत्तर दिशिपर भटनसों भिरि
द्विज बीर अचार्य । मंडलसम कोदण्ड करि कियो अमानुष
कार्य ॥ सोरठा ॥ अबिरल शायक छाय कम्पितकीन्हों परशयन ।
हय गज भट समुदाय अंग भंग करि बेधि बधि ॥ चौपाई ॥ दावा-
नलसम परदल बनमें । बिलसत भयो द्रोण तेहि क्षनमें ॥ जि-
तनेसुभट सामुहें आये । ते मनु भये कालके खाये ॥ कितने
सुभट शत्रु दल केरे । इत उत भगे न सम्मुखहेरे ॥ भिरे
प्रचारि क्रोधबशकेते । होहिं अनलगत तृण सम तेते ॥ इमि
निज सेना मर्दत देखी । भिरे बिराट द्रुपदअति तेखी ॥ तीनि
पउत्र द्रुपद नरपतिके । हैं प्रसिद्ध योधाबल अति के ॥ ते शर
वृष्टि द्रोणपहँ कीन्हें । तिन्हैं बध्यो द्विज हनिशरचीन्हें ॥ सो
लखिते युगनृप नरनायक । द्रोण बिप्रपहँ बरषे शायक ॥ काटि
काटि बहुबाण अनोखे । तिन्हैं हन्यो द्विज बहुशर चोखे ॥ हनि
बिप्रहि बहुबाण प्रचारी । बिकलकियो ते नृप रणचारी ॥ तहां
द्रोण अति धनुबिधि ठाटे । द्रुपद बिराटके रथधनु काटे ॥ तुरत
बिराट और धनु गहिकै । दशशरहने भागु मति कहिकै ॥ त-
ड़िता सरिश भयानक वेशा । शक्ति चलायो द्रुपद नरेशा ॥
एक एकमें बहुशर हनि हनि । द्रोणाचारय काट्यो गनिगनि ॥
फिरि युगभल्ल हन्यो अति तुरमें । द्रुपदबिराट भूपके उरमें ॥
तिनसों बेधितह्वै ते राजा । गेसुरपुर तजिसैन समाजा ॥ दोहा ॥
द्रुपद बिराटहि मरतलखि परदल भट समुदाय । हाहाकीन्हों
त्रसितह्वै गुणि द्विजको व्यवसाय ॥ बिबिध भांतिके दिव्यशर
बर्षत द्रोणहिं देखि । धृष्टद्युम्न अति क्रोधगहि शपथदिव्य अ-

अरेखि ॥ सोरठा ॥ हटैद्रोणसों जौन अरु जो द्रोणहिं नहिंहनै।
अवशि होइगो तौन बुद्धिइष्ट निज धर्म्म बिनु ॥ चौपाई ॥ इमि
कहि धृष्टद्युम्न रणचारी । सदल द्रोणसों भिरो प्रचारी ॥ सो
लखि कर्ण शकुनि दुर्योधन। बढ़ि तिनको कीन्हों अवरोधन ॥
सो लखि भीमसेन गुणि मनमें। कह्यो द्रुपद सुतसों तेहि क्ष-
नमें॥ बधि तो पिता पुत्र आचारय। दलमर्दत कुरुपतिके का-
रय ॥ शपथ तासुबधको तुम कीन्हों। अवकेहि परखत अ-
जुतालीन्हों ॥ अब हम मर्दि शत्रुदल दीहा । जात द्रोण पहँ
गहि जय ईहा ॥ जिमि हम लरत द्रोणसों भिरिकै । सो अब
तुम निरखौ इतथिरिकै ॥ इमि कहिकै घनसद्दशननर्दत। चलो
द्रोण पहँ ममदल मर्दत ॥ धृष्टद्युम्न कोदण्डहि कर्षत । चलो
तासुसंग शायक बर्षत ॥ द्रोणानीक मध्यते धसिकै। गजगण
मधि केशरि समलसिकै ॥ घोरयुद्ध कीन्हों तहँ राजा । बधे अ-
संख्यन सैन समाजा ॥ तिमि सिगरे इत उतके योधा। बढ़ि
बढ़ि भिरि करि करि अवरोधा ॥ तजि तजि बचिरहिबे की
आशा। कीन्ह्यो अद्भुत युद्ध बिलाशा ॥ भोचट चटा शब्दतहँ
गाढ़ो। लगो दवा बनमें जिमिडाढ़ो ॥ रविके उदयहोत तहँ
जैसो। भीषम युद्ध भयो नृप तैसो ॥ इत कोउ लख्यो सुन्यो
नहिं कबहूं। देख्यो सुन्यो परत नहिं अबहूं॥ दोहा॥ श्रीसीता
पति रामकहि सरुचि ध्यानके काल। जीव असंख्यन देहतजि
पाये लोकबिशाल ॥

इतिमहाभारतदर्पणेद्रोणपर्वणिरात्रियुद्धसमाप्तिर्नामचतुर्दशोऽध्यायः१४॥

दोहा ॥ चौथे दिनकी निशिबिते पाय भयानकभोर। उभय
सैनके सुभट भिरि युद्ध कियेअतिघोर ॥ रथी रथिनसों भिरत
भे गजी गजी सरदार। पैदर पैदर सों भिरे तुरग तुरग अस-
वार ॥ चौपाई ॥ बन्धुनसह दुर्योधन राजा । भिरे नकुल सहदेव
ससाजा ॥ भिरो भीमसों कर्ण सुयोधा। भिरो पार्थसों द्रोण





कोधा ॥ यहि बिधि सुभट परस्पर भिरि भिरि । घोरयुद्ध की-
ों तहँ थिरि थिरि ॥ घन समाननभ आयुध छायो । निशि
म अन्धकार मढ़ि आयो ॥ अतिशय घोरशब्दभो पूरित।
हीरुधिर की नदी अधूरित॥ तेहिक्षण दुःशासन धनुधारी ।
द्रीसुत सों भिरो प्रचारी ॥ माद्रीसुत सहदेव अमाना ।
र्यो तासु सूतहि हनि बाना ॥ बिना सूतसब हय भय पागे ।
थलै इतउत दौरन लागे ॥ भट सहदेव हन्यो तेहि क्षनमें ।
अगणित शर तोसुतके तनमें ॥ दुःशासनअति तुरतालीन्हों।
गपकरि तुरगन बश कीन्हों ॥ भीम कर्णपहँ शर झरिकरिकै।
्यो तीनि शायक पण धरिकै ॥ बेधित ह्वै सूतज बलवाना।
ो पग परशित उरग समाना ॥ सुभट भीम पहँ शायक बर्षो।
ो लखि दुर्योधन अति हर्षो ॥ दोऊप्रबलगने दुहुंदलमें।घो-
युद्ध कीन्ह्यों तेहिथल में ॥ दोऊ गदा दुहुनपै डारे । दोऊगदा
दन सों वारे ॥ भीम कोपि बर गदा चलायो । करन शरनसों
ाहि गिरायो ॥ दोहा ॥ भीमगर्जि फिरितजतभो गदा कर्णतेहि
खि। हनि मंत्रित अगणित बिशिख पलटाई अवरेखि ॥परी
ीमके सुरथपै मंत्रित उरग समान। ध्वजाभंगभो भीमको मु-
ैंतसूत सुजान ॥ सोरठा ॥ तब गहिधनु हनिबान भीमसेनअ-
ति प्रबलभट । काटत भयो महान धनुष ध्वजाभट कर्ण को ॥
पाई ॥ तुरतहि कर्ण और धनु गहिकै। शायक वर्षिभागुमति
कहिकै॥उभयपासके सूतन मार्यो। तुरगन मारिभूमिपै डार्यो ॥
ीम कूदि द्वै डग धरि पथपै । सादर गयोनकुलके रथपै ॥यहि
बिधि द्रोण पार्थ धनुधारी। कीन्ह्यों तहांयुद्ध अतिभारी ॥क्षत्री
ब्राह्मण शिष्य आचारय। कीन्ह्यों तहांअमानुष कारय ॥मण्ड-
ल सद्दशशरासन करि करि। फिरत चक्रसमरथपै चरिचरि ॥
अतिशय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हें। सब के मन बिस्मित करिदी-
न्हें ॥ गर्जि २ अति रिस सों पूरे । बर्षत भये दिव्य शररूरे ॥

तजे अचार्य्य दिव्य शर जेते। पारथ मारिदिव्य शर तेते॥
स्यो द्विजबर के शर सिगरे। पृथकपृथक् कहिजात न निगरे॥
यहि प्रकार दोऊ धनुधारी। कीन्ह्यों तहांयुद्ध अतिभारी॥
खिगन्धर्ब सुमनमुदराखे। इमिबहु बार परस्पर भाखे॥ कबहुँ
न देव दनुज नरकोऊ। लरेलरत जिमिये भट दोऊ॥ जो शिव
आपु दोयतन धरिकै। युद्धकरैं अति रिस सों भरिकै॥ तौइन
के लरिबेकी समता। मिलैन तरु है सब में कमता॥ नहिं अब
ऐसे योधा ह्वैहैं। फेरि न ऐसो संगर ज्वैहैं॥ दोहा॥ यहिप्रकार
दोऊ सुभट महा क्रोधसों पूरि। क्रियो घोर संग्राम तहँ बर्षिदि-
व्य शर भूरि॥ यहिप्रकार लरिभिरि तहां सिगरे भटसमुदाय।
बधिहय गजनर रुधिरकी नदी दई उमगाय॥ सोरठा॥ इबिधि
घोर संग्राम मचे शरासन करषिकै। दुःशासन बलधाम धृष्ट-
द्युम्न सों भिरतभो॥ चौपाई॥ धृष्टद्युम्न अनुपम रणचारी। ताहि
असंख्यनबाण प्रहारी॥ बिचलित करिघन सदृशननर्दत। च-
लो द्रोण पहँ ममदल मर्दत॥ तासों भिरत भयो कृतबर्मा।
अरु तुम्हार त्रयपुत्र अभरमा॥ सहदेवनकुल तासुसंगलागे।
हैं तहँ लरत बीर रस पागे॥ घोरयुद्ध माचो तेहि पलमें। मरे
असंख्यन भट दुहुंदलमें॥ सो लखि दुर्योधन धनु कर्षत। चलो
द्रुपद सुतपै शर बर्षत॥ तेहिक्षण कोपि सात्यकी योधा। बाढ़ि
ताको कीन्हों अवरोधा॥ देखि सात्यकिहि तो सुत भूपा। कहत
भयो इमि बचन अनूपा॥ हम तुम सखा बालपन केरे। कल
न रहत हेरहे अनेरे॥ सो अब इमि भिरि करतलराई। त्यागि
त्यागि सब नेह सगाई॥ धिगधिग धिग क्षत्रिनके कर्महिं। धिग
अमर्ष अरु क्रोध अधर्महिं॥ जेहि बशह्वै मित्रनसों लरनो।
परत परत अति अनरथ करनो॥ सुनि बोलो सात्यकि रण
चारी। सुनु हे राजपुत्रधनुधारी॥ नहिंयह राजसभाअविवरहै।
नहिं द्रोणाचारयको घरहै॥ यह रण क्षत्रिनके हितकारी। देन





वा..र सुरपुर फलचारी॥ क्षोहमोह नाहिं इतभलभाई। हैइतमा-
..ब मरब भलाई॥ दोहा॥ इतको हित हठि मित्र कहँ बधिदीबो
..रलोक। यह गुणि मम बधहित करहुबिक्रमहे बलओक॥यह
..नि भूपति मोह तजिगहि अति क्रोध सगर्ब। गर्जि सात्यकी
भटपहँ बर्षो बिशिख अखर्ब॥ सोरठा॥ दोऊ अबिरल बान
..उन पै बरषे तहां। क्रियो घोर घमसान दोऊ योधा प्रबल
..ट॥ जयकरी॥ दोऊ अद्भुत धनु बिधि ठाटि। अगणित बाण
..रस्पर काटि॥ अगणित बाण दुहुँन के गात। मारे दोऊ भट
..वदात॥ दोऊ बिदित बीर बलधाम। कीन्हों तहां घोर सं-
..म॥ सात्यकिके बाणनसों पीड़ि। दुरिनिजदलमाधि भूपति
..ड़ि॥ फिरि ह्वै स्वस्थ सामु हे जाय। युद्ध करन लागे शर
..य॥ कर्ण भूपतिहि सामित निरेखि। चलो सात्यकीपहँअति
..खि॥ सो लखि गरजि भीम बलवान। भिरो कर्णसों बर्षत
..न॥ भीम कर्ण योधा अतिउद्द। कीन्हों तहां भयानक युद्ध॥
..तज कोपि काटि धनुतासु। गरजो मारि सारथिहि आसु॥
..ब हनि गदा भीम भट बक्र। तोरो एक तासु रथचक्र॥ एक
..क युत रथपै धीर। रबि सम राजिसूत सुत बीर॥ रहि नि-
..शंक कराषि कोदण्ड। बरषत भयो बाण अति चण्ड॥धनुध-
..भीम क्रोधसों पूरि। तज्यो कर्णपहँ शायक भूरि॥ दोऊ बिक्रम
..द्धि निकेत। बिरचे अबिरल शायक सेत॥ तिमि इत उतके
..धा सर्ब। रचत भये तहँ युद्ध अखर्ब॥ पारथआदि शत्रुदल
..न। लरि लागे मर्दन मम सैन॥ दोहा॥ धृष्टद्युम्नआदिकप्र-
..ल जे योधा पांचाल। ते सिगरे भिरि द्रोण सों कीन्हों युद्ध
..शाल॥ दिव्य अस्त्र समुदाय को शीक्षकद्रोणाचार्य्य। सुनो
..प तेहि सैनमें कियो अमानुष कार्य्य॥ सोरठा॥ बर्षिदिव्यशर
..रि अगणित हय गजभटन बधि। दियो काल दिनपूरिबिच-
..काल बिकराल सम॥ रोला॥ बिकल ह्वै पांचाल भट तहँ

किये आरतनाद। पूर्वसिन्धुहि मथतजैसे व्यथितभे सबयाद॥ धर्मके। कहत भये समुझायबिजय अजय तो हाथ अब॥ रोला
द्विजहि बर्षत दिव्य शर लखि बिकल निजदल देखि। पार्थसों आजु जीयत बचहि जो भट द्रोण तौ बलऐन। दिव्य शायक
इमिकहतभे यदुनाथ प्रभुअवरेखि॥ द्रोणकरि झरि दिव्यशर बर्षि तुमकहँ करिहि अवशि असैन॥ इतौ मिथ्या कहौ सोऊ
की बधतअब सबसैन। जीतिताकहँ बधैजगमें कौनअस जग धर्मको उपचार। भूप ताते बाचिहैं इतजीव कइक हजार॥ कृ-
जैन॥ सुजयहितधनुगहेजौलगिलरतद्रोणाचार्य्य।नहींतौलगि ष्णके इमि कहत बोले भीम बचन अनूप। जौन मालवदेश
सिद्धकैहै धर्मनृपकोकार्य्य॥ एककथाकेमरणकीहैयत्नसुनियेतौन को पति इन्द्र बर्मन भूप॥ रहो अश्वत्थाम नामक तासु द्विरद
पुत्रकोसुनिमरणजबधनुतजैयहबलभौन॥ बधैयहितबद्रुपदसुत अमान। ताहि बधि हम आजु ऐसो कियो शोर महान॥ मारि
भटधृष्टद्युम्नअमान। कृष्णकेयेबचनसुनिकै भीमकरिअनुमान॥ अश्वत्थामकहँ हम दियोमहिपै डारि। द्रोण नहिं परतीति की-
बाहि गरुई गदा बिधिकै द्विरद अश्वत्थाम। बध्यो अश्वत्था-हाँ मोहिं झूंठ बिचारि॥ सुनो ताते कहत केशवताहि गुणि
म कहँ इमि कियो शब्द अछाम॥ द्रोणसो सुनि क्षोहबश कछु हित आम। द्रोण सों तुम कहौ मारोगयो अश्वत्थाम॥ भीमके
मोह मनमहँ ल्याय। फेरि धीरज गह्यो गुणि निज पुत्रको बचन सुनिकै धर्म नृप अनुमानि। सुखद शासन कृष्ण को
व्यवसाय॥ जानि मिथ्या तासु जल्पन महा रिससों पूरि। त-करतव्य अतिशय जानि॥ गहेभीम असत्यको गुणिसत्यजय
जतभो पांचाल दलपै दिव्य शायक भूरि॥ ब्रह्म अस्त्र प्रयोग कोहेत। द्रोण सों इमिकहतभे नृपधर्मधर्मनिकेत॥ दोहा॥ अश्व
करि बधि रथी बीस हजार। सहसगज बधि बध्यो अयुत सु-थामा बधिगयो इबिधि पुलित स्वर भाखि। कुंजर इमिफिरि
बीर तुरँग सवार॥ भल्लसों बसुदान नृपको काटिशीशसडौर कहतभो ऋजु उचार ढिगराखि॥ नृपके ऐसे बचनसुनि द्रोण
पंचशत भट मत्स थरके बधतभे तेहिठौर॥ सुभट संजय देश सांच अनुमानि। पुत्र शोकते बिकलभे निज मरिबो उरआनि॥
के षटसहस बधि तेहि काल। कियो भीषमरूप धरणिहि द्रोण सोरठा॥ द्रोणहिं बिकल निरेखि धृष्टद्युम्न पांचालपति। बध
बीर बिशाल॥ करत दावानल सदृश तरु क्षत्रियनको नाश। करिबो अवरेखि शर अमोघयोजित कियो॥ चौपाई॥ ज्वाल
देखि द्रोणहि आइ नभपै ऋषय ताके पास॥ अत्रि बिश्वामित्र माल समदीप्त कराला। लखिसो दिव्य सुबाण बिशाला॥
गौतम जामदग्निमहान। औरबिश्वामित्रकश्यप आदिसुमुनि तासुबारिबे में रहिसयतन। बार्योद्रोण मारिशरबरतन॥ भिरि
सुजान॥ द्रोणसोंइमि कहतभे तुमकरत युद्धअधर्म। नहीं तुम दोऊभट अमरष लीन्हें। दिव्यशरनकी बर्षाकीन्हें॥ द्रोणतहां
कहँ उचित ऐसे करब अनुचितकर्म॥ दिव्यअस्त्र अमोघकेजे प्रति धनुबिधि ठाट्यो। शरसों तासुधनुष ध्वजकाट्यो॥ धृष्ट-
नहींजानतभेद। दिव्यशरसों बधत तिनहिं न गहत तुम निर द्युम्न तबबर धनुधारी। बेध्यो द्विजहि मारि शर भारी॥ द्रोण
वेद॥ दोहा॥ प्राप्तभयोतो मरनदिन अबमतिकरोअधर्म।तजि करि बरभल्ल प्रहारी। काट्यो धनुबर तासु प्रचारी॥ फेरि बर्षि
आयुध साधन करहु देह पतन के कर्म॥ मुनि गणके ये बचन शायक अनियारे। बाधिहय तासु भूमिपहँ डारे॥ बिरथ बिधनु
सुनि द्रोण बिप्र अनुमानि। सुतबध बूझ्यो धर्म सों अति सत-भव सों भट कैकै। गहि असिचर्म क्रोधसों ध्वैकै॥ करत पैतर
बकता जानि॥ सोरठा॥ तेहि क्षणश्रीयदुराय जाय निकट नृप कहइसाबिधिकै। चालो रचत बाणभट सिधिकै॥ सो लखि

द्रोण बीर बलधामा । तज्यो अस्त्र बैतास्तिक नामा ॥ नृपतेहि
क्षण सात्यकि भटनायक । काट्यो ताहि मारि दशशायक ॥ ल-
खि सात्यकिको कर्म अमानुष । भये प्रशंसत सिगरे धानुष ॥
काटिअस्त्र बैतस्तिकनामहिं । लियोबचै दलपति बलधामहिं ॥
तब कृपकर्ण भूप दुर्योधन । कोपि तासु कीन्हों अवरोधन ॥ अरु
भट बिष्वक्सेन अमाना । घेरिलगे बरषन बर बाना ॥ तेहिथर
सात्यकि सबसों भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्ह्यों तहँ थिरिकै ॥ दोहा ॥
तेहिक्षण बन्धुन सहित बढ़ि धर्म महीप अमान । कर्णादिक
सों भिरतभे बर्षत अबिरल बान ॥ धृष्टद्युम्न अरु द्रोणतहँ धनु
धुनिसों दिशिपूरि । घोरयुद्ध कीन्हों तहां बर्षि दिव्यशर भूरि ॥
सोरठा ॥ द्रोणाचार्य्यहि देखि अति दुस्तर बिक्रम करत । भीम-
सेन अवरेखि कहत भये द्विज द्रोणसों ॥ रोला ॥ हेत कुरुपति
भूपके तुमकिये बहु व्यवसाय । बिप्रअब कतनिठुर ह्वै इमि ब-
धत भट समुदाय ॥ पुत्रको सुनि मरण अबहूं गहत नहिं निर
बेद । जासु मरिबो सुनेभो मम भटनहूंकहँ खेद ॥ परम धनुधर
प्राणसम प्रियपुत्र तासुबिनाश । सुनेहु अबनिज जीयबेकीगहे
हौ तुम आश ॥ पञ्चदशकम बरषशत यहि भूमिपै करिभोग ।
तरुण सुतको मर्णसुनि नहिं तजतशस्त्र प्रयोग ॥ भीमकोसुनि
बचन द्विज अति शोकसों ह्वै ग्रस्त । कर्ण कृप तो तनयनृपसों
कह्यो बचन प्रशस्त ॥ सुजयहित सब पाण्डवनसों लरेहु सब
लसयत्न । होइ तुवकल्याण पावो बिजय अनुपमरत्न ॥ तजत
हैं हम अस्त्र ऐसो भाषि योधा बिप्र । धनुष आदिकअस्त्र रथपै
राखिदीन्हों क्षिप्र ॥ परमयोगी योगबिधिसों साधि प्राणायाम ।
ध्यानधरि परमात्माको लसतभो अभिराम ॥ समय लहि तब
धृष्टद्युम्न सुखड्ग गहिरथ त्यागि । बेगसों चलि द्रोणके ढिग
गयोबधहित लागि ॥ जायताके सुरथपै तेहिखड्ग बाहतहेरि ।
बधौं मति गहि जियत ल्यावो पार्थभाष्यो टेरि ॥ क्रोधबशसुत





द्रुपदको नाहिं सुन्योसो आह्वान । काटि असिसों शीश द्विजको
नदतभो बलवान ॥ केशगहि सो शीशदीन्हों झेलि मम दल
माह । देखि सो इतकिये हाहाकार सब नरनाह ॥ सुभट बर्णे
बीर तेऊ भगेतजि उत्साह । यथा टूटतबांधके काढ़िचलत बारि
प्रवाह ॥ द्रोणजाय नक्षत्र पथपै लहोस्वर्ग अनूप । व्यासमुनि
की कृपाते सो लख्योहम हे भूप ॥ शल्य कृप वृषसेन शकुनि
उलूक अरु कृतबर्म । भगेगहि अति भीमभट दुःशासनादिक
पर्म ॥ चेदिकेकय अरु प्रभद्रक सह शिखण्डी बीर । रहो तिन
सों लरत अनतहि द्रोणसुत रणधीर ॥ तहां सो यहि ओर सुनि
अति घोर शब्द समाज । जानि बिचलत फौज नृपकी दुचित
ह्वै द्विजराज ॥ कछुक लहि अवकाश उतसों भूपकेढिगआय ।
कह्यो सेना भजतिकत कत दुचित नृप समुदाय ॥ शोकपूरित
भूपनाहिं कहि सको गहि अतिलाज । कह्यो कृपसों कहो जैसो
भयो अनरथकाज ॥ बचन यह सुनि कृपाचारय कह्यो क्रमसों
सर्ब । गयो बधि जिमि धनुर्द्धर मणि द्रोण बीर अखर्ब ॥ मरण
सुनि निज जनकको ह्वै बिकल अश्वत्थाम । धीर धरि फिरि
गहतभो अति क्रोधबल बुधिधाम ॥ दुन्दुभी बजवाइ योधन
सहित बर्षत बान ॥ जूटि फिरि परभटनसों भोकरत अति
घमसान । द्रोणसुत तेहि समय गुणि अरिसैन नाशन योग ।
अस्त्र नारायण दुसहको भयो करत प्रयोग ॥ भयो ताक्षण
शत्रुदल मधि प्रलयकाल समान । लगे निपतन तुरँग गज
गण भूरि ह्वै गतप्रान ॥ पाण्डवी दल मध्य तेहि क्षणभयो
हाहाकार । पार्थसों तब कह्यो इमि गुणि धर्मभूपउदार ॥ पितृ
बधते गहे अमरष रुद्रसम ह्वै चण्ड । बधत ममदल द्रोणसुत
तजि शस्त्र परम उदण्ड ॥ कालमुखगत जन्तुसम अबभईसब
मम सैन । तासुरक्षण करौ तुम वरबुद्धि बिक्रमऐन ॥ भूपके ये
बचन सुनिकै पार्थ धीर धुरीन । द्रोण बधको गहे दुखभो कहत

वचन सुपीन ॥ देवब्रज द्विजगुरू कीन्हेंशस्त्र त्यागनभूप। धारि
ध्यिवत योगबिधि थिरिरहोसुमुनि स्वरूप ॥ द्रुपदसुत तेहि
बध्यो यह भो महा अनरथ तात। भयो पूरित सिन्धु अघको
करन अतिउत्पात ॥ केशगहि निज पिताकोशिर छेदिबोसुनि
आम। धृष्टद्युम्नहिं बधनकोपणकियो अश्वत्थाम ॥ चरतकाल
करालसम यहिकाल योधातौन। सकै ताकहँ आड़ि यहिक्षण
सुरासुर नरकौन ॥ दोहा ॥ पारथके ये बचनसुनि भीम कह्यो
अनखाय। कतबनबासी सुमुनि सम बोलत वचन अचाय ॥
कर्णादिक सों सदलतुम युद्ध करौ जयऊटि। गदापाणि ह्वै हम
लरब द्रोणतनयसों जूटि ॥ सोरठा ॥ यह सुनिकै तेहिकालकह्यो
पार्थसों द्रुपद सुत। यह श्रुति बचन रसाल बिप्रजौन षटकर्म
रत ॥ चौपाई ॥ क्षात्र धर्ममें रत रणचारी। करत अधर्मयुद्ध अ-
बिचारी ॥ जे नहिं दिव्य अस्त्रहैं जानत। रह्यो तिन्हैं तिनहींसों
ानत। करि अधर्म अभिमन्युहि रणमें ॥ जो बधवाइदयो तेहि
क्षणमें ॥ जो अमित्र मम पितुको गायो। जाबधहित ममजनम
सोहायो ॥ जो मम पितुहि मारिजयलीन्हों ॥ समयपाय हमताब-
कीन्हों ॥ सोनअधर्म सुनो हेपारथ। बूझिलेहु हमकहत यथा-
रथ ॥ आगे राखि शिखण्डिहि न्यारे। भीष्मपितामह कहँ तुम
मारे ॥ सोनअधर्मनेकु अनुमाने। अबइमि कहतशांतिरससाने ॥
ाहौहर्ष अतिशयहित मानी। युद्धकरौ जय निजबश जानी ॥
सुनि यह द्रुपद तनयकी बानी। कहतभयो सात्यकिअभिमानी ॥
गुरुहिंसक मूढ़ अनारय। करि ऐसो अति कुत्सित कारय ॥
जतन निलज कहत इमि बातै। नहिं गिरि परतबदनतेदांतै ॥
जे शस्त्रगुरु बिप्रहि हतिकै। निजहि प्रशंसत महिमाअतिकै ॥
जो फिरि इमिकहिहै अबिचारी। तौ बधिहौंतोहिं गदाप्रहारी ॥
यह सुनि धृष्टद्युम्न मन कासिकै। तासों कहत भयो इमिहँसिकै ॥
सत्यसत्यसात्यकि तुमधरणी। नहिंतुम समहमकुत्सितकरणी ॥





हा ॥ भूरिश्रवापछारिजब हन्यो हियेमें लात। तब न कछूबल
रिसको अब यहि बिधि उमदात ॥ पारथदीन्हों काटिभुजतब
रि योग बिधान। बैठिरहो तब तासु बध तुम कीन्हों मनमा-
॥ सोरठा ॥ ऐसो कुत्सित कर्म सोनभयो पातक कछू। हित
पकार सुधर्म ममकृत तेहि पातक कहत ॥ जयकर ॥ जो अब
हि बिधि बचनकठोर। फेरि कहैगो ह्वै मुँहजोर ॥ तौ अति
क्षण बाण प्रहारि। देहौं तोहिं भूमिपै डारि ॥ सुनिसात्यकि
रि क्रोध अथोर। रथसों कूदि गदागहि घोर ॥ चलो तहां
ाको बध चाहि। सोलखि भीम गहतभे ताहि ॥ सहदेवतासु
ामुहें जाय। क्षमित करनलागे समुझाय ॥ तब हँसि कह्यो
द्रुपद सुतबीर। छोड़ि देहु आवत रणधीर ॥ हनि हनि तीक्षण
बाणअबाध। देहौं दुरैयुद्धकीसाध ॥ यह सुनिसात्यकिबीरउदार।
छुटनको उझकोबहुबार ॥ दोऊ मत्त मतंग समान। चाहैंक-
न घोर घमसान ॥ सो लखि कृष्ण धर्म नृप रत्न। तिन्हैं क्ष-
मित कीन्ह्यों करि यत्न ॥ फिरिरथपै सात्यकिहि चढ़ाय। लागे
करन युद्ध बेवसाय ॥ तेहिक्षण द्विजसुत बीर उदण्ड। तजि
नारायण अस्त्र प्रचण्ड ॥ शत्रुसैनमधि हेक्षितिपाल। रोप्यो
प्रलय काल बिकराल ॥ प्रगटि प्रगटि शायक समुदाय। पर
ल बधन लगे दृढ़घाय ॥ जिमि जिमिलरैं उतैके बीर। तिमि
तिमि प्रगटैं अगणित तीर ॥ बधि बधि हय गज योधा भूरि।
ई रुधिर की सरिता पूरि ॥ दोहा ॥ दहत अग्नि सों बिपिन
तिमि निजदल मर्दत देखि। पार्थहि लखि मध्यस्थसम कह्यो
र्म नृप लेखि ॥ बधवायो अभिमन्यु कहँ जोकरिमहा अधर्म।
जो दीन्हों दुर्योधनहि कवचअभेद अभर्म ॥ जौन बर्षिब्रह्मास्त्र
कहँ लघुकीन्हीं मम सैन। जोबधि द्रुपद बिराटकहँ कीन्होंमोहिं
अचैन ॥ सोरठा ॥ ताको बध यहिकाल नाहिं पार्थहि रोचितभयो।
ताते बीर बिशाल लरत न निज बिक्रम सदृश ॥ चौपाई ॥ भी-

ष्म द्रोणको बिक्रम सागर । पार उतरि ममदल भटनागर ॥
द्विजसुत बललघुशरमधि डूबत । यह लखि गुणि अबममम
ऊबत ॥ अब सब जय आशातजितजिकै । निज निज गेहजा
हुभजिभजिकै ॥ बंधुन सहित अग्नि मधिधसिकै । हमतनदाहब
मुनिसम लसिकै ॥ यहसुनि केशव बांह उठाई । टेरिभटनसों कहे
बुझाई ॥ भागहु मति धीरजधरि फिरिफिरि । हमजो कहैं करो
सो थिरि थिरि ॥ तजितजि आयुध बाहनरूरे । महिपै खरेहो
मुदपूरे ॥ बिनुबाहन बिनु आयुध जाही । लखत न बधत अ
यह ताही ॥ यहसुनि सबभट मुदसों पागे । तुरतहि बाहनआ
युध त्यागे ॥ इतनेमें अति अमरष गहिकै । निज बिक्रमकी
गरिमाकहिकै ॥ रथ बढ़वाय भीम पण करिकै । द्विजपहँ भीम
चलो पण धरिकै ॥ अभिमंत्रित बाणनसोंगोपित । भीमहिकियो
द्रोण सुत कोपित ॥ दिब्य शरन मधि भीम अमाना । लसो
ज्वाल मधि सूर समाना ॥ पार्थ भीमकहँ गोपित देखी । बारुण
अस्त्र तजो अवरेखी ॥ तेजअस्त्र नारायण बरको । कछु ऋजु
करि करि लाघव करको ॥ केशव सहित कूदि रथबरसों । चलो
भीमके ढिग तेहि थरसों ॥ दोहा ॥ नरनारायणते उभय निज
प्रभावसों भूप । समित करतभे बिप्रकोअस्त्र अमोघ अनूप ॥
रथ बढ़ाय अति बेगसों धृष्टद्युम्न तेहिकाल । द्रोणतनयके तन
हन्यो साठि शरनको जाल ॥ सोरठा ॥ द्रोणतनय भटचण्ड ताहि
अनगिने शर हने । दोऊबीर उदण्ड घोर युद्ध कीन्हों तहां ॥
तोमर ॥ भट द्रोण सुवन अमान । तहँ बर्षि अगणितबान ॥ धनु
ध्वजा काटि सटेक । तेहि हन्यो बाण अनेक ॥ सोबीरसात्यकि
देखि । बढ़ि भिरो अतिशय तेखि ॥ भट द्रोण सुतहि प्रचारि ।
बसु बीस बाण प्रहारि ॥ बधि हयन धनुध्वजकाटि । तेहिहन्यो
बहुशर डाटि ॥ अति बिकल बिप्रहि पेखि । कृप कर्णसह अव
रेखि ॥ तो तनय बर्षत यत्र । बढ़ि भिरो तासों तत्र ॥ तहँ सात्य





भटराज । नृप कियो अद्भुत काज ॥ शर बरषि बिक्रम ऐन ।
रि तिन्हैं बिमुख अचैन ॥ बहुसहस योधामारि । भो देत म-
ैडारि ॥ सो देखि अनुपम बीर । भट द्रोणसुत रणधीर ॥
र सुपर्बाण सुनाम । तेहि हनतभो बलधाम ॥ सोबेधि ताको
त । भो सर्प सदृशबिभात ॥ ह्वै इबिधि बेधित तौन । गिरि
रो रथपै मौन ॥ तब सारथी भयपूरि । रथ हांकि लैगो दूरि ॥
ुखि द्रुपदसुत अनखाय । बढ़ि भिरतभो शर छाय ॥ दोहा ॥
ष्टद्युम्न अरु द्रोणसुत दोऊ धीर धुरीन । शरपंजर रचि उभय
शि कियोयुद्ध अति पीन ॥ कर लाघवकरि द्रोणसुत द्रुपद
नय के भाल । हन्योबाण तब होतभो मोहित बीर बिशाल ॥
ठा ॥ इमि बेधित ह्वै बीर द्रुपद तनय मोहित भयो । सो
खिकै रणधीर पांच सुभट द्विजसों भिरे ॥ महिबरी ॥ गतचेत
नापतिहि लखतहि भीम पारथ रिसभरे । अरु वृद्धक्षत्र म-
प अरु युवराज बरणे भटखरे ॥ अरु देश मालवको सुदर्शन
प बरषत शरघने । भिरि द्रोणसुत रणधीरसों भे लरत अति
मरषसने ॥ तेहि समयद्रोणाचार्य्यको सुत बीरअति बिक्रम
यो ॥ शरकाटि कइकहजार सबके गात अगणित शरदियो ॥
धि वृद्धक्षत्रहि वधतभो युवराज भटहि प्रचारिकै । फिरिनृप
दर्शन को सुयमपुर दियो बाण प्रहारिकै ॥ दोहा ॥ लखि ति-
कोबध क्रोधकरि गरजि भीम बलवान । वर्षतभो द्विजबीर
हँ कालदण्ड समबान ॥ यहि बिधि शरपंजर कियेदोऊ क्षत्री
प्र । नहिंजेहिमधि अन्तरलह्यो पावमान गतिक्षिप्र ॥ सोरठा ॥
कि दोउनके गात दोऊबहुशायक हने । दोऊभट अवदात
हुधनु काटे दुहुनके ॥ चौपाई ॥ गरजि गरजि दोऊ धनुधारी ।
न्हों तहांयुद्ध अतिभारी ॥ भीमसेन तहँद्विजाहिं प्रचारयो ।
जसरिश शर भ्रूमधि मारयो ॥ तासों भिदि द्विजमुर्छित ह्वै-
। बहुरि चेति शर बरष्योज्वैकै ॥ अतिगर्वितदोऊ गुरुभाई।

नृपकीन्ह्यों तहँ दुसह लराई ॥ भीमसेन के सूत सुजानहि । बिप्र
व्यथित कीन्हों हति बानहि ॥ मोहित भयो सूत तबताको
भगे तुरंगजे बिनु समताको ॥ भीमसेनकहँ बिचलत देखी
परदलभगो बिपति अवरेखी ॥ पारथ निजदल बिचलत देखी
भिरयोद्रोणसुतसों अतितेखी ॥ सोलखि उतके योधा रूरे
फिरि फिरि लरनलगे रिस पूरे ॥ भटमणि द्रोणतनय तेहिक्षन
में । महा क्रोधसों भरिगुणि मनमें ॥ तजो अस्त्र आग्नेय महा-
ना । जोअति दुसह अमोघ अमाना ॥ नभ मढ़ितौन अस्त्र
जियकर्षण । लागो उलकासम शरबर्षण ॥ तेहिक्षण हयगज
भटअरि दलके । भेतिमि यथा मीन बिनजलके ॥ पूरो प्रलय
शत्रु दलमाहीं । पारथ गुन्यो बचतकोउ नाहीं ॥ तब सब अ-
स्त्रशमन अनुमानी । तजतभयो ब्रह्मास्त्र सुज्ञानी ॥ तासों स-
मित भयो अरिशायक । जो क्षणमें दल नाशन लायक ॥ दोहा ॥
तेहि क्षण केशव पारथहि कुशल अछत लखि भूप । मम दिशि
पूरो शोचअति पर दिशि हरष अनूप ॥ मंत्रहि अस्त्रहिझूठ
गुणि द्विज सुतआनि गलानि । रथ धनुशर तजि चलतभो
बन बसिबो अनुमानि ॥ तेहिक्षण वेदव्यास मुनि सादर तेहि
थरआय । आगोद्विज सुतबीर के खड़भये सुखदाय ॥ सोरठा ॥
वेदव्यास कहँ देखि अश्वत्थामा कहतभो । प्रभु अचरजअव-
रेखि मोहिंभई अति ग्लानि अब ॥ तज्यो अस्त्र आग्नेय कृष्ण
पार्थ के नाशहित । सो वह अस्त्र अमेय व्यर्थ भयो वे नहिंमरे ॥
तासुहेत समुझाय कहिये जेहि संशय मिटै । सो मुनिव्यास
सचाय कहो द्रोण के सुवनसों ॥ रोला ॥ हेबिप्र बूझत जौन तुम
हौ अर्थ तासुमहान । सुनो मनदै तौन हम अब कहत सहित
बिधान ॥ जौन नारायण महाप्रभु पूर्बजनको पूर्ब । बिश्वकृत
सो धर्म केरो भयो पुत्रसुगूर्ब ॥ लगो सो मैनाक गिरिपै करन
तपअतिमान । ज्वलित रबिसम खरो रहिकरि ऊर्धबाहु महान ॥





यो छाछठ सहस बरष सुवायु भुकतप पर्म । पूरिगो तपतेज
ब्रह्माण्ड पूरणधर्म ॥ तहां आये आपु शम्भु पिनाक तेज-
धाम । देखिनारायण कियोतेहिशिवासहित प्रणाम ॥ जोरि
पाणि पिनाक धृतहि प्रशंसिसहित सनेहु । कहो करिकै कृपा
भ सुबर मोकहँदेहु ॥ बचन यह सुनि जानि आशय तासु
नँदपूरि । नीलकंठउदार प्रभुइमि कह्योआनँदपूरि ॥ होहु
अमेय बलबुधि पूर्णआत्मा तात । सकैंगेनहिं तुम्हैं सहि
लोकमें जेजात ॥ आर्द्रसूखेअस्त्र जितने बायुअग्निमहान ।
कैंजे नहिंतुम्हैंरुजकरि बिबिधबिधिकेबान ॥ प्राप्तिरणमेंहोहुगे
सदृश सबबिधि आपु । भाषि ऐसे गयेहरता त्रिबिधबिधके
पु ॥ लह्यो यहिबिधि शम्भुसोंबर जौन देवअनूप । सोई ना-
रायण द्विधा ह्वै गहतभो नरभूप ॥ सोईनारायण सुनर प्रभु
माया छन्न । करत कौतुक इबिधि के नृप बंशमध्य प्रपन्न ॥
भु तुम ये लहे तुमसों पूर्बबर बरदान । होहिंअस्त्रन बिफल
गुणोहो मतिमान ॥ बचन यह सुनि द्रोणसुतकरि मनहिं
नहिं प्रणाम । चढ़ि सुस्यन्दन चलो डेरन परम आनँद
म ॥ भूप दुर्योधनो ससैन तदनु डेरन आय । करतभो अव-
र गुरुबध देखि परम अचाय ॥ तहां पारथ दिवसमें कछु
अचरज देखि । कहतभो मुनि देवसों तेहि समय निज
पेखि ॥ सुनो प्रभु हम लरत रणमें लखत अचरज एक ।
त तुमसों तौनदेहु बुझायसहित बिबेक ॥ पुरुषपरम प्रग-
दिब्य स्वरूप तेजसधाम । गहे दीह त्रिशूल कीन्हें पाणि
ध माम ॥ चलत आगे सुरथके मम जितै रथ चलिजात ।
त पगसों भूमि नहिं नाहिंतजत शूल अघात ॥ बचन यह
कह्यो मुनिसोंशम्भु ईश सुनाथ । सुजय हिततो कृपा
कै रहतहैं तुवसाथ ॥ भाषि यहि बिधि शम्भु प्रभुकी करी
स्तुतिब्यास । तौन बिधिवत कहतहौं मैं भूप तुम्हरे पास ॥

स्तोत्रं ॥ प्रजापतीनांप्रथमं तैजसंप्रथमंप्रभुं । भुवनंभूर्भुवंदेवंसर्वं नमः । वृक्षैरावृत्तकायाय सेनान्यैमध्यमायच ॥ स्तवहस्तायते
ल्लोकेश्वरंप्रभुं ॥ ईशानंवरदंपार्थदृष्टवानसिशंकरं । तंगच्छशर-वाय धन्विनेभार्गवायच । बहुरूपायविश्वस्यपतये मुंजवाससे ॥
णंदेवं वरदंभुवनेश्वरं ॥ महादेवंमहात्मानमीशानंजटिलंशिवं । सहस्रशिरसेचैव सहस्रनयनायच । सहस्रबाहवेचैवसहस्रचर
त्र्यक्षंमहाभुजंरुद्रं शिखिनंचीरवाससं ॥ महादेवंहरंस्थाणुं णायच॥शरणंगच्छकौन्तेयवरदंभुवनेश्वरं । उमापतिंविरूपाक्षं
वरदंभुवनेश्वरं । जगत्प्रधानमधिकं जगत्त्रयमधीश्वरं ॥ जदक्षयज्ञनिवर्हणं ॥ प्रजानांपतिमव्यग्रं भूतानांपतिमव्ययं । क
गद्योनिजगद्बीजं जयिनंजगतोगतिं । विश्वात्मानंविश्वसृजंपर्द्दिनंविषावर्त्तं वृषनाभंवृषध्वजं ॥ वृषदर्पंवृषपतिं वृषशृंगं
विश्वमूर्तिंयशास्विनं ॥ विश्वेश्वरंविश्वतरं कर्मणामीश्वरंप्रभुं वृषर्षभं । वृषांकंवृषभोदारं वृषभंभृषभेक्षणं ॥ वृषायुधंवृषशरं
शम्भुंस्वयम्भूभूतेशम्भूतभव्यभवोद्वहं ॥ योगंयोगेश्वरंसर्वंसर्वंवृषभूतमहेश्वरं । महोदरंमहाकायं द्वीपिचर्मनिवासिनं ॥ लोके-
लोकेश्वरेश्वरं । सर्वश्रेष्ठंजगत्श्रेष्ठं वरेष्ठंपरमेष्ठिनं ॥ लोकत्रशंवरदंमुंडं ब्रह्मण्यंब्राह्मणाप्रियं । त्रिशूलपाणिवरदं खड्गच-
यविधातारमेकंलोकत्रयाश्रयं । सुदुर्जयंजगन्नाथं जन्ममृत्युंमंधरंप्रभुम् ॥ पिनाकिनंखड्गधरं लोकानांपतिमीश्वरं । प्रप-
जरातिगं ॥ ज्ञानात्मानंज्ञानगम्यं ज्ञानश्रेष्ठंसुदुर्विदं । दातारंचैवंदेवमीशानंशरण्यंबीरवाससं ॥ नमस्तस्मैसुरेशाय यस्यवै
वभक्तानां प्रसादविहितान्वरान् ॥ तस्यपारिषदादिव्यारूपैस्रवणःसखा । सुवाससेनमोनित्यं सुव्रतायसुधन्विने ॥ धनुर्द्ध-
र्नानाविधैर्विभो । बामनाजटिलामुंडा ह्रस्वग्रीवामहोदराः ायदेवाय प्रियधन्वायधन्विने । धन्वन्तरायधनुषे धन्वाचार्य्या-
महाकायामहोत्साहा महाकर्णास्तथापरे । आननैर्वैकृतैःपादैतेनमः ॥ उग्रायुधायदेवायनमःसुरवरायच । नमोस्तुबहुरूपा-
पार्थिवेशैश्चवैकृतैः ॥ ईदृशःसमहादेवः पूज्यमानोमहेश्वरः । नमोस्तुबहुधन्विने ॥ नमोस्तुत्रिपुरघ्नाय भगघ्नायचवैनमः ।
सशिवस्तातत्तेजस्वी प्रसादाद्यातितेऽग्रतः ॥ दोहा ॥ तब तुमनरपतीनांपतयेनराणां पतयेनमः ॥ अपांचपतयेनित्यं देवा-
पावतहौ सुजयमारि महत दल तौन । द्रोण द्रोण सुत कृप कांपतयेनमः । पूष्णोदन्तविनाशाय त्र्यक्षायवरदायच ॥ हरा-
रण सों रक्षितहैं जौन ॥ यहि बिधि कहि मुनि पार्थसों मोद हियनीलकंठायस्वर्णकेशायवैनमः । कर्म्माणियानिदिव्यानि महा-
में घेरि । शिवकी अस्तुतिफिरिकरी सुनोकहतसोफेरि ॥ शिवस्तोत्रवस्यधीमतः ॥ तानितेकीर्त्तयिष्यामियथाप्रज्ञंयथाश्रुतं । दक्ष-
नमः कुरुष्वकौंतेय तस्मैशान्तायवैसदा । रुद्रायशितिकंठायजमानस्ययज्ञविध्वंसनादिकं ॥ इतिशिवस्तोत्रंसमाप्तम् ॥
कनिष्टायसुवर्चसे ॥ कपर्द्दिनेकरालाय वरदायहरायच । याम्य हा ॥ इमि कहिकै मुनि कहत भे कियो शम्भु जो तत्र । कहो
यव्यक्तकेशाय शवृतेशंकरायच ॥ काम्यायहरिनेत्राय स्थाणौन हरिबंशमें ताते कहोनअत्र ॥ फेरित्रिपुरके दाहकी कथा
पुरुषायच । हरिकेशायमुंडाय कृशायतरुणायच ॥ भास्करही कछुव्यास । कर्णपर्ब में सो कियो बिस्तर सहितप्रकास ॥
सुतीर्थायदेवदेवायरंहसे । बहुरूपायशर्वायप्रियायाप्रियबाससेञ्चबक्त प्रभुशम्भु कहँ बालरूप करिअंक । गईपार्बती तहँ
उष्णीषिणेसुवक्त्राय सहस्राक्षायमीढुषे । गिरीशायसुशान्तालखत त्रिपुर दाहको अंक ॥ देखितथा तेहि शम्भुकहँ बज्र
पतयेचीरवाससे ॥ हिरण्यवाहवेराजन्नुग्रायपतयेदिशां । पञ्चठायो शक्र । भुजथम्भन भो तासु जबशंकर हेरोबक्र ॥ सुर-
न्यपतयेचैव भूतानांपतयेनमः ॥ वृषाणांपतयेचैव गवांचपत सहित सुरनाथ तब बिधिपहँ जाइस त्रास । कहिनिज दशा

बिरंचिकहँ लै आये शिवपास ॥ आइ सुरन सह बिधि कियो शिवकी अस्तुतिभूरि। अट्टहास तब शिवकियो अनुकम्पा सों पूरि ॥ तबसुरपतिको भुज भयो यथा पूर्ब तेहिकाल। पृथक पृथक तब सुरकियो अस्तुति तासुरसाल ॥ संजयउवाच ॥ यहि प्रकार प्रभु शम्भुकी करि अस्तुति बहुबार। कहतभये इमि पार्थसों व्यास मुनीशउदार ॥ पूर्ब दिये गिरिपै तुम्हैं बर बरदान गिरीश। तातेचाहत युद्धमें तुमजय बिस्वेबीश ॥ फेरि स्वप्न में अस्त्र सह दिये तुम्हैं बरदान। सोपण पालन हेतु नितितोसँग रहईशान ॥ शम्भु कृपातेलहहुगे अवशि बिजयकरि युद्ध। सर्ब जगत कृत सर्ब प्रभु चाहततो यश शुद्ध ॥ जो पढ़िहैं अस्तोत्र यह सो लहिहैं जयपर्म। शम्भु कृपातापर रहिहिं पूरणनिरखि सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह सुपर्ब मनलाय जे पढ़िहैं सुनिहैं सुनो। परम पुण्य सुखदाय तेलहिहैं यश बिजय गुण ॥ इमि कहिकै मुनिब्यास गुप्तभये तेहिठौरनृप। पारथभरे हुलास सैन सहित डेरन गये ॥ रामकृष्ण जगदीश भूपकृपा जापर करत। सुर सुरपति बिधिईश तासु सहायी रहत निति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशिवासिगोकुलनाथकबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेद्रोणपर्बणिपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

द्रोणपर्ब समाप्तः ॥

---

मुंशीनवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने लखनऊ में छपा
मई सन् १८९१ ई० ॥



अनेक नीतिकहकर दुर्योधनको युद्धसे निषेध करना और उसे न मानना और दोनों ओर युद्धका उद्योग होना ॥

## भीष्मपर्व ॥

भूगोल खगोलादि सृष्टिविस्तार और नदी पर्वतादि संख्या व षट्ऋतु वर्णन अर्जुन व श्रीकृष्ण सम्वाद और भगवद्गीता वर्णन पश्चात्दशदिन भीष्मजीका पाण्डवों से युद्ध व बध ॥

## द्रोणपर्व ॥

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन और दुर्योधनादि बीरोंसे पाण्डवों का घनघोरयुद्ध द्रोणाचार्य कृत चक्रव्यूह निर्माण व चक्रान्तर अभिमन्यु युद्ध व बध पश्चात् द्रोणाचार्य बधादि कथायें वर्णित हैं ॥

## कर्णपर्व ॥

पाण्डवों प्रति कर्णका युद्ध व बध कथा है ॥

## शल्य व गदापर्व ॥

राजा शल्यका सेनापति होकर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्सेन, सुशर्मा शकुनि और उलूकादिकों समेत युद्ध व बध और दुर्योधन व भीमसेन का गदायुद्ध व दुर्योधनकी जंघभंगादि कथायें वर्णित हैं ॥

## सौप्तिक व स्त्रीपर्व ॥

अश्वत्थामा करके पाण्डवोंके सुप्तपुत्रोंका नाश और कुरुक्षेत्रमें कौरवादिकों की रानियोंका विलाप ॥

## शान्तिपर्व ॥

इसमें चार प्रकारके धर्म अर्थात् राजधर्म आपद्धर्म दानधर्म और मोक्षधर्मादिका सविस्तर वर्णनहै सम्पूर्ण विषयवासनारहित शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधानादि षट्सम्पत्ति साधन योग समाधिकथन ईश्वराराधनासक्त सर्वाहंकार द्वेष ममतादि त्यक्त ध्यानधारणा अन्तरंग बहिरंग साधनादि अनेक मार्गसे मोक्षमार्ग प्राप्तोपाय वर्णन ॥

## अश्वमेधपर्व ॥

१ श्रीकृष्णके उपदेशसे अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवादि चारों भाइयों को चारों दिशाओंको विजय करके द्रव्योपार्ज्जन पश्चात् राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना और जरासंधादि राजाओंका वध ॥

## आश्रमवास मुशल महाप्रस्थान व स्वर्गारोहण पर्व ॥

युधिष्ठिरादि पांचोंभाइयोंको आश्रममें वास करना पश्चात् छत्तीसवां वर्ष वर्तमान होनेपर अपशकुन दृष्टिआना व यदुवंशियोंको मदोन्मत्तहो परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्रके पैरमें जरानाम व्याधाको बाण मारना व श्रीकृष्ण बलदेवको परमधामजाना व युधिष्ठिरादि पांचों पाण्डवों को महाप्रस्थान यात्राकर स्वर्गगमन ॥

## अनुशासनपर्व ॥

सम्पूर्ण धर्म्म व दान व सम्पूर्ण व्रतोंका फल व सम्पूर्ण माहात्म्य व ग्राह्याग्राह्य वस्तुविचार व तपस्वी व धर्मात्माओं के लक्षण ॥

## हरिवंशपर्व दोभाग ॥

इसके प्रथमभाग में दक्षोत्पत्ति, मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान द्वादशादित्योंकी जन्मकथा श्राद्धफल और यदुवंशमें कृष्णजीका उत्पन्नहोके वसुदेवजी के द्वारा मथुरासे गोकुलमें नन्दगृहगमन पश्चात् पूतना वत्सासुर बकासुर अघासुर प्रलम्बासुर और केशीआदिका वधकरना गोवर्द्धनोद्धारण व मथुरा गमन कंसवध और द्वितीयभागमें ऊषाचरित्र कृष्णसे मधुदैत्यका वध वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा, घण्टाकर्ण मोक्ष, पौण्ड्रक ऐकलव्यवध, श्रीकृष्णजीका पुष्करागमन, विचिक्रवध, कृष्ण बलदेवसे नन्दादिका समागम पर्वानुकीर्त्तन व हरिवंश वृत्तान्तादि कथायें वर्णित हैं

---

## महाभारत सबलसिंह चौहानकृत ॥

तुलसीकृत रामायणकी रीतिपर सुन्दर दोहा चौपाइयों में निर्मित है जिस्कदरपर्वें मुद्रित होगई हैं निम्न लिखित हैं ॥

आदिपर्व, सभापर्व, [illegible]पर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, गदापर्व, स्त्रीपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व ॥